

- ताहि, जबूद्वीप नी वारता। उद्देशे १४ प्रथम जवूद्वीपादि मांहि, जोतिषि नी कहियै हिवै।।
- १५ \*राजगृह नगर मे जावत प्रश्न गोयम भला, सुगणा । जबूद्वीप नामा द्वीप विषे प्रभु । केतला ? सुगणा । चद्र प्रभास कियो करै नै करिस्यै सही, सुगणा । इम जिम जीवाभिगम में वक्तव्यता कही सुगणा!
- १६. जाव नव सै पचास तारा गण कोडाकोड़ ही, जोड ही । शोभस्यै शोभ्या शोभै शोभ प्रतै प्रश्न चंद्रादिक जीवाभिगम' रै मांहि कहू सुणो।। वीर प्रभु दियो जाव सक्षेप
- १७ बे चद्र प्रभास कियो रु करै तपस्यै रु तपै तप्या सघात चद्र नक्षत्र जोडै जोडस्यै तेह पिछाणियै।। जोग जोडचा
- आकाश मे, १८ ग्रह एक सौ नै जेह छिहतर अतीत हुलास चार प्रति चरचा काल प्रति चरै छै तिके, चार वर्त्तमान फुन चरस्यै जिके।। मांहि चार काल अनागत
- जाणियै, कोडाकोडी तारा लाख १६. एक कोड़ाकोडि आणियै । हजार वलि तेतीस कोडाकोडि जे, पंचास कोडाकोडि नवसै शोभै शोभस्यै जोडि जे।।
- शोभ प्रति शोभ्या केतला ? लवणसमुद्र विपे चद्र २० हे प्रभु जिम जीवाभिगम<sup>°</sup> जाव तारा जेतला । चद जाणियै, च्यार कहिवाय इहविध वखाणियै ॥ उदार कै कात सूर्य च्यार
- सुहामणा, द्वादश पवर सौ एक २१ नक्षत्र रलियामणा। बावन मोटा ग्रह तीन सौ नी कोड़ाकोड लख सतसठ सहस्र कोडाकोड़ि नवसै कोड़ाकोड़ है।।
- पुक्खरवरद्वीप कालोद २२ धातकीखड मनुष्यक्षेत्रे अभ्यतर - पुक्खराई जाव जोड़ जे, जीवाभिगम विषे एह सर्व जे ॥ एक शशि परिवार तारा कोडाकोड
- मे, धातकीखड वारै सूर २३ वारै चद हरष घमड चोबीस रवि शशि विहु

२. (सू० ७२२)।

- १४. अनन्तरोद्देशके जम्बूद्वीपवक्तव्यतोक्ता द्वितीये तु जम्बू-द्वीपादिषु ज्योतिष्कवक्तव्यताऽभिधीयते । (वृ० प० ४२६)
- १५. रायगिहे जान एन नयासी —जबुद्दीवे ण मते <sup>।</sup> दीवे केवइया चंदा पभासिसु वा ?पभासेति वा ? पभासि-स्सति वा ? एव जहा जीवाभिगमे
- १६. जाव.... नव य सया पन्नासा, तारागण कोडीकोडीण ॥ सोभिसु, सोभिति सोभिस्सति ॥ (जी० सू० ७०३)
- १७. गोयमा । जबुद्दीवे दीवे दो चदा पभासिसु वा३ दो सूरिया तर्विसु वा३ छप्पन्नं नक्खत्ता जोग जोइंसु (वृ प० ४२७)
- १८. छावत्तर गहसय चार चरिसु वा ३ (बृ० प० ४२७)
- १६. एगं च सयसहस्स तेत्तीस, खलु भवे सहस्साइ। नव य सया पन्नासा, तारागण कोडिकोडीणं।। सोभिसु, सोभिति, सोभिस्सति । (श० ६।३)
- २०. लवणे ण मंते । समुद्दे केवतिया चंदा पभासिसुवा ? पभासेंति वा ? पभासिस्सति वा ? एव जहा जीवाभिगमे जाव ताराओ (....श० ६।४) गोयमा । लवणे ण समुद्दे चत्तारि चंदा पभासिसु वा ३। चत्तारि सूरिया तर्विसु वा ३ (वृ०, प० ४२७)
- २१.- बारसोत्तर नक्खत्तसय जोग जोइंसु, वा ३ तिन्नि वावन्ना महग्गहसया चार चरिसु वा ३ दोन्नि सयस-हस्सा सत्तिंद्वं च सहस्सा नवसया तारागणकोडिको-डीण, सोह सोहिंसु वा ३। (वृ० प० ४२७)
- २२ घायइसडे, कालोदे, पुक्खरवरे, अञ्भितरपुक्खरद्धे, मणु-स्सबेत्ते - एएसु सन्वेसु जहा जीवाभिगमे (सू० ५०६, ८१०, ८३०, ८३४) जाव-एगससीपरिवारो, तारा-गणकोडिकोडीण ॥ (ঘ০ દા૪)
- २३ बारस चदा पभासिसु वा३ वारस सूरिया तर्विसु वा३ एव-- "चउवीसं सिसरविणो नक्खत्तसया य तिन्नि छत्तीसा ।

<sup>\*</sup>लय: इण सरवरिया री पाल १ (सु० ७०३)

- अतिहि छत्तीस सोहता, सी नक्षत्र त्रिण ने छप्पन ग्रह मन मोहता ॥ एक हजार लाख कोडाकोट है, २४. तारा नी संख्या अठ अधिक सुजोड़ तीन सहस्र कोडाकोड कोड़ाकोड़ वलि ऊपर सात सौ कह्या, द्वीपे रह्या।। धातकीखंड तारका एतला वयालिस २५. कालोद वयांल दिनकरा, चद सी छिहंतरा। हजार एक एक नक्षत्र छिन्नू ने छसी ऊपरे, हजार तीन ते सुरवर मन हरे।। ग्रह मोटा एतला
- लाख तणी कोडाकोड़ है, अठावीस २६. तारा कोडाकोड़ि जोड है। द्वादश सहस्र ऊपर कोडाकोड अधिक वखाणिया, नवसौ आणिया ॥ कालोदधि कोडाकोडि पचास एक सी चोमाल है, चद्र २७ द्वीप पूक्खरवर एक सी चोमालीस चार विणाल है। चरै कह्यो ते रिव णिश सहु चर नही, अभ्यतर-पुक्खराई वोहिंतर भर्म सही ॥
  - २८ नक्षत्र च्यार हजार नें बत्तीस ऊपर, महाग्रह द्वादण सहस्र छह सौ रु बोहितर। तारा छिन्तू लक्ष कोड़ाकोड़ नी जोड है, चोमालीस सहस्र च्यार सी कोड़ाकोड़ है।।
  - नें विषे सही, २६. अभ्यतर-पुक्खरार्द्ध द्वीप वोहितर गगन ही। वोहितर सूर चंद्र सहस्र तीनसी छत्तीस है, मोटा ग्रह जगीस है।। दोय हजार ने सोल नक्षत्र
  - कोडाकोडि पिछाणज्यो, ३०. अडतालीस लक्ष कोडाकोड़ि ऊपर आणज्यो, वावीस सहस्र सी कोड़ाकोड शोभावता, तारा दोय पुक्खरार्द्ध विषे सुख अभ्यंतर पावता ॥
  - ३१ मनुष्य क्षेत्र में एक सी वत्तीस चद्रमा। सूर्य एक सी वत्तीस अधिक आनंद मां। महाग्रह ग्यारे हजार छह सी सोलें वली, नक्षत्र तीन हजार छह सी छिन्नु रली।।
  - ३२ तारा अठ्यासी लक्ष कोड़ाकोडि जोड है, ऊपर चालीस ,सहस्र कोडाकोड है। सात सौ कोडाकोड़ ए पूरा ऊणा नही, यावत एक शिश परिवार हिवै कहूं सही।।

- एगं च गहमहस्मे, छप्पन्न घायईमटे । (वृ० प० ४२७)
- २४. अट्ठेव सयमहम्मा तिम्नि महम्माङ मत्त य सयाङ । धायङमङ दीवे नारागणकोडिकोडीण । (वृ० प० ४२७)
- २४. वायालीमं चदा वायालीम च दिणयरा दित्ता ।

  कालोदिहिम एए चरेति मबद्धलेगागा ।

  नायत्तमहम्म एग एग छावत्तरं च मयमर्त्र ।

  छच्च सया छन्नज्या महागहा निन्नि य महस्मा ॥

  (यु० प० ४२७)
- २६. अट्टापीम कालोदिहिमि बारम य तह महस्माई ।

  णय य मया पन्नामा तारागणकोजिकोटीणं ।।

  (वृ० प० ४२७)
- २७ चोयानं चदमय नोयान चेय सूरियाण मय ।
  पुनयरवरिम दीवे भमति एए पर्यामिता ।
  उह च यद्भ्रमणमुनत न तत्मर्वाश्चन्द्रादिन्यानपेध्य,
  कि तिह ? पुष्करद्वीपाभ्यन्तराह्वंवितिनी हिमप्निनेवेति । (वृ० प० ४२७)
- २८. चतारि गहस्माइं बत्तीमं चेव होति नरमना ।

  छन्च गया बावत्तरि महागहा बारममहस्मा ॥

  छन्नजङ सयमहस्ता चोयानीस भवे सहस्माइं ।

  चतारि गया पुरस्तरि तारागणकोडिकोडीण ॥

  (वृ०प० ४२७)
- २६ वावत्तरि च चदा वावत्तरिमेव दिणयरा दिता ।
  पुगरारवरदीवड्ढे चरति एए पभामिता ॥
  तिन्न मया छत्तीसा छच्च महम्मा महग्गहाण तु ।
  नक्षत्ताण तु भवे मोलाइ दुवे महस्साइं॥
  (वृ प० ४२७)
- ३०. अडयाल सयमहस्मा वावीस रालु भवे सहस्माइ। दो य गय पुगलरखें तारागणकोडिकोडीण।। (वृ० प० ४२७)
- ३१. वत्तीस चदमय वत्तीस चेव सूरियाण सय ।
  सयल मणुस्तलोय चरित एए पयासिता ।
  एक्कारस य सहस्सा छिप्प य मोला महागहाण तु ।
  छच्च सया छण्णउया णक्खत्ता तिन्ति य सहस्सा ॥
  (वृ०प०४२७, २८)
- ३२. अडसीइ सयसहस्सा चालीस सहस्स मणुयलोगि। सत्त य मया अणूणा तारागणकोडिकोडीणं।। (वृ० प० ४२८)

३३ एक शशि परिवार अठ्यासी ग्रह कह्या, नक्षत्र अठावीस चद्र साथै रह्या। छ्यासठ सहस्र कोडाकोडि नवसौ कोड़ाकोडि है। पिचोत्तर कोडाकोड तारा नी जोडि है।। ३४ हिवै पुक्खरोद समुद्र विषे प्रभु! केतला, चद्र प्रभास कियो करै करस्यै सुखनिला? इम सहु द्वीप समुद्र विषे जोतिपि तणी, जावत स्वयभूरमण जाव शोभा घणी।।

वा० - पुक्खरोदे णं भते । समुद्दे केवितया चदा इत्यादि प्रश्ने ए उत्तर-संवेज्जा चदा पर्भासिसु वा । इम आगलै सगलै द्वीप समुद्र ने विषे पूर्वे कह्यु तिम अनुक्रमे संख्याता असंख्याता चद्रादिक जाणिवा ।

द्वीप समुद्र ना नाम कहै छै—पुक्खरवर समुद्र तिवार पछी वरुण द्वीप, वरुणवर समुद्र । क्षीरवर द्वीप, क्षीरवर समुद्र । घृतवर द्वीप, घृतवर समुद्र । इक्षुवर द्वीप, इक्षुवर समुद्र । नदीश्वर द्वीप, नदीश्वर समुद्र, । अरुण द्वीप, अरुण समुद्र । अरुणवर द्वीप, अरुणवरावभास द्वीप, अरुणवरावभास समुद्र । कुडल द्वीप, कुडलांद समुद्र । कुडलवर द्वीप, कुडलवर समुद्र । कुडलवरावभास द्वीप, कुडलवरावभासोद समुद्र । रुचक द्वीप, रुचकोद समुद्र । रुचकवर द्वीप, रुचकवरावभासोद समुद्र । रुचकवरावभास द्वीप, रुचकवरावभासोद समुद्र । रुचकवरावभास द्वीप, रुचकवरावभासोद समुद्र ।

हार द्वीप, ट्रारोद समुद्र । हारवरद्वीप, हारावरोद समुद्र । हारवरावभास द्वीप, हारवरावभासोद समुद्र ।

रुचकद्वीप पछी असल्याती योजन नी कोडाकोडि ना द्वीप समुद्र असल्याता छै। इम यावत अर्द्ध राजू मठेरा में सर्व समुद्र द्वीप छ। अर्द्ध राजू जाभेरा में एक स्वयभूरमण समुद्र छै त्रिण लाख जोजन अधिक अर्द्ध राजू मा छै। ते स्वयभूरमण समुद्र पछै आगल अलोक छै। इम इत्यादिक नै विषे सल्याता जोतिपि चद्रादिक तथा असल्यात नक्षत्रादिक चार चरता हुआ गतकाले, चरै छै वर्त्तमान काले, चरस्यै आगामि कालें।

जीवाभिगम' मे कहा भी है---

एसी तारापिडो, सन्त्रममासेण मणुयलोगिम । विह्या पुण ताराओ, जिणेहिं भणिया अस खेज्जा ।। अतो मणुस्सखेत्ते हवित चारोवगा य उववण्णा । पचिवहा जोइसिया चदा सूरा गह गणा य ।। तेण पर जे सेसा चदाइच्चगहतारनक्खत्ता । णित्य गई णिव चारो, अविद्विया ते मुणेयन्त्रा ॥ इत्यादि घणो छै ते पिडते जाणियो ।

#### सोरठा

३५ 'जबूद्दीप रै माहि, वे चदा वे सूर छै। लवणे दुगुणा ताहि, चिउ चदा दिनकर चिहुं।।

३३. अट्ठासीइ च गहा अट्ठाबीस च होइ नवखत्ता।
एंगससीपरिवारो एत्तो ताराण वोच्छामि ॥१॥
छावट्ठि सहस्साइ नव चेव सयाइ पच सयराङ ति।
(वृ० प० ४२८)

३४. पुक्खरोदे ण भते । समुद्दे केवितया चदा पभासिसु वा ? पभासेति वा ? पभासिस्सिति वा ? एव सन्वेसु दीवसमुद्देसु जोतिसियाण भाणियन्व जाव सयभूरमणे जाव सोभिसु वा, सोभिति वा, सोभिस्सिति वा। (श० ६१५)

वा०—'पुक्खरोदे ूण भते ! समुद्दे केवइया चदा' इत्यादौ प्रश्ने इदमुत्तर दृश्य—'सक्षेज्जा चंदा पभासिसु वा ३ इत्यादि, 'एव सन्वेसु दीवसमुद्देसु' ति पूर्वोक्तेन प्रश्नेन यथासम्भव सख्याता असख्याताश्च चन्द्रादय इत्यादिना चोत्तरेणेत्यर्थ ।

हीपसमुद्रनामानि चैव — पुष्करोदसमुद्रादनन्तरो वरुण-वरो द्वीपस्ततो वरुणोद समुद्र , एव क्षीरवरक्षीरोदी घृतवरघृतोदी क्षोदवरक्षोदोदी नदीश्वरवरनदीश्वरोदी अरुणारुणौदी अरुणवरारुणवरोदो अरुणवरावभासारुण-वरावभासोदी कुण्डलकुण्डलोदी कुण्डलवरकुण्डलवरोदी कुण्डलवरावभासकुण्डलवरावभासोदी रुचकरुचकोदी रुचकवररुचकवरोदी रुचकवरावभासरुचकवरावभा-सोदी इत्यादीन्यसङ्यातानि, यतोऽसङ्याता द्वीपसमुद्रा इति ॥ (वृ० प० ४२८)

.... हारे दीवे हारे समुद्दे, हारवरे दीवे हारवरे समुद्दे, हारवरोभासे दीवे हारवरोभासे समुद्दे, ताओ क्वेव वत्तक्वताओं ..... (जीवा० ३।६३५)

३५. जबुद्दीवे जबुद्दीवे ण दीवे दो चदा पभासिसु... (जीवा० ३।७०३) लवणे....लवणे ण समुद्दे चत्तारि चदा पभासिसु.... (जीवा० ३।७२२)

१ यह समग्र वर्णन देखें —जीवा० ३।८४८-६४६

२. जी० ३।५३५।१,२१,२२

३६. धातकीखड मझार, वार चंद्र द्वादण रिव । अगल त्रिगुणा सार, पूरवला पिण भेलिये ॥
३७. वार धातकीखंड, तेहने त्रिगुणा कीजिये ।
ह्वं छत्तीस सुमड, पूरवला पट मेलिये ॥
३८ जबूद्वीप ना दोय, लवणोदिध ना च्यार विल ।
ए पट भेल्या होय, वयालीस कालोदिध ॥
३६. इहविध सगलै ठाम, त्रिगुणा करिने पूर्वला ।
भेलीजै अभिराम, आगल द्वीप समुद्र में ॥
४० अर्थ विपे ए गाह, तिण अनुसारे म्हें कह्यो ।
मिलतो न्याय सुराह, सख्या द्वीप समुद्र नी' ॥

मिलतो न्याय सुराह, सख्या द्वीप समुद्र नी'।।

४१ <sup>†</sup>सेव भते <sup>|</sup> अर्थ जे अंक वाणुं तणो,
एकसौ नें गुणंतरमी ढाले सुजश घणो।
स्वाम भिक्खु भारीमाल राय ने प्रसाद है,
'जय-जश' हरप आनन्द गण अहलाद है।।
नवमशते द्वितीयोहे शकार्यः ।।६।२।।

३६. घायदमटे ' वारम चदा पर्भामिमु ''' (जीवा० ३।८०६)

३८ कालीए कालीए ण ममुद्दे वायालीम चदा प्रभाममु : (जीवा० ३।८२०)

४१ मेव भते ! सेव भते ! ति॥

(ज० स०)

ढाल: १७०

## सोरठा

१ द्वितीय उदेशा माहि, द्वीप तणी कहि वारता। अन्य प्रकारे ताहि, तेहिज तृतीय उद्देश हिव।।

#### दूहा

- २ नगर राजगृह जाव इम, वोल्या गोतम स्वाम । हे भगवत । किहा अछै, दक्षिण दिश्चि नो ताम ।। ३ एगोरुक जे मनुष्य नो द्वीप एगोरुक नाम । अतरद्वीप किहा कह्यो ? तव भाखै जिन स्वाम ।। ४ उत्तर दिश्चि मे पिण अछै, अतरद्वीप प्रसीध । इण कारण दक्षिण तणो, गोयम प्रश्न सुकीध ।। †अन्तरद्वीप वर्णन सुणो जी। (ध्रुपदं)
- ५ जबूढीप नामा द्वीप मे जी, मदरगिरि ने पिछाण। दक्षिण दिशा ने विषे अछै जी, इम चूलिहमवत गिरि जाण।। ६ ते चूलिहमवत वर्षधर गिरि, तेहने कूण ईशाण। तेह तणा चरिमात थी, छेहडा थकी पहिछाण।।
- ७ जवूद्वीप नी जगती थकी, ऊपर थइ कहिवाय । लवणसमुद्र प्रतै तिहा, ईशाणकूण रै माय ।।

\*लय : इण सरविरया री पाल †लय : वीर वखाणी राणी चेलणा जी

- १ द्वितीयोद्देशके द्वीपवरवक्तव्यतोक्ता, तृतीयेऽपि प्रकारान्तरेण सैवोच्यते । (वृ० प० ४२८)
- २,३. रायगिहे जाव एव वयामी— किंह ण भते । वाहिणित्वाण एगूरुयमणुस्साण एगूरुयदीवे नाम दीवे पण्णत्ते ?
- ४. 'दाहिणिरलाण' ति उत्तरान्तरद्वीपव्यवच्छेदार्थम् । (वृ० प० ४२८)
- ४,६ गोयमा । जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स ताहिणे ण चुल्लिहमवतस्स वासहरपव्वयस्स पुरित्यमिल्लाओ चरिमताओ ।
  - ७ लवणसमुद्द् उत्तरपुरित्यमे ण।

१० भगवती-जोड

- द. जोजन त्रिण सय उलिघये, दक्षिण दिशि तणो ताम । एगोरुक मनुष्य तणो इहा, द्वीप एकोरुक नाम।।
- ह. लांव विक्खभपणे कह्या, तीनसौ जोजन जेह ।जोजन नवसौ गुणचास नी परिधि किचित उणेह ।।
- १०.ते इक पद्मवरवेदिका, एक वन-खड करि तेह । द्वीप ते सर्व थी बीटियो, इत्यादि पाठ कहेह ॥
- ११. वेदिका ने वनखंड नु, वर्णन अधिक विशाल। इम एणे अनुक्रमे करी, जिम जीवाभिगम विषे न्हाल।।
- १२ जाव शुद्धदत द्वीपा लगै, जाव देवलोर्क मे जाण । जावणहार ते मनुष्य छै, हे श्रमण । आयुष्यमन । माण ।।
- १३ जाव शब्द मांहे आखियो, तेह सक्षेप कहेह । विल वर्णन कल्पवृक्ष नो, मनुष्य नो वर्णन जेह।।
- १४ ते सगलो किह्यू इहा, ते द्वीप नां मनुष्य अवधार । चतुर्थ भक्त आहारी अछै, पृथ्वी-रस पुष्प फल आहार ॥
- १५ ते द्वीप ना पृथ्वी नो रस अछै, खांड प्रमुख तणे तुल्य । गृहादिक अपर तिहा नथी, घर कल्पवृक्ष अमूल्य ।।
- १६ ते नर नों आयु पल्य तणो असख्यातमो भाग सुविशेख।
  छह मास आउ रहै थाकतो, जद जोडलो जनमै जी एक।।
- १७ इक्यासी दिन जोड़ला तणी, करै प्रतिपालना ताय । छीक वगासी करी मरी, ते सुरलोक मे जाय।।

वा०—वाचनातरे इम दीसै छे—एव जहा जीवाभिगमे उत्तरकुरुवत्तव्वयाए णेयव्वो, णाणत्त अट्ट घणुसया उस्सेहो चउसट्टी पिट्टकरडया अणुसज्जणा नित्यि ति ।

तिहा ए अर्थ — उत्तरकुरु ना मनुष्य नो त्रिण गाऊ नो शरीर मान कह्यो। इहा छप्पन अतरद्वीपा मनुष्य नो आठसै धनुष्य नो देहमान। विल उत्तरकुरु ना मनुष्या रै दो सौ छप्पन पृष्ठकरडक छै अने छप्पन अतरद्वीप ना नर ने चौसठ पृष्ठकरडक छै।

तथा उत्तरकुराए ण मते । कुराए कितिवधा मणुया अणुसज्जिति ? गोयमा । छिव्वहा मणुया अणुसज्जिति, त जहा—पउमग्वा, मियगधा अममा, तेतली सहा सणिचरा य । छ प्रकार ना मनुष्य कह्या । ते जाति ना अतरद्वीप ने विषे मनुष्य नथी । अतरद्वीप ने इहा तीन नानात्व स्थान कह्या । विल अनेरा पिण स्थित्यादिक मे नानात्व छ , किन्तु अभियुक्त करिक जाणवा । एकोहक द्वीप नो उद्देशो ।

# नवमशते तृतीयोद्देशकार्थः ॥६।३॥

ए वाचनातरे कह्यो —हिवै प्रकृत वाचना आश्रयी ने किहये छै। कठा ताइ, ए जीवाभिगम सूत्र इहा किह्यू ते कहै छै —जाव इत्यादिक ज्या लगै शुद्धदत द्वीप छै शुद्धदत नामै अठावीसमो अतरद्वीप नी वक्तव्यवा नाम लगै, तिका पिण कठा ताइ

१ जी० ३।६३१

- तिण्णि जोयणसयाइ ओगाहित्ता एत्य ण दाहिणि ल्लाण एगूरुयमणुस्साण एगूरुयदीवे नाम दीवे
   पण्णत्ते ।
- तिण्णि जोयणसयाइ आयाम-विक्ख भेण, नव एगूण-वन्ने जोयणसए किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण ।
- १० से ण एगाए पडमवरवेइयाए एगेण य वणसडेण सन्वओ समता सपरिविखत्ते ।
- ११ दोण्ह वि पमाण वण्णओ य । एव एएण कमेणं एव जहा जीवाभिगमे [३।२१७]।
- १२ जाव सुद्धदत्तदीवे जाव देवलोगपरिग्गहा ण ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो ।
- १३ इह च वेदिकावनखण्डकल्पवृक्षमनुष्यमनुष्यीवर्णकोऽ-भिधीयते । (वृ० प० ४२८)
- १४. तथा तन्ममुष्याणा चतुर्थभक्तादाहारार्थ उत्पद्यते, ते च पृथिवीरसपुष्पफलाहारा । (वृ० प० ४२६)
- १५. तत्पृथिवी च रसत खण्डादितुल्या, ते च मनुष्या वृक्षगेहा, तत्र च गेहाद्यभाव (वृ० प० ४२६)
- १६ तन्मनुष्याणा च स्थिति पल्योपमासख्येयभागप्रमाणा, पण्मासावशेषायुषश्च ते मिथुनकानि प्रसुवते । (वृ० प० ४२६)
- १७. एकाशीति च दिनानि तेऽपत्यिमयुनकानि पालयन्ति, उच्छ्वसितादिना च ते मृत्वा देवेषूत्पद्यन्ते ।

(वृ० प० ४२६)

वा०-वाचनान्तरे त्विद दृश्यते-एव जहा जीवाभिगमे \*\*\*\*

तत्रायमर्थं उत्तरकुरुषु मनुष्याणा त्रीणि गन्यूतान्युत्-सेध उक्त इह त्वष्टौ धनु शतानि, तथा तेपु मनु-ष्याणा हे शते पट्पञ्चाशदिधके पृष्ठकरण्डकानामुक्ते इह तु चतु पष्टिरिति ।

तथा 'उत्तरकुराए ण भते <sup>।</sup> इत्येव मनुष्याणामनु-पञ्जना तत्रोक्ता इह तु सा नास्ति, तथाविधमनुष्याणा तत्राभावात्, एव चेह त्रीणि नानात्वस्थानान्युक्तानि, सन्ति पुनरन्यान्यिप स्थित्यादीनि, किन्तु तान्यभियुक्तेन भावनीयानीति, अय चेहैकोरुकद्वीपोद्देशकस्तृतीय । (वृ० प० ४२६)

अथ प्रकृतवाचनामनुसृत्योच्यते—िकमन्तिमद जीवा-भिगमसूत्रमिह वाच्यम् ? इत्याह—'जावे' त्यादि 'यावत् शुद्धदन्तद्वीप शुद्धदन्ताभिषानाष्टाविशतित-

११

कहिनी ते कहै छै —'देवलोगपरिग्गहेत्यादि देवलोक नै विषे परिग्रह ते गमन छै जेहनो, ते देवलोकपरिग्रह देवगितगामी इत्यर्थ। अने उहा एक-एक अंतरद्वीप नै विषे एक-एक उद्देशक विल तिहा एको एक द्वीप नो उद्देशो कह्या पाछ चोथो आभा- सिक द्वीप नो उद्देशो, तिहा सूत्र पाठ—

किं ण भते । दाहिणिल्लाण आभासियमणुस्साण आभासियदीवे णाम दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पन्वयस्स दाहिणेण चुल्लिहमवतस्स वासधरपन्वयस्स पुरित्यमिल्लाओ चिरमताओ दाहिणपुरित्यमिल्लेण लवणसमुद्द तिण्णि जोयणसयाः ओगाहित्ता एत्य ण दाहिणिल्लाण आभासियमणुस्माणं आभासियदीवे णाम दीवेपण्णत्ते ।

बीजू एको हक द्वीप नी परै जाणवो।

# नवमशते चतुर्थोद्देशकार्थः ॥६।४॥

इम वैपाणिक द्वीप नो पचमो उद्देशो पिण। णवर दक्षिण पश्चिम ना चरिमात थकी - एतलै नैहत कूण थी।

# नवमशते पंचमोद्देशकार्थः ॥६।५॥

इम लागूलिक द्वीप नों उद्देशो छठो पिण। णवर उत्तर अने पिष्चम ने चरिमात थकी — एतलै वायच्य कूण थी।

# नवमशते षष्ठोद्देशकार्थः ॥६।६॥

इम हयकर्ण द्वीप नो उद्देशो पिण। णवर एकोरुक ना उत्तर पूर्व चरिमात थकी --- एतल ईशाणकूण थकी लवणसमुद्र च्यारमी योजन अवगाहीजे, तिवार च्यारसी योजन नो लाम्बो-पहुलो हयकर्ण द्वीप छै।

## नवमशते सप्तमोद्देशकार्थ ।।१।७।।

इम गजकर्ण द्वीप नो उदेशक पिण। णवर ए आभामिक द्वीप ना उक्षिण पूर्व ना चरिमात यकी --एतलै अग्निकूण थी च्यारसौ योजन लवणसमुद्र अवगाहीजै तिवारै च्यारसौ योजन नो लावो-पहुलो गजकर्ण द्वीप छै।

# नवमशते अध्टमोद्देशकार्थः ॥६।८॥

इम गोकर्णद्वीप नो उद्देशो पिण। णवर वैपाणिक द्वीप ने दक्षिण पश्चिम ना चरिमात यकी लवणसमुद्रे च्यारसी योजन अवगाहियै। निहा गोकर्ण द्वीप। शेप हय-कर्ण द्वीप सरीखो जाणवो।

# नवमशते नवमोद्देशकार्थः ॥६।६॥

इम शष्कुलिकणं द्वीप नो उद्देशो पिण । णवर लागूलिक द्वीप ना उत्तर अपर चरिमात थी —एतलै वायव्य कूण थी । शेप हयकणं सरीखो ।

# नवमशते दशमोद्देशकार्थः ॥६।१०॥

इम आदर्शमुख द्वीप, मेढमुख द्वीप, अयोमुख द्वीप, गोमुख द्वीप ए च्यार, ते हयकर्णादिक च्यार द्वीप छै, तेहने अनुक्रमे ईशाण, अग्नि, नैरुत, वायव्य कूण ना चरिमात थकी पाचमी योजन लक्षणसमुद्र अवगाही ने पाचसी जोजन लावा-चोडा, ते प्रतिपादक च्यार उद्देशा हुवै इति ।

# नवमशते एकादशादारभ्याचतुर्दशोद्देशकार्थः ॥६।११-१४॥

गान्तरद्वीपवक्तन्यता यावत्, साऽिष कियद्दूर याव-द्वाच्या ? उत्याह—'देवलोकपरिगाहे' त्यादि, देव-लोक. परिग्रहो येपा ते देवलोकपरिग्रहा. देवगित-गामिनः इत्यर्थं, उह चैकैकिस्मिन्नन्तरद्वीपे एकैक उद्देशक. तत्र चैकोककद्वीपोद्देशकानन्तरमाभागिकद्वीपो-देशक तत्र चैव सूत्र। (वृ० प० ४२६)

मेस जहा एगूरुयाण । (जी० ३।२१६)

एव वैपाणिकद्वीपोद्देणकोऽपि नवरदक्षिणापराच्चर-मान्तादिति पञ्चम'। (वृ० प० ४२६)

एव लागूलिकद्वीपोद्देशकोऽपि नवरमुत्तरापराच्चर-मान्तादिति पष्ट.। (वृ० प० ४२६)

एव हयकर्णद्वीपोद्देशको नवरमेकोरुकस्योन्तरपौरस्त्या-च्चरमान्ताल्लवणसमुद्र चत्वारि योजनज्ञतान्यवगाद्य चतुर्योजनज्ञतायामविष्कम्भो हयकर्णद्वीपो भवतीति सप्तमः। (वृ० प० ४२६)

एव गजर्मणं द्वीपोद्देशकोऽपि, नवर गजकणं द्वीप आभा-सिकद्वीपस्य दक्षिणभी रस्त्याच्चरमान्ताल्लवणममुद्र-मवगाद्य चत्वारि योजनशतानि हयकणं द्वीपनमो भवतीत्यप्टम। (वृ० प० ४२६)

एव गोकर्णहोपोद्देशकोऽपि, नवरमसौ वैपाणिकहीपस्य दक्षिणापराच्चरमान्तादिति नवम ।

(वृ० प० ४२६)

एव शब्कुलीकर्णद्वीपोद्देशकोऽपि, नवरमसौ लागूलिक-द्वीपस्योत्तरापराच्चरमान्तादिति दशम ।

(वृ० प० ४२६)

एवमादर्शमुखद्वीपमेण्ढ्रमुखद्वीपायोमुखद्वीपगोमुखद्वीपा हयक्रणांदीना चतुर्णां क्रमेण पूर्वोत्तरपूर्वदक्षिणदक्षिणा-परापरोत्तरेम्यश्चरमान्तेम्य पञ्च योजनशतानि लवणोदिधमवगाद्य पञ्चयोजनशतायामिविष्कम्भा भवन्ति, तत्त्रतिपादकाश्चान्ये चत्वार उद्देशका भवन्तीति। (वृ० प० ४२६) एहिज आदर्शमुखादिक ने ईशाण, अग्नि, नैरुत वायव्य कूण ना चरिमात थकी छ सौ जोजन लवणसमुद्र अवगाही ने छ सौ योजन लावा-चोडा अनुक्रम करिकै अश्वमुख द्वीप, हस्तिमुख द्वीप, सिंहमुख द्वीप, व्याघ्रमुख द्वीप हुवै, ते प्रतिपादक अनेरा च्यार उद्देशा हुवै इति ।

# नवमशते पंचदशोद्देशकादारभ्याष्टादशोद्देशकार्थः ॥६।१५-१८॥

एहिज अश्वमुखादिक ने तिमहिज अनुक्रमे ईशाणादिक च्यार विदिशि ना चिरमात थकी सात सौ योजन लवणसमुद्र अवगाही ने सातसौ जोजन लावा चोडा अश्वकर्ण द्वीप, हस्तिकर्ण द्वीप, अकर्ण द्वीप, कर्णत्रावरण द्वीप हुवै, ते प्रतिपादक विल अनेरा च्यारहीज उद्देशा इति।

# नवमशते एकोनिवशिततमोद्देशकादारभ्याद्वाविशतितमोद्देशकार्थः

ાાહા ૧૯-૨૨ાા

एहिज अश्वकणीदिक ने तिमहिज अनुकमे ईशाणादिक च्यार विदिशि ना चिरमात थकी आठ सौ योजन लवणसमुद्रे अवगाही ने आठ सौ योजन लावा-चोडा उल्कामुख द्वीप, मेघमुख द्वीप, विद्युन्मुख द्वीप, विद्युह्त द्वीप हुवै, ते प्रतिपादक विल अनेरा च्यार हिज उद्देशा इति ॥

# नमवशते त्रयोविशतितमोद्देशकादारभ्याषड्विशतितमोद्देशकार्थः

ાાદારરૂ-રદ્દાા

एहिज उल्कामुख द्वीपादिक ने तिमहिज अनुक्रमे ईशाणादिक च्यार विदिशि ना चरिमात थकी नो सौ योजन लवणसमुद्र अवगाही ने नो सौ योजन लावा-चोडा घनदत द्वीप, लष्टदत द्वीप, गूढदत द्वीप, शुद्धदत द्वीप हुवै, ते प्रतिपादक वली अनेरा च्यारहीज उद्देशा। इहा तीसमो शुद्धदत उद्देशक इति।।

तया पन्तवणा रा अर्थ में एहवूं कह्यु—छप्पन अतरद्वीप हुवै अनै इहा अहावीस कह्या, ते किम ? जे चुल्लहिमवत वर्षधर पर्वत ने विषे पूर्व पश्चिम ने दिशि जेहवा जे प्रमाणे जेतले अतर जे नाम अठावीस अतरद्वीप छै, तेहवा ते प्रमाणे तेतले अतर ते नामें अठावीस अतरद्वीप छै, तेहवा ते प्रमाणे तेतले अतर ते नामें ज शिखरीपर्वत ने पूर्व पश्चिम पिण अट्ठावीस अतरद्वीप छै, वे मिली छप्पन थावे। ते भणी सदृशपणा माटै इहा अठावीसज कह्या। हिवै ए द्वीप न विवरण काइक लिखिये छै—

इहा जबूद्दीप ने विषे भरतक्षेत्र ने सीमाकारी एक सत योजन ऊचो, पच-वीस योजन ऊडो, एक हजार ने वावन योजन अने वार कला-एतलो पहुलो, पूर्वापर लवणसमुद्र पर्यंत लावो सुवर्णमय चुल्लिह्मवत नामा वर्षधर पर्वंत छै। तिण पर्वत ने वे छेहडै पूर्व पिच्चमे लवणसमुद्र माहे गजदताकारे वे दाढा नीकली छै। वे पूर्वे वे पिच्चमे-एव च्यार दाढा छै। तिहा पूर्व दिशि ईशाणकूणे नीकली जे दाढा तेहने विषे चुल्लिह्मवत ना छेहडा थी तिण सौ जोजने एकोरुक नामा द्वीप छै त्रिण सौ योजन लाबु-पहुलो, वृत्ताकारे नवसौ गुणपचास योजन कायक ऊणी

विल हिमवत ना छेहडा थी पूर्व दिशे अग्निकूणे जे दाढा छै तेहने विषे त्रिण सौ योजने आभासिक नामा द्वीप छै एकोरुक प्रमाण ।

वली पिचम दिशि नैरुत कूणे जे दाढा छै, तेहने विषे हिमवत नां छेहडा षी त्रिण सौ योजने वैषाणिक नामा द्वीप छै एकोरुक प्रमाण।

विल पश्चिम दिशि वायन्य कूणे जे दाढा छै, तेहने विषे हिमवत ना छेहडा थी त्रिण सौ योजने नगोलिक नामा द्वीप छै एको रुक प्रमाण।

एतेपामेवादर्शमुखादीना पूर्वोत्तरादिम्यरचरमान्तेम्य पड् योजनशतानि लवणसमुद्रमवगाह्य पड्योजनशता-यामविष्कम्भा ऋमेणाश्वमुखद्वीपहस्तिमुखद्वीपर्सिह-मुखद्वीपव्याझमुखद्वीपा भवन्ति, तत्त्रतिपादकाश्चान्ये चत्वार उद्देशका भवन्तीति। (वृ० प० ४२६)

एतेपामेवाण्वमुखादीना तथैव सप्त योजनशतानि लवणसमुद्रमवगाह्य सप्तयोजनशतायामविष्कम्भा अश्वकर्णद्वीपहस्तिकर्णद्वीपकर्णप्रावरणद्वीपा प्रावरण-द्वीपा भवन्ति, तत्प्रतिपादकाश्चापरे चत्वार एवोद्देशका इति । (वृ० प० ४२६)

एतेपामेवाश्वकर्णादीना तथैवाष्टयोजनशतानि लवण-ममुद्रमवगाह्याष्टयोजनशतायामविष्कम्भा उल्कामुख-द्वीपमेघमुखद्वीपविद्युन्मुखद्वीपविद्युद्दन्तद्वीपा भवन्ति, तत्प्रतिपादकाश्चान्ये चत्वार एवोद्देशका इति । [(वृ० प० ४२६, ४३०)

एतेपामेनोल्मामुखद्वीपादीना तथैन नन योजनशतानि लनणसमुद्रमनगाह्य ननयोजनशतायामनिष्कम्भा घनदन्तद्वीपलष्टदन्तद्वीपगूढदन्तद्वीपशुद्धदन्तद्वीपा भनन्ति, तत्त्रतिपादकाश्चान्ये चत्नार एनोद्देशका इति, एनमादितोऽत्र तिशक्तम शुद्धदन्तोद्देशक ॥ (वृ० प० ४३०)

१३

१ यह समग्र वर्णन जीवाभिगम की तीसरी प्रतिपत्ति में प्राप्त होता है। वहा अन्तर द्वीपों के वर्णन में १७वा द्वीप अरुवकर्ण है और १०वा द्वीप सिहकर्ण है। पन्नवणा (१।०६) में भी यही कम है। भगवती की वृत्ति में सिहकर्ण द्वीप के स्थान पर हस्तिकर्ण द्वीप है। यह कम ठाण (४।३२५) से मिलता है। इससे आगे वृत्ति में कर्णप्रावरण द्वीप और प्रावरण द्वीप का उल्लेख है। इसका मेल न तो जीवाभिगम, पन्नवणा और ठाण के साथ है और न ही जयाचार्य द्वारा लिखित वात्तिक के साथ है। सम्भव है भगवती की वृत्ति के मुद्रणकाल में यह प्रमाद हुआ हो। जयावार्य ने किसी हस्तलिखित प्रति के आधार पर अथवा ठाण के आधार पर यह वार्तिक लिखा हो, ऐसा भी हो सकता है।

इम ए च्यार द्वीप हिमवत ने च्यार कोणे च्यार दाढा ने विषे सरीये प्रमाणे हैं। ए च्यार द्वीप केंडे च्यार सौ योजने अने जबूद्वीप नी जगती थकी पिण च्यार सौ-च्यार सौ योजने हयकणं, गयकणं, गोकणं, झष्कुलिकणं ए च्यार द्वीप छै। च्यार सौ योजन लावा-पहुला, वृत्ताकारे वार मौ पैसठ योजन परिचि., यथा एकोक्क केंद्रे हयकरण, आभामिक केंडे गजकणं, वैपाणिक केंद्रे गोकणं, नागोलिक केंद्रे शष्कुलिकणं—इणी पर मर्वत्र जाणव् ।

ए हयकणीिद च्यार द्वीप केट पाच सौ योजन अने जगती थकी पिण पाच सौ-पाचनी योजन आदर्गमुखद्वीप, मिंढमुख द्वीप, अयोमुख द्वीप, गोमुख द्वीप --ए च्यार द्वीप छै। पाचसौ-पाचनौ योजन लावा-पहुला वृत्ताकारे, पनरे सौ एउयाभी योजन परिचि। विल ए आदर्शमुखदि च्यार द्वीप केट छह मौ-छह मौ योजने अने जगती थी पिण छह सौ-छह मौ योजने अश्वमुख, हस्तिमुख, मिंहमुख, व्याध्रमुख ए च्यार द्वीप छै। छहमौ-छहसौ योजन लावा-पहुला वृत्ताकारे, अठारे मौ मत्ताणु योजन परिचि।

विल ए अश्वमुखादि च्यार द्वीप केर्ड सातमी-मातमी योजन, जगती यकी पिण सातमी-मातसी योजने अश्वकणं, सिंहकणं, अक्रणं, कर्णप्रावरण -ए च्यार द्वीप छै। मातसी-मानमी योजन लावा-पहुला वृत्ताकारे, वावीम भी तेर्र योजन परिधि।

वित ए अञ्चकणींदि च्यार द्वीप केई आठमी-आठमी योजने जगती थकी पिण आठसी आठमी योजने उल्कामुख, मेघमुख, विद्युत्मुख, विद्युद्तं —ए च्यार द्वीप छै। आठसी योजन लावा-पहुला वृत्ताकारे, पचवीमसी गुणत्रीम योजन परिचि।

विल ए उल्कामुख मेघमुखादि च्यार द्वीप केंडे नवमी-नवमी योजने जबूद्वीप नी जगती थकी पिण नवसी-नवमी योजने घनदत, लट्टदत, गूददत युद्धदंत—ए च्यार द्वीप छै। नवमी योजन लावा-पहुला वृत्ताकारे, अट्टावीममी पैतालीस योजन परिचि। एतले चूलहेमवत पर्वत नी च्यार दाढा एह अट्टावीस द्वीप छै। उम शिखरी पर्वत ने विषे पिण अठावीम द्वीप छै। एवं छप्पन अंतरद्वीप जाणवा।

एह सर्व द्वीप प्रत्येके-प्रत्येके पद्मवरविदिकाए अने वनखडे परिवेध्टित महा-रमणीक छै। एहनो वर्णन जीवाभिगम' सूत्र थी विशेष जाणवो। ते द्वीप ने विषे युगिनया मनुष्य छै। ते मनुष्य ना अत्यत महामुदर रूप छै। पिण द्वीप ना नाम जेहवा आकारे नथी। जे भणी श्री जीवाभिगम सूत्र ने विषे एहना रूप मवल देवता थी अधिक वखाण्यो छै अने अत्यत मुखी छै। ते मनुष्य ने आठमी धनुष्य ऊंचपणै शरीर अने पत्थोपम नो असन्यातमो भाग आजलो हुवै। यत —

> अंतरदीवेमु नरा घणुसय अद्धिमया मया मुझ्या । पार्तिति मिहुणघम्म पल्लस्म असलभागाओ ॥१॥ चउसिंहु पिटुकरङगाणि मणुआण वच्चपालणया । अअषुणामीङ तु दिणा चउत्यभत्तेण आहारो त्ति ॥२॥

#### सोरठा

- १८ वृत्ति विषे ए वात, गिरि पर अतरहीप छै। धर्मसीह आख्यात, लवणोदिध अतर अछै।।
- १६ \*इम अठवीसज आखिया, अतरद्वीप ना ताय। लावपणे ने विक्खभपणे, पोता-पोता ना कहिवाय।।

१६. एव अट्ठावीम वि अतरदीवा मएण सएण आयाम-विक्लंभेण भाणियव्या।

<sup>\* :</sup> वीर वखाणी राणी चेलना जी

१. जी० ३।२१६-२२७

२. अभियान राजेन्द्र कोश भाग० १ पृ ६७

<sup>-</sup>१४ भगवती-जोह

२०. णवरं जे इतलो विशेष छै, इक-इक द्वीप नो जोय।
सहु अठवीस उद्देसगा, सेवं भते ।
२१. नवम शत उद्देशो तीसमो, इकसौ सित्तरमीं ए ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' हरष विशाल।।

नवमशते सप्तविंशतितमोद्देशकादारभ्यात्रिंशत्तमोद्देशकार्थः ॥६।२७-३०॥

२० नवर दीवे दीवे उद्देसओ, एव सब्वे वि अड्डावीस उद्देसगा ॥ सेव भते । सेव भते । ति (श० ६।७,८)

ढाल: १७१

## सोरठा

१ कह्या अर्थ ए सार, ते तो श्री जिन धर्म थी। जाणे अधिक उदार, अणसुणियो पिण को लहै।। २ इत्यादिक जे अर्थ प्रतिपादन रै कारणे। कहियै हिवै तदर्थ, उद्देशक इकतीसमो।।

### दूहा

- ३ नगर राजगृह जाव इम, बोल्या गोयम स्वाम। धर्मफलादिक वचन प्रभु! अणसांभलिया ताम।।
- ४ केवलज्ञानी जिण तणे पासै सुणियो नाय । धर्म केवली-भाखियो, श्रवणपणे करि पाय ॥

## सोरठा

५.श्रवणपणे करि ख्यात, भाव धर्म सुणवा तणां।
एहवू अर्थ जणात, वदै केवली तेह सत्य।।
६.श्रवण रूप कहिवाय, वंछा रूप लहै जिको।
वंछै धर्म सुहाय, ते पिण जाणे केवली।।

## दूहा

- ७ तथा केवली नैं जिणे, स्वयमेव प्रश्न पूछेह। पुनः केवली पै सुण्यो, केवली श्रावक तेह।
- इमज केवली नी जिका, तत श्राविका ताम ।
   ए बिहु पै अणसाभल्यां, धर्म लहै अभिराम ।।
   १. सेव केवली नी करै, अन्य भणी कथ्यमान ।
   सुण धारै ते जिण तणो, कह्यो उपासग जान ।।

- १ उक्तरूपाश्चार्था केवलिधर्माद् ज्ञायन्ते त चाऽश्रुत्वाऽिप
   कोऽिप लभते । (वृ०प० ४३०)
- २ इत्याद्यर्थं प्रतिपादनपरमेकत्रिशत्तममुद्देशकमप्याह— (वृ० प० ४२६)
- ३ रायगिहे जाव एव वयासी—असोच्चा ण भते । अश्रुत्वा—धर्मफलादिप्रतिपादकवचनमनाकर्ण्यं (वृ० प० ४३२)
- ४ केवलिस्स वा। 'केवलिन' जिनस्य। (वृ० प० ४३२)

- ७ केवलिसावगस्स वा ।
  'केवलिसावगस्स व' ति केवली येन स्वयमेव पृष्टः
  श्रुत वा येन तद्वचनमसौ केवलिश्रावकस्तस्य ।
  (वृ० प० ४३२)
- केविलसावियाए वा ।
- केवलिजनासगस्स वा ।
   'केवलिजनासगस्स व' त्ति केवलिन जपासना विद्धा नेन केवलिनैवान्यस्य कथ्यमानं श्रुत येनासौ कंवल्यु पासक ।
   (वृ० प० ४३२)

मा० ६, उ० ३०,३१, ढाल १७०,१७१ १५

- १०. इमज केवली नी जिका, उपासगा गुणग्वान।
  ए विहुं पै अणसाभल्या, धर्म लहै मुध मान।।
  ११. अथवा केवली-पाक्षिक, स्वयंवुद्ध कहिवाय।
- ११. अथवा केवला-पाक्षिक, स्वयवुद्ध काहवाय। ते पासे सुणियां विना, लहै धर्म मुखदाय॥
- १२ तथा स्वयवुद्ध नो जिको. श्रावक गुण नी राग । स्वयंबुद्ध नी श्राविका, अणसुणिय विहु पास ॥
- १३. उपासग स्वयंबुद्ध नो, उपासगा विल ताय। ए विहुं पे सुणियां विना, धर्म पामवु थाय।।
- १४ ए दश पे सुणिया विना, केवली भाख्यो धर्म। श्रुत ने चारित्र रूप लहै, श्रवण रूप करि पर्म॥
- १५. जिन भार्षे यां दश कने, सुणिया विण जिन धर्म। सुणवो कोइक पामियै, कोइक न लहै मर्म॥
- १६. किण अर्थे प्रभु ! इम कह्यो, विण सुणियं दश पास । कोडक धर्म सुणवो लहै, कोडक न लहै तास ?
- १७. मिलन भाखे सुण गोयमा! ज्ञानावरणी कर्म काइ क्षयोपणम जिण की थो, हो लाल। ते दणु पास सुण्या विना, धर्म केवली भाख्यो कांड सुणवो पामै सी थो, हो लाल।।

- १८ इहा बहु वच सवादि, नाणावरणिज्जा कह्यो। मति ज्ञानावरणादि, बहु भेदे करि जाणवु॥
- १६. फुन अवग्रह पिछाण, मित आवरणादिक तणा। भेद करीने जाण, ते वहु भावपणां थकी॥
- २० क्षयोपशम वहु भेद, तेह तणा आवरण थी। वहुवच करि सवेद, ज्ञानावरणी ने कह्य ॥
- २१. \*ज्ञानावरणी क्षयोपशम निंह कियो, ते दश पै विण सुणिये काइ जिन धर्म सुणवो न पावै। तिण अर्थे कह्यो विण सुण्यो, धर्म सुणवो कोइ पावै कोडक रै श्रवण न आवै।।

#### सोरठा

२२. गिरि-सरिता पापाण, तेह घोलणा न्याय करि । कोइक नै पहिछाण, पामै धर्मज इहविधे ॥ २३. क्षयोपणमईज जेह, अतरंग कारण तस् । जिनोक्त धर्म लहेह, श्रवणरूप भावे करी।।

"लय: पातक छानो नवि रहै

- १०. केवलिडवागियाण् वा ।
- ११. तण्पित्ययम्म वा । 'तण्पित्ययम्म' त्ति केवित्तिन पाक्षिकस्य स्वयंबुद्धस्य । (यू० प० ४३२)
- १२ तप्पतिगयमावगस्म वा, तप्पतिप्ययमावियाए वा ।
- १३ तापित्यउवासगस्य वा, तप्पतिसयउवासियाए वा ।
- १४. केविनपण्णत्त धम्म तभेज्ज सवणयाए ?
  'धम्म' ति श्रुतचारित्रमपं 'नभेज्ज' ति प्राप्तुयात्
  'सवणयाए' ति श्रवणतया श्रवणमपतया श्रोतुमित्यथं.। (वृ० प० ४३२)
- १५. गोयमा । अमोच्चा ण केविनरम या जाव तप्प-निषयज्वानियाए वा अत्थेगितए केविनिपण्णत्तं धम्मं नभेज्ज मवणयाए, अत्थेगितए केविनिपण्णत्तं धम्म नो लभेज्ज सवणयाए। (शा० ६।६)
- १६ में केणट्ठेणं भते । एव वुच्चउ-अमोच्चा णं जाव नो लभेजज सवणयाए ?
- १७. गोयमा । जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माण पञ्जोवसमे कडे भवड मे णं असोच्चा केवलिस्म वा जाव तप्पत्रिययखवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म नभेज्ज मवणयाए ।
- १८-२०. 'नाणायरणिज्जाण' ति बहुवचन ज्ञानावरणीयस्य मितज्ञानावरणादिभेदेनावग्रहमत्यावरणादिभेदेन च वहुत्वात् । (वृ० प० ४३२)
- २१ जस्स ण नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवद से ण अमोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पनिखयजवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म नो लभेज्ज सवयणाए। से तेणट्ठेणं गोयमा! एव बुच्चइ—असोच्चा ण जाव नो लभेज्ज सवणयाए। (श० ६।१०)
- २२. ज्ञानावरणीयस्य क्षयोपगमश्च गिरिसरिदुपलघोलना-न्यायेनापि कस्यचित्स्यात् । (वृ० प० ४३२)
- २३. तत्सद्भावे चाश्रुत्वाऽपि धर्मं लभते श्रोतु, क्षयो-पगमस्यैव तल्लाभेऽन्तरङ्गकारणत्वादिति।

(वृ० प० ४३२)

२४. 'हे प्रभु! दश पे सुणियां विना,
केवल शुद्ध सुजाणी कांइ वोध सम्यक्त्व सुपावै ?
प्रत्येक बुद्धादिक नी परै,
जिन कहै कोइक पावै कोइक रै वोध न आवै।।
२५ किण अर्थे ? तव जिन कहै,
दर्शणावरणी कर्मज कांइ क्षयोपशम जिण कीधो।
ते दश पे सुणिया विना,
सम्यक्दर्शण शुद्धज अनुभवै लहै ते सीधो।।

२६ दर्भणावरणी क्षयोपशम नींह कियो, ते दश पे विण सुणियां सम्यक्त्व न पावै कोई । तिण अर्थे कह्यो विण सुण्यो, कोइक बोधज पावै कोइक नै बोध न होई ।।

#### सोरठा

आवरणी कर्म सोय, ए। तास २७ दर्शन सम्यक्तव पिण दर्शणावरणी नही ॥ मोहनी जोय, दर्शण तेहनो क्षयोपशम, थया। २८ दर्शणावरणी कमं, छै ॥ वोधि सुमर्म, सम्यक्त लहै सम्यक्तव तेहने । बोधि २६ सम्यक्दर्शणहीज, कहीजै बोधि पर्याय सम्यक्त्व नो ॥ माटैज कहीज, ३० के प्रभु! दश पै सुण्या विना, अणगारपणो ते पावै। सपूर्ण केवल शुद्ध जिन कहै दश पै सुण्या बिना, कोइक साधु थावै कोइक मुनिपणो न भावै।।

३१. किण अर्थे ? तव जिन कहै, धर्म अतराय कर्म काइ क्षयोपशम जिण कीधो। ते दश पे सुणिया विना, केवल शुद्ध सपूर्ण मुंड थई मुनि ह्वं सीधो।।

#### सोरठा

, 4Tm

३२. धर्म चारित्र प्रतिपत्ति, तास विघ्नकारक जिको। चारित्र-मोह कथत्ति, सर्वविरित आवा न दै॥

\*लय : पातक छानो नवि रहै

२४,२५. असोच्चा णं भते । केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल वोहिं वुज्भेज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगतिए केवल वोहिं वुज्भेज्जा अत्थेगतिए केवल वोहिं नो वुज्भेज्जा । (श० ६।११)
मे केणट्ठेण भते । गोयमा । जस्स ण दिरसणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण
असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए
वा केवल वोहिं वुज्भेज्जा ।

'केवलं वोर्हि' ति शुद्ध सम्यग्दर्शन 'वुज्भेज्ज' त्ति बुद्ध्येतानुभवेदित्यर्थं यथा प्रत्येकबुद्धादि ।

(वृ०प० ४३२)

२६. जस्स ण दिरसणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्प-विखयउवासियाए वा केवल वोहिं नो बुज्भेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा। एव वुच्चड— असोच्चा ण जाव केवल बोहिं नो बुज्भेज्जा। (श० १।१२)

२७,२८ 'दरिसणावरणिज्जाण' ति इह दर्शनावरणीय दर्शनमोहनीयमभिगृह्यते, बोधे सम्यग्दर्शनपर्यायत्वात् तल्लाभस्य च तत्क्षयोपशमजन्यत्वादिति ।

(वृ० प० ४३२)

३० असोच्चा ण भते । केवलिस्स वा जाव तप्पविखय-उवासियाए वा केवल मुडे भिवत्ता अगाराओ अण-गारिय पव्वएज्जा ? गोयमा । असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पविखय-उवासियाए वा अत्थेगतिए केवल मुडे भिवत्ता अगाराओ अणगारिय पव्वएज्जा अत्थेगतिए केवल मुडे भिवत्ता अगाराओ अणगारिय नो पव्वएज्जा।

् (श० ६।१३) 'केवला' शुद्धा सम्पूर्णा वाऽनगारितामिति योगः । (वृ० प० ४३२)

३१ से केणट्ठेण भते । ....
गोयमा । जस्स ण घम्मतराइयाण कम्माण खओवसमे कडे भवति से ण असोच्चा केविलस्स वा जाव
तप्पिक्खयउवासियाए वा केवल मुडे भिवत्ता अगाराओ अणगारिय पव्वएज्जा ।

३२,३३. 'घम्मतराइयाण' ति अन्तरायो—विघ्न सोऽस्ति येषु तान्यन्तरायिकाणि घम्मेंस्य—चारित्रप्रतिपत्ति-लक्षणस्यान्तरायिकाणि घम्मोन्तरायिकाणि तेषा ३३ तास क्षयोपशम थाय, मुड थई लहै मुनिपणो।
एहवू न्याय जणाय, वीर्य अतराय वृत्ति मे।।
३४ \*धर्म अतराय कर्म जिणे,
क्षयोपशम नहि कीधो अणगारपणो तसु नावै।
तिण अर्थे कह्यो विण सुण्यो,
कोडक तो मुनि थावै कोडक मुनिपणो न भावै।

#### सोरठा

३७ चरित्तावरणी जाण, लक्षण पु - वेदादि छै। मिथुन-विरति पहिछाण, विशेष थी ग्रहिवू इहा।।

३८ \*चिरतावरणी कर्म जिण,
क्षयोपशम निह कीधो ते ब्रह्मचर्य निह पालै।
तिण अर्थे इम आखियो,
विण सुण्या ब्रह्म कोइ पालै काइ कोइ मिथुन निह टालै।।
३६. हे प्रभु ! दश पै सुण्यां विना,
संजम शुद्धज पालै काइ अतिचार टालेवा।
जतना विशेष तिणे करी,
जिन कहै कोडक पामै कोडक निह पामेवा।।

४०. किण अर्थे । तव जिन कहै, जयणावरणी कर्मज कांड क्षयोपशम जिण की धो। ते दश पास सुण्यां विना, जाव केवल चारित्र ने अति जतना पामै सी धो।।

४१ जयणावरणी क्षयोपशम नहिं कियो, ते दश पे विण सुणिया नहिं पामै जतना नामैं। तिण अर्थे कह्यो विण सुण्यां, कोडक सजम पामै कोडक संजम न पामै।। वीर्यान्तरायचारित्रमोहनीयभेदानामित्यर्थः ।

(वृ० प० ४३२,४३३)

३४ जस्स ण धम्मतराइयाणं कम्माण खओवसमे नो कडे भविति से ण अकेवल मुडे भिवत्ता अगाराओ अणगारिय नो पव्यएज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एव वुच्चड असोच्चा ण जाव केवल मुडे भिवत्ता अगाराओ अणगारिय नो पव्यएज्जा। (श० ६।१४)

३५ असोच्चा ण भते । केवलिस्स वा जाव तप्पिक्खय-जवासियाए वा केवल वभचेरवास आवसेज्जा? गोयमा। अत्येगितए केवल वभचेरवास आवसेज्जा, अत्थेगितए केवल वभचेरवास नो आवसेज्जा। (श० ६।१५)

३६ से केणट्ठेण भंते । ...... गोयमा । जस्स ण चरित्तावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवड से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पिक्षयउवासियाए वा केवल वभचेरवास आवसेज्जा।

३७ 'चरित्तावरणिज्जाण' ति इह वेदलक्षणानि चारित्रा-वरणीयानि विशेषतो ग्राह्याणि, मैथुनविरतिलक्षणस्य ब्रह्मचर्यवासस्य विशेषतस्तेषामेवावारकत्वात् ।

(वृ० प० ४३३)

३८ जस्स ण चिरत्तावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कढे भवड से ण वभचेरवास नो आवसेज्जा से तेणट्ठेण गोयमा । एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल वभचेरवास नो आवसेज्जा। (श० ६।१६)

३६ असोच्चा ण भते । केवलिस्स वा जाव तप्पविश्वय-उवासियाए वा केवलेण सजमेण सजमेज्जा ? गोयमा । ... अत्थेगतिए केवलेण सजमेण सजमेज्जा, अत्थेगतिए केवलेण सजमेण नो सजमेज्जा।

(মৃ০ ६।१७)

इह सयम प्रतिपन्नचरित्रस्य तदितचारपरिहाराय यतनाविशेष । (वृ० प० ४३३)

४० मे केणट्ठेण भते । एव वुच्चइ : .... गोयमा । जस्स ण जयणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पविखयउवासियाए वा केवलेण सजमेण सजमेज्जा।

४१ जस्म ण जयणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्प-क्खियउवासियाए वा केवलेण सजमेण नो मंजभेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा । एव वुच्चइ— अमोच्चा ण जाव केवलेण मजमेण नो सजमेज्जा। (श० ६।१८)

<sup>&</sup>lt;sup>३</sup>लय: पातक छानो निव रहै

४२. हे प्रभु ! दश पे सुण्या विना,
केवल शुद्ध सपूर्ण संवर करि आतम भावे।
संवर शब्दे शुभ अध्यवसाय छै,
जिन कहै कोडक भावे कोइक सवर न पावे॥

४३. किण अर्थे ? तव जिन कहै,
अध्यवसायावरणी कर्म क्षयोपश्यम थाये।
इहां भाव चारित्रावरणी कह्यो,
ते विण सुण्या प्रवर्त्ते संवर शुभ अध्यवसाये॥

## सोरठा

करि । चारित्ररूपपणें शुभ ्अध्यवसाय, ४४. आख्या ताय, चारित्रावरणी आवरणी मे ॥ तसु ४५. 'कर्म रूधण रा सार, अध्यवसाय संवर जोगा थो न्यार, बुद्धिवंत न्याय विचारज्यो ॥ त्रिहु जेहनो । कहाय, चंचल ४६. जोग स्वभाव व्यापार सुखदाय, स्थिर स्वभाव है तेहनों ॥ गुण संवर ठाणे' समवाअंगर पेख, फुन ४७. पचम अजोग संवर लेख, पिण सवर शुभ जोग नहिं'।। (ज० स०)

४८. \*अध्यवसायावरणी कर्म नो, क्षयोपशम नहि कीधो तसु शुद्ध सवर नहि होई। तिण अर्थे कह्यो विण सुण्या, कोइक सवर लहियै नहि पामै सवर कोई।।

४६. हे प्रभु ! दश पे सुण्यां विना,
केवल आभिनिवोधिक ए प्रवर ज्ञान उपजावे ?
जिन कहै दश पे सुण्या विना,
आभिनिवोधिक ज्ञानज कोइ पावे को निहं पावे ॥

५०. किण अर्थे ? तब जिन कहै,
आभिनिवोधिक ज्ञानावरणी क्षयोपशम की घो।
ते दसु पे सुणियां विना,
केवल शुद्ध संपूर्ण आभिनिवोधिक लहै सी घो।।

सवरगव्देन शुभाव्यवसायवृत्तेविवक्षितत्वात् । (वृ० प० ४३३)

४३. से केणट्ठेणं भंते ! ......
गोयमा । जस्म ण अज्भवमाणावरणिज्जाणं कम्माणं खबोवसमे कडे भवड से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पविखयजवासियाए वा केवलेणं सवरेणं संव-रेज्जा।

तस्याश्च भावचारित्ररूपत्वेन तदावरणक्षयोपश्चम-

४४. अध्यवसानावरणीयशब्देनेह भावचारित्रावरणीयान्यु-क्तानीति । (वृ० प० ४३३)

(वृ० प० ४३३)

लम्यत्वात् ।

४८. जस्स ण अज्भवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओ-वसमे नो कडे भवइ से णं "केवलेण संवरेणं नो संवरेज्जा से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ--असोच्चा ण जाव केवलेण सवरेण नो संवरेज्जा। (श० ६।२०)

४६. असोच्चा ण मते ! केविलस्स वा जाव तप्पिक्यय-उवासियाए वा केवलं आभिणिवोहियनाणं उप्पा-डेज्जा ? गोयमा ! असोच्चा णं केविलस्स वा जाव तप्पिक्यय-

जायमा : असाच्चा ण कवालस्स वा जाव तप्पावस्य-उवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहिय-नाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहि-यनाण नो उप्पाडेज्जा । (श० ६।२१)

५०. से केणट्ठेण मते । .... ...
गोयमा ! जस्स णं आभिणिवोहियनाणावरणिज्जाण
कम्माण सओवसमे कडे भवट से णं अमीच्चा
केवितस्स वा जाव तप्पविस्मयस्वामियाए वा केवलं
आभिणिवोहियनाण स्पाडेज्जा।

<sup>&</sup>lt;sup>भ</sup>लय: पातक छानो नवि रहै

१. ठाण प्रा११० ।

- ५१ आभिनियोधिक ज्ञानावरणी कर्म नों,
  क्षयोपणम निह्कीधो ते दण पासे विन मुणियो।
  ते मितज्ञान पामें नहीं,
  तिण अर्थे कोड पामें कोड निह् पामें उम थुणियो।।
- ५२. हे प्रभु ! दण पे मुण्या विना,

  केवल णुद्ध संपूरण काट श्रुतज्ञान ते लहिये ?

  जिम मित तिम श्रुत ज्ञान छै,

  णवर तसु श्रुतज्ञानावरणी क्षयोपणम कहिये ॥
- ५३ णुद्ध अवधिज्ञान उमहीज छै,
   णवर अवधिज्ञानावरणी क्षयोपणम घरणी।
   इम णुद्ध मनपञ्जव नहै,
   णवर क्षयोपणम जे मनपञ्जवज्ञानावरणी।।
- ५४ हे प्रभु । दश पे सुणिया विना,

  केवलज्ञान उपाव ? इमहिज णवर थाव ।

  केवल ज्ञानावरणी नो क्षय कह्यं,

  शोप तिमज निण अर्थे जावत केवल नहि पाव ॥

- आख्या अर्थ, विन समुदाय करी सहु। ५५. पूर्वे इग्यार तदर्थ, कहियै छै हिय आगर्ने।। ५६ \*हे प्रभु ! दण पे मुण्या विना, धर्म केवली भाख्यो सुणवो भाव पहिलू। सम्यक्तव लहै, केवल केवल मुड थई ने अणगारपणु लहे वहिलू॥ वसं, त्रह्मचर्यवामो ५७ णुद्ध केवल संजम पामै केवल संवर मवरिय। आभिनिवोधिक लहे, णुद्ध
- जाव शुद्ध मनपञ्जव विल केवलज्ञान उचरिये।। ५८. जिन कहै दण पे सुण्यां विना,
  - वर्म सुणवो कोइ पावै निह्न पावै छै विल कोई। कोईक णुद्ध सम्यक्त्व लहे,
    - कोडएक नहि पार्वे केवल शुद्ध सम्यक्त मोई ॥
- ५६ कोडक केवल मुढ थई, गृहस्थावास थकी जे अणगारपणों अभिलाखे। कोडक णुद्धज मुड थई,
  - गृहस्थावास तजी नैं अणगारपणो नहिं चाखै।।

- ५१. जम्म ण आजिणियोदियनाणावरणियजाणं कम्माणं गाओवममे नो कहे भवद मे ण अमोच्या केवलिस्स वा जाव नव्यक्तियस्य स्थानियाए वा केवल आजिणि-योदियनाण नो उप्यारेण्जा। में तेणट्ठेण गोयमा । एव वुनाइ—अमोन्या ण जाव केवल आजिणि-योदियनाणं नो उप्यारेण्जा। (घ० ६।२२)
- ५२. अगोच्या णं भते । वेयित्सम् या जाव तप्पतिषय-उवानियाम् वा केयल मुयनाणं चणाटेज्या ? म्य जहा आभिणियोदियनाणस्य वनस्यया भणिया तहा सुयनाणस्य वि भाणियच्या, नयर — मुयनाणा-यरणिज्ञाण णस्माण मञ्जोयमने भाणियये ।
- ५३. एवं चेय नेयल जीहिनाण भाणियव्य, नयरं— ओहिनाणावरणिज्ञाण सम्माण प्रजीवसमे भाणि-यत्ये। एव नेयल मणपज्जयनाणं स्टपाष्टेप्रता, नयर —मणपज्जयनाणावरणिज्जाण गम्माणं पञ्जोवसमे भाणियव्ये। (सं०पा०) (घ० १।२३-२६)
- ५५. पूर्वोक्तानवार्यान् पुन ममुदायेनाह्—

(यु० प० ४३३)

- ७६. अमीच्चा ण नते । केविनस्म वा जाव तप्पित्वय-डवामियाए वा — केविनिषण्यत्तं धम्मं लभेउज मवण-याए केवलं बोहि बुज्मेज्जा, केवल मृद्धे भवित्ता अगाराओं अणगारिय पव्वएज्जा ।
- ५७. केवल बंभचेरवाम आवरोज्जा केवलेण सजमेण मंजमेज्जा, केवलेण संवरेण मयरेज्जा, केवल आभिण-बोहियनाणं उप्पादेज्जा, जाव (स० पा०) केवल मणपज्जवनाण उप्पादेज्जा, केवलनाण उप्पादेज्जा?
- प्रव. गोयमा ! अमोच्चा णं केविलस्म वा जाव तप्प-विखयजवानियाए वा अत्येगितिए केविलपण्णत्त धम्म नभेजज मवणयाए, अत्येगितिए केविलपण्णत्त धम्म नो नभेजज मवणयाए, अत्येगितिए केवल बोहि बुज्मेज्जा, अत्येगितिए केवल बोहि नो बुज्मेज्जा।
- ५६. अत्येगतिए केवल मुडे भिवत्ता अगाराओ अणगारिय पव्यएज्जा, अत्येगतिए वेवल मुढे भिवत्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्यएज्जा ।

<sup>&</sup>lt;sup>4</sup>लय: पातक छानो निव रहे

२० भगवती-जोड्

- ६२. इम यावत मनपज्जवे, कोइ केवल पावै कोडक ने केवल नावै। किण अर्थे ? प्रभृ । विण सुण्या, तिमहिज जावत कोइक वर केवल नाहि उपावै।।
- ६३. श्री जिन भाखै जेहनै, ज्ञानावरणी कर्मज क्षय-उपणम न कियो सोई। दर्शणावरणी क्षयोपणम जिण नहिं कियो,

धर्म अतराय कर्मज ते क्षयोपशम निह होई।। ६४. इम चरित्रावरणी क्षयोपशम निहं कियो,

जयणावरणी कर्मज काइ क्षय उपशम निह ज्याही। अध्यवसायावरणी क्षयोपशम नही,

आभिनिवोधिक ज्ञानावरणी क्षयोपशम नाही।।

६५. जावत विल मनपञ्जवे ज्ञानावरणीज, काइ क्षयोपशम नहि थायो। केवल ज्ञानावरणी जसु जावत क्षय नहि,

कीधो हो तसु आगल फल कहिवायो।।

६६. ते दश पास सुण्या विना, धर्म केवली भाख्यो काइ सुणवो ते नहि भावै। केवल बोधि न अनुभवै,

जाव केवल निह पावै ए कर्म उदय फल थावै।। ६७ जिन ज्ञानावरणी क्षयोपणम कियो,

दर्शणावरणी कर्मज काड क्षयोपशम जिण कीधो। धर्मातराय क्षयोपशम जसु. जावत केवल ज्ञानावरणी जिण क्षय कर दीधो।।

- ६८ ते दश पास सुण्या विना, धर्म केवली भाख्यो सुण लाधै सुखकारी। केवल बोधज अनुभवै, जाव केवल उपजावै ए गुण एकादश भारी।।
- ६६ नवमे शत इकतीसम देश ए, एक सी इकोतरमी ए ढाल अनोपम भाखी। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी,

'जय-जश' हरप आनदा कांइ गण वृद्धि सपित राखी।।

- ६०. अत्येगतिए केवल वंभचेरवास आवसेज्जा अत्येगतिए केवलं वंभचेरवासं नो आवसेज्जा। अत्येगतिए केवलेणं संजमेण सजमेज्जा, अत्येगतिए केवलेण सजमेण नो सजमेज्जा।
- ६१. अत्येगतिए केवलेणं सवरेण सवरेज्जा, अत्येगतिए केवलेण सवरेण नो सवरेज्जा, अत्येगतिए केवल आभिणिवोहियनाणं उप्पाडेज्जा, अत्येगतिए केवलं आभिणीवोहियनाण नो उप्पाडेज्जा।
- ६२ एवं जाव मणपज्जवनाणं (सं० पा०) अत्येगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्येगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा। (श० ६।३१) से केणट्ठेण मते । एवं वुच्चइ—असोच्चा ण तं चेव जाव अत्येगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्ये-गतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ?
- ६३. गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ जस्स ण दिसणावरणि-ज्जाणं कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ जस्स ण धम्मतराइयाणं कम्माण खओवसमे नो कडे भवड ।
- ६४ एव चरित्तावरणिज्जाण जयणावरणिज्जाण अज्भ-वसाणावरणिज्जाणं आभिणिवोहियनाणावरणिज्जाण ।
- ६४. जाव (स० पा०) मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ जस्म ण केवल-नाणावरणिज्जाण कम्माण खए नो कडे भवइ।
- ६६. से ण असोच्चा केविलस्स वा जाव तप्पित्ययउवा-सियाए वा केविलपण्णत्तं धम्म नो लभेज्ज सवणयाए, केवल बोहि नो बुज्भेज्जा जाव केवलनाण नो उप्पाडेज्जा।
- ६७. जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माण सञ्जोवसमे कटें भवइ, जस्स ण दिरमणावरणिज्जाण कम्माण खञीवसमे कडें भवड, जस्म णं धम्मतराज्याण कम्माण खञीवसमे कडें भवइ, एव जाव जस्म ण केवलनाणावरणिज्जाण कम्माणं सए कटें भवइ।
- ६८. से ण असोच्चा केवितस्स वा जाव तप्पविद्ययंज्ञा-मियाए वा केवितपण्णत्त धम्मं नभेज्ज मवणवाए, केवल बोहि युज्मेज्जा जाव केवलनाणं उपाडेज्जा। (श० ६।३२)

### दूहा

- १. ते विण सुणियां तसु प्रभु <sup>1</sup> उपजै केवलज्ञान । ऊपजै ? भाखै तव भगवान।। केहनै २ वहुलपणै तपस्वी ताय। छठ-छट्टवत, वाल हिवै तेहनी, वारता आय ॥ विभग \*जिनवर कहै रे, इम होवै असोच्चा केवली रे ॥ (ध्रुपद) ३ अंतर-रहित छठ-छठ करै रे, ऊची वाहु विहुं स्थापो रे। विषे रे, सूर्य स्हामी आतापोरे॥ आतापनभूमिका
- सरलपणे, स्वभावे उपशमवतो। ४ स्वभावे भद्र क्रोध मान माया लोभ ते, स्वभावे पतला अत्यतो॥ कहिता कोमल अछै, मार्दव निरहंकारो । सहितपणे करी, आलीनपणै उदारो ॥ अन्य दिवस ते किवारै। विनीतपणे करी, अध्यवसाये करी, शुभ परिणाम तिवारै। ७ लेस्या विशुद्धमाने करी, तदावरणी क्षयोपशम जन्नो। ईहा पोह मग्गण नी गवेषणा करता विभग अनाण उप्पन्नो ॥

#### सोरठा

द्य तदावरण<u>ी</u> पहिछाण, विभग अनाणावरणी ए। सुजाण, भेद अवधिज्ञानावरणी तणो।। ६ अवधिज्ञान अवलोय, वलि विभग अज्ञान वेहू जोय, दर्शण अवधिज एक है।। नो १० मति तेहनु श्रुत ज्ञानावरण, क्षयोपशम घरण, मित श्रुत ज्ञान अज्ञान वे।। गुण ए ११. तिम अवधि ज्ञानावरणी जान, क्षयोपशम तेहनु थया। अवधि विभग अनाण लहै वलि।। पामै सुज्ञान, १२. तदावरणी विभग अनाणावरणी ते जान, पिछाण, क्षयोपशम गुणठाण तेहनों थयो।। कहिता १३. ईहा प्रति जाणवा। पेख, छता अर्थ विशेख, तणै चेप्टा तास तेह सन्मुख थयो॥ १४ अपोह धर्म निर्णय करै। पक्ष रहीत, ध्यान एहवो अर्थ पुनीत, वडा टवा मे आखियो।। धर्म, तेह तणी १५. मगगण अन्वय आलोचना । धर्म व्यतिरेक गवेपणा ए मर्म, आलोचना ॥ एह विचार, तेह वाल तपसी १६. करता भणी। विभंग अनाण तिवार, उपनो शुद्ध परिणाम थी।।

- अथाश्रुत्वैव केवल्यादिवचन यथा किएचत् केवलज्ञान-मुत्पादयेत्तथा दर्शयितुमाह— (वृ० प० ४३३)
- २. तत्प्रायः पष्ठतपश्चरणवतो वालतपस्विनो विभङ्गः— ज्ञानविशेष उत्पद्यत इति ज्ञापनार्थंमिति ।

(वृ० प० ४३३)

- ३. तस्स णं छट्ठछट्ठेण अणिविखत्तेणं तवोकम्मेण उड्ढ वाहाओ पगिज्भिय पगिज्भिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स ।
- ४. पगइभद्याए पगइउवसत्तयाए पगइपयणुकोह-माण-माया-लोभयाए
- ५. मिउमद्वसपन्नयाए, अल्लीणयाए
- ६. विणीययाए अण्णया कयावि सुभेण अज्भवसाणेण सुभेण परिणामेणं
- ७ लेस्साहि विसुज्भमाणीहि-विसुज्भमाणीहि तयावर-णिज्जाणं कम्माणं खओवसमेण ईहापोहमग्गणगवेसण करेमाणस्स विव्भगे नामं अण्णाणे समुप्पज्जइ।
- दः 'तयावरणिज्जाण' ति विभङ्गज्ञानावरणीयानाम् । (वृ० प० ४३३)

- १३. इहेहा-सदर्थाभिमुखा ज्ञानचेप्टा । (वृ० प० ४३३)
- १४. अपोहस्तु--- विपक्षनिरासः । (वृ० प० ४३३)
- १५. मार्गण च-अन्वयधम्मिलीचन गवेषण तु-व्यतिरेकधमिलोचनमिति । (वृ० प० ४३३)

- १७. 'इहां कही विणुद्ध लेस, तेजू पद्मज णुक्ल ए। ते भावे सुविणेष, द्रव्य प्रयोजन इहां नही।। १८. आख्या गुभ अध्यवसाय, गुभ परिणाम पिण भाव ए। ते माटै कहिवाय, विणुद्ध लेक्या पिण भाव छै।। १९. गुक्ल लेक्या नां पेख, लक्षण उत्तराध्येन मे। चउतीसमें' सुदेख, आख्या छै एहवा तिहा।। २०. वर्जे आर्त्त रुद्र, धर्म गुक्ल ध्यावै तिको। लेक्या गुक्ल अक्षुद्र, तेहनां ए लक्षण कह्या।।
- २१. विणिष्ट णुद्ध विशुद्ध, तेह शुक्ल ध्यावै तदा । वज्या आत्ते रु रुद्दे, धर्म शुक्ल आख्या जदा ॥ २२. शुक्ल लेख्या में जाण, गुणस्थानक तेरै अछै। ऊपरलै गुणस्थान, शुक्ल ध्यान वर लीजियै॥ २३. प्रथम आदि गुणस्थान, शक्ल लेश वर्त्ते यदा। धर्म ध्यान पहिछान, निमल न्याय अवलोकियै।। २४. तिण कारण कहिवाय, तेह वाल तपसी तणां। विशुद्ध लेश रै मांय, धर्म-ध्यान ए अर्थ शुद्ध ।। २५. ते गुणठाणे अवलोय, ज्ञानावरणी कर्म नों। थयो क्षयोपशम सोय, तिण सु विभंग समुप्पनो ॥ २६. सुख विपाक अविरुद्ध, सुमुख सुदत्त प्रतिलाभिया। त्रिविध जोग तसु शुद्ध, त्रिकरण शुद्ध कह्या वलि।। २७. ए पिण छै धर्म ध्यान, तेहथी परित ससार करि। मनुष्यायु वध जान, तिण सू धुर गुणठाण ए।। २८. गज भव मेघकुंवार, सुसला री अनुकप करि। कियो परित्त ससार, ए पिण धर्म ध्याने करि।।
- २६ तामली सोमल आदि, अनित्य-चिंतवणा तसु कही । अनित्य चितवणा साधि, धर्म ध्यान नो भेद है।। ३०. तिम इहा पिण शुद्ध लेश, अध्यवसाय परिणाम शुभ । धर्म ध्यान सुविशेष, तेहथी विभग समुप्पनो'।। [ज० स०]
- ३१ विभग अनाण ऊपने छते, जवन्य यो आगुल नो विशेखै। असंख्यातमा भाग ने, जाणें ने विल देखे।। ३२. ते उत्कृष्ट यको विल, जोजन असख हजारो।
- जाणे नै देखै अछै, क्षय-उपशम गुण सारो।।
  ३३. ते विभग अनाण ऊपजवे करी, जाण्या जीव अजीवो।
  पाखंड निज वृत में रह्या, सारभ सपरिग्रह अतीवो।।
- ३४. महासन्तिक्यमान जाणियो, अल्पसन्तिशमान तेहो । महा नी अपेक्षा विश्<u>द</u>मान ते, तेह प्रतै जाणेहो ॥

२०. अट्टहराणि विज्जिता धम्ममुक्काणि कायए। पसन्नचित्ते दन्तप्पा मिगए गुत्ते य गुत्तिहि॥ (उत्तरा० ३४।३१)

- २६,२७. तए णं तस्स सुमुहस्म गाहावद्दस्म तेण दध्य-सुद्धेण .......तिविहेण तिकरणसुद्धेण सुदत्ते अणगारे पिंडलाभिए समाणे ससारे परित्तीकए। (विपा० २।१।२३)
- २८. तए णं तुम मेहा ! ताए पाणाणुकपयाए ........संमारे परित्तीकए, माणुस्माउए निवद्धे ।

(ज्ञाता १।१।१८२)

- २६. तए ण तस्स तामिलस्स अणिञ्चजागिर्यं जागरमाणस्स : "। (भ० घ० ३।३६) धम्मस्स णं काणस्स चत्तारि अणुष्पेहाओ ""। (भ० घ० २४।६०६)
- ३१,३२. से णं तेण विटमंगनाणेण समुप्पन्नेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असखेज्जतिभाग उनकोनेण अनसेज्जाइ जोयणसहस्साइं जाणइ-पासइ।
- ३३. मे ण तेण विव्मंगनाणेणं समुप्पन्नेण जीवे वि जाण इ, अजीवे वि जाण इ, पासहत्वे सारंभे मपरिग्गहे 'पासहत्थे' ति व्रतस्यान् । (यृ० प० ४३३)
- ३४ सिकलिस्समाणे वि जाणदः, विसुज्भमाणे वि जाणदः।
  'सिकिलिस्समाणे वि जाणदः' ति महस्या निश्वत्यमानतया निश्वत्यमानानिष जानाित 'विसुज्भमाणे वि
  जाणदः' ति अल्पोयस्वार्शप विशुद्धप्रमानतया विद्युद्धप्रमानािष जानाित ।
  (यु० प० ४३३)

<sup>\*</sup>तयः राज पामियो रे करकंडू कंचनपुर तगो १. उ० ३४।३१

- ३५. तेह प्रथम चारित्र थकी, पामै सम्यक्त्व सारो । एह पूर्वलै गुणै करि, पाम्या बोधि उदारो ॥
- ३६. 'छठ-छठ तप पहिलां कियो, सूर्य स्हामी आतापो । प्रकृति भद्र उपणातता, पतली चीकडी व्यापो॥
- ३७ मृदु मार्दव आलीनता, भद्र विनीतपणे ताह्यो । जीव उज्जल थयां एकदा, आया गुभ अध्यवसायो ॥
- ३८. णुभ परिणाम लेज्या भलो, ए उत्तम गुण कर सीधो । विभंग ज्ञानावरणी कर्म नो, क्षयोपशम जिण कीघो ॥
- ३६. ईहापोह मार्गणा गवेपतो, पाम्यो विभग अज्ञानो । जीव अजीव नै जाण्या तेहथी, पायो सम्यक्त्व प्रधानो ॥
- ४० तिण कारण ए गुण सहु, श्री जिन आज्ञा माह्यो । निर्जर री करणी भली, तेहथी सम्यक्तव पायो ॥
- ४१ सम्यक्त्व पडिविजयां पछै, समण धर्म प्रति रज्जै । समण धर्म ने रोचवी, चारित्र ने पडिवज्जै'।। (ज० स०)
- ४२. भाव चारित्र ने अंगीकरी, पडिवज्जै मुनिर्लिग—वेपो । इम उत्तम गुण करि लह्यं, सम्यक्त्व चरण विशेषो ॥
- ४३. चरित्त आयां पहिलां तिको, सम्यक्तव आवण टाणे । मिथ्यात पजवा होणा पड्या, सम्यक्तव ना बहुमाणे ॥
- ४४. सम्यक्त्व पायो तिण समय, विभंग अनाण नो ताह्यो । शोघ्र हो अवधि हवें सही, भाव चारित्र पर्छे पायो ॥

- ४५ अवधि विभंग नो होय, सम्यक्तव प्रतिपत्ति काल तसु । लेज्यादिक करि सोय, पूछै गोयम गणहरू॥
- ४६. <sup>1</sup>ते प्रभु । किन लेश्या विषे ? तव भाखे जिनराया । नीन विणुद्ध लेश्या विषे, तेजू आदि कहायो ।।

# सोरठा

- ४७ भावे प्रणम्त लेश, तास विपेज हुवै अछै। सम्यक्त चरण विशेष, पडिवर्ज्ज तिण अवसरे॥
- ४८ \*प्रभु<sup>1</sup> कित ज्ञान विषे हुवै ? जिन कहै त्रिण अवलोई । आभिनिबोधिक श्रुत विषे, अवधिज्ञान विषे होई ॥
- ४६ ते प्रमु ! स्यु मजोगी हुवै, अथवा अजोगी होई ? जिन कहै नजोगी हुवै, अजोगी नहीं कोई ॥

### सोरठा

५०. अविधि ययो ते काल, चारित्र ग्रहण समय विल । मजोगी मुविणाल, अजोगी कहिये नहीं ॥ ३५. से णं पुब्वामेव सम्मत्तं पिडविज्जइ ।

'पुब्वामेव' त्ति चारित्रप्रतिपत्ते पूर्वमेव ।

(वृ० प० ४३३)

- ४१ सम्मत्त पडिवज्जित्ता समणवम्म रोएति, समणवम्म रोएता चरित्त पडिवज्जइ ।
- ४२. चरित्त पडिविजित्ता लिगं पढिवज्जइ।
- ४३,४४ तस्स ण तेहि मिन्छत्तपज्जवेहि परिहायमाणेहिपरिहायमाणेहि सम्मदसणपज्जवेहि परिवड्ढमाणेहिपरिवड्ढमाणेहि से विन्मगे अण्णाणे सम्मत्तपरिगाहिए
  खिप्पामेव ओही परावत्तड। (श० ६।३३)
  चारित्रप्रतिपत्तेः पूर्वं सम्यक्त्वप्रतिपत्तिकाल एव
  विमंगज्ञानस्यावविभावो द्रष्टन्यः, सम्यक्त्वचारित्र गावे
  विभंगज्ञानस्याभावादिति। (वृ० प० ४३४)
- ४५. अर्थंनमेव लेश्यादिभिनिरूपयन्नाह— (वृ० प० ४३४)
- ४६. सं णं भते । कित्सु लेस्सासु होज्जा ? गोयमा । तिसु विसुद्धलेस्सासु होज्जा, त जहा— तेउलेस्साए, पम्हलेस्साए, मुक्कलेस्साए ।
- ४७. यतो भावलेश्यासु प्रशस्तास्वेव सम्यक्त्वादि प्रतिपद्यते नाविशुद्धास्विति । (वृ० प० ४३५)
- ४८ से ण भंते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ? गोयमा ! तिसु—आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-स्रोहिनाणेसु होज्जा । (घ० १।३५)
- ४६. से ण मते ! किं सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ? गोयमा । मजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा।
- ४०. अविद्यानकालेऽप्रोगित्वस्याभावात् । (वृ० प० ४३४)

<sup>\*</sup>सय: राज पामियों रे फरकंटू फंचनपुर तणी

- ५१. बजो प्रमु । सजोगी हुवै, स्यू मनजोगी तेहो। अथवा वचनजोगी हुवै, के कायजोगी कहेहो? ५२. जिन कहै मनजोगी हुवै, अथवा ह्वै वचजोगी। अथवा कायजोगी हुवै, तसु इम न्याय प्रयोगी।।
  - सोरठा
- ५३ ते वेला इक जोग, प्रधानपणा नी अपेक्षया। जिन वच प्रवर प्रयोग, न्याय विचारी लीजियै॥
- ५४ \*हे भगवंत ! हुवै तिको, सागारोवउत्ते वर्त्ततो । अणागारोवउत्ते हुवै ? भाखे हिव भगवतो ॥
- ५५. सागारोवउत्त विषे हुवै, अथवा वर्त्ते अणागारो । एक पक्षे ए विहुं विषे, लहै सम्यक्त्व अविध उदारो ॥

- ५६. वृत्ति मझे इम वाय, सागारोवउत्ता नै विषे । मर्व लव्यि उपजाय, किणहिक ठामें इम कह्यो ॥
- ५७. अणागारवउत्तेह, सम्यक्त अविध लहै इसो । आय्यो छै वच एह, तेह विरोध इम प्रश्न कृत ।।
- ५८. पिण इम निंह छै एह, प्रवर्द्धमान परिणाम जसु । एहवा जीव विपेह, सागारवउत्ता मेज हुवै।।
- ५६. अवस्थित परिणाम, तेह तणी अपेक्षया। अनाकारे पिण ताम, लाभ लब्धि नो सभवै॥
- ६०. <sup>१</sup>प्रभु । किसा सघयण तिको ? तव भाखे जिनचदो । वज्रऋपभ नाराच ने, होवै ते गुणवृदो।।

# सोरठा

- ६१. पामै केवलज्ञान, प्रथम सघयण विषेज जे । ते माटै पहिछान, अपर सघयण विषे नथी।।
- ६२. \*प्रभु । किसा सठाण विषे हुवै ? जिन कहे पट सठाणो । तेहमे एक सठाण मे, होवै ते गुणखाणो ॥
- ६३ प्रभु । कितलो ऊचपणै तनु? जिन भाखै शुभ सचो । जघन्य थकी कर सात नो, उत्कृष्ट धनु सय पचो ॥
- ६४. प्रभु । किता आउखा विषे हुवै, श्रो जिन भार्ख जोडो । जघन्य जाझो अठ वर्ष नो, उत्कृष्ट पूरव कोडो ॥
- ६४. ते प्रभु । रपू सवेदी हुने, अथवा अवेदी होयो ? जिन भाखे सवेदी हुवं, अवेदी नहि कोयो॥

- ५१. जड मजोगी होज्जा, कि मणजोगी होज्जा ? बटजोगी होज्जा ? कायजोगी होज्जा ?
- ५२. गोयमा । मणजोगी वा होज्जा, वज्जोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा। (घ० ६।३६)
- ५३ 'मणजोगी' त्यादि चैकतरयोगप्राघान्यापेक्षयाऽव-गन्तव्य। (वृ०प०४३५)
- ५४. मे ण मंते ! कि सागारोव उत्ते हो ज्ञा ? अणागारो-वजत्ते हो ज्ञा ?
- ५५ गोयमा । सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा । (श० ६।३७) तस्य हि विभङ्गज्ञानान्निवर्त्तमानस्योपयोगद्वयेऽपि वर्त्तमानस्य मम्यवत्वाविद्यानप्रतिपत्तिरस्तोति ।

(बृ० प० ४३५)

- ४६,४७. ननु 'सन्त्राओं लद्धीओं नागारोवओंगोवउत्तस्म भवती' त्यागमादनाकारोपयोगे सम्यक्त्राविधलिट्य-विरोध ? (वृ० प० ४३४)
- ४८ नैव प्रवर्द्धमानपरिणामजीवविषयत्वात् तस्यागमस्य । (वृ० प० ४२४)
- ५६. अवस्थितपरिणामापेक्षया चानाकारोपयोगेऽपि निद्य-लाभस्य सम्भवादिति । (यु० प० ४३५)
- ६०. से ण मते ! कयरिम्म सघयणे होज्जा ? गोयमा ! वइरोसभनारायसघयणे होज्जा । (११० ६।३८)
- ६१. प्राप्तन्यकेवलज्ञानस्वात्तस्य, केवलज्ञानप्राप्तिश्च प्रथम-सहनन एव भवतीति । (वृ० प० ४३५)
- ६२. से ण भते ! कयरिम्म सठाणे होज्जा ? गोयमा ! छण्ह सठाणाण अण्णयरे मंठाणे होज्जा । (श० ६।३६)
- ६३ से णं मते । जयरिम्म उच्चते होज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उनकोमेण पचमणु-सतिए होज्जा । (म॰ १।४०)
- ६४ से णं मते ! कयरम्मि आउए होग्जा ?
  गोयमा ! जहण्णेण मातिरेगद्वयामाउए उनकोनेण
  पुट्यकोटिआउए होग्जा । (म० ६।८१)
- ६४. ते ण भंते ! कि मवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ? गोयमा ! मवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ।

<sup>\*</sup> लय: राज पामियो रे फरकंटू कंचनपुर तणो

#### सीरठा

- ६६. अविधि विभंग नों थाय, तेह काल समया विषे। वेद नणों क्षय नांय, तिण सुं सवेदीज है।। ६७ को प्रमु! सवेदी हुवै, स्यू स्त्री-वेदे होयो। पुरिस तथा नपुंसके, कै पुरिस-नपुसक जोयो?
- ६८. जिन कहै स्त्री-वेदे नहीं, पुरिस-वेद ह्वं एहो। वेद नपुंसक पिण नहीं, पुरिस-नपुंसक तेहो।।

#### सोरठा

- ६६. इहिन्य व्यतिकर जाण, स्वभाव थकीज स्त्री तणे । तास अभाव पिछाण, जन्म नपुसक पिण नही ॥
- ७०. पुरिस विषे ह्वं एह, पुरिस-नपुस विषे विल । कृत्रिम नपुसक जेह, तेह विषे पिण हुवै अछै।।
- ७१ \*ते प्रमु! सकपाई हुवै, कै ह्वै छै अकपाई ? जिन कहै सकपाई हुवै, अकपाई नींह थाई।।

### सोरठा

- ७२. विमंग तणो संभाल, अवधि हुवे ते काल मे । सकपाईज निहाल, उपशम क्षपक अभाव थी।।
- ७३. \*जो सकपाइ विषे हुवै, किती कपाय मे थाइ ? जिन भाखै सजल तणां, कोधादिक चिउ माहि॥

# सोरठा

- ७४. अवधि विभंग नों न्हाल, चारित्र प्रतिपन्न समय विल । सजलनीज संभाल, कोधादिक नों उदय ह्वै॥
- ७५. \*हे प्रमु ! तेहना किता कह्या, अध्यवसाय सुहाया ? श्री जिन भाखे तेहना, असख्याता अध्यवसाया ॥
- ७६. हे प्रमु । तेहना प्रगस्त छै, कै अप्रगस्त अध्यवसायो ? जिन भार्य प्रणस्त छै, अप्रगस्त नहि थायो।।

#### सोरठा

७७ अवधि विभग नों थाय, चारित्र प्रतिपन्न समय फुन् । प्रगस्त अध्यवसाय, स्थानक प्रशस्त नाज ह्वं ॥ ७८. 'नवम शत देश इक्तोस नो, इक्सो बोहितरमी ढालो । भिन्न भारीमान नदृषिराय थी, 'जय-जण' हरप विशालो ॥

- ६६. 'सवेयए होज्ज' ति विभङ्गस्याविधभावकाले न वेदक्षयोऽस्तीत्यसी सवेद एव। (वृ० प० ४३४)
- ६७. जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिस-वेदए होज्जा ? पुरिसनपुसकवेदए होज्जा ? नपुसग-वेदए होज्जा ?
- ६८ गोयमा ! नो इित्यवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, नो नपुसगवेदए होज्जा, पुरिस-नपुसगवेदए वा होज्जा। (श० १।४२)
- ६१. 'नो इत्थिवेयए होज्ज' त्ति स्त्रिया एविविधस्य व्यतिकरस्य स्वभावत एवाभावात् । (वृ० प० ४३४)
- ७०. 'पुरिसनपुसगवेयए' त्ति वर्द्धितकत्वादित्वे नपुसकः पुरुषनपुसकः। (वृ०प०४३४)
- ७१. से ण मते । कि सकसाई होज्जा ? अकसाई होज्जा ? गोयमा ! सकसाई होज्जा, नो अकसाई होज्जा।
- ७२ 'सकसाई होज्ज' त्ति विभङ्गाविधकाले कपायक्षयस्या-भावात् । (वृ० प० ४३४)
- ७३. जइ सकसाई होज्जा से ण भते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
  गोयमा ! चजसु सजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा। (म० ६।४३)
- ७४. स ह्यवधिज्ञानतापरिणतविभङ्गज्ञानम्चरण प्रतिपन्न उक्त, तस्य च तत्काले चरणयुक्तत्वात्सञ्ज्वलना एव कोधादयो भवन्तीति । (वृ० प० ४३५)
- ७५. तस्स ण भते ! केवइया अज्भवसाणा पण्णता ? गोयमा ! अससेज्जा अज्भवसाणा पण्णत्ता । (४० ६।४४)
- ७६. ते ण भते । कि पसत्या ? अप्पसत्या ? गोयमा ! पसत्या, नो अप्पसत्या । (श० ६।४५)
- ७७. 'पसत्य' त्ति विभञ्जस्याविधभावो हि नाप्रशस्ताच्यवसा-नस्य भवतीत्यत जनत—प्रशस्तान्यच्यवसायस्याना-नीति । (वृ० प० ४३५)

<sup>\*</sup>तप: राज पानियों रे करकंटू कंचनपुर तणी ।

२६ भगवनी-जोट

जोड मे पहले नपुंसक वेद और अन्त मे पुरुपनपुगक वेद है। सभय है जयाचार्य को प्राप्त प्रति मे पाठ का यही कम रहा हो।

दूहा

- १ हे भदत ! तेहनां कह्यां, प्रशस्त अध्यवसाय । तेहथी जे फल नीपजै, वीर वतावै न्याय ॥ अणसुणियां इम केवल उपजे, श्री जिन वाण वदता रे। धुर गुणठाण मंडाण कियो, तेहथी अनुक्रम भव अता रे॥ (ध्रुपदं)
- २ प्रशस्त अध्यवसाय वर्धमान, नारक भव जे अनता रे। काल अनागत भावी थकी, आत्मा नै दूर करता रे॥
- ३ तिर्यच भव जे अनत अनागत काल करै तिण सेती । आत्मा नै विसंजोडै करै दूर, निर्मल निष्पन्न खेती ।।
- ४ मनुष्य तणा भव अनत थकी, आत्मा नै दूर करतो। सुर भव अनंत थकी आतम प्रति, अलग करै गुणवतो।।
- ५ जे नाम कर्म तसु मूल प्रकृति नी, उत्तर प्रकृति एहो । नरक तिर्यच मनुष्य सुर गति चिहु, नाम नी उत्तर तेहो ॥
- ६. ए चिहु नै विल अन्य प्रतै, उपष्टभ तणो देणहारो । अनंतानुबंध क्रोधादिक चिउं नै, तेह खपावै तिवारो ।।
- अप्रत्याख्यान क्रोध मान माया लोभ, ए पिण ताम खपावै ।
   पच्चक्खाणावरण क्रोधादिक चिहुं नै, क्षय करि आतम भावै ।।
- प्रचिवधे ज्ञानावरणी कर्म नै, क्षय करै अय जाणी ।
- ह नविध दर्शणावरणी ने करै क्षय, विल पंचिवध अतरायो।
  िक कृत्वा स्यू करी एह खपावै, साभलज्यो चित ल्यायो।।
- १०. ताल मत्थाकड मोह कर्म करि, ताल तरू शिर छेद्यो । जिम छिन्न-मस्तक ताल क्षीण हुवै, इहविध मोहणी भेद्यो ॥

वा० -ए मोहनीय नी नोकषाय प्रकृति शेष भेद नी अपेक्षा जाणवो ।

- ११. अथवा अनतानुबध्यादि प्रकृति, तेह खप्ये छते जाणी । ज्ञानावरणादिक तीन कर्म नै, निश्चै खपावै नाणी ॥
- १२. ताल मस्तक जिम कीधी किया जसु, इहिनध मोहणी छेदै। इति कृत्वा इम मोह खप्ये छते, ज्ञानावरण्यादिक भेदै॥

'अणतेिहं' ति 'अनन्तैः' अनन्तानागतकालभाविभिः 'विसंजोएइ' त्ति विसयोजयित, तत्प्राप्तियोग्यताया अपनोदादिति । (वृ० प० ४३५)

- ३. अणतेहि तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहितो अप्पाणं विसंजोएइ ।
- ४. अणतेहि मणुस्सभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि देवभवग्गहणेहितो अप्पाण विसंजोएइ।
- ५. जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिवखजोणिय-मणुस्स-देवगितनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ। 'उत्तरपयडीओ' त्ति नामकर्माभिघानाया मूलप्रकृते-हत्तरभेदभूताः (वृ०प ४३५)
- ६. तासि च ण ओवग्गहिए अणताणुवधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ । 'उवग्गहिए' ति औपग्रहिकान् — उपष्टम्भप्रयोजनान् (वृ० प० ४३४)
- ७. खवेत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेद, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेद ।
- प्रचित्त सजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पचित्त नाणावरणिज्जं,
- ह. नविवहं दिरसणावरिणज्ज, पचिवह अतराइय ।िक कृत्वा ? इत्यत आह— (वृ० प० ४३६)
- १०. तालमत्थाकड च ण मोहणिज्जं कट्टु।
  यथा हि छिन्नमस्तकस्ताल क्षीणो भवति एव मोहनीय
  च क्षीण कृत्वेति भावः। (वृ० प० ४३६)
  वा०—इद चोक्तमोहनीयभेदशेपापेक्षया द्रष्टव्यमिति। (वृ० प० ४३६)
- ११. अथवाऽथ कस्मादनन्तानुबन्ध्यादिस्वभावे तत्र क्षिपते सित ज्ञानावरणीयादि क्षपयत्येव ? (वृ० प० ४३६)
- १२. तालमस्तकस्येव कृत्व—िकया यस्य तत्तालमस्तक-कृत्व तदेवविध च मोहनीय 'कट्टु' ति इतिशव्द-स्येह गम्यमानत्वादितिकृत्वा-—इतिहेतोस्तत्र क्षिपते ज्ञानावरणीयादि क्षपयत्येवेति । (वृ० प० ४३६)

१,२. से ण भते ! तेहि पसत्थेहि अज्भवसाणेहि वड्ढमाणेहि अणंतेहि नेरइयभवग्गहणेहितो अप्पाणं विसजोएइ।

<sup>\*</sup>लय: प्रभवो चोर चोरां नै समझावै

- १३. ताल मस्तक अरु कर्म मोहनी, ए विहुं छेदन किरिया। साधर्म्य तेह सरीखपणो हिज, हिव तसु प्रगट उचरिया।।
- १४. जिम ताल णिर ने विनाश करण री, किया कियां छतां तासो । अवश्यभाव निश्चै किय होस्यै, ताल वृक्ष नो विनाशो ।।
- १५ इहविध मोहनीकर्म विनाशन, क्रिया कियै सुविमासो । अवश्यभावि निश्चै करि होस्यै, शेप कर्म नों विणासो ।। वा॰ — जिम ताल ने मस्तके सूई चाप्या मस्तक हणाणे छते ताल वृक्ष नो नाश थावै। तिम मोहणी कर्म हणाणे छते शेप कर्म नो नाश थावै।
  - १६ कर्म रूप रज खेरणहारो, एहवो अपूर्वकरणो । जे अध्यवसाय कदे नींह आया, तेहमे पेठो अघहरणो ॥
  - १७ विषय अनंत थकीज अनतिह, सर्वोत्तम इम न्यायो । केवलज्ञान ने कह्यो अनुत्तर परम ज्ञान सुखदायो ॥
  - १८ भीत प्रमुख करिने अणहणवै, कहियै निर्व्याघातो । सर्वथा आवरण क्षय करिवा थी, निरावरण आख्यातो ॥
  - १६ सकल अर्थ ना ग्राहकपणा थी, कसिण तास इम उक्तो । प्रतिपूर्ण ते सकल स्व अशज, तिण करिने ए युक्तो ॥
  - २० केवल नाम ते शुद्ध संपूरण, समस्त ज्ञान रै मांह्यो । प्रवर प्रधान ते अन्य अपेक्षया, ज्ञान दर्शन ते पायो ॥
  - २१. ज्ञानावरणी दर्णणावरणी, अतराय क्षय कीधा। केवल ज्ञान ने दर्शन ऊपना, सकल मनोरथ सीधा॥
  - २२ ते प्रभु । अन्यिलगी वर्त्तमान जे, केवली भाख्यो धरमो । आघवेज्जा णिष्य ने अर्थ ग्रहावै, धर्म वतावै परमो ॥
  - २३ पण्णवेज्ज भाखै भेद जूजुआ, अथवा बोधि उपानै। परूवेज्ज वा कहिता परूपै, युक्ति कहिण थी भावै?
  - २४. जिन कहै अर्थ समर्थ ए नाही, एक ज्ञात दृष्टतो । अथवा एक व्याकरण उत्तर इक, न कहै तिण उपरतो ॥

- २५ उदाहरण इक देह, अथवा इक उत्तर दियै। अन्य अर्थ न कहेह, तथाविध तसु कल्प थी।।
  - २६. \*हे प्रभु ! ते अन्य लिंगे वर्त्ततो, प्रव्रज्या द्रव्य-लिंगो । अन्य भणी दे रजोहरणादिक, मुडन लुचन चंगो ?

लय: प्रमवो चोर चोरां न समझाव

- १३. तालमस्तकमोहनीययोश्च क्रियासाधर्म्यमेव । (वृ० प० ४३६)
- १४. यथा हि तालमस्तकविनामिकयाऽवश्यम्भाविताल-विनामा । (वृ० प० ४३६)
- १५. एवं मोहनीयकर्मविनाशिक्षयाऽप्यवश्यम्भाविशेषकर्मं-विनाशिति । (वृ० प० ४३६) वा०—मस्तकसूचिविनाशे तालस्य यथा ध्रुवो भवति नाम ।

तद्वत्कर्मविनाशोऽपि मोहनीयक्षये नित्यम् ॥ (वृ० प० ४३६)

- १६. कम्मरयविकिरणकर अपुव्यकरण अणुष्पविद्वस्म अपूर्वकरणम् — असदृणाव्यवसायविशेषमनुप्रविष्टस्य । (वृ० प० ४३६)
- १७ अणंते अणुत्तरे अनन्त विषयानन्त्यात् अनुत्तर मर्वोत्तमत्वात् । (वृ०प०४३६)
- १८ निव्वाधाए निरावरणे

  निर्व्याधात कटकुट्यादिभिरप्रतिहननात् निरावरणं

  सर्वेथा स्वावरणक्षयात् । (वृ० प० ४३६)
- १६ कसिणे पडिपुण्णे कृत्स्न सकलार्थंग्राहकत्वात् प्रतिपूर्णं मकलस्वागयुक्त-तयोत्पन्नत्वात् । (वृ० प० ४३६)
- २०. केवलवरनाणदंसणे समुपज्जित । (श० ६।४६) केवलवरज्ञानदर्गन—केवलमभिघानतो वरं ज्ञानान्त-रापेक्षया । ज्ञान च दर्शन च ज्ञानदर्गनम् । (वृ० प० ४३६)
- २२. से ण भते ! केवलिपण्णत्त धम्म आधवेज्ज वा ? 'आधवेज्ज' ति आग्राहयेच्छिप्यान् । (वृ० प० ४३६)
- २३. पण्णवेज्ज वा ? परुवेज्ज वा ?

  'पन्नवेज्ज' त्ति प्रज्ञापयेद्भेदभणनतो वोधयेद्वा 'परुवेज्ज' त्ति उपपत्तिकथनत । (वृ० प० ४३६)
- २४ नो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्य एगनाएण वा, एगवाग-रणेण वा। (श० १।४७)
- २५. 'नन्नत्य एगनाएण व' त्ति न इति योऽयं निपेध सोऽन्यत्रैकज्ञाताद्, एकमुदाहरण वर्जेयित्वेत्यर्यं, तथा-विधकल्पत्वादस्येति । (वृ० प० ४३६)
- २६. से ण मते । पन्वावेज्ज वा ? मुडावेज्ज वा ? 'पन्वावेज्ज व' त्ति प्रव्राजयेद्रजोहरणादिद्रन्यिलङ्ग-दानत 'मुडावेज्ज व' त्ति मुण्डयेन्छिरीलुञ्चनत.। (वृ० प० ४३६)

- २७. जिन कहै अर्थ समर्थे ए नाही, न दै कोइ नै दीक्षा। पिण उपदेश करै अमुका पै, लै संजम वर शिक्षा॥
- २८ ते प्रभु! सीज्झै जाव सर्व दुख—कर्म तणो करै अतो ? जिन कहै हंता सीज्झै यावत सहु दुख अंत करतो।।
- २६ ते प्रभु । स्यू उर्द्ध लोक विषे ह्वै, कै हुवै छै अधो लोयो। कै हुवै तिरछा लोक विषे ए ? हिव जिन उत्तर जोयो।। ३० ऊचा लोक विषे हुवै अथवा, नीचा लोक मे होयो। अथवा तिरछा लोक विषे हुवै, हिव विवरो अवलोयो।। ३१ उर्द्ध लोक विषे हुंतो थको, ए शब्दापाती जाणी। वियडावइ गंधावइ मालवत, वृत्त वैताढ्य पिछाणी।।

३२ यथाऋमे ए जबूदीवपण्णत्ती जे। जाण, अभिप्राय पिछाण, हेमवतादिक क्षेत्र मे।। ३३ क्षेत्र हेमवत माहि, शब्दापाती<sup>१</sup> जाणज्यो । हरिवर्ष में ताहि, वियडावइ<sup>3</sup> वैताढच ३४. रम्यक क्षेत्र मझार, गंधावति वैताढ्य वृत्त। विचार, मालवत ३५. 'क्षेत्र-समासे ' तेथ हेमवत ऐरणवते । रम्यक खेत, ए च्यारू क्षेत्रा विषे ॥ वियडावइ ३६. शब्दापाती सार, गधावइ। मालवंत ए च्यार, अनुक्रम मेलै तो विरुद्ध।। ३७. योजन एक हजार, ऊचपणै आख्या सुविचार, योजन अढीसै ऊडपणै कह्या ॥ लावो-पहुलो सारिखो । ३८ हेठें ऊपर जाण, पाला नै सठाण, ते पाला धान भरवा तणा॥ ३६ सर्व रत्न रै मांहि, पद्मवरवेदिका । एक इक वनखडे ताहि, वीटचा छै वैताढच वृत्त ॥ ४० गगनगामिनी लद्धि, तास प्रभावे गया । केवलज्ञान समिद्धि, उपजै तिहा रह्या छता।।

४१. \*सुर साहरण करी लेइ मूक्या, तेह पड्च्च सुजोयो। मदरगिरि वन तृतीय सोमनसे, तुर्य पडगे होयो।।

- २७. णो तिणट्ठे समट्ठे, उबदेस पुण करेज्जा ।
  (श० ६।४८)
  'उवएस पुण करेज्ज' ति अमुष्य पार्श्वे प्रव्रजेत्यादिकमुपदेश कुर्यात् ।
  (वृ० प० ४३६)
- २८ से णं भते । सिज्भति जाव सव्वदुवखाणं अत करेति ? हता सिज्भति जाव सव्वदुवखाणं अत करेति ।
- २६ से ण भते । कि उड्ढ होज्जा ? अहे होज्जा ? तिरिय होज्जा ?

(श० ६।४६)

- ३०. गोयमा । उड्ढ वा होज्जा, अहे वा होज्जा, तिरिय वा होज्जा।
- ३१ उड्ढ होमाणे सद्दावइ-वियडावइ-गधावइ-मालवत-परियाएसु वट्टवेयड्ढपव्वएसु होज्जा ।
- ३२-३४ शब्दापातिप्रभृतयो यथाक्रम जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यभि-प्रायेण हैमवतहरिवर्षरम्यकैरण्यवतेषु । (वृ० प० ४३६)
- ३५ क्षेत्रसमासाभिप्रायेण तु हैमवतैरण्यवतहरिवर्परम्य-केषु भवन्ति । (वृ० प० ४३६)

४० तेषु च तस्य भाव आकाशगमनलिव्धसम्पन्नस्य तत्र गतस्य केवलज्ञानोत्पादसब्भावे सित ।

(वृ० प० ४३६)

४१ साहरण पडुच्च सोमणसवणे वा पडगवणे वा होज्जा
'साहरण पडुच्च' त्ति देवेन नयन प्रतीत्य 'सोमण-सवणे' त्ति सौमनसवन मेरी तृतीय 'पडगवणे' त्ति मेरी चतुर्थं। (वृ० प० ४३६)

१ जं० व० ४।५७

२. जं० व० ४। ५४

३. ज० व० ४।२६६

४. ज० व० ४।२७२

५. गा० ११०

<sup>\*</sup>लय: प्रभवो चोर चोरां नै समझावै

चा०—नंदण वन ने विषे पिण संहरण हुवे छै। पिण ए नंदण वन तिरछा लोक मे छै, ते भणी इहा ऊंचा लोक ना कथन माटै सोमनस, पडग वनहीज कह्या। नदण वन न कह्यो।

४२. अधोलोक विषे हुतो थको जे, जोजन एक हजारो । अडी विजय तिहां ग्रामादिक छै, तेह विषे सुविचारो । ४३. अधोग्रामादिक भूमिभाग जे, गर्ता खाट विशेषे । अथवा दिये वा कहिता तेहिज, अति नीचे सुप्रदेशे ।।

४४. देव संहरण ले जाइ मूर्कं, तो वलयमुखादि सुवरणो। महापातालकलस विपे लहिये, अथवा भवणपति भवणो॥

४५. तिरछे लोक हुंतो थको पनर जे कर्मभूमि विषे जाणी। पच भरत ने पंच एरावत, पंच विदेह पिछाणी॥

४६. देव साहरण पडुच्च अढाई द्वीप विषे अवलोयो । दोय समुद्र विषे तेहनां डक देशभाग में होयो ।। ४७. ते प्रभु ! एक समय कितला ह्वं ? तव भाखे जिनरायो। जघन्य एक तथा दोय तथा त्रिण, उत्कृष्ट दश किहवायो।।

४८ तिण अर्थे गोयम! इम भाख्यो, दश पासे विण सुणिये। कोइक धर्म लहै सुणवो, कोइ न लहै इहविध थुणिये।

४६ यावत कोइक केवलज्ञान उपावै ते वर लहियै। कोई केवलज्ञान न पावै, अणसुणियै इम कहियै॥ ५० नवम शतक डगतीसम देश ए, इकसी तिहतरमी ढालो। भिक्खु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश्य' हरप विशालो॥ ४२. अहे होमाणे ।

४३. गहाए वा दरीए वा होज्जा ।
'गहाए व' ति गर्ते—निम्ने भूभागेऽघोलोकग्रामादौ
'दरीए व' ति तत्रैव निम्नतरप्रदेशे ।

(बु० प० ४३६)

४४. माहरणं पढुच्च पायाने वा भवणे वा होन्जा ।

'पायाने व' त्ति महापातानकनरे वनयामुखादी
'भवणे व' ति भवनवासिदेवनिवासे ।

(वृ० प० ४३६)

४५. तिरिय होमाणे पण्णरसमु कम्मभूमीमु होज्जा ।

'पन्नरममु कम्मभूमीमु' ति पञ्च भरतानि पञ्च

ऐरवतानि पञ्च महाविदेहा दृत्येव नक्षणामु ।

(वृ० प० ४३६)

४६. माहरणं पहुच्च 'अड्डाउज्जदीवममुद्दतदेवमदेमभाए होज्जा । (श० ६।४०)

४७. ते ण भते । एगममए णं केवितया होज्जा ? गोयमा! जहण्णेणं एमको या दो या तिष्णि वा, जमकोसेण दस ।

४८. से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं युच्चइ—अमोच्चा ण केवितस्म वा जाव तप्पिव्ययख्यामियाए वा अत्ये-गतिए केवितपण्णत घम्म नमेज्ज मवणयाए, अत्ये-गतिए असोच्चा णं केवितस्स वा जाव तप्पिव्ययु-वामियाए वा केलिपण्णत घम्मं नो लभेज्ज मवणयाए ।

४६. जाव अत्येगतिए केवननाण उप्पाडेज्जा, अत्येगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा। (म० ६।५१)

१. अणसुणियां जे थाय, ते तो पूर्वे आखियो। हिव सुणिया गुण पाय, ते विस्तार कहै अछै॥

#### दूहा

- २. हे प्रभु । दश पासै सुणी, केविल भाख्यो धर्म। सुणवो लाभै छै तिको, श्रमण रूप करि पर्म ?
- ३. जिन भाखै दश पे सुण्यो, कोइक सुणवो पाय। जेम असोच्चा-वत्तव्वया, तिम सोच्चा कहिवाय।।
- ४. णवर इतो विशेष छै, सोच्चा नै अभिलाव । शेष थाकतो तिमज ते, समस्तपणे कहाव ।।
- ५ यावंत जेणे मनपज्जव-ज्ञानावरणी जाण । क्षयउपशम कीधो हुवै, दशमो बोल पिछाण ॥
- ६. केवलज्ञानावरणी जिण, क्षय कीधो अवलोय। ए छै वोल इग्यारमो, हिव तेहनो फल जोय।।
- ७. ते दश ५ सुणियां छतां, धर्म सुणेवो पाय । विल शुद्ध सम्यक्त्व अनुभवी, जाव केवल उपजाय ॥
- द. जे सुण केवलज्ञान लहै, ते कोइक ने जाण।
  बोध चरित्र लिंग सिहत ने, अट्टम-अट्टम माण।।
  \*जी हो जिनराज कहै दश पै सुण्यांजी काइ उपजै केवलनाण।।
  (ध्रुपद)
- ह. अट्ठम-अट्टम जेहनैजी काइ, अतर-रहित पिछाण।तप कर आतम भावतो जी काइ, प्रकृति भद्रक सुविहाण।।
- १०. †अठम-अठम प्रमुख आख्यू वहुलपणे ते जाणियै। विशिष्ट तप करि सहित मुनि नै, अवधिज्ञान वखाणियै।।
- ११. तेह जणावा अर्थ यावत, तिमज शुभ परिणाम छै। अध्यवसाय शुभ विशुद्ध लेश्या, एकदा अभिराम छै।।

#### सोरठा

१२. तदावरण ते जाण, अवधि-ज्ञानावरणी तिका । कर्म प्रकृति पहिछाण, तेहनु क्षयउपणम थया ।।

\*लयः वीरमती तरु अंब नै जी कांइ † लयः पूज मोटा भांजे तोटा

- अनन्तर केवल्यादिवचनाश्रवणे यत्स्यात्तदुक्तमथ तच्छ्रवणे यत्स्यात्तदाह—— (वृ० प० ४३७)
- २. सोच्चा ण भते । केवलिस्स वा जाव (स० पा०) तप्पक्षियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त घम्मं लभेज्ज सवणयाए ?
- ३. गोयमा ! सोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगतिए केवलिपण्णत्त घम्म । (श० ६।५२,५३) एव जा चेव असोच्चाए वत्तव्वया सा चेव सोच्चाए वि भाणियव्वा ।
- ४ नवर -अभिलावो सोच्चे ति, सेस त चेव निरवसेस
- ५. जाव जस्स ण मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण " खभोवसमे कडे भवइ।
- ६. जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाण कम्माण खए कडे भवइ ।
- भे ण सोच्चा केविलस्स वा जाव तप्पिक्खयउवासियाए
   वा केविलपण्णत्त घम्म लभेज्ज सवणयाए, केवलं
   वोहि बुज्भेज्जा जाव केवलनाण उप्पाडेज्जा ।

(श० ६।५४)

न तस्स ण अट्ठमअट्ठमेण 'तस्स' ति य श्रुत्वा केवलज्ञानमुत्पादयेत्तस्य कस्या-प्यर्थात् प्रतिपन्नसम्यग्दर्शनचारित्रालगस्य ।

(वृ० प० ४३८)

- ह. अणिक्खित्तेणं त्वोकम्मेण अप्पाण भावेमाणस्स पगइ-भद्याए ।
- १० 'अट्टमअट्टमेण' मित्यादि च यदुनतं तत्प्रायो विकृष्ट-तपश्चरणवतः साधोरविधज्ञानमुत्पद्यत ।

(वृ० प० ४३८)

- ११. इति ज्ञापनार्थमिति । (वृ० प० ४३८) अण्णया कयावि सुभेण अन्भवसाणेण, सुभेण परिणा-मेण, लेस्साहि विसुन्भमाणीहि-विसुन्भमाणीहि ।
- १२ तयावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमेण।

- १३. 'ईहा अर्थ छनाज सन्मुख, ज्ञान चेप्टा जसु सही । अपोह ते तस् धर्म ध्यानज, पक्ष वीजो तसु नही ॥
- १४. मग्गण वर्म आलोचना, ए जाव णव्द मे जाणियै। ग्रेयणा ते अधिक धर्म आलोचना पहिछाणियै॥
- १५. †करता एम आलोचना जी कांड, अवधिज्ञान उपजत । आगुल नो भाग असख्यातमो जी काड, जघन्य जाणै देखंत ।।
- १६. उत्कृष्टपणे अलोक में जी कांइ लोक प्रमाण विचार । खंड असख्याता निको जी काइ, जाणे देखे तिवार ॥ १७. कित लेग्या विपे ते हुवै जी प्रभु । जिन भाखे पट लेस । कृष्ण जाव शुक्ल विपे जी कांइ, हिव ज्ञानद्वार कहेस ॥

वा० - इहा वृत्तिकार कह्यु — यद्यपि भाव लेक्या त्रिण प्रशस्त ने विषे हीज अविविज्ञान लहै, तो पिण द्रव्य लेक्या आश्रयी छहु लेक्या विषे पिण लाभै, सम्प्रक्त्व श्रुत नी परै, यदाह — 'समत्तसुय सव्वासु लव्भइ' इति । विल ते सम्यक्त्व अने श्रुत ते ज्ञान ए पाम्ये छते छहु लेक्या ने विषे हुवै इम कहियै इति वृत्तौ ।

'इहा ए भाव सम्यक्त्व अने ज्ञान पाम ते वेला तीन भली लेण्याहीज हुनै अने सम्यक्त्व ज्ञान पाया पर्छ छहु लेण्या हुनै । तिम अवधिज्ञान ऊपजै ते वेला तीन भली लेण्या हीज हुनै । ते माटै इहा छ लेश्या कही ते द्रव्य लेश्या आश्रयी सभनै इति ।

जे अविद्यान पाया पर्छं अप्रशस्त अध्यवसाये वर्ते तेहमे तो अप्रशस्त लेश्या पिण हुवै जे पन्नवणा पद १७ में च्यार ज्ञानी में छ लेश्या कही। तिहा वृत्तिकार मद अध्यवसाय रूप छूटण लेश्या मनपर्यायज्ञानी ने कही। ते भणी माठा अध्यवसाय हुवै ते वेला अशुभ भाव लेश्या कहियै। अने ए तो केवल सन्मुख छै ते भणी ऊंचो चढै। अविध पाया पर्छे तत्काल चढते परिणामे करि केवल पावै, ते भणी अमोच्चा नी परै भना अध्यवसाय कह्या अने माठा वर्ज्या। तेणे करी माठी भाव लेश्या पिण न हुवै, ते माठै द्रव्य छ लेश्या ने विषे अविध ऊपजै छैं। (ज० स०)

- १८ केतला ज्ञान विषे हुवै जी प्रभु ! जिन भाखै त्रिण ज्ञान । अथवा चिउ ज्ञाने हुवै जी काइ, हिव तसु विवरो आन ॥
- . १६. त्रिहु ज्ञाने हुतो थको जी काड, आभिनिवोधिक ज्ञान । श्रुत ज्ञान ने विषे हुवै जी काइ, अवधि विषे पहिछान ॥

वार अविधिज्ञान ने आद्य वे ज्ञान मित, श्रुत नो अविधिज्ञानी हुवै तिवारै अविधि ज्ञानी तीन कै विषे हुवै ।

२०. चिउं ज्ञाने हुतो छतो जी काड, आभिनिवोधिक नाण । श्रुत अविध ज्ञाने हुवै जी कांड, मनपज्जव गुणखाण ॥

या॰—मित, श्रुत, मनपर्यंव ज्ञानी नै अविध ज्ञान उत्पत्ति ययां छता ज्ञान च्यार ना भाव थी च्यार ज्ञान कै विषे ए अविध्ञानी हुवै ।

## १३,१४. ईहापोहमग्गणगवेसण।

- १५. करेमाणस्स ओहिनाणे समुप्पज्जइ । से ण तेण ओहि-नाणेणं समुप्पन्नेणं जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जति-भागं ।
- १६ उक्कोसेणं असखेज्जाइं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खडाइ जाणइ-पासइ। (श० ६।५५)
- १७ से ण भते । कित्सु लेस्सासु होज्जा ?
  गोयमा ! छसु लेस्सासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए । (श० ६।४६)
  वा०—यद्यपि भावलेश्यासु प्रशस्तास्वेव तिसृष्विप
  ज्ञानं लभते तथाऽपि द्रव्यलेश्या. प्रतीत्य पट्स्विप
  लेश्यासु लभते सम्यक्त्वश्चुतवत्, यदाह—'सम्मत्तसुयं
  सव्वासु लव्भइ' ति तल्लाभे चासी पट्स्विप भवतीत्युच्यत उति । (वृ० प० ४३८)

- १८ मे ण मते ! कितसु नाणेसु होज्जा ? गोयमा । तिसु वा, चउसु वा होज्जा ।
- १६ तिसु होमाणे वाभिणिवोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा।
  - वा०-अविवज्ञानस्याद्यज्ञानद्वयाविनाभूतत्वादिषकृता-विवज्ञानी त्रिपु ज्ञानेपु भवेदिति । (वृ० प० ४३८)
- २० चउसु होमाणे आभिणिबोहियनाण सुयनाण-ओहिनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा । (श० ६।५७) वा०—मितश्रुतमन.पर्यायज्ञानिनोऽविध - ज्ञानोत्पत्तौ ज्ञानचतुप्टयभावाच्चतुर्प् ज्ञानेष्वधिकृताविधज्ञानी भवेदिति । (वृ० प० ४३८)

<sup>&</sup>lt;sup>‡</sup>तय: पूज मोटा भांजी तोटा

<sup>†</sup>नयः वीरमती तर अव नै जी काड

३२ नगउती-जोड़

- २१. ते प्रभु! स्यू सजोगी हुवै जी काइ, अथवा अजोगी जाण । एवं जोग उपयोग नै जी कांइ, विल सघयण संठाण।।
- २२. ऊचपणो नै आउखो जी, ए सगलाई वोल। जेम असोच्चा नै कह्या जी काइ, तिमहिज कहिवा तोल।।
- २३ ते प्रभु । स्यूं सवेदे हुवै जी काइ, अथवा अवेदे होय ? जिन भाखै सवेदे हुवै जी काइ, अथवा अवेदे जोय।।

- २४. अक्षीण-वेद नै जाण, अवधिज्ञान उपज्ये थके । सवेदी छतो पिछाण, तेह अवधिज्ञानी हुनै ॥
- २५. क्षीण-वेदी रै जाण, अवधिज्ञान उपज्ये थके। अवेदी छतो पिछाण, तेह अवधिज्ञानी कह्यो॥
- २६. \*जो प्रभु! ते अवेदी हुवै जी कांइ, तो स्यू उपशात-वेद। अथवा क्षीण-वेदे हुवै जी कांइ? हिव जिन भाखै भेद।।
- २७. उपशातवेदे ते नहिं जी काइ, क्षीण-वेद मे थाय । केवल लहिवू एहनै जी कांइ, तिण सू उपशात नांय।।
- २८ जो प्रभु! ते सवेदी हुवै जी काइ, तो स्यू इत्थीवेद ? पूछा पूरवली परें जी काइ, जिन कहै सुण तज खेद ।।
- २६ इत्थिवेदे ते हुवै जी कांइ, तथा पुवेदे जोय। जन्म नपुंस विषे निह जी काइ, पुरुष-नपुसक होय।।
- ३० स्यू सकपाई ते हुवै जी काइ, कै अकपाई कहाय? जिन कहै सकषाइ हुवै जी काइ, विल अकषाई थाय।।
- ३१ †जे कषाय ने क्षय कियै विण, अवधिज्ञान लहीजियै। तेह सकषाई छतो वर, अवधिज्ञान कहीजियै॥
- ३२. जे कषाय ने क्षय कियै तसु, अवधिज्ञान लहीजियै। तेह अकषाई छतो वर, अवधिज्ञान कहीजियै॥
- ३३. †जो प्रभु ! अकषाई हुवै जी काइ, स्यू उपशात-कपाय। कै क्षीण-कपाई ने विषे जी प्रभु ! अवधिज्ञान उपजाय।।
- ३४. जिन कहै निह उपशात मे जी काइ, क्षीण-कपाई थाय। केवल पामवा योग्य छै जी काइ, तिण सू निह उपशांत कपाय।।
- ३५. जो प्रभु! सकपाई हुवै जी काइ, कितली कपाय मे थाय? जिन कहै चिहु त्रिहु वे इके जी काइ, अवधिज्ञान उपजाय।।
- ३६. चिहु कपाय हुते छते जी कांइ, तो सजलण कषाय। क्रीध मान माया विपे जी काइ, लोभ विपे ए थाय।।
- \* लय: वीरमती तरु अंव नी जी कांइ
- † लय: पूज मोटा भांजे तोटा

२१,२२ से ण भते । कि सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ? एव जोगो, उवओगो, सघयण, सठाण, उच्चत्तं, आउय च— एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव

(হা০ ৪। খ্ৰ- ६३)

२३. से णं भते <sup>1</sup> कि सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ? गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा।

भाणियव्याणि । (स० पा०)

- २४. अक्षीणवेदस्याविद्यानोत्पत्तौ सवेदक सन्नविद्यानी भवेत्। (वृ० प० ४३८)
- २५ क्षीणवेदस्य चावधिज्ञानोत्पत्ताववेदक. सन्नय स्यात् । (वृ० प० ४३८)
- २६. जइ अवेदए होज्जा कि उवसतवेदए होज्जा ? खीण-वेदए होज्जा ?
- २७ गोयमा । नो उवसतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा। उपशान्तवेदोऽयमविधज्ञानी न भवति, प्राप्तव्यकेवल- ज्ञानस्यास्य विवक्षितत्त्वादिति। (वृ० ५० ४३८)
- २८. जइ सवेदए होज्जा कि इत्यीवेदए होज्जा ? पुरिस-वेदए होज्जा ? पुरिसनपुसगवेदए होज्जा ?
- २६. गोयमा ! इत्यीवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिसनपुसगवेदए वा होज्जा। (श० ६।६४)
- ३० से ण भते । कि सकसाई होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
  - गोयमा ! सकसाई वा होज्जा, अकसाई वा होज्जा।
- ३१. य. कषायाक्षये सत्यवधि लभते स सकपायी सन्नवधि-ज्ञानी भवेत्। (वृ० प० ४३८)
- ३२. यस्तु कपायक्षयेऽसावकषायीति । (वृ० प० ४३८)
- ३३ जइ अकसाई होज्जा कि उवसतकसाई होज्जा ? खीणकसाई होज्जा ?
- ३४. गोयमा । नो उवसंतकसाई होज्जा, खीणकसाई होज्जा।
- ३५. जइ सकसाई होज्जा से ण भते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ? गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एक्कम्मि वा होज्जा ।
- ३६. चउसु होमाणे चउसु---सजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा ।

- ३७. त्रिहुं विषे हुंते छते जी काइ, संजलण माने जाण। माया लोभ विषे हुवै जी कांइ, इम नवमे गुणठाण।।
- ३८ दोय विषे हुते छते जी कांड, संजलण माया लोह। एक विषे हुते छते जी काड, सजलण लोभे रोह।।
- ३६. अध्यवसाय तसु केनला जी कांइ ? जिन कहै असंख कहाय । जेम असोच्चा तिह विधे जी कांड, जाव केवल उपजाय ॥
- ४०. धर्म केवली भाखियो जी काड, आघवेज्ज पन्नवेज्ज। तेह परूपै छै विल जी काड? जिन कहै हंत कहेज्ज।।
- ४१. प्रवरण्या लिंग ते दिये जी काइ, अन्य प्रते मुडेह? जिन कहै हंता लिंग दिये जी काइ, अन्य णिर लुच करेह।। ४२ तास सीस प्रवरणा दिये जी काइ, शिष्य अन्य मुड करेह?
- जिन कहै हता लिंग दिये जी काड, विल अन्य मुड करह :
- ४३ हे प्रभु! ते सीझै अछै जी, कांड जाव करैं दुख अंत। जिन कहे हता सीझैं अछै जी कांड, जावत अंत करंत।।
- ४४ तास सीस सीझै अछै जी कांड, जाव करैं दुख अंत। जिन कहै हा सीझै अछै जी काइ, यावत अंत करंत॥
- ४५ विल प्रशिष्य पिण तेहनां जी कांइ, सीझै यावत अत । जिन कहै हां सीझै अछै जी काइ, यावत अंत करंत ।।
- ४६ ऊर्द्ध अघो तिरि लोक मे जी कांड, जेम असोच्चा तेम। जाव अढी द्वीप वे दिंघ जी काइ, तसु इक देशे एम।।
- ४७. एक समय कितला हुवै जी प्रभु । जिन भाखै वच श्रेप्ट। जघन्य एक वे त्रिण हुवै जी काड, उत्कृष्टा इक सौ अप्ट।।
- ४८ तिण अर्थे डम आखियो जी काड, साभल ने दश पास। केवलज्ञान कोडक लहै जी काइ, कोयक न लहै तास।।
- ४६ सेवं भते ! नवम इकतीसमें जी काइ, इकसी चिमतरमी ढाल । भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी जी काइ, 'जय-जश' हरप विशाल ॥

नवमशते एकत्रिशत्तमोद्देशकार्थ . ॥ ६। ३१॥

- ३७. तिसु होमाणे तिमु---मंजनण-माण-माया-तोभेमृ होज्जा ।
- ३८. दोमु होमाणे दोमु- मंजलणमाया-लोभेमु होज्जा, एगम्मि होमाणे एगम्मि - मजलणखोभे होज्जा। (म० ६।६५)
- ३१. तस्म ण भंते ! केवितया अज्ञावमाणा पण्णता ? गोयमा ! अमंगेज्जा । (ण० १।६६-६८) एवं जहा असोच्चाए तहेय जाव (म० पा०) केवल-वरनाण-दमणे ममुष्यज्ञ । (ण० १।६६-६८)
- ४०. में ण मते ! केविनपण्णत्त धम्मं आघवेज्ज वा ? पण्णवेज्ज वा ? परन्वेज्ज वा ? हता आघवेज्ज वा, पण्णवेज्ज वा, परुवेज्ज वा ।

(श० ६।६६)

- ४१. मे ण मंते । पव्यावेज्ज वा ? मुटावेज्ज वा ? हंता पव्यावेज्ज वा, मुटावेज्ज वा । (श० ६।७०)
- ४२. तस्म ण भते । मिस्मा वि पद्यावेज्ज वा मुंदावेज्ज वा ?

हंता पव्यावेज्ज वा मुडावेज्ज वा।

(ग० ६ पृ० ४१२, टि० २)

- ४३. मे णं भते ! सिज्मिति चुज्मिति जाव मव्बदुनखाण अत करेइ ? हता मिज्मिति जाव मव्बदुवन्मण वर्त करेति । (भ० ६।७१)
- ४४. तस्म णं मंते ! मिस्मा वि मिज्मंति जाव सव्व-दुरसाण अतं करेंति ? हंता सिज्मंति जाव मव्यदुक्वाण अत करेंति । (श० ६।७२)
- ४४. तस्म ण मते ! पिमस्मा वि मिज्मिति जाव मव्य-दुवसाण अत करेंति ? हता सिज्मिति जाव सव्यदुवसाणं अत करेंति ।

(श० ६।७३) ४६ से ण भने ! कि उड्ड होज्जा ? जहेव असोच्चाए जाव अड्डाइज्जदीवसमुहतदेवकदेसभाए होज्जा ।

- ४७. ते ण मते । एगसमए ण केवतिया होज्जा ? गोयमा । जहण्णेण एवको वा दो वा तिण्णि वा, जक्कोसेण अट्रसयं।
- ४८. से तेणट्ठेण गोयमा । एवं चुच्चइ—मोच्चा ण केविलस्स वा जाव तप्पविखयउवासियाए वा अत्थे-गतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाण नो उप्पाडेज्जा। (श० ६।७५)
- ४६. सेव मते ! सेव मते ! ति । (श० ६।७६)

- इकतीसम उद्देश, केविल प्रमुख ना वचन।
   सांभल नैं सुविशेष, केवल नी उत्पत्ति कही।।
   हिवै केवली वाण, सांभल ने जेहने थयो।
   पूर्ण ज्ञान प्रधान, ते विस्तार कहै अछै।।
  - दूहा
- ३. तिण काले ने तिण समय, वाणिय ग्राम उदार। एहवै नामै नगर थो, वर्णन तास श्रीकार।।
- ४. दूतिपलासक चैत्य त्या, समवसरचा वर्द्धमान। परषद आवी धर्म सुण, पहुंती निज निज स्थान।। सुखकारी गंगेय नी वारता।।[ध्रुपद]
- ५. \*तिण काले तिण समय में, पार्क्वसंतानियो ताय हो । गुणधारी । गंगेय नामै अणगार ते, आयो वीर पे चलाय हो । गुणधारी ।।

## सोरठा

- ६. ए गंगेय अणगार, कृत्रिम नपुस कहीजियै। पनर भेद सिद्ध सार, पन्नवण धुर पद अर्थ मे।।
- ७. \*वीर प्रभु पै आवी करी, रह्यो नही अति दूर नजीक। वंदण नमण किया विना, इम वोलै तहतीक।।
- द्र. हे प्रभु ! अतर-सहित ते, नरकपणे उपजत। अथवा अंतर-रहित ते, नारक उत्पत्ति हुंत?
- ६. श्री जिन भाखै गगेया! नेरइया नरक मझार। अंतर-सहित पिण ऊपजै, ए विरह उत्पत्ति जिवार।।
- १०. अंतर-रहित पिण ऊपजै, नेरइयापणे विचार ते उत्पत्ति विरह पड़ै नहीं, तिण वेला अवधार।
- ते उत्पत्ति विरह पड़ै नही, तिण वेला अवधार।।
  ११ हे प्रभु । अंतर-सहित ते, उपजै असुरकुमार।
  कै असुर निरंतर ऊपजै ? हिव भाखै जगतार।।
- १२ अतर-सिहत पिण ऊपजै, असुरकुमार विचार। अतर-रहित पिण ऊपजै, इम जाव थणियकुमार॥
- १३. अतर-सहित प्रभु ! ऊपजै, पृथिवीकाइया जीव । अथवा निरतर ऊपजै ? हिव जिन उत्तर कहीव ॥
- १४. अतर-सहित निह ऊपजै, समय-समय असख्यात । ऊपजै छै पुढवी मझे, तिण सू अतर-रहित उपपात ।।

- १. अनन्तरोद्देशके केवल्यादिवचनं श्रुत्वा केवलज्ञानमृत्पा-दयेदित्युक्तम् (वृ०प०४३६)
- २. इह तु येन केवलिवचनं श्रुत्वा तदुत्पादितं स दर्श्यते (वृ०प०४३६)
- ३. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे नामं नयरे होत्या—वण्णओ ।
- ४. दूतिपलासए चेइए। सामी समोसढे। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया। (श० ६।७७)
- प्र. तेण कालेण तेण समएणं पासाविच्चिज्जे गगेए नामं अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ,
- ७ उवागिच्छत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामते ठिच्चा समणं भगवं महावीर एव वदासी— (श० ६।७८)
- म. संतर भते ! नेरइया जनवज्जंति ? निरतरं नेरइया जनवज्जिति ?
- ६. गगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति,
- १०. निरतरं पि नेरइया उववज्जंति। (११० ६।७६)
- ११. सतर भते ! असुरकुमारा उववज्जिति ? निरंतर असुरकुमारा उववज्जिति ?
- १२. गगेया ! संतरं पि असुरकुमारा जववज्जिति, निर-तर पि असुरकुमारा जववज्जिति । एव जाव थिणय-कुमारा । (श० ६।८०)
- १३. सतर भते ! पुढविक्काइया जववर्ज्जाति ? निरंतर पुढविक्काइया जववर्ज्जाति ?
- १४ गगेया ! नो सतरं पुडविक्काइया खववज्जति, निरतर पुढविक्काइया खववज्जति।

क्तं : गुणधारी सुखकारी हरि सुत वंदिये

- १५. एवं जावत वणस्सई, वनस्पित रे मांय। समय-समय अनंता ऊपजे, तिण सू अंतर-रहित उपजाय।। १६. वेद्यद्रि जाव वेमाणिया, कहिवा नारक जेम। अंतर-महित पिण ऊपजे, अंतर-रहित पिण तेम।।
  - सोरठा
- हुवै अछै। वलि १७. जे ऊपना छै तास, नीकलवो नों प्रव्न सुविमास, नीकलवा हिव ॥ माटै नीकले नारक जीव। अंतर-सहित ते, १८. हे प्रभु अथवा निरतर नीकलैं? हिव जिन उत्तर कहीव।। १६ अतर-सहित पिण नीकलै, नीकलवा नो विरह जद थाय। अतर-रहित पिण नीकलै, जद नीकलवा नो विरह नाय।। २० इम जाव थणियकुमार छै, हिवै पृथिवी नी पूछा वदीत। प्रभु ! पृथिवीकाडेया नीकलै, अंतर-सहित के अंतर-रहीत ? २१ जिन कहै अतर-सहित नही, समय-समय असख्यात। नीकलै छै तिण कारणे, निरतर नीकलवू आख्यात। २२. इम जाव वणस्सडकाइया, वनस्पति में समय-समय अनंता ही मरै, तिण सुं अंतर-रहित निकलेह ।। प्रभु! अंतर-सहित ते, वेइंदिया निकलंत। नीकलवू तसु अतर-रहित वेइंदिया, २४. जिन कहै अंतर-सहित पिण, वेइदिया निकलत। अतर-रहित पिण नीकलै, इम जाव व्यतर उव्वद्भत।। २५. अतर-सहित प्रभु! जोतिपि, चवै तिहा थी अथवा निरतर ते चवे ? हिव जिन उत्तर जोय।। २६ अतर-सहित पिण जोतिपि, चवै अर्छे तहतीक। अतर-रहित पिण चवै अछै, एव वैमानीक ॥ २७ नवम वत्तीस नु देश ए, इक सी पींचतरमी ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी, 'जय-जश' हरप विशाल।।

- १५. एवं जाव वणस्मइकाइया ।
- १६. वेइदिया जाव वेमाणिया एते जहा नेरझ्या । (ग० ६।८१)
- १७. उत्पन्नानां च मतामुद्वर्तना भवतीत्यतस्ता निरुपय-म्नाह--- (वृ०प० ४३६)
- १८. सतरं भंते ! नेरइया उच्चट्टंति ? निरंतरं नेरइया उच्चट्टति ?
- १६ गगेया! संतर पि नेरहया उच्चट्टित, निरतरं पि नेरहया उच्चट्टित ।
- २०. एव जाव थणियकुमारा। (श० ६।५२) सतर मते । पुढविवकाइया उच्चट्टति ?—पुच्छा।
- २१. गगेया ! नो सतरं पुढविक्काइया चन्त्रहृति, निरंतर पुढविक्काइया चन्त्रहृति ।
- २२. एवं जाव वणस्सइकाइया—नो संतरं, निरंतर उ<sup>ठब</sup>ट्टति । (ग० ६।८३)
- २३. मंतरं भंते ! वेइंदिया उन्वट्टित ? निरंतरं वेइंदिया उन्वट्टित ?
- २४. गगेया! मतरं पि वेडंदिया उब्बट्टंति, निरंतरं पि वेइदिया उब्बट्टति । एवं जाव वाणमंतरा । (श०६। ५४)
- २४. सतरं भंते । जोइनिया चयति ? पुच्छा ।
- २६. गगेया ! संतरं पि जोइसिया चयति, निरंतरं पि जोइसिया चयति । एवं वेमाणिया वि । (११० ६। ८४)

ढाल: १७६

#### वूहा

- १ पूर्वे नीकलवू कह्यं, नीकलिया ने ताय। अछै प्रवेशण अन्य गति, हिंवे प्रवेशण आय।। २ प्रभु! प्रवेशण कतिविधे ? अन्य गति थकीज जेह। नीकल अन्य गति ने विषे, जाय प्रवेशण तेह।।
- १ उद्वृत्ताना च केपांचिद्गरयन्तरे प्रवेशनं भवतीत्यत-स्तन्निरूपणायाह— (वृ०प० ४३६)
- २. कतिविहे णं मंते । पवेसणए पण्णत्ते ?

  'पवेसणए' त्ति गत्यन्तरादुद्वृत्तस्य विजातीयगतौ
  जीवस्य प्रवेशानं (वृ०प० ४४२)

<sup>\*</sup>लय : गुणधारी सुखकारा हरि सुत वंदियै

३६ भगवती-जोड़

- ३. जिन कहै तेह प्रवेशणं, भाख्यो च्यार प्रकार। नारक गति में पेसवो, नरक-प्रवेशण धार॥
- ४. तिर्यंच गति मे पेसवो, तिरि-प्रवेशण तेह। माणुस्स गति मे पेसवो, मनुष्य-प्रवेशण जेह।।
- प्र. सुर गति मांहे पेसवो, देव-प्रवेशण ताम। ऊपजवो छै जेहनों, कह्यो प्रवेशण नाम।।
- ६ नरक-प्रवेशण हे प्रभु । आख्यो कितै प्रकार ? जिन भाखै सूण गंगेया । सप्त प्रकार विचार ॥
- ७. पुढवी रत्नप्रभा प्रथम, नरक-प्रवेशण न्हाल। यावत पुढवी सातमी, उपजै तेह विचाल।। \*होजी प्रभु । गंगेय प्रश्न सुरंग, करै उमंगपणे रे लोय। होजी प्रभु । देव दयाल कृपालज भंग तरंग भणे रे लोय।।(ध्रुपद)
- द. होजी प्रभु ! एक नेरइयो ताम, नरक-प्रवेशण करै रे लोय। होजी प्रभु ! करतो छतो स्यूं, रत्नप्रभा मे संचरै रे लोय।
- होजी प्रभु । सक्करप्रभा में तेह, प्रवेशण करै हुवै ।
   होजी प्रभु । जाव सातमी माहि, तिको दुख अनुभवै ।।
- १०. गगेया । रत्नप्रभा मे हुवै, तथा सक्कर मझै । गगेया । अथवा वालु तथा, पंक मांहै सझै ॥
- ११. गगेया । तथा धूमप्रभ माहि, तथा दुख तम घनां। गगेया! तथा तमतमा भग, सप्त इक जीव ना।।
- १२. होजी प्रभु । दोय नेरइया, नरक विषे प्रवेशन करै। होजी प्रभु । रत्नप्रभा स्यू जाव, सातमी सचरै।। हिवै दोय जीव ना अट्टाईस भगा, तिण में इकसंजोगिया सात भगा प्रथम कहै छै—
- १३. गगेया ! बिहुं रत्न मे जाय, तथा विहु सक्कर मे । गगेया <sup>।</sup> बिहुं वालु में, तथा बिहुं पके भमे ॥
- १४ गगेया । विंहु धूम में तथा, विंहु ते तम मही।
  गंगेया ! तथा तमतमा विंहुं, सप्त इक योग ही।।
  हिवै दोय जीवा रा द्विकसजोगिया इक्कीस भागा, तिण में प्रथम
  छह भागा रत्नप्रभा थी हुवै ते कहै छै—
- १५. गंगेया । अथवा ते इक जीव रत्नप्रभा वरै। गंगेया । एक जीव अवलोय, सक्कर में सचरै॥
- १६ गंगेया! तथा जीव इक रत्न, एक वालु हुवै। गगेया। तथा जीव इक रत्न, पंक इक अनुभवै।।
- १७ गंगेया । तथा जीव इक रत्न, जीव इक धूम ही। गंगेया। तथा जीव इक रत्न, जीव इक तम लही।।
- गगया । तथा जाव इक रत्न, जाव इक तम लहा ॥ १८. गगेया ! तथा जीव इक रत्न, जीव इक तमतमा । गगेया ! रत्नप्रभा थी आख्या, ए षट भंग मां॥

हिवै पाच भांगा सक्करप्रभा थी कहै छै—

\*लय: अंबाजी सझ सोलै सिणगार के दर्शण दीजिये रे लोय

- ३. गंगेया । चउन्विहे पवेसणए पण्णत्ते, त जहा—नेरइय-पवेसणए ।
- ४. तिरिक्खजोणियपवेसणए, मणुस्सपवेसणए
- ५. देवपवेसणए ।
   (श० ६।८६)

   उत्पाद इत्यर्थः
   (वृ०प०४४२)
- ६. नेरइयपवेसणए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गगेया ! सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—
- ७. रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए जाव अहेसत्तमापुढ-विनेरइयपवेसणए। (श० ६।८७)
- प्गे मते <sup>1</sup> नेरइए नेरइयपवेसणएण पविसमाणे कि रयणप्पभाए होज्जा,
- ६. सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
- १०,११. गगेया । रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्त-माए वा होज्जा। (श० ६।८८)
- १२. दो भते! नेरइया नेरइयपवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
- १३,१४. गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव बहेसत्त-माए वा होज्जा।
- १५. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा
- १६-१८ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव एगे रयणप्पभाए एगे अहेसत्तभाए होज्जा।

- १६. गंगेया ! तथा जीव इक सक्कर, एक वालुय लहै।
  गंगेया ! तथा जीव इक सक्कर, इक पके रहै।।
  २०. गंगेया ! तथा जीव एक सक्कर, इक धूमे वही।
  गंगेया ! तथा जीव इक सक्कर, इक तमा मही।।
  २१. गंगेया ! तथा जीव इक सक्कर, इक तमतमा भणी।
  गंगेया ! सक्करप्रभा थी गिणती, ए पंच भग तणी।।
  हिवै च्यार भांगा वालुयप्रभा थी कहै छै—
- २२. गगेया ! तथा जीव इक वालुक, इक पके कही ।
  गंगेया ! तथा जीव इक वालुक, इक जीव धूम ही ।।
  २३. गगेया ! तथा जीव इक वालुक, इक तमा विषे ।
  गंगेया ! अथवा वालुक एक, एक तमतमा धके ।।
  हिवै पंकप्रभा थी तीन भागा कहै छै—
- २४. गंगेया ! तथा जीव इक पक, एक धूमा वहै।
  गंगेया ! तथा एक जीव पक, एक तमा लहै।।
  २५. गंगेया ! तथा जीव इक पंक, एक तमतमा मझै।
  गंगेया ! ए त्रिण भंगा पेख, पंकप्रभा थी सझै।।
  हिवै दोय भागा धूमप्रभा थी कहै छै—
- २६ गंगेया! तथा जीव इक घूम, एक तमा मघा। गंगेया! तथा जीव इक धूम, एक तमतमा अघा।। हिवै एक भांगो तमा थी कहै छै—
- २७. गंगेया ! तथा जीव इक तमा, एक तमतमा भण्यो । गंगेया ! इक ए भगो नरक छठी थी इम गुण्यो ॥ २८. गंगेया ! षट पंच चउ त्रिण वे इक, द्विकसंजोगिया । गगेया ! रत्न प्रमुख थी अनुक्रम इकवीसू किया ॥ २६ गंगेया ! इकयोगिक सत्त, द्विकयोगिक इकवीस ही । गगेया ! भग सर्व अठवीस, दोय जीव लही ॥

- ३०. तीन जीव ना ताम, प्रश्न गगेय करै हिवै। उत्तर तसु अभिराम, वीर जिनेश्वर वागरै।।
- ३१. \*होजी प्रभु! नरक विषे त्रिण जीव, प्रवेश करै तरै। होजी प्रभु! ते स्यू रत्नप्रभा मे जाय, जाव तमतमा वरै॥

हिवे भगवन् उत्तर कहै छै—तीन जीव नरक जाय तेहना इक-सयोगिक भागा सात, द्विकसयोगिक वयालीस, त्रिकसंयोगिक पैतीस— एव चीरासी भागा हुवै। ते मध्ये प्रथम इकसयोगिक सप्त भांगा कहै छै—

३२ गंगेया । रत्नप्रभा त्रिहुं होय, तथा त्रिहुं सक्करै । गगेया ! तथा त्रिहु वालुका, तथा त्रिहुं पक वरै ॥ १८-२१. अहवा एगे सनकरप्यभाए एगे वालुयप्यभाए होज्जा जाव अहवा एगे सनकरप्यभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

२२.,२३. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

२४-२७. एव एक्केका पुढवी छड्डेयव्या जाव अहवा एगे तमाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा। (श० ६।=६)

२६. तत्रैकैकपृथिच्या नारकद्वयोत्पत्तिलक्षणैकत्वे मप्त विकल्पा , पृथिवीद्वये नारकद्वयोत्पत्तिलक्षणद्विकयोगे त्वेकविणतिरित्येवमण्टाविणतिः । (वृ०प० ४४२)

३१. तिण्ण मते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?

३२,३३. गगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

<sup>\*</sup> लय: अंवाजी सझ सोलै सिणगार के दर्शण दीजिये रे लीय

३३. गेंगेया ! अथवा तीनूं धूम, तथा त्रिहुं तम विषे । गोया ! तथा त्रिह तमतमा, सप्त इणविध अखे ॥

हिन दिकसंयोगिक भागा नी आमना कहै छै—रत्न थी भागा केता ? इम एक नरक रो नाम लेइ पूछ्या लार छह नरक रही ते माट छह भागा। शक्कर थी पांच भागा, लार पांच रही ते माट पांच। वालु थी च्यार भागा, लार च्यार रही ते माट । पंक थी तीन भांगा, लार तीन रही ते माट । धूम थी दोय भागा, लार दोय रही ते माट । कूम थी दोय भागा, लार दोय रही ते माट ।

हिवै तीन जीवां रा द्विकसंयोगिक बंयालीस भागा कहै छै, तेहना विकल्प-

तथा जीव इक, रत्नप्रभा में ३४. गंगेया गंगेया ! जीव संपेख, सक्करप्रभा वरै॥ दोय ३५. गंगेया! तथा जीव इक रत्न, दोय वालुक मही। तथा जीव इक रत्न, दोय पके वही।। ३६ गंगेया ! तथा जीव इक रत्न, दोय धूमे तथा जीव इक रत्न, दोय तमा लही।। ३७ गंगेया । तथा जीव इक रत्न, दोय तमतमा रह्या। रत्न थकी षट भंग, प्रथम विकल्प कह्या।। गंगेया । ३८. गंगेया । तथा जीव वे रत्न, एक सक्कर विषे। तथा जीव वे रत्न, एक वालू धके।। ३६. गगेया! तथा जीव बे रत्न, जीव एक पक ही। गंगेया । तथा जीव बे रत्न, जीव इक धूम ही।। ४०. गंगेया । तथा जीव वे रत्न, एक तमा मघा। गगेया! तथा जीव बे रत्न, एक तमतमा अघा॥ ४१. गंगेया । ए षट भगा दूजा, विकल्प ना कह्या। बिहुं विकल्प नां द्वादश, रत्न थकी लह्या।। वे वालुय मही। ४२ गगेया । तथा जीव इक सक्कर, तथा जीव इक सक्कर, वे पके ४३. गंगेया! तथा जीव इक सक्कर, वे धूमा वसै। गगेया । तथा जीव इक सक्कर, वे तमा ४४. गगेया! तथा जीव इक सक्कर, वे तमतमा लह्या। गंगेया! धुर विकल्प नां सक्कर थी, पच भग कह्या।। ४५. गगेया! तथा जीव वे सक्कर, इक वालु मही। गगेया। तथा जीव वे सक्कर, इक पके सही।। ४६. गगेया ! तथा जीव बे सक्कर, इक धूमा विषे। गगेया! तथा जीव वे सक्कर, इक तमा धके।। ४७. गगेया! तथा जीव वे सक्कर, इक तमतमा मझै। गगेया! दूजै विकल्प सक्कर थी, पंच भग सझै]। ४८. गगेया ! तथा जीव इक वालुक, वे पके कह्या।

गगेया!

४६. गगेवा !

तथा जीव

इक वालुक,

गगेया! तथा जीव इक वालुक, वे तमतमा

तथा जीव इक वालुक, वे तमा वलो ।

वे धूमे रह्या॥

३४-३७. अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

३८-४० अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा। जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

४२-४४. अहवा एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

४५-४७. अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

४८-६३. एव जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया, तहा सव्वपुढवीण भाणियध्व जाव अहवा दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

५०. गंगेया ! ए धुर विकल्प चिउं भंग, वालुक थी कह्या । गंगेया ! विकल्प द्वितीय तणा हिव, आगल इम लह्या ॥ ५१. गंगेया ! तथा जीव वे वालुय, इक पके सही। गंगेया! तथा जीव वे वालुक, इक धूमा मही।। ५२. गंगेया! तथा जीव वे वालुक, एक तमा मघा। गंगेया! तथा जीव वे वालुक, इक तमतमा अघा।। [५३ गंगेया ! विकल्प द्वितीय भंग चिउं वालू थी कह्या। गंगेया ! विहुं विकल्प नां भंग, अठ वालुक थी लह्या ।। ५४. गंगेया! तथा जीव इक पंक, दोय धूमा मही। गंगेया! तथा जीव इक पंक, दोय तमा लही।। प्रथ्र गंगेया ! तथा जीव इक पंक, तमतमा वे कह्या। गंगेया ! ए धुर विकल्प पंक थकी त्रिहुं भंग लह्या ॥ १५६. गंगेया! तथा जीव वे पंक, इक धूमा विषे। गंगेया! तथा जीव वे पंक, एक तमा धके।। ५७. गंगेया! तथा जीव वे पंक, तमतमा इक रहै। गंगेया ! विकल्प द्वितीय पक थी, त्रिहुं भंग इम लहै।। ५ द. गंगेया ! तथा धूम एक दोय, तमा दुख अनुभवै। गंगेया ! तथा धूम इक दोय, तमतमा नै हुनै।। ५६. गंगेया ! ए धुर विकल्प, धूम थकी वे भंग लहै। गंगेया! दूजो विकल्प हिनै, तास वे भंग कहै।। ६०. गंगेया ! तथा धूम वे जीव, एक तमा विषे। गगेया। तथा धूम वे जीव, एक तमतमा धके।। ६१. गंगेया! दूजै विकल्प धूम थकी, वे भग कह्या। गगेया ! विहुं विकल्प चिहुं भग, धूम थी इम लह्या ॥ ६२. गंगेया । तथा जीव इक तमा, दोय तमतमा कही। गगेया! तमा थकी एधुर विकल्प, इक भंग सही।। ६३. गंगेया । तथा जीव वे तमा, एक तमतमा वली। गंगेया! दूजै विकल्प इक भंग, तमा थी मिली।। ६४. गंगेया ! रत्नप्रभा थी द्वादण, विहुं विकल्प करी। सक्कर थी दश, अठ वालुका धरी।।

६५ गंगेया ! पंक थकी पट, धूम थकी चिहुं जाणियै । गंगेया ! तमा थकी वे विहु विकल्प किर आणियै ।। ६६. गंगेया ! विहुं विकल्प नां भंग, वयाली भाखिया । गंगेया ! इकवीस-इकवीस इक-इक, विकल्प दाखिया ।। ६७ गंगेया ! तीन जीव ना द्विकसयोगिक कीजियै । गंगेया ! तसु वे विकल्प भग वयाली लीजियै ।। ६४. द्विकसयोगे तु तासामेको द्वाविश्यनेन नारकोत्पाद-विकल्पेन रत्नप्रभया सह शेपाभिः क्रमेण चारिताभि-लंग्धाः पड्, द्वावेक इत्यनेनापि नारकोत्पादविकल्पेन पडेंव, तदेते द्वादश, एवं शर्कराप्रभया पञ्च पञ्चेति दश एवं वालुकाप्रभयाऽप्टी (वृ० प० ४४२) ६४. पङ्कप्रभया पट् धूमप्रभया चत्वारः तम.प्रभया

द्वाविति। (वृ० ५० ४४२)

६७. द्विकयोगे द्विचत्वारिशत् । (वृ० प० ४४२)

	तीन जीवां रा इकसंजोगिया सात										
	₹	स	वा	ч	घू	त	तम				
१	₹_	0	0	0	0	٥	o				
२	o	३	0	0	0	0	0				
<b>3</b> 2 '	0	0	37	0	0	0	0				
8	0	0	0	ą	0	0	0				
<u> </u>	0	0	0	0	₹	٥	0				
Ę		0	0	0	٥	₹	0				
<u> </u>	0	0	٥	٥	٥	٥	₹				
	हिवै त	न जीव	ं रा द्वि	कसंजो	गेया वि	कल्प दो	, भांगा	४२			
		र	स	वा	प	घू	त	तम			
<b>१</b>	8	8	२	0	0	0	•	•			
۶ —	२	१	0	२	0	0	0	0			
3	₹	8	0	٥	२	0	0	0			
8	8	1	0	0	0	२	۰	0			
<u> </u>	પ્	8	0	0	۰	0	२	0			
Ę	Ę	8	0	0	•	0	٥	२			
		हिवे	दूजें वि	कल्प क	रि रत्न '	थी छह	<u> </u>				
9	<b>१</b>	२	1 8	0	0	0	0	•			
ة 	<u> २</u>	२	0	8	•	0	0	0			
3	3	२	0		१	0	0	•			
<b>१</b> 0	1 8	२	0	0	0	8	0	0			
<b>११</b>	<u> </u>	1 3		0	0	0	<b>१</b>	0			
१२	Ę	२	0	0	0	0	٥	१			

	हिर्द	<b>मक्कर</b>	थी पांच	र भांगा,	, प्रयम	विकल्प	कहै छै	
		र	표	वा	पं	वू	त	वम
१इ	3	o	१	ર્	0	0	0	0
રંદ	٥.	0	ર	o	ર	0	0	0
१४	ą	٥	१	o	o	ર્	0	0
१६	Y	٥	8	0	o	0	á	0
१७	ų	0	?	o	o	0	0	Ę
	हिर्व	सक्कर	श्री पांच	द मांगा,	, दूजी वि	विकल्पः	कहैं छै	
1	: :	र	म	वा	q	घू	त	नम
१८	?	0	२	?	o	0	0	0
₹€	1 2	0	ρ	0	ş	0		0
<del></del>	2	0	ર	o	0	1 3	0	0
२१	1 %		े २	0	0	0	1 3	
<del></del>	1 4	0	=	0	0	0	0	1
	<u> </u>	! प्रयम		। बानु यी	। च्यार	भांगाः	कहै छै	
ວ ຣ	1 3	1 0	1 0	<u>ع</u>	ि २	1 0	0	
२%	1 3	0	1 0	3	`	<u> </u>	0	1
<b> </b>	1	!	<u> </u>	1	<u> </u> 	1	<del> </del>	0
२५	!	1 0	0	?	0	0	1 7	0
र्ह	ء ا	1 0	•	<b>?</b>	0	•	0	2
		ह्वं हुर्न ।	{	:	1	भागा	कहे छै	<del></del>
হ্ড	}	1	0	1 3	!	0	0	0
२६	1	1	0	5	0	1 2	0	0
२६	=	0	•	२	0	0	1 3	0
50	8	•	•	२	0	0	0	?

हिवै	हिवै प्रथम विकल्प पंक थी तीन भांगा कहै छै												
1 8	0	o	0	१	٦	o	0						
२	0	0	0	१	•	२	0						
34	0	0	0	१	0	0	٩						
	हिवै दूर	विकल	पर्पकश	यी तीन	भांगा	<u> </u>							
	र स वा प घू त तम												
8	0	0	0	२	१	0	0						
.   २	0	0	o	२	0	१	0						
३	0	0	0	२	0	0	१						
हिर	वे प्रथमं	विकल्प	घूम थी	दो भ	ांगा								
1	0	0	0	٥	१	२	0						
२	0	0	0	0	8	0	7						
	हिवै	दूजै वि	कल्प धूर	न थी दें	ो भांगा								
?	0	0	o	0	२	१	0						
٦ ٦	0	0	0	0	२	0	१						
हिवै प्र	यम विव	ल्प तम	थी एव	ह भांगो	कहै छै								
? ?	0	0	0	0	0	\$	२						
हि	वं दूजे	विकल्प	तम थी	एक भ	ागो कहै	छ							
२ १	0	0	0	٥	0	२	१						

ए तीन जीवा रा द्विकसंजोगिया दोय विकल्प करि रत्न थी १२, सक्कर थी , वालुका थी ८, पक थी ६, धूम थी ४, तम थी २ एव ४२ भागा कह्या। हिवै न जीवा रा त्रिकसजोगिया—

हिवै तीन जीवां रा त्रिकसजोगिया ३५ भांगा कहै छै ६८ हो जी प्रभु ! तीन जीव ना त्रिक-सजोगिक हिव कहै। होजी प्रभु ! विकल्प तेहनों एक, भग पैतीस लहै।।

६८. त्रिकयोगे तु तासां पञ्चित्रशिद्धकल्पाः। (वृ० प० ४४२)

हिवै रत्न प्रभा थी १४, सक्कर प्रभा थी १०, वालु थी ६, पंक थी ३, धूम थी २ एवं ३४। तिणमें रत्न सक्कर थी पाच भांगा कहै छै

- ६ ह. गंगेया ! तथा रत्न में एक, एक सक्कर लह्यं । गंगेया ! एक वालुका पेख, प्रथम भगो कह्य ॥
- ७० गगेया! तथा रत्न मे एक, एक सक्कर मही। गगेया! एक पंक मे देख, भग दूजो सही॥
- ७१. गगेया! तथा रत्न मे एक, एक सक्कर विषे। गगेया! एक धूम सपेख, भग तीजो अखे॥
- ७२ गगेया! तथा रत्न में एक, एक सक्कर मझै।
- गंगेया! एक तमा सुविशेख, भंग चउथो सझै।। ७३. गगेया! तथा रत्न मे एक, एक सक्कर लहै।
  - इ. गगेया ! एक तमतमा देख, भंग पचम कहै।।

# हिवै रत्न वालुय थी च्यार भांगा कहै छै

- ७४ गगेया । तथा रत्न में एक, एक वालुय मिली। गंगेया । एक पक मे पेख, भंग छट्टो वली।।
- ७५. गगेया । तथा रत्न मे एक, एक वालुय लह्यो ।
  - गगेया एक धूम मे देख, भग सप्तम कह्यो।।
- ७६. गगेया! तथा रत्न मे एक, एक वालुय रसै। गगेया! एक तमा संपेख, भंग अष्टम लसै।।
- ७७ गंगेया! तथा रत्न मे एक, एक वालुय भयो।
  - गगेया! एक तमतमा पेख, भंग नवमो कह्यो।।

# हिवै रत्न पक थी तीन भांगा कहै छै

- ७८ गगेया । तथा रत्न में एक, एक पके गयो। गगेया! एक धूम सुविशंख, भग दशमो कह्यो॥
- [७६. गगेया । तथा रतन में एक, एक पके बही। गगेया! एक तमा सुविशेख, भग ग्यारम सही॥
- द० गगेया! तथा रत्न में एक, एक पके मिली। गगेया! एक तमतमा देख, भंग वारम वली॥

### हिवै रत्न धूम थी दोय भांगा कहै छै

- ६१. गगेया । तथा रत्न मे एक, एक धूमा मही। गगेया । एक तमा सपेख, भग तेरम सही।।
- दर् गगेया! तथा रत्न मे एक, एक धूमा विषे। गगेया! एक तमतमा देख, भंग चवदम पक्षे॥

## हिवै रत्न तम थी एक भांगो कहै छै

द अंगेया ! तथा रत्न मे एक, एक तमा गिण्यू। गगेया । एक तमतमा पेख, भग पनरम भण्यू।।

हिनै सक्कर सूं दण भांगा तिण मे प्रथम सक्कर वालुय थी च्यार भांगा कहै छैं—

- ६६ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालु-यप्पभाए होज्जा।
- ७०. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे मक्करप्पभाए एगे पंक-प्पभाए होज्जा।
- ७१-७३ जाव अहवा एगे रयणप्यभाए एगे सक्करप्यभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

- ७४. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पक-प्पभाए होज्जा
- ७५. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे घूम-प्पभाए होजा
- ७६-७७ एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्प-भाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा।
- ७८ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकष्पभाए एगे धूमप्प- भाए होज्जा।
- ७६-८०. जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।
- दश. अहवा एगे रयणप्यभाए एगे घूमप्यभाए एगे तमाए होज्जा
- ५२. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे घूमप्पभाए एगे अहेसत्त-माए होज्जा
- ५३. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

४४ भगवती-जोड़

गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक वालुय मही।
गंगेया ! एक पंक मे पेख, भग सोलम सही।।
गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक वालुय विषे।
गंगेया ! एक धूम मे देख, भंग सतरम अखे।।
गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक वालुय रसे।
गंगेया ! एक तमा सुविशेख, भंग अष्टादशे।।
गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक वालुय भमें।
गंगेया ! एक तमतमा देख, भंग उगणीस मे।।
हिवै सक्कर पंक थी तीन भागा कहै छै

गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक पंके रह्यं।
गंगेया ! एक धूम सुविशेख, भंग वीसम कह्यं।।
गंगेया ! तथा सक्कर में एक, एक विल पंक में।
गंगेया ! एक तमा संपेख, भंग इकवीसमे।।
गंगेया ! तथा सक्कर मे एक, एक विल पंक में।
गंगेया ! एक तमतमा पेख, भंग बावीस मे।।
हिवै सक्कर धूम थी दो भांगा कहै छै

. गंगेया । तथा सक्कर में एक, एक विल घूम में।
गंगेया ! एक तमा सुविशेख, भग तेवीस में।।
गंगेया ! तथा सक्कर मे एक, एक विल धूम मे।
गंगेया ! एक तमतमा पेख, भंग चउवीस मे।।
हिवै सक्कर तम थी एक भांगो कहै छै

- . गंगेया । तथा सक्कर में एक, एक तमा भमे । गंगेया । एक तमतमा पेख, भंग पणवीस में ॥
- उ. गगेया! तथा वालु में एक, एक विल पक में।
   गगेया! एक धूम में पेख, भग छवीसमे।।
- ४. गगेया । तथा वालुय मे एक, एक विल पंक मे । गंगेया । एक तमा सुविशेख, सतावीस अंक में ।।
- इ. गगेया । तथा वालुका एक, एक विल पक मे । गगेया ! एक तमतमा देख, अठावीस अंक में ॥ हिवै वालुय धूम थी दो भांगा कहै छै—
- ७. गंगेया । तथा वालुका एक, एक विल धूम मे। गंगेया । एक तमा दुख देख, भंग गुणतीस मे।।
- प्रगेया । तथा वालुका एक, एक विल धूम में ।
   गगेया ! एक तमतमा पेख, भग ए तीसमें ।।
   हिवै वालु तम थी एक भांगो कहै छै—
   ...
- . १. गगेया । तथा वालुका एक, एक तमा भमें । गंगेया । एक तमतमा पेख, भंग इकतीसमें ॥ हिवै पंक थी तीन भांगा तिणमें प्रथम पंक थी दो भांगा

- प्तथः अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंक-प्पभाए होज्जा।
- ५५. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे घूमप्पभाए होज्जा।
- द६,द७. जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।
- ८८. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे घूमप्प-भाए होज्जा।
- ८६,६०. जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।
- ११. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे घूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा
- ६२. अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहे-सत्तमाए होज्जा
- ६३. बहवा एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।
- १४. अहवा एगे विालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूम-प्पभाए होज्जा
- ६५. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए होज्जा
- ६६. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे अहेसत्त-माए होज्जा
- १७. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा
- ६८. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्त-माए होज्जा
- ६६. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

- १००. गगेया ! तथा पक में एक, एक वाल धूम मे।
  गंगेया ! एक तमा सुविशेख, भंग वतीसमें।।
  १०१. गगेया ! तथा पंक मे एक, एक वाल धूम मे।
  गगेया ! एक तमतमा देख, भंग तैतीसमे।।
  हिवै पंक तमा थी एक भागो कहै छै—
- १०२. गंगेया ! तथा पक मे एक, एक छट्टी तमा। गगेया ! एक तमतमा पेख, भंग चउतीसमा॥ हिवै धूम थी एक भांगो कहै छै—
- १०३. गगेया । एक धूम में पेख, एक तमा भमे। गगेया ! एक तमतमा देख, भंग पैतीसमे॥
- १०४. गगेया ! तीन जीव ना त्रिक-संजोगिक ए कह्या । गंगेया ! विकल्प तेहनों एक, भंग पैत्रिस लह्या ।।

३५ भांगा कहै छै। तिणमें रत्नप्रभा थी १५, सक्कर थी १०, वालुका थी ६, पंक थी ३, धूम थी १—एवं ३५।

				· 6				
		हिबै र	त्न सक	हर थी	५ भांग	ा कही छै		
		र	स	वा	पं	वू	त	तम
१	१	१	१	१	0	٥	0	٥
२	२	१	१	o	१	o	0	o
¥	æ	१	१	o	0	१	o	0
४	٧	१	१	0	۰	0	१	o
ų	ų	१	१	٥	0	0	0	१
		रत	र वालु	थी ४ म	ांगा कह	हे छै		
Ę	१	१	0	१	१	0	o	o
હ	२	1		8	•	8	0	0
5	३	1		१	0	0	१	0
3	8	१	0	१	0	•	o	8
		हिबै र	रत्न पंक	थी ती	न भांगा	कहें छै		
१०	१	8	0	0	१	१	o	0
<b>११</b>	२	१	0	٥	१	o	१	0
१२	३	१	0	0	१	0	0	१

- १००. अहवा एगे पंकप्पभाए एगे घूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा
- १०१ अहवा एगे पंकप्पभाए एगे घूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा
- १०२ अहवा एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा
- १०३. अहवा एगे घूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। (श० १।६०)

			.·					— <u> </u>				
		हिवे रत	न घूम	थी दोय	ा भांगा	कहें छें	,					
ą	१	१	0	0	0	8	१	0				
8	٦	१	0	0	0	8	0	१				
	हिवै रत्न तम थी एक भांगो कहै छै											
X	x   8   0   0   0   8   8											
	ए रत्न प्रभा थी पनरै भांगा कह्या ।											
	हिवे सक्कर वालु थी च्यार भांगा कहै छै											
	,र स वा प धू त तम											
६	१	0	१	१	१	0	0	0				
७	२	0	१	१	0	१	0	0				
5	३	0	१	१	0	0	१	0				
3	४	0	१	१	0	o	0	१				
		हिवै स	कर पं	हथी ३	भागा	कहै छै						
<b>}</b> ∘	१	0	१	0	१	१	0	0				
२१	२	0	8	٥	१	٥	8	0				
र२	¥	0	8	٥	१	0	o	१				
		हिवं स	क्तर ध्	म थी	२ भांगा	कहै छै	5					
२३	१	0	१	0	0	१	१	0				
२४	२	•	१	0	o	1	0	१				
-	हिवै सक्कर तम थी १ भांगो कहै छै											
२५	१	0	१	0	0	0	8	8				
		ए	सक्कर	थी १०	भांगा	कह्या ।						

<del></del>	हिबै बालु पंक थी ३ मागा कहें छै										
		₹	म	वा	q	घू	त	तम			
२६	8	0	0	१	१	१	٥	0			
२७	२	0	0	१	१	0	१	0			
२६	₹	0	0	१	१	0	0	१			
1		हिबै वा	लु घूम	थी २	भांगा	कहें छैं					
36 8 0 0 8 9 0											
३०	२	0	0	१	0	१	0	१			
		हिबै ट	गलु तग	न यी १	भागो	कहें छै					
38	१	0	0	१	o	o	१	8			
	/ e/ = T.W	एवं	६भाग	ा वालु	नायी व	ह्या ।					
		हिवै	पंक घू	न यी २	भांगा	कहै छै		-			
३२	8	0		0	१	8	१	0			
\$\$	२	0	0	0	8	8		8			
		हिंब	पंक त	म यी १	भांगो	कहें छै					
३४	38 8 0 0 0 8 0 8 8										
एवं पंक थी तीन मांगा कह्या ।											
हिर्दे घूम तम थी १ मांगी कही छै											
_	३५ १ ० ० ० ० १ १ १ एतर्ल तीन जीव ना इकसंजीगिया ७ मागा, द्विकसंजीगिया										
४	तर्व तीन २ मांगा	' जीव न , त्रिकर	ग इक रंजोगिय	संजोगि या ३५	रा ७ मांगा —	मागा, -एवं सर्व	हिकसंज हे <i>५</i> ४ :	ोगिया मांगा ।			
1		rer 1									

१०५. गंगेया ! नवमें णत वत्तोसम देणज, अर्थ ही। गंगेया ! इकसी छिहतरमी ढाल, विशेष ही ॥ १०६. गंगपति <sup>।</sup> भिक्खु भारीमाल, नृपतिइंदु सिरै। गंगपति ! 'जय-जंग' हरप आनंद, सुगुण संपति वरै॥ वा०—हिवै तिकसयोगिक मे एक नरक रो नाम लेइ पूछै तेहनी आमना कहै छै—लार नरक रहै तिणमे एक छेहलो आक घटायने वाकी रहै ते आक मांडी मिलाय लेणां। जेतला आंक हुवै तेतला भांगा कैहणा। तेहनो उदाहरण कोइ पूछै —रत्न थी त्रिकसंयोगिया भागा केता? तेहनो उत्तर—रत्न थी पूछ्यो, लार छह नरक रही। तेहमे एक छेहलो छह को आक घटायां लार पाच रह्या। ते एका सू अनुक्रमे पाच ताइ मांडणा १।२।३।४।५। हिवै एहने गिणणा—एक ने दोय—तीन, तीन ने तीन—छह, छह अने च्यार—दश अने पाच—पनर, इम रत्न थी पनर भागा हुवै। सक्कर थी दश हुवै, ते किम? लार रही पांच, ते मांहिलो पांचो घटावणो १।२।३।४। एहने गिण्यां दश हुवै ते माट सक्कर थी दश हुवै। वालु थी छह ते किम? लार नरक रही च्यार, ते चोको घटावणो १।२।३। एहने गिण्या छह हुवै। पक थी तीन ते किम? लार नरक रही तीन, ते तीयो घटावणो १।२। एक ने दोय—तीन, ते माट तीन हुवै। धूम थी एक भागो, लार दोय रही, ते बीयो घटाया लार एको रहै, ते माट एक भागो। एव रत्न थी १४, सक्कर थी १०, वालु थी ६, पंक थी ३, धूम थी १—एवं त्रिकसयोगिका भागा हुवै।

त्रिकसंयोगिया मे दोय नरक रो नाम लेइ पूछ्या, लार नरक रहै जितरा भागा कैहणा। तेहनो उदाहरण — रत्न सक्कर थी त्रिकसंयोगिक किता भागा? उत्तर—५ भागा, लार पाच नरक रही ते माटै। रत्न वालु थी त्रिकसंयोगिक किता भांगा? उत्तर—४ भागा, लार च्यार नरक रही ते माटै। रत्न पंक थी त्रिकसंयोगिक किता भांगा? उत्तर—तीन भांगा, लार ३ रही ते माटै। रत्न धूम थी दोय, लार वे रही ते माटै। रत्न तम थी १ भागो, लार १ रही ते माटै।

एव रत्न थी १५। इम सक्कर थी दश। सक्कर वालु थी ४, लार ४ नरक रही ते माट । सक्कर पक थी ३, लार तीन रही ते माट । सक्कर घूम थी २, लार दोय रही ते माट । सक्कर तम थी १, लार एक रही ते माट — इम सक्कर थी १०।

इम वालु थी ६। वालु पंक थी ३, लारै तीन रही ते माटै। वालु घूम थी २, लारै दोय रही ते माटै। वालु तम थी १, लारै १ रही ते माटै, इम वालु थी ६ भांगा।

पंक थी भांगा ३। पंक घूम थी २, लार वे रही ते माटै। पंक तम थी १, लार १ रही ते माटे। इम त्रिकसंयोगिक मे दीय नरक रो नाम लेई पूछी तेहनी आमना कही।

### ढाल: १७७

### दूहा

१. च्यार नेरइया हे प्रभु! नरकप्रवेशन न्हाल। रत्नप्रभा मे स्यूं हुवै, जाव तमतमा भाल? २. जिन भाखै सुण गंगेया! चिउं रत्न मे जाय। अथवा च्यारूं सक्कर मे, तथा वालु चिउं पाय।। ३. अथवा. च्यारू पंक में, तथा धूम चिउ धार। तथा तमा चिउं ऊपजै, तथा तमतमा च्यार।। ४ च्यार जीव ना भंग इम, इक संजोगिक सात। विकल्प तेहनो एक है, कह्यो पूर्व अवदात।।

- १. चत्तारि मते ! नेरइया नेरइयपवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्यभाए होज्जा ?— पुच्छा ।
- २,३. गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।
  - ४. प्रथिवीनामेकत्वे सप्त विकल्पाः (वृ०प० ४४२)

	च्यार जीव नां इकसंजोगिया मांगा ७ कह्या ।										
	₹	म	वा	पं	वू	त	तम				
१	४	0	0	o	0	o	0				
२	o	8	o	٥	o	0	0				
ą	0	0	ሄ	0	0	0	o				
8	•	o	0	४	0	0	o				
ų	٥	0	0	0	8	o	0				
Ę	0	0	0	0	0	Y	0				
હ	0	0	0	o	0	0	8				

५ च्यार जीव नां हिव कहूं, द्विकसंजोगिक न्हाल। त्रिहुं विकल्प करिने तसु, भंगा त्रेसठ भान।।

हिर्व च्यार जीव नां द्विकसंजोगिक नां विकल्प तीन, भागा ६३ कहै छ— रत्न थी १८, मक्कर थी १५, वालु थी १२, पंक थी ६, वूम थी ६, तम थी ३ भांगा, त्रिहुं विकल्प करि इम ६३ भागा हुवै।

प्रथम रत्नप्रभा थी एक विकल्प ना पट भागा हुवै । ते तीन विकल्प करि १८ भागा कहे छै---

> \*मुगुण मुखदाई रे, मुगुण सुखदाई रे, गंगेय नणां ए प्रव्न प्रवर वरदाई रे। [छुपदं]

- ६. तथा जीव इक रत्न प्रभा में, त्रिण सक्कर रै मांही रे। अथवा एक रत्न में उपजै, तीन वालुका पाई रे।
- ७. अथवा एकज रत्नप्रभा में, तीन पंक रै मांही। तथा जीव डक रत्नप्रभा में, तीन धूम दुखदाई।।
- द. अथवा एकज रत्नप्रभा में, तीन तमा कहिवाई। तथा जीव इक रत्नप्रभा में, तीन तमतमा मांही॥
- ६. धुर विकल्प करि रत्नप्रभा थी, ए पट भंगा किंदें।दूजा विकल्प करि पट भंगा, हिव आगल उम लिंदें।
- १०. तथा जीव वे रत्नप्रभा में, दोय सक्कर रै मांही। अथवा दोय रत्न रै मांहे, दोय वालुका पाई॥
- ११. अथवा दोय रत्न रै माहे, दोय पंक दुखदाई। तथा जीव वे रत्नप्रभा में, दोय धूम कहिवाई॥
- १२. अथवा दोय रत्न रै माहे, दोय तमा रै माही। अथवा दोय रत्न रै माहे, दोय तमतमा पाई॥

\*तय: गुणी गुण गावी रे

हिकसंयोगे तु तासामेकस्त्रय इत्यनेन नारकोत्पादिवकल्पेन रत्नप्रभया सह घेषाभिः क्रमेण चारिताभिर्लंब्याः
पट्, द्दौ द्दावित्यनेनापि पट्, त्रय एक इत्यनेनापि पढेव,
तदेवमेतेऽप्टादद्दा, धकराप्रभया तु तथैव त्रिषु पूर्वोत्तनारकोत्पादिवकल्पेषु पञ्च पञ्चेति पञ्चद्द्या,
एवं वालुकाप्रभया चत्वारक्ष्यत्वार इति द्दाद्द्या, पंकप्रभया त्रयक्त्रय इति नव, धूमप्रभया द्दौ द्वाविति पट्,
तम.प्रभयैकैक इति त्रयः, तदेवमेते द्विकसंयोगे
तिपप्टि.। (वृ०प० ४४२)

६. अहवा एगे रयणप्पभाए तिष्णि सक्करप्पभाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए तिष्णि वालुयप्पभाए होज्जा

७,८ एवं जाव अहवा एगे रयणप्यभाए तिष्णि अहेसत्तमाए होज्जा ।

१०-१२. अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

१३. अथवा तीन रत्न रै मांहे, एक सक्कर में थाई। तथा जीव त्रिण रत्नप्रभा मे, एक वालुका मांही।। १४. अथवा तीन रत्न रै मांहे, एक पंक कहिवाई। तथा जीव त्रिण रत्नप्रभा मे, एक धूम दुखदाई।। १५. अथवा तीन रत्न रै मांहे, एक तमा पिण पाई। तथा जीव त्रिण रत्नप्रभा मे, एक तमतमा माही।। १६. रत्नप्रभा थी त्रिहु विकल्प करि, भंग अठारै थाई। सकर पंच भंग त्रिहुं विकल्प करि, भग पनर कहिवाई।। १७. अथवा एक सक्कर रै माहे, तीन वालुका माही। तथा जीव इक सक्कर माहे, तीन पक कहिवाई।। १८ इम जिम रत्न सघात ऊपरली पृथ्वी जे कहिवाई। सक्कर थकी पिण तिम ऊपरली पृथ्वी साथे थाई।। १६ सक्कर थी पच त्रिहु विकल्प करि, पनरै भागा पाई। वालुय थी चिहु त्रिहु विकल्प करि, द्वादश भांगा थाई। २०. तीन पक थी त्रिहु विकल्प करि, नव भागा उचराई। ध्म थकी वे त्रिहु विकल्प करि, पट भांगा जिन न्याई।। २१. एक तमा थी त्रिहु विकल्प करि, भागा तीन दिखाई। इम ए द्विकसजोगिक तेसठ, भणवा वृद्धि वरदाई।। २२ जावत अथवा तीन तमा मे, एक सातमी पाई। ए तेसठमों भांगो श्री जिन कह्यो पाठ रै माही।।

	च्यार जीव नां द्विकसंजोगिया ६३ मांगा कहै छै											
		र	स	वा	प	घू	त	तम				
१	१	१	ą	0	0	0	0	0				
२	२	१	0	₹	0	0	0	٥				
3	₹	१	0	0	ą	0	0	0				
8	४	१	0	0	0	ą	0	0				
ય	ų	१	0	٥	0	o	737	0				
Ę	Ę	१	0	٥	0	٥	0	₹				
	ए ३	रत्न थी	६ भांग	ा प्रथम	विकल्प	ा करि व	ह्या ।					

१३-१५. अहवा तिष्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा तिष्णि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

१७-२२ अहवा एगे सर्वकरप्पभाए तिष्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जहेव रयणप्पभाए उविरमाहिं समं चारिय तहा सक्करप्पभाए वि उविरमाहिं सम चारेयव्व, एवं एक्केक्काए समं चारेयव्वं जाव अहवा तिष्णि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

हिवे दूजै विकल्प करि ६ भांगा कहै छै-											
9	१	२	२	0	0	o	0	0			
់	२	२	0	२	0	0	٥	0			
3	m	२	0	0	ર	0	0	0			
१०	४	7	0	0	0	२	0	0			
११	ሂ	२	0	0	o	0	२	0			
१२	Ę	२	0	0	0	0	o	२			
हिवै तीजे विकल्पे रत्न थी ६ भांगा कहै छै—											
23 8 3 8 0 0 0 0 0											
१४	२	₹	0	١	0	0	0	۰			
१५	3	<b>३</b>	0	0	१	o	0	o			
<b>१</b> ६	8	₹	٥	•	0	8	0	0			
<i>१७</i>	ય	3	0	0	•	0	१	0			
१८	Ę	3		0	0	0	0	8			
	एव	रं रत्न थ	ी तीन	विकल्पे	१८ भ	ांगा कह	(1 )				
प्रथ	गंगा म हल्पे	₹. ₹. ¥.	१ सक्क १ सक्क १ सक्क	र ३ वा र ३ पंक र ३ घूम र ३ तम र ३ तम	न न						
५ १ सक्कर ३ तमतमा         १ २ सक्कर २ वालु         ५ भागा       २ २ सक्कर २ पक         द्वितीय       ३ २ सक्कर २ घूम         विकल्पे       ४ २ सक्कर २ तम         ५ २ सक्कर २ तमतमा											
१. ३ सक्कर १ वालु  ५ भागा २. ३ सक्कर १ पक  तृतीय ३. ३ सक्कर १ धूम  विकल्पे ४. ३ सक्कर १ तम  ५. ३ सक्कर १ तमतमा।  एवं सक्कर थी ३ विकल्पे १५ मांगा कह्या।											

Annual Contract of State of St	Sandard the deligible and the control of the contro
४ भागा प्रथम विकल्पे	<ol> <li>१ वालु ३ पक</li> <li>१ वालु ३ धूम</li> <li>१ वालु ३ तम</li> <li>४ वालु ३ तमतमा</li> </ol>
४ भागा दुर्जं विकल्पे	- <b>१</b> . २ वालु २ पक <b>२</b> . २ वालु २ धूम ३. २ वालु २ तम ४ २ वालु २ तमतमा
४ भागा तीजैः विकल्पे	१. ३ वालु १ पक २ ३ वालु १ धूम ३. ३ वालु १ तम ४. ३ वालु १ तमतमा
	एवं वालु थी ३ विकल्पे १२ भांगा कह्या ।
३ भागा प्रथम विकल्पे	१. १ पक ३ धूम २. १ पक ३ तम ३ १ पक ३ तमतमा
३ भागा दूजै विकल्पे	१२ पक २ धूम २२ पंक २ तम ३.२ पक २ तमतमा।
३ भागा तीजै विकल्पे	१ ३ पक १ धूम २. ३ पक १ तम ३ ३ पक १ तमतमा।
	एवं पंक थी ३ विकल्पे ६ मांगा कह्या।
२ भागा प्रथम विकल्पे	१ १ घूम ३ तम २ १ घूम ३ तमतमा।
२ भागा द्वितीय विकल्पे	१२ घूम २ तम २२ घूम २ तमतमा।
२ भागा तीर्ज विकल्पे	१ ३ धूम १ तम २ ३ धूम १ तमतमा।
!	एवं घूम थी ३ विकल्पे ६ भांगा कह्या।

१ भागो प्रथम विकल्पे	१. १ तम ३ तमतमा
१ भागो दूर्ज विकल्पे	१.२ तम २ तमतमा
१ भागो तीर्ज विकल्पे	१ ३ तम १ तमतमा
	एवं तम थी ३ विकल्पे ३ भांगा ।
`	एवं ४ जीव नां द्विकसंजोगिया विकल्प ३, भांगा त्रेसठ ।

वा॰ —हिवै च्यार जीवा रा तीनसंजोगिया भागा कहै छै — तेहनां विकल्प तीन । तीनसंजोगिया मूल भागा ३५ तीन विकल्प माटै, त्रिगुणा कीघा १०५ भागा हुवै । एक विकल्प करि रत्नप्रभा थी १५ हुवै, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीघा ४५ हुवै । रत्नप्रभा थी १५ इम करवा । रत्न सक्कर थी ५, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीघा १५ हुवै, रत्न वालु थी ४, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीघा १२ भागा हुवै, रत्न पंक थी ३, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीघां ६ हुवै । रत्न घूम थी २, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीघां ६ हुवै । रत्न घूम थी २, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीघां ६ भागा हुवै, रत्न तम थी १ भागो, तीन विकल्प माटै त्रिगुणा कीघां तीन भागा हुवै । एव रत्न थी सर्व भागा ४५ हुवै, तिणमे प्रथम रत्न सक्कर थी पाच भागा, तेहना तीन विकल्प करि १५ भागा हुवै ते कहै छै—

- २३ अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय वालुका मांही। अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय पंक तिण पाई।।
- २४ अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय धूम कहिवाई। अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय तमा रै मांही॥
- २५ अथवा एक रत्न इक सक्कर, दोय तमतमा थाई। रत्न सक्कर थी धुर विकल्प करि, ए पंच भग कहाई।। हिनै रत्न सक्कर थी पाच भागा दुनै विकल्पे कहै छै—
- २६. अथवा एक रत्न दोय सक्कर, एक वालुका मांही। अथवा एक रत्न दोय सक्कर, एक पंक तिण पाई।।
- २७. अथवा एक रत्न दोय सक्कर, एक धूम कहिवाई। अथवा एक रत्न दोय सक्कर, एक तमा रै माही।।
- २८. अथवा एक रत्न दोय सक्कर, एक तमतमा मांही। रत्न सक्कर थी ए पच भगा, द्वितीय विकल्पे थाई॥ हिवं रत्न सक्कर थी पाच भागा तृतीय विकल्पे कहै छै---
- २६ अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक वालुका मांही। अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक पक तिण पाई।।

वा०—तथा पृथिवीनां त्रिकयोगे एक एको द्वी चेत्येव नारकोत्पादिवकल्पे रत्नप्रभाशक्कराप्रभाम्या सहान्याभि क्रमेण चारिताभिलंब्धाः पञ्च, एको द्वावेकश्चेत्येव नारकोत्पादिवकल्पान्तरेऽपि पञ्च, द्वावेक एकश्चेत्येव वमपि नारकोत्पादिवकल्पान्तरे पञ्चेवेति पञ्च-दश, एवं रत्नप्रभावालुकाप्रभाम्या सहोत्तराभिः क्रमेण चारिताभिलंब्धा द्वादश, एवं रत्नप्रभापंकप्र-भाम्यां नव, रत्नप्रभाधूमप्रभाम्यां पट्, रत्नप्रभा-तमःप्रभाम्या त्रयः। (वृ०प० ४४२)

- २३. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुय-प्पभाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्कर-प्पभाए दो पकप्पभाए होज्जा।
- २४,२५ एवं जाव एगे रयणप्पभाए एगे सवकरप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

२६-२८ बहवा एगे रयणप्यभाए दो सक्तरप्यभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्य-भाए दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

२६-३१. अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए

- ३०. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक धूम कहिवाई।
  अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक तमा दुखटाई।।
  ३१. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक तमतमा माही।
  रत्न सक्कर थी तृतीय विकल्प, ए पंच भंगा थाई।।
  हिवै रत्न वालुका थी च्यार भांगा हुवै, ते तीन विकल्प करिकै १२ भागा
  हुवै। ते प्रथम विकल्प करि च्यार भांगा कहै छै —
- ३२. अथवा एक रत्न इक वालुय, दोय पंक तिण पाई। अथवा एक रत्न इक वालुय, दोय धूम रें मांही।। ३३. अथवा एक रत्न इक वालुय, दोय तमा दुखटाई। अथवा एक रत्न इक वालुय, दोय तमतमा मांही।। हिन्नै रत्न वालुका थी दूजे विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—
- ३४. अथवा एक रत्न दो वालुय, एक पंक तिण पाई। अथवा एक रत्न दो वालुय, एक धूम रै मांही।। ३५. अथवा एक रत्न दो वालुय, एक तमा दुखदाई। अथवा एक रत्न दो वालुय, एक तमतमा मांहो।। हिवै रत्न वालुय थी तीजै विकल्प करि ४ भांगा कहै छै-
- ३६. अथवा दोय रत्न इक वालुय, एक पंक तिण पाई। अथवा दोय रत्न इक वालुय, एक धूम रै मांही॥ ३७. अथवा दोय रत्न इक वालुय, एक तमा दुखदाई। अथवा दोय रत्न इक वालुय, एक तमतमा मांही॥

हिवै रत्न पंक यो तीन भांगा हुवै, ते तीन विकल्प करि ६ भागा कहै छै--

- इद. अथवा एक रत्न इक पंके, दोय धूम दुखदाई। अथवा एक रत्न इक पंके, दोय तमा उपजाई।। इट. अथवा एक रत्न इक पके, दोय तमतमा मांही। रत्न पंक थी धुर विकल्प करि, ए त्रिण भंगा थाई।।
- ४०. अथवा एक रत्न दो पके, एक धूमका माही। अथवा एक रत्न दो पके, एक तमा उपजाई।।
- ४१ अथवा एक रत्न दो पंके, एक तमतमा मांही। रत्न पंक थी द्वितीय विकल्प, ए त्रिण भंगा थाई।।
- ४२. अथवा दोय रत्न इक पंके, एक धूमका मांही। अथवा दोय रत्न इक पंके, एक तमा उपजाई।
- ४३. अथवा दोय रत्न इक पंके, एक तमतमा मांही। रत्न पक थी तृतीय विकल्प, ए त्रिण भंगा थाई।। हिवै रत्न वूम थी वे भांगा हुवै, ते तीन विकल्प करिकै ६ भांगा कहै छै। तिहां रत्न वूम थी प्रथम विकल्प करिकै वे भागा हुवै ते प्रथम कहै छै—
- ४४. अथवा एक रत्न इक धूमा, दोय तमा उपजाई। अथवा एक रत्न इक धूमा, दोय तमतमा मांही।। हिवै रत्न यूम थी दूजा विकल्प करि २ भांगा कहै छै—
- ४५. अथवा एक रत्न वे घूमा, एक तमा तिण पाई। अथवा एक रत्न वे घूमा, एक तमतमा माही ।।
- ५४ भगवती-जोड़

- ३२,३३. अहवा एगे रयणप्यभाए एगे वालुयप्यभाए दो पंकप्यभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्यभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।
- ३४-५६. एव एएणं गमएण जहा तिण्ह तियासजोगो तहा भाणियव्वो जाव अहवा दो वूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा।

हिवै रत्न धूम थी तीजे विकल्प करि वे भागा कहै छै-

- ४६. अथवा दोय रत्न इक धूमा, एक तमा तिण पाई। अथवा दोय रत्न इक धूमा, एक तमतमा माही।। हिवै रत्न तमा थी एक भांगो हुवै ते तीन विकल्प करि तीन भागा कहै
- ४७. अथवा एक रत्न इक तमा, दोय तमतमा मांही। रत्न तमा थी घुर विकल्प करि, इम इक भगो थाई॥
- ४८ अथवा एक रत्न दो तमा, एक तमतमा मांही। रत्न तमा थी इम इक भंगो, द्वितीय विकल्प थाई।
- ४६. अथवा दोय रत्न इक तमा, एक तमतमा मांही। रत्न तमा थी इम इक भंगो, तृतीय विकल्प थाई।।
- ५०. रत्न सक्कर थी पंच कह्या भंग, रत्न वालु थी च्यारो। रत्न पक थी त्रिण भग आख्या, वारू करि विस्तारो॥
- ५१. रत्न धूम थी वे भग आख्या, रत्न तमा थी एको। रत्न थकी इक-इक विकल्प ना, पनर-पनर भग पेखो।।
- ५२. च्यार जीव नां त्रिकसंयोगिक, विकल्प तेहनां तीनो। त्रिगुणा कीधे भंग रत्न थी, पैतालीस प्रवीनो।।
  - इम सक्कर थी इक-इक विकल्प नां दश-दश भागा हुवै, तेहनी आमना कहै छै---
- ५३. इम सक्कर थी दश भांगा ह्वै, सक्कर वालु थी च्यारो। सक्कर पंक थी तीन हुवै भग, सक्कर धूम वे सारो॥
- ५४. सक्कर तमा थी इक भांगो ह्वै, सक्कर थकी दश एहो। इक-इक विकल्प ना ए करिवा, दश-दश भागा तेहो॥
- ५५. च्यार जीव नां त्रिक संजोगिक, त्रिण विकल्प रै न्यायो। त्रिगुणा कीधां सक्कर थी ए भांगा तीस कहायो॥ हिवै वालुका थी इक-इक विकल्प ना पट-पट भागा हुवै, तेहनी आमना कहै कै—
- ५६. हिवै वालुका थी पट भगा, वालु पक थी तीनो। वालु घूम थकी वे भगा, वालु तमा इक चीनो॥
- ५७. इक-इक विकल्प ना ए षट-पट, वालू थकी विचारो। त्रिण विकल्प करि त्रिगुणा कीधां, भागा हुवै अठारो। हिवै पंक थी इक-इक विकल्प करि तीन-तीन भागा हुवै, तेहनी आमना कहे छै—
- ५८. पक धूम थी वे भागा ह्वं, पक तमा थी एको। इक-इक विकल्पे त्रिण-त्रिण भागा, पक थकी नव पेखो।। हिवं धूम थी एक-एक विकल्प करि एक-एक भागी हुवं तेहनी आमना कहै
- ५६. धूम तमा तमतमा भंग इक, त्रिण विकल्प करि चंगा। इक-इक भांगो एहनो ह्वं छै, धूम थकी त्रिण भंगा।।

६०. रत्नप्रभा थी भंग पैंताली, सक्करप्रभा थी तीसो। वालु अठारे पंक थकी त्रिण, धूम थकी इक दोसो।। ६१. च्यार जीव नां त्रिकसंजोगिक, त्रिहुं विकल्प करि तेहो। हुवै एक सो नैं पंच भंगा, विधि सेती गिण लेहो।।

:	च्यार जीव रा त्रिक संजीगिया नां विकल्प तीन, मांगा १०५ । रत्न थी ४५ । ते रत्न सक्कर थी १५ मांगा ते प्रथम विकल्प करि रत्न सक्कर थी ५ मागा कहे छ										
		र	म	वा	पं	वू	त	तम			
8	१	१	ę	२	o	0	0	0			
ર	ર્	१	१	٥	२	٥	0	٥			
વ	44.	१	?	٥	o	२	٥	0			
У.	8	१	१	۰	0	0	२	٥			
ų	ų,	8	१	o	o	٥	o	२			
	हिये दू	जै विक	त्पे रतन	सक्कर	थी ५	भांगा प	हे छै-	-			
Ę	8	2	२	8	0	0	o	0			
છ	२	2	२	•	१	0	o	0			
5	3,	१	२		0	8	o	0			
3	8	१	२	0	0	0	?	0			
१०	ય	१	२	٥	0	0	0	2			
हि	वै तीजे	विकरप	करि र	त्न सक	त्र थी !	८ भांगा	कहें छै				
११	1	₹	8	1	0	0	0	0			
१२	२	२	1	0	1	0	0	0			
१३	ş	२	1	0	0	१	0	0			
१४	8	२	1	0	0	0	8	0			
१५	<u> </u>	१	3	0	0	0	0	8			

६०,६१. चतुष्प्रवेश त्रिकयोगे—
४५ रत्नप्रभा
३० शकराप्रभा
(१८ वालुकाप्रभा
६ पंकप्रभा
३ वूमप्रमा (वृ० प० ४४२)

१,२. जोड की गाथा ६० मे पंकप्रमा में तीन मंगों का उरलेख है और धूमप्रमा से एक मंग का। इस गणना से चार जीवों के त्रिक संयोगिक १०५ मंगों की संगति नहीं बैठती। पर इमसे आगे ६१वी गाथा में 'त्रिहुं विकल्प करि तेहों' लिखा गया है। यह संकेत उक्त दोनों—पकप्रमा और घूमप्रमा के लिए दिया गया है। इसके अनुमार पंकप्रमा से एक-एक विकल्प के तीन-तीन भग करने से तीन विकल्प से नी भग हो जाते हैं। इसी प्रकार घूमप्रमा से एक विकल्प का एक भंग करने से तीन विकल्प के तीन भंग हो जाते हैं।

र सं	र तीन विकल्प करि रत्न सक्कर थी १५ भांगा कह्या । हिवै											
रत्न	वालु थ	ी ४ भां	गा प्रथ	म विक	ल्पे कहैं	छं —						
		₹	स	वा	पं	घू	त	तम				
	१	8	0	१	2	0	0	0				
,	٦	१	0	१	0	٦	0	0				
;	3	१	0	8	0	0	٦	0				
1	8	8	0	१	0	0	0	२				
f	हिवे रत्न वालु थी ४ मांगा दूजे विकल्प करि कहै छै -											
0												
१	२	१	0	२	0	१	o	0				
२	₹	१	0	२	0	0	१	o				
ą	४	१	0	२	0	0	0	१				
	हिबै रत्न वालु था तीजे विकल्पे ४भागा कहै छै –											
		र	स	वा	प	घू	त	तम				
8	8	२	0	१	१	0	0	0				
<u>الإ</u>	२	२	o	१	•	8	0	0				
६	R	२	0	१	•	•	8	0				
<u>्</u> १७	8	२	o	१	0	٥	0	8				
	हिबै २	ए रत्न त्न पंक	_		भागाः प्रथम वि		है छै -	_				
१५	1 8	१	0	0	१	२	0	0				
35	7	1	0	0	8	0	२					
<del></del> ₹0	1 3	1 8	0	0	1 8	0	0	२				
	हिवै रत्न पंक थी ३ भागा दूजे विकल्प करि कहै छै —											
38	8	1	0	0	२	1	0	•				
32	र	8	0	0	२	0	8	0				

३३	n n	१	0	0	२	0	0	१		
हि	वै रत्न	पंक थी	३ भांग	ग तीजे	विकल्प	करि व	हि छै-			
		र	स	वा	प	धू	त	तम		
३४	१	२	0	0	१	१	0	٥		
३५	२	२	0	0	१	0	१	٥		
३६	na~	२	0	o	१	o	o	१		
		ए र	त्न पंक	थी ६	भांगा व	नह्या				
हिवे रत्न घूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै —										
३७	१	१	0	0	0	१	२	٥		
३६	२	१	0	0	0	१	0	२		
1	हिवै रत	न घून थ	भी २ भ	ांगा दूर्जं	विकल	प करि	कहै छैं-	_		
		र	स	वा	प	घू	नम	त		
38	8	8	0	0	0	२	१	0		
४०	२	१	0	0	0	२	0	१		
	हिवै रत	न घूम	थी २ भ	रागा ती	जैविक	ल्प करि	कहै है	š —		
४१	१	२	0	0	0	१	१	0		
४२	२	२	0	0	0	१	٥	१		
		ए रत	न घूम	थी ६ १	भागा व	ह्या ।				
f	हुवै रतन	तम थी	एक भ	ांगो प्रथ	ाम विक	ल्प करि	कहै छै	· —		
४३	१	१	0	0	0	0	१	२		
f	ह्वे रत्न	तम थी	एक क	ागो दूर्व	विकल	प करि	कहै छै			
ጸጳ	१	१	0	0	0	0	२	१		
हिबै रत्न तम थी एक भांगो तीजे विकल्प करि कहै छै—										
87 -6   6 -0 -0   0 - 6   6										
		प्₋रत	न तमः	यी तीन	_ <del>भागा</del>	कह्या				

_	सक्तर वालु थी १२ ते प्रथम विकल्प करि सपकर वालु थी ४											
सदक	र वालु	थी १		ाम विष ा कहै ई		र सपकर	∶ वालु थ	ते ४				
		र	स	वा	पं	घू	त	तम				
४६	१	0	8	१	२	0	0	0				
४७	२	0	8	8	0	२	0	0				
४६	3	0	8	8	0	0	२	0				
४६	8	0	<b>१</b>	१	0	0	0	2				
हि	वै सदक	र वालु	थी ४	भांगा	दूर्ज विव	हल्प करि	र कहे छै	;				
४०	8	0	8	२	1	0	0	0				
५१	२	0	१	२		8	0	0				
प्र२	3	0	<b>१</b>	२	•	0	1 8	0				
ধ্ৰ	8	0	१	२	) •	0	0	8				
f	हवे सक	कर वार्	तुथी ४	भागा	तीजे वि	क्ताप क	रिकहै	छ —				
7,8	8	0	२	8	8	0	٥	0				
У¥	२	0	7	8	0	8	•	0				
પ્રદ	3		્ર	1 8	0	0	8	0				
<b>গ্</b> ড							0	8				
			करिसक थी३				ा कह्या, रिकहे ई	3 -				
प्रव	:   १	2   0	,   3		,   {	:   २	0	0				
¥8		۶   ه	० १		,   8	2 0	र	0				
Ę			० ।	}	s   8			२				
_	हिर्व सकर पंत्र थी ३ भांगा दूत्रे विकल्प करि कहे छै —											
€ :	٤	٤	0 8	2 0	>   =	२   १	0	0				
Ę	२	२	0   8	٤ ،	• :	२ ०	8	0				
٦.	3	₹	0 9	१ (	0 :	२ ०	0	१				

हिंव	सवकर	पंक यं	ो ३ भां	गा ता	नै विकत	प करि	कहै	हिंचे सक्कर पंक यो ३ भांगा ताज विकरप करि कहे छै-											
		₹	स	वा	पं	घू	त	तम											
६४	१	o	ρ	0	१	१	o	o											
६५	२	0	ລ	0	१	0	१	0											
<i>દ</i> દૂધ	fix.	0	ર	0	१	0	Ď	१											
		ए सब	कर पंष	त्यी ६	. मांगा	कह्या ।													
हिर्व	हिर्व सकर धूम थी दो मांगा प्रशम विकल्प करि कहै छै —																		
દહ	१	0	Ś	o	0	१	२	۰											
६६	२	o	Ś	O	0	?	0	2											
हि	्वै सक	<b>हर घूम</b>	थी दो	भांगा :	दूर्ज विव	ल्प क	रे फहैं	₿—											
६६	१	0	१	О	0	ર	१	٥											
৬০	२	o	8	٥	0	۵۷	0	१											
हि	र्व सक्क	र धूम	यी दो	भांगा त	ीर्ज विव	हल्प कर्न	रे कहैं	<b>ē</b> −											
৬१	१	o	२	٥	٥	१	१	0											
७२	२	0	ą	0	0	8	٥	१											
		ए सः	कर घू	न यी छ	ह माग	कह्या	<b>\</b>												
हिंह	र सक्षक	र तम १	ी एक	भांगो !	नथम वि	कल्प म	<b>गरि क</b> ह	छ-											
હ રૂ	<b>१</b>	0	8	0	0	0	8	२											
हिंद	हिव सक्तर तम थी एक मांगी दूर्ज विकल्प करि कहै छै-																		
७४	8	0	8	0	0	0	२	8											
हिल	हिर्व सपकर तम थी एक भागो तीजे विकल्प करि कहै छै-																		
৬ৼ	8	0	२	0	•	٥	8	8											

	१८ भांगा तीनूं विकल्प नां हुवै ते कहै छै—										
वा							करि कहै	छं—			
		र	स	वा	Ч	धू	त	तम			
Ť	8	0	0	१	१	२	0	0			
Í	२	0	0	१	१	0	२	0			
	भ	٥	0	१	१	0	0	२			
हि	वै वाल्	ु पंकाः	यी तीन	भांगा	दूजं वि	कल्प क	रिकहै।	<b>3</b> →			
	8 0 0 8 8 0 0										
	२	0	0	१	२	0	१	0			
	πv	0	0	१	२	•	0	१			
1	हिवै व	ालु पंक	थी ३	भांगा	तीर्ज वि	कल्पे क	है छैं –				
	१	0	0	२	१	१	0	0			
	२	0	o	२	१	0	१	0			
$\overline{}$	Ą	0	0	२	१	0	0	१			
हवं	वालु ध	रूम थी	२ भांग	ाते प्र	थम विक	कल्प करि	रे कहैं।	<b>\$</b> —			
	१	٥	0	१	0	8	२	0			
;	२	0	0	१	0	१	•	२			
हवै	वालु १	यूम थी	दोय भ	रागा ते	दूजै विक	कल्प क	रि कहै	छै—			
9	१	0	0	8	0	२	<b>१</b>	0			
5	२	0	0	8	0	२	0	<b>१</b>			
-		घूम थी ।	। दोय '	Ī	जिवि	ï	रि कहै <sup>:</sup> ।				
3	8	0	0	٦	•	1 8	<b>१</b>	0			
0	2	0	0	<u>।</u> २	्या वि	१ हुए की	े रेकहै	१			
ाहव १	् वालु १	तम थ	ा एक ४	मागो प्रव	यम ।वः	००५ का	र कह	<del>छ -</del>   २			

हि	हिवे वालु तम थी एक भांगी दूर्ज विकल्प करि कहै छै —											
		र	स	वा	पं	घू	त	तम				
६२	१	0	0	१	0	0	२	१				
हि	वै वालु	तम र्थ	ो एक १	मांगो र्त	जि विक	ल्प करि	कहै ई	<del>}</del> —				
६३	8 0 0 8 8											
घूम	ए वालु तम थी ३ मांगा कह्या । एवं वालु पंक थी ६, वालु घूम थी ६, वालु तम थी ३, एवं सर्व वालु थी १८ मांगा कह्या । हिवै पंकप्रमा थी ६ मांगा तीनूं विकल्प नां हुवै ते कहै छैं —											
हिवै	हिवे पंक घूम थी दोय मांगा ते प्रथम विकल्प करि कहै छै —											
Ex 8 0 0 0 6 5 0												
દપ્ર	२	o	0	0	१	१	0	२				
हि	वं पंक	घूम थी	दोय भ	ांगा दू	ने विकत	प करि	कहै छै					
<i>દ</i> ફ	१	0	0	0	१	२	१	0				
89	२	0	٥	0	१	२	0	१				
हि	वेपंक ध	यूम थी	दोय भ	ागा ती	जे विक	ल्प करि	कहे छ	5 —				
£5	१	0	0	0	२	१	१	0				
33	२	0	o	0	ર	१	0	8				
हि	वैपंकर	तमा थी	एक भ	ांगी प्रथ	म विक	ल्प करि	कहै छै	-				
१००	१	0	0	0	१	0	१	२				
हि	वं पंक	तमा थी	एक भ	ांगी दूर	विकल	प करि	कहें छै					
१०१	१	0	0	0	१	0	२	१				
हिर्द पंक तमा थी १ भागो तीजे विकल्प करि कहै छ —												
१०२ १ ० ० ० २ ० १ १												
	ए पंक तमा थी ३ मांगा कह्या । एवं पंक घूम थी ६, पंक तम थी ३, एवं सर्व पंक थकी ६ मांगा कह्या । हिवं घूमप्रभा थी एक मांगो हुवं, ते त्रिण विकल्प करि तीन भांगा कहै छै—											

हि	हिवे घूम तम थी एक भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै —											
		₹	स -	वा	4	घू	त	तम				
१०३	१	0	0	0	0	१	१	२				
हि	हिवे घूम तम थी एक भांगो दुजे विकल्प करि कहै छै —											
१०४	१	0	0	o	0	१	२	१				
हि	वै घूम	तम थी	एक भां	ंगो तीर्	ी विक्ल	प करि	कहै छै					
१०५	१	, 0	0	٥	0	२	१	१				
रत्न	ए घूम तम थी त्रिण विकल्प करि तीन भागा कहा। एवं - रत्न थी ४५, सक्कर थी ३०, वालु थी १८, पंक थी ६, धूम थी ३ एवं सर्व १०५ च्यार जीवा रा त्रिकसंजोगिया भागा											

वा०—हिंवै च्यार जीव नां चउनकसजीगिया तेहनो विकल्प एक, भागा ३४ - हुवै, ते कहै छै—रत्न थकी २०, सक्कर थकी १०, वालु थकी ४, पक थकी १० एवं ३५ भागा । हिंवै रत्न थकी २० भागा हुवै, तिणरो विवरो—रत्न सक्कर थकी १०, रत्न वालु थकी ६, रत्न पक थकी ३, रत्न घूम थकी १—एवं रत्न थकी २० भागा । तिण मे रत्न सक्कर थकी १० हुवै, तिणरो विवरो—रत्न सक्कर वालु थकी ४, रत्न सक्कर पक थकी ३, रत्न सक्कर घूम थकी २, रत्न सक्कर तम थकी १—एवं १० रत्न सक्कर थकी हुवै । अनै रत्न वालु थकी ६ भागा हुवै, तिणरो विवरो—रत्न वालु पंक थकी ३, रत्न वालु धूम थकी २, रत्न वालु तम थकी १—एवं रत्न वालु थकी ६ भागा हुवै । हिंवै रत्न पक थकी ३ भागा हुवै, तिणरो विवरो—रत्न घूम थकी २, रत्न तम थकी १—एवं रत्न वालु थकी ६ भागा हुवै । हिंवै रत्न पक थकी ३ भागा हुवै । तिणरो विवरो—रत्न घूम थकी २, रत्न तम थकी १—एवं रत्न पंक थकी ३ भागा हुवै । हिंवै रत्न घूम थकी १० हुवै, तिणरो विवरो कहै छै—रत्न सक्कर थकी १० भागा, ते किसा ? रत्न सक्कर वालु थकी च्यार भागा हुवै, ते गाथा करी प्रथम कहै छै—

वदै जिनवानी रे, [वदै जिनवानी रे, गंगेय तणां ए प्रश्न परम पृहिछानी रे। वदै जिनवानी रे, जिन् उत्तर आपै सरस सुधारस जानी रे॥]

- ६२ अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुका जानी। इक जीव पकप्रभा मे उपजै, भागो प्रथम पिछानी।
- े ६३. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुका ठानी। इक जीव धूमप्रभा मे उपजै, दितीय भग इम आनी।।
  - ६४ अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुका मानी। एक तमा रै मांही उपजै, तृतीय भग विधानी।।
  - ६५. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुका कानी। एक तमतमा मांही उपजै, तूर्य भंग आख्यानी॥ हिवै रत्न सक्कर पक थी-तीन-भांगा कहै छै—

वा०--चतुष्कसंयोगे तु पञ्चित्रशदि्ति । (वृ०प्० ४४२)

६२. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालु-यप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा,

६३. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालु-यप्पभाए एगे घूमप्पभाए होज्जा,

- ६४. बहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालु-यप्पभाए एगे तमाए होज्जा।
- ६५ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालु-यप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,

६०: भगवती-जोड्, - १ 🔾

- ६६. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक पंक पहिछानी। इक जीव धूमप्रभा में उपजै, पंचम भंग प्रमानी।।
- ६७. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक पंक प्राप्तानी। एक तमा रै मांही उपजै, षष्टम भग वखानी।।
- ६ द. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक पक अघखानी।
  एक तमतमा मांही उपजै, भंग सप्तमो जानी॥
  हिवै रत्न सक्कर धूम थी दो भांगा कहै छै—
- ६१. अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक जीव धूमप्रभा नी। एक तमारै माही उपजै, अष्टम भग आख्यानी।।
- ७०. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक धूम कहिवानी।
  एक तमतमा मांही उपजै, नवमों भंग विधानी॥
  हिवै रत्न सक्कर तम थी १ भांगो कहै छै —
- ७१. अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक जीव तमा मघानी।
  एक तमतमा मांही उपजै, दशम भग दाख्यानी।।
  ए रत्न सक्कर थी १० भागा कहा।
  हिवै रत्न वालु थी छह भागा, ते रत्न वालु पक थी तीन भागा प्रथम कहै
- ७२. अथवा एक रत्न इक वालु, एक पक में जानी। इक जीव धुमप्रभा मे उपजै, ग्यारम भग पिछानी।।
- ७३. अथवा एक रत्न इक वालु, एक पक दुखदानी।
  एक तमा छट्टी में उपजै, द्वादशमों भंग ठानी।।
- ७४. अथवा एक रत्न इक वालु, एक पक मे जानी।
  एक जीव तमतमा उपजै, भग तेरमों ठानी।।
  हिवं रत्न वालु धूम थी दोय भागा कहै छं—
- ७५. अथवा एक रत्न इक वालु, इक जीव धूमप्रभा नी। एक तमा छट्टी मे उपजै, भग चवदमों जानी।।
- ७६. अथवा एक रत्न इक वालु, एक धूम मे जानी। एक तमतमा माही उपजै, भग पनरमो आनी।। हिवै रत्न वालु तमा थकी एक भागो कहै छै—
- ७७. अथवा एक रत्न इक वालु, एक तमा दुखखानी।
  एक तमतमा माही उपजै, भंग सोलमो जानी।।
  हिवै रत्न पक थी तीन भागा, ते पहिला रत्न पक धूम थी दोय भागा कहै
  छै—
- ७८ अथवा एक रत्न इक पके, एक धूम अघखानी। एक तमा रै माही उपजै, भग सतरमो जानी।।
- ७१. अथवा एक रत्न इक पके, एक धूम अघखानी।
  एक तमतमा मांही उपजै, भंग अठारम आनी।।
  हिवै रत्न पंक तम थी एक भागो कहै छै—
- पक तमा पंके, एक तमा उपजानी।एक तमतमा मांही उपजे, भंग गुनीसम जानी।।

- ६६. अहवा एगे रयणप्यभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंक-प्पभाए एगे घूमप्पभाए होज्जा,
- ६७. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंक-प्पभाए एगे तमाए होज्जा,
- ६८. अहवा एगे रयणप्यभाए एगे सक्करप्यभाए एगे पंकप्य-भाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,
- ६६. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे घूम-प्पभाए एगे तमाए होज्जा,
- ७०. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूम-प्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,
- ७१. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,
- ७२. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्प-भाए एगे धूमप्पभाए होज्जा,
- ७३. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकृष्प-भाए एगे तमाए होज्जा,
- ७४. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंक-प्पभाए एगे अहेसत्तमाए होजेंजा,
- ७५. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूम-प्पभाए एगे तमाए होज्जा,
- ७६. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे घूम-प्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,
- ७७. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,
- ७८. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकष्पभाए एगे धूमप्प-भाए एगे तमाए होज्जा,
- ७१. अहवा एगे रयणंप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे घूमध्य-भाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,
- न०. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,

हिंवै रतन घूम थी एक भागो कहै छै-

दश्. अथवा एक रत्न इक धूमा, एक तमा अघखानी। एक सातमी मांही उपजं, भंग वीसमो जानी।।

एवं रत्न यी २० भागा कह्या। हिवै सक्कर थी १० भागा, तिणरो विवरो—सक्कर वालु थकी ६, सक्कर पंक थकी ३, सक्कर वूम थकी १,—एवं १० भागा सक्कर थी हुवै। तिणमें सक्कर वालु थकी ६ तिणरो विवरो—मक्कर वालु पंक थकी ३, सक्कर वालु घूम थकी २, सक्कर वालु तम थकी १—एव ६ भांगा सक्कर वालु थकी हुवै। अने सक्कर पंक थकी ३ भांगा हुवै, तिणरो विवरो—सक्कर पंक वृम थकी २, सक्कर पंक तम थकी १—एव सक्कर पंक थकी ३ भांगा हुवै। अने सक्कर चूम थकी १ भागो हुवै। इम मक्कर थकी १० भांगा थाय। तिहा सक्कर वालु थकी ६ भांगा, ते किसा ? सक्कर वालु पक थकी ३ भांगा ते प्रथम गांथा करी कहै छै—

- दर. अथवा इक सक्कर इक वालु, एक पंक में जानी। इक जीव धुमप्रभा में उपजै, इकवीसम भंग आनी।।
- द३. अथवा एक सक्कर इक वालु, एक पंक में जानी।
   एक तमा रै मांहि ऊपर्ज, वावीसम भग आनी।।
- द४. अथवा एक सक्कर इक वालु, एक पंक में जानी।
  एक तमतमा मांहि ऊपजै, तेवीसम भंग ठानी।।
  हिवै सक्कर वालु यूम थकी दोय भांगा कहै छै—
- ५५ अथवा एक सक्कर इक वालु, एक धूम दुखखानी। एक तमा रै मांहि ऊपजें, चउवीसम भंग जानी॥
- द६. अथवा एक सक्कर इक वालु, एक धूम अघखानी। एक तमतमा मांहि ऊपजै, पणवीसम भंग जानी।। हिवै सक्कर वालु तम थी एक भांगो कहै छै—
- द७. अथवा एक सक्कर इक वालु, एक तमा अघखानी।
  एक तमतमा मांहि ऊपजै, छन्द्रीसम भंग जानी।।
  हिवै सक्कर पक बी तीन भांगा, तिणमें सक्कर पंक बूम बी दोव भागा
  कहै छै —
- दद. अथवा एक सक्कर इक पंके, एक धूम मे जानी। एक तमा रै माहि छपजै, सप्तवीसमों ठानी॥
- ८. अथवा एक सक्कर इक पंके, एक धूम में जानी। एक तमतमा मांहि ऊपजै, अष्टवीसमों ठानी।। हिवै मक्कर पक तम थकी एक भांगो कहै छै—
- ६०. अथवा एक सक्कर इक पंके, एक तमा में जानी। एक तमतमा माहि ऊपजै, गुणतीसम भंग ठानी।। हिवै सक्कर यूम थी एक भांगो कहै छै—
- ६१. अथवा एक सक्कर इक घूमा, एक तमा में जानी।
  एक तमतमा मांहि ऊपजै, भंग तीसमी ठानी।।
  ए सक्कर थी १० भागा कहा। हिवै वालु थी ४ भांगा कहै छै, तिणरो
  विवरो वालु पंक थी ३, वालु घूम थी १ एवं वालु थी ४। वालु पंक थी ३

दश. बहुवा एगे रयणप्यभाए एगे धूमप्यभाए एगे तमाए एगे बहुमत्तमाए होज्जा

- प्रश्नित एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे प्क-प्पभाए एगे वूमप्पभाए होज्जा ।
- ५३-६१. एव जहा रयणप्पभाए उवित्मायो पुढवीयो चारि-यायो तहा सक्करप्पभाए वि उविरमायो चारिय-व्वायो जाव यहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वूमप्पभाए एगे तमाए एगे यहेसत्तमाए होज्जा।

ते किसा ? वालु पंक घूम थी २, वालु पक तम थी १ एवं वालु पंक थी ३ । तिणमें वालु पक घूम थी २ भागा प्रथम कहै छै---

- ६२. अथवा एक वालु इक पके, एक धूमका जानी। एक तमा रै माहि ऊपजै, इकतीसम भग ठानी।।
- ६३. अथवा एक वालु इक पंके, एक धूमका जानी। एक तमतमा माहि ऊपजै, वत्तीसम भंग ठानी।। हिवै वालु पक तम थी एक भांगो कहै छै—
- ६४. अथवा एक वालु इक पंके, एक तमा में जानी। एक तमतमा माहि ऊपजै, तेतीसम भग ठानी।। हिवै वालु घूम तम थी एक भागो कहै छै—
- ६५. अथवा इक वालु इक धूमा, एक तमा मे जानी। एक तमतमा मांहि ऊपजै, चउतीसम भग ठानी।। हिवै पंक थी एक भागो कहै छै—
- ६६. अथवा इक पके इक धूमा, एक तमा मे जानी। एक तमतमा माहि ऊपजै, पणतीसम भंग ठानी।।

एव च्यार जीवां रा चउक्कसजीगिया तेहनो विकल्प १, भागा ३५। रत्न यी २०। ते वीस भागा मे रत्न न छूटै, प्रथम रत्न आवै। सक्कर थी १०। ते दश भागा मे सक्कर न छूटै, प्रथम सक्कर आवै। वालु थी ४। ते च्यार भागा मे वालु न छूटै, प्रथम वालु आवै। अनै पक थी एक—एवं ३५ भांगा जाणवा।

	च्यार जीवा रा चउक्कसंजीगिया भागा ३५ । तेहनो प्रथम विकल्प रत्न यी २०, ते किसा ? हिवै प्रथम रत्न सक्कर वालु यकी ४ मांगा कहै छै—										
	र स वा पं धू त तम										
१	8	१	१	१	१	•	0	o			
२	२	१	१	१	٥	१	0	o			
m	3	१	१	१	٥	0	१	0			
ሄ	४	१	१	१	0	0	0	१			
	हिव			_	थी ४ व ३ मांग	कह्या। गक्हे ई	<b>3</b>				
¥	१	१	१	0	१	१	0	0			
Ę	२	8	8	0	۶	0	१	٥			
b	R	१	१	0	8	0	0	१			

- ६२. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे घूमप्प-भाए एगे तमाए होज्जा
- ६३. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्प-भाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा
- ६४. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमा ए एगे अहेसत्तमाए होज्जा
- ६५. अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।
- ६६. अहवा एगे पकप्पभाए एगे घूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। (श॰ ६। ६१)

हिबे रत्न सक्कर घूम थी २ मांगा फहै छै —													
		र	स	वा	प	धू	त	तम					
5	१	१	१	0	0	<b>१</b>	१	0					
3	२	१	8	0	0	8	0	१					
हिवे रत्न सक्कर तम थी १ भांगी कहें छै—													
१०													
ए रत्न सक्कर थी १० भांगा कह्या । हिवे रत्न वालु थी ६ भांगा ते रत्न वालु पंक थी ३ भांगा प्रथम कहै छै—													
११	१	१	0	१	१	१	0	o					
<b>१</b> २	२	8	0	8	8	•	8	0					
१३ ३ १ ० १ १ ० ० १													
	f	हेर्वे रत्न	वालु ह	रूम थी	२ भांग	ा कहै	छै—						
१४	8	8	0	8	•	1 8	8	0					
१५	२		0	<b>१</b>	0	<b>१</b>	0	१					
	हि <sup>.</sup>	वे रत्नः	वालु तम	। थकी	एक भा	गो कहै	<u>छै</u>						
१६	१	१	٥	8	e	•	१	8					
ए रत्न वालु थी ६ भांगा कह्या । हिवे रत्न पंक थी ३ भांगा ते पहिला रत्न पंक घूम थी २ भांगा कहै छै —													
<b>8</b> 6	9 !	8 8		6	१	8	8	0					
<b>१</b> 2	ā   1	२   १	•	٠	१	१	•	8					
हिन्ने रत्न पंक तम थी १ भांगो कहै छै —													
86 8 8 8 0 8 0 8 8													
हिने रत्न घूम थी एक भागो कहै छैं —													
२	0	8	8 4	•	0 0	, ] ,	१   १	१					

एवं रत्न थी २० भांगा कह्या। हिवे सक्कर थकी १० भांगा थाय, तिहां सक्कर वालु पंक थकी ३ मांगा, ते प्रथम कहे छैं											
		₹	स	वा	đ	घू	त	तम			
२१	8	0	१	१	१	8	0	0			
२२	२	0	१	१	१	Ó	2	0			
२३	æ	0	१	१	१	0	0	१			
	हिवे सक्तर वालु घूम थी २ भांगा कहै छै —										
58 6 0 8 8 0 8 8 0											
२४ २ ० १ १ ० १ ० १											
	हिवं सक्कर वालु तम थी १ भांगो कहें छैं —										
२६	२६ १ ० १ १ ० ० १ १										
	हिंवे स			भागा, भागाः		सक्कर	पंक धू	म			
२७	8	0	8	0	8	१	8	0			
२८	२	0	2	0	8	१	0	8			
	हिब	ं सक्कर	पंकत	म थी।	एक भांग	ो कहै	ช์—				
२६	१	0	<b>१</b>	0	8	0	१	8			
		हिवे सब	कर घू	म थी १	भांगो	कहै छैं					
३०	8	0	१	0	0	8	१	٤			
ए सक्कर थी १० भागा कह्या । हिंदै वालु थी ४ भागा कहै छै । तिणमें वालु पंक धूम थी २ भांगा प्रथम कहै छै —											
३१	8	0	0	8	8	8	१	0			
३२	२	0	0	8	8	१	0	8			
		ए वात्	तु पंका ध	भूम थी	२ भाग	ा कह्या	1				

हिवे वालु पंक तम थी एक भांगो कहै छै-											
3											
ए वालु पंक तम थी १ मांगो कह्यो । एवं वालु पंक थी ३ भांगा थया । हिवे वालु घूम तम थी एक भांगो कहै छै—											
38	38 8 0 0 8 0 8 8										
ए व	ए वालु घूम तम यी एक भागो कह्यो । एवं वालु थी ४ भांगा यया । हिवें पंक थी १ भागो कहै छैं —										
इप १ ० ० ० १ १ १											
ए पंक थी एक भागो कह्यो । एवं ४ जीवां रा चउक्कसंजोगिया— रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पंक थी १, एवं सर्व ३५ । एतले च्यार जीव रा इकसंजोगिया ७, द्विक-											

संजोगिया ६३, त्रिकसंजोगिया १०५, चउक्कसंजोगिया ३५ सर्व २१० भागा जाणवा । विल विशेष चउक्कसंजोगिया नीं आमना कहे छै---

### गीतक-छंद

६७. वीस रत्न थी सक्कर थी दश, च्यार वालू थी सही। पक थी इक चउक्कयोगिक, भंग ए पणतीस ही।। ६८. वीस रत्न थी तेह इहविघ, सक्कर थी दश जाणियै। धूम थी इक आणियै।। वालु थी षट पक थी त्रिण, हह. रत्न सक्कर थकी दश इम, वे सहित वालू थी चिहु। रत्न सक्कर पंक थी त्रिण, भंग भणवा इह विधउ।। १००. रत्न सक्कर धूम थी वे, रत्न सक्कर तम थकी। एक भागो हुवै इम दश, रत्न सक्कर थी नकी।। १०१. रत्न वालू थकी पट इम, रत्न वालू पक थी। तीन भांगा की जिये सुध, अक्ष न्याय अवंक थी॥ १०२. रत्न वालू धूम थी वे, रत्न वालू तम हुती। एक भांगो हुवै इम षट, रत्न वालू नरक थी।। १०३. रत्न पंक थी तीन भग इम, रत्न पंक नै घूम थी। दोय भांगा हुवै ने इक, रत्न पंक ने तम हुती।। १०४ रत्न पंक थी तीन आख्या, हिवै रत्न ने धूम थी। एक भांगो हुवै इम ए, वीस भांगा रत्न थी।। १०५ सक्कर थी दश हुवै इहिवध, षट सक्कर वालू हुंती। पंक थी त्रिण धूम थी वे, एक तमा नरक थी।। १०६ वालु थी भंग च्यार ते इम, वालू पक थकी त्रिहु। एक वालू धूम थी ए, भंग वालू थी चिहुं।।

१०७. वालु पंक थी तीन ते इम, वालु पंक ने धूम थी। दोय भांगा हुनै नै इक, वालु पंक नैं तम हुंती।। १०८. ए तीन भागा वालु पंक थी, एक वालू धूम थी। ए च्यार भांगा वालु थी ह्वं, न्याय अक्ष सचरण थी।। १०६. पंक थी इक भग होवै, पवर ए पणतीस ही। चउक्कसंजोगिया भांगा, कीजिये बुद्धि प्रवर थी।। ११०. तीन नरक नो नाम लेई, भंग जो पूछीजियै। एहथी भंग केतला तसु? जाव इहविघ दीजिये।। १११. नरक वाकी रहे जेती, तेता भंग कहीजिये। एह थी भंग एतला ह्वै, एम उत्तर दीजियै॥ ११२. रत्न सक्कर वालु स्यू मिल, त्रिहुं थी भंग केतला? एम पूछ्यां तास उत्तर, दीजियं इहविध भला॥ ११३. पक धूम तम सातमीं ए, नरक चिहुं वाकी रही। ते भणी जे रत्न सक्कर, वालु थी चिहुं ह्वं सही।। ११४. रत्न सक्कर पंक थी भंग, केतला होवे सही? तीन भागा एहथी ह्वं, नरक वाकी त्रिण रही।। ११५ रत्न सक्कर धूम थी भंग, केतला होवे सही? दोय भांगा एहथी ह्वं, नरक वाकी वे रही॥ ११६. रत्न वालू तम थकी भंग, केतला होवे सही? एक भांगो एहथी ह्वं, नरक वाकी इक रही।। ११७ सक्कर वालू पंक सेती, तीन भांगा ह्वं सही। सक्कर वालू धूम थी वे, नरक वाकी वे रही।। ११८ वालु पक ने धूम सेती, भंग केता ह्वं सही? दोय भांगा एहंथी ह्वं, नरक वाकी वे रही।। ११६ वालु पक नें तमा सेती, भंग केता ह्वं सही? एक भांगो एहथी ह्वं, नरक वाकी इक रही।। १२० वालु धूम ने तमा सेती, भंग केता ह्वं सही ? एक भांगो एहथी ह्वं, नरक वाकी इक रही।। १२१ पक धूम ने तमा सेती, एक भांगी ह्वं सही। नरक वाकी इक रही छै, पणतीसमों ए भग ही।। १२२. इम नरक त्रिण तणो नाम ले, पूछियां भग जेहथी। नरक वाकी रहै जितरी, भंग तेता तेह थी।।

कोई पूछै—रत्न, सक्कर, वालू सेमिल थी कितरा भागा हुवै ? तेह्नो उत्तर—पक, धूम, तम, तमतमा —ए ४ नरक वाकी रही, ते भणी रत्न सक्कर वालु सेमिल थी ४ भागा हुवै । कोई पूछै सक्कर वालु पक थी किता भागा हुवै ? उत्तर—एहथी तीन हुवै, धूम, तम, सातमी—ए ३ वाकी रही ते माटै । कोई पूछै –वालू पक धूम थी किता हुवै ? उत्तर—दो भांगा हुवै, तमा अने सातमी—ए वे वाकी रही ते माटै । कोई पूछै वालु पक ने तम थी किता भांगा हुवै ? उत्तर—एक भागो हुवै, एक सातमी रही ते माटै । कोई पूछै –वालु धूम तम थी किता भागा हुवै ? उत्तर—एक भागो हुवै, एक सातमी वाकी रही ते माटै । इम तीन नरक भेली कर पूछ्या ए आमना जाणवी ।

हिव दीय नरक भेली कर ने पूछी ते कहै छै- इम च उनकसंजीगिया में तो तीन नरक रो नाम लेई पूछयां लारे नरक रहे जिता भागा कैहणा।

१२३. दोय नरक नों नाम लेई, भंग जो पूछीजियै। एहथी भंग केतला ह्वं ? जाव तस् इम दीजियै।। १२४. नरक वाकी रहै जेती, छठी नरक लगे सही। जेह नरक थी भंग जितरा, हुवै ते गिणवा वही।। १२५. तेह भंगा एकठा करि, गिणी संख्या की जिये। वे नरक थी तेतला भंग, एम उत्तर दीजिये॥ १२६. रत्न सक्कर वेहुं मेल्यां, भग होवे केतला? एम पूछचां तास उत्तर, दीजिये इहविघ भला।। १२७. वालु थी चिउं पक थी त्रिण, धूम वे इक तम थकी। हुवै ए दश भंग तिणसं, रत्न सक्कर थी दश नकी ।। १२८. रत्न वालू वेहुं मिलियां, भग कितरा एहथी? सातमी विण नरक तीनज, रही वाकी तेहथी।। १२६. पंक यी त्रिण घूम थी वे, एक तम यी आणियै।। ते भणी ए रत्ने वाल् थकी पट भंग जाणियै।। १३०. सक्कर ने पंक वेहुं मिलिया, भंग कितरा एहथी ? सातमी विण नरक दोयज, रही वाकी तेहथी।। १३१. धूम थी वे एक तम थी, तीन भग ह्वै तेहथी। ते भणी ए सह सक्कर पंक थकीज त्रिण भग एहथी। १३२. वालु पंक थी भंग कितरा ? तीन भांगा ह्वं सही। धूम थी वे तम थकी इक, एम तीन लहै सही।। १३३. वालु घूम थी भंग कितरा ? एक तम वाकी रहै। तेहनों भंग एक तिणसूं, वालु धूम थी इक लहै।। १३४. इम नरक वे मेल पूछचां, सप्तमी विण जे रहै। तेहनां भंग गिणी जेता, बिहुं नरक थकी लहै॥ १३५. चउसंजोगिक भंग पैंतीस, आमना ए तेह तणी। इहा आखी चतुर साखी, निपुण वृद्धिवत नर भणी।।

कोई पूछे ४ संजोगिया भागा मे रत्न सक्कर थी किता भागा हुवे ? तेहनों उत्तर-१० हुवै। तेहनो न्याय कहै छै-रत्न सक्कर वालु थी ४, रत्न सक्कर पक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी २, रत्न सक्कर तम थी १--एन दश भागा इम ह्व छै, ते माटै रत्न सक्कर थी १० हुनै। इहां एक मातमी नरक थी भागा न हुनै ते माटै छेहली सातमी नरक न लेखवणी।

कोई पूर्छ रत्न वालु घी किता भागा हुवै ? उत्तर --रत्न वालु सहित पंक घी ३, धूम थी २, तम थी १--एव ६ भागा रत्न वालु थी हुवै। इहा पिण सातमी न

कोई पूछे रत्न पंक घी किता भागा हुवे ? उत्तर-रत्न पक सहित घूम थी ?, तम थी १ -- एव तीन भांगा हुवै !

कोई पूर्छ-चालु पंक घी किता भागा हुवै ? उत्तर-रत्न वालु सहित धूम थी वे भागा हुवे छै, अने तम थी १ भागो हुवे छै, ते माटै वालु पंक थी ३ भागा हुवै ।

कोई पूछे वालु धूम थी किता भागा हुवें ? उत्तर-वालु धूम सहित तम थी १ भागो हुवें छै, ते माटे वालु तम थी १ भागी हुवें।

चउनकसजोगिया एक नरक रो नाम लेई पूछचा तेहनी आमना कहै छै—रतन थी भागा किता? उत्तर—लार नरक रही ६। तिणमे प्रथम एक आंक वर्जी गेप पाच आक माडना—२।३।४।५।६। एहनै अनुक्रम गिणणा दोय ने तीन -पाच, पाच नै च्यार नव, नव ने पाच चवदै, चवदै नै छह - वीस, इम रत्न थी चउनक-संयोगिक वीस भागा हुवै।

सक्कर थी भागा किता ? उत्तर— लार नरक रही । तिणमे छेहलो एक आक वर्जी ने शेप च्यार आंक मांडणा १।२।३।४। एहने अनुक्रम गिणणा—एक ने दोय—तीन, तीन ने तीन—छः, छ ने च्यार—दश इम मक्कर थकी चउक्क-संजोगिया १० भागा हुवै।

वालु थी भागा किता ? उत्तर — लार नरक रही जेतला भागा। एतर्ल च्यार नरक रही ते माट च्यार भागा। अने पक थी एक भागो, एव च उवन संयोगिया ३५ भागा।

चउक्कसयोगिक भागा दोय नरक रो नाम लेई पूछचा जेतली नरक बाकी रहै तिणमे एक छेहलो आक घटाय बाकी माडी गिणणा, जेतली सन्या हुवै तेतला भागा गिणणा। एहनो उदाहरण— रत्न सक्कर थी केतला भागा? उत्तर - लारै नरक रही पाच तिणमे एक छेहलो आक पाचो घटाय देणो। वाकी च्यार आक अनुक्रम माडणा १।२।३।४ हिवै एहनी सख्या गिणणी —एक नै दोय —तीन, तीन नै तीन — छ, छ नै च्यार — दण, इम रत्न सक्कर थी दश भागा।

रत्न वालु थी केतला भागा ? उत्तर — लारे नरक रही च्यार । तिणमे एक छेहलो आक चोको घटाय देणो । वाकी तीन आक अनुक्रम माटी गिणणा — १।२।३। हिवै एहनी सख्या गिणणी —एक ने दोय — तीन, तीन ने तीन — छह, इम रत्न वालु थी छह भागा ।

रत्न पंक थी केतला भागा हुवै ? उत्तर—लारै नरक रही तीन । तिणमे एक छेहलो आक तीयो घटाय देणो । वाकी दोय आक अनुक्रम माठी गिणणा— १।२। हिवै तेहनी सख्या गिणणी एक नै दोय तीन । इम रत्न पक थी तीन भागा ।

इम रत्न घूम थी एक भागो हुवै।

सक्कर वालु थी केतला भागा हुवै ? उत्तर — लारै नरक रही ४ । तिणमे एक छेहलो आक चोको घटाय देणो । वाकी तीन आक अनुक्रम माडी गिणणा — १।२।३ । हिवै एहनी सख्या गिणणी एक नै दोय — तीन, तीन नै तीन छह, इम मक्कर वालु थी ६ भागा ।

सक्कर पक थी केता भागा हुवै ? उत्तर—लारै नरक रही तीन, तिणमे एक तीयो घटाय देणो । वाकी दोय आक अनुक्रम मांडी गिणणा—१।२। हिवै एहनी सख्या गिणणी एक नै दोय = तीन, इम सक्कर पक थी ३ भागा ।

इम सक्कर घूम थी भागो एक हुवै।

वालु थी भांगा ४। ते वालु पक थी तीन पूर्ववत गिणवा, वालु धूम थी एक एव ३४, पक धूम थी एक, एव ३५।

तीन नरक रो नाम लेइ पूछचा लारे जेतली नरक रहे तेतला भागा कहिवा। १३६. \*नव वत्तीस देश ढाल ए, इकसी सिततरमी।

भिक्षु भारीमाल ऋपिराय प्रसादे, 'जय-जश' सुख गण घरमी ॥

<sup>\*</sup> लय: गुणी गुण गावी रे

६८ भगवती-जोड़

#### दूहा

१ पंच नेरइया हे प्रभु । नरक-प्रवेशन काल । रत्नप्रभा में स्यू हुवै जाव सप्तमी न्हाल ? २ जिन भाखै सुण गंगेया । रत्नप्रभा उत्पात । जावत अथवा सप्तमी, इक-संयोगिक सात ।।

	पांच जीवां रा इकसंजोगिया भांगा सात—												
	र	स	वा	पं	घू	त	तम						
१	ય	0	0	0	0	0	0						
२	0	ય	٥	0	0	0	0						
n	0	0	પ્ર	0	0	0	0						
४	o	٥	0	¥	0	۰	0						
પ્ર	0	0	0	0	ሂ	0	0						
Ę	o	o	0	0	0	ય	o						
૭	0	0	0	0	0	0	ধ						

हिवै पाच जीव ना द्विकसजोगिया, तेहना विकल्प ४, भागा चउरासी। तिणमे प्रथम रत्न थी ६ भागा ४ विकल्प करि २४ भागा कहै छै---

- ३ तथा एक ह्वं रत्न मे, सक्करप्रभा में च्यार। जाव तथा इक रत्न मे, चिहु तमतमा मझार।।
- ४. तथा दोय ह्वं रत्न मे, तीन सक्कर रै माहि। इम जावत वे रत्न मे, तीन सप्तमी ताहि॥
- प्रतथा तीन ह्वं रत्न में, दोय सक्कर उपजत'। इम जावत त्रिण रत्न में, तीन तमतमा हुत।। ६ तथा रत्न में जीव चिहु, सक्करप्रभा मे एक। जाव तथा चिहु रत्न मे, एक सप्तमी पेख।। हिवं सक्कर थी प्रभागा ४ विकल्प करि २० भागा कहै छै
- ७ अथवा इक सक्कर मझे, वालुप्रभा मे च्यार। जाव तथा इक सक्कर मे, चिहुं तमतमा मझार॥ द अथवा वे सक्कर मझे, वालुप्रभा मे तीन। जाव तथा वे सक्करे, तीन तमतमा लीन॥

- १. पच भते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किरयणप्पभाए होज्जा ? पुच्छा ।
- २. गगेया ! रयणप्यभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

- अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा
   जाव अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा ।
- ४ अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा।
- ५ अहवा तिष्णि रयणप्पभाए दोष्णि सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहेसत्तमाए होज्जा।
- ६ अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा एव जाव अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।
- ७-१० अहवा एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा। एवं जहा रयणप्पभाए सम उवरिमपुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि सम चारेयव्वाओ

हिवै सक्कर थी ५भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै —									
		₹	स	वा	प	घू	न	तम	
३४	१	0	æ	२	o	٥	٥	0	
३६	२	0	ą	0	ર	0	0	0	
₹७	n,	0	ġ.	0	,	२	0	٥	
३८	8	0	n	0	0	٥	२	0	
38	પ્	0	3	0	0	0	0	२	
f	हिचै सदकर थी ५ मांगा चउथै विकल्प करि कहै छै-								
४०	१	0	४	१	0	0	0	٥	
४१	ર	0	४	0	१	0	0	0	
४२	nv.	0	¥	0	o	१	0	0	
४३	४	0	४	•	0	o	१	0	
88	ሂ	٥	४	0	0	0	0	१	
						मांगा । । करि व	-		
	<del></del>	9 41 6	1	1	1	। कार प	.ह छ− 		
४५	१	0	0	8	8	0	0	<u> </u>	
४६	२	0	٥	१	0	४	٥	0	
४७	₹	0	0	१	0	0	8	0	
४६	8	0	0	१	0	0	۰	४	
हिबै वालु थी ४ मांगा दूजै विकल्प करि कहे छै —									
38	१	0	0	२	भ	0	٥	٥	
५०	२	0		२	0	ą	۰	o	
५१	३	0		२	0	0	₹	0	
प्र२	8	0	0	2	•	0	0	a	

हिवै वानु थी ४ मांगा। तीजै विकटप करि कहे छै—										
		र	म	वा	q	घू	त	तम		
५३	१	0	o	ą	२	0	0	0		
પૂજ	7	0	0	₹	0	२	0	0		
УŲ	₹	0	o	ą	0	0	२	0		
५६	४	0	٥	ą	o	0	٥	२		
	हिवै वालु थी ४ भांगा चउर्थ विकल्प करि कहै छै-									
५७	१	0	o	૪	१	0	٥	0		
४८	२	0	o	٤ .	o	<b>?</b>	٥	0		
ય્રદ	n.	o	0	૪	o	0	१	0		
६०	૪	0	0	૪	o	0	o	0		
ए वालु थी ४ विकल्प करि १६ मांगा कह्या ।										
	हिर्व पंय	त्यी३	भांगा	प्रथम ी	विकल्प	करि व	है छै	_		
દશ	१	0	0	o	१	४	o	0		
६२	२	0	o	0	१	0	٧	0		
६३	₹	0	o	o	१	0	o	४		
	हिबै प	ंक थी	३ भांग	ा दूजै वि	वकल्प व	करि कहै	छै -			
६४	१	o	0	0	२	7	0	٥,		
६५	२	o	٥	0	२	0	ą	0		
६६	3	٥	٥	0	२	0	0	<b>₹</b> ,		
हिवे पंक थी ३ भांगा तीजे विकल्प करि कहे छै—										
६७	१	0	٥	•	₹	٦	0	0		
६५	२	٥	0	0	3	0	२	o~		
६६	ą	0	0	0	₹	0	0	२		

हिवै पंक थी ३ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै—									
		₹	स	वा	पं	घू	त	तम	
७०	१	0	0	0	४	१	0	0	
68	२	,	0	0	8	0	१ `	0	
७२	n×	0	0	0	४	0	0	१	
ए पंक थी ४ विकल्प करि १२ भांगा कह्या । हिनै घूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै —									
७३	१	0	0	0	0	१	४	0	
68.	२	, 。	٥ ,		0	१	0	४	
हिवे घूम थी २ मांगा दूजे विकल्प करि कहै छै –									
७५	8	0	o	0	0	२	ą	0	
७६	२		٥	٥	•	२	0	₹	
हिवै घूम थी २ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै									
৩৩	8		٥	- 0	, ,	3	२	0	
৬ৼ	२	0	٥	0	0	₹	٥	२	
	हिवै	घूम थी	२ भांग	ा चौथे	विकल्प	करिक	है छैं—		
30	1 8	, •	0	0,	, 0	8	8	0	
۲0 	रि	0,	٥	0,	٥	8	0	8	
ए घूम यो ४ विकल्प करि = भांगा कह्या । हिवै तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—									
<b>5</b> 8	१	0	•	0	0	0	8	8	
हिन तम थी १ मांगो दूजे विकल्प करि कहै छै—									
<u> </u>	8	0	0	0	0	0	२	nv.	
हिचै तम थी १ भांगो तीजे विकल्प करि कहै छै-									
দঽ	8	0	0	0	0	0	₹	२	

	हिवै त	म थी १	भागो	चउथे	विकल्प	करि क	है छं –	
58	8	0	, 0	٥	0	0	४	१

ए तम थी ४ विकल्प करि ४ भांगा कह्या। एवं पांच जीव नां द्विकसजीगिया रत्न थी २४, सक्कर थी २० वालु थी १६, पंक थी १२, घूम थी ८, तम थी ४, एवं सर्व ८४ भांगा थया। २६ पंच जीव नां हिव कहूं, त्रिकसंयोगिक तेह। पट विकल्प करि भंग तसुं, वे सी दश गिण लेह।।

पच जीव ना त्रिकसंजोगिया ६ विकल्प करि २१० भांगा कहै छै-

\*२७ पनर भांगा रत्न सेती, सक्कर थी दश जिणये। वालु थी षट, पंक थी त्रिण, धूम थी इक आणिये।। २८. एह जे पैतीस भागा, षट विकल्प करि पटगुणां। दोयसी दश भंग होवे, पंच जे जीवां तणा।।

वा०— रत्न थी पनरै, तिके रत्न सक्कर थी ४, रत्न वालु थी ४, रत्न पंक थी ३, रत्न घूम थी २, रत्न तम थी १, एवं १५ भांगा ६ विकल्प करि जूजुआ कहै छै— प्रथम रत्न सक्कर थी ५ भांगा ६ विकल्प करि ३० भांगा कहै छै—

प्रथम विकल्प करि ५ भांगा---

## ंश्री जिन भाखै सुण गंगेया ! (ध्रुपदं)

- २ ह. अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीन वालु में होय जी। अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीन पंक अवलोय जी।।
- ३०. अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीन धूम रै माय। अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीन तमा में जाय।।
- ३१ अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीन सप्तमी होय। धुर विकल्प करि रत्न सक्कर सू, पच भागा ए जोय।। दुर्ज विकल्प करि ५ भागा—
- ३२. अथवा एक रत्न दोय सक्कर, दोय वालु रै माय। अथवा एक रत्न दोय सक्कर, दोय पंक दुख पाय।।
- ३३ अथवा एक रत्न दोय सक्कर, दोय धूमका जाय। अथवा एक रत्न दोय सक्कर, दोय तमा रै माय॥
- ३४. अथवा एक रत्न दोय सक्कर, दोय तमतमा मांय। दितीय विकल्प रत्न सक्कर थी, पंच भागा इमथाय।। तीज विकल्प करि ५ भागा—
- ३५. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, दोय वालुका हुत। अथवा दोय रत्न इक सक्कर, दोय पक उपजत।।
- ३६. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, दोय धूम दुखदाय। अथवा दोय रत्न इक सक्कर, दोय तमा र माय।।
- ३७. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, दोय सप्तमी होय। तृतीय विकल्प रत्न सक्कर थी, पच भंगा इम होय।। चउथ विकल्प करि ५ भागा —
- ३८. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, एक वालुका जाण । अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, एक पक पहिछाण ॥
- ३६. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, एक धूमका माय। अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, एक तमा दुख पाय।।

\*लय : पूज मोटा मांजे तोटा †लयः श्री पूज्य मीखणजी रो समरण कीजे २७,२ विकयोगे तु सप्तानां पदाना पञ्चित्रणद्विकल्पाः, पञ्चाना च वित्वेन स्थापने पड् विकल्पास्तद्यथा.... तदेवं पञ्चित्रणत. पट्भिगुणने दणोत्तरं भञ्जकणतद्वय भवति । (वृ०प० ४४४)

२६-३१. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्प-भाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा।

३२-३४. अहवा एगे रयणप्पभाए दो सनकरप्पभाए दो वालु-यप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सनकरप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

३४-३७. अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्प-भाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

३८-४० अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रय-णप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

- ४०. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, एक तमतमा देख। चोथो विकल्प रत्न सक्कर सूं, पंच भंगा इम लेख।। पांचवे विकल्प करि ५ भागा —
- ४१. अथवा दोय रत्न दो सक्कर, एक वालुका जंत। अथवा दोय रत्न वे सक्कर, एक पंक में हुंत।।
- ४२. अथवा दोय रत्न दो सक्कर, एक धूम अवलीय। अथवा दोय रत्न बे सक्कर, जीव एक तम जोय।।
- ४३ अथवा दोय रत्न दो सक्कर, एक तमतमा आय। पंचम विकल्प रत्न सक्कर थी, भग पंच इम थाय।। छठ विकल्प करि ५ भांगा—
- ४४ अथवा तीन रत्न इक सक्कर, एक वालु आख्यात । अथवा तीन रत्न एक सक्कर, एक पक दुख पात ॥
- ४५. अथवा तीन रत्न एक सक्कर, एक धूम में जान। अथवा तीन रत्न एक सक्कर, एक तमा अघखान।।
- ४६. अथवा तीन रत्न एक सक्कर, एक तमत्मा गेह। छठै विकल्प रत्न सक्कर थी, भग पंच इम लेह।।

हिवै रत्न वालु थकी च्यार भांगा हुवै, ते छह विकल्प करि २४ भांगा

हुवै ।

छै।

प्रथम विकल्प करि ४ भागा--

- ४७. अथवा एक रत्न एक वालुक, तीन पक पहिछाण। जाव तथा एक रत्न वालु इक, तीन तमतमा जान।। दुर्ज विकल्प करि ४ भागा—
- ४८. अथवा एक रत्न वे वालुक, दोय पंक मे देख। जाव तथा एक रत्न वालु वे, दोय तमतमा पेख।। तीजै विकल्प करि भांगा—
- ४६. अथवा दोय रत्न इक वालु, दोय पंक दुख पाय। जाव तथा वे रत्न वालु इक, दोय तमतमा मांय।। चिउथै विकल्प करि ४ भागा —
- ५०. अथवा एक रत्न त्रिण वालुक, एक पंक रै माय। जाव तथा इक रत्न वालु त्रिण, एक सप्तमी पाय।। पाचवे विकल्प करि ४ भागा—
- प्र. अथवा दोय रत्न दोय वालुक, एक पक अवलोय ।। जाव तथा वे रत्न वालु वे, एक सप्तमी होय ।। छठै विकल्प करि ४ भांगा—
- प्र. अथवा तीन रत्न एक वालुक, एक पक दुखखान। जाव तथा त्रिण रत्न वालु इक, एक तमतमा जान।। हिवै रत्न पक थी त्रिण भागा हुवै, ते छह विकल्प करि १८ भागा कहै

४१-४३. बहुवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव बहेसत्तमाए।

४४-४६. अहवा तिष्णि रयणप्पभाए एगे सक्तरप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा तिष्णि रयणप्पभाए एगे सक्तरप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

४७-११५. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए तिण्णि पंकप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं जहा चडण्हं तियासंजोगो भणितो तहा पंचण्ह वि तियासं-जोगो भाणियच्वो, नवरं—तथा एगो संचारिज्जइ, इह दोण्णि, सेसं तं चेव जाव अहवा तिण्णि घृमप्प-भाए एगे तमाए एगे अहसत्तमाए होज्जा।

- ५३. अथवा एक रत्न इक पंके, तीन धूमका हुंत। जाव तथा इक रत्न पंक इक, तीन तमतमा जंत।। दुजै विकल्प करि ३ भांगा—
- पूथ. अथवा एक रत्न वे पके, दोय धूमका देख। जाव तथा इक रत्न पंक वे, दोय सप्तमी लेख।। तीर्ज विकल्प करि ३ भांगा—
- ५५. अथवा दोय रत्न इक पंके, दोय धूमका स्थान। जाव तथा वे रत्न पंक इक, दोय सप्तमी जान।। चौबै विकल्प करि ३ भागा—
- ५६. अथवा एक रत्न त्रिण पंके, एक धूमका हुंत। जाव तथा इक रत्न पंक त्रिण, एक सप्तमी जंत।। पाचवे विकल्प करि ३ मांगा—
- ५७. अथवा दीय रत्न दीय पंके, एक धूमका मांय। जाव तथा वे रत्न पंक वे, एक तमतमा जाय॥ छउँ विकल्प करि ३ भांगा—
- एड अथवा तीन रत्न इक पंके, एक धूमका होय।
  जाव तथा त्रिण रत्न पंक इक, एक सप्तमी मोय।।
  हिवै रत्न धूम थी दोय मांगा ६ विकल्प करि १२ भागा कहै छै—
  प्रथम विकल्प करि २ भांगा—
- ५६. अथवा एक रत्न इक धूमा, तीन तमा उपजंत। अथवा एक रत्न इक धूमा, तीन तमतमा हुंत।। इब विकल्प करि २ भागा—
- ६०. अथवा एक रत्न वे घूमा, दोय तमा रे मांय। अथवा एक रत्न वे घूमा, दोय तमतमा जाय॥ तीर्ज विकल्प करि २ भांगा—
- ६१ अथवा दोय रत्न इक घूमा, दोय तमा दुख पाय। अथवा दोय रत्न एक घूमा, दोय तमतमा मांय॥ चडपै विकल्प करि २ भांगा—
- ६२. अथवा एक रत्न त्रिण धूमा, एक तमा दुखखान। अथवा एक रत्न त्रिण धूमा, एक तमतमा जान।। पांचवें विकल्प करि ३ भागा—
- ६३. अथवा दोय रत्न दोय घूमा, एक तमा आख्यात। अथवा दोय रत्न दोय घूमा, एक तमतमा जात॥ छउँ विकल्प करि २ भांगा—
- ६४. अथवा तीन रत्न इक धूमा, एक तमा अघस्थान। अथवा तीन रत्न इक धूमा, एक सप्तमी जान।।
- ७६ भगवती-जोड 🚎 🏸

हिनै रत्न तमा थी एक भांगी ६ विकल्प करि ६ भांगा कहै छ-

- ६५. अथवा एक रत्न इक तमा, तीन सप्तमी जंत। अथवा एक रत्न दो तमा, दोय तमतमा हुंत ।।
- ६६. अथवा दोय रत्न इक तमा, दोय तमतमा जाय। अथवा एक रत्न त्रिण तमा, एक सप्तमी मांय।।
- ६७. अथवा दोय रत्न दोय तमा, एक सप्तमी होय। अथवा तीन रतन इक तमा, एक तमतमा जोय।।

एवं रत्न थी १५ भांगा, ते ६ विकल्प करि ६० भागा कह्या।

हिवै सक्कर थी १० भांगा हुवै। ते सक्कर वालु थी ४, सक्कर पंक थी ३, सक्कर धूम थी २, सक्कर तम थी १--एवं १० भागा ६ विकल्प करि ६० भागा हुवै ।

> ते प्रथम सक्कर वालु थी ४ भागा ६ विकल्प करि २४ भांगा कहै छै-प्रथम विकल्प करि ४ भागा—

- ६८. अथवा एक सक्कर इक वालुक, तीन पंक दुखराश। जाव तथा इक सक्कर वालु इक, तीन तमतमा तास ॥ दूजै विकल्प करि ४ भांगा---
- ६६. अथवा एक सक्कर वे वालुक, दोय पक दुखधाम। जाव तथा इक सक्कर वालु बे, दोय तमतमा पाम ।। तीजे विकल्प करि ४ भागा--
- ७०. अथवा दोय सक्कर इक वालुक, दोय पक रै मांय। जाव तथा वे सक्कर वालु इक, दोय तमतमा जाय ।। चउथै विकल्प करि ४ भागा---
- ७१. अथवा एक सक्कर त्रिण वालुक, एक पंक अवलोय। जाव तथा इक सक्कर वालु त्रिण, एक पंक में होय।। पाचवे विकल्प करि ४ भांगा---
- ७२. अथवा वे सक्कर वे वालुक, एक पंक पहिछाण। जाव तथा वे सक्कर वालु बे, एक सप्तमी स्थान ॥ छठै विकल्प करि ४ भांगा---
- ७३. अथवा तीन सक्कर इक वालुक, इक पंक उपजत। जाव तथा त्रिण सक्कर वालु एक, एक तमतमा हुंत।। हिवै सक्कर पक थी तीन भांगा ६ विकल्प करि १८ भागा। प्रथम विकल्प करि ३ भांगा---
- ७४. अथवा एक सक्कर एक पंके, तीन धूम रै मांय। जाव तथा इक सक्कर पंक इक, तीन सप्तमी जाय।। दूजै विकल्प करि ३ भांगा---
- ७५. अथवा एक सक्कर दो पके, दोय धूम मे देख। जाव तथा इक सक्कर पंक वे, दोय तमतमा लेख ।।

- तीजै विकल्प करि ३ भांगा-
- ७६. अथवा दो सक्कर इक पके, दोय धूम उपजंत। जाव तथा दो सक्कर पंक इक, दोय सप्तमी हुंत।। चउथै विकल्प करि ३ भांगा—
- ७७ अथवा एक सक्कर त्रिण पंके, एक घूम अवलोय। जाव तथा इक सक्कर पंक त्रिण, एक सप्तमी होय।। पाचवे विकल्प करि ३ भागा—
- ७८. अथवा वे सक्कर दो पके, एक धूम अघस्थान। जाव तथा वे सक्कर पंक वे, एक तमतमा जान।। छठै विकल्प करि ३ भागा—
- ७१. अथवा त्रिण सक्कर इक पंके, एक धूम अवदात । जाव तथा त्रिण सक्कर पंक इक, एक सप्तमी थात ।। हिवै सक्कर घूम थी २ भागा छह विकल्प करि १२ भांगा कहाा । प्रथम विकल्प करि २ भांगा—
- अथवा एक सक्कर एक घूमा, त्रिण तमा रै मांय।
   अथवा एक सक्कर इक घूमा, तीन सप्तमी जाय।।
   दून विकल्प करि २ भागा—
- दश्. अथवा इक सक्कर वे धूमा, दोय तमा दुखराण । अथवा इक सक्कर दोय धूमा, दोय सप्तमी तास । तीजै विकल्प करि २ भांगा—
- ५२. अथवा दो सक्कर इक धूमा, दोय तमा दुखदाय।। अथवा वे सक्कर इक धूमा, दोय सप्तमी जाय।। चत्रयै विकल्प करि २ भागा—
- द अथवा इक सक्कर त्रिण धूमा एक तमा अघपूर। अथवा एक सक्कर त्रिण धूमा, एक तमतमा भूर।। पाचवे विकल्प करि २ भागा—
- ५४ अथवा वे सक्कर दो धूमा, एक तमा उपजंत । अथवा दोय सक्कर दो धूमा, एक तमतमा हुंत ॥ छठै विकल्प करि २ भागा—,
- प्प अथवा त्रिण सक्कर इक धूमा, एक तमा में होय। अथवा त्रिण सक्कर इक धूमा, एक तमतमा जोय।। हिवै सक्कर तम थी १ भागो ६ विकल्प करि कहै छै—
- द६ अथवा एक सक्कर इक तमा, तीन तमतमा मांय। अथवा इक सक्कर दोय तमा, दोय तमतमा जाय।।
- ५७. अथवा वे सक्कर इक तमा, दोय तमतमा जत। अथवा इक सक्कर त्रिण तमा, एक तमतमा हुंत।।
- दद. अथवा वे सक्कर दोय तमा, एक सप्तमी होय। अथवा तीन सक्कर इक तमा, एक तमतमा जोय।।
- ७८ भगवती-जोड्

एव सक्तर थी १० भागा, ते ६ विकल्प करि ६० भागा कहा। । हिन वालु थी ६ भागा हुन ते वालु पंक थी ३, वालु पूम थी २, वालु तम थी १ - ते ६ विकल्प करि ३६ भागा, तेहमे प्रथम वालू पक थी ३ भागा ६ विकल्प करि कहै छै--

प्रथम विकल्प करि ३ भागा--

- प्रश्नित्र वालु इक पंके, तीन धूम रै माय। जाव तथा इक वालु पंक इक, तीन सप्तमी जाय।। दुर्ज विकल्प करि ३ भांगा—
- ६०. अथवा एक वालु वे पंके, दोय धूम उपजत ।। जाव तथा इक वालु पक वे, दोय तमतमा हुत ।। तीर्ज विकल्प करि ३ भागा—
- ६१. अथवा वे वालुक इक पके, दोय धूम में होय। जाव तथा वे वालु पक इक, दोय सप्तमी जोय।। चड्य विकल्प करि ३ भागा—
- ६२. अथवा इक वालु त्रिण पके, एक धूमका स्थान । जाव तथा इक वालु पक त्रिण, एक तमतमा जान ॥ पाचवे विकल्प करि ३ भागा—
- ६३. अथवा वे वालू वे पके, एक धूम मे देख। जाव तथा वे वालु पक वे, एक सप्तमी लेख।। छठै विकल्प करि ३ भागा—
- ६४ अथवा त्रिण वालू इक पंके, एक धूम आख्यात । जाव तथा त्रिण वालु पंक इक, एक तमतमा पात ।। हिवै वालू धूम थी २ भागा, ते ६ विकल्प कर १२ भागा कहै छै प्रयम विकल्प करि २ भागा—
- ६५. अथवा इक वालू इक धूमा, तीन तमा रै माय। अथवा इक वालु इक धूमा, तीन सप्तमी जाय।। दूर्ज विकल्प करि २ भागा—
- ६६. अथवा इक वालु वे धूमा, दोय तमा दुखदाय। अथवा इक वालु वे धूमा, दोय तमतमा पाय। तीर्ज विकल्प करि २ भागा—
- ६७ अथवा वे वालु इक धूमा, दोय तमा दुखगेह। अथवा वे वालु इक धूमा, दोय तमतमा लेह।। चज्यै विकल्प करि २ भागा—
- ६८. अथवा इक वालु त्रिण धूमा, एक तमा अवलोय। अथवा इक वालु त्रिण धूमा, एक तमतमा जोय।। पांचवे विकरण करि २ भागा—
- ६६. अथवा वे वालु वे धूमा, एक तमा अघपूर। अथवा वे वालु वे धूमा, एक तमतमा भूर॥

- १००. अथवा त्रिण वालु इक घूमा, एक तमा अघरास । अथवा त्रिण वालु इक धूमा, एक तमतमा वास । हिनै वालु तम थी १ भांगो ते ५ विकल्प करि कहै छै—
- १०१. अथवा इक वालु इक तमा, तीन तमतमा पाय। अथवा इक वालु बे तमा, दोय तमतमा जाय।
- १०२. अथवा वे वालु इक तमा, दोय तमतमा होय। अथवा इक वालु त्रिण तमा, एक तमतमा जोय। एवं वालु थी ६ भांगा, ते ६ विकल्प करि ३६ भांगा कह्या।
- १०३. अथवा वे वालु बे तमा, एक सप्तमी मांय। अथवा त्रिण वालु इक तमा, एक तमतमा जाय।।

हिवै पक थी तीन भागा। ते पंक घूम थी २, अनै पक तम थी १ — एवं तीन। पंक थी ६ विकल्प करि अठारै भागा हुवै। प्रथम पंक घूम थी २ भागा, ते ६ विकल्प करि कहै छै —

प्रथम विकल्प करि २ भागा-

- १०४. अथवा एक पंक एक धूमा, तीन तमा कहिवाय। अथवा एक पंक इक धूमा, तीन तमतमा मांय।। दूजी विकल्प करि २ भागा—
- १०५. अथवा एक पंक वे धूमा, दोय तमा दुखस्थान। अथवा एक पंक वे धूमा, दोय तमतमा जान।। तीर्ज विकल्प करि २ भांगा—
- १०६. अथवा दोय पंक इक धूमा, दोय तमा अघराश। अथवा दोय पक इक धूमा, दोय तमतमा वास। चउथै विकल्प करि २ भांगा—
- १०७. अथवा एक पंक त्रिण धूमा, एक तमा अवलोय। अथवा एक पंक त्रिण धूमा, एक तमतमा होय।। पांचवे विकल्प करि २ भागा—
- १०८ अथवा दोय पक वे धूमा, एक तमा दुखराश। अथवा दोय पक वे धूमा, एक तमतमा तास।। छठै विकल्प करि २ भागा—
- १०६ अथवा त्रिण पके इक धूमा, एक तमा में जंत। अथवा त्रिण पके इक धूमा, एक तमतमा हुंत।। हिवें पंक तम थी एक भागो ६ विकल्प करि कहै छै—
- ११०. अथवा एक पक एक तमा, त्रिण तमतमा मांय। अथवा एक पक दोय तमा, दोय तमतमा पाय।।
- १११ अथवा दोय पक इक तमा, दोय तमतमा होय। अथवा एक पंक त्रिण तमा, एक तमतमा जोय।।
- ११२. अथवा दोय पक दोय तमा, एक तमतमा जंत। अथवा त्रिण पके इक तमा, एक तमतमा हुंत।। एवं पक थी ३ भागा, ते ६ विकल्प करि १८ भागा कह्या। हिवें घूम थी एक भागो हुवै, ते ६ विकल्प करि कहै छै—

११३ अथवा एक धूम एक तमा, तीन तमतमा तेह।
अथवा एक धूम दोय तमा, दोय तमतमा लेह।।
११४. अथवा दोय धूम एक तमा, दोय तमतमा देख।
अथवा एक धूम त्रिण तमा, एक तमतमा लेख।।
११५ अथवा दोय धूम दोय तमा, एक तमतमा मांय।
अथवा त्रिण धूम एक तमा, एक तमतमा पाय।।

एवं पच जीव रा त्रिकसजोगिया रत्न थी ६०, सक्कर थी ६० वालुका थी ३६, पंक थी १द, घूम थी ६, एव सर्व २१० भागा कह्या।

११६. पनर रत्न थी सक्कर थी दश, षट वालु थी जगीस।
पंक थकी त्रिण धूम थकी इक, एवं भग पणतीस।।
११७. पंच जीव नां त्रिकसजोगिक, षट विकल्प करि एह।
दोयसी नै दश भांगा दाख्या, निपुण विचारी लेह।।
हिवै पाच जीव नां त्रिकसयोगिया विकल्प

#### छप्पय

११८ एक एक ने तीन, प्रथम विकल्प पहिचानो।
एक दोय ने दोय, द्वितीय विकल्प दिल आनो।
दोय एक ने दोय, तृतीय विकल्प तह्तीको।
एक तीन ने एक, तुर्य विकल्प ए नीको।
फुन दोय दोय ने एक, इम पचम एह प्रयोगिका।
त्रिण एक एक षष्टम कह्युं, पंच जीव त्रिकयोगिका।

### पांच जीव रा त्रिकसंजीगिया तेहनां विकल्प छह मांगा दोय सौ दश ।

रत्न थी १५, सक्कर थी १०, वालु थी ६, पंक थी ३, घूम थी १, एवं ३५ ते छह विकल्प कर दोय सौ दस मांगा हुवें।

एक-एक विकल्प नां रत्न थी १५ ते किसा ? रत्न सक्कर थी ५, रत्न वालु थी ४, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी २ रत्न तम थी १ एवं १५, छह विकल्प कर ६०। हिवं रत्न सक्कर थी पांच भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

		र	स	वा	प	घू	त	तम
8	१	8	१	Ą	0	0	0	0
२	२	१	१	0	72	٥	0	•
ą	n,	१	१	0	0	₹	0	0
४	४	१	१	0	0	o	n	0
ų	ų	१	१	0	0	0	0	tts.

११८ पञ्चाना च त्रित्वेन स्थापने पड् विकल्पास्तद्ययां —एक एकस्त्रयश्च, एको द्वौ द्वौ च, द्वावेको द्वौ च, एकस्त्रय एकश्च, द्वौ द्वावेकश्च, त्रय एक एकश्चेति । (वृ० प० ४४४)

हिं	हियै रत्न सक्कर थी ५ भागा दूजी विकल्प करि कहै छै—							
		₹	स	वा	पं	धू	त	तम
Ę	१	१	२	२	٥	0	0	0
७	२	१	२	0	ર	o	0	0
5	я.	१	२	o	0	२	o	0
3	४	१	२	0	o	•	२	0
१०	५	१	२	0	0	o	٥	२
हि	वै रत्न	सक्कर	यो ५	मांगा तं	ोर्ज विव	न्त्प कि	र कहे हैं	ģ
११	१	२	१	२	°	0	٥	0
१२	२	२	१	0	२	0	0	o
१३	ą	२	१	0	0	२	0	o
१४	8	२	१	0	0	0	२	0
१५	Į ų	२	8		0	0	0	2
हिं	रे रत्न स	सक्कर भ	यी पांच	भांगा	चउषे 1	विकल्प	करि क	है छं —
		र	स	वा	पं	घू	त	तम
१६	1	१	3	8		•	•	
१७	२	१	भ		1	0	0	
१५	३	1	R	0	0	8	0	0
38	8	8	3	0	0	0	8	0
२०	٧	१	3,	0	0	0	0	१

हिवै	रहन स	यकर थी	ነሂ ን	ागा पंर	वमे विव	त्य कि	रं कहै ।	<b>ż</b> —
		₹	स	वा	Ч	घू	त	तम
२१	१	₹	२	१	0	o	o	o
२२	२	२	२	o	8	o	o	0
२३	ą	२	२	0	o	१	0	o
२४	٧	२	२	0	0	0	१	٥
२५	ų	२	ર	0	0	0	0	१
हिर्व	रत्न म	ावकर र्थ	र्भ	ागा छ	ठै विक	ल्य करि	कहै छै	-,
२६	१	9,	१	१	٥	0	0	o
२७	2	ą	१	٥	१	0	0	0
२८	ą	9,	१	0	0	१	o	0
२६	8	ą	१	0	0	0	१	0
₹ø	ય	₹	१	0	0	0	o	१
		कर थी .लु थी						
₹ \$	ş	१ रतन	, १ व	ालुक, ३	पक			
३२	२	१ रत्न	, १ व	ालु ह, इ	धूम			
27,	77-	१ रहत	, १ व	ालुक,	तम			
३४	8	१ रत	ī, १ व	ालुक, इ	तमतम्	π		
हिवं	रत्न व	ालु थी	४ भांग	ा दू <del>ज</del> ै वि	वेकरप	करि कहै	हे छैं—	
इ४	१	१ रतन	, २ व	ालुक,	≀पंक			
३६	२	१ रतन	, २ व	ालुक, २	घूम			
૱હ	₹	१ रतन	, २ व	ालुक, र	र तम			
35	٧	१ रहन	, २ व	ालुक, र	र तमतम	ग		

हिवै	रत्न वा	लुथी ४ भागातीर्जविकल्प करिकहै छै —
38	१	२ रत्न, १ वालुक, २ पंक
४०	२	२ रत्न, १ वालुक, २ घूम
४१	34	२ रत्न, १ वालुक, २ तम
४२	8	२ रत्न. १ वालुक, २ तमतमा
हिवै	रत्न व	ालु थी ४ भांगा चौथे विकल्प करि कहै छैं —
४३	१	१ रत्न, ३ वालुक, १ पंक
४४	२	१ रत्न, ३ वालुक, १ घूम
४५	n <del>y</del>	१ रत्न, ३ वालुक, १ तम
४६	४	१ रत्न, ३ वालुक १ तमतमा
हिवै	रत्न व	ालु थी ४ भांगा पचमे विकल्प कर कहै र्छ—
४७	१	२ रत्न, २ वालुक, १ पंक
४५	२	२ रत्न, २ वालुक, १ धूम
૪૬	ą	२ रत्न, २ वालुक, १ तम
५०	४	२ रत्न, २ वालुक १ तमतमा
हिं	रे रत्न व	ालु थी ४ भागा छठे विकल्प करि कहै छै—
४१	8	३ रत्न, १ वालुक, १ पक
<b>५</b> २	२	३ रत्न, १ वालुक, १ धूम
Äз	₹	३ रत्न, १ वालुक, १ तम
५४	8	३ रत्न, १ वालुक, १ तमतमा
		लु थी ४ भांगा ६ विकल्प करि २४ भांगा कह्या।
	_	पक थी तीन भागा, ते छ विकल्प करि १८ भागा  रतन पक थी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छैं —
५५	8	१ रतन, १ पंक, ३ धूम
य्	7	१ रतन, १ पंक, ३ तम
५७	#	१ रत्न, १ पक, ३ तमतमा

हिवै	रत्न प	कथी ३ भागा दूजै विकल्प करि कहे छै —
ሂና	१	१ रत्न, २ पंक २ घूम
યુદ	२	१ रत्न, २ पंक, २ तम
६०	३	१ रत्न, २ पक, २ तमतमा
हिवै	रत्न प	कि थी ३ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै —
६१	१	२ रत्न, १ पक, २ धूम
६२	२	२ रत्न, १ प क, २ तम
६३	æ	२ रत्न, १ पक, २ तमतमा
हिबै	रत्न प	ंक थी ३ भागा चउथे विकल्प करि कहै छै —
६४	१	१ रत्न, ३ पक, १ घूम
६५	२	१ रत्न, ३ पक, १ तन
६६	η	१ रत्न, ३ पक, १तमतमा
हिवै	रत्न प	क थी ३ भागा पचमे विनल्प करि कहै छैं—
६७	१	२ रत्न, २ पंक, १ धूम
६८	- २	२ रत्न, २ पक, १ तम
६९	₹	२ रत्न, २ पक, १ तमतमा
हिवं	रत्न प	किथी ३ भागा छठे विकल्प कर कहे छं -
७०	१	३ रत्न, १ पक, १ धूम
७१	२	३ रत्न, १ पक, १ तम
७२	ff	३ रत्न, १ पक, १ तमतमा
Ų 7	रत्न पक	थी ३ भागा ६ विकल्प करि १८ भागा कह्या।
		म थी २ भागा ते छह विकल्प करि १२ भागा रत्न घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै –
७३	१	१ रत्न, १ घूम, ३ तम
७४	२	१ रत्न, १ घूम, ३ त्मतमा

f	हुवै घूम	रत्न थी २ भांगा दूजी विवल्प करि कहै छी -
७५	१	१ रत्न, २ चूम, २ तम
७६	२	१ रत्न, २ धूम, २ तमतमा
हिवै	रत्न वृ	म थी २ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै
৩৩	१	२ रत्न, १ घूम, २ तम
৬ৢ	२	२ रत्न, १ घून, २ तमतमा
हिवै	रत्न घृ	म थी २ भागा चज्रथे विकल्प करि कहैं छैं —
3 છ	१	१ रतन, ३ चूम, १ तम
50	ર	१ रत्न, ३ घूम, १ तमतमा
हिबै	रत्न वृ	्म थी २ भागा पचमे विकल्प करि कहै छै —
<b>5</b> 8	१	२ रत्न, २ घूम, १ तम
दर्	ર	२ रत्न, २ घूम १ तमतमा
हिबै	रत्न वृ	्म थी २ भांगा छठै विकल्प करि कहै छै -
53	१	३ रत्न, १ घूम, १ तम
58	ર	३ रत्न, १ घूम, १ तमतमा
एव	त्न घूम	थी २ भागा ६ विकल्प कर १२ भागा कहा।
`		मि थी १ भागो ते ६ विकल्य करि ६ भागा हुवै तमि थी १ भागो प्रथम विकल्पे—
5 ሂ	१	१ रत्न, १ तम, ३ तमतमा
हिंव	रत्न त	म थी १ भागो दूजै विकत्प करि कहै छै—
54	१	१ रत्न, २ तम, २ तमतमा
हिर्व	रत्न त	म थी १ भागो तीजै विकल्प करि कहै छै -
50	१	२ रन्न, १ तम, २ तमतमा
हिव	रत्न त	म यी १ भागो चउथे विकल्प करि कहै छै –
55	१	१ रत्न, ३ तम, १ तमतमा

	*****						
हिर्द	हिवै रत्न तम थी १ भागो पंचमे विकल्प करि कहै छै —						
<i>د ق</i>	१	२ रतन, २ तम, १ तमतमा					
हिर्व	रत्न	तम थी १ भागो छठै विकल्प करि कहै छै –					
03	१	३ रत्न, १ तम, १ तमतमा					
		ो १५ भागा, एक-एक विकत्प नां हुवै ते मार्ट ६ रे रत्न थी ६० भागा यया ।					
वालु थी	, थी४ १, एव	रथी एक-एक विकल्प ना १०-१० भागा ते सक्कर , सक्कर पंक थी ३, सक्कर घूम थी २, सक्कर तम । १० ते छ विकरप करि ६० भांगा हुवै । तिहा तुथी ४ भांगा प्रथम विकरप करकै कहै छै—					
६१	1	१ सकर, १ वालुक, ३ पंक					
દર	ર	१ सक्कर, १ वालुक, ३ घूम					
€3	₹	१ सक्तर, १ वालुक, ३ तम					
१४	४	१ सकर, १ वालुक, ३ तमतमा					
हिबै स	संकरः	वःलु यी ४ भागा दूजै विकल्प करि कहै छै —					
દપ્ર	१	१ सक्कर, २ वालुक, २ पंक					
६६	٦	१ सक्कर, २ वालुक, २ धूम					
७३	₹	१ सकर, २ वालुक, २ तम					
६५	४	१ मकर, २ यालुक, २ तनतना					
हिवै स	वकर व	।। जुबी ४ मागा तीजे निकत्त करि कहै छै —					
33	8	२ सक्कर, १ वालुक, २ पक					
200	٦	२ सक्तर, १ वालुक, २ घूम					
१०१	3	२ सक्कर, १ वालुक, २ तम					
०२	४	२ सक्कर, १ वालुक, २ तमतमा					

हिवै स	ाक्कर व	ालु थी च्यार भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै—				
<b>१</b> ०३	१	१ सक्कर, ३ वालुक, १ पक				
१०४	२	१ सक्तर, ३ वालुक, १ धूम				
१०५	n.	१ सक्कर, ३ वालुक, १ तम				
१०६	8	१ सक्कर, ३ वालुक, १ तमतमा				
हिवं	सक्कर	वालु थी ४ भांगा पचमें विकल्प करि कहै छै				
१०७	2	२ सक्कर, २ वालुक, १ पक				
१०५	२	२ सक्कर, २ वालुक, १ घूम				
१०६	us	२ सक्कर, २ वालुक, १ तम				
११०	8	२ सक्कर, २ वालुक, १ तमतमा				
हि	वै सक्क	र वालु थी ४ भागा छठै विकल्प करि कहै छै				
<b>१</b> ११	8	३ सक्कर, १ वालुक, १ पक				
११२	२	३ सनकर, १ वालुक, १ घूम				
११३	7	३ सक्कर, १ वालुक, १ तम				
११४	8	३ सक्कर, १ वालुक, १ तमतमा				
ए	सक्कर	वालु थी ४ भागा ६ विकल्प करि २४ भागा कह्या।				
	•	र पक थी ३ भागा ते ६ विकल्प करि १८ भागा सक्कर पक थी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—				
११	4 8	१ सक्कर, १ पक, ३ धूम				
<b>११</b>	E4 =	१ सक्कर, १ पक, ३ तम				
११	9 =	१ सक्कर, १ पक, ३ तमतमा				
	हिवै सक्कर पक थी ३ भागा दूजै विकल्प करि कहै छै —					
११	দ	१   १ सक्कर, २ पंक, २ धूम				
११	E 3	१ सक्कर, २ पक, २ तम				
१२	0	३ १ सक्कर, २ पक, २ तमतमा				

हिवै	सक्कर	पंक थी ३ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै—
१२१	8	२ सक्कर, १ पक, २ घूम
१२२	२	२ सक्कर, १ पक, २ तम
१२३	ą	२ सक्कर, १ पंक, २ तमतमा
हिव	सनक	र पंक थी ३ भागा चोथे विकल्प करि कहै छैं —
१२४	8	१ सक्कर, ३ पंक, १ धूम
१२५	२	१ सक्कर, ३ पक, १ तम
१२६	TQ.	१ सक्कर, ३ पंक, १ तमतमा
हिवै	सक्कर	पंक थी ३ भागा पचमे विकल्प करि कहै छै
१२७	१	२ सक्कर, २ पंक, १ धूम
१२८	<b>ર</b>	२ सक्कर, २ पक, १ तम
१२६	₹	२ सन्कर, २ पक, १ तमतमा
हिर	नै सक्क	र पंक थी ३ भागा छठे विकल्प करि कहै छै —
१३०	१	३ सक्कर, १ पक, १ धूम
१३१	२	३ सक्कर, १ पक, १ तम
१३२	₹	३ सनकर, १ पक, १ तमतमा
हिव	सक्क	नकथी ३ भागा ६ विकल्प करि १८ भागा कह्या। र घूम थी २ भागा,ते छह विकल्प कर १२ भागा सक्कर घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—
१३३	१	१ सक्कर, १ घूम, ३ तम
१३४	२	१ सक्कर, १ धूम, ३ तमतमा
हि	वै सक्त	र घूम थी २ भागा दूजै विकल्प करि कहै छैं —
१३५	8	१ सक्कर, २ धूम, २ तम
१३६	२	१ सक्तर, २ घूम, २ तमतमा

हिबै मक्कर घूम थी २ भांगा तीजै विकल्प करि कहै छै —					
१३७ १ २ मवकर, १ घूम, २ तम					
१३८ २ र सक्कर, १ धूम, २ तमतमा					
हिवै सक्कर घूम थी २ भागा चोथे विरत्प करि कहै छै —					
१३६   १   १ सक्कर, ३ धूम, १ तम					
१४० २ १ सकरर, ३ धूम, १ तमतमा					
हिबै सक्कर घूम थी २ भागा पंचमे विकल्प करि कहै छै —					
१४१ १ २ सक्कर, १ धूम १ तम					
१४२ १ २ माकर, २ घूम, १ तमतमा					
हिवै सकार धूम थी २ भागा छठे विकल्प करि वहै छै					
१४३ १ ३ सक्कर, १ घूम, १ तम					
१४४ २ ३ सक्कर, १ धूम, १ तमतमा					
ए सक्कर धूम थी २ भागा ६ विकत्प कर १२ भागा कहा।।					
हिर्च सक्कर तम थी १ भागो ६ विकल्प करि ६ भागा हुवै तिहा सक्कर तम थी १ भागो प्रथम विकरप करि कहै छै –					
१४५ १ १ मक्कर, १ तम, ३ तमतमा					
हिवे मक्कर तम थी १ भागो दूजी विकरप करि कहे छै -					
१४६ १ १ सनकर, २ तम, २ तमतया					
हिवै नक्तर तम थी १ भागो तीजै विकल्प करि पहै छै –					
१४७ १ २ सक्तर, १ तम, २ तमतमा					
हिवै सक्कर तम थी १ मांगी चोथे विकरप करि कहे छै –					
१४८ १ १ सक्कर, ३ तम, १ तमतमा					
हिबैसक्कर तम थी १ भांगो पचमे विकल्प करिक है छै —					
१४८ १ २ सक्कर, २ तम, १ तमतमा					

	हिर्वे सव	कर तम थी १ भागो छठ विकल्प करि कहै छै –
१५०	8	३ सबकर, १ तम, १ तमतमा
हिट पंक ते १	६ वानु थी ३, छ विकर	थी १० भांगा एक-एक विकल्प नां हुवै, ते माटै विकल्प करि सफ्तर थी ६० भागा थया। थी इक-इक विकल्प ना छह-छह भागा हुवै ते वालु वालु घूम थी २, वालु तम थी १, एवं वालु थी ६ स्प करि ३६ भागा हुवै। तिहां वालु पंक थी ३ । विकल्प करि कहै छै —
१५१	<b>१</b>	१ वालुक, १ पक, ३ घूम
१४२	२	१ वालुक, १ पक, ३ तम
१५३	३	१ वालुक, १ पक, ३ तमतमा
हिंव	ो वानु ।	पक थी ३ भागा दूजे थिकत्प करि कहै छै ~
१५४	8	१ वालुक, २ पंक, २ घूम
१५५	२	१ वालुक २ पक, २ तम
१५६	n.	१ वानु ह, २ पं ह, २ तमतमा
हिर्व	वालु	मक यी ३ भागा तीजै विकल्प करि कहै र्छ—
१५७	१	२ वालुक, १ पक, २ घूम
१५=	२	२ वालुक, १ पक, २ तम
३५६	ą	२ वालुक, १ पक, २ तमतमा
हिवै	वालु प	कियी ३ भागा चौथे विकल्प करि कहै छै
१६०	8	१ वालुक, ३ पक, १ धूम
१६१	२	१ वालुक, ३ पंक, १ तम
१६२	3	१ वालुक, ३ पक, १ तमतमा
हिवै	यालु प	किथी ३ भागा पचमे विकल्प करि कहे छै —
१६३	8	२ वालुक, २ पक, १ घूम
१६४	٦	२ वालु ह, २ पक, १ तम
१६५	ş	२ वालुक, २ पंक, १ तमतमा

हिवै	वालु प	कथी ३ भांगा छठै विकल्प करि कहै छै—
१६६	8	३ वालुक, १ पक, १ धूम
१६७	२	३ वालुक, १ पंक, १ तम
१६८	A.	३ वालुक, १ पंक, १ तमतमा
ए व	ालु पंक	थी तीन भागा ६ विकल्प करि १८ भांगा कह्या।
		म थी २ भागा, ते ६ विकल्प करि १२ भांगा हुवै । पूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—
१६६	१	१ वालुक, १ घूम, ३ तम
१७०	२	१ वालुक, १ धूम, ३ तमतमा
हिवै	वालु घ	म थी २ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै —
१७१	१	१ वालुक, २ घूम, २ तम
१७२	२	१ वालुक, २ घूम, २ तमतमा
ं हिंब	ो वालु ६	यूम थी २ भांगा तीजै विकल्प करि क्है छै —
१७३	१	२ वालुक, १ घूम, २ तम
१७४	२	२ वालुक, १ धूम, २ तमतमा
हिं	नै वालु	बूम थी २ भांगा चौथे विकल्प करि कहै छैं —
१७५	8	१ वालुक, ३ घूम, १ तम
१७६	२	१ वालुक, ३ धूम, १ तमतमा
हि	वै वालु	धूम थी २ भांगा पचर्मे विकल्प करि कहै छै —
१७७	8	२ वालुक, २ घूम, १ तम
१७=	२	२ वालुक, २ धूम, १ तमतमा
हि	वै वालु	घूम थी २ भागा छठै विकल्प करि कहै छै—
१७६	8	३ वालुक, १ घूम, १ तम
१५०	२	३ वालुक, १ घूम, १ तमतमा
Ų	वालु घृ	म थी २ भागा ६ विकल्प करि १२ भागा कह्या।

हिनै वालु तम थी १ भागो, ते, ६ विकल्प करि ६ भांगा हुनै । तिहां प्रथम विकल्प करि कहै छै		
१८१ १ थ वालुक, १ तम, ३ तमतमा		
हिवै वालु तम थी १ भागो दूजै विकल्प करि कहै छै		
१८२ १ श वालुक, २ तम, २ तमतमा		
हिबै वालुतम थी १ भागो तीजै विकल्प करि कहै छै—		
१८३ १ २ वालुक, १ तम, २ तमतमा		
हिवे वालु तम थी १ भांगो चोथे विकल्प करि कहै ॐ—		
१८४ १ वालुक, ३ तम, १ तमतमा		
हिवे वालु तम थी १ भागो पचमे विकल्प करि कहै छै —		
१⊏५ १ २ वालुक, २ तम, १ तमतमा		
हिबै वालुक, तम थी १ भागो छठै विकल्प करि कहै छै —		
१८६ १ ३ वालुक, १ तम, १ तमतमा		
एव वालु थी ६ भांगा, ते ६ विकल्प करि ३६ भागा थया।		
हिवै पक थी ३ भागा, एक-एक विकल्प करि हुवै, ते पक घूम थी २, पंक तम थी १ एव पक थी ३, छ विकल्प करि १८ भागा हुवै । तिहा पक घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—		
१८७ १ १ पंक, १ घूम ३ तम		
१८८ २ १ पक, १ धूम, ३ तमतमा		
हिवै पक घूम थी २ भांगा दुजे विकल्प करि कहै छै—		
१८६ १ १ पंक, २ घूम, २ तम		
१६० २ १ पंक, २ घूम, २ तमतमा		
हिवे पक घूम थी २ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै—		
१६१ १ २ पंक, १ घूम, २ तम		
१६२ २ २ पक, १ घूम, २ तमतमा		

हिबै पंक धूम थी २ भांगा चीथे विकल्प करि कहै छै—		
१६३	٤	१ पंक, ३ घूम, १ तम
१६४	२	१ पंक, ३ धूम, १ तमतमा
हिवै	पक धू	म थी २ भागा पचमे विकल्प करि कहै छै—
१६५	१	२ पक, २ धूम, १ तम
१६६	२	२ पक, २ घूम, १ तमतमा
हिवै	पक धू	म थी २ भागा छठै विकल्प करि कहै छै—
१६७	१	३ पक, १ घूम, १ तम
१६८	२	३ पंक, १ धूम, १ तमतमा
ए प	कथी	२ भागा ६ विकल्प करि १२ भांगा कह्या।
		म थी १ भागो ते ६ विकल्प करि ६ भांगा हुवै। सम थी १ भांगो प्रयम विकल्प करि कहै छै
338	१	१ पक, १ तम, ३ तमतमा
हिवं	पकत	म थी १ भांगो, ते दूजै विकल्प करि कहै छै—
२००	8	१ पक, २ तम, २ तमतमा
हिव	पंकत	म थी १ भांगो तीज विकल्प करि कहै छै
२०१	१	२ पंक, १ तम, २ तमतमा
हिवै	पक तम	थी १ भागो चोथे विकल्प करि कहै छै —
२०२	१	१ पक, ३ तम, १ तमतमा
हिव	वैपंकत	तम थी १ भागो पचमे विकल्प करि कहै छै—
२०३	१	२ पक, २ तम, १तमतमा
हिनै पक तम थी १ भागो छठै विकल्प करि कहै छै		
२०४	8	३ पंक, १ तम,१ तमतमा
एव पक थी ३ भागा छ विकल्प करि १८ भागा थया।		

हि	वै धूम	थी १ भांगो छ विकल्प करि कहै छै—
२०५	१	१ धूम, १ तम, ३ तमतमा
२०६	२	१ घृम, २ तम, २ तमतमा
२०७	ą	२ घूम, १ तम, २ तमतमा
२०६	8	१ घूम, ३ तम, १ तमतमा
२०६	ų	२ पूम, २ तम, १ तमतमा
२१०	Ę	३ धूम, १ तम, १ तमतमा
प्र	र्ग थी	१ भांगो ६ विकल्प कटि ६ भांगा कह्या ।
नौ	भांगा व	व ना त्रिकसयोगिया नां विकल्प ६, एक-एक विकल्प तीस-पेतीस । रत्न घी १५, सकार घी १०, वालुक घी ३, घूम घी १—एव ३५, ते ६ विकल्प करि २१०

भागा कहा। ते छहुं विकला नां रत्न थी ६०, सपकर थी ६०, वालुक थी ३६, पक थी १८, घूम थी ६—एवं मवं २१० भागा।

११६ नवमें गतक इकतीसम देगज, इकसौ अठंतरमी ढाल। भिक्षु भारिमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जग्न' संपति माल।

#### दूहा

१.पंच जीव नां हिव कहूं, चौक संयोगिक चग। चिंह विकल्प करि तेहनां, इकसी चालीस भग।।

बा०—हिवै पांच जीव नां चउकसंजोगिक, तेहना विकल्प ४, भागा १४०। एक-एक विकल्प ना पैतीस-पैतीस भांगा हुवै, ते माटै च्यार विकल्प ना १४० हुवै। एक विकल्प ना रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालुक थी ४, पंक थी १—एव पैतीस भागा हुवै। रत्न थी २० ते किसा? रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ६, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी १—एव रत्न थी एक-एक विकल्प ना २० भांगा हुवै। रत्न सक्कर थी १० ते किसा? रत्न सक्कर वालुक थी ४, रत्न सक्कर पक ३, रत्न सक्कर धूम थकी २, रत्न सक्कर तम थकी १ —एवं एक-एक विकल्प ना १० भागा हुवै। तिहा रत्न सक्कर वालु थकी ४ भागा प्रथम विकल्प कर कहै छै—

# \*श्री जिन भाखै सुण गंगेया ! [ध्रुपदं]

- २ अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालु अवलोय जी।
  पक विषे वे जीव ऊपजै, ए धुर भागो होय जी।
  ३. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुक उपजंत।
  धूमप्रभा में दोय ऊपजै, दूजो भांगो हुंत।।
  ४. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुका मांय।
  छट्ठी नरक वे जीव ऊपजै, तृतीय भग कहाय।।
  ५. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक वालुक पहिछाण।
  नरक सातमी दोय ऊपजै, चोथो भांगो जाण।।
  हिवै रत्न सक्कर वालु थकी दूजै विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ६. अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीजी नरके दोय। पंक विषे इक जीव ऊपजै, पंचम भंगो होय।। ७. अथवा एक रत्न इक सक्कर, तीजी नरके दोय। घूमप्रभा में एक ऊपजै, छट्टो भागो सोय।।
- प्रिक्त एक रत्न इक सक्कर, वालुप्रभा में दोय।
   छट्ठी नरके एक उपजता, सप्तम भांगो सोय।
- १. अथवा एक रत्न इक सक्कर, वालुप्रभा में दोय। नरक सप्तमी इक उपजतां, अष्टम भंग अवलोय।। हिव रत्न सक्कर वालुक थकी तीज विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- १०. अथवा एक रत्न वे सक्कर, वालुक माहे एक।
  एक पंक ने विषे ऊपजै, नवमो भंगो देख।
  ११. अथवा एक रत्न वे सक्कर, वालुक माहे एक।
  धूमप्रभा मे एक ऊपजै, दशमो भंग विशेख।।

- २. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालु-यप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा
- ३-५. एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा।

 ६. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे त्सक्करप्पभाए दो वालु-यप्पभाए एगे पंकष्पभाए होज्जा
 ७-६ एवं जाव अहेसत्तमाए।

- १०. अहवा एने रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एने वालु-यप्पभाए एने पंकप्पभाए होज्जा
- ११-१३. एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो नक्करप्प-भाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा।

चतुष्कसयोगे तु सप्ताना पञ्चित्रगद्विकल्पाः, पञ्चाना चतुराशितया स्थापने चत्वारो विकल्पास्तद्यया— तदेव पञ्चित्रगतश्चतुर्भिर्गुणने चत्वारिशदिधक शत भवतीति । (वृ०प० ४४४)

<sup>&</sup>lt;sup>क</sup>लय: साधु म जाणो इण चलगत सूं

- १२. अथवा एक रत्न वे सक्कर, वालुक मांहे एक । नरक छट्टी मे एक ऊपजै, भंग ग्यारमो लेख॥
- १३. अथवा एक रत्न वे सक्कर, वालुक मांहे एक।
  एक सप्तमी नरक ऊपजै, द्वादणमो भंग देख॥
  हिवै रत्न सक्कर वालुक बकी चोर्य विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—
- १४. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक वालुक अवलोय। पंकप्रभा में एक ऊपजें, तेरसमीं भग होय॥
- १५. अथवा दोय रत्न इक सक्तर, एक वालुक अवलोय। धूमप्रभा मे एक ऊपजै, चवदणमो भंग जोय।।
- १६. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक वालुक अवलोय। छठी नरक में एक ऊपर्ज, भग पनरमों सोय॥
- १७. अथवा दोय रत्न इक सबकर, एक वालु अवलोय।

  एक सातमी नरक ऊपजै, भंग सोलमा होय॥

  हिवै रत्न सबकर पक यकी तीन भागा, ते च्यार विकल्य करि वारै
  भागा। तिहा प्रथम विकत्य करि ३ भागा कहै छै—
- १८. अथवा एक रत्न इक सक्कर, एक पक वे धूम। अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक पंक वे तम ब्रूम।।
- १६. अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक पंक सप्तमी दोय। रत्न सक्कर ने पंक थकी त्रिण, पहिले विकल्प होय।। हिवै रत्न मक्कर पक थकी दूजै विकल्प करि ३ भागा कहै छै—
- २०. अथवा एक रत्न उक सक्कर, दोय पंक डक धूम। अथवा एक रत्न इक सक्कर, वे पंक इक तम ब्रूम।
- २१. अथवा एक रत्न इक सक्कर, वे पंक सप्तमी एक।
  रत्न सक्कर ने पक थकी त्रिण, वीजे विकल्प देख।।
  हिवै रत्न सक्कर पंक थकी तीजे विकल्प करि ३ भागा कहै छै—
- २२. अथवा एक रत्न वे सक्तर, एक पंक इक धूम। अथवा एक रत्न वे सक्तर, इक पंक इक तम त्रूम।
- २३. अथवा एक रतन वे सक्कर, इक पंक सप्तमी एक।
  रतन सक्कर ने पक थकी त्रिण, तीजे विकल्प नेरा।।
  हिवै रतन सक्कर पक थकी चौषे विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—
- २४. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, एक पक इक धूम। अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक पंक इक तम बूम।।
- २५. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक पंक सप्तमी एक।
  रत्न सक्कर ने पंक थकी त्रिण, चोथे विकल्प पेख ॥
  ए रत्न सक्कर पंक थकी ३ भांगा हुवै । ते च्यार विकल्प करि १२ भागा
  कहा। हिवै रत्न मक्कर ने घूम थकी दोय भागा च्यार विकल्प करि ६
  भागा कहै छै—

प्रथम विकल्प करि २ भागा कहै छै-

२६. अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक धूम वे तम होय। अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक धूम सप्तमी दोय॥

- १४. अह्या दी रयणप्ताए एगे मनकरप्यनाए एगे वालु-यणभाए एगे पक्ष्यभाए होज्जा
- १४-१७. जाव अहवा दी रयणणभाए एगे माक्रणभाए एगे यानुयणभाए एगे अहेमत्तमाए होज्या ।

- १८. सह्या एने रयणप्यमाए एने ननकरप्यमाए एने पंक-प्यभाए दो यूमणभाए होज्जा
- १६-१०५ एव जहा चरुट चरुरक्तजोगो भणिको तहा पंचण्ह वि चरुरकमजोगो भाणियको नवरं—अव्म-हियं एगो मंचारेयक्यो, एवं जाव अहवा दो पंगणमाए एगे घुमणभाए एगे तमाए एगे अहेमतमाए होज्जा।

- दूजै विकल्प करि २ भांगा कहै छै---
- २७. अथवा एक रत्न इक सक्कर, वे धूम इक तम पेख। अथवा एक रत्न इक सक्कर, वे धूम सप्तमी एक।। तीज विकल्प करि २ भांगा कहै छै—
- २८. अथवा एक रत्न वे सक्कर, इक धूम इक तम देख। अथवा एक रत्न वे सक्कर, इक धूम सप्तमी एक।। चौथे विकल्प करि २ भांगा कहै छैं—
- २६. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक धूम इक तम पेख ।
  अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक धूम सप्तमी एक ।।
  ए रत्न सक्कर धूम नां दोय भांगा, च्यार विकल्प करि द भांगा कहाा।
  हिवै रत्न सक्कर तम थकी एक भागो ४ विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ३०. अथवा एक रत्न इक सक्कर, इक तम सप्तमी दोय। रत्न सक्कर ने तमा थकी ए, पहिलै विकल्प जोय।
- ३१. अथवा एक रत्न इक सक्कर, वेतम सप्तमी एक। रत्न सक्कर ने तमाथकी ए, दूजै विकल्प देख।।
- ३२. अथवा एक रत्न वे सक्कर, इक तम सप्तमी एक ॥ रत्न सक्कर ने तमा थकी ए, तीजै विकल्प लेख ॥
- ३३. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, इक तम सप्तमी एक ।
  रत्न सक्कर ने तमा थकी ए, चोथै विकल्प पेख ।।
  ए रत्न सक्कर तम थकी १ भागो च्यार विकल्प करि ४ भागा कह्या ।
  एव रत्न सक्कर थकी १० भागा च्यार विकल्प करि ४० भागा कह्या ।
  वा०—हिवै रत्न वालु थकी छ भागा हुवै, ते किसा ? रत्न वालु पक थकी
  ३, रत्न वालू धूम थकी २, रत्न वालू तम थकी १ एव —रत्न वालू थकी ६,
  ते ४ विकल्प करि चउवीस भागा हुवै । तिहा रत्न वालु पक थकी ३ भागा
  प्रथम विकल्प करि कहै छै—
- ३४. अथवा एक रत्न इक वालुक, एक पंक वे धूम। अथवा एक रत्न इक वालुक, एक पंक वे तम बूम।। ४५ अथवा एक रत्न इक वालुक, इक पंक सप्तमी दोय।
  - रत्न वालुका पंक थकी त्रिण, धुर विकल्प ए होय।। दूर्ज विकल्प करि ३ भागा कहै छै —
- ३६. अथवा एक रत्न इक वालुक, दोय पक इक धूम। अथवा एक रत्न इक वालुक, वे पंक इक तम ब्रूम।।
- ३७. अथवा एक रत्न इक वालुक, वे पक सप्तमी एक।
  रत्न वालुक ने पंक थवी त्रिण, दूजै विकल्प देख।।
  तीर्ज विकल्प करि ३ भागा कहै छै —
- ३८. अथवा एक रत्न वे वालुक, एक पक इक धूम। अथवा एक रत्न वे वालुक, इक पक इक तम बूम।।
- ३६. अथवा एक रत्न वे वालुक, इक पंक सप्तमी एक। रत्न वालुक ने पक थकी त्रिण, तीजै विकल्प लेख।

### चोथे विकल्प करि ३ भांगा कहै छै-

- ४०. अथवा दोय रत्न इक वालुक, एक पंक एक धूम। अथवा दोय रत्न इक वालुक, इक पंक इक तम त्रूम।।
- ४१. अथवा दोय रत्न इक वालुक, इक पंक सप्तमी एक।
  रत्न वालुक नैं पंक थकी त्रिण, चोथै विकल्प लेख।।
  हिवै रत्न वालुक नै धूम थकी २ भांगा ४ विकल्प करि आठ भांगा करै
  छ । प्रथम विकल्प करि २ भांगा करै छै—
  - ४२ अथवा एक रत्न इक वालुक, इक धूम वे तम होय। अथवा एक रत्न इक वालुक, इक धूम सप्तमी दोय।। दूर्ज विकल्प करि २ भागा कहै छै—
  - ४३ अथवा एक रत्न इक वालुक, वे धूम इक तम पेख। अथवा एक रत्न इक वालुक, वे धूम सप्नमी एक। तीर्ज विकरप करि २ भागा कहै छै—
  - ४४. अथवा एक रत्न वे वालुक, इक धूम इक तम पेख। अथवा एक रत्न वे वालुक, इक धूम सप्तमी एक।। चौथे विकल्प करि २ भागा कहै छै-
  - ४५. अथवा दोय रत्न इक वालुक, इक घूम इक तम पेख।
    अथवा दोय रत्न इक वालुक, इक घूम सप्तमी एक।।
    ए रत्न वालुक घूम धकी २ भांगा ४ विकत्प करि आठ भागा कह्या।
    हिवै रत्न वालुक तमा धकी १ भागो हुवै, ते ४ विकत्प वरि ४ भांगा कहै छै—
  - ४६ अथवा एक रत्न इक वालुक, इक तम सप्तमी दोय। रत्न वालुक ने तमा थकी ए, पहिले विकल्प होय।
- ४७. अथवा एक रत्न इक वालुक, वे तम सप्तमी एक। रत्न वालुका तमा थकी ए, दूजे विकल्प पेख।।
- ४८. अथवा एक रत्न वे वालुक, इक तम सप्तमी एक। रत्न वालुका तमा थकी ए, तीर्ज विकल्प लेख।।
- ४६. अथवा दोय रत्न इक वालुक, इक तम सप्तमी एक। रत्न वालुका तमा थकी ए, चोथै विकल्प देख।।

ए रत्न वालुक तम थकी एक भांगो हुवै ते च्यार विकल्प करि ४ भागा कहा। एव रत्न वालुक थकी छ भागा हुवै, ते ४ विकल्प करि २४ भागा कहा। वा०—हिवै रत्न पक थकी तीन भागा हुवै ते किसा? रत्न पक धूम थकी २ भागा, रत्न पक तम थकी १ भागो, एव रत्न पंक थकी ३ भागा हुवै। ते च्यार विकल्प करि १२ भागा कहै छै। तिणमे प्रथम रत्न पक धूम थकी २ भागा च्यार विकल्प करि हुवै, ते कहै छै—

- ५०. अथवा एक रत्न इक पके, इक धूम वे तम होय। अथवा एक रत्न इक पंके, इक धूम सप्तमी दोय।। दूजे विकल्प करि २ भांगा कहै छै—
- ५१ अथवा एक रत्न इक पंके, वे धूम इक तम पेख। अथवा एक रत्न इक पके, वे धूम सप्तमी एक॥

तीज विकल्प करि २ भागा कहै छै--

५२. अथवा एक रत्न वे पंके, इक धूम इक तम पेख। अथवा एक रत्न वे पके, इक धूम सप्तमी एक।। चौथे विकल्प करि २ भागा कहै छै-

५३. अथवा दोय रत्न इक पंके, इक धूम इक तम पेख।
अथवा दोय रत्न इक पके, इक धूम सप्तमी एक ।।
ए रत्न पक नै धूम यकी वे भागा ४ विकल्प करि = भागा कहा।
हिनै रत्न पक तम यकी एक भागो, ४ विकल्प करि च्यार भांगा कहै छै—

५४. अथवा एक रत्न इक पंके, इक तम सप्तमी दोय। रत्न पक ने तमा थकी ए, पहिले विकल्प होय।।

५५. अथवा एक रत्न इक पके, बे तम सप्तमी एक। रत्न पक नै तमा थकी ए, दूजै विकल्प देख।। े

प्रइ. अथवा एक रत्न वे पके, इक तम सप्तमी एक। रत्न पक ने तमा थकी ए, तीजै विकल्प पेख।।

५७. अथवा दोय रत्न इक पंके, इक तम सप्तमी एक।
रत्न पंक ने तमा थकी ए, चोथे विकल्प लेख।।
ए रत्न पंक तम थकी एक भागो ४ विकल्प करि कह्यो। एव रत्न पंक थकी
तीन भागा ४ विकल्प करि १२ भागा कह्या।
हिवै रत्न घूम थी १ भागो ४ विकल्प करि कहै छै —

५८ अथवा एक रत्न इक धूमा, इक तम सप्तमी दोय। रत्न धूम थकी एक भांगो, पहिलै विकल्प होय॥

५६. अथवा एक रत्न इक धूमा, वे तम सप्तमी एक। रत्न धूम थी ए इक भांगी, दूजै विकल्प देख।।

६०. अथवा एक रत्न वे धूमा, इक तम सप्तमी एक । रत्न धूम थी ए इक भांगी, तीजै विकल्प पेखा।

६१. अथवा दोय रत्न इक घूमा, इक तम सप्तमी एक । 💛 रत्न धूम थी ए इक भागो, चोथै विकल्प लेख ॥ 💛

ए रतन घूम थी १ भागो च्यार विकल्प करि ४ भागा कहा। एवं रतन थी २० भागा च्यार विकल्प करि ५० भागा थया।

हिवै सक्कर थी १० भागा एक-एक विकल्प ना हुवै ते किसा ? सक्कर वालु थी ६, सक्कर पंक थी ३, सक्कर घूम थी १ एव १० भागा सक्कर थी हुवै। सक्कर वालु थी ६ ते किसा ? सक्कर वालु पक थी ३, सक्कर वालु घूम थी २ सक्कर वालु तम थी १, एव ६ भागा सक्कर वालु थी एक-एक विकल्प ना हुवै। तिहा सक्कर वालु पक थी तीन भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै —

६२. अथवा एक सक्कर इक वालुक, एक पक वे धूम। अथवा इक सक्कर इक वालुक, इक पंक वे तम ब्रूम।।

६३ अथवा एक सक्कर इक वालुक, इक पंक सप्तमी दोय।.. सक्कर वालुक ने पक थकी त्रिण, धुर विकल्प करि होय।।

६४ अथवा इक सक्कर इक वालुक, दोय पंक इक धूम। अथवा इक सक्कर इक वालुक वे पक इक तम बूम।

- ६५. अथवा इक सक्कर इक वालुक, वे पंक सप्तमी एक। सक्कर वालुका पंक थकी त्रिण, दूजे विकल्प देख।।
- ६६. अथवा इक सक्कर वे वालुक, एक पंक इक धूम। अथवा इक सक्कर वे वालुक, इक पंक इक तम बूम।
- ६७. अथवा इक सक्कर वे वालुक, इक पक सप्तमी एक। सक्कर वालुक ने पंक थकी त्रिण, तीजै विकल्प पेख।।
- ६ द अथवा वे सक्कर इक वालुक, एक पंक इक धूम। अथवा वे सक्कर इक वालुक, इक पंक इक तम बूम।।
- ६६ अथवा वे सक्कर इक वालुक, इक पंक सप्तमी एक ।
  सक्कर वालुका पक थकी त्रिण, चोथै विकल्प लेख ।।
  ए सक्कर वालुक पक थी ३ भांगा ४ विकल्प करि १२ भांगा कह्या ।
  हिवै सक्कर वालुक घूम थी २ भांगा ४ विकल्प करि आठ मागा हुवै, ते कहै
- ७०. अथवा इक सक्कर इक वालुक, इक धूम वे तम होय। अथवा इक सक्कर इक वालुक, इक तम सप्तमी दोय।। दूजै विकल्प करि २ भांगा कहै छै—
- ७१ अथवा इक सक्कर इक वालुक, वे धूम इक तम पेख। अथवा इक सक्कर इक वालुक, वे तम सप्तमी एक।। तीजै विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ७२. अथवा इक सक्कर बे वालुक, इक धूम इक तम पेख। अथवा इक सक्कर वे वालुक, इक तम सप्तमी एक।। चौथे विकल्प करि २ भांगा कहै छै—
- ७३. अथवा वे सक्कर इक वालुक, इक धूम इक तम लेख।
  अथवा वे सक्कर इक वालुक, इक धूम सप्तमी एक।।
  ए सक्कर वालु धूम धकी २ भांगा ४ विकल्प करि मागा कह्या।
  हिवै सक्कर वालु तम थी १ भागो ४ विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ७४ अथवा इक सक्कर इक वालुक, इक तम सप्तमी दोय। सक्कर वालुक नै तमा थकी ए, पहिलै विकल्प होय॥
- ७५ अथवा इक सक्कर इक वालुक, वे तम सप्तमी एक। सक्कर वालुका तमा थकी ए, दूजे विकल्प देख।।
- ७६. अथवा इक सक्कर वे वालुक, इक तम सप्तमी एक। सक्कर वालुका तमा थकी ए, तीजै विकल्प लेख।।
- ७७. अथवा वे सक्कर इक वालुक, इक तम सप्तमो एक। सक्कर वालुका तमा थकी ए, चोथै विकल्प पेख।।

हिवै सक्कर पंक थकी तीन भांगा एक-एक विकल्प ना हुवै, ते किसा? सक्कर पंक घूम थकी २, सक्कर पंक तम थकी १, एव ३। सक्कर पंक थकी ४ विकल्प नां १२ भागा हुवै, ते कहै छै—

७८. अथवा इक सक्कर इक पंके, इक धूम बे तम होय।। अथवा इक सक्कर इक पके, इक धूम सप्तमी दोय। ७१. अथवा इक सक्कर इक पंके, वे धूम इक तम पेख। अथवा इक सक्कर इक पंके, वे धूम सप्नमी एक।।

द०. अथवा इक सक्कर वे पंके, इक धूम इक तम पेख। अथवा इक सक्कर वे पके, इक धूम सप्तमी एक।।

दश्. अथवा वे सक्कर इक पंके, इक धूम इक तम पेख। अथवा वे सक्कर इक पंके, इक तम सप्तमी एक।।

हिवै सक्कर पंक तम थकी १ भांगो ४ विकल्प करि कहै छै-

प्रत्येत इक सक्कर इक पंके, इक तम सप्तमी दोय।
 सक्कर पंक नैं तमा थकी ए, पहिले विकल्प होय।

५३. अथवा इक सक्कर इक पंके, वे तम सप्तमी एक ।। सक्कर पंक नैं तमा थकी ए, दूजै विकल्प देख ।।

प्तर. अथवा इक सक्कर वे पंके, इक तम सप्तमी एक। सक्कर पक ने तमा थकी ए, तीजे विकल्प पेखा।

प्र अथवा वे सक्कर इक पंके, इक तम सप्तमी एक। सक्कर पक ने तमा थकी ए, चोथे विकल्प लेख।।

हिवै सक्कर धूम तम थकी चिउं विकल्प करि ४ भांगा कहै छै-

न्द्. अथवा इक सक्कर इक धूमा, इक तम सप्तमी दोय। सक्कर धूम थकी ए भांगो, पहिलै विकल्प होय।।

५७ अथवा इक सक्कर इक धूमा, वे तम सप्तमी एक । सक्कर धूम थकी ए भागो, दूर्ज विकल्प देख।

८८. अथवा इक सक्कर वे धूमा, इक तम सप्तमी एक ॥ सक्कर धूम ए भागो, तीजै विकल्प पेख ॥

प्रस्त विकास के स्वकर इक धूमा, इक तम सप्तमी एक। सक्कर धूम थकी ए भांगी, चोथै विकल्प लेख।।

हिन वालु यकी एक-एक विकल्प ना च्यार-च्यार भागा हुन, ते किसा? वालु पक यकी ३, वालु घूम यकी १, एन वालु यकी ४ भागा। वालु पंक यकी ३, ते किसा? वालु पक घूम यकी २, वालु पंक तम थकी १, एवं वालु पक यकी ३ भागा। तिहां प्रथम वालु पंक घूम थकी २ भागा ४ विकल्प करि आठ भागा कहै छ—

६०. अथवा इक वालुक इक पंके, इक धूम वे तम होय। अथवा इक वालुक इक पंके, इक धूम सप्तमी दोय।।

६१. अथवा इक वालु इक पंके, वे घूम इक तम पेख।। अथवा इक वालु इक पंके, वे घूम सप्तमीं एक ।।

६२. अथवा इक वालुक वे पंके, इक धूम इक तम पेख। अथवा इक वालुक वे पंके, इक तम सप्तमी एक।।

६३. अथवा बे वालुक इक पंके, इक धूम इक तम देख। अथवा वे वालुक इक पके, इक तम सप्तमी एक ॥ हिवे वालु पंक नै तमा थकी एक भांगो ४ विकल्प करि कहै छै —

६४. अथवा इक वालुक इक पंके, इक तम सप्तमीं दोय। वालु पंक नै तमा थकी ए, पहिलै विकल्प होय।।

ह्य. अथवा इक वालुक इक पंके, वे तम सप्तमी एक ॥ वालुक पंक ने तमा थकी ए, दूजै विकल्प देख। ६६. अथवा इक वालुक वे पके, इक तम सप्तमी एक । वालुक पंक ने तमा थकी ए, तीजै विकल्प देख।। ९७. अथवा वे वालुक इक पंके, इक तम सप्तमी एक। वालु पंक नै तमा थकी ए, चोथै विकल्प लेख।। हिवै वालुक घूम थकी एक भागो ४ विकल्प करि ४ भागा कहै छै— ६८. अथवा इक वालुक इक धूमा, इक तम सप्तमी दोय। वालु धूम थकी ए भागों, पहिलै विकल्प होय।। ६६. अथवा इक वालु इक धूमा, वेतम सप्तमी एक । वालुक घूम थकी ए भागो, दूजै विकल्प देख।।, . -१०० अथवा इक वालुक वे धूमा, इक तम सप्तमी एक। वालुक धूम थकी ए भांगो, तीजै विकल्प पेख।।। १०१ अथवा वे वालुक इक धूमा, इक तम सप्तमी एक। वालु धूम थकी ए भांगो, चोथै विकल्प लेख।। हिवै पक थी एक भागो ४ विकल्प करि कहै छै-१०२. अथवा इक पके इक धूमा, इक तम सप्तमी दोय। पक नरक थी ए इक भांगो, पहिलै विकल्प होय।। १०३. अथवा इक पके इक धूमा, वे तम सप्तमी एक।। पंक नरक थी ए इक भांगो, दूजै विकल्प देख ॥ १०४. अथवा इक पके वे धूमा, इक तम सप्तमी एक।। पंक नरक थी ए इक भांगो, तीजै विकल्प लेख ॥ १०५ अथवा वे पके इक धूमा, इक तम सप्तमी एक। पंक नरक थी ए इक भांगो, चोथै विकल्प पेखा। एवं पंक थकी एक भागो ४ विकल्प करि ४ भागा कह्या। एवं रत्ने थी २०, सक्कर थी १०, वालुक थी ४, पंक थी १, एवं ३५ एक विकल्प ना हुवै, ते

#### द्रह

१०६. एक एक फुन एक वे, ए धुर विकल्प जोय।
एक एक विल दोय इक, दूजै विकल्प होय॥
१०७. एक दोय ने एक इक, विकल्प तृतीय विशेख॥
दोय एक फुन एक एक, विकल्प तुर्यं सपेख॥
१०८. \*नवम शतक नो देश वतीसम, सौ गुणयासीमी ढाल।
भिक्षु भारीमाल ऋपिराय प्रसादे, 'जय-जश' मगलमाल॥

च्यार विकल्प नां १४० पाच जीव ना च्यार संजोगिया भागा थया ।

<sup>ैं</sup>लयः साधु म जाणो इण चल गत सूं

१. पाच जीवा रा चउकसजोगिया ४ विकल्प·—

१, १, १, २ प्रथम विकल्प।

१, १, २, १ द्वितीय विकल्प।

१, २, १, १ तृतीय विकल्प।

२, १, १, १ तुर्य विकल्प ।

पंच जीव नां चउकसयोगिक नां विकल्प च्यार । एक-एक विकल्प नां पैतीस-पैतीस भागा हुवै। च्याकं विकल्प नां १४०। तिहां रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालुक थी ४, पंक थी १, एवं पैतीस एक-एक विकल्प ना हुवै। रत्न थी २०, ते किसा? रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालु थी ६, रत्न पक थी ३, रत्न धूम थी १, एवं रत्न थी २०। रत्न सक्कर थी दश, ते किसा? रत्न सक्कर वालु थी ४, रत्न सक्कर पंक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी २, रत्न सक्कर तम थी १, एवं रत्न सक्कर धूम थी २, रत्न सक्कर तम थी १, एवं रत्न सक्कर थी १० एक एक विकल्प ना हुवै। तिहा रत्न सक्कर वालु थी ४ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

१	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक
7	ર	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ धूम
n,	ħ	१ रत्न, ९ सम्कर, १ वालुक, २ तम
४	٧	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ सातमी

हिवै रत्न सक्कर वालुक थी ४ भागा दूजै विकल्प करि कहै छै—

પ્ર	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पंक
ધ્	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ घूम
૭	ą	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ तम
5	४	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ सातमी
हिवै	रत्न र	सकर वालक थी ४ भागा तीजै विकल्प करि कहै

हिवै रत्न सक्कर वालुक थी ४ भागा तीजै विकल्प करि कहै

		ট —
3	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पक
१०	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ घूम
१०	מאי	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ तम
<b>१</b> २	४	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ सातमी

हिं	रै रत्न <b>व</b>	प्तकर वालुक थी ४ <b>भांगा चौथे</b> विकल्प करि वहै छै—	
<b>१</b> ३	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पंक	
१४	२	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ घूम	
१५	J)	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ तम	
<b>१</b> ६	8	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ सातमी	
i .		क्कर वालु थी ४ विकल्प करि १६ भागा कह्या। सक्कर पक थी ४ विकल्प करि ३ भागा प्रथम विकल्प करि वहै छैं—	
<b>१</b> ७	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, २ धूम	
१=	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ पक, २ तम	
33	m·	१ रत्न, १ सक्कर, १ पक २ सातमी	
हिवै	रत्न स	विकर पक थी दूजै विकल्प करि ३ भांगा कहै छै —	
२०	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ पंक, १ धूम	
२१	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ पंक, १ तम	
77	na.	१ रत्न, १ सक्कर, २ पक १ सातमी	
हिवै	हिनै रत्न सक्कर पक थी ३ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै —		
२३	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ पक, १ धूम	
२४ —	२	१ रत्न, २ सनकर, १ पक, १ तम	
२५	₹	१ रत्न, २ सक्कर, १ पक, १ सातमी	
हिवें	रत्न सव	कर पक थी ३ भागा चौथे विकल्प करि कहै छै	
२३	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ घूम	
२७	२	२ रत्न, १ मनकर, १पक, १ तम	
२६	₹	२ रत्न, १ सन र, १ पक, १ सातमी	
ए	रत्न सव	कर पंक थी ३ भागा ४ विकल्प करि १२ भागा कह्या।	

हिर्व	रहन र	तक्कर घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै —
२६	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ घूम, २ तम
३०	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ घूम, २ सातमी
हिवै र	हिन सक	कर घूम थी २ भागा दूजै विकल्प करि कहै छै —
₹१	१	१ रत्न, १ सवकर, २ धूम, १ तम
३२	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ धूम, १ सातमी
हिवै	रत्न स	क्कर घूम थी २ भागा तीजै विकल्प करिकहै छै—
३३	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ घूम, १ तम
३४	ર	१ रत्न, २ सक्कर, १ घूम, १ सातमी
हिवै	रत्न	सक्कर घूम थी २ भागाचोर्थ विकल्प करि कहै छै—
३५	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, १ तम
३६	२	२ रत्न, १ सनकर, १ घूम, १ सातमी
1		सनकर घूम थी ४ विकल्प करि ८ भागा कह्या। करतम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करिकहै र्छं —
३७	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ तम, २ सातमी
हिवै	रत्न स	क्कर तम थी १ भागो दूजै विकल्प करि कहै छै —
३८	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ तम, १ सातमी
हिं	रे रत्न स	तक्कर तम थी १ भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै —
38	8	१ रत्न, २ सक्कर, १ तम, १ सातमी
हि	वै रतन	सक्कर तम थी १ भागो चोर्य विकल्प करि कहै छै —
४०	8	२ रत्न, १ सक्कर, १ तम, १ सातमी
1		क्कर तम थी १ भागो च्यार विकल्प करि ४ भागा एव रत्न सक्कर थी १० भागा ४ विकल्प करि ४० भागा थया।

		ालु थी ६ भांगा, ते किसा ? रत्न वालु पक थी ३,
1		ालु घूम थी २, रत्न वालु तम थी १, एवं ६। वालुक पक थी ३ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—
४१	१	१ रत्न, १ वालुक, १ पक, २ घूम
४२	ર	१ रत्न, १ वालुक, १ पक, २ तम
४३	३	१ रत्न १ वालुक, १ पक, २ सातमी
हिवै	रहन इ	ालुक पंक थी ३ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै—
88	१	१ रत्न, १ बालुक २ पक, १ धूम
४५	२	१ रत्न, १ वालुक, २ पंक, १ तम
४६	ą	१ रत्न, १ वालुक, २ पंक, १ सातमी
हिब र	त्न वा	लुक पक थी ३ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै —
<b>১</b> ০	१	१ रत्न, २ बालुक, १ पक, १ धूम
४६	२	१ रत्न, २ वालुक, १ पक, १ तम
38	æ	१ रत्न, २ वालुक, १ पक, १ सातमी
हिवे र	स्त वा	लुक पक थी ३ भागाचोर्य विकल्प करि कहै छै
५०	१	२ रत्न, १ वालुक, १ पंक, १ घूम
४१	२	२ रत्न, १ वालुक, १ पक, १ तम
५२	₹	२ रत्न, १ वालुक, १ पंक, १ सातमी
		वालुक पक थी ४विकल्प करि १२ भांगा कह्या। वालुक घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै र्छै—
ሂ੩	१	१ रत्न, १ वालुक, १ घूम, २ तम
XX	२	१ रत्न, १ वालुक, १ घूम, २ सातमी
हिवै	रत्न व	वालुक घूम थी २ भागा दूजी विकल्प करि कहै छै —
ሂሂ	१	१ रत्न, १ बालुक, २ घूम, १ तम
प्र६	२	१ रत्न, १ वालुक, २ घूम, १ सातमी

हिवे रत्न वालुक घूम थी २ भागा तीजे विकल्प करि कहै छै-	-	
५७ १ १ रत्न, २ वालुक, १ धूम, १ तम		
५८ २ १ रत्न, २ वालुक, १ घूम, १ सातमी		
हिवै रत्न वालुक धूम थी २ भागा चोथे विकल्प करि कहै छै -	-	
५६ १ २ रत्न, १ वालुक, १ धूम १ तम		
६० २ २ रत्न, १ वालुक, १ धूम, १ सातमी		
ए रत्न वालुक धूम थी ४ विकल्प करि ८ भागा कह्या। हिवै रत्न वालुक तम थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै—	-	
६१ १ १ रत्न, १ वालुक, १तम, २ सातमी	-	
हिवै रत्न वालु तम थी १ भागो दूजै विकल्प करि कहै छै—		
६२ १ १ रत्न, १ वालुक, २ तम, १ सातमी		
हिवै रत्न वालुक तम थी १ भांगो तीजै विकल्प करि कहै छै —		
६३ १ १ रत्न, २ वालुक, १ तम, १ सन्तमी		
हिबै रत्न वालुक तम थी १ भागो चौथे विकल्प वरि कहै छै		
६४ १ २ रत्न, १ वालुक, १ तम, १ सातमी		
ए रत्न वालुक तम थी १ भागो ४ विकल्प करि ४ भागा कह्या । एवं रत्न वालुक थकी ६ भागा ४ विकल्प करिकै २४ भागा कह्या ।		
हिवै रत्न पंक थी ३ भागा, ते किसा ? रत्न पक घूम थी २, रत्न पंक तम थी १। तिहा रत्न पक घूम थी २ भागा प्रयम विकल्प करि कहै छै—		
६५ १ १ रत्न, १ पक, १ घूम, २ तम		
६६ २ १ रत्न, १ पंक, १ धूम, २ तमतमा		
रत्न पक धूम थी २ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै —		
६७ १ १ रतन, १ पंक, २ घूम, १ तम		
६		

रत्त पक धूम थी २ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै —
६६ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम
७० २ १ रतन, २ पक, १ धूम, १ तमतमा
रत्न पक घूम थी २ भागा चउथे विकल्प करि कहै छै —
७१ १ २ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम
७२ २ २ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तमनमा
हिवै रत्न पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै –
७३ १ १ रत्न, १ पक, १ तम, २ तमतमा
हिवै रत्न पक तम थी १ भागो दूजै विकल्प करि कहै छै
७४ १ १ रत्न, १ प रु, २ तम, १ तमतमा
हिवै रत्त पक तम थी १ भागो तीजै विकल्प करि कहै छै—
७५ १ १ रत्न २ पक, श्तम, २ तमतमा
हिवै रत्न पक तम थी १ भागो चउथे विकल्प करि कहै छै -
७६ १ २ रत्न, १ पक, १ तम, १ तमतमा
ए रत्न पक थी ३ भागा ४ विकल्प करि १२ भागा कह्या।
हिर्दैरत्न घूम तम थो १ भागो प्रयम विकल्प करि कहै छै –
७७ १ रत्न, १ धूम, १ तम, २ तमतमा
हिवें रत्न घूम तम थी १ भांगो दूजें विकल्प करि कहै छैं —
७  १ १ रत्न, १ घूम, २ तम, १ तमतमा
हिवै रतन धूम तम थी १ भागो तीजै विकल्प करि कहै छै
७६ १ १ रत्न, २ धूम, १ तम, १ तमतमा
हिवै रत्न धूम तम थी १ भागो चउथे विकल्प करि कहै छै -
८० १ २ रत्न, १ घूम, १ तम, १ तमतमा
ए रत्न धूम तम थी १ भागो ४ विकल्प करि कह्यो । एव रत्न थी २० भागा च्यार विकल्प करि ८० भागा कह्या ।

हिवै सक्तर थी १० एक एक विकल्प करि हुवं, ते सक्कर वालुक थी ६, सक्कर पक थी ३, सक्कर घूम थी १, एवं १० । हिवै सक्कर वालुक थी ६, ते किसा ? सक्कर वालु पंक थी ३. सक्कर वालु घूम थी २, सक्कर वालु तम थी १ एवं सक्कर वालु थी ६ । ते च्यार विकल्प करि २४ मांगा हुवै । हिवै सक्कर वालु पंक थी ३ मागा प्रथम विकल्प करि यहै छै—			
<b>५</b> १	१	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ घूम	
<b>5</b> 2	٦	१ मक्कर, १ बालु, १ पक, २ तम	
<b>5</b> 3	ą	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ तमतमा	
हिवै	सवकर	वालु पंक थी ३ भांगा दूजै विकल्प करि कहै छै —	
58	१	१ सक्कर, १ वालु, २ प क, १ धूम	
८४	२	१ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ तम	
न६	nv.	१ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ तमतमा	
हिवै र	सक्कर	वालु पक यी ३ भागा तीजे विकल्प करि कहै छैं -	
<b>দ</b> ড	१	१ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ घूम	
55	२	१ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ तम	
58	३	१ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ तमतमा	
हिंबै	हिन सनकर वालु पक थी ३ भागा चउथे विकल्प करि कहै छै		
69	8	२ सवकर, १ वालु, १ पक, १ धूम	
83	२	२ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ तम	
<b>د</b> ۲	3	२ सनकर, १ धूम, १ पक, १ तमतमा	
हिवै	हिवै सक्कर वालु घूम थी २ भागा प्रथक विकल्प करि कहै छै —		
६३	8	१ सक्कर, १ वालु, १ घूम, २ तम	
४३	२	१ सकर, १ वालु, १ घूम, २ तमतमा	

ए गरकर यन्तु ध्म थी २ भांगा च्यार विकल्प करि द भांगा कहा।  हिंदी सकर घूम तम थी १ भागो ते ४ विकल्प करि ४ भांगा कहे छै। हिंदी सकर घूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि उहे छै -  २०१ १ १ सकर, १ चून, १ तम, २ तमतमा  हिंदी सकर घूम तम थी १ भांगो हितीय विकल्प करि कहै छै -  २०२ १ १ सकर १ घूम, २ तम, १ तमतमा  हिंदी सकर घूम तम थी १ भांगो तृतीर विकल्प करि कहै छै -  १०३ १ १ सकर,२ घुम, १ तम, १ तमतमा  हिंदी सकर घूम तम थी १ भांगो चर्रिय विकल्प करि कहै छै -  १०४ १ २ मकर,१ घूम, १ तम, १ तमतमा  ए मकर वालुक थी ६ भागा ४ विकल्प करि २४ भागा कहा।।  सकर पक थी ३ भांगा एक एक विकल्प करि इदी, ते किसा?  सकर पक थी ३ भांगा एक एक विकल्प करि हुदी, ते किसा?  सकर पक थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै -		
हिंदी गक्तर वालु धूम थी २ भागा तृतीय विकल्प करि कहें छै  ६७ १ १ मक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम  ६० १ १ मक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम  ६० १ १ मक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तमतमा  हिंदी सरकर वालु धूम थी २ भागा चटचे विकल्प करि कहें छै  ६६ १ २ गक्कर, १ वालु १ धूम, १ तम  १०० २ २ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ तमनमा  ए गरकर वालु धूम थी २ भागा च्यार विकल्प करि ४ भागा कहा।  हिंदी मक्कर धूम तम थी १ भागो ते ४ विकल्प करि ४ भागा कहें छै। हिंदी सक्कर धूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि ४ भागा कहें छै। हिंदी सक्कर धूम तम थी १ भागो द्वितीय विकल्प करि कहें छै-  १०१ १ १ सक्कर, १ धूम, १ तम, २ तमतमा  हिंदी सक्कर धूम तम थी १ भागो हिंतीय विकल्प करि कहें छै-  १०३ १ १ सक्कर,२ धूम, १ तम, १ तमतमा  हिंदी सक्कर धूम तम थी १ भागो चटचे विकल्प करि कहें छै-  १०३ १ १ सक्कर,२ धूम, १ तम, १ तमतमा  हिंदी सक्कर धूम तम थी १ भागो चटचे विकल्प करि कहें छै-  १०४ १ २ मक्कर,१ धूम,१ तम,१ तमतमा  ए मक्कर वालुक थी ६ भागा ४ विकल्प करि २४ भागा कहा।।  सक्कर पक थी ३ भागा एक एक विकल्प करि २४ भागा कहा।।  सक्कर पक थी ३ भागा एक एक विकल्प करि इदी, ते किसा?  सक्कर पक थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहें छै-  १०४ १ १ सक्कर,१ पक,१ धूम,२ तम	हिये मकार वालु धूम थी २ भागा द्विनीय विकल्प व	तरि कहै छै
हिये गयकर वालु घूम थी २ भागा तृतीय विकल्प किर कहे छै  ६७ १ १ सवकर, २ वालु, १ घूम, १ तम  ६८ २ १ सवकर, २ वालु, १ घूम, १ तमतमा  हिये सक्कर वालु घूम थी २ भागा चटथे विकल्प किर कहे छै  ६६ १ २ गयकर, १ वालु १ घूम, १ तमनमा  ए गरकर वालु घुम थी २ भागा च्यार विकल्प किर ४ भागा कहा।।  हिवे सवकर घूम तम थी १ भागो ते ४ विकल्प किर ४ भागा कहे छै। हिवे सवकर घूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प किर इ छै -  १०१ १ १ सवकर, १ घूम, १ तम, २ तमतमा  हिवे सवकर घूम तम थी १ भागो हितीय विकल्प किर कहे छै -  १०२ १ १ सवकर, १ घूम, २ तम, १ तमतमा  हिवे सवकर घूम तम थी १ भागो हितीय विकल्प किर कहे छै -  १०३ १ १ सवकर, २ घूम, १ तम, १ तमतमा  हिवे सवकर घूम तम थी १ भागो चटथे विकल्प किर कहे छै -  १०४ १ २ सवकर, १ घूम, १ तम, १ तमतमा  ए सवकर घूम तम थी १ भागो चटथे विकल्प किर कहे छै -  १०४ १ २ सवकर, १ घूम, १ तम, १ तमतमा  ए सवकर पक्ष थी ३ भागा एक एक विकल्प किर २४ भागा कहा।।  सवकर पक्ष थी ३ भागा एक एक विकल्प किर २४ भागा कहा।।  सवकर पक्ष थी ३ भागा एक एक विकल्प किर २४ भागा कहा।।  सवकर पक्ष थी ३ भागा एक एक विकल्प किर १ भागा कहा।।  सवकर पक्ष थी ३ भागा प्रस्त किल्प किर ३ छी -  १०४ १ १ सवकर, १ पक, १ घूम, २ तम	६५ १ १ मक्कर, १ बालु, २ धूम, १ तम	
हुँ १ १ सकर, २ वाल, १ घूम, १ तम  हुँ सक्य वाल घूम थी २ भागा चटथे विकल्प करि कहै छै  हुँ सक्य वाल घूम थी २ भागा चटथे विकल्प करि कहै छै  हुँ १ २ सक्य, १ वाल १ घूम, १ तम  १०० २ २ सक्य, १ वाल, १ घूम, १ तमनमा  ए मस्क वाल घूम थी २ भागा च्यार विकल्प करि ४ भागा कहा।  हुँ सक्य घूम तम थी १ भागो ते ४ विकल्प करि ४ भागा कहा।  हुँ सक्य घूम तम थी १ भागो ते ४ विकल्प करि ४ भागा कहे छै। हुँ सक्य घूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि वहे छै -  १०१ १ १ सक्य १ घूम, १ तम, २ तमतमा  हुँ सक्य घूम तम थी १ भागो हितीय विकल्प करि कहे छै -  १०२ १ १ सक्य १ घूम, २ तम, १ तमतमा  हुँ सक्य घूम तम थी १ भागो चुँ विकल्प करि कहे छै -  १०३ १ १ सक्य १ घूम, १ तम, १ तमतमा  हुँ सक्य वालु घो ६ भागा ४ विकल्प करि २४ भागा कहा।।  सक्य प्रक यो ३ भागा एक एक विकल्प करि २४ भागा कहा।।  सक्य प्रक थी ३ भागा प्रक एक विकल्प करि इवँ, ते किसा?  सक्य प्रक थी २ भागा प्रक एक विकल्प करि इवँ, ते किसा?  सक्य प्रक थी २ भागा प्रक एक विकल्प करि इवँ, ते तिहा सक्य प्रक धूम थी २ भागा प्रक एक विकल्प करि कहे छै -  १०५ १ १ सक्य, १ पक, १ घूम, २ तम	६६ २ १ मनकर, १ च लु, २ घूम, १ तमतम	i <b>T</b>
हिंद सक्कर यालु धूम थी २ भांगा चटथे विकल्प करि कहै छै  हिंद सक्कर यालु धूम थी २ भांगा चटथे विकल्प करि कहै छै  हिंद सक्कर, १ वालु, १ घूम, १ तम  ए गरुकर यालु ध्म थी २ भांगा च्यार विकल्प करि ८ भांगा कहा।  हिंदी सक्कर घूम तम थी १ भांगी ते ४ विकल्प करि ४ भांगा कहै छै। हिंदी सक्कर घूम तम थी १ भांगी प्रथम विकल्प करि उहै छै -  १०१ १ १ सक्कर, १ घूम, १ तम, २ तमतमा  हिंदी सक्कर घूम तम थी १ भांगी हिंतीय विकल्प करि कहै छै -  १०२ १ १ सक्कर, १ घूम, २ तम, १ तमतमा  हिंदी सक्कर घूम तम थी १ भांगी नृतीर विकल्प करि कहै छै -  १०३ १ १ सक्कर, २ घूम, १ तम, १ तमतमा  हिंदी सक्कर घूम तम थी १ भांगी चटथे विकल्प करि कहै छै -  १०४ १ २ मक्कर, १ घूम, १ तम, १ तमतमा  ए सक्कर वालुक थी ६ भांगा ४ विकल्प करि २४ भांगा कहा।।  सक्कर पक यूम थी २, सक्कर पक तम थी १, तिहा सक्कर पक यूम थी २ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै -  १०५ १ १ सक्कर, १ पक, १ घूम, २ तम	हिर्वं मक्कर वालु घूम थी २ भागा तृतीय विकल्प क	रि कहै छै
हिर्व सक्कर यालु धूम थी २ भांगा चडथे विकल्प करि कहै छै  हि १ २ गयकर, १ वालु १ धूम, १ तम  १०० २ २ सवकर, १ वालु, १ धूम, १ तमनमा  ए गरकर यन्नु ध्म थी २ भांगा च्यार विकल्प करि ६ भांगा कहा।  हिर्व सकर धूम तम थी १ भागो ते ४ विकल्प करि ४ भांगा कहै छै। हिर्व सक्कर धूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि दहे छै -  १०१ १ १ सकर, १ धूम, १ तम, २ तमतमा  हिर्व सकर धूम तम थी १ भांगो हितीय विकल्प करि कहै छै -  १०२ १ १ माकर १ धूम, २ तम, १ तमतमा  हिर्व सकर धूम तम थी १ भांगो नुतीर विकल्प करि कहै छै -  १०३ १ १ सक्कर,२ धूम, १ तम, १ तमतमा  हिर्व सकर धूम तम थी १ भांगो चवधे विकल्प करि कहै छै -  १०३ १ २ सक्कर,२ धूम, १ तम, १ तमतमा  ए सक्कर धूम तम थी १ भांगो चवधे विकल्प करि कहै छै -  १०४ १ २ सक्कर,१ धूम, १ तम, १ तमतमा  ए सक्कर पक्ष थी ६ भागा ४ विकल्प करि २४ भागा कहा।।  सकर पक्ष थी ३ भांगा एक एक विकल्प करि इत्वै, ते किसा?  सकर पक्ष थी ३ भांगा एक एक विकल्प करि हुनै, ते किसा?  सकर पक्ष थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै -  १०४ १ १ सवकर,१ पक,१ धूम,२ तम	६७ १ १ सक्कर, २ बालु, १ धूम, १ तम	
हिंह   १   २ सवकर, १ वालु १ घूम, १ तम  १००   २   २ सवकर, १ वालु, १ घूम, १ तमनमा  ए मक्कर च लु घ्म थी २ भागा च्यार विकल्प करि द भाग. कहा।  हिंदी सवकर घूम तम थी १ भागो ते ४ विकल्प करि ४ भागा कहे छै । हिंदी सवकर घूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि उहै छै -  २०१   १ सवकर, १ घूम, १ तम, २ तमतमा  दिंदी सवकर घूम तम थी १ भागो हिंतीय विकल्प करि कहै  छै—  १०२   १ सवकर, १ घूम, २ तम, १ तमतमा  हिंदी सवकर घूम तम थी १ भागो नृतीर विकल्प करि कहै छै —  १०३   १ सवकर, २ घृम, १ तम, १ तमतमा  हिंदी सवकर घूम तम थी १ भागो चंदिये विकल्प करि कहै छै—  १०४   १ सवकर, १ घूम, १ तम, १ तमतमा  ए सवकर च च सामा ४ विकल्प करि २४ भागा कहा।। सवकर पक थी ३ भागा एक एक विकल्प करि हुंदी, ते किसा? सवकर पक थी ३ भागा एक एक विकल्प करि हुंदी, ते किसा? सवकर पक घूम थी २, सवकर पक तम थी १, तिहा सवकर पक यूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै —  १०४   १ १ सवकर, १ पक, १ घूम, २ तम	६८ २ १ सक्कर, २ वान्तु, १ धूम, १ तमतन	T
१०० २ २ सवकर, १ वाल्, १ घूम, १ तमनमा  ए गरुकर य लु ध्म थी २ भांगा च्यार विरुद्ध करि द भाग.  कह्या।  हिर्व मव हर घूम तम थी १ भागो ते ४ विकल्प करि ४ भांगा  कहै छैं। हिर्व सकर घूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प  करि न्हें छैं -  १०१ १ १ सवकर, १ घूम, १ तम, २ तमतमा  हिर्व मव हर घूम तम थी १ भांगो हितीय विकल्प करि कहै  छैं  १०२ १ १ सवकर १ घूम, २ तम, १ तमतमा  हिर्व सव हर घूम तम थी १ भांगो तृतीर विकल्प करि कहै छैं  १०३ १ १ सवकर,२ घुम, १ तम, १ तमतमा  हिर्व सव हर घूम तम थी १ भागो च उसे विकल्प करि कहै छैं  १०४ १ २ मव हर, १ घूम, १ तम, १ तमतमा  ए मवकर व जुक थी ६ भागा ४ विकल्प करि २४ भागा कह्या।  सव हर पक घूम थी २, सवकर पक विकल्प करि हुवे, ते किसा?  सव हर पक घूम थी २, सवकर पक तम थी १, तिहा सवकर  पक यूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छैं  १०५ १ १ सवकर, १ पक, १ घूम, २ तम	हिबै सक्कर बालु धूम थी २ भांगा चटथे विकल्प क	रि कहै छै
ए गरकार वालु ध्म थी २ गांगा च्यार वित्तल कि द मांगा कहा।  हिंव मकर घूम तम थी १ भागो ते ४ विकल्प कि ४ भांगा कहै छै। हिंव सकर घूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प कि द है छै -  २०१ १ १ सकर, १ घूम, १ तम, २ तमतमा  िव मकर घूम तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्प कि कहै छै -  २०२ १ १ सकर, १ घूम, २ तम, १ तमतमा  हिंव सकर घूम तम थी १ भांगो तृतीर विकल्प कि कहै छै -  १०३ १ १ सकर,२ घूम, १ तम, १ तमतमा  हिंव सकर घूम तम थी १ भागो चित्रेय विकल्प कि कहै छै -  १०४ १ २ मकर,१ घूम, १ तम, १ तमतमा  ए मकर वालुक थी ६ भागा ४ विकल्प कि २४ भागा कहा।।  सकर पक थी ३ भांगा एक एक विकल्प कि हुवै, ते किसा?  सकर पक थी ३ भांगा एक एक विकल्प कि १ तिहा सकर पक घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प कि छै -  १०४ १ १ सकर,१ पक, १ घूम,२ तम	हह १ २ नवकर, १ वालु १ घूम, १ तम	
हिंच	१०० २ २ समकर, १ वालु, १ घूम, १ तमनम	ï
कहै छै। हिबै सक्तर धूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प किर न्हे छै -  २०१ १ १ सक्तर, १ घूम, १ तम, २ तमतमा  ि व सक्तर धूम तम थी १ भागो द्वितीय विकल्प किर कहै छै -  २०२ १ १ सक्तर १ धूम, २ तम, १ तमतमा  हिबै सक्तर धूम तम थी १ भागो तृतीर विकल्प किर कहै छै -  १०३ १ १ सक्तर,२ धूम, १ तम, १ तमतमा  हिबै सक्तर धूम तम थी १ भागो चठथे विकल्प किर कहै छै -  १०४ १ २ सक्तर, १ धूम, १ तम, १ तमतमा  ए मक्तर व लुक थी ६ भागा ४ विकल्प किर २४ भागा कहा।।  सक्तर पक थी ३ भागा एक एक विकल्प किर २४ भागा कहा।।  सक्तर पक थी ३ भागा एक एक विकल्प किर १४ भागा कहा।।  सक्तर पक धी २ भागा प्रथम विकल्प किर १४ तिहा सक्तर पक धूम थी २, सक्तर पक तम थी १, तिहा सक्तर पक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प किर कहै छै -  १०४ १ १ सक्तर, १ पक, १ धूम, २ तम	• •	र = भागः
१०१ १ १ सन कर, १ यून, १ तम, २ तमतमा  हिर्व  नव कर यून तम थी १ भांगी द्वितीय विकल्प करि कहै  छै—  १०२ १ १ माकर १ यूग, २ तग, १ तमतमा  हिर्व  सन कर यूम तम थी १ भांगी तृतीर विकल्प करि कहै छै —  १०३ १ १ सनकर,२ यूग, १ तम, १ तमतमा  हिर्व  सन कर यूम तम थी १ भांगी चन्नथे विकल्प करि कहै छै—  १०४ १ २ मन कर,१ यूम,१ तम,१ तमतमा  ए मनकर व लुक थी ६ मागा ४ विकल्प करि २४ भागा कह्या।  सन कर पक थी ३ भांगा एक एक विकल्प करि हुवै, ते किसा?  सन कर पक थी ३ भांगा एक एक विकल्प करि हुवै, ते किसा?  सन कर पक थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै —  १०५ १ १ सन कर,१ पक,१ यूम,२ तम	कहै छै। हिवै सक्तर घूम तम थी १ भागो प्रथ	
िर्वं नवतर घून तम थी १ भांगो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—  १०२ १ १ माकर १ धूग, २ तग, १ तमतमा  हिवै सकर घूम तम थी १ भांगो तृती विकल्प करि कहै छै —  १०३ १ १ सकर,२ घृम, १ तम, १ तमतमा  हिवै सकर घूम तम थी १ भागो च उथे विकल्प करि कहै छै—  १०४ १ २ मकर,१ घूम,१ तम,१ तमतमा  ए मक्कर वालुक थी ६ भागा ४ विकल्प करि २४ भागा कह्या।  सकर पक थी ३ भांगा एक एक विकल्प करि हुवै, ते किसा?  सकर पक थी ३ भांगा एक एक विकल्प करि हुवै, ते किसा?  सकर पक घूम थी २, सकर पक तम थी १, तिहा सकर पक घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै —  १०४ १ १ सक्कर,१ पक,१ धूम,२ तम	कार रहे छ	
हैं—  २०२ १ १ सनकर १ धूग, २ तग, १ तमतमा  हिव सकर घूम तम थी १ भांगी नृती र विकल्प करि कहे छ —  १०३ १ १ सकर,२ घूग, १ तम, १ तमतमा  हिव सकर घूम तम थी १ भागी चर्चथे विकल्प करि कहे छ —  १०४ १ २ मकर, १ घूम, १ तम, १ तमतमा  ए सकर व लुक थी ६ भागा ४ विकल्प करि २४ भागा कह्या।  सकर पक थी ३ भांगा एक एक विकल्प करि हुवे, ते किसा?  सकर पक घूम थी २, सकर पक तम थी १, तिहा सकर पक घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहे छ —  १०५ १ १ सकर, १ पक, १ धूम, २ तम	२०१ १ १ सन कर, १ घून, १ तम, २ तमतमा	,
हिव सकर घूम तम थी १ भांगो तृती र विकल्प करि कहै छ -  १०३ १ १ सकर,२ घृम, १ तम, १ तमतमा  हिव सकर घूम तम थी १ भागो च उथे विकल्प करि कहै छ  १०४ १ २ मकर, १ घूम, १ तम, १ तमतमा  ए मक्कर वालुक थी ६ भागा ४ विकल्प करि २४ भागा कह्या।  सकर पक थी ३ भांगा एक एक विकल्प करि हुव, ते किसा?  सकर पक घूम थी २, सकर पक तम थी १, तिहा सकर पक घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहे छ  १०५ १ १ सक्कर, १ पक, १ घूम, २ तम	_	गरि कहै
१०३ १ १ सक्कर,२ घृम, १ तम, १ तमतमा  हिव सक्कर घूम तम थी १ भागो च उथे विकल्प करि कहै छै—  १०४ १ २ मक्कर, १ घूम, १ तम, १ तमतमा  ए मक्कर वालुक थी ६ भागा ४ विकल्प करि २४ भागा कह्या।  सक्कर पक थी ३ भागा एक एक विकल्प करि हुव, ते किसा?  सक्कर पक घूम थी २, सक्कर पक तम थी १, तिहा सक्कर  पक घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै —  १०५ १ १ सक्कर, १ पक, १ घूम, २ तम	१०२ १ १ साकर १ धूम, २ तम, १ तमतमा	
हिव सकर घूम तम थी १ भागो च उथे विकल्प करि कहै छै— १०४ १ २ मकर, १ घूम, १ तम, १ तमतमा ए मक्कर वालुक थी ६ भागा ४ विकल्प करि २४ भागा कहा। सकर पक थी ३ भागा एक एक विकल्प करि हुवे, ते किसा? सकर पक घूम थी २, सक्कर पक तम थी १, तिहा सक्कर पक घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै — १०५ १ १ सक्कर, १ पक, १ घूम, २ तम	हिर्व सकर घूम तम थी १ भांगो तृती र विकल्प करि	कहै छी -
१०४ १ २ मक्तर, १ घूम, १ तम, १ तमतमा  ए मक्कर वालुक थी ६ मागा ४ विकल्प करि २४ भागा कह्या।  सक्तर पक थी ३ भागा एक एक विकल्प करि हुवै, ते किसा?  सक्तर पक घूम थी २, सक्कर पक तम थी १, तिहा सक्कर पक घूम यी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै -  १०५ १ १ सक्कर, १ पक, १ घूम, २ तम	१०३ १ १ सनकर,२ घृम, १ तम, १ तमतमा	
ए मक्कर वालुक थी ६ भागा ४ विकल्प करि २४ भागा कह्या। सवकर पक थी ३ भागा एक एक विकल्प करि हुवै, ते किसा? सवकर पक घूम थी २, सक्कर पक तम थी १, तिहा सक्कर पक घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै - १०५ १ १ सक्कर, १ पक, १ धूम, २ तम	हिव सकर घूम तम यी १ भागो चउथे विकल्प कि	कहै छै—
सवकर पक थी 3 भांगा एक एक विकल्प करि हुवै, ते किसा? सवकर पक घूम थी २, सवकर पक तम थी १, तिहा सवकर पक घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै - १०५ १ १ सवकर, १ पक, १ धूम, २ तम	१०४ १ २ मकत्तर, १ घूम, १ तम, १ तमतमा	
	सकर पक थी > भांगा एक एक विकल्प करि हुवै, सकर पक घूम थी २, सकर पक तम थी १, ति	ते किसा <sup>?</sup>
१०६ २ १ सक्कर, १ पक, १ घूम, २ तमतमा	१०५ १ १ सदकर, १ पक, १ धूम, २ तम	
	१०६ २ १ सक्कर, १ पक, १ घूम, २ तमतमा	

हिवै	सक्कर	पक्ष धूम थी २ भागा दूजै विकटा करि कहै छै
७०९	8	१ सक्कर, १ पक, २ धूम, १ तम
१०५	२	१ सक्कर, १ पक, २ धूर,१ तमतमा
हिवै स	सक्कर प	कं धूम थी २ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै –
१०६	१	१ सक्कर, २ पक, १ घूम, <b>१</b> तम
११०	२	१ सक्कर, २ पक, १ धूम, १ तमतमा
हिवै स	तकर प	म मधूम थी २ भागा च उथे विकल्प करि कहै छै
१११	१	२ सक्कर, १ पक, १ धूम, १ तम
११२	२	२ सक्कर, १ पक, १ घूम, १ तमनमा
हिवै	सक्कर	पक तम थी १ भागो प्रथम विवल्प करि कहै छै —
११३	१	१ सक्कर, १ पक, १ तम, २ तमतमा
हिवै	त्तकर	पक तम थी १ भागो द्वितीय थिकल्प करि कहै छे —
११४	१	१ सक्कर, १ पक, २ तम, १ तमतमा
हिट	ते सवक	र पक तन थी १ भागो तृतीय विवल्प करि कहै छे —
११५	<b>१</b>	१ सक्कर, २ पक, १ तम, १ तमतमा
हिं	वै सवक	र पक तम थी १ भागो चउथे विकल्प करि कहै ईं -
११६ 	8	२ स क्कर, १ पक, १ तम, १ तमतमा
1		पंक थी ३ भागा ४ विकल्प करि १२ भागा कह्या। र घूम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै —
११७	१	१ सक्कर, १ घूम, १ तम, २ तमतमा
हि	वै सक्क	र घूम थी १ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै छै —
११८	१	१ सक्कर, १ घूम, २ तम, १ तमतमा
हि	वै सक्क	र धूम थी १ भागो तृतीय विकल्प करि कहै छै –
388	8	१ सक्कर, २ घूम, १ तम, १ तमतमा

हिर्व	सक्कर	धूम थी १ भागो चउथे विकल्प करि कहै छैं —
१२०	१	२ सक्कर, १ घूम, १ तम, १ तमतमा
एव	सक्कर	थी १० भागा ४ विकल्प करि ४० भागा कह्या।
पक वालु ३ ए	थी ३, पक घृ क-एक	ती ४ भागा एक-एक विकल्प करि हुवै, ते वालु वालु घूम थी १। हिवै वालु पंक थी ३, ते किसा ? प्म थी २, वालु पक तम थी १, एवं वालु पक थी विकल्प करि हुवै। तिहां वालु पक घूम थी २ विकल्प करि कहै छै—
र२१	१	१ वालु, १ पक, १ घूम, २ तम
१२२	२	१ वालु, १ पक, १ घूम, २ तमतमा
हिवै	वालु प	क घूम थी २ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै
१२३	१	१ वालु, १ पंक, २ घूम, १ तम
१२४	٦ /	१ वालु, १ पक, २ घूम १ तमतमा
हिवै	वालु प	क घूम थी २ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै
१२५	१	१ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम
१२६	२	१ वालु, २ प क, १ धूम, १ तगतमा
हिवै	वालु	पक धूम थी २ भागा चउथे विकल्प करि कहै छै
१२७	8	२ वालु, १ पक, १ घूम, १ तम
१२८	२	२ नालु, १ पक, १ घूम, १ तमतमा
हिवै	वालु	पक तस थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै
१२६	१	१ वालु १ पक, १ तम, २ तमतमा
हिवै	वालु प	क तम थी १ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै र्छ —
₹ <b>₹</b> 0	१	१ वालु, १ पक, २ तम, १ तमतमा
हिवं	वालु	पक तम थी १ भागो तृतीय विकल्प करि कहै र्छ –
१३१	१	१ वालु, २ पक, १ तम, १ तमतमा
हिवै	वालु प	ाक तम थी १ भागो चउथे विकला करि कहै छै—
१३२	१	२ वालु, १ पक, १ तम, १ तमतमा
ए व	ालु पक	थी ३ भागा ४ विकल्प करि १२ भागा कह्या।

हिवें	वालु घूम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छैं –
१३३	१ शवालु, १ घूम, १ तम, २ तमतमा
हिवै	वालु घूम थी १ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै छै —
१३४	१ श्वालु, १ धूम, २ तम, १ तमतमा
हिवै व	।लु घूम थी १ भागो नृतीय विकल्प करि कहै छै —
१३५	१ श वालु, २ धूम, १ तम, १ तमतमा
हिवै व	ालु घूम थी १ भागो चउथे विकत्प करि कहै छै —
१३६	१ २ वालु, १ घूम, १ तम, १ तमतना
1	लु धूम थी १ भांगो ४ विकल्प करि ४ भागा कह्या। वालु थी ४ भागा ४ विकत्प करि १६ भागा वह्या।
हिं	पिक थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै –
१३७	१ १ पक, १ घूम १ तम, २ तमतमा
हिट	र्व पक थी १ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै छैं
१३८	१ पक, १ चूम, २ तम, १ तमतमा
हिं	पिक थी १ भांगो तृतीय विकल्प करि कहै छै
१३६	१ पंक, २ चूम, १ तम, १ तमतमा
हिंह	पिक थी एक भागी चउथे विकल्प करि कहै छै
१४०	१ २ पंक, १ धूम, १ तम, १ तमतमा
ए	पक थी १ भागो ४ विकल्प करि ४ भांगा कह्या।
ए पैती सजोगि ना इ २१०,	न थी २०, सक्कर थी १०, वालुक थी ४, पक थी १, सि भागा एक विकल्प ना हुवै, ते पाच जीव ना चौक- या ४ विकत्प करि १४० भागा कह्या। ए पांच जीव कमजोगिया ७, द्विकसंजोगिया ८४, त्रिकसंजोगिया चौकसजोगिया १४०। एव सर्व ४४१ भागा कह्या। चिमजोगिया इकवीस भागा आगल कहिसै।

हिवै रतन सक्कर घूम थी १ भागो कहै छै-

१२. तथा एक रत्न इक सक्करे, एक धूम तम एक। इक जीव नारिक सप्तमी, ए भग दशम उवेख ॥

ए रत्न सक्कर धूम थी १ भागो कह्यो। एव रत्न सक्कर थी १० मांगा थया ।

हिनै रत्न वालुक थी च्यार भागा कहै छै—ते किसा ? रत्न वालुय पक थी ३, रत्न वालुय धूम थी १। तिण मे रत्न वालुय पक थी ३, ते किया ? रन्न वालुय पक धूम थी २ अने रत्न वालुय पक तम थी १--एव रत्न वालुय पक थी ३। तिहा रत्न वालुय पक धूम थी २ भागा, ते कहै छै-

- १३. तथा एक रत्न एक वालुका, एक पक उपजंत। इक धूम एक तमा विषे, भग इग्यारमी तंत।।
- १४. तथा एक रत्न इक वालुका, एक पक उपजेह। एक धूम इक सप्तमी, द्वादशमो भग एह।। ए रत्न वालुय पक घूम थी २ भांगा कह्या। हिवै रत्न वालु पक तम थी १ भागो कहै छै-
- १५. तथा एक रत्न इक वालुका, एक पक अवलोय। एक तमा इक सप्तमी, तेरसमो भंग जोय।। ए रत्न वालुय पंक थी ३ भागा कह्या। हिवै रत्न वालुय घूम थी १ मागो कहे छै--
- १६. तथा एक रत्न इक वालुका, एक धूम आख्यात। एक तमा इक सप्तमी, चउदशमो भंग थात।। ए रत्न वालुय थी ४ भागा कह्या। हिवै रतन पक थी १ मागो कह छै-
- १७. तथा एक रत्न इक पक में, एक घूम रै मांय। एक तमा इक सप्तमी, भग पनरमी पाय।। ए रत्न थी १५ भागा कह्या।

हिवै सक्कर थी ५ भागा कहै छै, तिणमें रत्न पांचू मेड टा ाणी अने एकेक नरक पश्नानुपूर्वी करके टालणी—

- १८. तथा एक सक्कर इक वालुका, एक पंक पहिछाण। एक धूम ने इक तमा, सोलसमो भंग जाण।। ए सोलमे भागे सातमी टली।
- १६. तथा एक सक्कर इक वालुका, एक पंक अवलोय। एक धूम इक सप्तमी, सतरसमी भंग जीय।। ए सतरमे भागे छठी नरक दली।
- २०. तथा एक सक्कर इक वालुका, एक पंक आख्यात। एक तमा इक सप्तमी, भंग अठारम यात।। इहां अठारमे भागे पचमी नरक टली।
- २१. तथा एक सक्कर इक वालुका, एक धूम उपजंत। एक तमा इक सप्तमी, उगणीसम भंग तंत।।

१२. अहवा एगे रयणप्यभाए एगे सदकरप्यभाए एगे घूमव्यमाए एगे तमाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा

- १३. अहवा एगे रयणप्यभाए एगे वानुयप्यमाए एगे पकणमाए एगे यूमणमाए एगे तमाए होज्जा
- १४. बहुवा एगे रयणप्पमाए एगे वानुयणमाए एगे पकष्पमाए एगे धूमप्पमाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा
- १५. बहुवा एगे रयणपमाए एगे वालुणमाए एगे पंक्रण-माए एगे तमाए एगे बहेसत्तमाए होज्जा
- १६. अहवा एगे रयणप्पमाए एगे वालुयप्पमाए एगे धूमप्रमाए एगे तमाए एगे धहेमत्तमाए होज्जा
- १७. अहवा एगे रयणप्यभाए एगे पंकप्यमाए जाव एगे बहेमत्तमाए होज्जा
- १८. अहवा एगे सक्करणमाए एगे वालुयणमाए जाव एगे तमाए होन्ना,
- १६. अहवा एगे सक्करप्पमाए जाव एगे पकप्पमाए एगे धूमप्पमाए एगे अहेसत्तमाए होन्जा
- २० अहता एगे सवकरप्पमाए जान एगे पक्रप्पमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा
- २१. अहवा एगे सवकरप्यमाए एगे वालुयप्यमाए एगे व्मप्पभाए एगे तमाए एगे बहेसत्तमाए होज्जा

१०४ भगवती-जोड़

ए उगणीममें भांगे चडथी नरक टली।

- २२. तथा एक सक्कर इक पंक में, एक धूम रै मांय।
  एक तमा इक सप्तमी, वीसमों भंग कहाय।।
  ए वीसमें भागे तीजी नरक टली। ए सक्कर थी ५ भागा कह्या।
  हिवै वालु थी १ भागो कहै छै—
- २३. तथा एक वालुक इक पंक मे, एक धूम एक तम।
  एक सप्तमी ऊपजै, ए भंग इकवीसम।।
- २४. पंचसंयोगिक ए कह्या, इकवीस भंग विचार। विकल्प एक अछै तस्, ए वच यंत्र' मझार।।
- २५. \*पनर रत्न थी पंच सक्कर थी, वालुक थी डक देखियै। पंच योगिक भंग ए, इकवीस ही इम लेखियै॥
- २६. पनर रत्न थी तेह इहिन्छ, दश रत्न सक्कर थकी। रत्न वालू थी चिहुं अरु, रत्न पंक थी इक नकी।।
- २७. रत्न सक्कर थकी देश इम, पट रत्न सक्कर वालु हुंती। रत्न सक्कर पंक थी त्रिण, इक रत्न सक्कर धूम थी।।
- २८. रत्न सक्कर वालु थी पट, तेह इहविघ कीजियै। रत्न सक्कर वालु पंक थी, भंग तीन भणीजियै॥
- २६. रत्न सक्कर वालु घूम थी, दोय भांगा आणिये। रत्न सक्कर वालु तम थी, भंग एक बखाणिये।।
- ३०. रत्न सक्कर वालु थी षट, प्रथम इहविध लीजियै। एम नारिक आगली पिण, पूर्व उक्तज कीजियै।।
- ३१. पंच जीव नां इकसंयोगिक, सप्त भागा जाणिये। दिकसंयोगिक च्यार विकल्प, चोरासी भंग आणिये।।
- ३२. त्रिकसंयोगिक पट विकल्पे, दोयसौ दश भंग कह्या। चउ संयोगिक च्यार विकल्प, इक सौ चाली भंगलह्या।।
- ३३. पंच संयोगिक एक विकल्प, भंग इकवीसे भण्या। च्यार सीने वासठ सगला, भंग संख्या करि गिण्या।।
- ३४. †शत नवम बतीसम देश ए, एक सौ असीमी ढाल । सयाणां ! भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' मंगल माल ॥ सयाणां ! (जय-जय ज्ञान जिनेंद्र नों ।)

- २२. बहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे बहेसत्तमाए होज्जा।
- २३. अहवा एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेमत्तमाए होज्जा। (म०।६।६२)

३३. सर्वमीलने च चत्वारि शतानि द्विपट्टपिकानि भवन्तीति । (वृ०प०४४४)

†लय : शिवपुर नगर सुहामणी

पच जीव ना पचसंयोगिक तेहनो विकल्प १, भांगा इकवीस । तिहां रत्न थी १५, सक्कर थी ५, वालुक थी १ — एवं २१। रत्न थी १५, ते किसा? रत्न सक्कर थी १०, रत्न वांलु थी ४, रत्न पंक थी १--एवं रत्न थी १५ । ते पनरा में रत्न सक्कर थी १०, ते किमा ? रत्न सक्कर वालुक थी ६, रत्न सक्कर पक्त थी ३, रत्न सक्कर घूम थी १ - एवं रत्न सक्कर थी १०। ते दशा में रत्न सक्कर वालुक थी ६, ते किसा ? रत्न मक्कर वालुक पक्त थी ३, रतन मक्कर वालुक धूम थी २, रत्न मक्कर वालुक तम थी १--एवं रत्न मक्कर वालुक थी ६। ते छ भागा में प्रथम रत्न सक्कर वालुक पंक थी ३ भांगा कहै छै -वा पं घू त तम १ १ 2 १ १ 0 ₹ १ ₹ 0 Ş ξ १ ए रतन मक्कर वालुक पक थी ३ भागा कहा। हिव रतन सक्कर वालुक धूम यो २ भागा कहै छै-१ १ १ ሂ हिवै रतन सक्कर वालुक तम थी १ भांगी कहै छं-१ ए रत्न सक्कर वालुक थी ६ भागा कह्या। हिवै रत्न सक्कर पंक थी ३ भागा, ते किसा? रत्न सक्कर पंक घूम थी २, रतन सकर पंक तम धी १। तिहां रत्न मक्कर पक घूम थी २ भागा कहै छै-१ હ 8 हिव रतन सकतर पंक तम थी १ भागो कहै छै -१ 8 ए रत्न सक्कर पंक थी ३ भागा कह्या। हिवै रत्न सक्कर घूम थी १ मांगो कहै छै — १० ए रत्न मनुकर वी १० भागा कह्या।

३, रत्न वालुक यूम थी १, तिणमे रत्न वालुक पंक थी ३, ते किसा ? रतन वालु पंक यूम थी २, रतन वालुक पक तम थी १, तिहा रत्न वालुक पंक धूम थी २ भांगा कहै छै-पं ₹ स वा घू त तम ११ 8 १ ₹ १ १२ 3 हिव रतन वालुक पक तम थी १ भांगी कहै छै-**१**३ 0 ए रत्न वालुक पंक थी ३ भांगा कह्या। हिंवै रत्न वालुक घूम थी १ भांगी कहै छै-१४ १ 2 ए रत वालुक थी ४ भांगा कहा। हिव रतन पक थी १ मांगो कहै छै — १५ 8 १ १ एवं रत्न थी १५ भागा कह्या। हिवै सक्कर थी ५ भागा कहै छै-१६ ŧ १ १ ₹ 0 3 **१**७ 8 8 2 8 25 ₹ 8 १ 8 १ 38 ४ 8 १ १ 0 १ 8 २० ሂ १ 8 ए सनकर थी ५ भांगा कह्या। हिवै वालुक थी १ भागो कहै छै-१ १ २१ ए पंच जीव नां पंचसंजीगिया रत्न थी १५, सक्कर थी ५, वालुक थी १--एव २१ मांगा जाणवा।

हिवै रत्न वालु थी ४ भांगा, ते किया? रत्न वालुक पंक थी

#### दूहा

- हे भदंत! षट नेरइया, नरक-प्रवेशण काल।
   रत्नप्रभा में स्यूं हुवै, प्रश्न पूर्ववत न्हाल।।
   श्रिन कहै गगेया! सुणे, छहूं रत्न उपजंत।
  - अथवा षट सक्कर मझे, तथा वालुक षट हुंत ॥
- ३. अथवा पंक विपेज षट, अथवा पट ह्वै घूम। अथवा षट तम विल तथा, षट तमतमाज बूम।।
- ४. इकसंयोगिक आखिया, भांगा ए इम सात। इक विकल्प करि ओलखो, वारू विध अवदात।।

	₹	स	वा	पं	घ्	त	तम	
१	Ę	0	o	0	0	o	0	
२	٥	દ્	0	0	0	o	0	
₹		o	Ę	0	0	o	0	
४	0	0	0	Ę	٥	o	o	
ય	0	0	•		ધ્ય	0	o	
Ę	0	0	0	0	0	Ę	0	
b	0	0	0	0	0	0	Ę	

हिवै ६ जीव ना दिकसयोगिक तेहनां विकल्प ५ भागा १०५ कहै छै-

- ५. द्विकयोगिक पट जीव नां, विकल्प पंच विशेष । भांगा एक सौ पच है, कहियै तेह अशेप ॥ \*वीर कहै गंगेया ! सुणे । (ध्रुपदं)
- ६. अथवा इक ह्वै रत्न मे, पंच सक्कर में पेखो रे। अथवा इक ह्वै रत्न में, पच वालुका देखो रे॥
- ७. अथवा इक ह्वै रत्न मे, पंच पंक रै मांही। अथवा इक ह्वै रत्न में, पंच घूम कहिवाई॥
- अथवा इक ह्वं रत्न में, पच तमा पहिछाणी।
   अथवा इक ह्वं रत्न में, पंच तमतमा जाणी।।
   ए रत्न थी प्रथम विकल्प करि ६ मागा कह्या।
   दुर्ज विकल्प करि ६ भागा कहै छैं —
- ह. तथा दोय ह्वं रत्न में, चिंउ सक्कर अवलोयो।जाव तथा दोय रत्न में, च्यार सप्तमी होयो।।
- <sup>भ</sup>लय: बात म काढो वरत नी

- १. छ्व्यते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा ।
- २,३.गगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।
  - ४. इहैकत्वे सप्त

(वृ०प०४४५)

- ५. द्विकयोगे तु पण्णां द्वित्वे पञ्च विकल्पाः स्तद्यया— १५।२४।३३।४२।५१। तैंब्च सप्तपद-द्विकसंयोगएक-विश्वतेर्गुणनात् पञ्चोत्तरं भङ्गकशतं भवति। (वृ० प० ४४५)
- इ. अहवा एगे रयणप्यभाए पच सक्करप्यभाए होज्जा,अहवा एगे रयणप्यभाए पंच वालुयप्यभाए होज्जा
- ७,८. जाव अहवा एगे रयणप्पभाए पंच अहेमत्तमाए होज्जा।
  - श्रहवा दो रयणप्पभाए चतारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव श्रहवा दो रयणप्पभाए चतारि श्रहेसत्तमाए होज्जा।

- तीजै विकल्प करि ६ भांगा कहे छै-
- १०. तथा तीन ह्वं रत्न में, त्रिण सक्कर मे चीनो। जाव तथा त्रिण रत्न में, हुवं सप्तमी तीनो।। चउथे विकल्प करि ६ भागा कहै छं—
- ११. तथा च्यार ह्वं रत्न में, वे सक्कर अधखानो। जाव तथा चिंउ रत्न में, दोय तमतमा जानो।। पचमे विकल्प करि ६ भागा कहें छैं—
- १२ तथा पांच ह्वै रत्न में, इक सक्कर दुखदायो।
  जाव तथा पच रत्न में, एक सप्तमी मांह्यो।।
  ए रत्न थी ६ भागा पाच निकरप करि ३० भागा कह्या।
  हिवै सक्कर थी ४ भागा ४ विकल्प करि २४ भांगा कहै छै—
- १३. अथवा एक सक्कर ह्वं, पंच वालुका पेखो। जाव तथा इक सक्करे, पंच तमतमा लेखो।।
- १४. तथा दोय ह्वं सक्करे, च्यार वालुका मांही। जाव तथा वे सक्करे, च्यार सप्तमी थाई।।
- १५. तथा तीन ह्वं सक्करे, तीन वालुका होयो। जाव तथा तीन सक्करे, तीन सप्तमी जोयो॥
- १६ तथा च्यार ह्वं सक्करे, दोय वालुका जाणी। जाव तथा चिउ सक्करे, दोय सप्तमी आणी॥
- १७. तथा पाच ह्वं सक्करे, इक वालुक आख्यातो। जाव तथा पंच सक्करे, एक तमतमा पातो॥ हिवं वालुक थकी ४ भागा ५ विकल्प करि कहै छै—
- १८. तथा एक ह्वं वालुका, पंच पंक में पेखो। जाव तथा इक वालुका, पच सप्तमी लेखो।।
- १६ तथा दोय ह्वं वालुका, च्यार पंक रै माह्यो। जाव तथा वे वालुका, च्यार सप्तमी जायो॥
- २०. तथा तीन ह्वं वालुका, तीन पक दुखत्रासो। तथा जाव तीन वालुका, तीन सप्तमी वासो।।
- २१. तथा च्यार ह्वं वालुका, दोय पक पहिछाणी। जाव तथा च्यार वालुका, दोय सप्तमी जाणी।।
- २२. तथा पांच ह्वं वालुका, एक पक अवलोयो।
  जाव तथा पंच वालुका, एक सप्तमी होयो।।
  ए वालुक थकी ४ भागा पाच विकल्प कर २० भागा कह्या।
  हिवं पक थकी ३ भागा पाच विकल्प करि कहै छै—
- २३. तथा एक ह्वं पक मे, पंच धूम अघखानी। जाव तथा इक पंक में, पच सप्तमी जानी।।
- २४. तथा दोय ह्वं पक मे, च्यार धूम पहिछानी। जाव तथा वे पंक मे, च्यार तमतमा जानी।।
- २५. तथा तीन ह्वं पंक में, तीन धूम मे तेहो। जाव तथा त्रिण पंक मे, तीन सप्तमी जेहो।।

१०-३५. अहवा तिण्णि रयणप्पभाए तिण्णि मनकरप्पभ एवं एएणं कमेणं जहा पचण्हं दुयासंजोगो तहा व वि भाणियव्यो, नवरं—एक्को अव्महिको संचारेय जाव अहवा पच तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा

१०८ भगवती जोड़

- २६. तथा च्यार ह्वं पंक में, दोय धूम में देखो। जाव तथा चिंउं पंक में, दोय तमतमा पेखो ॥
- २७. तथा पंच ह्वं पंक में, एक धूम आख्यातो। जाव तथा पंच पंक में, एक सप्तमी पातो। ए पक थकी ३ भागा ५ विकल्प करि १५ भागा कह्या। हिवै धूम थी २ भागा ५ विकल्प करि कहै छै-
- २८. तथा एक ह्वं धूम में, पंच तमा दुखपूरो। तथा एक ह्वं धूम मे, पंच सप्तमी भूरो।।
- २६ तथा दोय ह्वै धूम मे, च्यार तमा रै माँ ह्यो। तथा दोय ह्वं धूम में, च्यार सप्तमी जायो।।
- ३०. तथा तीन ह्वं धूम मे, तीन तमा उपजतो।
- तथा तीन ह्वं धूम में, तीन सप्तमी हुतो।। ३१. तथा च्यार ह्वं धूम्मे, दोय तमामे देखो।
- तथा च्यार ह्वै धूम मे, दोय सप्तमी पेलो।। ३२. तथा पंच ह्वै धूम मे, एक तमा अवलोयो। तथा पंच ह्वं धूम मे, एक सप्तमी होयो।। ए धूम थी २ भागा ५ विकल्प करि १० भागा कह्या। हिवै तमा थी १ भागो ५ विकल्प करि कहै छै —
- ३३. अथवा इक ह्वं तम मझै, पच तमतमा पेखो। अथवा दोय छठी विषे, च्यार सप्तमी लेखो।।
- ३४. तथा तीन छट्टी विषे, तीन सप्तमी मांह्यो। अथवा च्यार हुवै तमा, दोय तमतमा पायो।।
- ३५. अथवा पच हुवै तमा, एक सप्तमी होयो। ए विकल्प है पचमो, तमा थकी अवलोयो।।

ए तमा थकी १ भागो ५ विकल्प करि ५ भागा कह्या । रत्न थी ६, सक्कर थी ५, वालु थी ४, पक थी ३, घूम थी २, तम थी १—एवं २१ भागा एक-एक विकल्प करि हुवै। ६ जीव ना ५ विकल्प करि द्विकसजोगिया १०५ भागा। हिवै एहनो यत्र।

शाप, राष, शाव, षार, पार छ जीव ना द्विकसजोगिया ए प्र विकल्प।

		द्विकसयोगिक ना विकल्प ५ भागा १०५। तिहा भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—
१	१	१ रत्न, ५ सक्कर,
२	२	१ रत्न, ५ वालुक
ą	n	१ रत्न, ५ पंक
४	४	१ रत्न, ५ घूम
પ્ર	પ્ર	१ रत्न, ५ तम
Ę	Ę	१ रत्न, ५ सप्तमी

*************	हिबै र	न थी ६ भागा दूजे वित्रत्प करि कहै छै—
٥	8	२ रहन, ४ सक्कर
5	२	२ रत्न, ४ वालुक
3	7	२ रत्न, ४ पक
१०	8	२ रत्न, ४ घूम
११	પ્ર	२ रत्न, ४ तम
१२	Ę	२ रत्न, ४ सप्तमी
	हिबै र	त्त थी ६ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै —
<b>१</b> ३	8	३ रत्न, ३ सक्कर
१४	२	३ रत्न, ३ वालुक
१५	३	३ रत्न, ३ पक
<b>१</b> ६	૪	३ रत्न, ३ घूम
१७	ય	३ रहन, ३ तम
१५	६	३ रत्न, ३ सप्तमी
,	हिवै र	त्न थी ६ भांगा चत्रथे विकत्प करि कहे छै
38	8	४ रहन, २ सक्कर
२०	२	४ रत्न, २ वालुक
२१	3	४ रत्न, २ पंक
२२	8	४ रत्न, २ घूम
<b>२३</b>	્રે પ્ર	४ रत्न, २ तम
२४	Ę	४ रतन, २ सप्तमी

हिबै रत्न थी ६ भागा पंचमें विकत्प करि कहै छै —			
२५	१	५ रतन, १ सक्कर	
२६	२	५ रत्न, १ वालुक	
ঽ৻৽	ąγ	४ रतन, १पक	
२६	X	५ रत्न, १ घूम	
₹€	ų	५ रत्न, १ तम	
30	Ę	५ रत्न, १ सप्तमी	
1	एव रत	ाथी ६, पंच विकत्प करि ३० भांगा कह्या।	
ſ	हेर्वे सर	कर थी ५ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै —	
३१	१	१ सक्रर, ५ वालु	
३२	ર	१ सक्कर, ५ पक	
<b>३</b> ३	3	१ सनकर, ५ धूम	
38	४	१ सवकर, ५ तम,	
31	X	१ सकर, ५ सप्तमी	
	सक्ब	र थी ५ भागा दुजै विकल्प करि कहे छ —	
३६	१	२ सक्कर, ४ वालु <sub>।</sub>	
३७	२	२ मृक्कर, ४ पंक	
२८	ą	२ सक्कर, ४ धूम	
3,6	8	२ सनकर, ४ तम	
४०	×	२ सक्तर, ४ मध्नमी	
	·		

f	हेवै सक	हर थी ५ भागा तीजै विकल्प करि कहै छ <u>ै</u> —
४१	१	३ सक्तर, ३ वालुक
४२	٦ \	३ सक्कर, ३ पक
४३	₹	३ सक्कर, ३ धूम
88	8	३ सक्कर, ३ तम्
४५	ধ	३ सक्तर, ३ सप्तमी
1	हिवै सक	कर थी ५ भागा चउथे विक्लप करि कहै छै –
४६	१	४ सक्कर, २ वालु
<i>৬</i> ৬	२	४ सक्कर, २ पक
ሄፍ	B	४ सक्कर, २ घूम
38	8	४ सक्कर, २ तम
५०	પ્ર	४ सनकर, २ मप्तमी
f	ह्वै सक्क	र थी ५ भागा पचमे विकल्प करि कहै छै
<b>५</b> १	8	५ सक्कर, १ वालु
प्र२	२	५ सक्कर, १ पंक
ХĄ	₹	५ सक्कर, १ घूम
४४	8	५ सक्कर, १ तम
ሂሂ	પ્ર	५ सक्कर, १ सप्तमी
	<del></del>	सक्कर थी ५ विकल्प करि २५ भांगा कह्या ।
हि	वै वालुव	ਸ਼ थी ४ भांगा प्रथम विकल्प करि कहै छै—
५६	१	१ वालुक, ५ पक
ধূত	२	१ वालुक, ५ घूम
ধ্ৰ	३	१ वालुक, ५ तम
प्रध	٧	१ वालुक, ५ सप्तमी

हिवै	वालु १	थी ४ भागो दूजै विकल्प करि कहै छै—
ųo	१	२ वालुक, ४ पक
६१	२	२ वालुक, ४ धूम
६२	₹	२ वालुङ, ४ तम
६३	8	२ वालुक, ४ सप्तमी
हिवै	वालु ।	यी ४ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै—
६४	१	३ वालुक, ३ पक
૬યૂ	२	३ वालुक, ३ घूम
६६	ą	३ वालुक, ३ तम
६७	४	३ वालुक, ३ सप्तभी
हिवै	वालुः	थी ४ भागा चउथे विकल्ग करि कहै छैं —
६न	१	४ वालुक, २ पक
ξ <u>ε</u>	2	४ वालुक, २ घूम
<u>ا</u> ه و	ą	४ वालुक, २ तम
७१	8	४ वालुक, २ सप्तमी
हिवं	वालु १	वी ४ भागा पचमे विकल्प करि कहै छै —
७२	१	५ वालुक, १ पक
७३	२	५ वालुक, १ धूम
७४	W,	५ वालुक, १ तम
७४	४	५ वालुक, १ सप्तमी
	_	थी ४ भागा पच विकल्प करि २० भागा कह्या।
हिवै	पकर्थ	ी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै —
७६	१	१ पक, ५ घूम
७७	२	१ पक, ५ तम
৬দ	ą	१ पक, ५ सप्तमी

_	Aller Hills Co.	
हि	वै पंक ध	यी ३ भांगा दूजी विकल्प करि कहै छी—
30	1 8	२ पंक, ४ घूम
50	२	२ पक, ४ तम
5 १	m	२ पंक, ४ सप्तमी
हि	वैपकः	यी ३ भागा तीजै विकल्प करि कहै छै—
द२	१	३ पक, ३ घूम
ឝᢃ	२	३ पक, ३ तम
দ্র	३	३ पक, ३ सप्तमी
हिवै	पंक थी	३ भांगा चउथे विकल्प करि कहै छै
८४	१	४ पक, २ घूप
54	२	४ पंक, २ तम
50	ą	४ पंक, २ सप्तमी
हिवे	पंक थं	ो ३ भांगा पचमे विकल्प करि कहै छै
44	8	५ पंक, १ घूम
<u>جو</u>	2	५ पंक, १ तम
03	3	५ पक, १ सप्तभी
ए प	कथी इ	विकल्प करि १५ भागा कह्या ।
हिं	वे घूम ध	ी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—
६१	8	१ घूम, ५ तम
દર	2	१ वूम, ५ सप्तमी
हिवै	घूम र्थ	र भांगा दूजी विकल्प करि कहै र्छ—
€3	₹	२ वूम, ४ तम
83	२	२ थूम, ४ सप्तमी

हिवे वूम थी २ भागा तीजी विकल्प करि कहे छै —
६५ १ ३ धूम, ३ तम
६६ २ ३ घूम, ३ सप्तमी
हिवै घूम थी २ भागा चज्ये विकल्प करि कहै छै —
६७ १ ४ घूम, २ तम
१८ २ ४ घूम, २ सप्तमी
हिवै घूम थी २ भांगा पचमे विकल्प करि कहै छै —
६६ १ ५ घूम, १ तम
१०० २ ५ घूम, १ सप्तमी
एवं घूम थी २ भांगा पच विकत्प करि १० भांगा कह्या ।
हिवे तम थी १ भागो प्रयम विकल्प करि कहै छै —
१०१ १ १ तम, ५ सप्तमी
हिवै तम श्री १ भागो दूर्ज विकल्प करि कहै छै—
१०२   १   २ तम, ४ सप्तभी
हिवै तम थी १ भागो तीजै विकल्प करि कहै छै—
१०३ १ ३ तम, ३ सप्तमी
हिर्व तम थी १ भागो चउथे विकल्प करि कहै छै
१०४ १ ४ तम, २ सप्तमी
हिव तम थी १ भागो पंचमे विकल्प करि कहै छै
१०५ १ ५ तम, १ सप्तमी
एव ६ जीव ना द्विकसजीगीया भांगा २१ पच विकल्प करि १०५ भागा कह्या।

३३. <sup>४</sup>नवम वत्तीसम देश ए, ढाल इकसी इक्यासी। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' परम हुलासी॥

<sup>\*</sup> लय: बात म काढो वरत नी

### दूहा

- त्रिकसंजोगिक तास। १. पट नारिक नां हिव कहं, भागा साढा तीन सौ, दश विकल्प करि जास ॥
- २. रत्न थकी पनरे हुवै, सक्कर थी दश होय। पट वालु थी पंक त्रिण, धूम थकी इक सोय।।
- ३. ए पैतीसे भग ते, दश विकल्य करि देख। होवे साढा तीन सी, कहिये छे सुविशेख।।

हिवै १५ रत्न थी, ते किमा ? रत्न मक्कर थकी ५, रत्न वालुक थकी ४, रतन पक थकी ३, रतन धूम थकी २, रतन तम थकी १-- एवं १५ भांगा रतन थी, ते दस विकल्प करि हुवै--

## \*श्री जिन भाखें सुण गगेया ! (ध्रुपदं)

- ४. एक रत्न ने एक सक्कर ह्वै, च्यार वालुका होय। अथवा एक रत्न इक सक्कर, च्यार पंक अवलोय।।
- ५. अथवा एक रत्न इक सक्कर, च्यार धूम रै मांय। अथवा एक रत्न इक सक्कर, च्यार तमा दुख पाय।।
- ६. अथवा एक रत्न इक सक्कर, च्यार सप्तमी होय। रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, धुर विकल्प करि सोय।।
- ७. अथवा एक रत्न वे सक्कर, तीन वालुका होय। अथवा एक रत्न वे सक्कर, तीन पक अवलोय।।
- तीन धूम रै मांय। प्रथवा एक रत्न वे सक्कर, अथवा एक रत्न वे सक्कर, तीन तमा कहिवाय।।
- ६ अथवा एक रत्न वे सक्कर, तीन सप्तमी होय। रत्न सक्कर थी ए पच भंगा, द्वितीय विकल्प जोय।।
- १० अथवा दोय रत्न इक सक्कर, तीन वालुका होय। अथवा दोय रत्न इक सक्कर, तीन पंक अवलोय ॥
- ११. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, तीन घूम रै माय। अथवा दोय रत्न इक सक्कर, तीन तमा दुख पाय।।
- १२. अथवा दोय रत्न इक सक्कर, तीन सप्तमी होय। रत्न सक्कर थी ए पंच भगा, तृतीय विकल्प सोय।।
- १३. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, दोय वालुका होय। अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, दोय पंक अवलोय ॥
- १४ अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, दोय धूम रै मांय।
- अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, दोय तमा दुख पाय ॥ १५. अथवा एक रत्न त्रिण सक्कर, दोय सप्तमी होय। रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, चउथै विकल्प जोय।।

४. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे मनकरप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि पकप्पभाए होज्जा।

१ त्रिकयोगे तु पण्णां त्रित्वे दश विकल्पाः एतै व्च

पञ्चित्रणतः सप्तपदित्रकसयोगाना गुणनात् त्रीणि

शतानि पञ्चाशदिषकानि भवन्ति । (वृ०प० ४४५)

- ४,६. एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा।
- ७-१४८. अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं जहा पचण्ह तियासंजोगो भणिओ तहा छण्ह वि भाणियव्यो, नवर-एक्को अहिओ उच्चारेयव्वो, सेसं त चेव।

<sup>\*</sup> लय: सीता आवे रे घर राग

- १६. वयवा दोय रत्न वे सक्कर, दोय वालुका होय। वयवा दोय रत्न वे सक्कर, दोय पंक अवलोय॥
- १७. अथवा दोय रत्न वे सक्कर, दोय धूम रै मांय। अथवा दोय रत्न वे सक्कर, दोय तमा दुख पाय।।
- १८. अथवा दोय रत्न वे सक्कर, दोय सप्तमी होय। रत्न सक्कर थी ए पंच भगा, पंचम विकल्प जोय॥
- १६. अथवा तीन रत्न इक सक्कर, दोय वालुका होय। अथवा तीन रत्न इक सक्कर, दोय पंक अवलोय॥
- २०. अथवा तीन रत्न इक सक्कर, दोय धूम रै मांय। अथवा तीन रत्न इक सक्कर, दोय तमा दुख पाय॥
- २१. व्यथवा तीन रत्न इक सक्कर, दोय सप्तमी होय। रत्न सक्कर थी ए पंच मंगा, पप्टम विकल्प जोय।।
- २२. अथवा एक रत्न चिडं सक्कर, एक वालुका होय। अथवा एक रत्न चिडं सक्कर, एक पंक अवलोय॥
- २३. अथवा एक रत्न चिडं सक्कर, एक धूम रै मांय। अथवा एक रत्न चिडं सक्कर, एक तमा दुख पाय।।
- २४. अथवा एक रत्न चिउं सक्कर, एक सप्तमी होय। रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, सप्तम विकल्प जोय॥
- २५. अथवा दोय रत्न त्रिण सक्कर, एक वालुका होय। अथवा दोय रत्न त्रिण सक्कर, एक पंक अवलोय।।
- २६. अथवा दोय रत्न त्रिण सक्कर, एक धूम रै माय।
- अथवा दोय रत्न त्रिण सक्कर, एक तमा दुख पाय ।।
- २७ अथवा दोय रत्न त्रिण सक्कर, एक सप्तमी होय। रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, अय्टम विकल्प जोय।।
- २८ अथवा तीन रत्न वे सक्कर, एक वालुका होय। अथवा तीन रत्न वे सक्कर, एक पंक अवलोय।।
- २६ अयना तीन रत्न वे सक्कर, एक धूम रै मांव। अथवा तीन रत्न वे सक्कर, एक तमा कहिवाय॥
- ३०. अथवा तीन रतन वे सक्कर, एक सप्तमी होय। रतन सक्कर थी ए पंच भंगा, नवमें विकल्प जोय।।
- ३१. अथवा च्यार रत्न इक सक्कर, एक वालुका जान। अथवा च्यार रत्न इक सक्कर, एक पंक अधखान॥
- ३२. अथवा च्यार रत्न इक सक्कर, एक धूम रै मांय। अथवा च्यार रत्न इक सक्कर, एक तमा कहिवाय।।
- ३३. अथवा च्यार रत्न इक सक्कर, एक सप्तमी माय। रत्न सक्कर थी ए पंच भंगा, दशमें विकल्प थाय।।
  - ए रत सक्कर थी ५ भागा १० विकल्प करि ५० भागा कहा। हिर्व रत वालुक थी ४ भागा दण विकल्प करि ४० भागा कहै छै— हिर्व प्रथम विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ३४. अथवा एक रत्न इक वालुक, च्यार पक उपजंत। जाव तथा इक रत्न वालु इक, च्यार तमतमा हुत।।

- हिवै द्वितीय विकल्प करि ४ भांगा कहै छै-
- ३५. अथवा एक रत्न वे वालुक, तीन पक उपजंत। जाव तथा इक रत्न वालु वे, तीन तमतमा हुंत।। हिवै तृतीय विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ३६. अथवा दोय रत्न इक वालुक, तीन पक अघखान। जाव तथा बे रत्न वालु इक, तीन तमतमा जान।। हिवै चतुर्थ विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ३७. अथवा एक रत्न त्रिण वालुक, दोय पक दुख पूर। जाव तथा इक रत्न वालु त्रिण, दोय तमतमा भूर।। हिवै पंचम विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—
- ३८. अथवा दोय रत्न वालु बे, दोय पक पहिछान। जाव तथा बे रत्न वालु बे, दोय तमतमा जान।। हिवै पष्टम विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ३६. अथवा तीन रत्न इक वालुक, दोय पक दुख रास। जाव तथा त्रिण रत्न वालु इक, दोय तमतमा तास।। हिवै सप्तम विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ४०. अथवा एक रत्न चिउ वालुक, एक पक अवलोय। जाव तथा इक रत्न वालु चिउं, एक तमतमा होय।। हिवै अष्टम विकल्प करि ४ भांगा कहै छै—
- ४१ अथवा दोय रत्न त्रिण वालु, एक पंक दुख धाम । जाव तथा बे रत्न वालु त्रिण, एक तमतमा पाम ॥ हिवै नवम विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ४२. अथवा तीन रत्न वे वालुक, एक पक कहिवाय। जाव तथा त्रिण रत्न वालुक वे, एक सप्तमी जाय।। हिनै दशम विकल्प करि ४ भागा कहै छै—
- ४३. अथवा च्यार रत्न इक वालुक, एक पक में पेख।
  जाव तथा चिउ रत्न वालु इक एक सप्तमी लेख।।
  ए रत्न वालुक थी ४ भागा दश विकल्प करि ४० भागा कह्या।
  हिवै रत्न पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा।
  हिवै प्रथम विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ४४. अथवा एक रत्न इक पके, च्यार धूम उपजत। जाव तथा इक रत्न पंक इक, च्यार तमतमा हुत।। हिवै द्वितीय विकल्प करि ३ भागा कहे छै—
- ४५. अथवा एक रत्न वे पके, तीन धूम रै मांय। जाव तथा इक रत्न पंक वे, तीन तमतमा पाय।। हिवै तृतीय विकल्प करि ३ भागा कहै छै---
- ४६. अथवा दोय रत्न इक पंके, तीन धूम अघखान। जाव तथा दोय रत्न पंक इक, तीन तमतमा जान।।

- हिवे चतुर्थं विकला करि ३ भांगा कहै छै-
- ४७. अथवा एक रत्न त्रिण पंके, दोय धूम दुखपूर। जाव तथा इक रत्न पंक त्रिण, दोय तमतमा भूर॥ हिवै पंचम विकल्प करि ३ भांगा कहै छै—
- ४८. अथवा दोय रत्न वे पंके, दोय धूम पहिछान। जाव तथा बे रत्न पक बे, दोय तमतमा जान।। हिवै षण्टम विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ४६. अथवा तीन रत्न इक पके, दोय धूम दुखरास। जाव तथा त्रिण रत्न पंक इक, दोय तमतमा तास।। हिवै सप्तम विकल्प करि ३ भागा कहै छै—
- ५०. अथवा एक रत्न चिउं पके, एक धूम अवलोय। जाव तथा इक रत्न पंक चिउं, एक तमतमा होय।। हिवै अष्टम विकल्प करि ३ भागा कहै छै—
- ५१. अथवा दोय रत्ने त्रिण पके, एक धूम दुखधाम। जाव तथा बे रत्न पक त्रिण, एक तमतमा पाम।। हिवै नवम विकल्प करि ३ भागा कहै छै—
- ५२. अथवा तीन रत्न बे पके, एक धूम कहिवाय। जाव तथा त्रिण रत्न पंक बे, एक सप्तमी जाय।। हिवै दशम विकल्प करि ३ भागा कहै छै—
- ५३. अथवा च्यार रत्न इक पके, एक धूम मे पेख। जाव तथा चिउ रत्न पक इक, एक सप्तमी लेख।। ए रत्न पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा कह्या। हिवै रत्न धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा। प्रथम विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ५४. अथवा एक रत्न इक धूमा, च्यार तमा उपजंत। अथवा एक रत्न इक धूमा, च्यार तमतमा हुंत।। हिवै द्वितीय विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ५५. अथवा एक रत्न वे धूमा, तीन तमा रै माय। अथवा एक रत्न वे धूमा, तीन तमतमा जाय।। हिवै तृतीय विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ४६. अथवा दोय रत्न इक धूमा, तीन तमा अघखान। अथवा दोय रत्न इक धूमा, तीन तमतमा जान।। हिवै चतुर्थ विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ५७. अथवा एक रत्न त्रिण धूमा, दोय तमा दुखपूर। अथवा एक रत्न त्रिण धूमा, तीन तमतमा भूर॥ हिवै पचम विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ५८. अथवा दोय रत्न बे धूमा, दोय तमा पहिछान। अथवा दोय रत्न बे धूमा, दोय तमतमा जान।।

हिबै पष्टम विकल्प करि २ भागा कहै छै-

- ५६. अथवा तीन रत्न इक धूमा, दोय तमा दुखरास। अथवा तीन रत्न इक धूमा, दोय तमतमा तास।। हिवै सप्तम विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ६०. अथवा एक रत्न चिउं धूमा, एक तमा अवलोय। अथवा एक रत्न चिउं धूमा, एक तमतमा होय।। हिवै अष्टम विकल्प करि २ भागा कहै छै—
- ६१. अथवा दोय रत्न त्रिण धूमा, एक तमा दुखधाम। अथवा दोय रत्न त्रिण धूमा, एक तमतमा पाम।। हिवै नवम विकल्प करि २ भांगा कहै छै—
- ६२. अथवा तीन रत्न वे घूमा, एक तमा कहिवाय। अथवा तीन रत्न वे घूमा, एक सप्तमी जाय।। हिवै दशम विंकल्प करि २ भागा कहै छै---
- ६३. अथवा च्यार रत्न इक धूमा, एक तमा मे पेख। अथवा च्यार रत्न इक धूमा, एक सप्तमी लेख।। ए रत्न धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कहा। हिवै रत्न तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कहै छै—
- ६४. अथवा एक रत्न इक तमा, च्यार तमतमाः जंत। अथवा एक रत्न वे तमा, तीन तमतमा हुंत।।
- ६५. अथवा दोय रत्न इक तमा, तीन तमतमा माय। अथवा एक रत्न त्रिण तमा, दोय तमतमा जाय।।
- ६६. अथवा दोय रत्न वे तमा, दोय तमतमा जोय। अथवा तीन रत्न इक तमा, दोय तमतमा होय॥
- ६७. अथवा एक रत्न चिउं तमा, एक तमतमा पेख। अथवा दोय रत्न त्रिण तमा, एक सप्तमी लेख।।
- ६८. अथवा तीन रत्न वे तमा, एक तमातमा मांय। अथवा च्यार रत्न इक तमा, एक सप्तमी जाय।।

ए रत्न तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या। ए रत्न थी १५ भागा दश विकल्प करि १५० भागा कह्या।

हिवै सक्कर थी दश, ते किसा ? सक्कर वालुक थी ४, सक्कर पक थी ३, सक्कर धूम थी २, सक्कर तम थी १—एव दश भागा हुवै, ते दश विकल्प किर १०० भागा हुवै ते कहै छै—

- ६९. अथवा इक सक्कर इक वालुक, च्यार पक उपजत। जावत इक सक्कर इक वालुक, चिउ सप्तमी हुत।। हिवै द्वितीय विकल्पे ४ भागा कहै छै—
- ७०. अथवा इक सक्कर बे वालुक, तीन पक मे चीन। जावत इक सक्कर बे वालुक, अधो सप्तमी तीन। हिवै तृतीय विकल्पे ४ भागा कहै छै—
- ७१. अथवा वे सक्कर इक वालुक, तीन पंक में लीन। जावत वे सक्कर इक वालुक, अधो सप्तमी तीन।।

- हिवै चतुर्थे विकल्पे ४ भागा कहै छै-
- ७२. अथवा इक सक्कर त्रिण वालुक, दोय पक अवलोय । जावत इक सक्कर त्रिण वालुक, अधो सप्तमी दोय ।। हिवै पंचम विकल्पे ४ भागा कहै छै—
- ७३. अथवा वे सक्कर वे वालुक, दोय पक अवलोय। जावत वे सक्कर वे वालुक, अघो सप्तमी दोय।। हिवै पण्टम विकल्पे ४ भागा कहे छै—
- ७४. अथवा त्रिण सक्कर इक वालुक, दोय पक मे होय। जावत त्रिण सक्कर इक वालुक, अधो सप्तमी दोय।। हिवै सप्तम विकल्पे ४ भांगा कहै छै—
- ७५. अथवा इक सक्कर चिउं वालुक, एक पक मे पेख। जावत इक सक्कर चिउं वालुक, अधो सप्तमी एक।। हिवै अष्टम विकल्पे ४ भागा कहै छै—
- ७६. अथवा वे सक्कर त्रिण वालुक, एक पंक मे पेख। जावत इक सक्कर चिउ वालुक, अघो सप्तमी एक॥ हिवै नवम विकल्पे ४ भांगा कहै छै—
- ७७. अथवा त्रिण सक्कर वे वालुक, एक पंक में पेख। जावत त्रिण सक्कर वे वालुक, अधो सप्तमी एक ॥ हिवै दगम विकल्पे ४ भागा कहै छै—
- ७८. अथवा चिउं सक्कर इक वालुक, एक पंक में पेख। जावत चिउ सक्कर इक वालुक, अधो सप्तमी एक ॥ ए सक्कर वालुक थी ४ भागा दश विकल्प करि ४० भागा कह्या। हिवै सक्कर पक थी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—
- ७६. अथवा इक सक्कर इक पंके, च्यार धूम उपजत। जावत इक सक्कर इक पंके, चिउं सप्तमी हुंत॥
- जावत इक सक्कर वे पंके, तीन धृम रै मांय।
   जावत इक सक्कर वे पके, त्रिण सप्तमी जाय।
- ५१. अथवा वे सक्कर इक पंके, तीन धूम अघखान। जावत वे सक्कर इक पंके, तीन सप्तमी जान॥
- ५२. अथवा इक सक्कर त्रिण पंके, दोय धूम दुखरास। जावत इक सक्कर त्रिण पंके, दोय सप्तमी तास।।
- ५३. अथवा वे सक्कर वे पके, दोय धूम दुखधाम। जावत वे सक्कर वे पंके, दोय सप्तमी पाम।।
- प्तरः अथवा त्रिण सक्कर इक पके, दोय धूम मे पेख। जावत त्रिण सक्कर इक पके, दोय सप्तमी देख।।
- ५५. अथवा इक सक्कर चिउं पके, एक धूम अवलोय। जावत इक सक्कर चिउ पके, एक सप्तमी होय।।
- द्द. अथवा वे सक्कर त्रिण पके, एक धूम दुख पाय। जावत वे सक्कर त्रिण पके, एक सप्तमी जाय।।

- द७. अथवा त्रिण सक्कर वे पके, एक धूम कहिवाय। जावत त्रिण सक्कर वे पंके, एक सप्तमी पाय।।
- दित. अथवा चिउं सक्कर इक पके, एक धूम पहिछान। जावत चिउ सक्कर इक पंके, एक सप्तमी जान॥ ए सक्कर पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा कह्या। हिवै सक्कर धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कहै छै—
- प्रश्. अथवा इक सक्कर इक धूमा, च्यार तमा उपजत। अथवा इक सक्कर इक धूमा, च्यार तमतमा हुत।।
- ६०. अथवा इक सक्कर वे धूमा, तीन तमा रै मांय। अथवा इक सक्कर वे धूमा, तीन तमतमा जाय।।
- ६१ अथवा वे सक्कर इक धूमा, तीन तमा अघखान। अथवा वे सक्कर इक धूमा, तोन तमतमा जान।।
- ६२. अथवा इक सक्कर त्रिण धूमा, दोय तमा दुखपूर। अथवा इक सक्कर त्रिण धूमा, दोय तमतमा भूर।।
- ६३. अथवा वे सक्कर वे धूमा, दोय तमा पहिछान। अथवा वे सक्कर वे धूमा, दोय तमतमा जान।।
- ६४. अथवा त्रिण सक्कर इक धूमा, दोय तमा दुखरास। अथवा त्रिण सक्कर इक धूमा, दोय तमतमा तास।।
- ६५. अथवा इक सक्कर चिउ धूमा, एक तमा अवलोय। अथवा इक सक्कर चिउं धूमा, एक तमतमा होय।।
- ६६. अथवा वे सक्कर त्रिण धूमा, एक तमा दुखधाम। अथवा वे सक्कर त्रिण धूमा, एक तमतमा पाम।।
- ६७. अथवा त्रिण सक्कर वे धूमा, एक तमा कहिवाय। अथवा त्रिण सक्कर वे धूमा, एक सप्तमी जाय॥
- ६८. अथवा चिउं सक्कर इक धूमा, एक तमा रै माय। अथवा चिउं सक्कर इक धूमा, एक सप्तमी थाय।। ए मक्कर धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कहा। हिवै सक्कर तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कहै छै—
- ६६. अथवा इक सक्कर इक तमा, च्यार तमतमा जंत। अथवा इक सक्कर वे तमा, तीन तमतमा हुंत॥
- १०० अथवा वे सक्कर इक तमा, तीन तमतमा माय। अथवा इक सक्कर त्रिण तमा, दोय तमतमा ताय।।
- १०१. अथवा व सक्कर वे तमा, दोय तमतमा मांय। अथवा त्रिण सक्कर एक तमा, दोय तमतमा जाय।।
- १०२. अथवा इक सक्कर चिउ तमा, एक तमतमा देख। अथवा वे सक्कर त्रिण तमा, एक तमतमा पेख।
- १०३. अथवा त्रिण सक्कर वे तमा, एक तमतमा होय। अथवा चिउ सक्कर इक तमा, एक तमतमा जोय।।

ए सक्कर तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या। एव सक्कर थी १० भागा दश विकल्प करि १०० भागा कह्या। हिनै वालुक थी ६ भागा, ते किसा ? वालु पक थी ३, वालु धूम थी २, वालु तम थी १—एवं वालु थी ६, ते दश विकल्प करि ६० भांगा हुवै, तिहां वालु पंक थी ३ भांगा दश विकल्प करि कहै छै—

१०४. अथवा इक वालुक इक पंके, च्यार धूम उपजंत। जावत इक वालू पंके इक, च्यार तमतमा हुंत।। १०५. अथवा इक वालू वे पके, तीन धूम रै मांय। जावत इक वालूं पंके वे, तीन तमतमा पाय।। १०६. अथवा वे वालुक इक पंके, तीन धूम अघखान। जावत वे वालू पके इक, तीन तमतमा जान।। १०७. अथवा इक वालुक त्रिण पंके, दोय धूम दुखपूर। जावत इक वालू पंके त्रिण, दोय तमतमा भूर।। १०८. अथवा वे वालुक वे पंके, दोय धूम पहिछान। जावत वे वालू पके वे, दोय तमतमा जान।। १०६. अथवा त्रिण वालुक इक पके, दोय धूम दुखरास। जावत त्रिण वालू पंके इक, दोय तमतमा तास ॥ ११०. अथवा इक वालुक चिउं पके, एक धूम अवलोय। जावत इक वालू पंके चिछं, एक तमतमा होय॥ १११. अथवा वे वालू पके त्रिण, एक धूम दुखधाम। जावत वे वालू पके त्रिण, एक तमतमा पाम।। ११२. अथवा त्रिण वालुक वे पंके, एक धूम कहिवाय। जावत त्रिण वालू पके बे, एक सप्तमी जाय।। ११३. अथवा चिउं वालुक इक पंके, एक धूम में पेख। जावत चिउ वालू पके इक, एक सप्तमी लेख।। ए वालु पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा कह्या। हिवै वालुक धूम थी २ भागा दण विकल्प करि कहै छै-

११४. अथवा इक वालू इक धूमा, च्यार तमा उपजंत।
अथवा इक वालुक इक धूमा, च्यार तमतमा हुंत।।
११५ अथवा इक वालुक वे धूमा, तीन तमा दुख पाय।
अथवा इक वालुक वे धूमा, तीन तमतमा जाय।।
११६. अथवा वे वालुक इक धूमा, तीन तमा अघखान।
अथवा वे वालुक इक धूमा, तीन तमतमा जान।।
११७. अथवा इक वालू त्रिण धूमा, दोय तमा दुखपूर।
अथवा इक वालु त्रिण धूमा, दोय तमतमा भूर।।

११८. अथवा वे वालुक वे घूमा, दोय तमा पहिछान। अथवा वे वालुक वे घूमा, दोय तमतमा जान।।

११६. अथवा त्रिण वालू इक घूमा, दोय तमा दुखरास । अथवा त्रिण वालू इक घूमा, दोय तमतमा तास ॥

१२०. अथवा इक वालुंक चिउं धूमा, एक तमा अवलोय। अथवा इक वालुंक चिउं धूमा, एक तमतमा होय।।

१२१. अथवा वे वालुक त्रिण धूमा, एक तमा दुखधाम। अथवा वे वालु त्रिण धूमा, एक तमतमा पाम।। १२२. अथवा त्रिण वालुक वे धूमा, एक तमा कहिवाय ।
अथवा त्रिण वालुक वे धूमा, एक सप्तमी जाय ॥
१२३. अथवा चिउं वालुक इक धूमा, एक तमा मे पेख ।
अथवा चिउं वालुक इक धूमा, एक सप्तमी लेख ॥
ए वालु धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कहा।
हिवं वालुक तम थी १ भांगो दश विकल्प करि १० भागा कहै छै—

१२४. अथवा इक वालुक इक तमा, च्यार तमतमा जत।
अथवा इक वालू वे तमा, तीन तमतमा हुंत।।
१२५. अथवा वे वालु इक तमा, तीन तमतमा मांय।
अथवा इक वालू त्रिण तमा, दोय तमतमा पाय।।
१२६. अथवा वे वालू वे तमा, दोय तमतमा मांय।
अथवा त्रिण वालू इक तमा, दोय तमतमा जाय।।
१२७. अथवा इक वालू चिउं तमा, एक तमतमा जोय।
अथवा वे वालू त्रिण तमा, एक तमतमा जोय।
१२८. अथवा त्रिण वलू वे तमा, एक तमतमा पेख।
अथवा चिहुं वालू इक तमा, एक सप्तमी लेख।।

ए वालु तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या। एव वालुक थी ६ भागा दश विकल्प करि ६० भागा कह्या।

हिवै पक थी ३ भागा, ते किसा ? पंक धूम थी २, पक तम थी १, तिहा पक धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कहै छै---

१२६. अथवा एक पंक इक धूमा, च्यार तमा उपजंत। अथवा एक पक इक धूमा, च्यार तमतमा हुत ॥ १३०. अथवा एक पक वे धूमा, तीन तमा दुख पाय। अथवा एक पंक वे धूमा, तीन तमतमा जाय।। १३१. अथवा दोय पंक इक धूमा, तीन तमा अवलोय। अथवा दोय पक इक घूमा, तीन तमतमा जोय।। १३२. अथवा एक पंक त्रिण धूमा, दोय तमा दुखरास। अथवा एक पंक त्रिण धूमा, दोय तमतमा तास ॥ १३३. अथवा दोय पंक वे धूमा, दोय तमा दुखधाम। अथवा दोय पंक वे धूमा, दोय तमतमा पाम ॥ १३४. अथवा त्रिण पके इक घूमा, दोय तमा दुखरास। अथवा त्रिण पके इक धूमा, दोय तमतमा तास ॥ १३५. अथवा एक पंक चिउं घूमा, एक तमा पहिछान। अथवा एक पंक चिउं धूमा, एक तमतमा जान ॥ १३६. अथवा दोय पंक त्रिण धूमा, एक तमा मे पेख। अथवा दोय पक त्रिण धूमा, एक तमतमा लेख ।। १३७. अथवा तीन पक वे धूमा, एक तमा कहिवाय। अथवा तीन पक वे घूमा, एक सप्तमी जाय।। १३८. अथवा च्यार पक इक धूमा, एक तमा अधखान। अथवा च्यार पक इक धूमा, एक तमतमा जान ॥

ए पक घूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कह्या।

हिवै पंक तम थी १ भांगो दण विकल्प करि १० भागा कहै छै-

१३६. अथवा एक पंक इक तमा, च्यार तमतमा जंत। अथवा एक पंक वे तमा, तीन तमतमा हूंत॥ १४०. अथवा दोय पंक इक तमा, तीन तमतमा माय। अथवा एक पंक त्रिण तमा, दोय तमतमा जाय ॥ १४१. अथवा दोय पंक वे तमा, दोय तमतमा देख। अथवा तीन पंक इक तमा, दोय तमतमा पेख।। १४२. अथवा एक पंक चिउं तमा, एक तमतमा देख। अथवा दोय पक त्रिण तमा, एक तमतमा पेख ॥ १४३ अथवा तीन पक वे तमा, एक तमतमा पाय। अथवा च्यार पक इक तमा, ्एक तमतमा जाय ॥ ए पक तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या। ए पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा कह्या। हिवै घूम थी १ भागो दण विकल्प करि १० भागा कहै छै-

१४४. अथवा एक धूम इक तमा, च्यार तमतमा हुत। अथवा एक धूम वे तमा, तीन तमतमा जंत।।
१४५. अथवा दोय धूम इक तमा, तीन तमतमा देख।
अथवा एक धूम त्रिण तमा, दोय तमतमा पेख।।
१४६. अथवा दोय धूम वे तमा, दोय तमतमा जान।
अथवा तीन धूम इक तमा, दोय तमतमा मान।।
१४७. अथवा एक धूम चिउं तमा, एक तमतमा देख।
अथवा दोय धूम त्रिण तमा, एक तमतमा देख।
१४८. अथवा तीन धूम इक तमा, दोय तमतमा होय।
अथवा च्यार धूम इक तमा, एक तमतमा होय।

ए घूम थी दम विकल्प किर १० भागा कह्या। एव रत्न थी १५०, सक्कर थी १००, वालुक थी ६०, पंक थी ३०, घूम थी १० मर्व त्रिकसंजोगिया छह जीव नां ३५० भागा जाणवा।

छह जीव नां त्रिकसंजोगिया रतन थी १४, मनकर थी १०, वालुक थी ६, पंक थी ३, धूम थी १—एवं ३४, दण विकरप किर ३४० भागा कह्या। तिहा रतन थी १४ ते किमा १ रतन मनकर थी ४, रतन वालुक थी ४, रतन पक थी ३, रतन धूम थी २, रतन तम थी १—एवं १४ भागा, दण विकरप किरके १५० भागा रनन थी हुवे। तिहां रतन मकर थी ४ भागा प्रथम विकरप किर कहे छै—

१	१	१ रत्न, १ सक्कर, ४ बालु
२	ર	१ रत्न, १ सक्कर, ४ पंक
a,	ą	१ रत्न, १ सक्कर, ४ धूम
૪	४	१ रतन, १ सक्कर, ४ तम
ય	ų,	१ रतन, १ सक्कर, ४ सप्तमी

रत्न	सक्कर	थी ५ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै—
Ę	8	१ रत्न, २ सक्कर, ३ वालु
	1	
9	₹	१ रत्न, २ सक्कर, ३ पंक
5	₹	१ रत्न, २ सक्कर, ३ धूम
3	४	१ रत्न, २ सक्कर, ३ तम
१०	ય	१ रतन, २ सक्कर, ३ सप्तमी
रत्न	सक्कर	थी ५ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै
११	१	२ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु
१२	२	२ रत्न, १ सक्कर, ३ पक
१३	n	२ रत्न, १ सक्कर, ३ धूम
१४	४	२ रत्न, १ सक्कर, ३ तम
१५	પ્ર	२ रत्न, १ सक्कर, ३ सप्तमी
हिव	रत्न स	पक्कर थी ५ भागा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—
१६	१	१ रत्न, ३ सक्कर २ वालु
१७	२	१ रत्न, ३ सक्कर, २ पक
१८	₹	१ रत्न, ३ सक्कर, २ धूम
38	8	१ रत्न, ३ सक्कर, २ तम
२०	¥	१ रत्न, ३ सक्कर, २ सप्तमी
हिं	मै रहन स	तुक्कर थी ५ भागा पचम वि्कल्प करि कहै छै—
२१	१	२ रत्न, २ सक्कर, २ वालु
२२	२	२ रत्न, २ सक्कर, २ पक
२३	3	२ रत्न, २ सक्कर, २ धूम
२४	8	२ रत्न, २ सनकर, २ तम
२५	પ્ર	२ रत्न, २ सक्कर, २ सप्तमी

ਫਿਰੈ	रत्त र	ाक्कर थी <b>५ भां</b> गा छठै विकल्प करि कहै छै—
२६	१	३ रत्न, १ सक्कर, २ वालु
२७	२	३ रत्न, १ सक्कर, २ पक
२८	ą	३ रत्न, १ सक्कर, २ घूम
२६	४	३ रत्न, १ सक्कर, २ तम
३०	પ્ર	३ रत्न, १ सक्कर, २ सप्तमी
हिवै	रत्न स	नक्कर थी ५ भागा सप्तम विकल्प करि कहै छै—
३१	१	१ रत्न, ४ सक्कर, १ वालु
<b>३</b> २	२	१ रत्न, ४ सक्कर, १ पंक
३३	ą	१ रत्न, ४ सक्कर, १ धूम
३४	४	१ रत्न, ४ सक्कर, १ तम
३५	પ્ર	१ रत्न, ४ सक्कर, १ सप्तमी
- हिवै	रत्न स	निकर थी ५ भागा अप्टम विकल्प करि कहै छै—
३६	१	२ रत्न, ३ सक्कर, १ वालु
३७	२	२ रत्न, ३ सक्कर, १ पक
₹≒्	Ą	२ रत्न, ३ सक्कर, १ घूम -
38	٤	२ - रत्न, - ३ सक्कर, १ तम
80	. ሂ.	२ रत्न, ३ सक्कर,१-सप्तमी
. हिवै	रत्न स	वकर थी ५ भागा नवम विकल्प करि कहै छै
ू४	१	३ रत्न, २ सक्कर, १ वालु
४२	२	३ रत्न, २ सक्कर, १ पक
४३	3	३ रत्न, २ सक्कर, १ धूम
88	8	३ रत्न, २ सक्कर, ृ१ तम
४५	४	३ रत्न, २ सक्कर, १ सप्तमी

हिवै	रत्न स	क्तर थी ५ भागा दशम विकल्प करि कहै छै—
४६	१	४ रत्न, १ सक्कर, १ वालु
४७	२	४ रत्न, १ सक्कर, १ पक
४८	ą	४ रत्न, १ सक्कर, १ घूम
38	४	४ रत्न, १ सक्कर, १ तम
५०	પ્ર	४ रत्न, १ सक्कर, १ सप्तमी
रत्त स	ाक्कर <i>भ</i>	शी ५ भागा ते दश विकल्प करि ५० भागा कह्या ।
	_	ालुक थी ४ भागा, ते दश विकत्य करि ४० भागा हा रता वालुक थी ४ भागा प्रथन विकत्य करि कहै छै—
ধং	१	१ रत्न, १ बालु, ४ पक
५२	२	१ रहन, १ वालु, ४ धूम
५३	ą	१ रत्न, १ वालु, ४ तम
४४	४	१ रत्न, १ वालु, ४ सप्तमी
हिवै	रत्व व	बालुक थी ४ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै <del>छै</del> —
<u> </u>	१	१ रत्न, २ वालु, ३ पक
५६	२	१ रत्न, २ बालु, ३ धूम
<u> </u>	3	१ रत्न, २ वालु, ३ तम
४८	४	१ रत्न, २ वालु, ३ सप्तमी
िह 	इवै रत्न	वालुक थी ४ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै —
પ્રદ	8	२ रत्न, १ वालु, ३ पक
६०	२	२ रत्न, १ वालु, ३ धूम
६१	3	२ रत्न, १ वालु, ३ तम
६२	४	२ रत्न, १ वालु, ३ सप्तमी

हिबै रता वालुक थी ४ भागा चतुर्थ विकल्प किर कहै छै—  ६३ १ १ रत्न, ३ वालु, २ पक  ६४ २ १ रत्न, ३ वालु, २ प्रम  ६५ ३ १ रत्न, ३ वालु, २ प्रम  ६६ ४ १ रत्न, ३ वालु, २ मप्तभी  हिबै रत्न वालुक थी ४ भागा पचम विकल्प किर कहै छै—  ६७ १ २ रत्न, २ वालु, २ प्रम  ६६ ३ २ रत्न, २ वालु, २ प्रम  ६६ ३ २ रत्न, २ वालु, २ प्रम  ६६ ३ २ रत्न, २ वालु, २ त्म  ७० ४ २ रत्न, २ वालु, २ त्म  ७० ४ १ रत्न, १ वालु, २ त्म  ७२ १ ३ रत्न, १ वालु, २ प्रम  ७२ २ ३ रत्न, १ वालु, २ प्रम  ७२ २ ३ रत्न, १ वालु, २ प्रम  ७२ २ १ रत्न, १ वालु, २ त्म  ७४ ४ ३ रत्न, १ वालु, २ त्म  ७४ १ १ रत्न, ४ वालु, १ त्म  ७६ २ १ रत्न, ४ वालु, १ त्म  ७६ २ १ रत्न, ४ वालु, १ त्म  ७६ २ १ रत्न, ४ वालु, १ त्म  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ त्म  ६६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ त्म  ६० २ २ रत्न, ३ वालु, १ तम  ६२ ४ २ रत्न, ३ वालु, १ तम			
६४       २       १ रत्त, ३ वालु, २ सम         ६५       ३       १ रत्त, ३ वालु, २ तम         ६६       ४       १ रत्त, ३ वालु, २ मप्तभी         िहर्व रत्त वालुक थी ४ भागा पचम विकत्त करि कहै छै—         ६०       १       २ रत्त, २ वालु, २ प्रम         ६०       ३       २ रत्त, २ वालु, २ प्रम         ७०       ४       २ रत्त, २ वालु, २ तम         ७०       १       २ रत्त, १ वालु, २ पंक         ७२       २       ३ रत्त, १ वालु, २ प्रम         ७२       २       ३ रत्त, १ वालु, २ तम         ७४       ३       ३ रत्त, १ वालु, २ तम         ७४       ३       ३ रत्त, १ वालु, २ सप्तमी         हिव रत्त वालुक थी ४ भागा सप्तम विकत्प करि कहै छै—         ७५       १       १ रत्त, ४ वालु, १ प्रम         ७५       १       १ रत्त, ४ वालु, १ प्रम         ७५       १       १ रत्त, ४ वालु, १ स्रम         ७६       १       १ रत्त, ३ वालु, १ पक         ७६       १       २ रत्त, ३ वालु, १ पक         ०६       १       २ रत्त, ३ वालु, १ सम         ००       २       २ रत्त, ३ वालु, १ सम         ००       २       २ रत्त, ३ वालु, १ तम	हिवै	रहा	ाालुक थी ४ भागा चतुर्थं विकल्प करि कहै छै—
६६ ४ १ रत्न, ३ वालु, २ तम  ६६ ४ १ रत्न, ३ वालु, २ मप्तभी  हिबै रत्न वालुक थी ४ भागा पचम विकत्न किर कहै छै—  ६७ १ २ रत्न, २ वालु, २ घूम  ६६ ३ २ रत्न, २ वालु, २ घूम  ७० ४ २ रत्न, २ वालु, २ तम  ७० ४ २ रत्न, २ वालु, २ तम  ७० ४ १ रत्न, १ वालु, २ तम  ७० १ ३ रत्न, १ वालु, २ र्मक  ७२ २ ३ रत्न, १ वालु, २ प्रक  ७२ २ ३ रत्न, १ वालु, २ घूम  ७३ ३ ३ रत्न, १ वालु, २ तम  ७४ ४ ३ रत्न, १ वालु, २ तम  ७४ ४ १ रत्न, १ वालु, २ तम  ७४ १ १ रत्न, ४ वालु, १ पक  ७६ २ १ रत्न, ४ वालु, १ पक  ७६ २ १ रत्न, ४ वालु, १ तम  ७६ १ १ रत्न, ४ वालु, १ तम  ७६ १ १ रत्न, ४ वालु, १ तम  ७६ १ १ रत्न, ३ वालु, १ सत्तमी  हिबै रत्न वालुक थी ४ भागा अण्टम विकत्प किर कहै छै—  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ स्म	६३	१	१ रत्न, ३ वालु, २ पक
हिर्व रत्त वालुक थी ४ भागा पचम विकल्प किर कहै छै—  ६७ १ २ रत्न, २ वालु, २ पक  ६८ ३ २ रत्न, २ वालु, २ घूम  ६८ ३ २ रत्न, २ वालु, २ तम  ७० ४ २ रत्न, २ वालु, २ तम  ७० ४ १ रत्न, २ वालु, २ तम  ७० ४ १ ३ रत्न, १ वालु, २ पंक  ७२ २ ३ रत्न, १ वालु, २ पंक  ७२ २ ३ रत्न, १ वालु, २ प्रम  ७३ ३ ३ रत्न, १ वालु, २ घूम  ७३ ३ ३ रत्न, १ वालु, २ तम  ७४ ४ ३ रत्न, १ वालु, २ तम  ७४ १ १ रत्न, ४ वालु, २ सप्तमी  हिर्व रत्न वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै—  ७५ १ १ रत्न, ४ वालु, १ धूम  ७७ ३ १ रत्न, ४ वालु, १ धूम  ७७ ३ १ रत्न, ४ वालु, १ सतम  ७६ २ १ रत्न, ४ वालु, १ सतम  ७६ १ २ रत्न, ४ वालु, १ सतम  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ सतम  ०६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक  ०६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक	६४	२	१ रत्न, ३ वालु, २ घूम
हिन रहत बालुक थी ४ भागा पत्रम विकल्प किर कहै छै—  ६७ १ २ रहत, २ बालु, २ घूम  ६६ ३ २ रहत, २ बालु, २ सम्तनी  हिन्न रहत बालुक थी ४ भागा पट्ट विकल्प किर कहै छै—  ७१ १ ३ रहत, १ बालु, २ पक  ७२ २ ३ रहत, १ बालु, २ पक  ७२ २ ३ रहत, १ बालु, २ घूम  ७३ ३ ३ रहत, १ बालु, २ घूम  ७३ ३ ३ रहत, १ बालु, २ सप्तमी  हिन्न रहत बालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै—  ७४ १ १ रहत, ४ बालु, १ पक  ७६ २ १ रहत, ४ बालु, १ घूम  ७७ ३ १ रहत, ४ बालु, १ घूम  ७७ ३ १ रहत, ४ बालु, १ सातमी  हिन्न रहत बालुक थी ४ भागा अण्डम विकल्प किर कहै छै—  ७६ १ २ रहत, ४ बालु, १ सातमी  हिन्न रहत बालुक थी ४ भागा अण्डम विकल्प किर कहै छै—  ७६ १ २ रहत, ३ बालु, १ पक  ५० १ २ रहत, ३ बालु, १ पक	६५	nv-	१ रत्न, ३ वालु, २ तम
६७       १       २ रत्त, २ वालु, २ प्रम         ६६       ३       २ रत्त, २ वालु, २ तम         ७०       ४       २ रत्त, २ वालु, २ तप्तनी         िहर्व रत्त वालुक थी ४ भागा पट्ट विकल्प किर कहै छै—         ७१       १       ३ रत्त, १ वालु, २ पंक         ७२       २       ३ रत्त, १ वालु, २ प्रम         ७३       ३       ३ रत्त, १ वालु, २ सप्तमी         हिर्व रत्त वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै—         ७५       १       १ रत्त, ४ वालु, १ पक         ७६       २       १ रत्त, ४ वालु, १ स्म         ७०       ३       १ रत्त, ४ वालु, १ सातमी         हिर्व रत्त वालुक थी ४ भागा अण्टम विकल्प किर कहै छै—         ७६       १       २ रत्त, ३ वालु, १ पक         ७६       १       २ रत्त, ३ वालु, १ पक         ५       २ रत्त, ३ वालु, १ पक         ५       २ रत्त, ३ वालु, १ स्म         ५       २ रत्त, ३ वालु, १ स्म         ५       २ रत्त, ३ वालु, १ स्म         १       २ रत्त, ३ वालु, १ स्म	६६	४	१ रत्न, ३ वालु, २ सप्तभी
६६       २       २       रत्त, २ बालु, २ धूम         ७०       ४       २       रत्त, २ बालु, २ तम         ७०       ४       २       रत्त, २ बालु, २ सप्तनी         हिवै       रत्त वालुक थी ४ भागा पट्ठ विकल्प किर कहै छै—         ७२       २       ३       रत्त, १ बालु, २ धूम         ७३       ३       २       रत्त, १ बालु, २ सप्तमी         हिवै       रत्त वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै—         ७५       १       १       रत्त, ४ बालु, १ पक         ७६       २       १ रत्त, ४ बालु, १ सातमी         हिवै       रत्त वालुक थी ४ भागा अण्डम विकल्प किर कहै छै—         ७६       १       २ रत्त, ३ बालु, १ पक         ७६       १       २ रत्त, ३ बालु, १ सूम         ५       २ रत्त, ३ बालु, १ सूम         ५       २ रत्त, ३ बालु, १ तम	हिर्व	रता व	बालुक थी ४ भागा पचम विकल्प करि कहै छै
६६       ३       २ रत्त, २ वालु, २ तम         ७०       ४       २ रत्त, २ वालु, २ सप्तनी         हिर्व रत्त वालुक थी ४ भांगा पष्ठ विकल्प किर कहै छै—         ७१       १       ३ रत्त, १ वालु, २ पंक         ७२       २       ३ रत्त, १ वालु, २ धूम         ७३       ३       ३ रत्त, १ वालु, २ तम         ७४       ४       ३ रत्त, १ वालु, २ सप्तमी         हिर्व रत्त वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै—         ७६       २       १ रत्त, ४ वालु, १ धूम         ७५       ३       १ रत्त, ४ वालु, १ सातमी         हिर्व रत्न वालुक थी ४ भागा अष्टम विकल्प किर कहै छै—         ७६       १       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ७६       १       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ५       २ रत्न, ३ वालु, १ सम         ५       २ रत्न, ३ वालु, १ सम         ५       २ रत्न, ३ वालु, १ तम	६७	१	२ रत्न, २ वालु, २ पक
७०       ४       २       रतन, २       वालु, २       सप्तनी         हिर्व रत्न वालुक थी ४ भागा पण्ठ विकल्प किर कहै छै—         ७१       १       ३       रत्न, १       वालु, २       प्रम         ७२       २       ३       रत्न, १       वालु, २       त्पन         ७४       ४       ३       रत्न, १       वालु, २       तपन         ७४       १       १       रत्न, ४       वालु, २       पक         ७६       २       १       रत्न, ४       वालु, १       प्रम         ७५       ३       १       रत्न, ४       वालु, १       प्रम         ७६       ३       १       रत्न, ४       वालु, १       प्रम         ७६       १       २       रत्न, ३       वालु, १       पक         ७६       १       २       रत्न, ३       वालु, १       पक         ७६       १       २       रत्न, ३       वालु, १       पक         ०६       २	६८	२	२ रत्न, २ वालु, २ घूम
हिबै रत्न वालुक थी ४ भागा पष्ठ विकल्प किर कहै छै—  ७१ १ ३ रत्न, १ वालु, २ पंक  ७२ २ ३ रत्न, १ वालु, २ घूम  ७३ ३ ३ रत्न, १ वालु, २ तम  ७४ ४ ३ रत्न, १ वालु, २ सप्तमी  हिबै रत्न वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै—  ७५ १ १ रत्न, ४ वालु, १ घूम  ७७ ३ १ रत्न, ४ वालु, १ घूम  ७७ ३ १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी  हिबै रत्न वालुक थी ४ भागा अष्टम विकल्प किर कहै छै—  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ सातमी  हिबै रत्न वालुक थी ४ भागा अष्टम विकल्प किर कहै छै—  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक  ८० २ २ रत्न, ३ वालु, १ घूम  ८१ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ घूम	ફ ફ	ą	२ रत्न, २ वालु, २ तम
७१       १       ३ रत्न, १ वालु, २ पंक         ७२       २       ३ रत्न, १ वालु, २ धूम         ७४       ४       ३ रत्न, १ वालु, २ तम         ७४       ४       ३ रत्न, १ वालु, २ सप्तमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै—         ७५       १       १ रत्न, ४ वालु, १ पक         ७६       २       १ रत्न, ४ वालु, १ धूम         ७०       ३       १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अण्टम विकल्प किर कहै छै—         ७६       १       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ००       २       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ००       २       २ रत्न, ३ वालु, १ सम         ००       २       २ रत्न, ३ वालु, १ सम         ००       २       २ रत्न, ३ वालु, १ तम	৩০	8	२ रत्न, २ वालु, २ सप्तनी
७२       २       ३ रत्न, १ वालु, २ धूम         ७३       ३       ३ रत्न, १ वालु, २ तम         ७४       ४       ३ रत्न, १ वालु, २ सप्तमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प करि कहै छै—         ७५       १       १ रत्न, ४ वालु, १ पक         ७६       २       १ रत्न, ४ वालु, १ धूम         ७७       ३       १ रत्न, ४ वालु, १ तम         ७६       १       २ रत्न, ३ वालु, १ सातमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अष्टन विकल्प कि कहै छै—         ७६       १       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ६०       २       २ रत्न, ३ वालु, १ धूम         ६१       ३       २ रत्न, ३ वालु, १ तम	हिवै	रत्न व	ालुक थी ४ भांगा पष्ठ विकल्प करि कहै छै—
७३       ३       २ रत्न, १ वालु, २ तम         ७४       ४       ३ रत्न, १ वालु, २ सप्तमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै—         ७५       १       १ रत्न, ४ वालु, १ पक         ७६       २       १ रत्न, ४ वालु, १ धूम         ७७       ३       १ रत्न, ४ वालु, १ तम         ७६       ४       १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अण्टम विकल्प किर कहै छै—         ७६       १       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ५       २ रत्न, ३ वालु, १ धूम         ५       २ रत्न, ३ वालु, १ तम	७१	१	३ रत्न, १ वालु, २ पंक
७४       ४       ३ रत्न, १ वालु, २ सप्तमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै—         ७५       १ रत्न, ४ वालु, १ पक         ७६       २ १ रत्न, ४ वालु, १ धूम         ७७       ३ १ रत्न, ४ वालु, १ तम         ७६       ४ १ रत्न, ४ वालु, १ तम         ७६       ४ १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अष्टम विकल्प किर कहै छै—         ७६       १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ६०       २ २ रत्न, ३ वालु, १ धूम         ६१       ३ २ रत्न, ३ वालु, १ तम	७२	२	३ रत्न, १ वालु, २ धूम
हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प किर कहै छै— ७५ १ रत्न, ४ वालु, १ पक  ७६ २ १ रत्न, ४ वालु, १ धूम  ७७ ३ १ रत्न, ४ वालु, १ तम  ७६ ४ १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी  हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अष्टम विकल्प किर कहै छै—  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक  ६० २ २ रत्न, ३ वालु, १ धूम  ६१ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ तम	७३	ą	३ रत्न, १ वालु, २ तम
७५       २       १ रत्न, ४ वालु, १ धूम         ७७       ३       १ रत्न, ४ वालु, १ तम         ७५       ४       १ रत्न, ४ वालु, १ तम         ७६       ४       १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी         ६वै रत्न वालुक थी ४ भागा अप्टम विकल्प कारि कहै छै—         ७६       १       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ६०       २       २ रत्न, ३ वालु, १ धूम         ६१       ३       २ रत्न, ३ वालु, १ तम	७४	٧	३ रत्न, १ वालु, २ सप्तमी
७६       २       १ रत्न, ४ वालु, १ घूम         ७७       ३       १ रत्न, ४ वालु, १ तम         ७८       ४       १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अप्टम विकल्प करि कहै छै—         ७६       १       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ८०       २       २ रत्न, ३ वालु, १ धूम         ८१       ३       २ रत्न, ३ वालु, १ तम	हिवं	रत्न व	तालुक थी ४ भागा सप्तम विकल्प करि कहै <del>छै—</del>
७७       ३       १ रत्न, ४ वालु, १ तम         ७८       ४       १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी         हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अप्टम विकल्प कारि कहै छै—         ७६       १       २ रत्न, ३ वालु, १ पक         ८०       २       २ रत्न, ३ वालु, १ धूम         ८१       ३       २ रत्न, ३ वालु, १ तम	७५	१	१ रत्न , ४ वालु, १ पक
७ ४ १ रत्न, ४ वालु, १ सातमी  हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अष्टम विकल्प किर कहै छै—  ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक  ८० २ २ रत्न, ३ वालु, १ धूम  ८१ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ तम	७६	२	१ रत्न, ४ वालु, १ घूम
हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा अष्टम विकल्प किर कहै छै— ७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक ६० २ २ रत्न, ३ वालु, १ धूम ६१ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ तम	৩৩	ą	१ रत्न, ४ वालु, १ तम
७६ १ २ रत्न, ३ वालु, १ पक ८० २ २ रत्न, ३ वालु, १ घूम ८१ ३ २ रत्न, ३ वालु, १ तम	৩5	8	१ रत्न, ४ बालु, १ सातमी
50     २     २     रतन, ३ वालु, १ धूम       51     २     रतन, ३ वालु, १ तम	हिव	रहत व	मालुक थी ४ भागा अष्टम विकल्प करि कहै छैं—
<b>८१ ३ २ र</b> त्न, ३ वालु, १ तम	30	१	२ रत्न, ३ वालु, १ पक
1 1 3 7 1 4	- 50	२	२ रत्न, ३ बालु, १ धूम
प्तर ४ २ रहन, ३ बालु, <b>१</b> सप्तमी	<b>5</b> १	₹	२ रत्न, ३ वालु, १ तम
	द२	४	२ रत्न, ३ वालु, १ सप्तमी

हिवै	रत्न व	ालुक थी ४ भागा नवम विकल्प करि कहै छै—
<sub>5</sub> श्	१	३ रत्न, २ वालु, १ पक
58	२	३ रत्न, २ वालु, १ धूम
5X	3	३ रत्न, २ वालु, १ तम
८६	४	३ रत्न, २ वालु, १ सप्तमी
हिन	रे रहर व	वालुक थी ४ भागा दशम विकल्प करि कहै छै—
<b>দ</b> ৬	१	४ रत्न, १ वालु, १ पक
55	२	४ रत्न, १ वालु, १ धूम
58	ą	४ रत्न, १ वालु, १ तम
6٥	४	४ रत्न, १ वालु, १ सप्तमी
रतन	ापक र्थ	तुक थी ४ भागा, ते दश विकल्प करि ४० भागा कह्या। ो ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा। हिवै ो ३ भागा प्रथम विकल्य करि कहै छै—
६१	१	१ रत्न, १ पक, ४ घूम
६२	२	१ रत्न, १ पक, ४ तम
€₹	ą	१ रत्न, १ पक, ४ सप्तमी
हि	वै रता	पक थी ३ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छैं—
६४	8	१ रता, २ पक, ३ धूम
£X	2	१ रत्न, २ पक, ३ तम
६६	३	१ रत्न, २ पक, ३ सप्तमी
हिं	ने रत्न ।	एक थी ३ भागा तृतीय विकल्प करि कहै <b>छै</b> —
७३	\$	२ रत्न, १ पक, ३ धूम
१ ५	2	२ रत्न, १ पक, ३ तम
33	₹	२ रत्न, १ पक, ३ सप्तमी

हिर्व	रे रत्न	पंक थी ३ भागा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—
१००	8	१ रत्न, ३ पक, २ धूम
१०१	7	१ रत्न, ३ पक, २ तम
१०२	3	१ रत्न, ३ पक, २ सप्तमी
हिवै	रत्न प	पक थी ३ भागा पचम विकल्प करि कहै छैं—
१०३	१	२ रत्न, २ पक, २ धूम
१०४	२	२ रत्न, २ पक, २ तम
१०५	æ	२ रत्न, २ पक, २ सप्तमी
हिंवै	रत्न प	ांक थी ३ भागा पष्ठ विकल्प करि कहै छै —
१०६	१	३ रत्न, १ पक, २ धूम
१०७	२	३ रत्न, १ पक, २ तम
१०५	ş	३ रत्न, १ पक, २ सप्तमी
हिवै	रत्न प	ांक थी ३ भागा सप्तम विकल्प करि कहै छै →
१०६	8	१ रत्न, ४ पंक, १ धूम
११०	२	१ रत्न, ४ पक, १ तम
१११	ą	१ रत्न, ४ पक, १ सप्तमी
हिवै	रत्न प	कं थी ३ भागा अष्टम विकल्प करि कहै छै —
११२	8	२ रत्न, ३ पक, १ धूम
११३	२	२ रत्न, ३ पक, १ तम
११४	ą	२ रत्न, ३ पक, १ सप्तमी
हिवै	रत्न प	क थी ३ भागा नवम विकल्प करि कहै छै—
११५	8	३ रत्न, २ पक, १ धूम
११६	२	३ रत्न, २ पंक, १ तम
११७	₹	३ रत्त, २ पक, १ सप्तमी

_		
हिव	रे रत्न प	नक थी ३ भागा दशम विकल्प करि कहै <del>छै -</del>
११८	8	४ रत्न, १ पक, १ धूम
११६	२	४ रहन, १ पक, १ तम
१२०	ą	४ रत्न, १ पंक, १ सप्तमी
हिवै	रत ध	त्थी ३ भागादश विकल्प करि ३० भागाकह्या। पूम थीदण विकल्प करि २० भागा कह्या। ते ल्प करि २ भागाकहै छै—
१२१	१	१ रत्न, १ धूम, ४ तम
१२२	२	१ रत्न, १ धूम, ४ सप्तमी
हिवै	रत्न ध्	ूम थी २ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै
१२३	१	१ रत्न, २ घूम, ३ तम
१२४	२	१ रत्न, २ धूम, ३ मप्तमी
हिवै	रत्न ध्	मिथी २ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै —
१२५	१	२ रत्न, १ धूम, ३ तम
१२६	२	२ रत्न, १ धूम, ३ सप्तमी
हिवै	रत्न घृ	म थी २ भागा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै -
१२७	१	१ रत्न, ३ घूम, २ तम
१२८	٦	१ रत्न, ३ धूम, २ सप्तमी
हिवै	रत्न धृ	्म थी २ भागा पचम विकल्प करि कहै छै —
१२६	१	२ रत्न, २ धूम, २ तम
१३०	२	२ रत्न, २ घूम, २ सप्तमी
हिबै	रता धृ	म थी २ भागा पष्ठ विकल्प करि कहे छै—
१३१	\$	३ रत्न, १ धूम, २ तम
१३२	२	३ रत्न, १ धूम, २ सप्तमी
		The state of the s

-		
हिं	रहतः	घूम थी २ भागा सप्तम विकल्प करि कहै छै –
१३३	<b>१</b>	१ रतन, ४ धूम, १ तम
१३४	२	१ रत्न, ४ घूम, १ सप्तमी
हिं	र्वे रत्न	घूम थी २ भागा अष्टम विकत्प किंग कहै छै —
१३५	1	२ रत्न, ३ धूम, १ तम
१३६	२	२ रत्न, ३ धूम, १ मप्तमी
हिर्द	रहत	घूम थी २ भागा नवम विकल्प करि कहै छै —
१३७	8	३ रत्न, २ धूम, १ तम
१३८	२	३ रत्न, २ धूम, १ सप्तमी
हिवै	रहा	पून थी २ भागा दशम िकताकरिक है ७ –
१३६	१	४ रत्न, १ धूम, १ तम
१४०	२	४ रत्न, १ घूम, १ सप्तभी
ए र हिवै	त्न धूम रत्न त	थी २ भागा १० विकल्प करि २० भांगा कह्या। म थी १ भांगो प्रथम विकल्प करि कहै छै —
१४१	१	१ रत्न, १ तम, ४ सप्तनी
रत्न	तम थी	१ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—
१४२	8	१ रत्न, २ तम, ३ सप्तभी
हिवै	रता तम	म थो १ भांगो तृतीय विकल्न करि कहै छै —
१४३	8	२ रत्न, १ तम, ३ सप्तमी
हिंवै	रत्न तम	न थी १ भागो चतुर्थं विकला करि कहै छै —
१४४	१	१ रत्न, ३ तम, २ सप्तमी
हिबँ	रत्न तम	थी १ भागो पचम विकल्प करि कहे छैं —
१४४	१	२ रतन, २ तम, २ सप्तमी
हिवै २	रत्न तम	थी १ भागो पष्ठ विकल्प करि कहै छै—
४६	8	३ रत्न, १ तम, २ सप्तमी

OVICE O STEET VIEW O HEADY
१४७ १ १ रत्न, ४ तम, १ सप्तमी
हिवै रत्न तम थी १ भागो अप्टम विकल्प करि कहै छै —
१४८ १ २ रत्न, ३ तम, १ सप्तमी
हिवै रत्न तम थी १ भागो नवम विकल्प करि कहै छै —
१४६ १ ३ रत्न, २ तम, १ सप्तभी
हिवै रता तम थी १ भागो दशम विकल्प करि कह छै—
१५० १ ४ रत्न, १ तम, १ सप्तमी
हिवै सक्कर थी १० भागा एक-एक विकल्प ना हुवै ते दश किसा? सक्कर वालु थकी ४, सक्कर पक थकी ३, सक्कर धूम थकी २, सक्कर तम थी १—एव १० भागा, दश विकल्प किर १०० भागा। तिहा सक्कर वालु थी ४ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—
१५१ । १ सक्कर, १ वालु, ४ पक
१५२ २ १ सक्कर, १ वालु, ४ धूम
१५३ ३ १ सक्कर, १ वालु, ४ तम
१५४ ४ १ सक्कर, १ वालु, ४ सप्तमी
हिवै सक्कर वालु थी ४ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै -
१५५ १ १ सक्कर, २ बालु, ३ पक
१५६ २ १ सक्कर, २ वालु, ३ धूम
१५७ ३ १ सक्कर, २ वालु, ३ तम
१५८ ४ १ सक्कर, २ वालु, ३ सप्तमी
हिवै सक्कर वालु थी ४ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै—
१५६ १ २ सक्कर, १ वालु, ३ पक
१६० २ २ सक्कर, १ वालु, ३ धूम
१६१ ३ २ सक्कर, १ वालु, ३ तम
१६२ ४ २ सक्कर, १ वालु, ३ सप्तमी

हिवै	सवकर	वालु थी ४ भागा चतुर्थ विकल्ग करि कहै छै —
१६३	१	१ सक्कर, ३ वालु, २ पंक
१६४	२	१ सक्कर, ३ वालु, २ धूम ′
१६५	ą	१ मक्कर, ३ वालु, २ तम
१६६	४	१ सक्कर, ३ वालु, २ सप्तमी
हिवै	सक्कर	वालु थी ४ भागा पचम विकल्प करि कहै छै -
१६७	१	२ सक्कर, २ वालु, २ पंक
१६८	२	२ सक्कर, २ वालु, २ धूम
१६६	₹	२ सक्कर, २ बालु, २ तम
१७०	४	२ सक्कर, २ वालु, २ सप्तमी
हिवै	मक्कर	वालु थी ४ भागा पष्ठ विकल्प करि कहै छैं —
१७१	१	३ सक्कर, १ वालु, २ पक
१७२	२	३ मक्कर, १ वालु, २ घूम
१७३	₹	३ सक्तर, १ वालु, २ तम
१७४	४	३ सक्कर, १ वे।लु, २ सप्तमी
हिवं	सक्कर	वालु थी ४ भागा सप्तम विकल्प करि कहे छै -
१७५	१	१ सक्कर, ४ वालु १ पक
१७६	२	१ सक्कर, ४ वालु १ धूम
१७७	nv	१ सक्कर, ४ वालु १ तम
१७८	४	१ सक्तर, ४ वालु १ मप्तभी
हिवै	मक्कर	वालु थी ४ भागा अप्टम विकल्प करि कहै छै -
308	१	२ सक्कर, ३ वालु, १ पक
१५० -	२	२ सक्कर, ३ वालु, १ धूम
१८१	ą	२ सक्कर, ३ वालु, १ तम
१८२	४	२ सक्कर, ३ वालु, १ मप्तमी

१८४ २ ३ सक्कर, २ वालु, १ धूम १८५ ३ ३ सक्कर, २ वालु, १ तम १८६ ४ ३ सक्कर, २ वालु, १ सप्तमी हिवै सक्कर वालु थी ४ भागा दशम विकल्न करि कहै छै — १८७ १ ४ सक्कर, १ वालु, १ पक १८८ २ ४ सक्कर, १ वालु, १ धूम	हिवै	सबकर	वालु थी ४ भागा नवम विकल्प करि कहै छैं—
१	१८३	१	३ सक्कर, २ वालु, १ पक
१८६ ४ ३ सक्कर, २ वालु, १ सप्पमी  हिवै सक्कर वालु थी ४ भागा दशम विकल्प किर कहै छै —  १८७ १ ४ सक्कर, १ वालु, १ पक  १८८ ३ ४ सक्कर, १ वालु, १ सप्पमी  हिवै सक्कर पक थी प्रथम विकल्प किर ३ भागा कहै छै—  १६१ १ १ सक्कर, १ पक, ४ धूम  १६२ २ १ सक्कर, १ पक, ४ सप्पमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा द्विगिय विकल्प किर कहै छै—  १६४ १ १ सक्कर, २ पक, ३ धूम  १६४ २ १ सक्कर, २ पक, ३ धूम  १६४ २ १ सक्कर, २ पक, ३ धूम  १६६ ३ १ मक्कर, २ पक, ३ सप्पमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प किर कहै छै—  १६६ ३ १ मक्कर, २ पक, ३ सप्पमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प किर कहै छै—  १६७ १ २ सक्कर, २ पक, ३ सप्पमी	१५४	२	३ सक्कर, २ वालु, १ धूम
हिबै सक्कर वालु थी ४ भागा दशम विकल्प किर कहै छै —  १६७ १ ४ सक्कर, १ वालु, १ पक  १६६ ३ ४ सक्कर, १ वालु, १ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी प्रथम विकल्प किर ३ भागा कहै छै—  १६१ १ १ सक्कर, १ पक, ४ धूम  १६२ २ १ सक्कर, १ पक, ४ तम  १६३ ३ १ सक्कर, १ पक, ४ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा द्विगिय विकल्प किर कहै छै—  १६४ १ १ सक्कर, २ पक, ३ धूम  १६४ २ १ सक्कर, २ पक, ३ धूम  १६४ २ १ सक्कर, २ पक, ३ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प किर कहै छै—  १६६ ३ १ मक्कर, २ पक, ३ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प किर कहै छै—  १६७ १ २ सक्कर, १ पक, ३ धूम	१८५	३	३ सक्कर, २ वालु, १ तम
१८७ १ ४ सक्कर, १ वालु, १ पक  १८८ २ ४ सक्कर, १ वालु, १ धूम  १८० ४ ४ सक्कर, १ वालु, १ तम  १६० ४ ४ सक्कर, १ वालु, १ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी प्रथम विकल्प करि ३ भागा कहै छै—  १६१ १ १ सक्कर, १ पक, ४ धूम  १६२ २ १ सक्कर, १ पक, ४ तम  १६३ ३ १ सक्कर, १ पक, ४ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा द्विनीय विकल्प करि कहै छै—  १६४ १ १ सक्कर, २ पक, ३ धूम  १६५ २ १ सक्कर, २ पक, ३ तम  १६६ ३ १ मक्कर, २ पक, ३ तम  १६६ ३ १ मक्कर, २ पक, ३ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै—  १६७ १ २ सक्कर, १ पक, ३ धूम	१८६	४	३ सक्कर, २ वालु, १ सप्तमी
१८६ २ ४ सक्तर, १ वालु, १ घूम  १८० ४ ४ सक्तर, १ वालु, १ तम  १६० ४ ४ सक्तर, १ वालु, १ सप्तमी  हिवै सक्तर पक थी प्रथम विकल्प किर ३ भागा कहै छै—  १६१ १ १ सक्तर, १ पक, ४ धूम  १६२ २ १ सक्तर, १ पक, ४ तम  १६३ ३ १ सक्तर, १ पक, ४ सप्तमी  हिवै सक्तर पक थी ३ भागा द्विनीय विकल्प किर कहै छै—  १६४ १ १ सक्तर, २ पक, ३ धूम  १६५ २ १ सक्तर, २ पक, ३ तम  १६६ ३ १ मक्तर, २ पक, ३ सप्तमी  हिवै सक्तर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प किर कहै छै—  १६७ १ २ सक्तर, १ पक, ३ धूम	हिवै स	सक्कर	वालु थी ४ भागा दशम विकल्प करि कहै छै —
१६० ४ सक्कर, १ वालु, १ तम  १६० ४ सक्कर, १ वालु, १ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी प्रथम विकल्प किर ३ भागा कहै छै—  १६१ १ सक्कर, १ पक, ४ धूम  १६२ २ १ सक्कर, १ पक, ४ तम  १६३ ३ १ सक्कर, १ पक, ४ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा द्विनीय विकल्प किर कहै छै—  १६४ १ १ सक्कर, २ पक, ३ धूम  १६५ २ १ सक्कर, २ पक, ३ तम  १६६ ३ १ मक्कर, २ पक, ३ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प किर कहै छै—  १६७ १ २ सक्कर, १ पक, ३ धूम	१८७	१	४ सक्कर, १ वालु, १ पक
१६० ४ ४ सक्कर, १ वालु, १ सप्नमी  हिवै सक्कर पक थी प्रथम विकल्प करि ३ भागा कहै छै—  १६१ १ १ सक्कर, १ पक, ४ धूम  १६२ २ १ सक्कर, १ पक, ४ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा द्विगीय विकल्प करि कहै छै—  १६४ १ १ सक्कर, २ पक, ३ धूम  १६५ २ १ सक्कर, २ पक, ३ तम  १६६ ३ १ मक्कर, २ पक, ३ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै—  १६७ १ २ सक्कर, १ पक, ३ धूम	१८५	२	४ सक्कर, १ वालु, १ धूम
हिवै सक्कर पक थी प्रथम विकल्प किर ३ भागा कहै छै—  १६१ १ सक्कर, १ पक, ४ धूम  १६२ २ १ सक्कर, १ पक, ४ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा द्विनीय विकल्प किर कहै छै—  १६४ १ श सक्कर, २ पक, ३ धूम  १६५ २ १ सक्कर, २ पक, ३ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प किर कहै छै—  १६५ २ १ सक्कर, २ पक, ३ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प किर कहै छै—  १६७ १ २ सक्कर, १ पक, ३ धूम	१८६	₹	४ सक्कर, १ वालु, १ तम
१६१ १ १ सक्कर, १ पक, ४ धूम  १६२ २ १ सक्कर, १ पक, ४ तम  १६३ ३ १ सक्कर, १ पक, ४ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा द्विनीय विकल्प किर कहै छै—  १६४ १ १ सक्कर, २ पक, ३ धूम  १६५ २ १ सक्कर, २ पक, ३ तम  १६६ ३ १ मक्कर, २ पक, ३ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प किर कहै छै—  १६७ १ २ सक्कर, १ पक, ३ धूम	980	8	४ सक्कर, १ वालु, १ सप्नमी
१६२ २ १ सक्कर, १ पक, ४ तम  १६३ ३ १ सक्कर, १ पक, ४ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा द्विनीय विकल्प करि कहै छै—  १६४ १ १ सक्कर, २ पक, ३ धूम  १६५ २ १ सक्कर, २ पक, ३ तम  १६६ ३ १ मक्कर, २ पक, ३ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै—  १६७ १ २ सक्कर, १ पक, ३ धूम	हिवै स	प्तक्क र	पक थी प्रथम विकल्प करि ३ भागा कहै छै
१६३ ३ १ सक्कर, १ पक, ४ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा द्विनीय विकल्प किर कहै छै—  १६४ १ १ सक्कर, २ पक, ३ धूम  १६५ २ १ सक्कर, २ पक, ३ तम  १६६ ३ १ मक्कर, २ पक, ३ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प किर कहै छै—  १६७ १ २ सक्कर, १ पक, ३ धूम	१६१	8	१ सक्कर, १ पक, ४ धूम
हिवै सक्कर पक थी ३ भागा द्विनीय विकल्प किर कहै छै— १६४ १ १ सक्कर, २ पक, ३ धूम १६५ २ १ सक्कर, २ पक, ३ तम १६६ ३ १ मक्कर, २ पक, ३ सप्तमी हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प किर कहै छै— १६७ १ २ सक्कर, १ पक, ३ धूम	१६२	२	१ सक्कर, १ पक, ४ तम
१६४ १ १ सक्कर, २ पक, ३ धूम  १६५ २ १ सक्कर, २ पक, ३ तम  १६६ ३ १ मक्कर, २ पक, ३ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै—  १६७ १ २ सक्कर, १ पक, ३ धूम	१६३	3	१ सक्कर, १ पक, ४ सप्तमी
१६५ २ १ सक्कर, २ पक, ३ तम  १६६ ३ १ सक्कर, २ पक, ३ सप्तमी  हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै  १६७ १ २ सक्कर, १ पक, ३ धूम	हिवै र	सक्कर	पक थी ३ भागा द्विनीय विकल्प करि कहै छैं—
१६६ ३ १ मक्कर, २ पक, ३ सप्तमी हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै— १६७ १ २ सक्कर, १ पक, ३ धूम	१६४	१	१ सक्कर, २ पक, ३ धूम
हिवै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै— १६७ १ २ सक्कर, १ पक, ३ धूम	१६५	२	१ सक्कर, २ पक, ३ तम
१६७ १ २ सक्कर, १ पक, ३ धूम	१६६	æ	१ मक्कर, २ पक, ३ सप्तमी
	हिनै सक्कर पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै—		
१६८ २ २ सक्कर, १ पक, ३ तम	१६७	१	२ सक्कर, १ पक, ३ धूम
	१६८	ર	२ सक्कर, १ पक, ३ तम
१६६ ३ २ सक्कर, १ पक, ३ सप्तमी	338	π	२ सक्कर, १ पक, ३ सप्तमी

1	<del>тивения.</del>	
1 <b>ह</b>	व सक्क	र पक थी ३ भागा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै —
२००	१	१ सक्कर, ३ पक, २ धूम
२०१	२	१ सक्कर, ३ पक, २ तम
२०२	3	१ सक्कर, ३ पंक, २ सप्तमी
हिं	त्रै सक्क	र पक थी ३ भागा पचम विकल्प करि कहै छैं —
२०३	१	२ सकदर, २ पक, २ धूम
२०४	२	२ सनकर, २ पक, २ तम
२०५	ą	२ सक्कर, २ पक, २ सप्तमी
हिटं	ो सक्क	र पक थी ३ भागा छठे विकल्प करि कहैं छैं —
२०६	१	३ सक्कर, १ पक, २ धूम
२०७	२	३ सक्कर, १ पक, २ तम
२०६	B	३ सक्कर, १ पक, २ सप्तमी
हिव	सक्कर	पक थी ३ भागा सप्तम विकल्प करि कहै छै—
२०६	१	१ सक्तर, ४ पक, १ धूम
२१०	२	१ सनकर, ४ पक, १ तम
२११	ε	१ सक्कर, ४ पक, १ सप्तमी
हिवै	सक्कर	पक थी ३ भागा अप्टम विकल्प करि कहै छैं —
२१२	१	२ सक्कर, ३ पक. १ धूम
२१३	२	२ सक्कर, ३ पक, १ तम
२१४	₹	२ सक्कर, ३ पक, १ सप्तमी
हिवै	सक्कर	पक थी ३ भागा नवम विकल्प करि कहै छै —
२१५	8	३ सक्कर, २ पक, १ धूम
२१६	२	३ सक्कर, २ पक, १ तम
११७	ą	३ सक्कर, २ पक, १ सप्तमी

द्विवै स	ाक्कर प	क थी ३ भागा दशम विकल्य करि कहै छै -		
२१=	8	४ सक्कर, १ पक, १ घूम		
२१६	٦	४ सक्कर, १ पक, १ तम		
२२०	₹	४ सक्कर, १ पक, १ सप्तमी		
ए सक्क	र पक	थी ३ भागा दश दिकल्प करि ३० भागा कह्या।		
		घूम थी २ भागा दण दिकल्प करि २० भागा २ भागा प्रथम दिकल्प करि कहै छै—		
२२१	१	१ सक्कर, १धूम, ४ तम		
२२२	٦	१ सक्कर, १ धूम, ४ सप्तमी		
हिवै	सक्कर	धूम थी २ भागा द्वितीय विकल्न करि कहै छै—		
२२३	१	१ सक्कर, २ धूम, ३ तम		
२२४	२	१ सक्कर, २ धूम, ३ सप्तमी		
हिवै	सक्कर	धूम थी २ भागा तृतीय दिकत्य करि कहै छै—		
२२५	8	२ सक्कर, १ धूम, ३ तम		
२२६	२	२ सक्कर, १ घूम, ३ सप्तमी		
हिवै	सक्कर	धूम थी २ भागा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै		
२२७	१	१ सक्कर ३ धूम, २ तम		
२२=	२	१ सक्कर, ३ धूम, २ सप्तमी		
हिवै	सवकर	धूम थी २ भाग। पत्रम विकल्य करि कहै छैं —		
२२६	१	२ सक्कर, २ धूम, २ तम		
२३०	२	२ सक्कर, २ धूम, २ सप्तमी		
हिर्द	रे सक्कर	धूम थी २ भागा पष्ठ विकल्प करि कहै छै—		
२३१	१	३ सक्कर, १ धूम, २ तम		
२३२	२	३ सक्कर, १ धूम, २ मप्तमी		

हिवै सक्कर धूम थी २ भागा सप्तम विकल्प करि कहै छै -		
२३३	१	१ सक्कर, ४ घूम, १ तम
२३४	~ २	१ सक्कर, ४ धूम, १ सप्तमी
हिवै	सक्कर	धूम थी २ भागा अप्टम विकल्प करि कहै छैं —
२३५	१	२ सक्कर, ३ धूम, १ तम
२३६	२	२ सक्कर, ३ धूम, १ सप्तमी
नव	म विकर	पे
२३७	<b>!</b>	३ सक्कर, २ घूम, १ तम
२३८	२	३ सक्कर, २ धूम, १ मातमी
दश	म विकल	पे
२३६	१	४ सक्कर, १ धूम, १ तम
२४०	२	४ सक्कर, १ धूम, १ सप्तमी
1	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	म थी २ भागा दश दिकल्प करि २० भागा कह्या। र तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै —
२४१	१	१ सक्कर, १ तम, ४ सप्तमी
द्वि	तीय विव	<b>क</b> ल्पे
२४२	१	१ सक्कर, २ तम, ३ सप्तमी
<u>्र</u> तृत	ीय विव	ल्पे
२४३	१	२ सक्कर, १ तम, ३ सप्तमी
चत्	र्थं विक	त्ये
२४४	8	१ सक्कर, ३ तम, २ मप्नमी
प=	ाम विव	ल्पे
२४५	१	२ सक्कर, २ तम, २ सप्तमी
de	ठ विकल	पे
२४६	8	३ सक्कर, १ तम, २ सप्तमी

राप्तम विकल्पे			
२४७ १ १ सक्कर, ४ तम, १ सप्तमी	1		
अष्टम विकल्पे			
२४८ १ २ सक्कर, ३ तम, १ सप्तमी			
नवम विकल्पे			
२४६ १ ३ सक्कर, २ तम, १ सप्तमी			
दशम विकल्पे			
२५० १ ४ सक्कर, १ तम, १ सप्तमी			
ए सक्तर थी १० भागा १० विकल्प करि १०० भागा कह्या। हिवै वालु पक थी ३ भागा १० विकल्प करि ३० भागा। ते प्रथम विकल्प करि कहै छै—			
२५१ १ श्वालु, १ पक, ४ धूम			
२५२ २ १ वालु, १ पंक, ४ तम			
२५३ ३ १ वालु, १ पक, ४ सप्तमी			
द्वितीय विकल्पे			
२५४ १ १ वालु, २ पक, ३ घूम			
२५५ २ १ वालु, २ पक, ३ तम			
२५६ ३ १ वालु, २ पक, ३ सप्तमी			
तृतीय विकल्पे			
२५७   १   २ वालु, १ पक, ३ धूम			
२५६ २ २ वालु, १ पक, ३ तम	_		
२५६ ३ २ वालु, १ पक, ३ सप्तभी			
चतुर्थ विकल्पे			
२६० १ १ वालु, ३ पक, २ धूम	_		
२६१ २ ! १ वालु, ३ पंक, २ तम			
२६२ ३ १ वालु, ३ पंक, २ सप्तमी			

पच	पचम विकल्पे			
२६३	१	२ वालु, २ पक, २ घूम		
२६४	२	२ वालु, २ पक, २ तम		
२६५	m·	२ वालु, २ पक, २ मप्तमी		
पष्ठ	विकल्पे			
२६६	१	३ वालु, १ पक्र, २ धूम		
२६७	ર	३ वालु, १ पंक, २ तम		
२६८	ą	३ वालु, १ पक, २ मप्तमी		
सप्त	म विक	त्पे		
२६९	१	१ वालु, ४ पक, १ धूम		
२७०	२	१ वालु, ४ पक, १ तम		
२७१	, R	१ वालु, ४ पक, १ सप्तमी		
अप्ट	म विक	ल्पे		
२७२	१	२ वालु, ३ पंक, १ धूम		
२७३	२	२ वालु, ३ पक, १ तम		
२७४	m	२ वालु, ३ पक, १ मप्तमी		
नवः	म विकल	पे		
२७४	१	३ वालु, २ पक, १ धूम		
२७६	२	३ वालु, २ पक, १ तम		
२७७	3	३ वालु, २ पंक, १ सप्तमी		
दशम विकल्पे				
२७६	१	४ वालु, १ पक, १ घूम		
२७६	२	४ बोलु, १ पक, १ तम		
२६०	ą	४ वालु, १ पक, १ सप्तमी		
ए व	ए वालु पक थी ३ भागा १० विकल्प करि ३० भागा कह्या।			

हिवै वालु धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा ते प्रथम विकल्प करि कहै छै—			
२८१	१	१ वालु, १ धूम, ४ तम	
२६२	२	१ वालु १ धूम, ४ सप्तमी	
द्विर्त	ोय विव	न् <del>र</del> पे	
२८३	१	१ वालु, २ धूम, ३ तम	
२८४	२	१ वालु, २ धूम, ३ सप्तमी	
तृती	ाय विक	ल्पे	
२५४	१	२ वालु, १ घूम, ३ तम	
२६६	२	२ वालु, १ धूम, ३ सप्तमी	
चतु	र्थं विकर	ये	
२८७	१	१ वालु, ३ धूम, २ तम	
२८८	२	१ वालु, ३ घूम, २ सप्तमी	
पच	म विक	ल्पे	
२५६	१	२ वालु, २ धूम, २ तम	
२६०	२	२ वालु, २ धूम, २ सप्तमी	
षद	5 विकल्	ì	
२६१	१	३ वालु, १ धूम, २ तम	
१९२	२	३ वालु, १ धूम, २ सप्तमी	
सप	तम विव	ल्पे	
२६३	१	१ वालु, ४ धूम, १ तम	
२६४	₹	१ वालु, ४ धूम, १ सप्तमी	
अप	टम विव	तत्प <u>े</u>	
२६५	<b>१</b>	२ वालु, ३ धूम, १ तम	
२१६	२	२ वालु, ३ धूम, १ सप्तमी	

नवम विकल्पे		
२६७	१	३ वालु, २ धूम, १ तम
२६५	२	३ वालु, २ धूम, १ सप्तमी
दशम	। विकर	पे
३३६	१	४ वालु, १ घूम, १ तम
३००	२	४ वालु, १ धूम, १ सप्तमी
		ाथी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कह्या। तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा, ते प्रथम विकल्प करि कहै छैं —
३०१	१	१ वालु, १ तम, ४ सप्तमी
द्विती	य विक	ल्पे
३०२	१	१ वालु, २ तम, ३ सप्तमी
तृती	य विक	त्पे
३०३	१	२ वालु, १ तम, ३ सप्तमी
चतुर्थ	विक	न् <u>प</u> े
३०४	१	१ वालु, ३ तम, २ सप्तमी
पचम	विकल	प
३०५	8	२ वालु, २ तम, २ सप्तमी
षष्ठ	विकल्पे	
३०६	१	३ वालु, १ तम, २ सप्तमी
सप्तर	म विक	त्पे
३०७	१	१ वालु, ४ तम, १ सप्तमी
अप्टा	म विक	न्पे <u> </u>
३०८	8	२ वालु, ३ तम, १ सप्तमी
नवम	विकल्	ो
30€	१	३ वालु, २ तम, १ सप्तमी

दशम विकल्पे				
११०   १   ४ वालु, १ तम, १ सप्तमा ए वालु थी ६ भागा दश विकल्प करि ६० भागा कह्या ।				
त् वालु था ६ भागा देश विकल्प प्राप्त एक प्रमाण है. एक तम हिंदै पक थी ३ भागा ते किसा १ पक धूम थी २, पक तम थी १ एव पक थी ३, दश विकल्प करि ३० भागा कह्या। तिहा पक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छैं—				
३११ १ १ पक, १ धूम, ४ तम				
३१२ २ १ पंक, १ धूम, ४ सप्तमी				
हिवै पक धूम थी २ भांगा द्वितीय विकल्पे				
३१३ १ १ पंक, २ धूम, ३ तम				
३१४ २ १ पक, २ धूम, ३ सप्तमी				
हिवै पक घूम थी २ भागा तृतीय विकल्पे				
३१५ १ २ पक, १ धूम, ३ तम				
३१६ २ २ पंक, १ घूम, ३ सप्तमी				
चतुर्थ विकल्पे				
३१७ १ १ पक, ३ धूम, २ तम				
३१८ २ १ पंक, ३ धूम, २ सप्तमी				
पचम विकल्पे ′				
३१६ १ २ पक, २ धूम, २ तम				
३२० २ २ पक, २ धूम, २ सप्तमी				
पटठ विकल्पे				
३२१ १ ३ पक, १ धूम, २ तम				
३२२ २ ३ पक, १ धूम, २ सप्तमी				
सप्तम विकल्पे				
३२३ १ १ पक, ४ धूम, १ तम				
३२४ २ १ पक, ४ धूम, १ सप्तमी				

अष्टम विकल्पे						
२४	१५ १ २ पक, ३ धूम, १ तम					
२६	२	२ पक, ३ धूम, १ सप्तमी				
नवा	न विकल	पे				
३२७	१	३ पक, २ धूम, १ तम				
 ३२८	२	३ पक, २ घूम, १ सप्तमी				
दश	म विक	ल्पे				
३२६	१	४ पक, १ धूम, १ तम				
३३०	२	४ पक, १ धूम, १ सप्तमी				
हि	वै पक	म थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कह्या। तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा। ते करा करि कहे छैं—-				
३३१ १ १ पक, १ तम, ४ सप्तमी		१ पक, १ तम, ४ सप्तमी				
हें	वि पक	तम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे				
३३२ १ १ पक, २ तम, ३ सप्तमी		१ पक, २ तम, ३ सप्तमी				
िह	हवै पक	तम थी १ भागो तृतीय विकल्पे				
333	: :	२ पक, १ तम, ३ सप्तमी				
fi	हेवै पंक	तम थी १ भागो चतुर्थ विकल्पे				
33)	6	१ १ पक, ३ तम, २ सप्तमी				
f	हिनै पक तम थी १ भागो पचम विकल्पे					
३३४ १ २ पक, २ तम, २ सप्तमी						
हिवै पक तम थी १ भागो पष्ठ विकल्पे						
३३	६	१ ३ पक, १ तम, २ सप्तमी				
	हिवै पव	कतम थी १ भागो सप्तम विकल्पे				
३३	9	१ पक, ४ तम, १ सप्तमी				

हिवै पक तम थी १ भांगो अष्टम विकल्पे				
३३८ १ २ पक, ३ तम	ा, १ सप्तमी			
हिवै पक तम थी १ भागो	नवम विकल्पे			
३३६ १ ३ पक, २ तम	ा, १ सप्तमी			
हिवै पक तम थी १ भागो	दशम विकल्पे			
३४० १ ४ पक, १ त	म, १ सप्तमी			
ए पक तम थी १ भागो १० विकल्प करि १० भागा कह्या। एव पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा कह्या। हिवै धूम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा। तिहा प्रथम विकल्पे				
३४१ १ १ धूम, १ त	म, ४ सप्तमी			
द्वितीय विकल्पे				
३४२ १ १ धूम, २ त	म, ३ सप्तमी			
तृतीय विकल्पे				
३४३ १ २ घूम, १ त	म, ३ सप्तमी			
चतुर्थ विकल्पे				
३४४ १ १ धूम, ३ त	म, २ सप्तमी			
पचम विकल्पे				
३४५ १ २ धूम, २ त	म, २ सप्तमी			
पष्ठ विकल्पे —				
३४६ १ ३ धूम, १ त	म, २ सप्तमी			
सप्तम विकल्पे				
३४७ १ १ घूम, ४ त	म, १ सप्तमी			
अप्टम विकल्पे				
३४८ १ २ धूम, ३ त	म, १ सप्तमी			
नवम विकल्पे				
३४६ १ ३ धूम, २ त	म, १ सप्तमी			

दशम विकल्पे—		
३५० १ ४ घूम, १ तम, १ सप्तमी		
ए घूम थी १ भागी दश विकल्प करि १० भागा कह्या । एव रत्न थी १५, सक्कर थी १०, वालुक थी ६, पक थी ३, धूम थी १—एव ३५ भागा, ते एक-एक विकल्प करि हुवै । दश		

विकल्प करि त्रिकसजोगिया भागा ३५० जाणवा।

१४६. एक एक नै च्यार, प्रथम विकल्प ए जानो। दोय नैं तीन, द्वितीय विकल्प पहिछानो। नें तीन, तृतीय विकल्प ए कहियै। एक तीन ने दोय, तुर्घ विकल्प ए लहियै। फुन दोय-दोय ने दोय गण, ए पंचम विकल्प कहा । विल तीन एक नैं दोय इम, ए छठुं विकल्प लह्यु।। नें एक, सखर विकल्प ए सप्तम। १५०. एक च्यार दोय तीन नै एक, आख्युं ए विकल्प अष्टम। तीन दोय नैं एक, नवम विकल्प निरखीजै। च्यार एक नैं एक, दशम विकल्प दिल लीजे। षट जीव तणां त्रिकयोगिका, विकल्प इहविध दाखिया। भांगाज तीन सय तसुं भला, अधिक पचासही आखिया।। १५१. १ए पट जीव तणां त्रिकयोगिक, सार्द्ध तीन सय शुद्ध। दश विकल्प करि भांगा दाख्या, वर्णन तसु अविरुद्ध ।। वतीसम देशे, सौ वयांसीमीं ढाल। १५२. नवम शतक भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश 'हरष विशाल ।।

ढाल : १८३

## दूहा

१. हिवै कहूं षट जीव नां, चउकसंयोगिक चंग। दश विकल्प करि दाखिया, सार्द्ध तीन सय भंग।।

वा--छ जीव ना चउकसयोगिक तेहना विकल्प तो दश, भागा साढा तीन-सौ । एक-एक विकल्प नां भागा पैतीस-पैतीस हुवै, ते माटै दश विकल्प ना ३५० हुवै। एक-एक विकल्प नां--रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पक थी १--एव ३५। रत्न थी २० ते किसा? रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ६, रत्न पक थी ३, रत्न धूम थी १ — एव २०। रत्न थी एक-एक विकल्प ना हुवै। रत्न सक्कर थी १० ते किसा? रत्न सक्कर वालुक थकी ४, रत्न सक्कर पक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी २, रत्न सक्कर तम थकी १- एव १० एक-एक विकल्प नां हुवै। ते कहै छै---

- २. †तथा रत्न इक सक्कर एक, इक वालुक त्रिहुं पंक विशेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, इक वालुक त्रिहुं धूम संपेख ।।
- ३. तथा रत्न इक सक्कर एक, इक वालुक ने त्रिहुं तम पेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, इक वालुक त्रिहुं सप्तमी देख।।

\*लय: सीता आवं रे धर राग

†लय: इण पुर कम्बल कोइ न लेसी

१. चतुष्कसंयोगे तु पण्णां चतूराशितया स्थापने दश विकल्पास्तद्यथा— पञ्चित्र शतश्च सप्तपदचतुष्क-संयोगाना दशभिगुंणनात्त्रीणि शतानि पञ्चाशदिष-(वृ० प० ४४५) कानि भवन्ति।

- ४. तथा रत्न इक सक्कर एक, वे वालुक वे पंक विशेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, वे वालुक वे धूमा लेख।।
- प्र. तथा रत्न इक सक्कर एक, वे वालुक वे तमा उवेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, वे वालुक वे सप्तमी शेख।।
- ६. तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक वालुक वे पके होय। तथा रत्न इक सक्कर दोय, इक वालुक वे धूमा जोय।।
- ७. तथा रत्न इक सक्कर दोय, इक वालुक वे तम अवलोय। तथा रत्न इक सक्कर दोय, इक वालुक वे सप्तमी सोय।।
- द. तथा रत्न वे सक्कर एक, इक वालुक वे पंक विशेख। तथा रत्न वे सक्कर एक, इक वालुक वे धूमा लेख।।
- ह. तथा रत्न बे सक्कर एक, एक वालुका बे तम पेख। तथा रत्न बे सक्कर एक, एक वालुका बे सप्तमी शोख।।
- १०. तथा रत्न इक सक्कर एक, त्रिण वालुक इक पंक विशेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, त्रिण वालु इक धूमा देख।।
- ११. तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन वालुका इक तम लेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, त्रिण वालुक इक सप्तमी शोख।।
- १२. तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय वालुक इक पके होय। तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय वालुक इक धूमा जोय।।
- १३. तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय वालुक इक तम अवलोय। तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय वालुक इक तमतमा जोय।।
- १४. हिवै रत्न वे सक्कर एक, वे वालुक इक पंक विशेख। तथा रत्न वे सक्कर एक, वे वालुक इक धूमा लेख।
- १५. तथा रत्न बे सक्कर एक, बे वालुक इक तमा उवेख। तथा रत्न बे सक्कर एक, बे वालुक इक सप्तमी देख।।
- १६. तथा रत्न इक सक्कर तीन, इक वालुक इक पक दुचीन। तथा रत्न इक सक्कर तीन, इक वालुक इक धूमा लीन।।
- १७. तथा रत्न इक सक्कर तीन, इक वालुंक इक तमा दुचीन। तथा रत्न इक सक्कर तीन, इक वालुंक इक सप्तमी लीन।।
- १८. तथा रत्न वे सक्कर दोय, इक वालुक इक पंके जोय। तथा रत्न वे सक्कर दोय, इक वालुक इक धूमा होय।।
- १६. तथा रत्न वे सक्कर दोय, एक वालुका इक तम जोय। तथा रत्न वे सक्कर दोय, इक वालुक इक सप्तमी होय॥
- २०. तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक वालुका इक पंक देख। तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, इक वालुक इक धूम उवेख।।
- २१. तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, इक वालुक इक तमा विशेख। तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक वालुक इक सप्तमी देख।।

हिवै रत्न सक्कर पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा कहै छै---

- २२. तथा रत्न इक सक्कर एक, एक पंक त्रिहुं धूम विशेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, एक पंक त्रिहुं तमा उवेख।।
- २३. तथा रत्न इक सक्कर एक, एक पंक त्रिहु सप्तमी शेख। रत्न सक्कर ने पंक थी चीन, धुर विकल्प करि ए भग तीन।।

२४. तथा रत्न इक सक्कर एक, दोय पंक विहुं धूमा देख। तथा रत्न इक सक्कर एक, दोय पक दो तमा विशेख।।

२५. तथा रत्न इक सक्कर एक, दोय पंक दोय सप्तमीं गोख। रत्न सक्कर नें पंक थी चीन, द्वितीय विकल्प करि भागा तीन।।

२६. तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक पक वे धूमा होय। तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक पंक वे तमा जोय।।

२७. तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक पंक वे सप्तमी सोय। रत्न सक्कर नैं पंक थी चीन, तृतीय विकल्प करि भागा तीन।।

२८. तथा रत्न वे सक्कर एक, एक पंक वे धूम विशेख। तथा रत्न वे सक्कर एक, एक पंक वे तमा विशेख।

२१. तथा रत्न वे सक्कर एक, एक पक वे सप्तमी शेख। रत्न सक्कर नें पंक थी चीन, चउथे विकल्प करि भंगा तीन।।

३०. तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन पंक इक धूमा देख। तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन पंक इक तमापेख।।

३१. तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन पंक इक सप्तमी शेख। रत्न सक्कर ने पक थी चीन, पंचम विकल्प भंगा तीन।।

३२. तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय पंक इक धूमा होय। तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय पक इक तम अवलोय।।

३३. तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय पंक इक सप्तमी जोय। रत्न सक्कर नें पंक थी चीन, छठै विकल्प करि भगा तीन।।

३४. तथा रत्न वे सक्कर एक, दोय पंक इक धूमा देख। तथा रत्न वे सक्कर एक, दोय पंक इक तमा लेख।

३५. तथा रत्न वे सक्कर एक, दोय पंक इक सप्तभी शेख। रत्न सक्कर ने पंक थी चीन, सप्तम विकल्प भगा तीन॥

३६. तथा रत्न इक सक्कर तीन, एक पंक इक धूमा चीन। तथा रत्न इक सक्कर तीन, एक पंक इक तमा लीन।।

३७. तथा रत्न इक सक्कर तीन, एक पंक इक सप्तमीं लीन। रत्न सक्कर ने पक थी चीन, अष्टम विकल्प भगा तीन।।

३८. तथा रत्न वे सक्कर दोय, एक पक इक धूमा जोय। तथा रत्न वे सक्कर दोय, एक पंक इक तम अवलोय।।

३६. तथा रत्न वे सक्कर दोय, एक पक इक तमतमा जोय। रत्न सक्कर ने पक थी चीन, नवम विकल्पे भंगा तीन।।

४०. तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक पक इक धूमा देख। नथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक पक इक तमा विशेख।।

४१. तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक पक इक सप्तमी शेख। रत्न सक्कर ने पक थी चोन, दशम विकल्पे भगा तीन।।

हिवै रत्न सक्कर धूम थी २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कहै छै-

४२. तथा रत्न इक सक्कर एक, एक धूम त्रिहु तमा विशेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, एक धूम त्रिहु सप्तमी लेख।।

४३. तथा रत्न इक सक्कर एक, दोय धूम वे तमा देख। तथा रत्न इक सक्कर एक, वे धूमा वे सप्तमी पेख।।

- ४४. तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक धूम वे तमा होय। तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक धूम वे सप्तमी जोय।।
- ४५. तथा रत्न वे सक्कर एक, एक धूम वे तमा विशेख। तथा रत्न वे सक्कर एक, एक धूम वे सप्तमी शेख।।
- ४६. तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन धूम इक तमा उवेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन धूम इक सप्तमी शेख।।
- ४७. तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय घूम इक तमा जोय। तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय घूम इक सप्तमी होय।।
- ४८ तथा रत्न वे सक्कर एक, दोय धूम इक तमा शेख। तथा रत्न वे सक्कर एक, दोय धूम इक सप्तमी पेख।।
- ४६. तथा रत्न इक सक्कर तीन, इक धूम इक तमा चीन। तथा रत्न इक सक्कर तीन, एक धूम इक सप्तमी लीन।।
- ५०. तथा रत्न वे सक्कर दोय, एक धूम इक तम अवलोय। तथा रत्न वे सक्कर दोय, एक धूम इक सप्तमी जोय॥
- ५१. तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक धूम इक तमा उवेख। तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक धूम इक सप्तमी लेख।।

हिवै रतन सक्कर तम थी १ भागो दश विकल्प करि दश भागा कहै छै-

- ५२. तथा रत्न इक सक्कर एक, एक तमा त्रिण सप्तमी शेख। तथा रत्न इक सक्कर एक, दोय तमा वे सप्तमी लेख।।
- ५३. तथा रत्न इक सक्कर दोय, एक तमा वे सप्तमी सोय। तथा रत्न वे सक्कर एक, एक तमा वे सप्तमी पेख।।
- ५४. तथा रत्न इक सक्कर एक, तीन तमा इक सप्तमी पेख। तथा रत्न इक सक्कर दोय, दोय तमा इक सप्तमी होय॥
- ५५. तथा रत्न वे सक्कर एक, दोय तमा इक सप्तमी देख। तथा रत्न इक सक्कर तीन, एक तमा इक सप्तमी लीन।।
- ५६. तथा रतन वे सक्कर दोय, एक तमा इक सप्तमी जोय।

प्रइ. तथा रतन व सक्कर दाय, एक तमा इक सप्तमा जाय। तथा रत्न त्रिण सक्कर एक, एक तमा इक सप्तमी लेख।।

हिर्व रत्न वालुक थी एकेक विकल्प ना ६ भागा, ते किमा ? रत्न वालुक पक थी ३, रत्न वालुक धूम थी २, रत्न वालुक तम थी १—एव ६ भागा, दश विकल्प करि ६० भागा। तिहा रता वालुक पक थी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा कहै छैं —

- ५७. तथा रत्न इक वालुक एक, एक पंक त्रिहुं धूम विशेख। तथा रत्न इक वालुक एक, एक पंक त्रिहुं तमा देख।।
- ५८. तथा रत्न इक वालुक एक, एक पंक त्रिहु सप्तमी देख। रत्न वालुक नै पंक थी चीन, धुर विकल्प करि ए भग तीन।।
- ५६. तथा रत्न इक वालुक एक, दोय पक वे धूम उवेख। तथा रत्न इक वालुक एक, दोय पंक वे तमा विशेख।
- ६०. तथा रत्न इक वालुक एक, दोय पक वे सप्तमी देख। रत्न वालुक ने पक थी चीन, द्वितीय विकल्प करि भंगा तीन।।
- ६१. तथा रत्न इक वालुक दोय, एक पंक वे धूमा होय। तथा रत्न इक वालुक दोय, एक पंक वे तमा जोय।।

६२. तथा रत्न इक वालुक दोय, एक पंक वे सप्तमी होय। रत्न वालुक ने पंक थी चीन, तृतीय विकल्प करि भगा तीन ।। ६३. तथा रत्न वे वालुक एक, एक पंक विहुं धूम उवेख। तथा रत्न वे वालुक एक, एक पंक विहुं तमा विणेख ॥ ६४. तथा रत्न वे वालुक एक, एक पंक विहुं सप्तमी पेख। रत्न वालुक ने पंक थी चीन, चउथे विकल्पे भंगा तीन ॥ ६५. तथा रत्न इक वालुक एक, तीन पंक इक धूम उवेख। तथा रत्न इक वालुक एक, तीन पक इक तमा विशेख ॥ ६६. तथा रत्न इक वालुक एक, तीन पंक इक सप्तमी देख। रत्न वालुक ने पक थी चीन, पचमे विकल्प भंगा तीन।। ६७. तथा रत्न डक वालुक दोय, दोय पक डकधूमा जोय। तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय पंक इक तम अवलोय।। ६८. तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय पंक इक सप्तमी जोय। रत्न वालुक ने पंक थी चीन, छठे विकल्प भंगा तीन ॥ ६६. तथा रत्न वे वालुक एक, दोय पंक इक धूमा देख। तथा रत्न वे वालुक एक, दोय पंक इक तमा उवेख ॥ ७०. तथा रत्न वे वालुक एक, दोय पंक इक सप्तमी देख। रत्न वालुक ने पंक थी चीन, सप्तम विकल्प भगा तीन।। ७१. तथा रत्न इक वालुक तीन, एक पंक इक घूम मलीन। तथा रत्न इक वालुक तीन, एक पंक इक तमा दुर्चान ।। ७२. तथा रत्न इक वालुक तीन, एक पंक इक सप्तमी लीन। रत्न वालुक ने पंक थी चीन, अप्टम विकल्प भगा तीन।। ७३. तथा रतन वे वालुक दोय, एक पंक इक घूमा जीय। तथा रत्न वे वालुक दोय, एक पंक इक तमा होय।। ७४. तथा रत्न वे वालुक दोय, एक पंक इक सप्तमी होय। रत्न वालुक ने पंक थी चीन, नवमे विकल्प भंगा तीन ।। ७५. तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक पंक इक धूम उवेख। तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक पंक इक तमा विशेख ॥ ७६. तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक पंक इक सप्तमी जेख । रत्न वालुक ने पंक थी चीन, दणमे विकल्प भंगा तीन।।

हिवै रतन वालुक धूम थी २ भागा दण विकटप करि २० भागा कहै छै-

७७. तथा रत्न इक वानुक एक, एक धूम त्रिहुं तमा उवेख।
तथा रत्न इक वानुक एक, एक धूमा त्रिहुं सप्तमी लेख।।
७८. तथा रत्न इक वानुक एक, वे धूमा वे तमा विणेख।
तथा रत्न इक वानुक एक, वे धूमा वे सप्तमी णेख।
७८. तथा रत्न इक वानुक दोय, एक धूम वे तम अवलोय।
तथा रत्न इक वानुक दोय, एक धूम वे सप्तमी जोय।।
८०. तथा रत्न वे वानुक एक, एक धूम वे तमा उवेख।
तथा रत्न वे वानुक एक, एक धूम वे सप्तमी णेख।।
८१. तथा रत्न इक वानुक एक, तीन धूम एक तम उवेख।
तथा रत्न इक वानुक एक, तीन धूम एक सप्तमी णेख।।

द२. तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय धूम एक तम अवलोय। तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय धूम इक सप्तमी होय।।

द३. तथा रत्न वे वालुक एक, दोय धूम इक तम उवेख। तथा रत्न वे वालुक एक, दोय धूम इक सप्तमी शेख।।

दथ तथा रत्न इक वालुक तीन, एक धूम इक तम दुचीन। तथा रत्न इक वालुक तीन, एक धूम इक सप्तमी लीन।।

द्रभ्र. तथा रत्न वे वालुक दोय, एक धूम इक तमा होय।

तथा रत्न वे वालुक दोय, एक धूम इक सप्तमी जोय।। द६. तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक धूम इक तमा विशेख। तथा रत्न त्रिण वालुक एक, एक धूम इक सप्तमी शेख।।

हिंवै रत्न वालुक तम थी १ भांगी दश विकल्प करि १० भागा कहै छै-

५७. तथा रत्न इक वालुक एक, एक तमा त्रिहु सप्तमी लेख। रत्न वालुक ने तम थी देख, धुर विकल्प करि भगो एक॥

दद्र. तथा रत्न इक वालुक एक, दोय तमा विहु सप्तमी पेख। रत्न वालुक ने तम थी देख, द्वितीय विकल्प करि भगो एक।।

दह. तथा रत्न इक वालुक दोय, एक तम वे सप्तमी होय। रत्न वालुक ने तम थी देख, तृतीय विकल्प करि भगो एक।।

ह०. तथा रत्ने वे वालुक एक, एक तमा बिहुं सप्तमी लेख। रत्न वालुक नें तम थी देख, चउथे विकल्प भंगो एक।।

११. तथा रत्न इक वालुक एक, तीन तमा इक सप्तमीं शेख। रत्न वालुक नै तम थी जोय, पचमे विकल्प इक भंग होय।।

१२. तथा रत्न इक वालुक दोय, दोय तमा इक सप्तमी होय। रत्न वालुक नै तम थी जोय, छठे विकल्प इक भग होय॥

६३. तथा रत्न वे वालुक एक, दोय तमा इक सप्तमी लेख। रत्न वालुक ने तम थी जोय, सप्तम विकल्प इक भंग होय।।

१४. तथा रत्न इक वालुक तीन, एक तमा इक सप्तमी चीन। रत्न वालुक ने तम थी जोय, अष्टम विकल्प इक भग होय।।

१५. तथा रत्न वे वालुक दोय, एक तमा इक सप्तमी होय। रत्न वालुक ने तम थी चग, नवमे विकल्प ए इक भग।।

६६. तथा रत्ने त्रिण वालुक एक, एक तमा इक सप्तमी शेख। रत्न वालुक तम थकी गिणेह, दशमे विकल्प इक भंग एह।।

हिनै रत्न पक थी एक एक विकल्प करि ३ भागा, ते किसा १ रत्न पक धूम थी २, रत्न पक तम थी १ एव ३ भागा। दश विकल्प करि ३० भागा। तिहा रत्न पक धूम थी २ भागा, दश विकल्प करि २० भागा कहै छै—

६७. तथा रत्न इक पंके एक, एक धूम त्रिण तमा विशेख। तथा रत्न इक पके एक, एक धूम त्रिहुं सप्तमी देख।।

६८ तथा रत्न इक पके एक, दोय धूम वे तमा उवेख। तथा रत्न इक पंके एक, दोय धूम वे सप्तमी गेख।।

६६ तथा रतन इक पके दोय, एक धूम बे तमा होय। तथा रतन इक पके दोय, एक धूम बे सप्तमी जोय।। १००. तथा रत्न वे पंके एक, एक धूम वे तमा विशेख। तथा रत्न वे पके एक, एक धूम वे सप्तमी शेख।।

१०१ तथा रत्न इक पंके एक, तीन धूम इक तमा उवेख। तथा रत्न इक पंके एक, तीन धूम इक सप्तमी शेख।।

१०२. तथा रत्न इक पके दोय, दोय धूम इक तमा जोय। तथा रत्न इक पंके दोय, दोय धूम इक सप्तमी जोय।।

१०३. तथा रत्न वे पंके एक, दोय धूम इक तमा उवेख। तथा रत्न वे पंके एक, दोय धूम इक सप्तमी शेख।।

१०४. तथा रत्न इक पके तीन, एक धूम इक तम मलीन। तथा रत्न इक पंके तीन, एक धूम इक सप्तमीं लीन।।

१०५. तथा रत्न वे पंके दोय, एक धूम एक तमा जोय। तथा रत्न वे पंके दोय, एक धूम इक सप्तमीं होय।।

१०६. तथा रत्न त्रिण पंके एक, एक धूम इक तमा पेख।
तथा रत्न त्रिण पके एक, एक धूम इक सप्तमी णेख।।
हिवै रत्न पक तम थी १ भागो दण विकरप करि १० भागा कहै छै-

१०७ तथा रत्न इक पके एक, एक तम त्रिण सप्तमी शेख। तथा रत्न इक पके एक, दोय तमा वे सप्तमी लेख।

१० द. तथा रत्न इक पके दोय, एक तमा वे सप्तमी सोय। तथा रत्न वे पके एक, एक तमा वे सप्तमी शेख।।

१०६. तथा रत्न इक पके एक, तीन तमा इक सप्तमी लेख। तथा रत्न इक पके दोय, दोय तमा इक सप्तमी सोय।।

११०. तथा रत्न वे पके एक, दोय तमा इक सप्तमीं लेख।
तथा रत्न इक पंके तीन, एक तमा इक सप्तमी लीन।

१११. तथा रत्न वे पके दोय, एक तमा इक सप्तमीं जोय। तथा रत्न त्रिण पके एक, एक तमा एक सप्तमी शेख।। हिवै रत्न धूम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कहै छै—

११२ तथा रत्न इक धूमा एक, एक तमा त्रिण सप्तमी देख। तथा रत्न इक धूमा एक, दोय तमा वे सप्तमी शेख।।

११३ तथा रत्न इक धूमा दोय, एक तमा वे सप्तमी होय। तथा रत्न वे धूमा एक, एक तमा वे सप्तमी पेख।

११४. तथा रत्न इक धूमा एक, तीन तमा इक सप्तमी शेख। तथा रत्न इक धूमा दोय, दोय तमा इक सप्तमी सोय।।

११५. तथा रत्न वे धूमा एक, दोय तमा इक सप्तमी लेख। तथा रत्न इक धूमा तीन, एक तमा एक सप्तमी चीन।।

११६. तथा रत्न वे धूमा दोय, एक तमा इक सप्तमी होय। तथा रत्न त्रिण धूमा एक, एक तमा एक सप्तमी शेख।।

हिवै सक्कर थी १० भागा, ते किसा ? सक्कर वालुक थी ६, सक्कर पक थी ३, सक्कर घूम थी १ एव सक्कर थी १० एकेक विकल्प किर हुवै। तिहा सक्कर वालुक थी ६, ते किसा ? सक्कर वालुक पक थी ३, सक्कर वालुक धूम थी २, मक्कर वालुक तम थी १, तिहां सक्कर वालु पक थी ३ भागा दश विकल्प किर ३० भागा कहै छै—

- ११७. तथा सक्कर इक वालुक एक, एक पंक त्रिण धूम विशेख। तथा सक्कर इक वालुक एक, एक पक त्रिण तमा उवेख।।
- ११८. तथा सनकर इक वालुक एक, एक पक त्रिण सप्तमी लेख। सक्कर वालुक पंक थी चीन, धुर विकल्प करि ए भंग तीन।।
- ११६. तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय पक वे धूमा लेख। तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय पक बे तमा विशेख।।
- १२० तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय पक बे सप्तमी शेख। सक्कर वालुक पक थी चीन, द्वितीय विकल्प करि ए भग तीन।।
- १२१. तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक पक वे धूमा जोय। तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक पक बे तमा होय।।
- १२२. तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक पक बे सप्तमी जोय। सक्कर वालुक पक थी चीन, तृतीय विकल्प करि भगा तीन।।
- १२३. तथा सक्कर बे वालुक एक, एक पंक बिहु धूम विशेख। तथा सक्कर वे वालुक एक, एक पंक विहु तमा उवेख।।
- १२४ तथा सक्कर वे वालुक एक, एक पक बिहु सप्तमी शेख। सक्कर वालुक पंक थी चीन, चउथे विकल्प भगा तीन।।
- १२५. तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन पक इक धूमा देख। तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन पक इक तमा विशेख ॥
- १२६. तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन पक इक सप्तमी पेख। सक्कर वालुक पक थी चीन, पचमे विकल्प भगा तीन।।
- १२७ तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय पक इक धूमा जोय। तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय पंक इक तमा होय।।
- १२८. तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय पक इक सप्तमी जोय। सक्कर वालुक पंक थी चीन, षष्ठम विकल्प भंगा तीन ॥
- १२६. तथा सक्कर वे वालुक एक, दोय पक इक धूमा देख। तथा सक्कर वे वालुक एक, दोय पंक इक तमा लेख।।
- १३०. तथा सक्कर वे वालुक एक, दोय पंक इक सप्तमी शेख। सक्कर वालुक पक थी चीन, सप्तम विकल्प भगा तीन ॥
- १३१. तथा सक्कर इक वालुक तीन, एक पक इक धूमा लीन। तथा सक्कर इक वालुक तीन, एक पक इक तमा दुचीन ॥
- १३२. तथा सक्कर इक वालुक तीन, एक पंक इक सप्तमी लीन। सक्कर वालुक पक थी चीन, अष्टम विकल्प भंगा तीन ॥
- १३३. तथा सक्कर वे वालुक दोय, एक पक इक धुमा जोय। तथा सक्कर वे वालुक दोय, एक पक इक तमा जोय।।
- १३४. तथा सक्कर वे वालुक दोय, एक पक इक सप्तमी जोय। सक्कर वालुक पक थी चीन, नवमे विकल्प भगा तीन।
- १३५. तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक पक इक धूमा लेख। तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक पंक इक तमा देख ॥
- १३६. तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक पक इक सप्तमी शेख। सक्कर वालुक पक थी चीन, दशमे विकल्प भगा तीन।।

ए सक्कर वालुक पक थी ३ भागा, दश विकत्प करि ३० भागा कह्या।

हिवै सक्कर वालुक धूम थो हैं २ भागा दश विकल्प करि २० भागा कहै छै-

- १३७. तथा सक्कर इक वालुक एक, एक धूम त्रिहुं तमा विशेख। तथा सक्कर इक वालुक एक, एक धूम त्रिहुं सप्तमीं शेख।।
- १३८. तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय धूम वे तमा विशेख। तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय धूम वे सप्तमी शेख।।
- १३६. तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक धूम वे तम अवलोय। तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक धूम वे सप्तमी सोय।।
- १४०. तथा सक्कर वे वालुक एक, एक धूम वे तम उवेख। तथा सक्कर वे वालुक एक, इक धूम वे सप्तमी शेख।।
- १४१. तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन धूम इक तमा देख। तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन धूम इक सप्तमी शेख।।
- १४२. तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय धूम इक तम अवलोय। तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय धूम इक सप्तमी होय।।
- १४३. तथा सक्कर वे वालुक एक, दोय धूम इक तम संपेख। तथा सक्कर वे वालुक एक, दोय धूम इक सप्तमीं देख।।
- १४४. तथा सक्कर इक वालुक तीन, एक धूम इक तम मलीन। तथा सक्कर इक वालुक तीन, एक धूम इक सप्तमी चीन।।
- १४५. तथा सक्कर वे वालुक दोय, एक धूम इक तम अवलोय। तथा सक्कर वे वालुक दोय, एक धूम इक सप्तमी होय।।
- १४६. तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक धूम इक तमा उवेख । तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक धूम इक सप्तमी शेख ।। ए सक्कर वालुक धूम थी २ भागा, दश विकल्प करि २० भागा कहा।। हिवै सक्कर वालुक तम थी १ भागो, दश विकल्प करि १० भागा कहै छै-
- १४७. तथा सक्कर इक वालुक एक, एक तमा त्रिहुं सप्तमी लेख। तथा सक्कर इक वालुक एक, दोय तमा वे सप्तमी शेख।।
- १४८. तथा सक्कर इक वालुक दोय, एक तमा वे सप्तमी जोय। तथा सक्कर वे वालुक एक, एक तमा वे सप्तमी पेख।।
- १४६. तथा सक्कर इक वालुक एक, तीन तमा इक सप्तमी लेख। तथा सक्कर इक वालुक दोय, दोय तमा इक सप्तमीं होय।।
- १५०. तथा सक्कर वे वालुक एक, दोय तमा इक सप्तमी पेख। तथा सक्कर इक वालुक तीन, एकतमा इक सप्तमी चीन।।
- १५१. तथा सक्कर त्रिण वालुक दोय, एक तमा इक सप्तमी सोय। तथा सक्कर त्रिण वालुक एक, एक तमा इक सप्तमी शेख।।

ए सक्कर वालुक तम थी १ भागो, दश विकल्प करि १० भागा कह्या । एव सक्कर थी १० भागा, दश विकल्प करि १०० भागा कह्या ।

हिवै वालुक थी ४ भांगा, दश विकल्प करि ४० भागा। वालुक थी ४, ते किसा? वालुक पक थी ३, वालुक धूम थी १। वालुक पक थी ३, ते किसा? वालुक पक धूम थी २ वालुक पक तम थी १— एव वालुक पक थी ३ भागा। तिहा वालुक पंक धूम थी २ भागा दश विकल्प करि कहै छै —

१५२. तथा वालुक इक पंके एक, एक धूम त्रिण तमा उवेख। तथा वालुक इक पंके एक, एक धूम त्रिण सप्तमी शेख।।

- १५३. तथा वालुक इक पंके एक, दोय धूम वे तमा विशेख। तथा वालुक इक पंके एक, दोय धूम वे सप्तमी लेख।।
- १५४. तथा वालुक इक पके दोय, एक धूम बे तमा जोय। तथा वालुक इक पंके दोय, एक धूम बे सप्तमी होय।।
- १५५. तथा वालुक वे पंके एक, एक धूम वे तमा पेख। तथा वालुक वे पंके एक, एक धूम वे सप्तमी शेख।।
- १५६. तथा वालुक इक पंके एक, तीन धूम इक तमा उवेख। तथा वालुक इक पके एक, तीन धूम इक सप्तमी लेख।।
- १५७. तथा वालुक इक पंके दोय, दोय धूम इक तमा जोय। तथा वालुक इक पंके दोय, दोय धूम इक सप्तमी होय।।
- १५८. तथा वालुक वे पंके एक, दोय धूम इक तमा उवेख। तथा वालुक वे पंके एक, दोय धूम इक सप्तमी शेख।।
- १५६. तथा वालुक इक पंके तीन, एक ध्म इक तमा दुचीन। तथा वालुक इक पके तीन, एक ध्म इक सप्तमी लीन।।
- १६०. तथा वालुक वे पंके दोय, एक धूम इक तमा होय। तथा वालुक वे पंके दोय, एक धूम इक सप्तमी जोय।।
- १६१. तथा वालुक त्रिण पंके एक, एक धूम इक तमा विशेख।
  तथा वालुक त्रिण पंके एक एक धूम इक सप्तमी शेख।।
  ए वालुक पक धूम थी २ भागा, दश विकल्प करि २० भागा कहा।
  हिवै वालुक पंक तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कहै छै—
- १६२. तथा वालुक इक पंके एक, एक तमा त्रिण सप्तमीं शेख। तथा वालुक इक पके एक, दोय तमा वे सप्तमी शेख।।
- १६३. तथा वालुंक इक पंके दोय, इक तमा वे सप्तमी होय। तथा वालुंक वे पंके एक, एक तमा वे सप्तमी शेख।।
- १६४. तथा वालुक इक पंके एक, तीन तमा इक सप्तमी पेख। तथा वालुक इक पंके दोय, दोय तमा इक सप्तमी जोय।
- १६५. तथा वालुक वे पंके एक, दोय तमा इक सप्तमी पेख। तथा वालुक इक पके तीन, एक तमा इक सप्तमी लीन।।
- १६६. तथा वालुक वे पंके दोय, एक तमा इक सप्तमी होय। तथा वालुक त्रिण पंके एक, एक तमा इक सप्तमी शेख।।

ए वालुक पक तम थी १ भागो, दश विकल्प करि १० भागा कहा.। ए वालु

पक थी ३ भागा, दश विकल्प करि ३० भागा कह्या।

हिवै वालुक धूम थी १ भागो, दश विकल्प करि १० भागा कहै छै-

- १६७. तथा वालुक इक धूमा एक, एक तमा त्रिण सप्तमी देख। तथा वालुक इक धूमा एक, दोय तमा वे सप्तमी शेख।।
- १६८. तथा वालुक इक धूमा दोय, एक तमा वे सप्तमी होय। तथा वालुक वे धूमा एक, एक तमा वे सप्तमी पेख।।
- १६६. तथा वालुक इक धूमा एक, तीन तमा इक सप्तमी शेख। तथा वालुक इक धूमा दोय, दोय तमा इक सप्तमी होय।।
- १७०. तथा वालुक वे धूमा एक, दोय तमा इक सप्तमी पेख। तथा वालुक इक धूमा तीन, एक तमा इक सप्तमी लीन।।

१७१. तथा वालुक वे धूमा दोय, एक तमा इक सप्तमीं गोय। तथा वालुक त्रिण धुमा एक, एक तमा इक सप्तमी लेख॥

ए वालुक घूम थी १ भागो, १० विकला करि १० भागा कहा। एव वालुक थी ४ भागा दय विकल्प करि ४० भागा कहा।

हिवै पक थी १ भागो, दश विकल्प करि १० भागा कहै छै-

१७२ तथा पंक इक घूमा एक, एक तमात्रिण सप्तमी शेख। तथा पंक इक घूमा एक, दोय तमा वे सप्तमी लेख।।

१७३. तथा पंक इक धूमा दोय, एक तमा वे सप्तमी मोय। तथा पंक वे धूमा एक, एक तमा वे सप्तमी देख।।

१७४. तथा पंक इक धूमा एक, तीन तमा इक सप्तमी गख।

तथा पंक इक धूमा दोय, दोय तमा इक सप्तमी सोय।। १७५. तथा पक वे धूमा एक, दोय तमा इक सप्तमी लेख।

१७५. तथा पकव धूमा एक, दाय तमा इक सप्तमालखा तथापंक इक धूमा तीन, एक तमा इक सप्तमीलीन ॥

१७६. तथा पंक वे घूमा दोय, एक तमा इक सप्तमी सोय। तथा पंक त्रिण घूमा एक, एक तमा इक सप्तमी शेख।।

ए पक थी १ भागो दण विकल्प करि १० भागा कहा। एव एकेक विकल्प करि रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालुक थी ४, पक थी १ - ए ३५ भागा, ते दण विकल्प करि रत्न थी २०० भागा। सक्कर थी १०० भागा। वानुक थी ४० भागा। पक थी १० भागा। एवं सर्व ३५० चडकसजोगिया भागा जाणवा। हिवै एहनो यंत्र कहै छै—

वा०—छह जीव नां चउकसंयोगिक, तेहनां विकल्प तो दण, भागा नाढा तीन सी। एक-एक विकल्प नां भागा पैतीम पैनीम हुवै ते मार्ट दण विकला ना ३५० भांगा हुवै। एक-एक विकल्प ना रत्न थी २०, सक्कर थी १०, बालुक थी ४, पंक थी १— एव ३५। रत्न थी २० ते किमा ? रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ६, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी १— एवं २० रत्न थी एक एक विकत्प नां हुवै। रत्न गक्कर थी १० ते किमा ? रत्न सक्कर वालुक थी ४, रत्न मक्कर पक थी ३, रत्न मक्कर धूम थी २, रत्न सक्कर तम थकी १ – एव १० एक-एक विकल्प नां हुवै। तिहां रत्न मक्कर वालुक थकी ४ भांगा प्रथम विकल्प करि कहि

१	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक ३ पंक
ર	ર	१ रत्न, १ सबकर, १ वालुक, ३ धूम
na-	37	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, ३ तम
8	8	१ रहन, १ सक्कर, १ वालुक,३ सप्तमी

हिवै	द्वितीय	विकल्पे ४ भागा
प्र	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, २ पक
Ę	٦	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, २ धूम
ও	₹	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, २ तम
4	٧	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, २ सप्तमी
हिवै	तृतीय	विकल्पे ४ भागा
3	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक २ पक
१०	ર	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, २ धूम
११	ą	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, २ तम
१२	४	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, २ सप्तमी
हि वै	चतुर्थ	विकल्पे ४ भागा
१३	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक
१४	२	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ धूम
१५	३	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ तम
१६	8	२ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, २ सप्तमी
हिर्द	पचम	विकल्पे ४ भागा
१७	1	१ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, १ पक
१५	२	१ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम
38	३	१ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, १ तम
२०	8	१ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, १ सप्तमी
हि	वै पष्ठ	विकल्पे ४ भागा
२१	१	१ रत्न, २ सक्कर, २ वालु, १ पक
२२	२	१ रत्न, २ सक्कर, २ वालु, १ धूम
२३	<b>३</b>	१ रत्न, २ सक्कर, २ वालु, १ तम
२४	8	१ रत्न, २ सक्कर, २ वालु, १ सप्तमी

हिनै	सप्तम	विकल्पे ४ भागा
२५	१	२ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पंक
२६	२	२ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ घूम
२७	ą	२ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ तम
२५	४	२ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ सप्नमी
हिवै	अप्टम	विकल्पे ४ भागा
२६	१	१ रत्न, ३ स≆कर, १ वालु, १ पंक
<sub>न्</sub> ०	ર	१ रत्न, ३ सक्कर, १ वालु, १ घूम
₹१.	ħ,	१ रत्न, ३ सक्कर, १ वालु, १ तम
३२	४	१ रत्न, ३ सक्कर, १ व.लु, १ सप्तमी
हिवै	नवम	विकल्पे ४ भागा
३३	१	२ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पक
38	२	२ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ धूम
३५	₹	२ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ तम
३६	8	२ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ सप्तमी
हिवै	दशम	विकल्पे ४ भागा
३७	१	३ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक
३८	२	३ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ घूम
3€	ą	३ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ तम
४०	४	३ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ सप्तमी
ए र	त्न सक्व	र वालुक थी ४ भागा दश विकल्प करि ४० भागा कह्या।

हिवै	रत्न स	क्कर थी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—
४१	१	१ रत्न, १ सक्कर १ पंक, ३ धूम
४२	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ पक, ३ तम
४३	ηγ	१ रत्न, १ सक्कर, १ पक, ३ सप्तमी
हिवै	द्वितीय	विकल्पे
४४	१	१ रत्न, १ मक्कर, २ पक, २ धूम
<mark>የ</mark> ሂ	٦,	१ रत्न, १ सक्कर, २ पक, २ तम
४६	a	१ रत्न, १ सक्कर, २ पक, २ सप्तमी
हिवै	तृतीय	विकल्पे
४७	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, २ घूम
४८	ર	१ रत्न, २ सक्कर, १ पक, २ तम
38	ą	१ रत्न, २ सक्कर, १ पक, २ सप्तमी
हिर्व	चतुर्यं	विकल्पे
५०	१	२ रत्न, १ मक्कर, १ पक, २ घूम
५१	२	२ रत्न, १ मक्कर, १ पंक,२ तम
પ્રર	3,	२ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, २ सप्तमी
हिर्द	पचम	विकल्पे ३ भागा
प्रइ	2	१ रत्न, १ सक्कर, ३ पक, १ धूम
7,8	२	१ रत्न, १ सक्कर, ३ पक, १ तम
५५	ą	१ रत्न, १ सक्कर, ३ पक, १ मप्तमी
हिं	वै ५ष्ठ	विकल्पे ३ भांगा
प्रह	१	१ रतन, २ सकरूर, २ पंक, १घून
५७	ર	१ रत्न, २ सक्कर, २ पंक, १ तम
ሂና	त्रभ	१ रत्न, २ सक्कर, २ पक, १ मप्तमीं

१       २ रत्त, १ सकर, २ पंक १ तम         ६०       २       २ रत्त, १ सकर, २ पंक १ तम         ६१       ३       २ रत्त, १ सकर, २ पक, १ सप्तमी         हिवै अप्टम विकली ३ भागा       ६२       १       १ रत्त, ३ सकर, १ पक, १ धूम         ६३       २       १ रत्त, ३ सकर, १ पक, १ तम         ६४       ३       १ रत्त, ३ सकर, १ पंक, १ यूम         ६५       १       २ रत्त, २ सकर, १ पंक, १ तम         ६७       ३       २ रत्त, २ सकर, १ पक, १ प्क, १ तम         ६७       ३       २ रत्त, १ सकर, १ पक, १ यूम         ६८       २       ३ रत्त, १ सकर, १ पक, १ पक, १ यूम         ६८       २       ३ रत, १ सकर, १ पक, १ तम         ७०       ३       ३ रत, १ सकर, १ पक, १ न्त्रमी         हिवै रत मकर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प किल्प किल् छै—         ७१       १       १ रत, १ सकर, १ धूम, ३ तम         ७२       २       १ रत, १ सकर, १ धूम, ३ सप्तमी         हिवै दितीय विकल्पे २ भागा       १ प्त, १ सकर, १ धूम, ३ सप्तमी	हिर्द	रे सप्तम	विकल्पे ३ भागा
६१       ३       २ रतन, १ सनकर, २ पक, १ मप्तमी         हिबै अप्टम विकल्पे ३ भागा         ६२       १       १ रतन, ३ सक्कर, १ पक, १ धूम         ६३       २       १ रतन, ३ सक्कर, १ पक, १ सप्तमी         ६४       ३       १ रतन, ३ सक्कर, १ पंक, १ धूम         ६५       १       २ रतन, २ सक्कर, १ पंक, १ तम         ६७       ३       २ रतन, २ सक्कर, १ पंक, १ तम         ६७       ३       २ रतन, १ सक्कर, १ पंक, १ धूम         ६६       २       ३ रतन, १ सक्कर, १ पंक, १ तम         ७०       ३       ३ रतन, १ सक्कर, १ पंक, १ नप्तमी         हिबै रतन सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कर्ह       छै—         ७१       १       १ रतन, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम         ७२       २       १ रतन, १ सक्कर, १ धूम, ३ सप्तमी	ય્રદ	\$	२ रत्त, १ सबकर, २ पक, १ धूम
हिबै अप्टम विकल्पे ३ भागा  ६२ १ १ रत्न, ३ सक्कर, १ पक, १ धृम  ६३ २ १ रत्न, ३ सक्कर, १ पक, १ तम  ६४ ३ १ रत्न, ३ सक्कर, १ पक, १ नप्नमी  हिबै नवम विकल्पे ३ भागा  ६५ १ २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ धूम  ६६ २ २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ तम  ६७ ३ २ रत्न, २ सक्कर, १ पक, १ धूम  ६६ १ ३ रत्न, २ सक्कर, १ पक, १ धूम  ६६ १ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ दूम  ६६ २ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ तम  ७० ३ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ नप्तमी  हिबै रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कर्ह  ७-  ७१ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम	६०	२	२ रत्न, १ सवकर, २ पंक १ तम
६२       १       १       रतन, ३ सक्कर, १ पक, १ धूम         ६४       ३       १ रतन, ३ सक्कर, १ पक, १ तम         ६४       ३       १ रतन, ३ सक्कर, १ पक, १ तम         ६५       १       २ रतन, २ सक्कर, १ पंक, १ तम         ६५       २       २ रतन, २ सक्कर, १ पंक, १ तम         ६७       ३       २ रतन, २ सक्कर, १ पक, १ धूम         ६०       ३       २ रतन, १ सक्कर, १ पक, १ धूम         ६०       २       ३ रतन, १ सक्कर, १ पंक, १ तम         ७०       ३       ३ रतन, १ सक्कर, १ पक, १ मप्तमी         हिवै रतन सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प किर कि       छै—         ७१       १ रतन, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम         ७२       २       १ रतन, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम         ७२       २       १ रतन, १ सक्कर, १ धूम, ३ सप्तमी	६१	3	२ रत्न, १ सदकर, २ पक, १ सप्तमी
६३       २       १ रत्न, ३ सक्कर, १ पक, १ तम         ६४       ३       १ रत्न, ३ सक्कर, १ पक, १ सप्तमी         १       १       २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ धूम         ६६       २       २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ नम         ६७       ३       २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ नप्तमी         १       १       २ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ धूम         १०       ३       २ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम         १०       ३       २ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ नप्तमी         १०       ३       २ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ नप्तमी         १०       ३       २ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम         १०       १       १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम         १०       २       १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम         १०       २       १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम	हिबै	अप्टम	विकलो ३ भागा
६४       ३       १ रत्त, ३ सक्कर, १ पक, १ सप्तमी         हिर्व नवम विकल्पे ३ भागा       ६५       १       २ रत्त, २ सक्कर, १ पंक, १ वम         ६५       २       २ रत्त, २ सक्कर, १ पंक, १ तम         ६७       ३       २ रत्त, २ सक्कर, १ पंक १ सप्तमी         हिर्व दणम विकल्पे ३ भागा         ६०       २       २ रत्त, १ सक्कर, १ पंक, १ तम         ७०       ३       २ रत्त, १ सक्कर, १ पंक, १ तम         ७०       ३       २ रत्त, १ सक्कर, १ पंक, १ नप्तमी         हिर्व रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कर्ह       छै—         ७१       १       १ रत्त, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम         ७२       २       १ रत्त, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम	६२	१	१ रत्न, ३ सक्कर, १ पक, १ धृम
हिवै नवम विकत्पे ३ मागा  ६५ १ २ रत्न, २ मक्कर, १ पंक, १ घूम  ६६ २ २ रत्न, २ मक्कर, १ पंक, १ नम  ६७ ३ २ रत्न, २ मक्कर, १ पक १ मप्तमी  हिवै दणम विकत्पे ३ भागा  ६६ १ ३ रत्न, १ मक्कर, १ पक, १ घूम  ६६ २ ३ रत्न, १ मक्कर, १ पक, १ घूम  ६६ २ ३ रत्न, १ मक्कर, १ पंक, १ तम  ७० ३ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ मप्तमी  हिवै रत्न मक्कर घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कर्ह  छै—  ७१ १ रत्न, १ सक्कर, १ घूम, ३ तम	ÉŹ	२	१ रत्न, ३ मक्कर, १ पक, १ तम
६५       १       २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ घूम         ६६       २       २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ नम         ६७       ३       २ रत्न, २ सक्कर, १ पंक १ सप्तमी         हिवै दणम विकल्पे ३ भागा         ६६       १       ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ धूम         ६०       ३       २ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम         ७०       ३       ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ नप्तमी         हिवै रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प किर किर्ह       छै—         ७१       १       १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम         ७२       २       १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ सप्तमी	६४	nr	१ रत्त, ३ सक्कर, १ पक, १ सप्तमी
<ul> <li>६६ २ २ रत्न, २ मक्कर, १ पंक, १ नम</li> <li>६७ ३ २ रत्न, २ मक्कर, १ पंक १ मप्तर्मा</li> <li>हिवै दणम विकल्पे ३ भागा</li> <li>६६ १ ३ रत्न, १ मक्कर, १ पंक, १ तम</li> <li>५० ३ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम</li> <li>७० ३ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ नप्तमी</li> <li>हिवै रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रयम विकल्प करि कर्ह छै—</li> <li>५१ १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम</li> <li>५२ २ १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम</li> </ul>	हिवै	नवम (	विकल्पे ३ भागा
६७       ३       २ रत्न, २ सक्कर, १ पक १ सप्तमी         हिवै दणम विकल्पे ३ भागा         ६८       १       ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ धूम         ६०       ३       ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ नप्तमी         ७०       ३       ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ नप्तमी         हिवै रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प किर कहें       छै—         ७१       १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम         ७२       २       १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ सप्तमी	દ્દપ્	१	२ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ घूम
हिबै दणम विकल्पे ३ भागा  ६६ १ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ धूम  ६६ २ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम  ७० ३ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ मप्तमी  हिबै रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कर्ह  छै—  ७१ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम  ७२ २ १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ सप्तमी	દદ્	ર	२ रत्न, २ सक्कर, १ पंक, १ तम
६६       २       ३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम         ७०       ३       ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ सप्तमी         हिवै रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रयम विकल्प करि कहे       छै—         ७१       १       १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम         ७२       २       १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ सप्तमी	દહ	9,	२ रत्न, २ सक्कर, १ पक १ सप्तमी
६६       २       ३       रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम         ७०       ३       ३       रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ सप्तमी         हिवै रत्न सक्कर धूम थी २ भागा प्रयम विकल्प करि कही छै—         ७१       १       १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम         ७२       २       १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ सप्तमी	हिवै	दणम (	वेकल्पे ३ भागा
७० ३ ३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ नप्तमी  हिवै रत्न सक्कर घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प किर कहें छै—  ७१ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ घूम, ३ तम  ७२ २ १ रत्न, १ सक्कर, १ घूम, ३ सप्तमी	६८	8	३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ धूम
हिवै रत्न सकर धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कर्ह छै—  ७१ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम  ७२ २ १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ सप्तमी	६६	२	३ रत्न, १ सक्कर, १ पंक, १ तम
छै—  ७१ १ १ रस्त, १ सक्कर, १ घूम, ३ तम  ७२ २ १ रस्त, १ सक्कर, १ घूम, ३सप्तमी	७०	3	३ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ मप्तमी
७२ २ १ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३मप्तमी		रहन म -	करु धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कही
	७१	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, ३ तम
हिवै द्वितीय विकल्पे २ भांगा	७२	۶	१ रत्न, १ सक्कर, १ घूम, ३सप्तमी
	हिवै	द्वितीय	विकल्पे २ भांगा
७३ १ १ रतन, १ सक्कर, २ धूम, २ तम	৬३	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ धूम, २ तम
७४ २ १ रत्न, १ मक्कर, २ धूम, २ सप्तनी	७४	२	१ रत्न, १ मक्कर, २ घूम, २ सप्तनी

हिवै	तृतीय	विकल्पे २ भागा
'७५	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ धूम, २ तम
७६	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ घूम, २ सप्तमी
हिवै	चतुर्थ	विकल्पे २ भागा
७७	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ धूम २ तम
<b>৩</b> ৯	२	२ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, २ सातमी
हिवै	पचम	विकल्पे २ भागा
30	१	१ रत्न, १ सक्कर, ३ धूम, १ तम
<b>ភ</b> ០	२	१ रत्न, १ सक्तर, ३ धूम, १ सप्तमी
हिवै	पष्ठ f	वकल्पे २ भागा
5१	१	१ रत्न, २ सक्कर, २ धूम, १ तम
्पर	२	१ रत्न, २ सक्कर, २ धूम, १ सप्तमी
हिवै	सप्तम	विकल्पे २ भागा
<b>८</b> ३	१	२ रत्न, १ सक्कर, २ धून, १ तम
58	२	२ रत्न, १ सक्कर, २ धूम, १ सप्तमी
हिवै	अप्टम	विकल्पे २ भागा
5¥	१	१ रत्न, ३ सक्कर, १ घूम, १ तम
<del>८</del> ६	२	१ रत्न, ३ सक्कर, १ धूम, १ सप्तमी
हिवै	नवम '	विकल्पे २ भागा
<b>দ</b> ७	१	२ रत्न, २ सक्कर, १ धून, १ तम
<b>5</b> 5	२	२ रत्न, २ सक्कर, १ धूम, १ सप्तमी
हिवै	दशम	विकल्पे २ भागा
58	१	३ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, १ तम
03	२	३ रत्न, १ सक्कर, १ धूम, १ सप्तमी

हिवै	रत्न	सक्कर तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे				
१३	६१ १ १ रतन, १ सक्कर, १ तम, ३ सप्तमी					
हिवै	द्वितीय	प विकल्पे १ भांगो				
६२	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ तम, २ सप्तमी				
हिवै	तृतीय	। विकल्पे १ भांगो				
€₹	१	१ रत्न, २ सक्कर, १ तम, २ सप्तमी				
हिर्द	ो चतुथ	र्विकल्पे १ भागो				
४३	१	१ रत्न, १ सक्कर, २ तम, २ सप्तमी				
हिवै	पचम	विकल्पे एक भांगो				
દપ્ર	१	१ रत्न, १ सक्कर, ३ तम, १ सप्तमी				
हिवै	पष्ठ (	विकल्पे एक भागो				
६६	६६ १ १ रत्न, २ सक्कर, २ तम, १ सप्तमी					
हिवै	सप्तम	विकल्पे १ भागो				
હ૭	६७ १ २ रतन, १ सक्कर, २ तम, १ सप्तमी					
हिनै	अष्टम	विकल्पे एक भागो				
६६	१	१ रत्न, ३ सक्कर, १ तम, १ सप्तमी				
हिवै	नवम (	वकल्पे १ भागो				
33	१	२ रत्न; २ सक्कर, १ तम, १ सप्तमी				
	दशम 1	विकल्पे एक भागो				
१००	१	३ रत्न, १ सक्कर, १ तम, १ सप्तमी				
एव र कह्या		कर थी १० भांगा, दश विकल्प करि १०० भागा				

किस वालु	ा <sup>?</sup> रत कतमः	वालुक थी ६। एकेक विकल्प करि ६ मागा ते न वालुक पक थी ३, रत्न वालुक घूम थी २, रत्न थी १—एव ६। रत्न वालुक पक थी ३ भागा प करि कहै छै—
१०१	१	१ रत्न, १ वालुक, १ पक, ३ धूम
१०२	२	१ रत्न, १ वालुक, १ पक, ३ तम
१०३	भ	१ रत्न, १ वालुक, १ पक, ३ सप्तमी
हिवै	द्वितीय	विकल्पे तीन भागा
१०४	१	१ रत्न, १ वालुक, २ पक, २ धूम
१०५	२	१ रत्न, १ वालुक, २ पक, २ तम
१०६	₹	१ रत्न, १ वालुक, २ पक, २ सप्तमी
हिं	तृतीय	विकल्पे ३ भागा
१०७	१	१ रत्न, २ वालु, १ पक, २ धूम
१०५	२	१ रत्न, २ वालु, १ पक, २ तम
१०६	37	१ रत्न, २ वालु, १ पक, २ सप्तमी
हिर	ने चतुर्थ	विकल्पे ३ भागा
११०	१	२ रत्न, १ वालु, १ पक, २ धूम
१११	२	२ रत्न, १ वालु, १ पक, २ तम
११२	3,	२ रत्न, १ वालु, १ पक, २ सप्तमी
हिर्व पचम विकल्पे ३ भागा		
११३	1	१ रत्न, १ वालु, ३ पक, १ घूम
११४	२	१ रत्न, १ वालु, ३ पक, १ तम
११५	ą	१ रत्न, १ वालु, ३ पक, १ सप्तमी

हिर्दे पष्ठ विकल्पे ३ भागा
ाह्य पण्डायमस्य ५ चामा
११६ १ १ रत्न, २ वालु, २ पंक, १ धूम
११७   २   १ रत्न, २ वालु, २ पक, १ तम
११८ ३   १ रत्न, २ वालु, २ पंक, १ मप्तमी
हिवै सप्तम विकल्पे ३ भागा
११६   १   २ रत्न, १ बालु, २ पक, १ धूम
१२० २ २ रस्त, १ वालु, २ पंक, १ तम
१२१ ३ २ रत्न, १ वालु, २ पक, १ सप्तमी
हिवै अप्टम विकल्पे तीन भागा
१२२ १ १ रत्न, ३ वालु, १ पंक, १ घूम
१२३   २   १ रत्न, ३ वालु, १ पक, १ तम
१२४   ३   १ रत्न, ३ वालु, १ पंक, १ सप्तमी
हिवै नवम विकल्पे ३ भागा
१२५   १   २ रत्न, २ वालु, १ पक, १ घूम
१२६ २ २ रत्न, २ बालु, १ पक, १ तम
१२७ ३ २ रत्न, २ वालु, १ पक, १ सप्तमी
हिनै दशम विकल्पे ३ भागा
१२८ १ ३ रत्न, १ वालु, १ पक, १ धूम
१२६   २   ३ रत्न, १ वालु, १ पक, १ तम
१३० ३ ३ रत्न, १ वालु, १ पक, १ सप्तमी
हिवै रत्त वालुक घूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहे छैं —
१३१ १ १ रत्न, १ वालु, १ घूम, ३ तम
१३२ २ १ रत्न, १ वालु, १ घूम, ३ सप्तमी

हिवै द्वितीय विकल्पे २ भांगा  १३३ १ १ रत्न, १ वालु, २ धूम, २ तम  १३४ २ १ रत्न, १ वालु, २ धूम, २ सप्तमी  हिवै तृतीय विकल्पे २ भागा  १३४ १ १ रत्न, २ वालु, १ धूम, २ तम  १३६ २ १ रत्न, २ वालु, १ धूम, २ सप्तमी
१३४ २ १ रत्न, १ वालु, २ घूम, २ सप्तमी हिवै तृतीय विकल्पे २ भागा १३५ १ १ रत्न, २ वालु, १ धूम, २ तम
हिवै तृतीय विकल्पे २ भागा
१३५ १ १ रत्न, २ वालु, १ धूम, २ तम
१३६ २ १ रत्न, २ वालु, १ धूम, २ सप्तमी
हिवै चतुर्थ विकल्पे २ भांगा
१३७   १   २ रत्न, १ वालु, १ घूम, २ तम
१३८ २ र रत्न, १ वालु, १ धूम, २ सप्तमी
हिवै पंचम विकल्पे २ भागा
१३६ १ १ रत्न, १ वालु, ३ धूम, १ तम
१४० २ १ रत्न, १ वालु, ३ धूम, १ सप्तमी
हिवै पष्ठ विकल्पे २ भागा
१४१   १   १ रत्न, २ वालु, २ घूम, १ तम
१४२ २ १ रत्न, २ वालु, २ धूम, १ सप्तमी
हिवै सप्तम विकल्पे २ भागा
१४३ १ २ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ तम
१४४ २ २ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमी
हिवै अष्टम विकल्पे २ भागा
१४५ १ १ रत्न, ३ वालु, १ घूम, १ तम
१४६ २ १ रत्न, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी
हिवै नवम विकल्पे २ भागा
१४७   १   २ रत्न, २ वालु, १ घूम, १ तम
१४६ २ २ रत्न, २ वालु, १ धूम १ सप्तमी

हिवै	दशम	विकल्पे २ भागा
१४६	१	३ रत्न, १ वालु, १ धूम,१ तम
१५०	२	३ रत्न, १ वालु, १ घूम, १ मप्तमी
हिवै व	रत्न वार	नुक तम थी १ भागो प्रथम <sup>,</sup> विकल्प करि कहै छै—
१५१	8	१ रत्न, १ वालु, १ तम, ३ सप्तमी
द्विर्त	ोय विक	ल्पे १ भागो
१५२	१	१ रत्न, १ वाल्, २ तम, २ सप्तमी
तृती	य विक	त्पे १ भागो
१५३	१	१ रत्न, २ वालु, १ तम, २ सप्तमी
चतु	र्थ विक	ल्पे १ भागो
१५४	१	२ रत्न, १ वालु, १ तम, २ सप्तमी
पच	म विक	त्पे १ भागो
१५५	१	१ रत्न, १ वालु, ३ तम, १ सप्तमी
हिर्द	ो षष्ठ (	वकल्पे १ भागो
१५६	8	१ रत्न, २ वालु, २ तम, १ सप्तमी
हिं	रे सप्तम	विकल्पे १ भागो
१५७	8	२ रत्न, १ वालु, २ तम, १ सप्तमी
हिं	े अष्टम	विकल्पे १ भागो
१५५	१	१ रत्न, ३ वालु, १ तम, १ सप्तमी
हिं	नै नवम	विकल्पे १ भागो
१५६	१	२ रत्न, २ वालु, १ तम, १ सप्तमी
हिं	वै दशम	विकल्पे १ भागो
१६०	१	३ रत्न, १ वालु, १ तम, १ सप्तमी
ए रत	न वालु	क थी ६ भागा दश विकल्प करि ६० भागा कह्या।

हिवै	रत्न पक	थी एकेक विकल्प करि ३ भागा, ते किमा ?			
	रत्न पक घूम थी २, रत्न पक तम थी १-एव ३। तिहा रत्न				
पक व	गूम थी	२ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै			
१६१	٤	१ रत्न, १ पक, १ धूम, ३ तम			
१६२	₹	१ रत्न, १ पक, १ धूम, ३ मप्तमी			
हिवै	द्वितीय '	विकरप			
१६३	8	१ रत्न, १ पंक, २ घूम, २ तम			
१६४	٦	१ रत्त, १ पक, २ घूम, २ सप्तमी			
हिवै	तृतीय '	चेकरुप			
१६५	8	१ रत्न, २ पक, १ घूम, २ तम			
१६६	٦	१ रत्न, २ पक, १ धूम, २ सप्तमी			
हिर्व	चतुर्य	विकल्प			
१६७	१	२ रत्न, १ पंक, १ धूम, २ तम			
१६८	२	२ रत्न, १ पक, १ धूम, २ सप्तमी			
हिं	पचम '	विकल्प			
१६६	1 3	१ रत्न, १ पक, ३ घूम, १ तम			
१७०	२	१ रत्न, १ पंक, ३ धूम, १ मप्तमी			
हिं	र्वे पष्ठ	विकल्प			
१७१	8	१ रत्न, २ पक, २ धूम, १ तम			
१७२	२	१ रत्न, २ पक, २ घूम, १ सप्तमी			
हि	वे सप्तम	। विकल्प			
१७३	<b>१</b>	२ रत्न, १ पक, २ धूम, १ तम			
१७४	े   २	२ रत्न, १ पक, २ धूम, १ सप्तमी			
f	हुबै अप्ट	म विकत्प			
१७४	.   १	१ रतन, ३ पक, १ घूम, १ तम			
१७६	२	१ रत्न, ३ पक, १ धूम, १ सप्तमी			

१७८ ३ २ र <i>त्न</i> , २ पक, १ धूम, १ सप्तमी हिर्वे दणम विकल्प	C-A
हिंचै दणम विकल्प  १७६ १ ३ रत्न, १ पक, १ घूम, १ सप्तमी  १७६ १ ३ रत्न, १ पक, १ घूम, १ तम  १८० २ ३ रत्न, १ पंक, १ घूम, १ मप्तमी  हिंचै रत्न पक तम श्री १ भागो प्रथम विकल्प कर्न कर्न क्रे छै—  १८१ १ १ रत्न, १ पंक, १ तम, १ मप्तमी  हिंचै वित्रीय विकल्प  १८४ १ १ रत्न, १ पंक, १ तम, १ सप्तमी  हिंचै पंचम विकल्प  १८५ १ १ रत्न, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमी  हिंचै पप्ठ विकल्प  १८६ १ १ रत्न, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमी  हिंचै सप्प विकल्प  १८६ १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ सप्तमी  हिंचै सप्प विकल्प  १८६ १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी  हिंचै सप्प विकल्प  १८६ १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी  हिंचै अप्टम विकल्प  १८६ १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी  हिंचै अप्टम विकल्प	ाह्य नयस ।यकरप
हिबै दणम विकल्प  १७६ १ ३ रत्न, १ पक, १ घूम, १ तम  १०० २ ३ रत्न, १ पंक, १ घूम, १ मध्तमी  हिबै रत्न पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्प किन् के छै—  १०१ १ १ रत्न, १ पक, १ तम, ३ मध्तमी  हिबै हितीय विकल्प  १०३ १ १ रत्न, १ पंक, १ तम, २ मध्तमी  हिबै पंचम विकल्प  १०५ १ १ रत्न, १ पंक, ३ तम, १ सध्तमी  हिबै पण्ठ विकल्प  १०६ १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ सध्तमी  हिबै सप्म विकल्प  १०० १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ सध्तमी  हिबै सप्म विकल्प  १०० १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ सध्तमी  हिबै सप्म विकल्प  १०० १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ सध्तमी  हिबै सप्म विकल्प  १०० १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ सध्तमी  हिबै सप्म विकल्प  १०० १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ सध्तमी  हिबै अष्टम विकल्प	१७७ १ २ रस्त, २ पंक, १ घूम, १ तम
१७६   १   ३ रत्न, १ पक, १ घूम, १ तम  १८०   २   ३ रत्न, १ पंक, १ घूम, १ मध्तमी  हिवै रत्न पक तम श्री १ भागो प्रथम विकल्प किर कहै छै—  १८१   १   १ रत्न, १ पक, १ तम, ३ मध्तमी  हिवै द्वितीय विकल्प  १८३   १   १ रत्न, १ पंक, १ तम, २ मध्नमी  हिवै चतुर्य विकल्प  १८४   १   १ रत्न, १ पंक, १ तम, १ सध्तमी  हिवै पण्ठ विकल्प  १८६   १   १ रत्न, १ पंक, ३ तम, १ सध्तमी  हिवै पण्ठ विकल्प  १८६   १   १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ मध्नमी  हिवै सध्नम विकल्प  १८६   १   १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ मध्नमी  हिवै अध्टम विकल्प  १८८   १   १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ मध्नमी  हिवै अध्टम विकल्प	१७ =   ३   २ रत्न, २ पक, १ धूम, १ मप्तमी
हिर्च रस्त पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्प किर कहे छै—  १६१ १ १ रस्त, १ पक, १ तम, ३ मप्तमी  हिर्च द्वितीय विकरप  १६२ १ १ रस्त, १ पंक, २ तम, २ मप्तमी  हिर्च तृतीय विकरप  १६३ १ १ रस्त, २ पंक, १ तम, २ मप्तमी  हिर्च चतुर्य विकल्प  १६४ १ १ रस्त, १ पंक, १ तम, २ सप्तमी  हिर्च पंचम विकल्प  १६४ १ १ रस्त, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमी  हिर्च पण्ठ विकल्प  १६६ १ १ रस्त, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी  हिर्च अप्टम विकल्प  १६६ १ १ रस्त, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी  हिर्च अप्टम विकल्प  १६६ १ १ रस्त, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी	हिवै दणम विकल्प
हिबै रत्न पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्प किर कहै छै—  १६१ १ १ रत्न, १ पक, १ तम, ३ मप्तमी  हिबै द्वितीय विकरप  १६२ १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, २ मप्तमी  हिबै चतुर्थ विकल्प  १६५ १ १ रत्न, १ पंक, १ तम, १ सप्तमी  हिबै पप्ठ विकल्प  १६६ १ १ रत्न, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमी  हिबै सप्तम विकल्प  १६६ १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ सप्तमी  हिबै सप्तम विकल्प  १६६ १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ सप्तमी  हिबै सप्तम विकल्प  १६६ १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ सप्तमी  हिबै सप्तम विकल्प  १६६ १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ सप्तमी  हिबै अप्टम विकल्प  १६६ १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ सप्तमी	१७६   १   ३ रत्न, १ पक, १ घूम, १ तम
१	१८० २ ३ रहन, १ पंक, १ धूम, १ मप्तमी
हिवै द्वितीय विकरप  १८२ १ १ रतन, १ पंक, २ तम, २ मप्तमी  हिवै तृतीय विकरप  १८३ १ १ रतन, २ पंक, १ तम, २ गप्तमी  हिवै चतुर्य विकल्प  १८४ १ २ रतन, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पंचम विकल्प  १८५ १ १ रतन, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पप्ठ विकल्प  १८६ १ १ रतन, २ पंक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्प  १८७ १ २ रतन, १ पंक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्प  १८७ १ २ रतन, १ पंक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकल्प  १८६ १ १ ररन, १ पंक, २ तम, १ सप्तमी	हिये रत्न पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्प किर कहै छै-
१६२ १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, २ मध्नमी  हिवै तृतीय विकत्प  १६३ १ १ रत्न, २ पंक, १ तम, २ गप्नमी  हिवै चतुर्यं विकल्प  १६४ १ २ रत्न, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पंचम विकल्प  १६६ १ १ रत्न, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्न विकल्प  १६६ १ १ रत्न, २ पंक, २ तम, १ मप्नमी  हिवै सप्न विकल्प  १६७ १ २ रत्न, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी  हिवै अप्टम विकल्प  १६६ १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी	१८१   १   १ रतन, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी
हिवै तृतीय विकत्प  १८३ १ १ रहन, २ पंक, १ तम, २ गप्नमी  हिवै चतुर्य विकल्प  १८४ १ २ रहन, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पंचम विकल्प  १८५ १ १ रहन, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पप्ठ विकल्प  १८६ १ १ रहन, २ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्प  १८७ १ २ रहन, १ पंक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकल्प  १८८ १ १ रहन, १ पंक, २ तम, १ सप्तमी	हिबै द्वितीय विकरप
१८३ १ १ रहन, २ पंक, १ तम, २ गप्तमी  हिवै चतुर्य विकल्प  १८४ १ २ रहन, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पंचम विकल्प  १८५ १ १ रहन, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पण्ठ विकल्प  १८६ १ १ रहन, २ पक, २ तम, १ मप्तमी  हिवै सप्तम विकल्प  १८७ १ २ रहन, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी  हिवै अप्टम विकल्प  १८८ १ १ रहन, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी	१८२ १ १ रत्न, १ पंक, २ तम, २ मध्तमी
हिन चतुर्थ विकल्प १६४ १ र रतन, १ पक, १ तम, २ सप्तभी हिन पंचम विकल्प १६४ १ १ रतन, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमी हिन पण्ठ विकल्प १६६ १ १ रतन, २ पक, २ तम, १ मप्तमी हिन सप्तम विकल्प १६७ १ २ रतन, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी हिन अप्टम विकल्प १६६ १ १ रतन, ३ पक, १ तम, १ मप्तमी	हिवै तृतीय विकटप
१६४ १ २ रत्न, १ पक, १ तम, २ सप्तभी  हिवै पंचम विकल्प  १६५ १ १ रत्न, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पण्ठ विकल्प  १६६ १ १ रत्न, २ पक, २ तम, १ मप्तमी  हिवै सप्तम विकल्प  १६७ १ २ रत्न, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी  हिवै अप्टम विकल्प  १६६ १ १ रत्न, ३ पक, १ तम, १ मप्तमी	१८३ १ १ रस्त, २ पंक, १ तम, २ मध्नमी
हिवे पंचम विकल्प १६५ १ १ रत्न, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमी हिवे पण्ठ विकल्प १६६ १ १ रत्न, २ पक, २ तम, १ मप्नमी हिवे सप्नम विकल्प १६७ १ २ रत्न, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी हिवे अप्टम विकल्प १६६ १ १ रत्न, ३ पक, १ तम, १ मप्तमी	हिवै चतुर्य विकल्प
१६५ १ १ रत्न, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमी  हिर्चे पष्ठ विकल्प  १६६ १ १ रत्न, २ पक, २ तम, १ मप्नमी  हिर्वे सप्तम विकल्प  १६७ १ २ रत्न, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी  हिर्वे अप्टम विकल्प  १६६ १ १ रत्न, ३ पक, १ तम, १ मप्तमी	१८४ १ २ रतन, १ पक, १ तम, २ सप्तभी
हिर्च पष्ठ विकल्प  १८६ १ १ रत्न, २ पक, २ तम, १ मप्तमी  हिर्च सप्तम विकल्प  १८७ १ २ रत्न, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी  हिर्च अप्टम विकल्प  १८८ १ १ रत्न, ३ पक, १ तम, १ मप्तमी	हिबं पंचम विकल्प
१८६ १ १ रत्न, २ पक, २ तम, १ मप्तमी हिवै सप्तम विकल्प १८७ १ २ रत्न, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी हिवै अप्टम विकल्प १८८ १ १ रत्न, ३ पक, १ तम, १ मप्तमी	१८५ १ १ रतन, १ पंक, ३ तम, १ सप्तमी
हिवै सप्तम विकल्प १८७ १ २ रत्न, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी हिवै अप्टम विकल्प १८८ १ रत्न, ३ पक, १ तम, १ मप्तमी	हिचै पष्ठ विकल्प
१८७ १ २ रत्न, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी हिवे अप्टम विकल्प १८८ १ १ रत्न, ३ पक, १ तम, १ मप्तमी	१८६ १ १ रतन, २ पक, २ तम, १ मध्नमी
हिंदै अप्टम विकल्प १८८ १ रतन, ३ पक, १ तम, १ सप्तमी	हिर्वे सप्तम विकल्प
१८८ १ १ रतन, ३ पक, १ तम, १ मप्तमी	१८७ १ २ रतन, १ पंक, २ तम, १ मप्तमी
	हिवे अप्टम विकल्प
हिवै नवम विकरप	१८८ १ १ रतन, ३ पक, १ तम, १ मप्तमी
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	हिवै नवम विकरप
१८६ १ २ रहन, २ पक, १ तम, १ सप्तमी	१८६ १ २ रहन, २ पक, १ तम, १ सप्तमी

हिनै दशम विकल्पे
१६० १ ३ रत्न, १ पक, १ तम, १ सप्तमी
ए रत्न पक तम थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कह्या।
हिवै रत्न धुम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प
१६१ १ १ रत्न, १ धूम, १ तम, ३ सप्तमी
हिवै द्वितीय विवल्पे
१६२ १ १ रत्न, १ धूम, २ तम, २ सप्तमी
हिनै तृतीय विकल्पे
१६३ १ १ रत्न, २ धूम, १ तम, २ सप्तमी
हिवै चतुर्थ विकल्पे
१६४ १ २ रत्न, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी
हिवै पचम विकल्पे
१९५ १ १ रत्न, १ धूम, ३ तम, १ सप्तभी
हिवै पष्ठ विकल्पे
१६६ १ १ रत्न, २ धूम, २ तम, १ सप्तमी
हिवै सप्तम विकल्पे
१६७ १ २ रत्न, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी
हिवै अष्टम विकल्पे
१६५ १ रत्न, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमी
हिनै नवम विकल्पे
१६६ १ २ रत्न, २ घूम, १ तम, १ सप्तमी
हिवै दशम विकल्पे
२०० १ ३ रत्न, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी
ए रत्न थी २० भागा दश विकल्प करि २०० भागा कह्या ।

£-	<u> </u>	
ł		र थी एकेक विकल्प करि १० ते किसा? सक्कर
		६, सक्कर पक थी ३, सक्कर धूम थी १-एव १०।
		लुक थी ६ ते किसा <sup>?</sup> सक्कर वालुक पक थी ३,
		लुक धूम थी २, सक्कर वालुक तम थी १-एवं६।
		र वालुक पक थी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै
ਲੈ		
२०१	8	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, ३ धूम
२०२	२	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, ३ तम
२०३	ą	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, ३ सप्तमी
हिं	में द्वितीय	र विकल्प
२०४	8	१ सक्कर, १ वालु, २ पक, २ धूम
२०५	2	१ सक्कर, १ वालु, २ पक, २ तम
२०६	R	१ सक्कर, १ वालु, २ पक, २ सप्तमी
हिवै	तृतीय	विकल्प
२०७	१	१ सक्कर, २ वालु, १ पक, २ धूम
२०५	२	१ सक्कर, २ वालु, १ पक, २ तम
३०६	pγ	१ सक्कर, २ वालु, १ पक, २् सप्तमी
हिवै	चतुर्थ	विकल्प
२१०	१	२ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम
२११	२	२ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ तम
२१२	ą	२ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ सप्तमी
हिबै	पचम (	विकल्पे
२१३	१	१ सक्कर, १ वालु, ३ पक, १ घूम
२१४	२	१ सक्कर, १ वालु, ३ पक, १ तम
२१५	<b>३</b>	१ सक्कर, १ वालु, ३ पक, १ सप्तमी

हिवै	पष्ठ ि	चकल्पे
२१६	१	१ मक्कर, २ वालु, २ पंक, १ धूम
२१७	ર્	१ सक्कर, २ वालु, २ पक, १ तम
२१=	ź	१ मक्कर, २ वालु, २ पक, १ सप्तमी
हिंदी	सप्तम	विकल्पे
२१६	8	२ सक्तर, १ वालु, २ पक, १ धूम
२२०	२	२ मक्कर, १ वालु, २ पंक, १ तम
२२१	3	२ सक्कर, १ वालु, २ पंक, १ सप्तमी
हिर्व	अप्टम	विकल्पे
२२२	१	१ सक्कर, ३ बालु, १ पक, १ धूम
२२३	२	१ सक्कर, ३ वालु, १ पक, १ तम
२२४	ą	१ मक्कर, ३ बालु, १ पक, १ सप्तमी
हिवै	नवम	विकल्पे
२२४	<b>?</b>	२ सक्कर, २ वालु, १ पंक, १ धूम
२२ <b>६</b> 	२	२ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ तम
२२७	ą	२ मक्कर, २ वालु, १ पंक, १ सप्तमी
हिबै	दशम (	विकल्पे
२२८	१	३ सक्कर, १ बालु, १ पंक, १ घूम
२२ <i>६</i> ——	ঽ	३ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ तम
२३०	ŝ	३ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ सप्तमी
हिवै छै-	मक्कर -	वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै
२३१	१	१ सक्तर, १ वालु, १ धूम, ३ तम
२३२	ર	१ सक्कर, १ बालु, १ धूम, ३ सप्तमी

२४० र १ नक्कर, १ वालु, ३ घूम, १ सप्नमी  हिवै पष्ट विकल्पे  २४१ १ १ सक्कर, २ वालु, २ घूम, १ तम  २४२ २ १ सक्कर, २ वालु, २ घूम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे  २४४ २ २ सक्कर, १ वालु, २ घूम, १ तम  २४४ २ २ सक्कर, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ २ १ सक्कर, १ वालु, २ घूम, १ तम  १४४ १ १ सक्कर, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४६ २ १ सक्कर, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १६वै नवम विकल्पे  १४७ १ २ सक्कर, २ वालु, १ घूम, १ तम	हिं	र्वे द्विनीय	। विकल्पे
१ १ तमकर, १ वालु, २ धूम, २ सप्तमी   हिर्व तृतीय विकत्पे   १ सनकर, २ वालु, १ धूम, २ तम   १३६   २ १ सनकर, २ वालु, १ धूम, २ तम   १३६   २ १ सनकर, १ वालु, १ धूम, २ तम   १३६   २ १ सनकर, १ वालु, १ धूम, २ तम   १३६   २ १ सनकर, १ वालु, १ धूम, २ तम   १३६   १ १ सनकर, १ वालु, ३ धूम, १ तम   १३६   १ १ सनकर, १ वालु, ३ धूम, १ सप्तमी   १६व पण्ठ विकत्पे   १ सनकर, २ वालु, २ धूम, १ तम   १४२   १ सनकर, २ वालु, २ धूम, १ तम   १४२   १ सनकर, १ वालु, २ धूम, १ तम   १४४   १ सनकर, १ वालु, २ धूम, १ तम   १४४   २ सनकर, १ वालु, २ धूम, १ तम   १४४   २ सनकर, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमी   १४४   १ सनकर, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमी   १४४   १ सनकर, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमी   १४४   १ सनकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम   १४५   १ सनकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम   १४६   २ १ सनकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम   १४५   २ १ सनकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम   १४५   २ १ सनकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम   १४७   १ १ सनकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम	 २३३	1 8	१ सकर, १ वाल, २ धम, २ तम
हिंचै तृतीय विकल्पे  २३५ १ १ सकर, २ वालु, १ धूम, २ तम  २३६ २ १ सकर, २ वालु, १ धूम, २ नम  १३७ १ २ मकर, १ वालु, १ धूम, २ नम  २३० १ २ मकर, १ वालु, १ धूम, २ नम  २३० १ १ मकर, १ वालु, १ धूम, २ नम  १३० १ १ मकर, १ वालु, ३ धूम, १ तम  २४० २ १ मकर, १ वालु, ३ धूम, १ तम  २४० २ १ मकर, १ वालु, ३ धूम, १ तम  १४१ १ १ सकर, २ वालु, २ धूम, १ तम  १४१ १ १ सकर, २ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ सकर, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ सकर, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ सकर, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ सकर, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ सकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  १४४ १ १ सकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  १४६ २ १ सकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  १४६ २ १ सकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम		1	
२३५ १ १ सकर, २ वालु, १ धूम, २ तम  १३६ २ १ सकर, २ वालु, १ धूम, २ मध्तमी  हिर्व चतुर्थ विकल्पे  २३७ १ २ मकर, १ वालु, १ धूम, २ तम  १३६ २ १ मकर, १ वालु, १ धूम, २ तम  १३६ १ १ मकर, १ वालु, ३ धूम, १ तम  १३६ १ १ मकर, १ वालु, ३ धूम, १ तम  १४० २ १ सकर, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४१ १ १ सकर, २ वालु, २ धूम, १ तम  १४२ २ १ सकर, २ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ सकर, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ २ सकर, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ सकर, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ सकर, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ सकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  १४४ १ १ सकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  १४४ १ १ सकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम		-	
हिंदै चतुर्थ विकल्पे  २३७ १ २ सक्कर, १ वालु, १ धूम, २ तम  २३० १ २ सक्कर, १ वालु, १ धूम, २ तम  २३० २ १ सक्कर, १ वालु, ३ धूम, १ तम  २३० २ १ सक्कर, १ वालु, ३ धूम, १ तम  २४० २ १ सक्कर, १ वालु, ३ धूम, १ तम  २४० २ १ सक्कर, १ वालु, ३ धूम, १ तम  २४१ १ १ सक्कर, २ वालु, २ धूम, १ तम  २४१ १ १ सक्कर, २ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ १ १ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ १ २ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ १ १ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ १ १ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ १ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  २४४ १ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  २४६ २ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम	ी <b>ह</b> ्य	. तृतीय :	विकल्प
हिवै चतुर्थ विकल्पे  २३७ १ २ मनकर, १ वालु, १ धूम, २ नम  २३६ २ २ मनकर, १ वालु, १ धूम, २ मण्मी  हिवै पचम विकल्पे  २३६ १ १ मनकर, १ वालु, ३ धूम, १ तम  २४० २ १ मनकर, १ वालु, ३ धूम, १ तम  २४१ १ १ सनकर, २ वालु, २ धूम, १ तम  २४२ २ १ सनकर, २ वालु, २ धूम, १ तम  २४२ २ १ सनकर, २ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ १ २ सनकर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ १ २ मनकर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ १ १ सनकर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ २ १ सनकर, ३ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ १ १ सनकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  २४४ १ १ सनकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  २४४ १ १ सनकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम	२३५	8	१ सक्तर, २ वानु, १ धूम, २ तम
२३७ १ २ सक्कर, १ वालु, १ धूम, २ तम  २३६ २ २ सक्कर, १ वालु, १ धूम, २ सप्पमी  हिवै पचम विकल्पे  २३६ १ १ सक्कर, १ वालु, ३ धूम, १ तम  २४० २ १ सक्कर, १ वालु, ३ धूम, १ तम  १४१ १ १ सक्कर, २ वालु, २ धूम, १ तम  १४१ २ १ सक्कर, २ वालु, २ धूम, १ तम  १४२ २ १ सक्कर, २ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ २ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ २ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम  १४४ १ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  १४६ २ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  १४६ २ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम	२३६	२	१ सकर, २ वालु, १ धूम, २ मप्तमी
२३६ २ २ सवकर, १ वालु, १ धूम, २ मप्पमी  हिवै पचम विकल्पे  २३६ १ १ सवकर, १ वालु, ३ धूम, १ तम  २४० २ १ सवकर, १ वालु, ३ धूम, १ तम  हिवै पष्ट विकल्पे  २४१ १ १ सवकर, २ वालु, २ धूम, १ तम  २४२ २ १ सवकर, २ वालु, २ धूम, १ तम  हिवै सप्तम विकल्पे  २४३ १ २ सवकर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ २ २ सवकर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ २ २ सवकर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ १ १ सवकर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ १ १ सवकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  २४६ २ १ सवकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  २४६ २ १ सवकर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  हिवै नवम विकल्पे  २४७ १ २ सवकर, २ वालु, १ धूम, १ तम	हिर्द	चितुर्यं	विकल्पे .
हिन पचम विकल्पे  २३६ १ १ सक्कर, १ वालु, ३ धूम, १ तम  २४० २ १ सक्कर, १ वालु, ३ धूम, १ सप्नमी  हिन पष्ठ विकल्पे  २४१ १ १ सक्कर, २ वालु, २ धूम, १ तम  २४२ २ १ सक्कर, २ वालु, २ धूम, १ तम  हिन सप्तम विकल्पे  २४३ १ २ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ २ २ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ १ २ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ १ १ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४५ १ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  २४६ २ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  १४६ २ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम	२३७	8	२ मक्कर, १ वालु, १ धूम, २ तम
२३६ १ १ सम्कर, १ बालु, ३ धूम, १ तम २४० २ १ सम्कर, १ बालु, ३ धूम, १ सप्नमी हिवै पष्ट विकत्पे २४१ १ १ सम्कर, २ बालु, २ धूम, १ तम २४२ २ १ सम्कर, २ बालु, २ धूम, १ तम हिवै सप्तम विकत्पे २४३ १ २ सम्कर, १ बालु, २ धूम, १ तम २४४ २ २ सम्कर, १ बालु, २ धूम, १ तम १४४ २ २ सम्कर, १ बालु, २ धूम, १ तम १४४ १ १ सम्कर, ३ बालु, १ धूम, १ तम १४६ २ १ सम्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम १४६ २ १ सम्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम १४७ १ २ सम्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम	२३८	ર	२ सक्कर, १ वालु, १ घूम, २ मप्नमी
२४० २ १ सनकर, १ वालु, ३ घूम, १ सप्तमी  हिवै पष्ठ विकत्पे  २४१ १ १ सनकर, २ वालु, २ घूम, १ तम  २४२ २ १ सनकर, २ वालु, २ घूम, १ तम  हिवै सप्तम विकत्पे  २४४ २ २ सनकर, १ वालु, २ घूम, १ तम  २४४ २ २ सनकर, १ वालु, २ घूम, १ तम  २४४ २ २ सनकर, १ वालु, २ घूम, १ तम  २४४ १ १ सनकर, ३ वालु, १ घूम, १ तम  २४५ १ १ सनकर, ३ वालु, १ घूम, १ तम  २४६ २ १ सनकर, ३ वालु, १ घूम, १ तम  १४७ १ २ सनकर, २ वालु, १ घूम, १ तम	हिवै	पचम	विकल्पे
हिनै पष्ठ विकल्पे  २४१ १ १ सक्कर, २ वालु, २ धूम, १ तम  २४२ २ १ सक्कर, २ वालु, २ धूम, १ सप्तमी  हिनै सप्तम विकल्पे  २४४ २ २ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ २ २ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमी  हिनै अप्टम विकल्पे  २४५ १ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  २४६ २ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  १४७ १ २ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ सप्तमी  हिनै नवम विकल्पे	२३६	१	१ सक्कर, १ बालु, ३ धूम, १ तम
२४१ १ १ सक्कर, २ वालु, २ धूम, १ तम  २४२ २ १ सक्कर, २ वालु, २ धूम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकत्पे  २४३ १ २ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ २ २ मक्कर, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकत्पे  २४५ १ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  २४५ १ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  १४६ २ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकत्पे  २४७ १ २ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम	२,५०	२	१ सनकर, १ बालु, ३ घूम, १ सप्तमी
२४२ २ १ सक्कर, २ वालु, २ धूम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे  २४३ १ २ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ २ २ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकल्पे  २४५ १ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  २४६ २ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे  २४७ १ २ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम	हिवै	पष्ठ वि	वकरपे
हिवै सप्तम विकल्पे  २४३ १ २ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम  २४४ २ २ मक्कर, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकल्पे  २४५ १ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  २४६ २ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे  २४७ १ २ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम	२४१	१	१ सकर, २ वालु, २ धूम, १ तम
२४३ १ २ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम २४४ २ २ मक्कर, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमी हिवै अप्टम विकल्पे २४५ १ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम २४६ २ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी हिवै नवम विकल्पे २४७ १ २ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम	२४२	ર	१ सक्कर, २ वालु, २ घूम, १ सप्तमी
२४४ २ २ सक्कर, १ वालु, २ घूम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकल्पे  २४५ १ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  २४६ २ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे  २४७ १ २ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम	हिवै	सप्तम	विकल्पे
हिवै अप्टम विकल्पे  २४५ १ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम  २४६ २ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै नवम विकल्पे  २४७ १ २ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम	२४३	१	२ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ तम
२४५ १ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम २४६ २ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी हिवै नवम विकल्पे २४७ १ २ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम	२४४	₹	२ सक्कर, १ वालु, २ घूम, १ सप्तमी
१४६ २ १ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी हिवै नवम विकल्पे १४७ १ २ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम	हिवै	अप्टम	विकल्पे
हिवै नवम विकल्पे १ र सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम	२४५	8	१ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ तम
१४७ १ २ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम	२४६	۶	१ सक्कर, ३ वालु, १ धूम, १ सप्तमी
	हिबै न	विम वि	कल्पे
२४८ २ र सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ सप्तमी	२४७	8	२ सक्तर, २ वालु, १ धूम, १ तम
	२४८	2	२ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ सप्तमी

हिवै	दशम	विकल्पे
२४६	१	३ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ तम
२५०	२	३ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ सप्तमी
हिवं छै-		र वालुक तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै
२५१	१	१ सक्कर, १ वालु, १ तम, ३ सप्तमी
हिवै (	द्वितीय	विकल्पे
२४२	१	१ सक्कर, १ वालु, २ तम, २ सप्तमी
हिव	तृतीय	दिकल्पे
२५३	१	१ सक्कर, २ दालु, १ तम, २ सप्तमी
हिन	चतुर्थ	विकल्पे
२५४	१	२ सक्कर, १ वालु, १ तम, २ सप्तमी
हिव	पचम	विकल्पे
२५५	१	१ सक्कर, १ वालु, ३ तम, १ सप्नमी
हिवै	पष्ठ (	वकल्पे
२५६	१	१ सक्कर, २ वालु, २ तम, १ सप्तमी
हिवै	सप्तम	विकल्पे
२५७	१	२ सक्कर, १ वालु, २ तम, १ सप्तमी
हित्रै	अष्टम	विकल्पे
२५६	१	१ सक्कर, ३ वालु, १ तम, १ सप्तमी
हिवै	नवम (	वकल्पे
२५६	१	२ सक्कर, २ वालु, १ तम, १ सप्तमी
हिवै	दशम	विकल्पे
२६०	१	३ सक्कर, १ वालु, १ तम, १ सप्तमी
ए स कह्य		ालुक थी६ भागा दश विकल्प करि ६० भागा

]		
२	, सक्कर	र पक थी ३ भांगाते किसा <sup>?</sup> सक्कर पंक धूम थी : पक तम थी १ । तिहासक्कर पक धूम थी २ भागा वेकल्प करि कहै छैं—
२६१	१	१ सक्कर, १ पक, १ धूम, ३ तम
२६२	२	१ सक्कर, १ पक, १ धूम, ३ सप्तमी
हि	वै सक्क	र पक धूम थी २ भागा द्वितीय विकल्पे
२६३	8	१ सक्तर, १ पक, २ धूम, २ तम
२६४	२	१ सक्कर, १ पक, २ धूम, २ मप्तमी
हिं	त्रै तृनीय	विकल्प करि
२६५	8	१ सक्कर, २ पक, १ धूम, २ तम
२६६	२	१ सक्कर, २ पक, १ धूम, २ सप्तमी
हिं	वे चतुर्थ	विकल्प करि
२६७	१	२ सक्कर, १ पक, १ धूम, २ तम
२६=	२	२ सक्कर, १ पक, १ धूम, २ सप्तमी
हिवै	पचम	विकल्प करि
२६६	१	१ सक्कर, १ पक, ३ धूम, १ तम
२७०	२	१ सक्कर, १ पक, ३ धूम, १ सप्तमी
हिवै	षष्ठ वि	किल्प करि
२७१	१	१ सक्कर, २ पक, २ धूम, १ तम
२७२	२	१ सक्कर, २ पंक, २ धूम, १ सप्तमी
हिवै	सप्तम (	वेकल्प करि
२७३	१	२ सक्कर, १ पक, २ धूम, १ तम
२७४	२	२ सक्कर, १ पक, २ धूम, १ सप्तमी
हिवै	अष्टम ि	वेकल्प करि
२७५	१	१ सक्कर, ३ पंक, १ धूम, १ तम
२७६	२	१ सक्कर, ३ पक, १ धूम, १ सप्तमी

हिवै नवम विकल्प करि
२७७ १ २ सक्कर, २ पक, १ घूम, १ तम
२७८ २ २ सक्कर, २ पक, १ धूम, १ सप्तमी
हिवै दशम विकल्प करि
२७६ १ ३ सक्कर, १ पक, १ घूम, १ तम
२८० २ ३ सक्कर, १ पक, १ घूम, १ सप्तमी
हिर्वे सक्कर पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे
२८१ १ १ सक्कर, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी
हिवै द्वितीय विकल्प
२८२ १ १ सक्कर, १ पक, २ तम, २ सप्तमी
हिवै तृतीय विकल्प
२८३ १ १ सक्कर, २ पक, १ तम, २ सप्तमी
हिवै चतुर्थ विकल्प
२८४ १ २ सक्कर, १ पक, १ तम, २ सप्तमी
हिर्वे पचम विकल्य
२८५ १ १ सक्कर, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी
हिन्नै पष्ठ विकल्प
२८६ १ १ सम्कर, २ पक, २ तम, १ सप्तमी
हिनै सप्तम विकल्प
२८७ १ २ मक्कर, १ पक, २ तम, १ सप्तमी
हिवै अष्ठम विकल्प
१८ १ सक्कर, ३ पक, १ तम, १ सप्तमी
हिनै नवम विकल्प
१८ १ २ सक्कर, २ पक, १ तम, १ सप्तमी

,		
	हेवै दशम	विकल्प
२६०	१	३ संकर, १ पक, १ तम, १ मप्तमी
ए	सवकर पव	थी ३ भागा दश विकला करि ३० भागा कह्या।
f	हेवै सक्कर	धूम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै -
२६१	8	१ सक्कर, १ धूम, १ तम, ३ सप्तमी
fê	हवे द्वितीय	विकल्पे १ भागो
२६२	8	१ सक्कर, १ धूम, २ तम, २ सप्तमी
f	विं तृतीय	विकल्पे १ भागो
२६३	8	१ संवकर, २ धूम, १तम, २ सप्तमी
हि	वे चतुर्थ वि	वकल्पे १ भागो
२६४	8	२ सकर, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी
हि	वै पचम वि	कल्पे १ भागो
२६५	8	१ सक्कर, १ धूम, ३ तम, १ सप्तमी
हिं	ने पष्ठ विव	न्त्ये १ भागो
२६६	3	१ सकर, २ धूम, २ तम, १ सप्तमी
हिन	सप्तम वि	कल्पे १ भागो
२६७	१ :	र सक्कर, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी
हिवै	अप्टम वि	कल्पे १ भागो
२६८	१ १	सक्कर, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमी
हिवै	नवम विक	ल्पे १ भागो
२९६	१ २	सक्कर, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी
हिवै	दशम विक	ल्पे १ भागो
३००	१   ३	सक्कर, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी
ए स कह्या	क्कर घूम । एवं सर	थी १ भागो दश विकल्प करि १० भागा कर थी १० भागा दश विकल्प करि १०० भागा कह्या।

ਰਿੜੈ :	वास्त्रसः	थकी एक-एक विकल्प करि च्यार-च्यार भागा ते	
	किसा <sup>?</sup> वालुक पक थी ३, वालुक धूम थी—१ एव वालुक		
		क पक थी ३, ते किसा <sup>?</sup> वालुक पक धूम थी २	
		तम थी १। तिहा वालुक पक धूम थी २ भागा	
		प करि कहै छैं —	
		1 417 46 0	
३०१	१	१ वालुक, १ पक, १ धूम, ३ तम	
३०२	२	१ वालुक, १ पंक, १ धूम, ३ सप्तमी	
हिवै	द्वितीय	विकल्पे	
३०३	१	१ वालु, १ पक, २ घूम, २ तम	
३०४	२	१ वालु, १ पक, २ धूम, २ सप्तमी	
हिवै	तृतीय	विकल्पे	
३०५	१	१ वालु, २ पक, १ धूम, २ तम	
३०६	२	१ वालु, २ पक, १ घूम, २ सप्तमी	
हिवै	चतुर्थ	विकल्पे	
७०६	१	२ वालु, १ बक, १ धूम, २ तम	
३०८	२	२ वालु, १ पक, १ धूम, २ सप्तमी	
हिवै	पचम	विकल्पे	
३०६	१	१ वालु, १ पक, ३ धूम, १ तम	
३१०	२	१ वालु, १ पक, ३ धूम, १ सप्तमी	
हिवै	पष्ठ (	वेकल्पे	
३११	8	१ वालु, २ पक, २ धूम, १ तम	
३१२	२	१ वालु, २ पक, २ धूम, १ सप्तमी	
हिं	र सप्तम	ा विकल्पे	
३१३	१	२ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम	
३१४	२	२ वालु, १ पक, २ धूम, १ सप्तमी	

३१५       १       १ वालु, ३ नक, १ धूम, १ तम         ३१६       २       १ वालु, ३ पक, १ धूम, १ तम         ३१७       १       २ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम         ३१०       २       २ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम         ३१६       १       ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम         ३२०       २       ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम         ३२०       २       ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम         ३२१       १       १ वालु, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी         ६वै दितीय विकल्पे       ३२२       १       १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी         ६वै चतुर्थ विकल्पे       ३२४       १       १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी         ६वै पच्य विकल्पे       ३२५       १       १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी         ६वै पच्य विकल्पे       ३२६       १       १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी         ६वै सप्त विकल्पे       ३२६       १       १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी         ६वै अण्डम विकल्पे       ३२६       १       १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी         ६वै अण्डम विकल्पे       ३२६       १       १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी         ६वै अण्डम विकल्पे       ३२६       १       १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी         ६वै अण्डम विकल्पे       ३२६       १       १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी	हिवै	अप्टम	विकल्पे
हिवै नवम विकल्पे  ३१७ १ २ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम  ३१८ २ २ वालु, २ पक, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै दशम विकल्पे  ३१६ १ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ३२० २ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे  ३२१ १ १ वालु, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी  हिवै दितीय विकल्पे  ३२२ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२४ १ १ वालु, १ पक, १ तम, १ सप्तमी  हिवै पप्ट विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२६ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकल्पे	३१५	१	१ वालु, ३ नक, १ धूम, १ तम
३१७ १ २ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम  ३१८ २ २ वालु, २ पक, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै दशम विकल्पे  ३१६ १ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ३२० २ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे  ३२१ १ १ वालु, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी  हिवै दितीय विकल्पे  ३२२ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  ३२३ १ १ वालु, २ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पप्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२६ १ श वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अण्टम विकल्पे	३ <b>१</b> ६	२	१ वालु, ३ पक, १ धूम, १ सप्तमी
हिवै दशम विकल्पे  ३१६ १ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ३२० २ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ३२० २ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै पक तम थी १ भागी प्रथम विकल्पे  ३२१ १ १ वालु, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी  हिवै दितीय विकल्पे  ३२२ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२४ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२४ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पप्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२६ १ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकल्पे	हिवै	नवम	विकल्पे
हिवै दशम विकल्पे  ३१६ १ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ३२० २ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे  ३२१ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै दितीय विकल्पे  ३२३ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२४ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पच विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पण्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अण्टम विकल्पे	३१७	१	२ वालु, २ पक, १ घूम, १ तम
३१६ १ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम  ३२० २ ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी  हिवै पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे  ३२१ १ १ वालु, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी  हिवै दितीय विकल्पे  ३२२ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२४ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२४ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पप्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अण्टम विकल्पे	३१८	२	२ वालु, २ पक, १ घूम, १ सप्तमी
३२० २ ३ वालु, १ पक, १ घूम, १ सप्तमी  हिवै पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे  ३२१ १ १ वालु, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी  हिवै द्वितीय विकल्पे  ३२३ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै तृतीय विकल्पे  ३२३ १ १ वालु, २ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२५ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पण्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२६ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अण्टम विकल्पे	हिवै	दशम	विकल्पे
हिवै पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्पे  ३२१ १ १ वालु, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी  हिवै द्वितीय विकल्पे  ३२३ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२४ १ १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२५ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पप्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकल्पे	388	<b>१</b>	३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम
हिवै द्वितीय विकल्पे  हिवै पचम विकल्पे  हिवै पण्ठ विकल्पे  हिवै अप्टम विकल्पे  हिवै अप्टम विकल्पे			
हिवै द्वितीय विकल्पे  ३२२ १ १ वालु, १ पक, २ तम, २ सप्तमी  हिवै तृतीय विकल्पे  ३२३ १ १ वालु, २ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२५ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पण्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अण्टम विकल्पे	हिवै	पक त	म थी १ भागो प्रथम विकल्पे
हिवै तृतीय विकल्पे  हिवै तृतीय विकल्पे  हिवै चतुर्थ विकल्पे  हिवै पचम विकल्पे  हिवै पचम विकल्पे  हिवै पण्ठ विकल्पे  हिवै सप्तम विवल्पे  हिवै सप्तम विवल्पे  हिवै सप्तम विवल्पे	३२१	१	१ वालु, १ पक, १ तम, ३ सप्तमी
हिवै तृतीय विकल्पे  ३२३ १ १ वालु, २ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पष्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विवल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे	हिवै	द्वितीय	विकल्पे
१ १ वालु, २ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै चतुर्थ विकल्पे  १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पष्ठ विकल्पे  १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विक्ल्पे  १ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विक्ल्पे  १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे	३२२	१	१ वालु, १ पक, २ तम, २ सप्तमी
हिवै चतुर्थ विकल्पे  ३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२५ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पष्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे	हिवै	तृतीय	विकल्पे
३२४ १ २ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी  हिवै पचम विकल्पे  ३२५ १ श वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पष्ठ विकल्पे  ३२६ १ श वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकल्पे	३२३	१	१ वालु, २ पक, १ तम, २ सप्तमी
हिवै पचम विकल्पे  ३२५ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पष्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे	हिवै	चतुर्थं	विकल्पे
३२५ १ १ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी  हिवै पष्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विकल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे	३२४	१	२ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी
हिवै पष्ठ विकल्पे  ३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी  हिवै सप्तम विक्ल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अष्टम विकल्पे	हिवै	पचम	विकल्पे
३२६ १ १ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी हिवै सप्तम विवल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी हिवै अष्टम विकल्पे	३२५	१	१ वालु, १ पक, ३ तम, १ सप्तमी
हिवै सप्तम विकल्पे  ३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी  हिवै अप्टम विकल्पे	हिवै	पष्ठ ि	वकल्पे
३२७ १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी हिवै अष्टम विकल्पे	३२६	१	१ वालु, २ ०क, २ तम, १ सप्तमी
हिवै अप्टम विकल्पे	हिवै	सप्तम	विव ल्पे
	३२७	१	वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी
३२८ १ १ वालु, ३ पक, १ तम, १ सप्तमी	हिवै	अप्टम	विकल्पे
	३२८	१	१ वालु, ३ पक, १ तम, १ सप्तमी

हिवै	नवम	विकल्पे
३२६	8	२ वालु, २ पक, १ तम, १ सप्तमी
हिवै	दशम (	वकल्पे
३३०	१	३ वालु, १ पक, १ तम, १ सप्तमी
	_	कथी ३ भागा दश विकल्प करि ३० भागा कह्या। [मथी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै—
३३१	१	१ वालु, १ घूम, १ तम, ३ सप्तमी
हिवै	द्वितीय	विकल्पे
३३२	१	१ वालु, १ धूम, २ तम, २ सप्तमी
हिबै	तृतीय	विकल्पे
333	१	१ वालु, २ धूम, १ तम, २ मप्तमी
हिबै	चतुर्थ	विकल्पे
३३४	१	२ वालु, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी
हिवै	पचम	विकल्पे
३३५	१	१ वालु, १ घूम, ३ तम, १ सप्तमी
हिवै	पष्ट वि	वकल्पे
३३६	१	१ वालु, २ घूम, २ तम, १ सप्तमी
हिवै	सप्तम	विकरपे
३३७	१	२ वालु, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी
हिवै	अष्टम	विकल्पे
३३८	१	१ वालु, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमी
हिवै	नवम '	विकल्पे
३३€	१	२ वालु, २ घूम, १ तम, १ सप्तमी
हिवै	दशम	विकल्पे
\$ <b>%</b> 0	१	३ वालु, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी
ए व	ालु थी	४ भागा दश विकल्प करि ४० भागा कह्या ।

हिबै पक थी १ मागो प्रथम विकरप करि कहै छै
३४१ १ १ पक, १ घूम, १ तम, ३ गप्तमी
हिर्वे द्वितीय विकल्पे
३४२ १ १ पक, १ धूम, २ तम, २ सप्तमी
हिंदै तृतीय विकत्पे
३४३ १ १ पक, २ धूम, १ तम, २ सप्तमी
हिवै चतुर्थ विकल्पे
३४४ १ २ पक, १ धूम, १ तम, २ मप्तमी
हिवै पचम विकल्पे
३४५ १ १ पक, १ धूम, ३ तम, १ सप्तमी
हिवै पप्ठ विकल्पे
३४६ १ १ पक, २ धूम, २ तम, १ सप्तमी
हिवे सप्तम विकल्पे
३४७ १ २ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्नमी
हिवे अप्टम विकल्पे
३४८ १ १ पक, ३ घूम, १ तम, १ सप्तमी
हियै नवम विकल्पे
३४६ १ २ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी
हिर्व दशम विकल्पे
३५० १ ३ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी
ए पक थी १ भागो दश विकत्य करि १० भागा कह्या। एव रत्न थी २०, सक्कर थी १०, वालु थी ४, पक थी १— ए पैतीस भागा एकेक विकत्य ना हुवै। दश विकत्य ना ३५० भागा थया।

१७७ <sup>३</sup>ए षट जीव तणां सुविचार, चउनकसयोगिक भागा सार। दश विकल्प करिने पहिछाण, तीनसी ने पचास प्रमाण।। १७८. नवम शतक नों वतीसम देश, इकसी तयासीमी ढाल विशेष। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय पसाय, 'जय-जश' सपति हरष सवाय।।

१७७. चउनकसँजोगो वि तहेव।

ढाल: १८४

### दूहा

१. हिवै कहू षट जीव नां, पंच सयोगिक संच। विकल्प पच करी भला, भंग एक सय पंच॥ २ एक एक विकल्प करि, इकवीस-इकवीस जाण। भागा भणवा इहविधे, वरविध करी पिछाण॥

वा॰ — एकेक विकल्प करि रत्न थी १५, सक्कर थी ५, वालुक थी १— एव २१। रत्न थी १५ तेहनो विवरो — रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ४, रत्न पक थी १— एव १५। ते पनरें ने विषे रत्न सक्कर थी १०, ते किसा? रत्न सक्कर वालुक थी ६, रत्न सक्कर पक थकी ३, रत्न सक्कर धूम थी १— एव रत्न सक्कर थी १०। ते दशा माहे रत्न सक्कर वालुक थकी ६, ते किमा? रत्न सक्कर वालुक पक थी ३, रत्न सक्कर वालुक धूम थी २, रत्न सक्कर वालुक तम थी १— एव रत्न सक्कर वालुक थी ६ भागा हुवै। तिहा रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

- ३ †अथवा एक रत्न मझै, एक सक्कर रै माय। इक वालुक इक पंक मे, दोय धूम कहिवाय।।
- ४ अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर मे ताय। एक वालुक इक पक मे, दोय तमा में जाय।।
- ५. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजत। इक वालुक इक पक मे, दोय सप्तमी हुत।। हिवै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा द्वितीय विकल्प किर कहे छै —
- ६ अथवा एक रत्न मझै, एक सक्कर रै माय। इक वालुक वे पंक मे, एक धूम कहिवाय।।
- ७. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै माय। इक वालुक वे पक मे, एक तमा मे जाय॥
- द अथवा एक रत्न मझे, इक सक्कर उपजत। इक वालुक वे पक मे, एक सप्तमी हुत।। हिवै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै—
- ह अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै माय।वे वालुक इक पक मे, एक धूम कहिवाय।।

\* लय: इण पुर कबल कोय न लेसी † लय: प्रभवो मन माहि चितवे १,२. पञ्चकसयोगे तु पण्णा पञ्चधाकरणे पञ्च विकल्पा-स्तद्यथा स्त्राचा च पदाना पञ्चकसयोगे एकविशातिविकल्पा , तेषा च पञ्चभिर्गुणने पञ्चोत्तर शतिनित । (वृ० प० ४४५)

१ ढाल १८३ में सात नरक के चतु सयोगिक ३५० भगों का उल्लेख है। उनमें सक्तर-पक और मक्कर धूम के ४० भग गाथाओं में छूटे हुए हैं। सक्कर-वालू से बनने वाले १० विकल्पों के ६० भग १५१ तक की गाथाओं में आ गए। उसके बाद वार्तिका में सक्कर के १० भगों के १० विकल्पों से होने वाले १०० भगों की सूचना दी गई है पर वे भग गाथाओं में नहीं दिए। आगे यन्त्र में पूरे भग (२६१ से ३००) दिए हुए है।

- १०. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजेत। वे वालुक इक पक मे, एक तमा मे जत।।
- ११. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजत। वे वालुक इक पंक मे, एक सप्तमी हुत।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै-

- १२ अथवा एक रत्न मझै, दोय सक्कर रै मांय। इक वालुक इक पक में, एक धूम मे जाय।।
- १३. अथवा एक रत्न मझै, वे सक्कर मे पाय। इक वालुक इक पक मे, एक तमा कहिवाय।।
- १४ अथवा एक रत्न मझै, वे सक्कर उपजत। इक वालुक इक पक मे, एक सप्तमी हुत।। हिवै रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा पचम विकल्प करि कहै ई-
- १५ अथवा दोय रत्न मझै, एक सक्कर रै माय। इक वालुक इक पक मे, एक धूम कहिवाय।।
- १६ अथवा दोय रत्न मझै, एक सक्कर मे पाय। इक वालुक इक पक मे, एक तमा मे जाय।।
- १७. अथवा दोय रत्न मझै, एक सक्कर उपजत। इक वालुक इक पक मे, एक सप्तमी हुत।।

हिनै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा पच विकल्प करि १० भागा, तिहा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

- १८ अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर अवलोय। इक वालुक इक धूम मे, दोय तमा मे जोय।।
- १६. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजत। इक वालुक इक धूम मे, दोय सप्तमी हुत॥

हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै-

- २०. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै माय। इक वालुक वे धूम मे, एक तमा मे जाय।।
- २१ अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै माय। के इक वालुक वे धूम मे, एक सप्तमी थाय।।

हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै---

- २२. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर दुखधाम। वे वालुक इक धूम मे, एक तमा मे पाम।।
- २३. अथवा एक रत्ने मझै, इक सक्कर पहिछान । वे वालुक इक धूम मे, एक सप्तमी जान ॥ हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा चतुर्य विकल्य करि कहै छै—
- २४. अथवा एक रत्न मझै, वे सक्कर दुखरास। इक वालुक इक धूम मे, एक तमा अभित्रास॥
- २५. अथवा एक रतन मझै, वे सक्कर दुखपूर। इक वालुक इक धूम में, एक सप्तमीं भूर॥

हिवै रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भांगा पचम विकल्प करि कहै छै-

२६. अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर रै माय। इक वालुक इक धूम मे, एक तमा दुख पाय।।

- २७ अथवा दीय रत्न मझै, इक सक्कर अघखान । इक वालुक इक धूम मे, एक सप्तमी जान ॥ ए रत्न सक्कर वालुक धूम थी २ भागा ५ विकल्प करि १० भागा कह्या। हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भागो पाच विकल्प करि कहै छै—
- २८ अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजत । इक वालुक इक तम विषे, दोय सप्तमी हुत ॥ हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—
- २६ अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै माय। इक वालुक वे तमा विषे, एक सप्तमी जाय।। हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भागो तृतीय विकल्प करि कहै छै—
- ३० अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर दुख पाय। वे वालुक इक तम विषे, एक सप्तमी कहाय।। हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भागो चतुर्थ विकल्प करि कहे छै---
- ३१ अथवा एक रत्न मझे, वे सक्कर अवलोय। इक वालुक इक तम विषे, एक सप्तमी होय।। हिवै रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भागो पचम विकल्प करि कहै छै—
- ३२ अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर पहिछान। इक वालुक इक तम विषे, एक सप्नमी जान।।
  ए रत्न सक्कर वालुक थी ६ भागा पाच विकल्प करि ३० भागा कह्या।
  हिवै रत्न सक्कर पक थी ३ भागा, ते किसा? सक्कर रत्न पक धूम थी २,
  पक तम थी १। तिहा रत्न सक्कर पक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि
  कहै छै---
- ३३. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर रै माय। एक पक इक घूम मे, दोय तमा कहिवाय॥
- ३४. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजत।
  एक पक इक धूम मे, दोय सप्तमी हुत।।
  हिवै रत्न सक्कर पक धूम थी २ भागा द्वितीय विकल्प किर कहे छै----
- ३५ अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर अवलोय। एक पक वे धूम मे, एक तमा मे जोय।।
- ३६ अथवा एक रत्न मझै, इंक सक्कर पहिछान।
  एक पक वे धूम मे, एक सप्तमी जान।।
  हिवै रत्न सक्कर पक धूम थी २ भागा तृनीय विकल्प करि कहै छै---
- ३७. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर दुखरास । दोय पक इक धूम मे, एक तमा अभित्रास ॥ ३८. अथवा एक रत्न मझै, एक सक्कर अघखान । दोय पक इक धूम मे, एक सप्तमी जान ॥

हिनै रत्न सक्कर पक धूम थी २ मागा चतुर्थ विकल्प करि कहै छै-

- ३१. अथवा एक रत्न मझै, वे सक्कर पहिछान। एक पंक इक धूम में, एक तमा दुखखान॥
- ४०. अथवा एक रत्ने मझै, वे सक्कर रै मांय। एक पंक इक धूम में, एक सप्तमी पाय।। हिवै रत्न सक्कर पक धूम थी २ भांगा पचम विकल्प करि कहै छै— '
- ४१. अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर अवलोय। एक पक इक धूम मे, एक तमा दुख होय॥
- ४२. अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर आख्यात। एक पक इक धूम मे, एक सप्तमी जात।।
  हिवै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो प्रथम विवल्प करि कहै छै—
- ४३. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर अवलोय।
  एक पंक इक तम विषे, दोय सप्तमी होय।।
  हिवै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—
- ४४ अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर उपजत।
  एक पंक वे तम विषे, एक सप्तमी हुंत।।
  हिवै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो तृतीय विकल्प करि कहै छै—
- ४५. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर मे देख। दोय पक इक तम विषे, एक सप्तमी पेख।। हिवै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो चतुर्थ विकल्प करि कहै छै---
- ४६. अथवा एक रत्न मझै, वे सक्कर पहिछान।
  एक पक इक तम विषे, एक सप्तमी जान।।
  हिबै रत्न सक्कर पंक तम थी १ भागो पंचम विकल्प करि कहै छै—
- ४७ अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर अवलोय।
  एक पंक इक तम विषे, एक सप्तमी होय।।
  ए रत्न सक्कर पक थी ३ भागा पच विकल्प करि १५ भागा कह्या।
  हिवै रत्न सक्कर घूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै—
- ४८. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर में पेख।
  एक घूम एक तम विषे, दोय सप्तमी लेख।।
  हिवै रत्न मक्कर घूम तम थी १ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै छै—
- ४६. अथवा एक रत्न मझै, इक सक्कर सोय।
  एक घूम वे तम विषे, एक सप्तमी होय।।
  हिवै रत्न मक्कर घूम तम भी १ भागो तृतीय विकल्प करि कहै छै—
- ५० अयवा एक रत्न मझै, इक सक्कर अघखान। दोय धूम इक तम विषे, एक सप्तमी जान।। हिवै रत्न सक्कर धूम तम थी १ भागो चतुर्थ विकल्प करि कहै छै—
- ५१. अथवा एक रत्न मझै, वे सक्कर दुखपूर। एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमी भूर॥

हिवै रत्न सक्कर धूम तम थी १ भागो पचम विकल्प करि कहै छै-५२. अथवा दोय रत्न मझै, इक सक्कर दुखरास। एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमी तास।। ए रत्न सक्कर थी १० भागा पच विकल्प करि ५० भागा कहा।

हिवै रत्न वालुक थी ४ भागा एकेक विकल्प करि तेहनो विवरो — रत्न वालुक पक थी ३, रत्न वालुक धूम थी १। रत्न वालुक पक थी ३, ते किसा ? रत्न वालुक पक धूम थी २, रत्न वालुक पक तम थी १—एव ३। तिहा रत्न वालुक पक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छैं —

- ५३. अथवा एक रत्न मझे, एक वालुका माय। एक पक इक धूम मे, दोय तमा कहिवाय।।
- ५४ अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका माय। एक पक इक धूम मे, दोय सप्तमी पाय।।

हिवै रत्न वालुक पक धूम थी २ भागा द्वितीय विकल्प करि कहै छै-

- ५५. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका होय। एक पक दोय धूम मे, एक तमा अवलोय।।
- ५६. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका होय। एक पक वे धूम में, एक सप्तमी जोय।।

हिवै रत्न वालुक पक धूम थी २ भागा तृतीय विकल्प करि कहै छै-

- ५७. अथवा एक रत्न मझे, एक वालुका माय। दोय पक इक धूम मे, एक तमा कहिवाय।
- ५८. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका देख। दोय पक इक धूम मे, एक सप्तमी शेष।।

हिवै रत्न वालुक पक घूम थी २ भागा चतुर्थ दिकल्प करि कहै छै—

- ५६. अथवा एक रत्न मझै, दोय वालुका मांय। एक पक इक धूम में, एक तमा दुखदाय।।
- ६० अथवा एक रत्न मझै, दोय वालुका पाय। एक पक इक धूम मे, एक सप्तमी जाय।।

हिवै रत्न वालुक पक धूम थी २ भागा पचम विकल्प करि कहै छै-

- ६१. अथवा दोय रत्न मझै, एक वालुका सोय। एक पक इक धूम मे, एक तमा अवलोय।।
- ६२. अथवा दोय रत्न मझै, एक वालुका होय। एक पक इक धूम मे, एक सप्तमी जोय।। हिवै रत्न वालुक पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै—
- ६३. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका सोय। एक पक इक तम विषे, दोय सप्तमी होय।। हिवै रत्न वालुक पक तम थी १ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै छै-
- ६४. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका मांय। एक पक वे तम विषे, एक सप्तमी जाय।। हिवै रत्न वालुक पक तम थी १ भागो तृतीय दिकल्प करि कहै छै---
- ६५. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका देख। दोय पक इक तम विषे, एक सप्तमी शेप।।

हिवै रत्न वालुक पंक नम थी १ भागो नतुर्थ विकरप करि करे छै-

६६. अथवा एक रत्न मझें, दोय वालुका पेरा।
एक पंक इक तम विषे, एक सप्तमी लेख।।
हिवै रत्न वालुक पक तम थी १ भागो पचम विकरण करि करें छै—

६७. अथवा दोय रत्न मझै, एक वालुका मांय।
एक पक इक तम विषे, एक सप्तमी जाय।।
ए रत्न वालुक वक थी ३ भागा पाच विकरप करि १५ भागा कह्या।
हिवै रत्न वालुक धूम तम थी १ भागो प्रथम विकरप करि कहे छै---

६ स्न अथवा एक रतन मझै, एक वालुका चीन।
एक धूम इक तम विषे, दोय सप्तमी लीन।।
हिवै रतन वालुक धूम तम थी १ भागो द्वितीय विकल्प करि कहै छै---

६६. अथवा एक रत्न मझै, एक वालुका पेरा।
एक धूम वे तम विषे, एक सप्तमी देख।।
हिवै रत्न वालुक धूम तम थी १ भागो तृतीय विकरप किंप कहै छै—

७० अथवा एक रतन मझे, एक वालुका सोय।
दोय घूम इक तम विषे, एक सप्तमी होय।।
हिवै रतन वालुक धूम तम थी १ भागो चतुर्थ विकरा करि करे छै—

७१ अथवा एक रत्न मझै, दोय वालुका देख।
एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमी णेप।।
हिवै रत्न वालुक धूम तम थी १ भागो पचम विकल्य करि ग्री छै—

७२ अथवा दोय न्तन मझ, एक वालुका सोय।
एक घूम इक तम विषे, एक सप्तमी होय।।
ए वालुक थी ४ भागा पाच विकल्प करि २० भागा कह्या।

हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो पाच विकल्प करि ५ भागा हुवै, ते प्रथम विकल्प करि कहे छै—

७३. अथवा एक रत्न मझै, एक पक अवलोय।
एक धूम इक तम विषे, दोय सप्तमी होय॥
हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागों हितीय विकरप करि कहै छै—

७४. अथवा एक रत्न मझै, एक पक अवलोय।
एक धूम वे तम विषे, एक सप्तमी होय।।
हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो तृतीय विकल्प करि कहै छै---

७५ अथवा एक रत्न मझै, एक पंक उपजत। दोय धूम इक तम विपे, एक सप्तमी हुत॥ हिवै रत्न पक धूम तम थी १भागो चतुर्थ विकत्प करि कहै छै—

७६ अथवा एक रत्न मझै, दोय पक दुखरास।
एक धूम इक तम विपे, एक सप्तमी वास।।
हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो पंचम विकल्प करि कहे छै—

७७. अथवा दोय रत्न मझै, एक पंक दुखपूर। एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमी भूर॥ ए रत्न धूम थी १५ भागा पच विकल्प करि ७५ भागा कह्या।

हिवै सक्कर थी ५ भागा ५ विकल्प करि २५ हुवै । तिहा सक्कर थी प्रथम भागो पाच विकल्प करि कहै छै, तिणमे सातमी नरक टली।

७८. अथवा एक सक्कर मझे, इक वालुक अवलोय। एक पंक इक धूम में, दोय तमा में होय।।

७६. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक उपजत। एक पंक वे धूम मे, एक तमा मे हुत।।

८०. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक दुखरास।

दोय पंक इक धूम मे, एक तमा अतित्रास ।।

८१ अथवा एक सक्कर मझै, दोय वालुका देख। एक पक इक धूम मे, एक तमा दुख पेख।।

 अथवा दोय सक्कर मझै, इक वालुक दुखदाय। एक पंक इक धूम मे, एक तमा में जाय।।

हिवै सक्कर थी द्वितीय भागो ५ विकल्प करि कहै छै, तिणमे छठी नरक टली ।

 अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक उपजत। एक पक इक धूम मे, दोय सप्तमी हुत ॥

५४. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक अवलोय । एक पक वे धूम मे, एक सप्तमी सोय।।

**८५. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक दुखदाय।** 

दोय पक इक धूम मे, एक सप्तमी जाय।। द६ अथवा एक सक्कर मझै, दोय वालुका देख।

एक पक इक धूम मे, एक सप्तमी शेख।।

८७. अथवा दोय सक्कर मझै, एक वालुका माय। एक पंक इक धूम में, एक सप्तमी जाय।।

हिवै सक्कर थी तृतीय भागो ५ विकल्प करि कहै छै, तिणमे पचमी नरक

टली ।

८८. अथवा एक सक्कर मझे, इक वालुक उपजत I एक पक इक तम विषे, दोय सप्तमी हुंत ॥

८६. अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक अवलोय। एक पंक वे तम विषे, एक सप्तमी होय।।

६०. अथवा एक सक्कर मझै, एक वालुका पेख। दोय पंक इक तम विषे, एक सप्तमी शेख।।

 स्थायवा एक सक्कर मझै, दोय वालुका देख। एक पंक इक तम विषे, एक सप्तमी पेख।।

६२. अथवा दोय सक्कर मझै, इक वालुक कहिवाय। एक पक एक तम विषे, एक सप्तमी जाय।।

हिवै सक्कर थी चतुर्य भागो ५ विकल्प करि कहै छै, तिणमे चउयी नरक

टली ।

६३ अथवा एक सक्कर मझै, इक वालुक अवलोय। एक धूम इक तम विषे, दोय सप्तमी सोय।।

६४. अथवा एक सक्कर मझे, इक वालुक उपजंत। एक धूम वे तम विषे, एक सप्तमी हुत।। ६५. अथवा एक सक्कर मझे, इक वालुक दुखरास। दोय धूम इक तम विषे, एक सप्तमी तास ॥ ६६. अथवा एक सक्कर मझै, दोय वालुका देख। एक धूम एक तम विषे, एक सप्तमी लेख।। ६७. अथवा दोय सनकर मझे, इक वालुक दुखधाम। एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमीं पाम ॥ हिवै मक्कर थी पचमो भागो ५ विकत्य करि कहै छै, निणमे नीजी नरक टली । ६८. अथवा एक सक्कर मझे, एक पंक कहिवाय। एक धूम इक तम विषे, दोय सप्तमी जाय।। हह. अथवा एक सक्कर मझे, एक पंक उत्पन्त। एक धूम वे तम विषे, एक सप्तमी जन्न।। १००. अथवा एक सक्कर मझै, एक पंक अवलोय। दोय धूम इक तम विषे, एक सप्तमी जोय।। १०१. अथवा एक सक्कर मझै, दोय पक रै मांय। एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमी जाय।। १०२. अथवा दोय सक्कर मझै, एक पंक उपजंत। एक धूम इक तम विषे, एक सप्तमी हुंत।। ए सक्कर थी ५ भागा पाच विकरप करि २५ भागा कह्या। हिंचै वालुक थी १ भागो ५ विकत्य करि ५ भागा कहै छै-१०३. अथवा एक वालुक मझे, एक पंक अवलोय। एक धूम इक तम विषे, दोय सप्तमी जोय।। १०४. अथवा एक वालुक मझै, एक पंक उपजंत। एक धूम वे तम विषे, एक सप्तमी हुंत।। १०५. अथवा एक वालुक मझै, एक पंक पहिछान। दोय धूम इक तम विषे, एक सप्तमी जान।। १०६. अथवा एक वालुक मझै, दोय पक दुखरास। एक घूम एक तम विषे, एक सप्तमी वास ॥ १०७. अथवा वे वालुक मझै, एक पक दुखखान। एक घूम इक तम विषे, एक सप्तमी जान।। १० द. रैपनर रत्न थी पंच सक्कर थी, इक वालुक थी जाणिये। इकवीस विकल्प एक करि ए, पंचयोगिक आणिये।। १०६. जीव पट ना पंच विकल्प पचयोगिक ना कह्या। एक सौ नै पंच भगा, पूर्व रीत करी थया।। एकेक विकरप करि रत्न थी १४, मक्कर थी ४, वालुक थी १-एव २१। रत्न थी १५ हुवै, तेह्नो विवरो—रत्न समगर थी १०, रत्न वालुक थी ४, रत्न पक थी १- एव १५। ते पनरे ने विषे रतन सक्कर थी १०, ते किसा? रतन

सक्कर वालुक थी ६, रत्न सक्कर पक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी १--एव रत्न

१०७. बहवा दो वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे बहेसत्तमाए होज्जा।

<sup>\*</sup> लय: पूज मोटा भाज तोटा

१६४ भगवती-जोड्

सक्कर थी १०। ते दशा माहे रत्न सक्कर वालुक थकी ६, ते किसा ? रत्न सक्कर वालुक पक थी ३, रत्न सक्कर वालुक धूम थी २, रत्न सक्कर वालुक तम थी १—एवं रत्न सक्कर वालुक थी ६ भागा हुवै। तिहा रत्न सक्कर वालुक पक थी ३ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—

	•	म विकल्प कार कह छ—
१	१	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम
2	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ तम
n	Ę	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ सप्तमी
हिवै	रत्न स	क्कर वालुक पक थी ३ भागा द्वितीय विकल्पे
8	१	१ रत्न. १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ घूम
ধ	२	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ तम
Ę	₹	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, २ पक, १ सप्तमी
हिं	रे रत्न स	विकर वालुक पक थी ३ भागा तृतीय विकल्पे
b	8	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ धूम
5	२	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पक, १ तम
3	₹	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी
हि	वै रत्न स	नकर वालु पक थी ३ भागा चतुर्थ विकल्पे
१०	8	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ घूम
११	२	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम
१२	3	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ पंक, १ सप्तमी
हि	वै रल	सक्कर वालु पक थी ३ भागा पचम विकल्पे
१३	१	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ धूम
	1	
<b>8</b> 8	1	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम
5 x 5 x	7	1
१५	7	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम
१५	र रे रे रेल	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ सप्तमी
१ <u>५</u>	२ ३ इबै रत्न १	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ तम २ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, १ पक, १ सप्तमी सक्कर वालुक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्पे

हिनै रत्न सक्कर वालु धूम थी २ भागा द्वितीय विकल्पे
१८ १ रत्न, १ स्वकर, १ वालु, २ धूम, १ तम
१६ २ १ रतन, १ सक्कर, १ वालु, २ धूम, १ सप्तमी
हिवै रत्न सक्कर वालु धूम थी २ भागा तृतीय विकल्पे
२०   १   १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ तम
२१ २ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ धूम, १ सप्तमी
हिवें रत्न सक्कर वालु घूम थी २ भागा चतुर्थ विकल्पे
२२ १ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ धूम, १ तम
२३ २ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालुक, १ घूम, १ सप्तमी
हिवै रत्न सक्कर वालु धूम थी २ भागा पचम विकल्पे
२४ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ घूम, १ तम
२५ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ सप्तमी
हिवे रत्न सक्कर वालुक तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै—
२६ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ तम, २ सप्तमी
हिंवे रत्न सक्कर वालु तम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे
२७ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ तम, १ सप्तमी
हिबै रत्न सक्कर वालु तम थी १ भागो तीजे विकल्पे
२८ १ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ तम, १ सप्तमी
हिबै रत्न सक्कर वालु तम थी १ भागो चतुर्थ विकल्पे
२६ १ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ तम, १ सप्तमी
हिनै रत्न सक्कर वालु तम थी १ भागो पचम विकल्पे
३० १ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ तम, १ सप्तमी
ए रत्न वालुक थी ६ भागा पच विकल्प करि ३० भागा कह्या।

हिवै रत्न सक्कर पक थी ३ भागा ते किसा १ रत्न सक्कर पक धूम थी २, रत्न सक्कर पक तम थी १ तिहा रत्न सक्कर पक इम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहै छै—	
३१ १ १ रतन, १ सकर, १ पक, १ धूम, २ तम	
३२ २ १ रत्न, १ मक्कर, १ पक, १ धूम, २ सप्तमी	
हिवै रत्न सक्कर पक धूम थी २ भागा दूजे विकरपे	
३३ १ १ रतन, १ मबकर, १ पक, २ धूम १ तम	
३४ २ १ रतन, १ सक्कर, १ पक, २ धूम, १ सातमी	
हिवै रत्न सक्कर पक घूम थी २ भागा तीजे विकरपे	
३५ १ १ रत्न, १ मक्कर, २ पक, १ धूम, १ तम	
३६ २ १ रत्न, १ सक्कर, २ पक, १ धूम, १ सप्तमी	
हिवै रत्न सक्कर पक धूम थी २ भागा चतुर्य विकल्पे	
३७ १ १ रत्न, २ मक्कर, १ पक, १ धूम, १ तम	
३८ २ १ रत्न, २ सक्कर, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी	
हिर्व रत्न सक्कर पक धूम थी २ भागा पचम विकल्पे	
३६ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ धूम, १ तम	
४० २ २ रतन, १ सनकर, १ पक, १ घूम, १ मप्तमी	
हिबै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहै छै—	
४१ १ १ रत्त, १ सक्कर, १ पक, १ तम, २ सप्तमी	
हिवै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो द्वितीय विवल्पे	
४२ १ १ रत्न, १ सक्कर, १ पक, २ तम, १ सप्तमी	
हिनै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो तृतीय विकरपे	
४३ १ १ रतन, १ सनकर, २ पक, १ तम, १ सप्तभी	
हिवै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो चतुर्थ विकत्पे	
४४ १ १ रतन, २ मक्कर, १ पक, १ तम, १ सप्तमी	

हिवै रत्न सक्कर पक तम थी १ भागो पचम विकरपे		
४५ १ २ रत्न, १ सक्कर, १ पक, १ तम, १ सप्तमी		
ए रत्न मक्कर पक थी ३ भागा, ५ विकल्प करि १५ भागा कह्या।		
हिर्च रत्न सक्कर घूम थी एक भागो पच विकल्प करि ५ भागा कहै छै—		
४६ १ १ रत्न, १ मक्कर, १ धूम, १ तम, २ मप्तमी		
रत्न सक्कर धूम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे		
४७ १ १ रत्न, १ मक्कर, १ घूम, २ तम, १ मध्नमी		
रत्न सकर धूम थी १ भागो तृतीय विकल्पे		
४८ १ १ रत्न, १ सक्कर, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी		
रत्न मक्कर धूम थी १ भांगो चतुर्थ विकल्पे		
४६ १ १ रत्न, २ सक्कर, १ धूम, १ तम, १ सप्तर्मी		
रत्न सक्कर धूम थी १ भागो पचम विकल्पे		
५० १ २ रत्न, १ सबकर, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी		
ए रत्न सक्कर धूम थी १ भागो पंच विकल्प करि कह्यो । एव रत्न सक्कर थी १० भागा, पच विकल्प करि ५० भागा कह्या ।		
हिनै रत्न वालुक थी ४ भागा एकेक विकल्प करि हुनै ते किसा रेरत्न वालु पक थी ३, रत्न वालु धूम थी १, तिहा रत्न वालुक पक थी ३ ते किसा रेरत्न वालुक पक धूम थी १ एव ३। तिहा रत्न वालुक पक वालुक पक वालुक पक वालुक पक धूम थी २ भागा प्रथम विकल्प करि कहैं छैं—		
५१ १ १ रत्न, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम		
५२ २ १ रत्न, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ सप्तमी		
हिवै रस्न वालुक पक घूम थी २ भागा द्वितीय विकल्पे		
५३   १   १ रत्न, १ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम		
५४ २ १ रत्न, १ वालु, १ पक, २ घूम, १ सप्तमी		

हिवै रत्न वालु पक धूम यी २ भागा तृतीय विकल्पे	
५५ १ १ रत्न, १ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम	
५६ २ १ रत्न, १ वालु, २ पक, १ धूम, १ सप्तमी	
हिवै रत्न वालु पक धूम थी २ भागा चतुर्थ विकल्पे	
५७ १ १ रत्न, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम	
५६ २ १ रत्न, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी	_
हिवै रत्न वालुक पक घूम थी २ भागा पचम विकल्पे	
५६ १ २ रत्न, १ वालु, १ पक्र, १ धूम, १ तम	
६० २ २ रत्न, १ वाधु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी	
हिन्नै रत्न वालु पक तम थी १ भागो प्रयम विकल्प करि कहै छै —	_
६१ १ १ रत्न, १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी	
हिनै रत्न वालु पक तम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे	
६२ १ १ रत्न, १ बालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी	com.
हिवै रत्न वालु पक तम यी १ भागो तृतीय विकल्पे	
६३ १ १ रत्न, १ वालु, २ पक, १ तम, १ सप्तमी	
हिबै रत्न वालु पक तम थी १ भागो चतुर्थ विकल्पे	
६४ १ १ रत्न, २ वालु, १ पक, १ तम, १ सप्तमी	
हिवै रत्न वालु पक तम थी १ भागो पचम विक्ल्पे	
६५ १ २ रत्न, १ बालु, १ पक, १ तम, १ सप्तमी	
ए रत्न वालुक पक थी ३ भागा कह्या ।	
हिवै रत्न वालुक धूम थी १ भागो प्रथम विकल्प करि कहे छै-	_
६६ १ १ रत्न, १ वालु, १ धूम, १ तम, २ संद्तमी	
हिनै रत्त वालुक धूम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे	
६७ १ १ रत्न, १ वालु, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी	_

हिर्वे रत्न वालु घूम थी १ भागो तृतीय विकल्पे
६८ १ १ रत्न, १ वालु, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी
हिवै रत्न वालु धूम थी १ भागो चतुर्थ विकल्पे
६६ १ १ रत्न, २ त्रालु, १ घूम, १ तम,१ सप्तमी
हिवै रत्न वालु धूम थी १ भागो पचम विकल्पे
७० १ २ रत्न, १ वालु, १ धूम, १ तम,१ सप्तमी
ए रत्न वालुक पक थी ४ भागा पच विकल्प करि २० भागा कह्या ।
हिवे रत्न पक धूम तम थी १ भागो प्रथम विकल्न करि कहै छै—
७१ १ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी
हिंवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो द्वितीय विकल्पे
७२ ११ रत्न, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी
हिवे रत्न पक घूम तम थी १ भागो तृतीय विकल्पे
७३ १ १ रत्न १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी
हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो चतुर्य विकल्पे
७४ १ १ रत्न, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी
हिवै रत्न पक धूम तम थी १ भागो पचम विकल्पे
७५ १ २ रत्न, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी
ए रत्त थी १५ भागा पच विकल्प करि ७५ भागा कह्या।
हिनै सक्कर थी पच भागा एकेक विकत्य करि हुनै, ते पाच विकत्प करि २५ हुनै । तिहा सक्कर थी प्रथम भागो ५ विकत्प करि कहै छै तिणमे सातमी नरक टली ।
७६   १   १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम
७७ २ १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम
७८ र सक्तर, १ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम
७६ ४ १ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम
<ul><li>५ २ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम</li></ul>

, ,	सक्कर नरक व	थी द्वितीय भांगो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे टली ।
<b>५</b> १	१	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ सप्तमी
ب لا	२	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, १ सप्तमी
प्रभ	na e	१ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ धूम, १ सप्तमी
८४	४	१ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ सप्तमी
写义	x	२ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, १ सप्तमी
		्थी तृतीय भागो ५ विकल्प करि कहे छै तिणमे ह टली ।
द६	१	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ तम, २ सप्तमी
50	२	१ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ तम, १ सप्तमी
ធធ	સ	१ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ तम, १ सप्तमी
58	8	१ मक्कर, २ वालु, १ पक, १ तम, १ सप्तमी
٥3	ሂ	२ मक्कर, १ वालु, १ पक, १ तम, १ सप्तमी
		थी चतुर्य भागो ५ विकल्प करि कहै छै तिणमे टली।
٤٤	8	१ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी
٤٦	२	१ सक्कर, १ वालु, १ घूम, २ तम, १ सप्तमी
६३	ą	१ सकर, १ वालु, २ घूम, १ तम, १ सप्तमी
83	8	१ मक्तर, २ वालु, १ घूम, १ तम, १ सप्तमी
£X	પ્ર	२ सक्कर, १ वालु, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी

-	सक्कर ी नरक	थी पचमो भागो ५ विकत्य करि कहे छै तिणमे टली।
દદ	१	१ सक्तर, १ पक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी
દહ	२	१ मक्तर, १ पंक, १ घूम, २ तम, १ मप्तमी
६५	ą	१ मक्कर, १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी
33	8	१ सक्कर, २ पक, १ धूम, १ तम, १ मप्तमीं
१००	x	२ सक्कर, १ पंक, १ घूम, १ तम, १ सप्तमी
ते र भाग विव कहि प्रक भाग	तक्कर थं गा द्वितीय हरप करि हवा, पर्छ गर करिय गा पाच	ति करिकै पिण २५ मागा हुवै ते कहै छै — ो ५ भागा प्रथम विकत्य किर किहवा, पछै ते ५ म विकत्य किर किहवा, पछै ते ५ भागा तृतीय र किहवा, पछै ते ५ भागा चतुर्य विकल्प किर हे ते ५ भागा पंचम विकल्प किर किहवा, इण कै पिण तेहिज २५ भागा हुवै, एव सक्कर थी ५ विकल्प किर २५ कहा। । हिवै वालुक थी १ भगो किर ५ भागा कहै छै —
१०१	१	१ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, २ मप्तमी
हि	रे वालु व	भी १ भगो द्वितीय विकल्पे
१०२	१	१ वालु, १ पक, १ घूम, २ तम, १ मप्तमी
हि	वै वालु	यी १ भागो तृतीय विकल्पे
१०३	१	१ वालु, १ पक, २ घूम, १ तम, १ सप्तमी
	हिंदै वा	लु थी १ भागो चतुर्य विकल्पे
१०४	१	१ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी
	हिवै वा	तु थी १ भागो पचम विकल्पे
१०५	१	२ वालु, १ पंक, १ धूम, १ तम, १ मप्तमी
1	ए वालु	क यी १ भागो ५ विकल्प करि ५ भागा कह्या।

एवं छ जीव ना पचसयोगिक एक-एक विकल्प करि रत्न थी १४, सर्वकरं थी ४, वालुक थी १, इम २१ भागा, ते पच विकल्प करि १०५ भागा कह्या। रत्न थी ७४, सक्कर थी २५, वालु थी ४, ए सर्व १०५ भागा जाणवा।

११०. \*नवम बतीसम देश ए, सौ चौरासीमी ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' मंगलमाल।।

## ढाल: १८४

#### दूहा

- १. हिवै कहू छह जीव नां, इक विकल्प करि एह। षट-संयोगिक सप्त भग, सुणज्यो तज सदेह।। †जिन भाखै सुण गगेय! षट-योगिक भग भणेह।। [घ्रुपद]
- अथवा इक रत्न उवेख, इक सक्कर वालुक एक।
   इक पक एक धूम जोय, एक तमा विषे अवलोय।।
- अथवा इक रत्न उवेख, इक सक्कर वालुक एक।
   इक पक धूम इक जाण, इक सप्तमी नरक पिछाण।।
- ४ अथवा इक रत्न विशेष, इक सक्कर वालुक एक। एक पंक तमा इक कहियै, इक नारकि सप्तमी लहियै।।
- प्र अथवा इक रत्न सपेख, इक सक्कर वालुक एक। इक धूमा तमा इक तास, इक नारिक सप्तमी वास।।
- ६ अथवा इक रत्न मे देख, इक सक्कर पंके एक। इक धूम तमा इक जीव, इक सप्तमी नरक कहीव।।
- अथवा इक रत्न उवेख, इक वालुक पके एक।
   इक घूमा तमा इक पाय, इक नरक सप्तमी जाय।।
- अथवा इक सक्कर लेख, इक वालुक पके एक।इक धूम तमा इक जाण, इक नारक सप्तमी आण।।
- ह. षट जीव तणा ए जाण, षट-योगिक ना पहिछाण।
   इक विकल्प ने भंग सात, जिन आखे ए अवदात।।

१ पट्कसयोगे तु सप्तैव। (वृ० प० ४४५)

- २ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा।
- अहवा एगे रयणप्यभाए जाव एगे घूमपप्भाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।
- ४. अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेतत्तनाए होज्जा।
- ५ अहवा एगे रयणप्यभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्यभाए जाव एगे अहेसत्तनाए होज्जा।
- ६ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा।
- अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा।
- द अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा। [(भ० ६/६३)

<sup>\*</sup>लय : प्रभवो मन माहि चिन्तवै †लय : रे चिन्तातुर सुन्दर चाली

	छ जीव ना छ संजीगिया ना विकरप तो १ भागा ७
१	१ रत्न, १ सवकर, १ यालु, १ पक, १ धूम, १ तमा
२	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ मप्नमी
ą	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ तम, १ मध्तमी
૪	१ रत्न, १ सकर, १ वालु, १ घूम, १ नम, १ मर्पामी
X	१ रत्न, १ सकर, १ पक, १ घूम, १ तम, १ सप्तमी
Ę	१ रत्न, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, १ मप्तमी
હ	१ सकर, १ बालु, १ पक, १ घूम, १ तम, १ गणमी

- १०. पट जीव तणां आख्यात, इक-संयोगिक भग सात। दिक-योगिक विकल्प पंच, भंग एकसी पच मुगंच।।
- ११. त्रिक-योगिक विकल्प दश, साढा तीन सी भागा अवस्स । दश विकल्प चडकक-संयोगी, साढा तीन सी भंग प्रयोगी ॥
- १२. पच-योगिक विकल्प पंच, भंग एक सो पच सुगंच। पट-योगिक विकल्प एक, तमुं सप्त भंग सुविणेप॥
- १३. पट जीव तणां भग जाण, नवसी चडवीस प्रमाण। इक्योगिक बादि ए आख्या, सर्व सच्या करीने भारता॥
- १४. नवम देश वतीसम न्हाल, एकसी पच्यागोमी ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय, 'जय' संपति हरप सवाय॥

१३. ते च गर्वभीतने नर शतानि चतुर्विशस्युत्तराणि नवन्तीति । (यू० प० ४४४)

ढाल : १८६

# द्रहा

- १. सप्त जीव नां हे प्रभु! नरक प्रवेशन काल। तास प्रश्न पूछे छते, दाखे ताम दयाल।।
- रत्न सप्त यावत हुवै, तथा सप्तमी सात।
   इक-योगिक इक विकल्पे, भागा सात विष्यात।।
  - \* त्रिभुवन नाथ वीर प्रभु भाखै, सांभल तूं गगेया! [ध्रुपद]
- ३. सप्त जीव नां इकसंयोगिक, भागा सप्त विचारी। इक विकल्प करिने तसु आख्या, पूर्व रीत प्रकारी॥

- १. सत्त भने । नेरइया नेरइयणवेमणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ? — पुच्छा ।
- २. गगेया <sup>1</sup> रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेमत्तमाए या होज्जा ।
- ३. इहैकत्वे सप्त । (वृ० प० ४४५)

<sup>\*</sup> लय : प्रमाती

४. सप्त जीव ना द्विक-संजोगिक, षट विकल्प करि तास।
भग एक सौ षटवीस भणीजै, पूर्व रीत प्रकासं।।
५. इक-षट वे-पंच त्रिण-चिउ तीजो, च्यार-तीन पच-दोय।
षट-इक द्विकयोगिक विकल्प छ, सप्त जीव ना होय।।

स्थापना

१६, २४, ३४, ४३, ४२, ६१। सप्त जीव ना द्विक सजोगिक रा ए ६ विकल्प जाणवा।

६. सप्त जीव ना त्रिकसंजोगिक, विकल्प पनर जगीस ।भग पच सौ नै पणवीसं, इक विकल्प पैतीसं ।।

#### छ्प्यय

७. एक एक नै पंच, एक वे च्यार अखीजै। दोय एक नै च्यार, एक त्रिहु विल त्रिहु लीजै। दोय दोय नै तीन, तीन इक तीन कहीजै। एक च्यार नै दोय, दोय त्रिहुं दोय लहीजै। त्रिहुं दोय दोय, चिहु एक वे, इक पंच इक, वे च्यार इक। त्रिण तीन एक, चिउ दोय इक, पच इक इक त्रिकयोगिक।।

#### स्थापना

११४, १२४, २१४, १३३, २२३, ३१३, १४२, २३२, ३२२, ४१२, १४१, २४१, ३३१, ४२१, ४११।

सप्त जीव नां चउकसयोगिक, विकल्प वीस जगीस।
 अखिल सात सय भगा आख्या, इक विकल्प पणतीस।।

#### स्थापना

१११४, ११२३, १२१३, २११३, ११३२, १२२२, २१२२, १३१२, २२१२, ३११२, ११४१, १२३१, २१३१, १३२१, २२२१, ३१२१, १४११, २३११, ३२११, ४१११।

सप्त जीव ना पचसयोगिक, विकल्प पनर जगीस।भंगा तास तीन सय पनरे, इक विकल्प इकवीस।।

#### स्थापना

११११३, १११२२, ११२१२, १२११२, २१११२, १११३१, ११२२१, १२१२१, २११२१, ११३११, १२२११, २१२११, १३१११, २२१११, ३११११। १० सप्त जीव ना पटसयोगिक, पट विकल्प करि ख्यात। वयालीस भांगा तसु कहिवा, इक विकल्प ना सात।।

#### स्थापना

११११२, ११११२१, १११२११, ११२१११, १२११११, २१११११।
११. सप्त जीव ना सप्तसजीगिक, विकल्प तेहनो एक।
भागो एक कह्यो छै तेहनो, वारू रीत विशेख।।
१२. सप्त जीव ना भागा ए सहु, सतरे सौ ने सोल।
अनुक्रम सख्या करिने गिणवा, जिन वच अधिक अमोलं।।

४ द्विकयोगे तु सप्ताना द्वित्वे पड् विकल्पास्तद्यया— पड्भिश्च सप्तपदद्विकसयोगएकविशतेर्गुणनात् पड्-विशत्युत्तर भङ्गकशत भवति । (वृ० प० ४४५)

६ त्रिकयोगे तु सप्ताना त्रित्वे पञ्चदश विकल्पास्तद्यथा एतैश्च पञ्चित्रभत सप्तपदित्रकसयोगाना गुणनात् पञ्च भतानि पञ्चिविभत्यधिकानि भवन्तीति । (वृ० प० ४४४,४४६)

द चतुष्कयोगे तु सप्ताना चतूराशितया स्थापने एक एक एकश्चत्वार श्चेत्यादयो विश्वतिविकल्पा " विश्वत्या च पञ्चित्रशतः सप्तपदचतुष्कसयोगाना गुणनात् सप्त शतानि विकल्पाना भवन्ति (वृ० प० ४४६)

१ पञ्चकसयोगे तु सप्ताना पञ्चतया स्थापने एक एक एक एकस्त्रयश्चेत्यादय पञ्चदश विकल्पा एतैश्च सप्तपदपञ्चकसंयोगएकविंशतेर्गुणनात् त्रीणि शतानि पञ्चदशोत्तराणि भवन्ति । (वृ० प० ४४६)

१० पट्कसयोगे तु सप्ताना पोढाकरणे पञ्चेकका द्वी चेत्यादय पड्विकल्पा। सप्ताना च पदाना पट्कसयोगे सप्त विकल्पा, तेपा च पड्भिर्गुणने द्विचत्वारिशद्वि-कल्पा भवन्ति। (वृ० प० ४४६)

११ सप्तकसयोगे त्वेक एवेति । (वृ० प० ४४६)

१२ सर्वेमीलने च सप्तदश शतानि पोडशोत्तराणि भवन्ति । (वृ० प० ४४६)

## सोरठा

- १३, नारिक अप्ट भदंत ! नरक प्रवेसण रत्न में। जाव सप्तमी हुंत ? जिन भार्ख गगेय ! सुण ॥ १४. अप्ट रत्न उपजन, जाव तथा अठ सप्तमीं। इकसयोगिक, हुत, इक विकल्प करि सप्त भंग॥
- १५. \*अष्ट जीव नां द्विकसंयोगिक, विकल्प सप्त जगीसं। भंग एकसी नै सैताली, इक विकल्प इकवीस॥

#### स्थापना

१७, २६, ३४, ४४, ५३, ६२, ७१।
१६. अप्ट जीव ना त्रिकसंयोगिक, विकल्प तसु इकवीस।
भागा तास सप्त सय पैत्रिस, इक विकल्प पणतीसं।।

#### स्थापना

११६, १२४, २१४, १३४, २२४, ३१४, १४३, २३३, ३२३, ४१३, १४२, २४२, ३३२, ४२२, ४१२, १६१, २४१, ३४१, ४३१, ४२१, ६११। [१७. अष्ट जीव नां चउक्कसजीगिक, पैंत्रिस विकल्प दीस। भंग वार सय पचवीस फून, इक विकल्प पणतीस।।

#### स्थापना

१११४, ११२४, १२१४, २११४, ११३३, १२२३, २१२३, १३१३, २२१३, ३११३, ११४२, १२३२, २१३२, १३२२, २२२२, ३१२२, १४१२, २३१२, ३२१२, ४११२, १४११, २४११, १३३१, ४२२१, ३२२१, ४१२१, १४११, २४११, ३३११, ४२११, ५१११। १८. अच्ट जीव नां पंचसंयोगिक, विकल्प तसु पणतीस। भागा तास सातसी पंजिस. इक विकल्प इकवीस।।

#### स्थापना

११११४, १११२३, ११२१३, १२११३, २१११३, १११३२, ११२२२, १२१२२, २११२२, ११३१२, १२२१२, २१२१२, १३११२, २२११२, ३१११२, १११४१, ११२३१, १२१३१, २१३६१, ११३२१, १२२२१, २१२२१, १३१२१, २२१२१, ३११२१, ११४११, १२३११, २१३११, १३२११, २२२११, ३१२११,

१६. अप्ट जीव ना पटसयोगिक, विकल्प इकवीस ख्यात। भंग एक सौ ने सैतालीस, इक विकल्प भंग सातं॥

#### स्थापना

१११११३, ११११२२, १११२१२, ११२११२, १२१११२, ११११२, १११२२, १११२२, १११२१, ११२२२, १२१२११, २११२११, ११२१११, १२२१११, २१११११, २१११११।

\* लय: प्रभाती

१३.१८ अट्ट भते । नेरज्या नेरज्यप्यवेमणएण पविममाणा कि रयणप्यभाए होज्जा ?—पुच्छा ।
गोया । रयणप्यभाए वा होज्जा जाव अहेमत्तमाए

वा होज्जा।

- इहैकरवे मप्त विकल्पा. (वृ० प० ४४६)
- १५ द्विकसयोगे त्वप्टाना द्वित्वे एक. सप्तेत्यादय: सप्त विकल्पा. प्रतीता एव, तैश्च मप्तपदद्विकमयोगैक-विश्वतेगीणनाच्छतं सप्तचत्वारिणदिधकाना भवतीति । (वृ० प० ४४६)
- १६ त्रिकसयोगे त्वष्टाना त्रित्वे एक एक: पढ् इत्यादय
  एकविणतिविकत्पा, तैण्च मप्पपदित्रकसयोगे पञ्चत्रिणतो गुणने सप्त णतानि पञ्चित्रणदिधिकानि
  भवन्ति। (वृ० प० ४४६)
- १७ चतुष्कमयोगे त्वष्टाना चतुर्द्वात्वे एक एक एक एक. पञ्चे-त्यादय पञ्चित्रणद्विकल्पा, तैरच मध्तपदचतुष्क-मयोगाना पञ्चित्रिशतो गुणने द्वादय शतानि पञ्च-विशत्युत्तराणि भङ्गकाना भवन्तीति (वृ० प० ४४६)
- १८ पञ्चमसंयोगे त्वप्टाना पञ्चत्वे एक एक एक एक एकण्चत्वारण्चेत्यादय पञ्चित्रणद्विकत्ना, तैश्च मप्तपदपञ्चकसयोगैकविशतेर्गुणने मप्त णतानि पञ्चित्रणदिधकानि भवन्तीति, (वृ० प० ४४६)
- १६ पट्सयोगे त्वष्टाना पोढात्वे पञ्चैककास्त्रयम्बेत्यादयः एकविंशतिविकल्पा , तैम्च सप्तपदपट्कसयोगाना सप्तकस्य गुणने सप्तचत्वारियदिष्ठक भङ्गकमत भवतीति (वृ० प० ४४६)

२०. अष्ट जीव ना सप्तसयोगिक, विकल्प सप्त विख्यातं। भागा पिण तसु सप्त भणीजै, कहियै तसु अवदात।।

हिवै	अष्ट जीव ना सप्त सजोगिक ना विकल्प सात भागा सात कहै छैं—
१	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी
२	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी
ą	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी
8	१ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ घूम, १ तम, १ सप्तमी
¥.	१ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी
Ę	१ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी
9	२ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, १ तम, १ सप्तमी
	ए अष्ट जीव ना सप्तसजोगिक जाणवा ।

२१. अष्ट जीव ना ए सहु भागा, तीन सहस्र नै तीन। इक्संयोगिक आदि देई नै, सप्त सयोग सुचीन॥

#### सोरठा

२२. नारिक नव भगवत । नरक प्रवेसण रत्न मे। जाव सप्तमी हुत िजन भाखे गगेय । सुण।। २३. नव रत्ने उपजंत, जाव तथा नव सप्तमी। इकसंयोगिक हुत, इक विकल्प करि सप्त भग।।

२४. \*नव जीवा ना द्विकसयोगिक, विकल्प अष्ट जगीस। भगा तास एकसौ अडसठ, इक विकल्प इकवीस।।

#### स्थापना

१८, २७, ३६, ४४, ५४, ६३, ७२, ८१।
२५. नत्र जोवा ना त्रिकसयोगिक, विकल्प तसु अठवीस।
भागा नवसै असी अधिक है, इक विकल्प पणतीस।।

#### स्थापना

११७, १२६, २१६, १३४, २२४, ३१४, १४४, २३४, ३२४, ४१४, १४३, २४३, ३३३, ४२३, ४१३, १६२, २४२, ३४२, ४३२, ४२२, ६१२, १७१, २६१, ३४१, ४४१, ५३१, ६२१, ७११। २६. नव जीव ना चउकसयोगिक, विकल्य छप्पन दीस। उगणीसौ ने साठ भंग है, इक विकल्य पणतीस।। २०. सप्तसयोगे पुनरष्टानां सप्तधात्वे सप्त विकल्पाः प्रतीता एव, तैश्चैकैकस्य सप्तकसयोगस्य गुणने सप्तैव विकल्पा (वृ० प० ४४६)

२१. एपा च मीलने त्रीणि सहस्राणि त्र्युत्तराणि भवन्तीति । (वृ० प० ४४६)

२२,२३ नव भते । नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पवि-समाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा। गगेया। रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा। इहाप्येकत्वे सप्तैव, (वृ० प० ४४७)

२४ द्विकसयोगे तु नवाना द्वित्वेऽष्टो विकल्पा. प्रतीता एव, तैश्चैकविंशते सप्तपदद्विकसयोगाना गुणनेऽष्ट-पष्टचिंधक भङ्गकशत भवतीति ।

(वृ० प० ४४७)

- २५ त्रिकसयोगे तु नवाना द्वावेककौ तृतीयश्च सप्तक इत्येवमादयोऽष्टाविशतिर्विकल्पा, तैश्च सप्तपदित्रक-सयोगपञ्चित्रिशतो गुणने नव शतान्यशीत्युत्तराणि भङ्गकाना भवन्तीति । (वृ० प० ४४७)
- २६ चतुष्कयोगे तु नवाना चतुद्धांत्वे त्रय एकका पट् चेत्यादय पट्पञ्चाशद्विकत्पा, तैश्च सप्तपदचतुष्क-सयोगपञ्चित्रशतो गुणने सहस्र नव शतानि पष्टिश्च भङ्गकाना भवन्तीति । (वृ० प० ४४७)

<sup>\*</sup> लय: प्रभाती

#### स्थापना

ए पूर्वे कह्या ते नव जीवा ना चउवकसजोगिया ५६ विकल्प इम करिवा।

२७. नव जीव ना पचसयोगिक, सित्तर विकल्प दीसं। चवदै सो ने सित्तर भागा, इक विकल्प इकवीसं।।

#### स्थापना

११११४', ११२४', ११२१४', १२२१४', ११११४', १११३३',
११२२३', १२१२३', ११३१३'', १२२१३'', १२१३३'',
११३२२'', १२१२२'', १११२२'', १२१२२'', २२१२२'',
११४२२'', १२३१२'', २१२२२'', १३१२२'', २२१२२'', ३१२२२'',
१४१२'', २३१२'', ३२११२'', ११३३१'', १११४१'', १११४१'',
१२१४१'', २११४१'', ११३३१'', १२३१४'', २१२३१'', २१२२१'',
२२११९'', ३१२१९'', १४११९'', १३३१९'', २२३१९'', ३१२१९'',
१४४१९'', २२४१९'', २४४१९'', १३३१९'', २२३१९'', २४११९'',
१४४१९'', २३४१९'', २४११९'', १३३१९'', २४११९'', २४११९'',

ए पूर्वे कह्या ते नव जीवा ना पचसयोगिक ७० विकल्प इम करिवा।

२८. नव जीवा ना पटसंयोगिक, छप्पन विकल्प ख्यात । प्रवर तीन सय वाणूं भागा, इक विकल्प करि सातं ॥

#### स्थापना

११११२३, १११२१३, ११२११३, १२११३, २११११३<sup>६</sup>, ११११३२<sup>६</sup>, १११२२२<sup>६</sup> ११२१२२<sup>६</sup>, १२११२२<sup>६</sup>, २१११२२<sup>६</sup>, १११३१२<sup>१२</sup>, ११२२१२ १२१२१२ २१**१**२१२,<sup>१५</sup> १३१११२ १२२११२'ं, २१२११२१८, २२१११२<sup>२</sup>°, ११११४१<sup>२२</sup>, १११२३१३, ११२१३१ र४, १२११३१३५, १११३२१ ", ११२२२१<sup>२</sup>, १२१२२१<sup>२९</sup>, २११२२१'°, १२२१२१ ३२, २१२१२१ १३११२१ रहें, १११४११<sup>३७</sup>, ११२३११³६, १२१३११<sup>३९</sup>, २११३११<sup>\*\*</sup>, ११३२११<sup>\*\*</sup>, १२२२११ भरे २१२२११⁵३, १३१२११\*\*, २२१२११४५, ११४१११४, १२३१११४, २१३१११<sup>४९</sup>, १३२१११५, २२१११२५, चेश्रर्थर<sup>५,</sup> १४११११<sup>५,</sup> २३११११<sup>५,</sup>, ३२११११<sup>५,</sup> ४१११११<sup>५,</sup>।

ए पूर्वे कह्या ते नव जीवा रा पटसयोगिक ५६ विकल्प इम करिवा।

२७. पञ्चकसयोगे तु नवाना पञ्चधात्वे चत्वार. एकका. पञ्चकश्चेत्यादय. सप्तिर्विकल्पा, तैश्च मध्तपद-पञ्चकसयोगएकविणतेर्गुणने सहस्र चत्वारि शतानि सष्तिरुच भङ्गकाना भवन्तीति (वृ० प० ४४७)

२८. पट्कसयोगे तु नवाना पोढात्वे पञ्चैककाश्चतुष्क-कश्चेत्यादयः पट्पञ्चादाद्विकत्या भवन्ति, तैश्च सप्तपदपट्कसंयोगमप्तकस्य गुणने शतत्रय द्विनवत्य-धिक भञ्जकाना भवन्तीति । (वृ० प० ४४७)

१७४ भगवती-जोड़

२६ नव जीवां नां सप्तसंयोगिक, विकल्प तसु अठवीसं। भांगा पिण अठवीस भणेवा, ते जूजुआ कहीस।। ए नव जीव ना सप्तसयोगिक विकल्प २८ भागा २८

₹. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, ३ सप्तमी १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, २ सप्तमी 7 १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम, २ सप्तमी ₹ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी ٧, १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, २ संप्तमी ¥. १ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, २ सप्तमी ξ. २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, १ तम, २ सप्तमी ૭ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ३ तम, १ सप्तमी 5 १ रत्न, १ सक्कर; १ वालु, १ पक, २ धूम, २ तम, १ सप्तमी Э. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी १० ११ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी १ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी १२ १३ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, १ सप्तमी १४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ३ धूम, १ तम, १ सप्तमी १५ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी १६ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी १७ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, २ धूम, १ तम, १ सप्तमी १८ १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, ३ पक, १ धूम, १ तम, १ मध्नमी 38 २० १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी २१ १ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी २२ २ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी २३. १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी २४ १ रत्न, २ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी २ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी २५ १ रत्न, ३ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी २६ २७. २ रत्न, २ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी ३ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, १ सप्तमी २५. ३० नव जीवां नां ए सह भागा, पच सहस्र नै पच।

इकसयोगिक आदि देइ नै, सप्त-संयोगिक सच।। ३१ दश जीवा नां इकसयोगिक, इक विकल्प भग सात। द्विकसयोगिक नव विकल्प, भग सौ नव्यासी ख्यात।।

३२ दश जीवा ना त्रिकसयोगिक, विकल्प है पट तीस। वारे सौ ने साठ भग है, इक विकल्प पणतीस।। २१. सप्तपदसयोगे पुंनर्नवाना सप्तत्वे एकका षट् त्रिकश्चेत्यादयोऽष्टाविशतिर्विकल्पा भवन्तीति, तैश्चैकस्य सप्तकसयोगस्य गुणनेऽष्टाविशतिरेव भञ्जका। (वृ०प०४४७)

३० एपा च सर्वेपा मीलने पञ्च सहस्राणि पञ्चोत्तराणि विकल्पाना भवन्तीति। (वृ० प० ४४७)

३१. इहाप्येकत्वे सप्तैव, द्विकसयोगे तु दशाना द्विधात्वे एको नव चेत्येवमादयो नव विकल्पा तैरचैकविशते सप्तपदद्विकसयोगाना गुणने एकोननवत्यधिकं भञ्जकात भवतीति। (वृ० प० ४४७)

३२ त्रिकयोगे तु दशाना त्रिधात्वे एक एकोऽष्टो चेत्येव-मादय पर्ट्रिशद्विकल्पा, तैश्च सप्तपदित्रकसयोग-पञ्चित्रिशतो गुणने द्वादश शतानि पष्ट्यधिकानि भञ्जकाना भवन्तीति। (वृ० प० ४४७)

- ३३. दश जीवां देनां चउकसंयोगिक, चउरासी विकल्प दीसं।
  गुणतीसी नें चालीस भांगा, इक विकल्प पणतीसं।।
- ३४. दश जीवां नां पंचसंयोगिक, विकल्प इकसी छवीस। भंग छवीसी अधिक छयाली, इक विकल्प डकवीस॥
- ३५. दश जीवां नां पटसंयोगिक, विकल्प इकसौ छवीसं।
  भग बाठ सौ नै वयासी, इक विकल्प सत दीस।।
- ३६. दश जीवां नां सप्तसंयोगिक, विकल्प चउरामी दीसं। भागा पिण चउरासी तेहनां, निपुण विचार कहीसं॥
- ३७. च्यार रत्न इक सक्कर, जाव इक सप्तमी होय।
  चरम भग विकल्प ए भणवो, सप्त संयोगिक सोय॥
  ३८ दश जीवां नां ए सहु भांगा, अष्ट सहस्र ने आठ।
  इकसंयोगिक आदि देइ ने, सप्त संयोग सुवाटं॥
  ३६. नवम शतक नो देश वतीसम, सौ छयासीमी ढाल।
  भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' हरप विशाल॥

# ढाल: १८७

## दूहा

- इकसंयोगिक आदि दे, सप्त-सयोगिक सार।
   तसु विकल्प नी आमना, हिव कहियै सुविचार।
- २. एक दोय त्रिण आदि दे, जीव अनेक सुजोय। इक संयोगिक तेहनों, विकल्प एकज होय।।
- ३. द्विकयोगिक वे जीव ना, विकल्प कहिये एक। द्विकयोगिक त्रिण जीव नां, विकल्प दोय विशेख।।
- ४. इम यावत सी जीव नां, दिकयोगिक पहिछान। विकल्प निन्याणूं कह्या, इम आगल पिण जाण।। एक जीव आदि देइ सख असख जीव रो एकसयोगियो विकल्प एक सगलैंड।

हिवै द्विकसंजोगिया री आमना लिखियै छै-

३३ चतुष्कसयोगे तु दशाना चतुर्घात्वे एककययं सप्तकरचेत्येवमादयम्चतुरशीतिर्विकल्पा., तैम्च मप्तपदचतुष्कसयोगपञ्चित्रशतो गुणने एकोन-त्रिशच्छतानि चत्वारिशदिधकानि भञ्जकाना भवन्तीति । (वृ० प० ४४७)

३४. पञ्चकसयोगे तु दशाना पञ्चधात्वे चत्वार एकर्काः पट्कण्चेत्यादय. पट्विशत्युत्तरथतमङ्ख्या विवत्या भवन्ति तैषच सप्तपदपञ्चकसयोगैकविशतेर्गुणने पट्विशति शतानि पट्चत्वारिशदिधकानि भञ्जकानां भवन्तीति। (व० प० ४४७)

३५. पट्कमयोगे तु दयाना पोढात्वे पञ्चेकका पञ्च-कण्चेत्यादयः पड्विंशत्युत्तरयतसस्या विकल्पा भवन्ति, तैण्च सप्तपदपट्कसयोगसप्तकस्य गुणनेऽप्टो यतानि द्वघशीत्यधिकानि भञ्जकानां भवन्तीति ।

(वृ० प० ४४७)

३६ मप्तकसयोगे तु दशाना सप्तधात्वे पटेककाण्य-तुष्कश्चेत्येवमादयण्यतुरशीतिविकल्या, तैरचैकस्य सप्तकमयोगस्य गुणने चतुरशीतिरेव भङ्गकाना भवन्ति। (वृ० प० ४४७)

३७. अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेमत्तमाए होज्जा। (ग० ६/६७)

३८. सर्वेषां चैषां मीलनेऽष्टसहस्राणि अष्टोत्तराणि विकल्पानां भवन्तीति । (वृ० प० ४४७) दोय जीव रो द्विकसंजोगियो १ विकल्प, तीन जीव रा द्विकसजोगिया २ विकल्प, इम यावत मौ जीवा रा द्विकसजोगिया ६६ विकल्प, जेतला जीव लेणा तिण सू एक ऊणो विकल्प।

हिवै त्रिकसंजोगिया ना विकल्प नी आमना---

- ५. त्रिकयोगिक त्रिण जीव नों, विकल्प एक सुचीन । त्रिकयोगिक चिउ जीव ना, कहियै विकल्प तीन ॥
- ६. त्रिकयोगिक जतु जिता, तेहथी दोय घटाय। शेष अक लिखने गिण्यां, तेता विकल्प थाय।।

वा॰ — जेतला जीव लेवै तिण माहि थी दोय काढियै, पाछै रहे ते एक सू गिणियै। तिवारै जेतला हुवै जितरा विकल्प जाणवा। कोइ एक इम पूछै— जे दश जीवा रा त्रिकसजोगिया केतला विकल्प ? तिवारै इम किहयै — जे दश माहि थी २ काढियै तिवारे पछै = रहे, ते इम लिखणा— १,२,३,४,४,६,७,६ हिवै ए आका नै इम गिणणा ते विध कहै छै— एक ने दोय – तीन, तीन ने तीन — छ, छ ने च्यार—दश, दश ने पाच — पनरे, पनरे ने छ— इकवीस, इकवीस ने सात— अठावीस, अठावीस ने आठ — छतीस—इम दश जीवा रा ३६ विकल्प हुवै। विल कोइ पूछै — वीस जीवा रा विकल्प किता ? तेहनो उत्तर—वीस माहि थी २ काढियै, पाछै अठारे रहै। ते एक सू लेइने अठारे ताइ गिणिया १७१ हुवै, एतला वीस जीवा रा विकल्प जाणवा। आगल पिण इमहिज करिवा।

हिवै चउकसजोगिया विकल्प नी आमना---

- ७. चउयोगिक चिउ जीव नो, विकल्प इक अवधार। चउयोगिक पच जीव नां, कहिये विकल्प च्यार।।
- द. चउयोगिक षट जीव ना, दश विकल्प सुकहीस। चउयोगिक सत्त जीव नां, कहियै विकल्प बीस॥
- इ. चउयोगिक जतू जिता, तेहथी तीन घटाय।
   पाछै रहै तेहनों घडो, दीघा जितरा थाय।
- १०. पट जतू ना केतला, विकल्प हुवै सुलेख? पट थी त्रिण काढचो छते, लिखो अक त्रिण पेख ॥
- ११. एको बीओ ने तीओ, प्रथम ओल ए अक। दितीय ओल धुर अक इक, लिख तसु घडो निसंक।।
- धर इक अंक लिख्यो अछै, तसु जोडे विल ताय।
   एक अने वे त्रिण हुवै, तीओ अक लिखाय।
- १३ तीन अने विल त्रिण मिल्यां, गिणिया षट कहिवाय । तीआ अक पासे वली, षट नो अक लिखाय ।।
- १४ दूजी ओली नो घडो, दीधा दश ह्वं सोय। विकल्प दश षट जीव नां, इम आगल पिण होय।।

वा—जेतला जीव लेणा त्या माहि थी ३ काहियै, पछ तेहनोइज घडो देणो जे कोइक इम पूछे—दश जीवा रा चडक्सजोगिया केतला विकल्प ? जब इम कहीजै—१० माहि थी ३ काहियै, पाछ सात रहै ते एक सू लेइ ने इम लिखणा—१,२,३,४,४,६,७। हिबै ए ओली ने इम गिणवी—एक न दोय—३, तीन न तीन—६, छ ने च्यार—१०, दश न पाच—१४, पनर ने छ—२१, इकवीस न सात—२६, ए दूजी ओल पहिली ओल हेठे इम लिखणी—१,३,६,१०,१४,२१,२६।

हिनै बीजी ओल नै गिण्या जेतला हुनै तेतला विकल्प जाणवा, ते इम गिणवा—एक नै तीन—४, च्यार ने छ—१०, दश नै दश—२०, वीस नै पनरै—३५, पेतीस ने इकवीस—५६, छप्पन ने अठावीस— ५४। इम दश जीव ना चडक्कसयोगिया चडरासी विकल्प थया। इम सौ ताइ गिण लीजै। घडो जिताइज विकल्प जाणवा।

तथा वलि अन्य प्रकार करिकै चउकसजोगिया ना विकरप नी आमना-

हिवै छ जीवा रा चउकसजोगिया विकल्प कितरा ? उत्तर—छ माहि थी एक जीव घटाया पाच जीवा रा चउकसजोगिया ४ विकल्प अने पाच जीवा रा विकस्पजोगिया ६ विकल्प । दोनू भेला गिण्या विकल्प हुवै इतरा विकल्प छ जीवा रा चउकसजोगिया विकल्प किता ? उत्तर —छ जीवा रा चउकसजोगिया अने छ जीवा रा विकसयोगिया दोनू भेला गिण्या जितरा विकल्प हुवै तितरा सात जीवा रा चउकसंजोगिक ह्वै ।

वा०—नव जीवा रा पाचसजोगिया रा विकल्प किता ? उत्तर—सित्तर विकल्प हुवै। ते किम ? आठ जीव चउकसयोगिक ना ३५ विकल्प हुवै, अने आठ जीव पच सजोगिक ना पिण ३५ विकल्प हुवै, ए दोनू मिलाया मित्तर हुवै। एतलाज सित्तर विकल्प नव जीव ना पचसजोगिया ना हुवै। इम आगल पिण जाणवा।

१६. षट-सजोगिक नां हिनै, विकल्प तणो विचार। उपर वारी तेहनी, किह्यै छै अधिकार।। २०. अष्ट जीव षट-योगिका, कितरा विकल्प तास? विकल्प तसु इकवीस है, सुणियै आण हुलास।। २१. सप्त जीव पचयोगिका, सप्त जीव षट योग। पट पनरै विकल्प तसु, इम इकवीस प्रयोग।। २२ इम आगल जतू जिता, तेहथी एक घटाय। विकल्प पच पटयोगिका, मेल्या जिता कहाय।।

वा॰—नव जीवा रा पटसजोगिक विकल्प कितरा? उत्तर—छप्पन विकल्प हुवै ते किम? आठ जीव पचसजोगिक ना ३५ विकल्प अने आठ जीव पटसजोगिक ना ३६ हुवै। एतलाज छप्पन विकल्प नव जीव ना पट सजोगिक ना हुवै। इम आगल पिण जाणवा। सप्त सयोगिक जेतला विकल्प जेतलाइ भागा जाणवा।

२३. सख्याता प्रभु ! नेरइया, एकादण थी आद । नरक-प्रवेसण नी पृच्छा, उत्तर जिन अहलाद ॥

२३ सखेज्जा भते । नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पितसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा। तत्र सख्याता एकादशादयः। (वृ० प० ४४८)

- २४. \*रत्नप्रभा मे सखेज ए, अथवा सक्कर में ते कहेज ए। अथवा वालुक माहे तेह ए, अथवा पंक तमा घूम जेह ए।। २५ अथवा तमा विषे उपजत ए, अथवा नरक सप्तमी हंत ए।
- २५ अथवा तमा विषे उपजत ए, अथवा नरक सप्तमी हुंत ए। इक योगिक भागा सात ए, इक विकल्प करि आख्यात ए॥

हिन्नै द्विकसंजोगिक ना विकल्प ११ भागा २३१। एक रत्न सख्याता सक्कर इम ११ विकल्प। एक-एक विकल्प मा इकवीस-इकवीस भागा हुनै तिवारे २३१ भागा थाय, ते कहै छैं—

- २६. तथा एक रत्न अवलोय ए, संख्याता सक्कर सोय ए।
  तथा रत्न इक जाण ए, सख्याता वालुक माण ए।।
  २७. अथवा रत्न मे एक ए, संख्याता पक सपेख ए।
  अथवा रत्न इक जाय ए, संखेज्ज धूम दुख पाय ए।।
  २८. अथवा रत्न इक हुंत ए, सखेज्ज तमा उपजंत ए।
  अथवा रत्न इक तास ए, सखेज्ज सप्तमीं वास ए।।
  २६ अथवा रत्न मे दोय ए, सख्याता सक्कर होय ए।
  इम जाव तथा रत्न दोय ए, सख्याता सप्तमी सोय ए।।
- ३०. अथवा रत्न मे तीन ए, सख्याता सक्कर चीन ए। इम जावत तथा रत्न तीन ए, सखेज्ज सप्तमी लीन ए।।
- ३१. अथवा रत्न मे च्यार ए, संख्याता सक्कर धार ए। इम जाव तथा रत्न च्यार ए, संखेज्ज सप्तमी भार ए॥
- ३२. अथवा रत्न मे पच ए, सख्याता सक्कर सच ए। इम जाव तथा रत्न पच ए, सखेज्ज सप्तमी विरच ए।।
- ३३ अथवा रत्न पट जत ए, सख्याता सक्कर हुंत ए। इम जाव तथा रत्न षट ए, सख्याता सप्तमी वट्ट ए॥
- ३४. अथवा रत्न मे सात ए, संख्याता सक्कर जात ए।
- इम जाव तथा रत्न सात ए, सख्याता सप्तमी ख्यात ए॥ ३५ अथवा रत्न मे आठ ए, सख्याता सक्कर वाट ए।
- इम जाव तथा रत्न आठ ए, सखेज्ज सप्तमी काट ए।। ३६ अथवा रत्न नव न्हाल ए, सख्याता सक्कर भाल ए।
- इम जाव तथा नव रत्न ए, संखेज्ज सप्तमी प्रपन्न ए।।
- ३७. अथवा रत्न दश तास ए, सख्याता सक्कर वास ए। इम जाव तथा दश रत्न ए, सख्याता सप्तमी पन्न ए।।
- ३८. अथवा रत्न सख्यात ए, संख्याता सक्कर जात ए। इम जाव तथा रत्न सख ए, सखेज सप्तमी वक ए॥
- ३६. ए रत्न थकी पहिछाण ए, पट् भांगा तेह सुजाण ए। ग्यारा विकल्प करि सुविचार ए, कह्या छासठ भगा सार ए।।
- ४० इम सक्कर थी भग पच ए, ऊपरली पृथ्वी सग सच ए। ग्यारा विकल्प करिनै तेह ए, भग पचपन प्रवर भणेह ए॥

२४,२५. गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा । इहाप्येकत्वे सप्तैव (वृ० प० ४४८)

- २६-२८. अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।
- २६. अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्त-माए होज्जा।
- ३०-३७. अहवा तिष्णि रयणप्पभाए सक्षेज्जा सक्तरप्प-भाए होज्जा। एव एएण कमेण एक्केक्को सचारे-यव्वो जाव अहवा दम रयणप्पभाए सक्षेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा। एव जाव अहवा दस रयणप्पभाए सक्षेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

- ३८. अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।
- ४० अहवा एगे सक्करप्पभाए सबेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव जहा रयणप्पभा उवरिमपुढवीहिं सम चारिया एव सक्करप्पभा वि उवरिमपुढवीहिं सम चारेयव्वा ।

<sup>&</sup>lt;sup>\*</sup>लय: बाई <sup>1</sup> मांग-माग बाई ! मांग ए

४१. इम वालुक थी भंग च्यार ए, ऊपरली पृथ्वी संगधार ए।
ग्यारा विकल्प किर सुजगीस ए, भग भणवा चडमालीस ए॥
४२. इम पक थकी भंग तीन ए, ऊपरली पृथ्वी सग चीन ए।
ग्यारा विकल्प किरने कहीस ए, तंत भांगा छै तेतीस ए॥
४३. इम धूम थकी भग दोय ए, ऊपरली पृथ्वी संग सोय ए।
ग्यारा विकल्प करीने दीस ए, भणिवा भगा वावीस ए॥
४४. इम तम थकी इक भग ए, सप्तमीं पृथ्वी सग ए।
ग्यारा विकल्प किर सुविचार ए, ए तो भणिवा भग इग्यार ए॥
४५ संख्यान जीवा रा एह ए, द्विकसजोगिक इम लेह ए।
ग्यारा विकल्प करीने उमंग ए, दोय सौ इकतीस सुभग ए॥
४६. यावत अथवा एह ए, सख्याता तमा कहेह ए।
सख्याता सप्तमी जाण ए, ए चरम भंग पहिछाण ए॥

हिवै त्रिकसजोगिक ना २१ विकल्प एकेक विकल्प ना पैतीस-पैतीस भागा तिवारे २१ विकल्प ना ७३५ भागा हुवै। तिहा रत्न थी १५, मक्कर थी १०, वालुक थी ६, पक थी ३, धूम थी १—ए ३५ भागा २१ विकल्प किर हुवै। तिहा रत्न थी १५ ते किसा ? रत्न सक्कर थी ५, रत्न वालु थी ४, रत्न पक थी ३, रत्न धूम थी २, रत्न तम थी १—एव १५, इकवीस विकल्प किर हुवै। इमज सक्कर थी १०, वालु थी ६, पंक थी ३, धूम थी १—ए इकवीस-इकवीम विकल्प किरवा।

४७. अथवा रत्न में एक ए, इक सक्कर मे संपेख ए। सखेज वालुका मंग ए, धुर विकल्प ए ४८. अथवा रत्नप्रमा में एक ए, इक सक्कर मांहि उवेख ए। पंकप्रभा मे सख्यात ए, भग दूजो ए आख्यात ए॥ ४६. तथा एक रत्न सक्कर एक ए, सखेज धूम संपेख ए। तथा एक रत्न सक्कर एक ए, सखेज तमा सुविशेख ए॥ ५०. तथा एक रत्न सक्कर एक ए, सखेज सप्तमी लेख ए। रतन सक्कर थी भग पच ए, धुर विकल्प करि ए सच ए।। ५१. तथा एक रत्न सक्कर दोय ए, सखेज्ज वालुका सोय ए। तथा एक रत्न सक्कर दोय ए, सखेज पक अवलोय ए॥ ५२. तथा एक रत्न सक्कर दोय ए, सखेज्ज धूम मे होय ए। तथा एक रत्न सक्कर दोय ए, सखेज तमा मे जोय ए।। ५३. तथा एक रत्न सक्कर दोय ए, सखेज्ज सप्तमीं होय ए। रत्न सक्कर थी भग पच ए, दूजे विकल्प करीने विरच ए।। ५४ तथा एक रत्न सक्कर तीन ए, सखेज वालुका लीन ए। तथा एक रत्न सक्कर तीन ए, सखेज्ज पक मे चीन ए।। ५५ तथा एक रत्न सक्कर तीन ए, सखेज धूम मे लीन ए। तथा एक रत्न सक्कर तीन ए, सखेज तमा आधीन ए॥ ५६. तथा एक रत्न सक्कर तीन ए, सखेज्ज सप्तमी दीन ए। रत्न सक्कर थी भग पंच ए, तीजे विकल्प करीने सच ए।। ५७ तथा एक रत्न सक्कर च्यार ए, सखेज वालुका धार ए।

जाव तथा रत्न इक अंक ए, चिउं सक्कर सप्तमी संख ए।।

४१,४४. एव एन्केनका पुढवी उवरिमपुढवीहि सम चारेयव्या ।

४६. जाव अहवा सच्चेज्जा तमाए सच्चेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

४७ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेजजा वालुयप्पभाए होज्जा।

४८. अहवा एगे रयणप्पभाए एने सक्करप्पभाए सम्रेज्जा पकष्पभाए होज्जा।

४६, ५० जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संसेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

५१-५३ अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए सस्रेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए सस्रेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

५४ ६४. बहुवा एगे रयलप्पभाए तिण्लि सक्करप्पभाए सक्षेण्या वासुयप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेल एक्केक्को सचारेयच्वो सक्करप्पभाए जाव अहवा एगे रयणप्पभाए सक्षेण्या सक्करप्पभाए सक्षेण्या वालु-यप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए सक्षेण्या वालुयप्पभाए सक्षेण्या अहेसत्तमाए होज्जा ।

- ५८. तथा एक रत्न सक्कर पंच ए, संखेज वालुका संच ए। जाव तथा रत्न इक अक ए, पंच सक्कर सप्तमी सख ए।। ५६. तथा एक रत्न मे लहेज ए, षट सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न इक अंक ए, षट सक्कर सप्तमी सख ए।। ६०. तथा एक रत्न मे कहेज ए, सप्त सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न इक अक ए, सप्त सक्कर सप्तमी संख ए।। ६१. तथा एक रत्न मे लहेज ए, अठ सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न इक अंक ए, अष्ट सक्कर सप्तमी सख ए॥ ६२. तथा एक रत्न मे लहेज ए, नव सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न इक अक ए, नव सक्कर सप्तमी सख ए॥ ६३. तथा एक रत्न मे कहेज ए, दश सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न इक अक ए, दश सक्कर सप्तमी संख ए।। ६४. तथा एक रत्न मे कहेज ए, सख सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न इक अक ए, सख सक्कर सप्तमी सख ए॥ ६५ तथा दोय रत्न मे लहेज ए, सख सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न वे अक ए, सख सक्कर सप्नमी सख ए।।
- ६६. तथा तीन रत्न में कहेज ए, सख नक्कर वालु संखेज ए। जाव तथा रत्न त्रिण अक ए, सख सक्कर सप्तमी सख ए।। ६७ तथा च्यार रत्न मे लहेज ए, सख सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न चिउ अक ए, सख सक्कर सप्तमी सख ए।। ६८ तथा पच रत्न मे कहेज ए, सख सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न पच अक ए, सख सक्कर सप्तमी सख ए।। ६६. अथवा पट रत्न कहेज ए, षट सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न षट अक ए, षट सक्कर सप्तमी सख ए।। ७० तथा सप्त रत्न मे कहेज ए, सप्त सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न सप्त अक ए, सप्त सक्कर सप्तमी सख ए।। ७१. तथा अष्ट रत्न मे लहेज ए, अष्ट सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न अष्ट अक ए, अष्ट सक्कर सप्तमी सख ए॥ ७२ अथवा नव रत्न लहेज ए, नव सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न नव अक ए, नव सक्कर सप्तमी संख ए।। ७३. अथवा दश रत्न लहेज ए, दश सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न दश अर्क ए, दश सक्कर सप्तमी सख ए।। ७४. अथवा सख रत्न कहेज ए, सख सक्कर वालु सखेज ए। जाव तथा रत्न सख अक ए, सख सक्कर सप्तमी सख ए।। ७५. रत्न सक्कर थी भग पच ए, विकल्प इकवीस विरच ए। कह्या एकसौ ने पच भग ए, हिवै रत्न वालुक थी प्रसग ए ॥ ७६. तथा एक रत्न मे कहेज ए, इक वालुक पक सखेज ए। जीव तथा रत्न इक अक ए, इक वालुक सप्तमी सख ए।।
- ६४. अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए स खेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्त-माए होज्जा।
- ६६-७४. अहवा तिष्णि रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्प-भाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा। एवं एएण कमेण एक्केक्को रयणप्पभाए सचारेयव्वो जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा सखेज्जा रयणप्प-भाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

७६. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए सक्षेज्जा पकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए सक्षेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । ७७ अथवा इक रत्न लभेज्ज ए, दोय वालुका पंक संखेज्ज ए। जाव तथा रत्न इक अक ए, दोय वालुका सप्तमी संख ए।। ७८. इम इहविघ अनुक्रमेण ए, रत्न वालु थी चिउं भग श्रेण ए।। इकवोस विकल्प करि जोय ए, तसु भंग चउरासी होय ए।। ७६. रत्न पक थकी भग तीन ए, इकवीस विकल्प करि चीन ए। त्रेमठ भागा जाण ए, तिके पूर्व रीत पिछाण ए॥ ८०. रत्न धूम थकी भंग दोय ए, इकवीस विकल्प करि जोय ए। भागा वयालीस तास ए, विध पूर्व रीत प्रकाण ए।। ् इकवीस विकल्प करि पेख ए । **८१** रत्न तमा थकी भग एक ए, भणवा भांगा इकवीस ए, विध पूर्व उक्त जगीस ए॥ भागा पनर रत्न थी एह ए, विकल्प इकवीस करेह ए। हुवै तीन सी ने इकवीस ए, हिवै सक्कर थकी कहीम ए।। द३. इम सक्कर थी दश देख ए, विकल्प इकवीस मुलेख ए। हुनै दोय सी नै दण भग ए, भणवा पूर्व रीत सुचंग ए।। ५४. भग वालुका थी पट तेह ए, विकल्प इकवीस भणेह ए। भांगा ह्वे एक सौ ने छवीस ए, ते पिण पूर्व रीत जगीस ए।। पंक यकी भंग तीन ए, विकल्प इकवीस आधीन ए। त्रेमठ भागा तास ए, वारु बुद्धि विमल सुविमास ए॥ ८६. घूम थकी भंग एक ए, विकल्प इकवीस सुलेख ए। डकवीस भांगा अवलोय ए, विधि पूर्व उक्तज होय ए।। ८७ इम त्रिकसंजोगिक भंग ए, सातसो ने पैतीस सुचग ए। इम नारिक भ्रमण करेय ए, जिन भाखे सुण गंगेय ! ए।। ८८. देण नवम वतीसम न्हाल ए, एकसौ ने सत्यासीमी ढाल ए।

७७. अहवा एगे रयणप्पभाए दो वालुयप्पभाए समेजजा परुष्पभाए होज्जा, एव एएण कमेण नियामजोगो.

# ढाल : १८८

भिक्षु भारीमाल ऋषिराय ए, सुख 'जय-जग' हरप सवाय ए।।

हिन मस्याता जीवां रा चउकसंयोगिक तेहना विकल्प ३१ भागा १०६५ तिणरो विवरो —चउकसजोगिक ३५ भागा एकेक विकल्प किर हुवै। रत्न थी २०, मक्कर थी १०, वालुक थी ४, पक थी १—एव ३५। रत्न थी २० ते किमा? रत्न मक्कर थी १०, रत्न वालु थी ६, रत्न पंक थी ३, रत्न धूम थी १—एव २०। रत्न सक्कर थी १० ते किमा? रत्न सक्कर वालु थी ४, रत्न सक्कर पक थी ३, रत्न सक्कर पक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी २, रत्न सक्कर तम थी १—एव १०। इम आगल पिण जिम सभवै तिम करिवा तिहा प्रथम रत्न मक्कर वालु थी ४ भागा इकतीस विकरप करि १२४ भागा कहै छै—

#### दूहा

जीव सखेज तणां हिवै, चउकसयोगी कहीस।
 पिच्यासी इक सहस्र मंग, विकल्प तसु इकतीस।।

१. चतुष्कसयोगेषु पुनराखाभिश्चतसृभि प्रवमश्चतुष्क-सयोग.''' तत एते सर्वेऽप्वेकत्र चतुष्कवोगे एकत्रिजत्,

# \* श्री जिन भाखै सुण गगेया । (घ्रुपदं)

२. तथा रत्न इक सक्कर मे इक, एक वालु पक माहि सख्यात। तथा रत्न इक सक्कर में इक, एक वालु धूम सख्याता जात।।

३. तथा रत्न इक सक्कर मे इक, एक वालु तम सख भणेज। तथा रत्न इक सक्कर मे इक, एक वालु सप्तमी मे सखेज।।

- ४ तथा रत्न इक सक्कर मे इक, वे वालुक पक माहि सख्यात। जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, वे वालुक सख सप्तमी जात।।
- ५. तथा रत्न इक सक्कर मे इक, त्रिण वालु पक माहि सखेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, त्रिण वालु सखेज सप्तमी लेय।।
- ६ तथा रत्न इक सक्कर मे इक, चिउ वालु पक सखेज कहेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, चिउ वालु सप्तमी सखेज लेय।।
- ७. तथा रत्न इक सक्कर में इक, पच वालु पक सखेज लेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, पच वालु सप्तमी में सखेय।।
- प्त तथा रत्न इक सक्कर मे इक, पट वालु पक सख्यात पीडात। जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, पट वालु सप्तमी माहि सख्यात॥
- ह तथा रत्न इक सक्कर मे इक, सप्त वालु पंक सखेज लेय।
  जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, सप्त वालु सप्तमी मे सखेय।
- १० तथा रत्न इक सक्कर मे इक, अष्ट वालुक पंक सखेज वेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, अष्ट वालु सप्तमी मे सखेय।।
- ११ तथा रत्न इक सक्कर मे इक, नव वालु पक सखेज वदेह। जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, नव वालु सखेज सप्तमी लेह।।
- १२. तथा रत्न इक सक्कर में इक, दश वालु पक सखेज वदेह। जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, दश वालु सखेज सप्तमी लेह।।
- १३. तथा रत्न इक सक्कर में इक, सखेज वालु सखेज पकेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर इक, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।
- १४ तथा रत्न इक सक्कर मे वे, सक्षेज वालु सक्षेज पकेय।
- जाव तथा इक रत्न सक्कर वे, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।
  १५ तथा रत्न इक सक्कर मे त्रिण, सखेज वालु सखेज पकेय।
- जाव तथा इक रत्न सक्कर त्रिण, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।
- १६ तथा रत्न इक सक्कर मे चिउ, सखेज वालु सखेज पकेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर चिउ, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।
- १७. तथा रत्न इक सक्कर में पच, सखेज वालु सखेज पक्षेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर पच, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।
- १८ तथा रत्न इक सनकर मे पट, सखेज वालु संखेज पकेय। जाव तथा इक रत्न सनकर षट, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।
- १६. तथा रत्न इक सक्कर मे सप्त, सखेज वालु सखेज पकेय। तथा रत्न इक सक्कर मे सप्त, सखेज वालु सप्तमो सखेय।।
- २०. तथा रत्न इक सक्कर मे अष्ट, सखेज वालु सखेज पंकेय। तथा रत्न इक सक्कर मे अष्ट, सखेज वालु सप्तमी मे सखेय।।

अनेया च सप्तपदचतुष्कसंयोगाना पचित्रशतो गुणने सहस्रं पंचाशीत्यधिक भवति । (वृ० प० ४४६)

<sup>\*</sup>लय: घोड़ी री:

२१. तथा रत्न इक सक्कर में नव, सखेज वालु सखेज पंकेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर नव, सखेज वालु सप्तमी संखेय ॥ २२. तथा रत्न इक सक्कर मे दश, सरोज वालु संखेज पकेय। जाव तथा रत्न इक सक्कर मे दश, सखेज वालु सप्तमी सखेय।। २३. तथा रत्न इक सक्कर सख्याता, सखेज वालु सरोज पकेय। जाव तथा इक रत्न सक्कर सख, सखेज वालु सप्तमी सरोय।। २४ तथा रत्न वे सक्कर सख्याता, सखेज वालु पक सख लेय। जाव तथा रत्न वे सख सनकर, सखेज वालु मप्तमीं सखेय ॥ २५. तथा रत्न त्रिण सक्कर संख्याता, सरोज वालु पक सख लेय। जाव तथा रत्न त्रिण सख सक्कर, सखेज वालु सप्तमी सखेय ॥ २६. तथा रत्न चिउ सक्कर सख्याता, संखेज वालु पक सख लेय। जाव तथा रत्न चिहुं सख सक्कर, संखेज वालु सप्तमी संखेय ॥ २७ तथा रत्न पच सक्कर संख्याता, सखेज वालु पक सख लेय। जाव तथा रत्न पच सख सक्कर, सखेज वालु सप्तमी सखेय।। २८. तथा रत्न पट सक्कर सख्याता, सखेज वालु पक सख लेय। जाव तथा रत्न पट संख सक्कर, संखेज वालु सप्तमी संखेय ॥ २६. तथा रत्न सप्त सक्कर सख्याता, सखेज वालु पक संख लेय। जाव तथा रत्न सप्त सख सक्कर, संखेज वालू सप्तमी संखेय ।। ३०. तथा रत्न अष्ट सक्कर संख्याता, सखेज वालु पक सख लेय। जाव तथा रत्न अठ सख सक्कर, संखेज वालु सप्तमी सखेय।। ३१. तथा रत्न नव सक्कर सख्याता, संखेज वालुपक सख लेय। जाव तथा रत्न नव सख सक्कर, संखेज वालु सप्तमी सखेय।। ३२. तथा रत्न दश सक्कर सख्याता, संखेज वालु पक सख लेय। जाव तथा रतन दश सख सकर, संखेज वालु सप्तमो मखेय।। ३३. तथा रत्न सख सक्कर सख्याता, संखेज वालु पंक सख लेय।

इकतीस विकल्प इक सौ चोवीस।
रत्न सक्कर पक थी त्रिण भागा, इकतीस विकल्प त्राणू जगीस॥
३४. रत्न सक्कर घूम थी दोय भागा, इकतीस विकल्प वासठ दीस।
रत्न सक्कर घूम थी दोय भागा, इकतीस विकल्प वासठ दीस।
रत्न सक्कर तम थी इक भगो, इकतीस विकल्प भग इकतीस॥
३६ ए रत्न सक्कर थी दश भागा, ते तोनसी दश विकल्प इकतीस॥
इमज रत्न वालु थी पट मागा, एकसो ने वयासी सुजगीस॥
३७ इमहिज रत्न पक थी त्रि भग, इकतीस विकल्प नग इकतीस॥
रत्न घूम थी एक भागो, ते इकतीस विकल्प भग इकतीस॥
३६. रत्न थकी ए वोस भगा इम, इकतीस विकल्प भग इकतीस॥
३६. रत्न थकी ए वोस भगा इम, इक्तीस विकल्प भग इकतीस॥
३६ वालु थी चिउ भग इक्तीस विकल्प, भागा हुवै एक सी चोवीस।
पक यको इक भागो हुवै, ते इक्तीस विकल्प भंग इकतीस॥
४०. सखेज जीवा रा चउकसंजोगिक,

जाव तथा रत्न संख सक्कर, सखेज वालु सप्तमी सखेय।।

भागा हुवै एक सहस्र पच्चासी । पैतीस भागा मूल छै त्या ने, इकतीस गुणा किया इता थासी ॥ ४१. नवम शतक नों बतीसम देशज, एकसी नें अठचासीमी ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' सपति हरप विशाल।।

## ढाल: १८६

हिवै सस्यात जीवा रा पचसयोगिक ना विकल्प ४१, भागा ६६१ तिणरो विवरो—पच सयोगिक २१ भागा एक-एक विकल्प करि हुवै। रत्न थकी १५, सक्कर थी ४ वालुक थी १, एव २१। तिहा रत्न थी १४ तेहनो विवरो—रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालु थी ४, रत्न पक थी १ एव १४। तिहा रत्न सक्कर थी १० ते किसा रत्न सक्कर वालु थी ६, रत्न सक्कर पक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी १ एव १०। तिहा रत्न सक्कर वालुक थी ६ ते किसा र रत्न सक्कर वालु पक थी ३, रत्न सक्कर वालु पक थी ३ भागा ४१ विकल्प करि १२३ भागा कहै छै—

#### दूहा

१ जीव सखेज तणा हिवै, पच-सयोगि कहीस। अठ सय इकसठ भग तसु, विकल्प इकतालीस।।

२. \*अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक इक धूम सख्यात जात।।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक इक सप्तमी मे संख्यातं।

विकल्प प्रथम जिनराज इम वागरे।।

३. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पके वे धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक वे सप्तमी मे सख्यात।

विकल्प द्वितीय जिनराज इम वागरै।।

४. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक त्रिण धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक त्रिण सप्तमी मे सख्यात।

विकल्प तृतीय जिनराज इम वागरे।।

५. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक चिउ धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक चिउ सप्तमी मे सच्यात ।

विकल्प तुर्य जिनराज इम वागरे।।

<sup>क</sup>लप: फडखा री

१ पञ्चकसयोगेपु त्वाद्याभि पञ्चभि प्रथम. पञ्चक-योग., ""तत एते सर्वेऽप्येकत्र पञ्चकयोगे एकचत्वा-रिशत्, अस्याशच प्रत्येक मध्तपदपञ्चकसयोगानामेक-विशतेर्लाभादष्टशतानि एकपष्ट्यधिकानि भवन्ति । (वृ प० ४४६) ६. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुकी,

पक पंच धूम संख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालुक इक,

पंक पांच सप्तमी मे संख्यातं।

पंचम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

७. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पंक पट धूम सख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक पट सप्तमी में संख्यातं।

पप्टम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पंक सप्त धूम संख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पंक सप्त सप्तमी मे संख्यात।

सप्तम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक अष्ट धूम सख्यात जात।

जाव तथा इक रत्न सक्कर इक वालु इक,

पंक अष्ट सप्तमी मे संख्यात।

विकल्प अप्टम श्री जिनराज कहै।।

१०. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक नव धूम संख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक नव सप्तमी में सख्यातं।

नवम विकल्प जिनराज इम वागरै॥

११. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक दश धूम संख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पंक दश सप्तमी मे सख्यात।

दशम विकल्प जिनराज इम वागरै।।

१२. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

संख पंक घूम सख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

संख पंक सप्तमी मे सख्यात।

एकादशम विकल्प जिनराज वागरै।।

१३. अथवा इक रत्न इक सक्कर वे वालुका,

सख पंक धूम संख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु वे,

संख पंक सप्तमी मे संख्यातं।

द्वादशम विकल्प जिनराज वागरै॥

१४. अथवा इक रत्न इक सक्कर त्रिण वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु त्रिण,

संख पक सप्तमी मे सख्यात।

त्रयोदशम विकल्प जिनराज वागरै ।।

१५. अथवा इक रत्न इक सक्कर चिउ वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु चिंउ,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

चउदशम विकल्प जिनराज वागरै।।

१६. अथवा इक रत्न इक सक्कर पच वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु पच,

सख पक सप्तमी मे संख्यात।

पनरम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

१७. अथवा इक रत्न इक सक्कर षट वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु षट,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

सोलसम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

१८. अथवा इक रत्न इक सक्कर सप्त वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु सत्त,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

सतरमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

१६. अथवा इक रत्न इक सक्कर अठ वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु अठ,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

अठारमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२०. अथवा इक रत्न इक सक्कर नव वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु नव,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

उगणीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२१. अथवा इक रत्न इक सक्कर दश वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु दश,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

वीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै।।

६. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुंकां,

पंक पच धूम सख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालुक इक,

पक पांच सप्तमी मे संख्यातं।

पचम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

७. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक पट घूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक पट सप्तमी मे सख्यात।

पष्टम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

८. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक सप्त धूम संख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक सप्त सप्तमी मे सख्यात।

सप्तम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

६. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक अष्ट धूम सख्यात जात।

जाव तथा इक रत्न सक्कर इक वालु इक,

पक अष्ट सप्तमी मे सख्यात।

विकल्प अष्टम श्री जिनराज कहै।।

१०. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पंक नव धूम संख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पंक नव सप्तमी में संख्यात।

नवम विकल्प जिनराज इम वागरै।।

११. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

पक दश धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु इक,

पक दश सप्तमी में संख्यात।

दशम विकल्प जिनराज इम वागरै।।

१२. अथवा इक रत्न इक सक्कर इक वालुका,

संख पंक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रतन इक सक्कर इक वालु इक,

सख पंक सप्तमी मे सख्यातं।

एकादशम विकल्प जिनराज वागरे।।

१३. अथवा इक रत्न इक सक्कर वे वालुका,

सख पंक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु वे,

संख पक सप्तमी मे संख्यातं।

द्वादशम विकल्प जिनराज वागरै॥

१४. अथवा इक रत्न इक सक्कर त्रिण वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु त्रिण,

संख पक सप्तमी में सख्यात।

त्रयोदशम विकल्प जिनराज वागरै ।।

१५. अथवा इक रत्न इक सक्कर चिउं वालुका,

सख पक धूम सख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु चिंउ,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

चउदशम विकल्प जिनराज वागरै।।

१६. अथवा इक रत्न इक सक्कर पच वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु पच,

सख पक सप्तमी मे सख्यातं।

पनरम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

१७. अथवा इक रत्न इक सक्कर षट वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु षट,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

सोलसम विकल्प श्री जिनराज कहै।।

१८. अथवा इक रत्न इक सक्कर सप्त वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु सत्त,

सख पक सप्तमी मे संख्यात ।

सतरमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

१६. अथवा इक रत्न इक सक्कर अठ वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु अठ,

सख पक सप्तमी मे सख्यातं।

अठारमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२०. अथवा इक रत्न इक सक्कर नव वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु नव,

संख पक सप्तमी मे सख्यात।

उगणीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२१. अथवा इक रत्न इक सक्कर दश वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर इक वालु दश,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

वीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२२. अथवा इक रत्न इक सक्कर सेख वालुका,

संख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रतन इक सक्कर इक वालु सख,

संख पक सप्तमी मे सख्यात।

इकवीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२३. अथवा इक रत्न वे सक्कर सख वालुका,

संख पक घूम सख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर वे वालु सख,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

वावीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२४. अथवा इक रत्न त्रिण सक्कर संख वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर त्रिण वालु संख,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

तेवीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२५. अथवा इक रत्न चिउ सक्कर सख वालुका,

संख पंक धूम संख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर चिउ वालु सख,

सख पंक सप्तमी में संख्यात।

चउवीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२६. अथवा इक रत्न पच सक्कर सख वालुका,

सख पक धूम सख्यात जातं।

जाव तथा रत्न इक सक्कर पंच वालु संख,

सख पक सप्तमी मे सख्यात ॥

पणवीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

२७. अथवा इक रत्न पट सक्कर सख वालुका,

संख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर पट वालु सख,

संख पक सप्तमी मे सख्यात।

पटवीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै॥

२८. अथवा इक रत्न सप्त सक्कर सख वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर सप्त वालु सख,

सख पक सप्तमी मे सख्यातं।

सप्तवीसमो विकल्प श्री जिनराज कहे।।

२६. अथवा इक रत्न अठ सक्कर सख वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर अठ वालु सख,

पक सख सप्तमी मे सख्यात।

अष्टवीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै ।।

३०. अथवा इक रत्न नव सक्कर सेख वालुंकां,

संखपक धूम संख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर नव वालु सख,

संख पंक सप्तमी मे सख्यात।

गुणतीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

३१. अथवा इक रत्न दश सक्कर सख वालुका,

संख पंक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर दश वालु सख,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

तीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

३२. अथवा इक रत्न सख सक्कर सख वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न इक सक्कर संख वालु सख,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

इकतीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

३३. अथवा वे रत्न सख सक्कर सख वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न वे सक्कर संख वालु सख,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

वतीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

३४. अथवा त्रिण रत्न सख सक्कर सख वालुका,

सख पक धूम सख्यात जातं।

जाव तथा रत्न त्रिण सख सक्कर वालु संख,

सख पक सप्तमी मे सख्यात ।

तेतीसमों विकल्प श्री जिनराज कहै।।

३५. अथवा चिंउ रत्न सख सक्कर संख वालुका,

सक पक धूम सख्यात जातं।

जाव तथा रत्न चिउ सख सक्कर वालु सख,

सख पक सप्तमी मे सख्यात।

चउतीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

३६. अथवा पंच रत्न सख सक्कर सख वालुका,

सख पक धूम सख्यात जात।

जाव तथा रत्न पच सख सक्कर वालु सख,

पक सख सप्तमी मे सख्यात।

पैतीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

३७. अथवा पट रत्न सख सक्कर सख वालुका,

सख पक धूम सख्यात जातं।

जाव तथा रत्न षट सख सक्कर वालु सख,

पक सख सप्तमी मे सख्यात।

छतीसमो विकल्प श्री जिनराज कहै।।

१ रत्न, १ सक्कर; १ वालु, १ पॅक, ६ धूम, संख्यात तम १० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १० धूम, सख्यात तम ११ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम १२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम १३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ३ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम १४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ४ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम १५ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ५ पक, संख्यात धूम, संख्यात तम १६. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम १७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ७ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम १८. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु ५ पक, सख्यात घूम, सख्यात तम 38 १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम २० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पक, सख्यात धूम, सख्यात तम २१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, मख्यात तम २२ १ रत्न, १ मक्कर, २ वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम २३ १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, सस्यात पक, सख्यात धूम, सस्यात तम २४ १ रत्न, १ सक्कर, ४ वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम २५. १ रत्न, १ सक्कर, ५ वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम २६ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, सख्यात पक, सख्यात घूम, सख्यात तम २७. १ रत्न, १ सक्कर, ७ वालु, सस्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम २८. १ रत्न, १ मक्कर, = वालु, सस्यात पक, सख्यात धूम, मख्यात तम २६ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ३०. १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ३१ १ रत्न, १ सक्कर, संख्यात वालु, मंख्यात पक्क, संख्यात धूम, संख्यात तम ३२. १ रत्न, २ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ३३. १ रत्न, ३ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ३४. १ रत्न, ४ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पक, संख्यात धूम, संख्यात तम ३५. १ रत्न, ५ सक्कर, संख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ३६ १ रत्न, ६ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात घूम, सख्यात तम ३७. १ रत्न, ७ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात वूम, सख्यात तम ३८ १ रत्न, ८ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ३६ १ रत्न, ६ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ४० १ रत्न, १० सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ४१ १ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यान पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ४२. २ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात घूा, सख्यात तम ४३ ३ रत्न, संख्यात संक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पक, संख्यात धूम, संख्यात तम ४४ ४ रत्न, सन्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ४५ ५ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात घूम, सख्यात तम ४६ ६ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात घूम, सस्यात तम ४७ ७ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम ४८. ८ रत्न, संख्यात संकार, संख्यात वालु, संख्यात पक्ष, संख्यात घूम, संख्यात तम ४६ ६ रत्न, सहरान सक्कर, सहयात वालु, सख्यात पक, सख्यात धून, सहरान तन

५० १० रत्न, सख्यात सक्कर, संस्थात वालु, संख्यात पक, संख्यात धूम, संख्यात तम

५१ सख्यात रत्न, सख्यात सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पक, सख्यात घूम सख्यात, तम

सक्षेज जीव ना षट-संजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा कह्या, तिणमे सम्तमी नरक टली ।

इमहिज सक्षेज जीव ना पट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा मे छठी नरक टालणी।

इम सक्षेज जीव ना षट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा तिणमे पाचमी नरक टालणी।

इम सक्षेज जीव ना पट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा तिणमे चउथी नरक टालणी।

इमहिज सखेज जीव ना पट-सयोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा मे तीजी नरक टालणी।

इमहिज सक्षेज जीव ना षट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा में दूजी नरक टालणी।

इमहिज सक्षेज जीव ना षट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा मे प्रथम नरक टालणी।

एव सक्षेज जीव ना षट-सयोगिक ५१ विकल्प करि ३५७ भागा हुवै। हिवै सप्त सयोगिक कहै छै---

४ सख जीव सप्तयोगिका, इगसठ विकल्प एम। भागा पिण इगसठ तसु, कहू जूजुआ जेम।। सक्षेज जीव ना सप्त-सयोगिक ६१ विकल्प, भागा पिण ६१, ते कहै छै—

१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, सख्यात सप्तमी

२ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, सख्यात सप्तमी

३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ३ तम, सख्यात सप्तमी

४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ४ तम, सख्यात सप्तमी

५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ५ तम, सख्यात सप्तमी

६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, ६ तम, सख्यात सप्तमी

७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १ धूम, ७ तम, सख्यात सप्तमी

५ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक १ धूम, द तम, सख्यात सप्तमी

६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु १ पक, १ धूम, ६ तम, सख्यात सप्तमी

१०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, १० तम, सख्यात सप्तमी ११. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ घूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१२ १ रत्न, १सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ३ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१४ १ रत्न १ सक्कर, १ वाल, १ पक, ४ धम, संस्थात तम, संस्थात सप्तमी

१४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ४ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१५ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ५ घूम, सख्यात तम, मख्यात सप्तमी

१६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ६ घूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ७ घूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी १८ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ८ घूम, सख्यात तम. सख्यात सप्तमी

१६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ६ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

२० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १० घूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

२१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

२२ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सन्तमी

४ सप्तकसयोगे तु पूर्वोक्तभावनयैकपष्टिविकल्पा भवन्ति, सर्वेषा चषा मीलने त्रयस्त्रिशच्छतानि सप्त-त्रिशदधिकानि भवन्ति । (वृ० प० ४४६)

- ह. १ रत्न, १ सक्कर; १ वालु, १ पंक, ६ घूम, संख्यात तम
- १० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पंक, १० धूम, सख्यात तम
- ११. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, संख्यात धूम, संख्यात तम
- १२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पंक, सख्यात धूम, सन्यात तम
- १३. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ३ पक, सख्यात घूम, सख्यात तम
- १४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ४ पक, सन्यात धूम, मरयात तम
- १५. १ रत्न, १ सकर, १ वालु, ५ पक, सख्यात धूम, सन्यात तम
- १६. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम
- १७ १ रत्न, १ गक्कर, १ वालु, ७ पक, सख्यात धूम, सन्यात तम
- १८. १ रत्न, १ सकर, १ वालु ८ पक, सम्यात धूम, सरयात तम
- १६. १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, ६ पक, सख्यात धूम, मन्यात तम
- २०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पक, मख्यात धूम, सख्यात तम
- २१. १ रतन, १ सक्कर, १ वालु, सरयात पक, सख्यात धूम, सन्यात तम
- २२. १ रत्न, १ सबकर, २ वालु, सऱ्यात पक, सरयात धूम, सग्यात तम
- २३ १ रतन, १ सक्कर, ३ वालु, सस्यात पक, सस्यात धूम, मन्यान तम
- २४ १ रत्न, १ सक्कर, ४ वालु, सस्यात पक, सस्यात धूम, सस्यात तम
- २४. १ रतन, १ सक्कर, ५ वालु, सख्यात पक, सख्यान धूम, सख्यात तम
- २६ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, मस्यात पक, सख्यात धूम, मन्यात नम
- २७. १ रत्न, १ सक्कर, ७ वालु, सख्यात पक, मस्यान घूम, मन्यात तम
- २८. १ रत्न, १ मक्कर, ८ वालु, सन्यात पक, सस्यात धूम, मस्यात तम
- २६ १ रत्न, १ मक्कर, ६ वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, मख्यात तम
- ३०. १ रत्न, १ मक्कर, १० वालु, मख्यात पंक, सख्यात धूम, मख्यात तम
- ३१ १ रत्न, १ मनकर, सन्त्रात वालु, सन्त्रात पक, सन्त्रात धूम, संत्यात तम
- ३२ १ रत्न, २ मक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम
- ३३. १ रत्न, ३ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सस्यात धूम, संख्यात तम
- ३४. १ रत्न, ४ सक्कर, सस्यात वालु, सस्यात पक, सस्यात घूम, सस्यात तम
- ३५ १ रत्न, ५ सक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पक, संख्यात घूम, संख्यात तम
- ३६ १ रत्न, ६ सक्कर, संख्यात वालु, मख्यात पक, सख्यात घूम, सख्यात तम
- ३७. १ रत्न, ७ सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात यूम, सख्यात तम
- ३८ १ रत्न, ८ मक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, संख्यात तम
- ३६ १ रत्न, ६ सक्तर, मख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम
- ४०. १ रत्न, १० सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सरयात तम
- ४१ १ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सस्यात पक, सस्यात घूम, सख्यात तम
- ४२ २ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात घू, सख्यात तम
- ४३ ३ रत्न, सख्यात सक्कर, सस्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सस्यात तम
- ४४ ४ रत्न, सम्यात सदकर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, मख्यात तम
- ४५ ५ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सस्यात तम
- ४६ ६ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, संख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम
- ४७ ७ रत्न, सख्यात मक्कर, सख्यात वालु, सस्यात पक, सस्यात धूम, सख्यात तम
- ४८ ६ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात घूम, सख्यात तम ४६ ६ रत्न, सख्यान मक्कर, मख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात यून, मन्यान तन
- ५०. १० रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम

५१ सख्यात रत्न, सख्यात सक्कर, संख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम संख्यात,

सखेज जीव ना षट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा कह्या, तिणमे सप्तमी नरक टली।

इमहिज सक्षेज जीव ना पट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा मे छठी नरक टालणी।

इम सक्षेज जीव ना पट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा तिणमे पाचमी नरक टालणी।

इम सखेज जीव ना षट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा तिणमे चउथी नरक टालणी।

इमहिज सखेज जीव ना षट-सयोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा मे तीजी नरक टालणी।

इमहिज सक्षेज जीव ना पट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा मे दूजी नरक टालणी।

इमहिज सक्षेज जीव ना पट-सजोगिक ५१ विकल्प करि ५१ भागा मे प्रथम नरक टालणी।

एव सक्षेज जीव ना षट-सयोगिक ५१ विकल्प करि ३५७ भागा हुवै। हिवै सप्त सयोगिक कहै छै---

४ सख जीव सप्तयोगिका, इगसठ विकल्प एम । भांगा पिण इगसठ तसु, कहू जूजुआ जेम ।। मक्षेज जीव ना सप्त-सयोगिक ६१ विकल्प, भागा पिण ६१, ते कहै छै—

१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, सख्यात सप्तमी

२ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, सख्यात सप्तमी

३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ३ तम, सख्यात सप्तमी

४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ४ तम, सख्यात सप्तमी

५ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ५ तम, सख्यात सप्तमी

६ १ रत्न, १ सक्कर, १ बालु, १ पक, १ धूम, ६ तम, सख्यात सप्तमी

७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ७ तम, सख्यात सप्तमी

८ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक १ धूम, ८ तम, मख्यात सप्तमी

६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु १ पक, १ धूम, ६ तम, सख्यात सप्तमी

१०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १० तम, सख्यात सप्तमी

११ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१२ १ रत्न, १सक्कर, १ वाजु, १ पक, २ घूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ३ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ४ धूम, सस्यात तम, सख्यात सप्तमी

१५ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ५ घूम, सख्यात तम, मख्यात सप्तमी

१६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ६ धूम, सल्यात तम, सल्यात सप्तमी

१७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ७ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१८ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ८ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

१६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ६ धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

२० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १० धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी

२१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, सख्यात धूम, सख्यात तम, सस्यात सप्तमी

२२ १ रत्न, १ सनकर, १ वालु, २ पक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सन्तमी

४ सप्तकसयोगे तु पूर्वोक्तभावनयैकपिर्ध्विकल्पा भवन्ति, सर्वेषा चषा मीलने त्रयस्त्रिशच्छतानि सप्त-त्रिशदधिकानि भवन्ति । (वृ०प०४४६)

- २३. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ३ पक, मस्यात घूम, सस्यात तम, मर्यात मप्नमी
- २४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ४ पक, सन्यात धूम, संन्यात तम, सन्यात मप्नमी
- २५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु ५ पक, सख्यात घूम, मख्यात तम, मरयात मप्नमी
- २६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, सरयात घूम, मख्यात तम, सख्यात गप्नमी
- २७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ७ पक, सख्यात घूम, मरयात तम, सरयान सप्तमी
- २६ १ रत्न, १ सक्कर, १ बालु, ६ पक, संख्यात धूम, मख्यात तम, सख्यात मप्तमी
- २६ १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, ६ पक, सस्यात धूम, सख्यात तम, संस्थात यप्नमी
- ३०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पक, संग्यात धूम, संस्यात तम, संस्यात सप्तमी
- ३१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वाजु, सख्यात पंक, सख्यात धूम, संख्यात तम, सय्यात स्वयं
- ३२ १ रत्न, १ मक्कर, २ वालु, सस्यात पक, सख्यात घूम, सरयात तम, मरयात मन्त्रमी
- ३३ १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, सख्यात पंक, सत्यात धूम, सख्यात तम, मग्यात सप्तमी
- ३४ १ रत्न, १ मवकर, ४ वालु, सस्यात पक, सरयात धूम, सस्यात तम, सन्यात सप्तर्म
- ३५ १ रत्न, १ मक्कर, ५ वालु, मख्यात पक, सस्यात धूम संख्यात तम, मरयात सप्तमी
- ३६ १ रत्न, १ मक्कर, ६ वालु, सख्यात पक, संत्यात घूम, सख्यात तम, सर्यात सप्तमी
- ३७ १ रत्न, १ सक्कर, ७ वालु, सरयात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम, सस्यात मण्तमी
- ३८ १ रत्न, १ सक्कर, ८ वालु, सत्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम, मख्यात सप्तमी
- ३६ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, सस्यात पंक, सस्यात धूम, सस्यात तम, सस्यात सप्तर्म
- ४० १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सस्यात तम, सख्यात सप्तमी
- ४१ १ रत्न, १ सक्कर, सस्यात वालु, सस्यात पक, सस्यात धूम, सस्यात तम, सस्यात सप्तमी
- ४२ १ रत्न, २ सक्कर, मस्यात वालु, सस्यात पक, मस्यात धूम, सस्यात तम, सस्यात मप्नमी
- ४३ १ रत्न, ३ सक्कर, मख्यात वालु, संस्थात पक, मख्यात घूम, संस्थात तम, सस्यात सप्तमी
- ४४ १ रत्न, ४ मक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, संख्यात तम, सख्यात सप्तमी
- ४५ १ रत्न, ५ सक्कर, मरुयात वालु, सस्यात पक, सस्यात धूम, मस्यात तम, सस्यात सप्तमी
- ४६ १ रत्न, ६ सक्कर, संख्यात वालु, सरयात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी
- ४७. १ रत्न, ७ मक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात सप्तमी

- ४८. १ रत्न, ८ सक्कर, सस्यात वालु, सस्यात पक, सस्यात धूम, संख्यात तम, सख्यात सप्तमी
- ४६. १ रत्न, ६ सक्कर, सस्यात वालु, संत्यात पक, सस्यात धूम, सस्यात तम, सस्यात सप्तमी
- ५० १ रत्न, १० सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात घूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी
- ५१ १ रत्न, सख्यात सक्कर, सस्यात वालु, सस्यात पक, सस्यात धूम, सस्यात तम, सख्यात सप्तमी
- ५२ २ रत्न, संख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सस्यात पंक, सख्यात धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी
- ५३. ३ रत्न, संस्थात सक्कर, संस्थात वालु, संस्थात पंक, संस्थात घूम, संस्थात तम, संस्थात सप्तमी
- ५४ ४ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी
- ५५ ५ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, सख्यात धूम, सख्यात तम, सख्यात मप्तमी
- ५६ ६ रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पन, सख्यात धूम, सख्यात तम, मख्यात सप्तमी
- ५७ ७ रत्न, सख्यात सक्कर, सस्यात वालु, सख्यात पक, सस्यात धूम, सख्यात तम, सस्यात सप्तमी
- ५८ द रत्न, मख्यात मक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात मप्तमी
- ५८ ६ रत्न, संख्यात मक्कर, संख्यात वालु, संख्यात पक, संख्यात धूम, संख्यात तम, संख्यात संप्तामी
- ६० १० रत्न, स स्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पकः, सख्यात धूम, सख्यात तम, सख्यात सप्तमी
- ६१. सख्यात रत्न, सख्यात सक्कर, सख्यात वालु, सख्यात पक, मख्यात धूम, सख्यात तम, सस्यात सन्तमी

हिवै सख्यात जीवा रा भागा रो घडो कहै छै-

- १. इक सयोगिक ७ ।
- २. द्विक सयोगिक २३१।
- ३ त्रिक सयोगिक ७३५।
- ४. चउनक सयोगिक १०५५।
- ५. पच सयोगिक ८६१।
- ६. पट सयोगिक ३५७।
- ७ सप्त सयोगिक ६१।

ए सर्व ३३३७।

सरयात जीव नरक मे जाय तेहना इकयोगिक भागा ७ विकल्प १ ते लिसियै —

- १. सख्याता रत्नप्रभा मे कपजै।
- २ अथवा सक्कर मे ऊपजै।
- ३ जाव अथवा तमतमा मे ऊपजै। सख्याता जीव नरक मे जाय तेहना द्विकसजोगिया विकल्प ११ ते लिसियै छै—

- १ १ रत्न, संख सक्कर ए प्रथम विकल्प।
- २ २ रत्न, संख सक्कर ए द्वितीय विकल्प । इम रत्न मे अनुक्रमे दश ताइ एक॰ एक वधारता दसमो विकल्प—
- १०. १० रत्न, सख सक्कर ए दशमो विकल्प।
- ११. सख रत्न, सख सक्कर ए इग्यारमो विकल्प । ए द्विकसजोगिया सख्याता जीवा रा ११ विकल्प अनै एक-एक विकल्प ना इकवीस-उकवीम भागा हुवै ते माटै इग्यारै ने २१ गुणा कीधे छते २३१ भागा हुवै ।

सख्याता जीव नरक मे जाय तेहना त्रिकसजोगिया विकरा २१ ते लिखियै

- <del>ਹੈ</del> --
- १ १ रत्न, १ सक्कर, सख वालुक ए प्रथम विकल्प।
- २ १ रत्न, २ सक्कर, सख वालुक ए द्वितीय विकल्प । इम सक्कर मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता दसमो विकल्प--
- १०. १ रत्न, १० सक्कर, सरा वालुक ए दशमो विकल्प।
- ११ १ रत्न, सख सक्कर, सख वालुक, ए इग्यारमो विकल्प।
- १२. २ रत्न, सख सक्कर, सुख वालुक ए बारमो विकल्प। इम रत्न मे दण ताइ अनुक्रमे एक-एक वधारता वीसमो विकल्प—
- २०. १० रत्न, सख सक्कर, सख वालु ए वीसमो विकल्प।
- २१ सख रत्न, सख सक्कर, सख वालुक ए इकवीममी विकल्प । ए त्रिकसजोगिया सल्यात जीवा रा २१ विकल्प, अनै एक-एक विकल्प ना पैतीस-पैतीस भागा हुवै ते माटै इकवीस नै ३५ गुणा कीधे छते ७३५ भागा हुवै।

सख्याता जीव नरक मे जाय, तेहना चौकसजोगिया विकल्प ३१ एहनी आमना लिखिये छै—

- १. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालुक, सख पक ए प्रथम विकल्प।
- २ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालुक, सख पक ए द्वितीय विकल्प। इम वालुक मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता दसमो विकल्प—
- १० १ रत्न, १ सक्कर, १० वालुक, सख पक, ए दशमो विकल्प।
- ११. १ रत्न, १ सक्कर, सख वालुक सख पक ए ११ मो विकल्प।
- १२. १ रत्न, २ सक्कर, मख वालुक, सख पक ए १२ मो विकल्प। इम सक्कर मे दश ताइ अनुक्रमे एक-एक वधारता वीसमो विकल्प—
- २० १ रत्न, १० सक्कर, मख वालुक, सख पक ए वीसमी विकल्प।
- २१ १ रत्न, सख सक्कर, सख वालुक, सख पक ए २१ मो विकल्प।
- २२ २ रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक ए २२ मो विकल्प । इम रत्न मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता तीसमो विकल्प-
  - ३० १० रत्न, सख सक्कर, सख वालुक, सख पक ए तीसमी विकल्प।
- ३१ सख रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक ए ३१ मो विकल्प । चलक-सजोगिया सख्याता जीवा रा ३१ विकल्प अने एक-एक विकल्प ना पैतीस-पैतीस भागा हुवै ते माटै ३१ मे ३५ गुणा की छे छते १०८५ भागा हुवै । सख्याता जीव नरक मे जाय तेहना पचसजोगिया विकल्प ४१ तेहनी आमना लिखियै छै—
  - १. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, सख घृम, ए प्रथम विकल्प।
  - २ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, सख धूम, ए द्वितीय विकल्प । इम पक मे
  - १. सख्यात के स्थान पर सख शब्द का प्रयोग हुआ है।

- अनुऋमे दश ताइ एक-एक वधारतां दसमों विकल्प---
- १० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पंक, सख घूम ए दशमो विकल्प।
- ११ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, सख पक, सख धूम ए ११ मो विकल्प।
- १२ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, सख पक, सख धूम ए १२ मो विकल्प, इम वालुक मे अनुक्रमे दश तांइ एक-एक वधारता वीसमो विकल्प —
- २० १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, सख पक, सख धूम, ए २० मो विकल्प।
- २१. १ रत्न, १ सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, ए २१ मो विकल्प।
- २२. १ रत्न, २ सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, ए २२ मो विकल्प। इम सक्कर मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता तीसमो विकल्प---
- ३० १ रत्न, १० सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम ए ३० मो विकल्प।
- ३१. १ रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम ए ३१ मो विकल्प।
- ३२ २ रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम ए ३२ मो विकल्प। इम रत्न मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता चालीसमो विकल्प—
- ४० १० रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख, पृक, सख धूम ए चालीसमो विकल्प।
- ४१ सख रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम ए ४१ मो विकल्प।

ए सख्यात जीवा रा पाचसजोगिया ४१ विकल्प, अने एक-एक विकल्प ना इक्कीस-इक्कीस भागा हुवै, ते माटै इकतालीस ने २१ गुणा कीधे छते ६६१ भागा हुवै।

संख्याता जीव नरक में जाय तेहना पट संजोगिया विकल्प ५१, तेहनी आमना लिखिये छै—

- १ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, सख्यात तम, ए प्रथम विकल्प ।
- २. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, सख्यात तम ए द्वितीय विकल्प । इम धूम मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता दसमो विकल्प—
- १० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १० धूम, सख्यात तम ए १० मो विकल्प।
- ११ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, सख धूम, सख तम ए ११ मो विकल्प।
- १२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, सख धूम, सख तम ए १२ मो विकल्प। इम पक मे अनुक्रमे दश नाइ एक-एक वधारता वीसमो विकल्प—
- २०. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पक, सख धूम, सख तम, ए २० मो विकल्प।
- २१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, सख पक, सख धूम, सख तम ए २१ मो विकल्प।
- २२. १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, सख पक, सख धूम, सख तम, ए २२ मो विकल्प। इम वालुक मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता तीसमो विकल्प—
- ३० १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, सख पक, सख धूम, सख तम ए ३० मो विकल्प।
- ३१ १ रत्न, १ सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम, ए ३१ मो विकल्प।
- ३२ १ रत्न, २ सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम, ए ३२ मो विकल्प।
  - इम सक्कर मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता चालीसमो विकल्प---
- ४० १ रत्न, १० सक्तर, सख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम ए४० मी विकल्प।
- ४१. १ रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम ए ४१ मी विकल्प।
- ४२ २ रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम ए ४२ मो विकल्प। इम रत्न मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता पचाममो विकल्प---

- ५० १० रस्त, सन्व सबकर, सन्य वालु, सन्य पक, सन्व धूम, सन्य तम ए ४० मों विकल्य।
- ४१ सन्व रत्न, संस सक्कर, सन्य वालु, सन्व पंक, सस्य ध्म, सस्य तम ए ४१ मो विकल्प।

ए सन्त्यात जीवा रा छमंजोगिया ५१ विकल्प, अने एक-एक विकल्प ना सान-मात भागा हुवै, ते मार्ट ५१ ने मात गुणा की घे छने ३५७ भागा हुवै।

मन्याना जीव नरक में जाय तेहना मातमजोगिया विकरप ६१ तेहनी वामना निनिये छै-

- १ १ रत्न, १ सकरर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, मग्य गप्तमी, ए प्रथम विकरप ।
- २ १ रत्त, १ नकर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, मन्न मन्त्रमी, ए द्वितीय विकल्य । उम तम में अनुत्रमे दण ताड एक-एक वधारता दममो विकत्य—
- १०. १ रत्न, १ मक्कर, १ बालु, १ पक, १ धूम, १० तम, मत्र गप्तर्मा ए १० मो
- ११ १ रत्त, १ सक्कर, १ बालु, १ पक, १ घूम, सस्त तम, सस्य सप्तमी, ए ११ मो विकल्प ।
- १२ १ रत्न, १ सक्कर, १ बालु, १ पक, २ धूम, मन्द्र नम, मन्द्र सप्तर्मा, ए १२ मो विकल्प। इम धूम मे अनुत्रमे दण ताइ एक-एक वधारना बीसमो विकल्प—
- २० १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, १ पक, १० घूम, मख तम, मख मप्तमी ए २० मो विरत्य ।
- २१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, मख धूम, मंख तम, मंख मण्नमी, ए २१ मी विकल्प।
- २२ १ रत्न, १ सक्कर, १ बालु, २ पक, मस घूम, मंख नम, सन्य मध्तमी, ए २२ मो विकल्य।

इम पक मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता तीममो विकल्प-

- ३०. १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, १० पक, मख घूम, मख तम, सख सप्तमी, ए ३० मी विकल्प।
- ३१. १ रत्त, १ मक्कर, १ वालु, सख पक, नख धूम, मख तम, सख मप्तमी ए ३१ मो विकल्प।
- ३२ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, सख पक, सख धूम, संख तम, सख मप्तमी ए ३२ मो विकल्प। इम वालुक मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता चालीसमो विकत्य---
- ४०. १ रत्न, १ मक्कर, १० वालु, संख पक, संख घूम, मंग्व तम, सग्व मप्नमी ए ४० मी विकल्य।
- ४१. १ रत्न, १ मक्कर, मंख वालु, मख पंक, संख धूम, मख तम, सख सप्तमी ए ४१ मो विकल्प।
- ४२ १ रत्न, २ सक्कर, मंख वालु, मख पक, मंख वूम, सख तम, मख सप्तमी, ए ४२ मो विकल्प । डम मक्कर मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता पचासमो विकल्प—
- ५० १ रत्न, १० नकार, सख वालु, मख पंक, मख धूम, मख तम, सख सप्तमी, ए ५० मों विकल्य।

- ५१. १ रत्न, सख सक्कर, संख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम, सख सप्तमी ए ५१ मो विकल्प ।
- ५२ २ रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम, सख सप्तमी ए ५२ मो विकल्प । इम रत्न मे अनुक्रमे दश ताइ एक-एक वधारता साठमो विकल्प—
- ६० १० रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम, सख सप्तमी ए ६० मो विकल्प।
- ६१ सख रत्न, सख सक्कर, सख वालु, सख पक, सख धूम, सख तम, सख सप्तमी

  ए ६१ मो विकल्प ।

ए सख्यात जीवा रा सात सयोगिया ६१ विकल्ग अने एक-एक विकल्प नो एक २ भागो हुवै ते माटै भागा पिण ६१ जाणवा।

\*जिन कहै गगेया । सुणे ।। (ध्रुपद)

- ५ हे प्रभु । असल्याता नेरइया, नरक-प्रवेशन प्रश्न निहाल कै। जिन कहै रत्नप्रभा विषे, जावत अथवा सप्तमी भाल के।।
- ६ अथवा एक रत्न विषे, सक्कर माहे असिखज्ज होय कै। इह विधि द्विकसजोगिया, यावत सप्तसजोगिक जोय कै।।
- ७ जिम कह्यो सख्याता जीव नो, असख्याता नो कहिवो तेम कै। णवर पद असख्यात नो, द्वादश नो कहिवो धर प्रेम कै।।
- द द्विकसंजोगिक ना इहा, द्वादश विकल्प करिनै कहीस कै। वे सय वावन भग हुवै, इक विकल्प भागा इकवीस कै।। हिवै असक्षेज जीवा रा द्विकसजोगिक ना १२ विकल्प कहै छै—
- १ १ रत्न, असख्यात सक्कर
- २ २ रत्न, असख्यात सक्कर
- ३ ३ रत्न, असख्यात सक्कर
- ४ ४ रत्न, असख्यात सक्कर
- ४ ५ रत्न, असख्यात सक्कर
- ६ ६ रत्न, असख्यात सक्कर
- ७ ७ रतन, असख्यात सक्कर
- प्रस्ति, असख्यात सक्कर
- ६. ६ रतन, असख्यात सक्कर
- १०. १० रत्न, असख्यात सक्कर
- ११. सख रत्न, असख्यात सक्कर
- १२ असख्यात रत्न, असख्यात सक्कर

एव १२ विकल्य कह्या। एक-एक विकल्य करि इक्वीस-इकवीस भागा कीधे छते २५२ भागा हुवै।

- ५ असखेज्जा भते । नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पिवस-माणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा । गगेया । रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेमत्तमाए वा होज्जा ।
- ६ अहवा एगे रयणप्पभाए असखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एव दुयास जोगो जाव सत्तगस जोगो य।
- प्रवासिक्राण भणिओ तहा असस्रेज्जाण वि भाणि-यव्वो, नवर — असस्रेज्जओ अव्भह्तिओ भाणियव्वो । (श० ६।६६) नवरमिहासस्यातपद द्वादशमधीयते

(वृ० प० ४४६) म दिकसयोगादौ तु विकल्पप्रमाणवृद्धिर्भवति, सा चैव — दिकसयोगे द्वे शते द्विपञ्चाशदिधके २५२,

(वृ० प० ४४६)

<sup>\*</sup>लय . हू बलिहारी हो जादवा

हिबै त्रिकसजोगिया भागा कहै छै-

ह. त्रिकसजोगिक नां इहां, तेवीस विकल्प करि मुजगीस कै। भंग अप्ट सय पच है, इक विकल्प भांगां पैतीस कै॥ अमस्यात जीवा रा त्रिकमजोगिक विकत्य २३ जुदा-जुदा कहे छैं— ह. त्रिकमयोगेऽप्टी श्रनानि पञ्चोत्तराणि ८०५, (वृ० प० ४४६)

१ १ रत्न, १ सक्कर, असम्व बालु

२ १ रत्न, २ मक्कर, असस वालु

३ १ रत्न, ३ नक्कर, असंख दालु

४. १ रत्न, ४ मतकर, असल वालु

५ १ रत्न, ५ सक्कर, असख वालु

६. १ रत्न, ६ मनकर, अमख बालू

७ १ न्त्न, ७ मक्कर, अमप बालु

८. १ रत्न, ८ मक्कर, अमख वालु

६. १ रत्न, ६ मक्कर, अमस वालु

१०. १ रतन, १० सकार, अमंख वालु

११ १ रत्न, मख मक्कर, अमन्व वानु

१२. १ रत्न, असंव सक्कर, अमख वालुका

१३ २ रत्न, अमल मक्कर, असप वालुका

१४ ३ रत्न, असल नकर, अमंख वालुका,

१५. ४ रत्न, असल मक्कर, अमंख वालुका

१६ ५ रत्न, असल नक्कर, अमल वालुका

१७ ६ रत्न, असख नक्कर, अमग्न वालुका

१८ ७ रत्न, अमख मक्कर, असख वालुका

१६. ८ रत्न, बसख सक्कर, बमंख वालुका

२०. ६ रत्न, अमल सक्कर, असंख वालुका

२१. १० रत्न, असख सक्कर, असम वालुका

२२. सख रत्न, अमख सक्कर, असय वालुका

२३. अमंच रत्न, अमख सक्कर, असव वालुका

एवं २३ विकल्प कह्या । एक-एक विकल्प करि पैतीस-पैतीस भागा की छे छते ५०५ भागा हुवै ।

हिन्नै असंख जीवा रा चउक सयोगिक

१० च उकसजोगिक नां इहां, च उतीस विकल्प करि मुजगीस कै। भग ग्यारेमी नेऊ हुवै, इक-इक विकत्प करि पैतीस कै।। हिवै अमरुगत जीवां रा च उक्कसयोगिक विकल्प ३४ जुदा-जुदा कहै छै —

१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, असंख पक

२ १ रत्न, १ मक्कर, २ वालु, असख पक

३ १ रत्न, १ मक्कर, ३ वालु, असंख पंक

४ १ रत्न, १ मक्कर, ४ वालु, अमल पंक

५ १ रतन, १ मक्कर, ५ वालु, अमंख पक

६ १ रत्न, १ मनकर, ६ वालु, असख पक

७ १ रत्न, १ सम्कर, ७ वालु, असंख पक

८ १ रत्त, १ सक्कर, ८ वालु, असंख पक

६. १ रत्न, १ नक्कर, ६ वालु, असंख पंक

१०. चतुष्यसयोगे त्वेकादयशतानि नवत्यधिकानि ११६० (वृ० प० ४४६)

२०० भगवती-जोड

१० १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, असंख पेक ११. १ रत्न, १ सक्कर, सख वालु, असख पक १२ १ रत्न, १ सक्कर, असख वालु, असख पक १३ १ रत्न, २ सक्कर, असख वालु, अमख पक, १४ १ रत्न, ३ सक्कर, असख वालु, असख पक १५ १ रत्न, ४ सक्कर, असख वालु, असख पक १६ १ रत्न, ५ सक्कर, असख वालु, असख पक १७ १ रत्न, ६ सक्कर, असख वालु, असख पक १८ १ रत्न, ७ सक्कर, असख वालु असख पक १६. १ रत्न, प्रसंकर, असख वालु, असख पक २० १ रत्न, ६ सक्कर, असख वालु, असख पक २१ १ रत्न, १० सक्कर, असख वालु, अस ख पक २२ १ रत्न, असख सक्कर, असख वालु असख पक २३ १ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक २४ २ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक २५ ३ रत्न, असल सक्कर, असल वालु, असल पक २६ ४ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक २७ ५ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक २८ ६ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक २६ ७ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक ३०. ८ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक ३१ ६ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक ३१. १० रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पंक ३३ सख रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक ३४ असख रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक

एव ३४ विकल्प कह्या। एक-एक विकला करि पैतीय-पैतीय भागा की धे छते ११६० भागा हुवै---

हिवै असख जीवा रा पच सयोगिक —

११ पंचसयोगिक ना इहा, पैतालीस विकल्प करि दीस कै। नव सय पैतालीस भग है, इक-इक विकल्प भग इकवीस कै।। असख्यात जीवा रा पच सयोगिक विकल्प ४५ जुदा-जुदा कहै छै—

१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, असल धूम २. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, असल धूम ३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ३ पक, असल धूम

४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ४ पक, असख धूम

५ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ५ पक, असख धूम

६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, असख धूम

७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ७ पक, असख धूम

५ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ५ पक, असख धूम

६ १ रत्न, १ सक्तर, १ वालु, ६ पक, असख धूम

१० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पक, असल धूम

११. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, सख पक, असख धूम

१२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, असख पक, असख धूम

११. पञ्चकसयोगे पुनर्नव शतानि पञ्चचत्वारिशदधि-कानि ६४५, (वृ० प० ४४६) १३. १ रत्न, १ मक्कर, २ वालु, असख पक, असंख धूम १४. १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, असस पक, असम धूम १५. १ रत्न, १ मक्कर, ४ वालु, अमख पक, अमन घूम १६ १ रतन, १ मकार, ५ वालु, असंख पक, अमख धूम १७. १ रत्न, १ मक्कर, ६ वालु, असल पंक, असल ध्म १८. १ रत्न, १ नक्कर, ७ वालु, अमरा पक, असय धूम १६. १ रत्न, १ नक्कर, ५ वालु, असख पक, असख धूम २०. १ रतन, १ सकरर, ६ वालु, अमय पक्र, अमय धूम २१ १ रत्न, १ सकर, १० वालु, असय पक, असेय धूम २२. १ रत्न, १ सकर, मख वालु, असख पक, असख धुम २३. १ रत्न, १ सक्कर, असम वालु, असख पक, असख धूम २४ १ रत्न, २ नकर, अगच बालु, अमच पक, अमच घूग २४. १ रत्न, ३ सक्कर, असम बालु, असंख पक, असम धूम २६. १ रतन, ४ नकर, असख बालु, असप पक, असख धूम २७. १ रत्न, ५ मनकर, असख वालु, असख पक, असख धूम २८. १ रतन, ६ सकर, असख वालु, असय पक, असंव धूम २६ १ रत्न, ७ सङ्कर, असल वालु, असख पंक, असम धूम ३० १ रत्न, ६ सक्कर, असख वालु, असख पक्र, असंघ धूम ३१. १ रतन, ६ सक्कर, असख वालु, असख पक, असंख घूम ३२ १ रतन, १० मनकर, असय बालु, असय पक, असय धूम ३३. १ रत्न, मख मक्कर, अमख वानु, अमख पक, अमख घूम ३४. १ रत्न, अनय सकर, असय वालु, असय पक, असय धूम ३५ २ रत्न, असप्य सक्कर, असप्य वालु, असप्य पंक, असप्य धूम ३६ ३ रत्त, असल सकर, असल वालु, असल पक, असंल धूम ३७.४ रत्न, अनव सक्कर, असव वालु, असख पक, असंव धूम ३८. ५ रत्न, असख सक्कर, असंख वालु, असख पंक, असख धृम ३६ ६ रत्न, अनष्य सक्कर, असष्य वालु, असख पक्क, असख धूम ४० ७ रत्न, असस सक्कर, असँख बालु, असख पंक, असस धूम ४१. = रत्न, अनय नक्कर, असय बालु, अमख पंक, अमय धूम ४२. ६ रन्न, असख सक्कर, असख बानु, असख पंक, असख धूम ४३. १० रत्न, असय मक्कर, असख वालु, प्रमय पंक, असख घृन ४४ मख रत्त, असप्र सक्कर, असख वातु, असख पंक, असप्र धूम ४५ असल रतन, असख सरकर, असंख बालु, असख पक, असख धूम

एव ४५ विकरत कह्या । एक-एक विकरत किर इकतीय-इकवीय भागा की छे उन ६४५ मांगा हुवै ।

हिवै असय जीवा रा पट सयोगिक-

१२. पट सयोगिक नां इहां, छपन्न विकल्प करि अवदात कै। तीनसी वाणूं भांगा हुवै, इक-इक विकल्प करि सान-सात कै।। असरपात जीवा रा पट सजोगि ह विकरप ५६ जुदा-जुदा कहै छै --

१. १ रत्न, १ सक्कर, १ बालु, १ पक, १ धूम, असंख तम

२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ धूम, असल तम

३ १ रत्न, १ नम्कर, १ वालु, १ पक, ३ धूम, असख तम

१२. पट्कसयोगे तु त्रीणि शतानि द्विनवत्यधिकानि ३६२, (वृ० प० ४४६)

२०२ भगवती-जोड़

४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ४ धूम, असंख तम ५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालू, १ पक, ५ धूम, असख तम ६. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ६ धूम, असख तम ७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ७ धूम, असख तम ८ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ८ धूम, असख तम ६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ६ धूम, असख तम १० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १० धूम, असख तम ११. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, सख धूम, असख तम १२ १ रतन, १ मनकर, १ वालु, १ पक, असख धूम, असख तम १३ १ रतन, १ सक्कर, १ वालु, २ पक, असख धूम, असख तम १४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ३ पक, असख धूम, असख तम १५ १ रतन, १ सक्कर, १ वालु, ४ पक, असख धूम, असख तम १६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ५ पक, असख धूम, असख तम १७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, असख धूम, असख तम १८ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ७ पक, असख धूम, असख तम १६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ५ पक, असख धूम, असख तम २० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, असख धूम, असख तम २१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १० पक, असख धूम, असख तम २२. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, सख पक, असख धूम, असख तम २३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, असख पक, असख धूम, असख तम २४ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, असख पक, असख धूम, असख तम २५ १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, असख पक, असख वूम, असख तम २६ १ रतन, १ सक्कर, ४ वालु, असख पक, असख धूम, असख तम २७ १ रत्न, १ सक्कर, ५ वालु, असख पक, असख धूम, असख तम २८ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, असख पक, असख धूम, असख तम २६ १ रत्न, १ सक्कर, ७ वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ३० १ रत्न, १ सक्कर, प्वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ३१ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ३२ १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ३३ १ रत्न, १ सक्कर, सख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ३४ १ रत्न, १ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख नम ३५ १रत्न, २ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ३६. १ रत्न, ३ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ३७ १ रत्न, ४ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ३८ १ रत्न, ५ सनकर, असल वालु, असल पक, असल धूम, असल तम ३६ १ रत्न, ६ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ४० १ रत्न, ७ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ४१ १ रत्त, प सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ४२ १ रत्न, ६ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ४३ १ रत्न, १० सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम ४४ १ रत्न, सख सक्कर, असख वालु, असच पक, असख धूम, असख तम ४५. १ रत्न, असख सक्तर, असख वालु, असख पक्त, असख धूम, असख तम ४६. २ रत्न, असल सक्कर, असल वालु, असल प क, असल धून, असल तम

४७. ३ रत्न, असख मक्कर, असख वालु, असप पक, असप धूम, असप तम
४६. ४ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असप पक, असप धूम, असप तम
४६. ५ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असप पक, असप धूम, असप तम
५०. ६ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असप पंक, असप धूम, असप तम
५१. ७ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असप पक, असख धूम, असप नम
५२. ६ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असप पक, असप धूम, असप तम
५३ ६ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असप पक, असप धूम, असप तम
५४. १० रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक, असप धूम, असप तम
५५ सख रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक, असप धूम, असप तम
५५ सख रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पंक, असप धूम, असप तम

एव ५६ विकल्प कह्या । एक-एक विकल्प करि सात-सात भागा की छे छने ३६२ भागा हुवै ।

हिवै असप जीवा रा सप्त सयोगिक कहै छै-

१३. सप्तसयोगिक ना इहां, सतसठ विकल्प करि अवदात कै। भांगा पिण सतसठ तमु, विकल्प जितरा भंग कहात कै।। हिबै असल्यात जीवा रा सप्त मयोगिक विकल्प ६७, भागा पिण ६७ ते कहे १३. मप्तक्रमयोगे पुन मप्तपष्टि, (वृ० प० ४४६)

```
१. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, १ तम, अमख सप्तर्मा
  २. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, २ तम, अमख सप्तर्मा
  ३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ३ तम, अमध सप्तमी
 ४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ वूम, ४ तम, असंग्र मप्तमी
  ५ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम ५ तम, असख मध्तमी
  ६. १ रत्न, १ सदकर, १ वालु, १ पक, १ घूम, ६ तम, अमंख मध्नमी
 ७. १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, १ पंक, १ घूम, ७ तम, असय सप्तमी
  ५. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, ५ तम, असंख मप्तमी
 ६ १ रत्न, १ सकर, १ वालु, १ पक, १ घूम, ६ तम, असंख मध्नमी
१०. १ रत्न, १ सक्कर, १ बालु, १ पक, १ घूम, १० तम, असख सप्तमी
११. १ रत्न, १ सकरर, १ वालु, १ पक, १ धूम, मख तम, असख मप्तमी
१२. १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, १ पक, १ धूम, असख तम, असख मध्नभी
१३ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, २ घूम, असस नम, अनस मध्नमी
१४. १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ३ धूम, असय तम, असय सप्तमी
१५ १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, १ पक, ४ धूम, असख तम, असख मप्तमी
१६. १ रत्न, १ सकर, १ वालु, १ पक, ५ धूम, अमख तम, असख सप्तमी
१७ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ६ धूम, असख तम, असख मध्नमी
१८. १ रतन, १ सक्कर, १ वालु, १ पक, ७ धूम, असच तम, असख सप्तमी
१६. १ रत्न, १ सकर, १ वालु, १ पक, ६ धूम, अमख तम, असख सप्तमी
२०. १ रत्न, १ सकर, १ वालु, १ पर्क, ६ धूम, असंख तम, असख सप्तमी
२१. १ रत्न, १ नक्कर, १ वालु, १ पक, १० धूम, असख तम, असख सप्तमी
२२ १ रत्न, १ सकर, १ वालु, १ पक, मख धूम, असख तम, असख सप्तमी
२३. १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, १ पंक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
२४. १ रत्न, १ नक्कर, १ वालु, २ पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
२५. १ रत्न, १ सकर, १ बालु, ३ पक, अवस धून, अस ख तम, अमख सप्तमी
```

<del>ਹ</del>ੈ---

- २६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ४ पंक, असंख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- २७ १ रतन, १ सनकर, १ वालु, ५ पंक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- २ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- २६ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु ७ पक, असख घूम, असख तम, अमख सप्तमी
- ३० १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ५ पंक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ३१ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, ६ पक, असख धूम, अमख तम, असख सप्तमी
- ३२ १ रत्न, १ मक्कर, १ वालु, १० पक, असल धूम, असल तम, असल सप्तमी
- ३३ १ रत्न, १सक्कर, १ वालु, सख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ३४ १ रत्न, १ सक्कर, १ वालु, असख पक, असख घूम, असख तम, असख सप्तमी
- ३५ १ रत्न, १ सक्कर, २ वालु, असख पक, असख घूम, असख तम, असख सप्तमी
- ३६ १ रत्न, १ सक्कर, ३ वालु, असख पक, असख घूम, असख तम, असख सप्तमी
- ३७ १ रत्न, १ सक्कर, ४ वालु, असख पक, असख धूम, असंख तम, असख सप्तमी
- ३८ १ रत्न, १ सक्कर, ५ वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ३६ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ४० १ रत्न, १ सक्कर, ७ वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ४१ १ रत्न, १ सकर, ८ वालु, असख पक, असख धूम, अमख तम, असख सप्तमी
- ४२ १ रत्न, १ सक्कर, ६ वालु, असल पक, असल धूम, असल तम, असल सप्तमी ४३ १ रत्न, १ सक्कर, १० वालु, असल पक, असल धूम, असल तम, असल
- ४४. १ रत्न, १ सक्कर, सख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी

सप्तमी

- ४५. १ रत्न, १ सक्कर, असख वालु, असख पक, अमख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ४६. १ रत्न, २ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख घूम, असख तम, असख सन्तमी
- ४७ १ रत्न, ३ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ४८ १ रत्न, ४ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ४६ १ रत्न, ५ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ५० १ रत्न ६ सन्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ५१ १ रत्न, ७ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख घूम, असख तम, असख सप्तमी
- ५२ १ रत्न, = मक्कर, असख वालु, असख पंक, असख धूम, असख तम, असख सप्तर्म
- ५३. १ रत्न, ६ सक्कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ५४ १ रत्न, १० स≢कर, असख वालु, असख पक, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी
- ४५. १ रत्न, सख सक्कर, असख वालु, असख पक्त, असख धूम, असख तम, असख सप्तमी

- ५६ १ रत्न, असख सक्कर, अमख वालु, असख पक, अमंख धूम, असंख तम, अमंख मध्तर्म
- ५७ २ रत्न, असप मक्कर, असप वाल्, असंख पक, असप धूम, असख तम, असप सप्तमी
- ५८. ३ रत्न, अमख मक्कर, अमख वालु, अमख पक, असख धूम, अमख तम, असख सप्तमी
- ५६. ४ रत्न, अमख मक्तर, अमय वालु, अमख प्रक्त, अमख घूम, अमख तम, अमय मण्नर्म
- ६०. ५ रत्न, असख सक्कर, असख वालु, असख पक, असख वूम, असख तम, असख मन्तमी
- ६१ ६ रत्न, असख मक्कर, अमख वालु, असख पक, अमख घूम, असख तम, अमख मप्नमी
- ६२ ७ रत्न, असख सकर, असख वालु, असख पक, असख घूम, असख तम, असख सप्तर्मा
- ६३ ६ रत्न, असख मक्कर, असय वालु, असख पक, असख यूम, असख तम, असय मप्तमी
- ६४ ६ रत्न, असस्य मनकर, अमय वालु, असख पक, असय धूम, असय तम, अमय सप्तमी
- ६५ १० रत्न, असख मक्कर, असख वालु, असख पक, असख वूम, असल तम, असख मध्नमी
- ६६ सप्य रत्न, अमख सक्कर, अमख वालु, अमख पक, अमख धूम, अमख तम, असख मध्तमी
- ६७ असल रत्न, असल मक्कर, अमल वालु, अमल पक, असल वूम, अमल तम, असल सप्तमी

एव असस्याता जीवा रा सप्त सजोगिक विकल्प ६७ भागा ६७ कह्या।

# दूहा

- १४ हिवै प्रकारातर वली, नरक-प्रवेसन न्हाल। प्रश्न करै गगेय मुनि, आखै वीर दयाल।।
- १५. \*उत्कर्प हे प्रमु । नेरइया, उत्कृष्ट पद करिनै उपजह कै। तास प्रवन कीधे छते, श्री जिन भाखे मुण गगेय कै॥
- १६ सर्व प्रथम हुवै रत्न मे, इक सजोगे इक भग एह के। जे उत्कृष्ट पदे करी, ने सहु रत्नप्रभा उपजेह कै॥

# सोरठा

- १७. रत्ने जावणहार, जीव वहु छै ते भणी। अथवा रत्न मझार, नारिक पिण वहुला अछै।।
- १८ इकसयोगिक एक, भागो इहविध आखियो। द्विसरोगिक पेख, पट भगा कहियै हिवै।। हिवै द्विक नयोगिक ६ भागा कहै ई---
- १६. तथा रत्न विल सक्कर में,' अथवा रत्न वालु में होय की । तथा रत्न विल पक में, अथवा रत्न धूम विल जोय की ॥
- \*लय: हू बिनहारी हो जादवा !

- १४. अय प्रकारान्तरेण नारकप्रवेशनकमेवाह— (वृ० प० ४४६)
- १५,१६. उनकोसेण भते । नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पिवममाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा। गगेया । सब्बे वि ताव रयणप्पभाए होज्जा, 'उनकोसेण' मित्यादि, …… उत्कृष्टपदिनस्ते सर्वेऽपि रत्नप्रभाया भवेयु. (वृ० प० ४५०)
- १७. तद्गामिना तत्स्यानाना च बहुत्वात्, (वृ० प० ४५१)
- १८ इह प्रक्रमे द्विकयोगे पट् भङ्गका (वृ० प० ४५१)
- १६,२० अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा,

२०. तथा रत्न विल तम विषे, तथा रत्न सप्तमी माहि कैं। उत्कृष्ट पद द्विकयोगिका, ए पट भांगा दाख्या ताहि कै।

बा०—हिंवै उत्कृष्ट पदे नरक मे उपजे तेहना त्रिकसयोगिक १५ भागा कहै छै—रत्न सक्कर थी ५, रत्न वालु थी ४, रत्न पक थी ३, रत्न धूम थी २ रत्न तम थी १—एव १५ भागा रत्न यकीज हुवै। उत्कृष्ट पदे नरक मे ऊपजे तेह, नरक ने विषे ऊपजे तिवारे रत्नप्रभा मे तो ऊपजेईज, और नरक मे कोइ मे ऊपजे कोइ मे नही पिण ऊपजे, ते भणी रत्नप्रभा सू ईज १५ हुवै। तिहा प्रथम रत्न सक्कर सू ५ भागा कहै छै—

२१ तथा रत्न सक्कर वालु विषे', अथवा रत्न सक्कर पक होय कैं। अथवा रत्न सक्कर घूम में, अथवा रत्न सक्कर तम जोय कैं।। २२ तथा रत्न सक्कर ने सप्तमीं, रत्न सक्कर थी ए भंग पंच कै। हिवै रत्न अने वालुक थकी, किहयै चिछ भागा नो सच कै।। २३. अथवा रत्न वालु पक मे, अथवा रत्न वालु धूम माय कै। अथवा रत्न वालु तम विषे, अथवा रत्न वालु सप्तमी पाय कै।

२४. अथवा रत्न पक धूम मे, अथवा रत्न पक तम चीन कै। अथवा रत्न पंक सप्तमी, रत्न पक थी ए भग तीन कै।। २५. अथवा रत्न धूम तम विपे, तथा रत्न धूम ने सप्तमी होय कै। रत्न ने धूमप्रभा थकी, एह कह्या छै भागा दोय कै।। २६ अथवा रत्न तम सप्तमी, ए रत्न थकी भग पनरै जाण कै। उत्कृष्ट नरके ऊपजै, निश्चै रत्न मे उपजे आण कै।

वा०—हिनै उत्कृष्ट पदे नरक मे उपजै तेहना चड़क सयोगिक २० भागा कहै छै—ितके २० भागा रत्न सू ईज हुनै, रत्न मे तो अवण्य उपजेइज। तिणमे रत्न सक्कर थी १०, रत्न वालुक थी ६, रत्न पक यकी ३, रत्न धूम थी १—एव २०। तिहा रत्न सक्कर थी १० ते किसा १ रत्न सक्कर वालुक थी ४, रत्न सक्कर पक थी ३, रत्न सक्कर धूम थी २, रत्न सक्कर तम थी १—एव रत्न सक्कर थी १०, ते कहै छै—

२७ तथा रतन सक्कर वालु पक मे,

तथा रत्न सक्कर वालु धूमे जत कै। तथा रत्न सक्कर वालु नम विषे,

तथा रत्न सक्कर वालु सप्तमी हुत कै।।

२८. तथा रत्न सक्कर पंक धूम मे,

तथा रत्न सक्कर पक तम लीन कै। तथा रत्न सक्कर पंक सप्तमी,

ए रत्न सक्कर ने पक थी तीन कै।। २६ तथा रत्न सक्कर धूम तम विषे,

तथा रत्न सक्कर धूम सप्तमी होय कै। रत्न सक्कर ने धूम थी, आख्या छै ए भगा दोय कै॥

३०. तथा रत्न सक्कर तम सप्तमी, ए रत्न सक्कर थी दश भग देख कै। हिवै रत्न अने वालुक थकी, भागा पट कहियै सुविशेख कै।। वा०-- त्रिकयोगे पञ्चदश (वृ० प० ४५१)

- २१,२२ अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुयप्प-भाए य होज्जा, एव जाव अहवा रयणप्पभाए य मक्करप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा,
- २३ अहवा रयणणभाए वालुयप्पभाए पकप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए अहेस-त्तमाए य होज्जा,
- २४-२६ अहवा रयणप्पभाए पकप्पभाए घूमाए होज्जा, एव रयणप्पभ अमुयतेमु जहा तिण्ह तियासजोगो भणिओ तहा भाणियव्व जाव अहवा रयणप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा।

चा०-चतुष्कसयोगे विणति (वृ० प० ४५१)

- २७ अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पक्ष्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्प-भाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा,
- २८-३६ अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पक्षप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा एव रयणप्पभ अमुयतेसु जहा चउण्ह चउक्कगसजोगो भणितो तहा भाणियव्व जाव अहवा रयणप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा।

चा० — हिवै रत्न वालु थी पट भांगा ते किसा ? रत्न वालु पंक थी ३, रत्न वालु घूम थी २, रत्न वालु तम थी १। तिहा प्रथम रत्न वालुक पक थी ३ भागा कहै छै—

३१. तथा रत्न वालु पंक घूम में,

तथा रत्न वालु पंक तम मे चीन कै। तथा रत्नवालु पक सप्तमीं, ए रत्न वालुक ने पक थी तीन कै।। ३२ तथा रत्न वालु घूम तम विषे,

तथा रत्न वालु धूम सप्तमी होय कै। रत्न वालुक ने धूम थी, भांगा एह कह्या छै दोय कै।। ३३. तथा रत्न वालुक तम सप्तमी, रत्न वालुक थी पट भग एह कै। रत्न अने विल पंक थी, तीन भांगा कहिये छै जेह कै।।

चा० — हिंदी रतन पक थी ३ भागा ते किसा ? रतन पक घूम थी २, रतन पक तम थी — १ एव ३।

३४ तथा रत्न पक धूम तम विषे,

तथा रत्न पक धूम सप्तमी होय कै।
रत्न पक ने धूम थी, भागा एह कह्या छै दोय कै॥
३५. तथा रत्न पंक तम सप्तमी, रत्न पक थी त्रिण भग एह कै।
रत्न धूम थी भग डक, सांभलज्यो हित्र कहियै जेह कै॥
३६. तथा रत्न धूम तम सप्तमी, रत्नप्रभा थी ए भग वीस कै।
दाख्या चउनकसयोगिका, उत्कृष्ट नरक प्रवेशन दीस कै॥

बाo—हिंबी उत्कृष्ट पदे नरक में ऊपजै तेहना पचसबोगिक १५ मागा रतन थी हुवै, ते कहे छैं —रतन सक्कर थी १०, रतन वालुक थी ४, रतन पक थी १—एव १५। तिहा रतन सक्कर थी १० ते किसा १ रतन सक्कर वालु थी ६, रतन सक्कर पक थी ३, रतन सक्कर घूम थी १—एव १०। तिहा रतन सक्कर वालु थी ६ ते किसा १ रतन सक्कर वालु पक थी ३, रतन सक्कर वालु धूम थी २, रतन सक्कर वालु तम थी १—एव ६। तिहा रतन सक्कर वालु पक थी ३ भागा प्रथम कहे छैं—

३७. \*तथा रत्न सक्कर वालु पके, धूम मांहि पहिछाणियै'। तथा रत्न सक्कर वालु पंके, तमा छठी जाणियै'।।

३८. तथा रत्न सक्कर वालु पके, सप्तमीज लहीजियैं।
रत्न सक्कर वालु पक थी, भग तिण इम कीजियै।।
३६. तथा रत्न सक्कर वालु धूमा, तमा थी सुविणेषियें।
तथा रत्न सक्कर वालु धूमा, सप्तमी थी लेक्वियें।।
४०. तथा रत्न सक्कर वालुका तम, सप्तमी नारक लही।
रत्न सक्कर वालुका थी, एह पट भगा सही।।
वा०—िर्वे रत्न सक्कर पक थी ३ भागा ते किमा रे रत्न सक्कर पक धूम

४१. तथा रत्न सक्कर पंक घूमा, तम विषे अवधारियै। तथा रत्न सक्कर पक घूमा, सप्तमी सुविचारियै॥ बा०--पञ्च हमयोगे पञ्चदश (वृ० प० ४५१)

- ३७ अहवा रयणप्यभाए मक्करप्यभाए वालुयप्यभाए पक्षप्यभाए घूमप्यभाए य होज्जा, अहवा रयणप्यभाए जाव पक्षप्यभाए तमाए य होज्जा,
- ३८. अहवा रयणप्यभाए जाव पक्षणभाए अहेसत्तमाए य होज्जा,
- ३६-४७. अहवा रयणप्यभाए सक्करप्यभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, एव रयणप्यभ अमुयतेसु जहा पचण्ड पचगसंजोगो तहा भाणियव्य जाव अहवा रयणप्यभाए पकप्यभाए जाव अहेमत्तमाए य होज्जा,

रं०= भगवती-जोड़

<sup>\*</sup> लव : पूज मोटा मांजी तोटा

४२. तथा रत्न सक्कर पंक ने तम, सप्तमी में आखिय। रत्न सक्कर पंक थी ए तीन भागा दाखिय। ४३. तथा रत्न सक्कर धूम ने तम, सप्तमी नारिक मझै। रत्न सक्कर थकी ए दश भग एम निचारजै।।

बाo—हिवै रत्न वालु थी ४ भागा ते किसा ? रत्न वालु पंक थी ३, रत्न वालु घूम थी १—एव ४। तिहा रत्न वालु पक थी ३, ते किमा ? रत्न वालु पक घूम थी २, रत्न वालु पक तम थी १ एव ३।

४४. तथा रत्न वालु पक धूमा, तमा पृथ्वी मे हुवै। तथा रत्न वालु पक धूमा, सप्तमी मे अनुभवै॥ ४५ तथा रत्न वालु पक नै तम, सप्तमी मे जाणियै।

रत्न वालु पंक थी इम, तीन भागा आणिये।। ४६. तथा रत्न वालु धूम ने तम, सप्तमी पृथ्वी मही। रत्न वालु थकी भांगा, च्यार ए आख्या सही।।

४७ तथा रत्न पंके धूम त्मा, सप्तमी दुख अनुभवै। रत्न सू इज भंग पनर ए, पच सयोगिक हुवै॥ हिवै उत्कृष्ट पदे नरक मे ऊपजै तेहना पट सयोगिक ६ भागा कहै छै—

४८ तथा रत्न सक्कर वालुका पक, धूम ने तमा मझै'। तथा रत्न सक्कर वालुका पक, धूम ने सप्तमी सझैं।।

४६ तथा रत्न सक्कर वालुका पक, तम सप्तमी अनुभवै'। तथा रत्न सक्कर वालुका नै, धूम तम सप्तमी हुवै'।।

५० तथा रत्न सक्कर पक धूम तम, सप्तमी मे ऊपजै । तथा रत्न वालु पक धूम तम, सप्तमी माहै लजे ।।

५१. भग षट ए रत्न सू इज, षट-सयोगिक जाणियै। उत्कृष्ट पद ते भणी सप्तम भग रत्न विण नाणियै।। हिवै उत्कृष्ट पदे नरक ने विषे ऊपजै तेहनो मप्त सयोगिक १ भागो कहै

५२. तथा रत्न सक्कर वालुका पक, धूम तम सप्तमी लहै। सप्तयोगिक भग इक ए, वीर जिनवर इम कहै।।

३ हिव रत्नप्रभादिक विषेद्दज, नारकी नो जाणियै। अल्पबहुत्वादिक निरूपण अर्थ प्रश्न वखाणियै।।

पूथ. \*ए प्रभु ! रत्नप्रभा पृथ्वी, नरक प्रवेशन नो कहेश कै। सक्कर जाव इम सप्तमी, कुण-कुण अल्प वहु तुल्य विशेष कै।।

५५. जिन कहै गगेया । सुणे, सर्व ते थोडा प्रवेश करत कै। नरक सप्तमी नेरइया, शेष अपेक्षा तिहा अल्प जंत कै।। पड्योगे पट्

(वृ० प० ४५१)

४८ अहवा रयणप्पभाए मक्करप्पभाए जाव धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव धूमप्प-भाए अहेसत्तमाए य होज्जा ।

४६ अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव पकप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाएधूमप्पभाए तमाए अहेसत्त-माए य होज्जा,

५० अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पकप्पभाए जाव अहेनत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए वालुयप्प-भाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा,

सप्तकयोगे त्वेक इति । (वृ० प० ४५१)

५२ अहवा रयणप्पभाए य सक्करभाए य जाव अहेमत्त-माए य होज्जा। (श० ६।१००)

५३. अय रत्नप्रभादिष्वेव नारकप्रवेशनकस्याल्पत्वादिनि-रूपणायाह--- (वृ० प० ४५१)

पू४ एयस्स ण भते । रयणप्यभापुढाविनेरइयपवेमणगम्म सक्तरप्पभापुढिविनेरइयपवेमणगस्स जाव अहेसत्तमापुढ-विनेरइयपवेसणगस्स कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?

५५ गगेया । सन्वत्योवे अहेसत्तमापुर्विवनेरडयपवेमणए, तद्गामिना शेपापेक्षया स्तोकत्वात्, (वृ० प० ४५१)

<sup>\*</sup>हूं बलिहारी हो जादवां!

५६. असंख्यात गुणा छठी विषे, जावणहार तिहां असंखेज कै। जावत रत्नप्रभा विषे, असख्यात गुणां प्रतिलोम' कहेज कै।। ५७ शत नवम वतीसम देश ए, एकसी ने नेउमी ढाल कै। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी,

'जय-जग्न' संपति हरप विशाल कै।।

 ५६. तमापुढिविनेरइयपवेसणए असरोज्जगुणे, एवं पिंडली-मग जाव रयणप्यभापुढिव नेरइयपवेसणए असंखेज्ज-गुणे। (ग० ६।१०१)

## ढाल: १६१

#### दूहा

- १. तिर्यच प्रवेशन हे प्रभु । कितै प्रकार कथिदि ? जिन कहै पच प्रकार ह्वै, एर्गिदि जाव पचिदि ॥
- २. एक जीव तियँच मे, करें प्रवेणन ताहि। स्यू एकेंद्री में हुवै, जाव पचेद्री माहि?
- ३. जिन कहै गगेया! सुणे, एकेद्री में होय। जाव तथा पंचेंद्रि में, ऊपजवो अवलोय॥
- ४ इहां कह्यो एकेद्रि इक, जीव ऊपजे देख। ते देवादिक थी हुवै, तेह अपेक्षा एक।।
- ५ वीजूं एकेद्रिय विषे, समय-समय अवलोय। जीव अनंता ऊपजे, सजातिया थी जोय।।
- ६. सजातीया थी नीकली, सजातीया में सोय। उपजे तेह तणो इहां, प्रश्न करचो निंह कोय।।
- ७. विजातीया थी नीकली, विजातीया मे होय। तेह प्रवेशन छैज तस्, प्रश्न कियो है सोय।।
- द एक जीव ना आखिया, एकेद्रियादिक जाण।
  पच स्थान तिण कारणे, पच भंग पहिछाण।।
  एक जीव तिर्यंच में क्यजें ते इक्संजोगिया नो विकल्प १ भागा ५—
- १ एक जीव एकेंद्रि मे ऊपजै
- २. नथा वेंद्रिय मे ऊपजै
- ३. तथा तेंद्रिय मे ऊपजै
- ४. तथा चडरिंद्रिय में ऊपजै
- ५ तथा पर्चेद्रिय मे रूपजै
- १. प्रतिलोम किहता—उलटा करता छठी थी पाचमी ना असल्यातगुणा। तेहथी चोथी नां असल्यातगुणा। तेहथी तीजी ना असल्यातगुणा। तेहथी वीजी ना असल्यातगुणा। तेहथी रत्नप्रभा पृथ्वी ना नारक जीव नरक ने विषे असल्यात-गुणा ऊपजै।

- १ तिरिक्लजोणियपवेसणए ण भते । कितिबिहे पण्णत्ते ?
  गगेया ! पचिवहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिदियतिरिक्यजोणियपवेमणए जाव पिचिदियिनिरिक्खजोणियपवेमणए। (श० ६।१०२)
- २. एगे मते । तिरिवयजोणिए तिरिक्खजोणियपवेमण-एण पविसमाणे कि एगिदिएसु होज्जा जाव पिचदि-एसु होज्जा ?
- ३ गगेया । एगिदिएसु वा होज्जा जाव पिंचदिएसु वा होज्जा । (श० ६।१०३)
- ४-७ तत्र च यद्यप्येकेन्द्रियप्वेक. कदाचिदप्युत्पद्यमानो न लभ्यतेऽनन्तानामेव तत्र प्रतिममयमुत्पत्तेस्त्याऽिष देवादिभ्य उद्वृत्य यस्तत्रोत्पद्यते तदपेक्षयैकोऽिष लभ्यते, एतदेव च प्रवेशनकमुख्यते यद् विजातीयेभ्य आगत्य विजातीयेषु प्रविशति मजातीयस्तु सजातीयेषु प्रविष्ट एवेति कि तत्र प्रवेशनकमिति,

(वृ० प० ४४१)

तत्र चैकस्य क्रमेणैकेन्द्रियादिष् पञ्चसु पदेपूत्यादे
 पञ्च विकल्पा, (वृ० प० ४५१)

२१० भगवती जोइ

हिवै दोय जीव तिर्यंच से ऊपजै ते प्रश्न करै छै-

- ह. दोय जीव तिर्यच मे, उपजै तेहनो जाण।प्रश्न करै गगेय मुनि, भाखै तव जगभाण।
- १०. इकसयोगिक तेहनो, विकल्प एक विचार। भागा तेहना पच है, इहविध करिवा सार।
- ११ विहु एकेद्रिय ने विषे, तथा बेद्री माय। तथा तेद्री मे विहु, जीव ऊपजै आय।।
- १२ तथा चर्जिरद्री मे बिहु, तथा पचेद्री माय। इकसयोगिक इह विधे, पच भग कहिवाय।। दो जीव तिर्यंच मे ऊपजै ते इकसजोगिया नो विकल्प १ भागा ४—
- १-५ दो जीव एकेंद्री मे ऊपजै जाव पचेंद्री मे ऊपजै।
- १३. तथा एक एकेद्रिय, एक वेंद्रिय होय। नरक प्रवेशन जेम ए, तिरिक्ख-प्रवेशन जोय।।
- १४. तिहा सात पृथ्वी विषे, इहां पच है स्थान। जाव असख्याता लगै, कहिवो सर्व पिछान।।
- १५. भग हुवै नानापणै, तत्त्व अभियुक्तेन। पूर्व उक्त न्याये करी, करिवा बुद्धि न्यायेन।।
- १६ द्विकसयोगिक एहनां, विकल्प तेहनो एक। दश भागा भणिवा तसु, तसु विधि एम सपेख।। \*सुण गोया रे। भाखै जिन गुणगेहा।। [ध्रुपद]
- १७. अथवा एक एकेद्री माहे, एक वेद्रिय होय। अथवा एक एकेद्री मे ऊपजै, एक तेद्री मे जोय॥
- १८. अथवा एक एकेद्रिय माहे, एक चर्डारद्रिय माय। अथवा एक एकेद्रिय माहे, एक पंचेद्रिय थाय।।
- १६. अथवा एक वेइद्री मे ऊपजै, एक तेइद्रि मे होय। अथवा एक वेइद्री मे ऊपजै, एक चर्जरिद्रि मे जोय।।
- २०. अथवा एक वेइद्री मे ऊपजै, एक पचेद्रिय थाय। वे इद्रिय थी ए त्रिण भगा, भणवा जिन वच न्याय।।
- २१. अथवा एक तेद्रिय मे ऊपजै, एक चर्डिरद्री हुत। अथवा एक तेद्रिय मे ऊपजै, एक पंचेद्री जत।।
- २२. अथवा एक चर्डारद्री में ऊपजै, एक पर्चेद्रिय थाय। दिकसयोगिक ए दश भगा, तत्व युक्ति करि थाय।।

हिवं तीन जीव तियँच में ऊपजे तेहना इकसयोगिक भागा ५—

१-५ तीन जीव एकेद्री में ऊपजैं जाव तथा पचेद्री में ऊपजैं।

द्विक सजोगिक विकल्प २ भागा २०, ते दोय विकल्प करि कहै छै-

- १. एक जीव एकेंद्री में ऊपजै दोय जीव वेइद्रिय में ऊपजै
- २ दोय जीव एकेंद्री मे उपजै एक जीव वेइद्रिय मे ऊपजै

- ६ दो भते । तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियपवेसण-एण---पुच्छा ।
- १० द्वयोरप्येकैकस्मिन्नुत्रादे पञ्चैव, (वृ० प० ४५१)
- ११,१२. गगेया । एगिदिएसु वा होज्जा जाव पिचिदिएसु वा होज्जा।
- १३ अहवा एगे एगिदिएसु होज्जा एगे वेइदिएसु होज्जा, एव जहा नेरइयपवेसणए तहा तिरिक्खजोणियपवे-सणए वि भाणियव्वे।
- १४ पर तत्र सप्तसु पृथ्वीष्वेकादयो नारका उत्पादिता तिर्यञ्चस्तु तथैव पञ्चसु स्थानेष्ट्पादनीयां,

(वृ० प० ४५१) (श० ६।१०४)

जाव असखेज्जा।

१५ ततो विकल्पनानात्व भवति, तच्चाभियुक्तेन पूर्वोक्त-न्यायेन स्वयमवगन्तव्यमिति, (वृ० प० ४५१)

१६ द्विकयोगे तु दश,

(वृ० प० ४५१)

<sup>&</sup>quot;लय: रूडे चन्द नीहालें रे

ए वे विकल्प करि पूर्वे १० भागा कह्या, ते की छे छते २० भागा हुवै। हिवै तीन जीव ना त्रिकमजोगिक नो विकल्प १ भागा १०—

१ १ एकेंद्री १ वेंद्रि १ तेंद्रिय मे

२. १ एकेंद्री १ वेदि १ चउरिदिय

३. १ एकेंद्री १ वेंद्रि १ पचेंद्रिय मे

४. १ एकॅद्री १ तेंद्रि १ चउरिद्रि मे

५. १ एकेंद्री १ तेद्रि १ पचेंद्री मे

६ १ एकेंद्री १ चडरिटी १ पचेंद्री मे

७ १ वेंद्रि १ तेद्रि १ चउ रिद्री मे

१ वेद्रि १ तेद्रि १ पचेद्री में

६ १ वेंद्रि १ चउरिद्रिय १ पचेद्री मे

१० १ तेदि १ चउरिदी १ पंचेंद्री मे।

हिवै च्यार जीव तिर्यच में जाय तेहना इकसयोगिक विकरा ? भागा ५ पूर्व कह्या निम करिवा।

च उनम जोगिक नो वितरप १ भागा ५, ते कहै छै-

१ १ एकेंद्री, १ वेंद्रि, १ तेंद्रि, १ चर्डारद्रि

२ १ एकेंद्री, १ वेद्रि, १ तेंद्रि, १ पचेंद्री

३ १ एकेंद्री, १ वेंद्रि, १ चर्डारद्रि, १ पचेंद्री

४ १ एकेंद्री, १ तेंद्रि, १ चर्डारहि, १ पचेंद्री

५ १ वेंद्री, १ तेद्रि, १ चउरिद्रि, १ पर्चेद्री

हिवै पाच जीव एकेंद्रिय में ऊपर्ज तेहना इकमयोगिक विकल्प १ भागा ५ हिकमयोगिक ना विकल्प ४ भागा ४० विकनयोगिक ना विकल्प ६ भागा ६० चउवकमयोगिक ना विकल्प ४ भागा ३०

पचमयोगिक नो विकत्प १ मांगो १

इम छ जीव प्रमुख असल्याता जीव नां पूर्वे कह्या तिण रीते विकल्य करि जेतला भागा हुवै तेतला भणिवा।

तीन जीव ना द्विक सयोगिक विकल्प २—१२,२१ च्यार जीव ना द्विक सयोगिक विकल्प ३ —१३,२२,३१

त्रिक मयोगिक विकल्प ३—११२,१२१,२११ पच जीव ना द्विक मयोगिक विकल्प ४—१४,२३,३२,४१ त्रिक मयोगिक विकल्प ६—११३,१२२,२१२,१३१.२

विक सयोगिक विकल्प ६-११३,१२२,२१२,१३१,२२१,३११ चउक्क सयोगिक विकल्प ४-१११२,११२१,१२११,२१११

२३. तीन आदि जीवा ना भागा, जाव असंखिज्ज जीवा।
ते प्रवेशन नो नारिक जिम, नाना भंग कहीवा॥
२४ उत्कृष्ट पदे तिर्यंच मे उपजै, तेह प्रश्न हिव कीध्।
जिन कहै सर्व एकेंद्रि मे उपजै, इकयोगिक ए लीधू॥

## सोरठा

२५ एकेद्रिय वहु जाण, समय समय उत्पत्ति थकी। उत्कृष्ट पदे पहिछाण, सहु एकेद्री में हुवै॥ २४. उक्कोसा भते । तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिय-पवेसणएण---पुच्छा । गगेया । सच्वे वि ताव एगिदिएसु होज्जा, एकेन्द्रियाणामितवहूनामनुममयमुत्पादात् (वृ० प० ४५१)

२१२ भगवती-जोड

<sup>&</sup>lt;sup>4</sup>लय: रुड़े चन्द नीहाले रे

- २६. अथवा एकेद्री में ऊपजै, विल वेइद्री में होय। इम जिम नरक विषे गिणिया, तिम तियँच में पिण जोय।।
- २७ एकेद्रिय ने अणमूकते, द्विक त्रिक चउनक सयोग। पच सयोगिक भागा गिणवा, वारू दे उपयोग।।

#### सोरठा

२८ द्विकयोगिक चिउ धार, त्रिकसयोगिक भग षट। चउक्कसयोगिक च्यार, पचसयोगिक भग इक॥

उन्कृष्ट पदे तियाँच मे ऊपजै तेहना द्विक, त्रिक, चउक्क, पचयोगिक कहै

- छ द्विकसयोगिक ४ भागा कहै छै-
- १ अथवा एकेद्रिय मे ऊपजै वेइद्रिय मे ऊपजै
- २ अथवा एकेंद्रिय में ऊपजै तेइद्रिय में ऊपजै
- ३ अथवा एकेंद्रिय मे ऊपजै चउरिद्रिय मे ऊपजै।
- ४ अथवा एकेद्रिय मे ऊपजै पचेंद्रिय मे ऊपजै।

त्रिकसयोगिक ६ भागा कहै छै-

- १ अथवा एकेंद्री मे वेइद्रिय मे तेइद्रिय मे ऊपर्ज ।
- २ अथवा एकेद्रिय मे वेइद्रिय मे चर्डोरद्रिय मे ऊपजै।
- ३ अथवा एकेद्रिय मे वेइद्रिय मे पचेद्रिय मे ऊपजै।
- ४ अथवा एकेंद्रिय में तेइद्रिय में चर्जरिद्रिय में ऊपजै।
- प्र अथवा एकेद्रिय में तेइद्रिय में पचेद्रिय में ऊपजै।
- ६ अथवा एकेद्रिय मे चर्डीरद्रिय मे पचेद्रिय मे ऊपजै।

हिवै चउक्कसयोगिक ४ भागा कहै छै-

- १ तथा एकेंद्रिय मे वेइद्रिय मे तेइद्रिय मे चर्डारिद्रिय मे ।
- २ तथा एकेंद्रिय में वेइद्रिय में तेइद्रिय में पचेंद्रिय में ।
- ३. तथा एकेद्रिय मे वेइद्रिय मे चर्डोरद्रिय मे पचेंद्रिय मे।
- ४. तथा एकेद्रिय मे तेइद्रिय मे चउरिंद्रिय मे पचेद्रिय मे।

हिवै पचसयोगिक १ भागो कहै छै-

१. तथा एकेद्रिय मे, वेइद्रिय मे, तेइद्रिय मे, चर्डारद्रिय मे, पर्चेद्रिय मे ऊपजे।

इकसयोगिक-१

द्विकसयोगिक-४

त्रिकसयोगिक-६

चउक्कसयोगिक-४

पचसयोगिक-१

एव---१६

हिवै एकेद्रियादिक प्रवेशन नो अल्प-बहुत्व-तुल्य-विशेपाधिकपणा नु प्रवेशन कहै छै—

२६ \*हे प्रभु । एकेद्रिय प्रवेशन, जाव पचेद्री तिर्यच। तेह प्रवेशन नो कुण कुण थी, जाव विशेष सूसच?

3

\*लय: रुड़े चन्द नीहाल रे

- २६ अहवा एगिदिएसु वा वेइदिएसु वा होज्जा। एव जहा नेरइया चारिया तहा तिरिक्खजोणिया वि चारेयव्वा।
- २७ एगिदिया अमुयतेसु दुयासजोगो, तियासजोगो, चउनकसजोगो, पचसजोगो उवजुजिऊण भाणि-यञ्बो ....... (श० ६।१०५)
- २८ इह प्रक्रमे द्विकसयोगश्चतुर्द्धा त्रिकसयोग पोढा चतुष्कसयोगश्चतुर्द्धा पञ्चकसयोगस्त्वेक एवेति । (वृ० प० ४५१)

२६ एयस्म ण भते । एगिदियतिरिक्खजोणियपवेमणगस्स जाव पचिदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? ३० श्री जिन भाखे सर्व थी थोड़ा, पंचेद्रिय तियँच। तेह विषेज प्रवेशन उत्पत्ति, तास न्याय इम सच।।

सोरठा

- ३१. जीव पचेद्रिय जाण, थोडा छै ते कारणे। अल्प कह्या जगभाण, पचेद्रिय तिर्यच ए॥
- ३२. \*चर्डारद्रिय तिर्यच प्रवेशन, विशेष अधिक विचारी। तिरि पचेद्रिय थी चर्डारद्रिय, विशेषाधिक उचारी॥

## सोरठा

- ३३. तिरि-पचेद्रिय थीज, चर्डारेद्रिय विसेसाहिया। ते माटैज कहीज, प्रवेशन पिण विशेपाधिक॥
- -३४. \*तेइद्रिय तियँच प्रवेशन, विशेप अधिक कहेस। वेइद्रिय विशेपाधिक तेह्थी, विशेप एकेद्री प्रवेश।।
- ३५. मनुष्य प्रवेशन कतिविध हे प्रभु ! जिन कहै दोय प्रकार। समुच्छिम मनुष्य प्रवेशन, गर्भेज माहै विचार।।
- ३६. एक मनुष्य विषे हे प्रभुजी ! मनुष्य प्रवेशन करतो । संमुच्छिम सूं मनुष्य विषे ह्वं , के गर्भज सचरतो ?
- ३७ जिन कहै समुच्छिम मनुष्य विषे ह्वै, तथा गर्भेज मे होय। इक सयोगिक ए वे भागा, एक जीव नां जोय।। हिवै दोय जीव मनुष्य मे ऊपजै तेहनो प्रकन
- ३८ दोय मनुष्य प्रवेशन पुच्छा, जिन कहै सुण गगेय। वेहु समुच्छिम तथा गर्भज में, इक योगिक भग वेय।।
- ३६ अथवा एक समुच्छिम मनुष्ये, इक गर्भेज मे होय। इम अनुक्रम जिम नरक प्रवेशन, तेम मनुष्य पिण जोय।।
- ४० यावत दशही प्रवेशन भागा, पूर्वली पर भणवा। जीव थकी इक-इक ऊणा जे विकल्प किर भंग थुणवा।। मनुष्य मे ऊपजै तेहना द्विकसजीगिक ना विकल्प और भागा—दोय जीव मनुष्य मे ऊपजै तेहनो विकल्प एक, भागो एक कहै छैं—

१ १ ममुन्छिम मनुष्य मे, १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।

तीन जीव मनुष्य मे ऊपजै तेहना विकल्प २, भागा २

१. १ समुच्छिम मनुष्य मे, २ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
 २ २ समुच्छिम मनुष्य मे, १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।

च्यार जीव मनुष्य मे ऊपजै तेहना विकल्प ३, भांगा ३ १ १ ममुच्छिम मनुष्य मे, ३ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।

२. '२ समुन्छिम मनुष्य मे, २ गर्मेज मनुष्य मे ऊपजै।

\*लय : रूड़े चन्द नीहालें रे

३०. गगेया ! सञ्बयोवे पचिदियतिरिक्यजोणियपवेमणए,

३१. 'सन्वयोवा पर्चिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए' त्ति पञ्चेन्द्रियजीवाना स्तोकत्वादिति,

(वृ० प० ४५१,४५२)

३२. चर्डोरिदियतिरिक्खजोणियपवेमणए विसेसाहिए,

- ३४. तेइदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, वेइदिय-तिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, एगिदियतिरि-क्खजोणियपवेमणए विसेसाहिए। (श० ६।१०६)
- ३५. मणुस्सपवेमणए ण भते । कतिविहे पण्णत्ते ? गगेया ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा — समुच्छिममणुस्स-पवेसणए, गञ्मवक्कतियमणुस्सपवेसणए य । (श० १।१०७)
- ३६. एगे भते । मणुस्से मणुस्मपवेसणएण विवसमाणे कि समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा ? गव्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा ?
- ३७. गगेया । समुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गव्भवक्क-तियमणुस्सेसु वा होज्जा । (श० ६।१०८)
- ३८ दो भते । मणुस्सा—पुच्छा । गगेया । संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गव्भवक्क-तियमणुस्सेसु वा होज्जा ।
- ३६. अहवा एगे समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा एगे गव्भ-वक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, एव एएण कमेण जहा नेरइयपवेसणए तहा मणुस्सपवेसणए वि भाणियव्वे,

४० जाव दस । (ग० ६।१०६)

```
३ ३ समुच्छिम मनुष्य मे, १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
            पाच जीव मनुष्य मे ऊपजै तेहना विकल्प ४, भागा ४
१. १ सम्चिछम मन्ष्य मे, ४ गर्भेज मन्ष्य मे ऊपजै।
२ २ सम्बिछम मनुष्य मे, ३ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
३. ३ सम्बिछम मनुष्य मे, २ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
४. ४ समुन्छिम मनुष्य मे, १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
             छ जीव मनुष्य मे ऊपजै तेहना विकल्प ५, भागा ५
१ १ समुच्छिम मनुष्य मे, ५ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
२ २ समुर्चिछम मनुष्य मे, ४ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै ।
३ ३ समुच्छिम मनुष्य मे, ३ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
४ ४ समुच्छिम मनुष्य मे, २ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
५. ५ सम्चिछम मनुष्य मे, १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
            सात जीव मनुष्य में ऊपजै तेहना विकल्प ६, भागा ६
१. १ समुच्छिम मनुष्य मे, ६ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
२ २ समुच्छिम मनुष्य मे, ५ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
३ ३ समुन्छिम मनुष्य मे, ४ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै ।
४ ४ समुच्छिम मनुष्य मे ३ गर्भेज मनुष्य मे कपजै।
५ ५ समृच्छिम मन्ष्य मे २ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
६. ६ समुच्छिम मनुष्य मे १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
            अष्ट जीव मनुष्य मे ऊपजै तेहना विकल्प ७, भागा ७
१ १ सम्बिछम मनुष्य मे, ७ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै ।
२ २ समृच्छिम मनुष्य मे, ६ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
३. ३ सम्चिछम मनुष्य मे, ५ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
४ ४ सम्चिछम मनुष्य मे ४ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
५ ५ समुच्छिम मनुष्य मे, ३ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
६ ६ समूर्विष्ठम मनुष्य मे, २ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
७ ७ समुच्छिम मनुष्य मे, १ गर्भेन मनुष्य मे ऊपजै ।
            नव जीव मनुष्य मे ऊनजै तेहना विकलन ८, भागा ८
१ १ सम्चिछम मनुष्य मे, ५ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
२ २ समूच्छिम मनुष्य मे ७ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै ।
३ ३ समुच्छिम मनुष्य मे ६ गर्भेज मनुष्य मे उपजै।
४ ४ सम्च्छिम मनुष्य मे ५ गर्भेज मनुष्य मे ऊपनै।
५. ५ सम्चिल्म मनुष्य मे, ४ गर्भेज मनुष्य मे कपजै।
६. ६ सम्चिछम मनुष्य मे, ३ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
७ ७ समुच्छिम मनुष्य मे, २ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
८ ६ सम्च्छिम मनुष्य मे, १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
           दश जीव मनुष्य में ऊपजै तेहना विकल्य ६, भागा ६
१ १ सम्बिछम मनुष्य मे, ६ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
२. २ समुच्छिम मनुष्य में, द गर्भेज मनुष्य मे अपजै।
३ ३ समुच्छिम मनुष्य मे, ७ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै ।
४. ४ समुच्छिम मनुष्य मे, ६ गर्भेन मनुष्य मे ऊपजै ।
```

५ ५ समुन्छिम मनुष्य मे, ५ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।

M. 197. 6

- ६. ६ समुच्छिम मनुष्य में, ४ गर्भेज मनुष्य मे कपजै । ७ ७ संमुच्छिम मनुष्य मे, ३ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै। प्रमुच्छिम मनुष्य मे, २ गर्भेज मनुष्य मे कपजै । ६ ६ समृच्छिम मनुष्य मे, १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै। हिवै सख्यात जीव मनुष्य मे ऊपजै तेहना ११ विकल्प करि ११ भागा कह <del>ਹ</del>ੈ—
- ४१ सखेज मनुष्य प्रवेशन पूछा, जिन कहै मुण गगेय! समुच्छिम अथवा गर्भज मे, इक योगिक भग वेय ।। हिवै मत्यात जीवा रा द्विकस जोगिक १ भागो हुवै ते ११ विकल्प करि ११ भागा कहै है-
- ४२. अथवा एक समुच्छिम मनुष्ये, सख्याता गर्भेज। अथवा दोय समुच्छिम मनुप्ये, गिभज मे संयेज।।
- ४३ अथवा तीन समुच्छिम मनुष्ये, सत्याता गर्भेज। अथवा च्यार संमुच्छिम मनुष्ये, गर्भेज मे सखेज ॥
- ४४. अथवा पाच समुन्छिम मनुष्ये, सख्याता गर्भेज। अथवा पट समुच्छिम मनुष्य ह्वं, गिंभज में सखेज ॥
- ४५ अथवा सप्त समुच्छिम मनुष्ये, संख्याता गर्भेज। व्यथवा अप्ट समुच्छिम मनुप्ये, गर्भेज में संयेज।।
- ४६ अथवा नव समुच्छिम मनुष्य ह्वै, सख्याता गर्भेज। अथवा दण संमुच्छिम मनुष्ये, गर्भेज में सखेज।।
- ४७ तथा संखेज समुच्छिम मनुप्ये, गर्भेज मे सखेज।। इम इग्यारे विकल्प करिने, भग इग्यार भणेज।।

वा॰ -- इहा मन्यात जीव मनुष्य मे कपजै तेहना नारकी नी परै उग्यारै विकरप कह्या। अने असम्यात पद ने विषे पूर्वे नारकी ने विषे वारे विकरा कह्या । अने इहा मन्ष्य ने विषे असत्याता ऊपजै तेहना विन इग्यारे ईज विकल्प हुवै। जे भणी जो समुच्छिम मनुष्य ने गर्भेज मनुष्य ए विहु ने विषे असय्याता कपर्ज, जिंद बारमी विकरप हुवै ते उम नहीं जे ममुच्छिम मनुष्य नै विषे असस्याता कपजै, पिण इट्रा गर्भेज मनुष्य तो स्वरूप थकी पिण असत्याता नथी तो तेहने विषे असल्याता ऊपजै पिण नयी ते भणी असरपान पद ने विषे उग्यारै विकल्प देखाटवा ने अर्थे कहं छै —

- ४८. हे प्रभू <sup>।</sup> जीव असख मनुष्य मे, उपजै तेहनी पृच्छा । जिन कहै सर्व ममुच्छिम मनुष्ये, ए इकयोगिक इच्छा ॥ हिवै दिकमयोगिक ११ विकरन करि ११ भागा कहं छै-
- ४६ अथवा असख संमुच्छिम मनुष्ये, इक गर्भज मनु होय। अथवा असख समुच्छिम मनुष्ये, गर्भज मनु मे दोय ॥
- ५० एव जाव असख समुच्छिम, मनुष्य विषे अवधार। गर्भज मनुष्य विषे मख्याता, ए विकल्प भंग ग्यार॥ असरयाता जीव मनुष्य मे ऊपजै तेहना विकल्प ११, भागा ११
- १ असरवाता समृच्छिम मनुष्य मे, १ गर्भेज मनुष्य मे ऊपजै।
- २ असंन्याता ममुच्छिम मनुष्य मे, २ गर्भेज मनुष्य में ऊपर्ज ।

- ४१ मखेजजा भते ! मणुम्या--पुच्छा । गगेया । समुच्छिममणुम्मेसु वा होज्जा, गब्भवक्क-तियमण्म्मेमु वा होज्जा।
- ४२ अहवा एगे समुच्छिममणुस्मेमु होज्जा मखेज्जा गटम-वरकतियमणुरमेमु होज्जा, अहवा दो समुच्छिममणु-स्मेमु होज्जा मखेज्जा गव्मवत्रकृतियमणुम्मेमु होज्जा, ४३-४७ एव एउकेनक उम्मारितेमु जाव अहवा मधेज्जा समुच्छिममण्स्मेनु होज्जा सखेजजा गटमवनकतिय-मणुस्मेमु होज्जा । (ग० ६।११०)

'संखेजें' त्यादि, इह द्विष्योगे पूर्ववदेकादश विष्ठत्या अमायानपदे तु पूर्व द्वादण विकल्पा उक्ता डर् पुनरेकादरीय, यतो यदि समूच्छिमपु चामन्यातत्व स्वात्तदा द्वादनोऽपि विकल्यो भवेत्, न चैव, इह गर्भजमनुष्याणा स्वरूपतोऽष्यमस्याना-नामभावेन तत्त्रवेधनकेऽसन्यानासम्भवाद्, अतोऽ-मन्यानपढेऽपि विकर रैकादशकदर्गनायाह--

(वृ० प० ४५३)

- ४८. असरोज्जा भते ! मणुस्मा —पुच्छा । गगंत्रा । मध्वे वि ताव समृच्छिममणुम्मेमु होज्जा ।
- ४६ अहवा असनेजजा समृच्छिममणुस्नेमु एगे गटमवनक-तियमण्म्मेसु होज्जा, अहवा असलेज्जा समुच्छिम-मणुम्नेमु दो गटमवक्कतियमणुस्नेमु होज्जा,
- ५० एव जाव असरेवज्जा समुच्छिममणुस्मेमु होज्जा मखेज्जा गटभवनकतियमणुस्तेमु होज्जा।

(श० ह।१११)

- ३. असरयाता समुच्छिम मनुष्य मे, ३ गर्भेज मनुष्य मे कपजै।
- ४ असक्याता समुच्छिम मनुष्य मे, ४ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै।
- ५. असम्याता समुच्छिम मनुष्य मे, ५ गर्भेज मनुष्य में ऊपजी।
- ६. असर्याता समुच्छिम मनुष्य में, ६ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै।
- ७ असल्याता ममुच्छिम मनुष्य में, ७ गर्भेज मनुष्य में ऊपजै।
- असम्याता समुच्छिम मनुद्य मे, द गर्भेज मनुष्य में ऊपजै।
- ६ असल्याता समुच्छिम मनुष्य में, ६ गर्मेज मनुष्य में कपजे ।
- १०. असच्याता ममुच्छिम मनुष्य मे, १० गर्भेज मनुष्य में ऊपजे ।
- ११ असरवाता समुच्छिम मनुष्य में, सख्याता गर्मेज मनुष्य में ऊपजै । हिवै उत्कृष्ट पदे मनुष्य में ऊपजै ते कहै छै-
  - ५१. मनुष्य विषे उत्कृष्ट पदे प्रभु । ऊपजे तेहनी पृच्छा। जिन कहै सर्व समुच्छिम मनुष्ये, ए इक योगिक इच्छा।।
- चा॰ —समुच्छिम मनुष्य असम्याता हुवै प्रवेशन पिण असस्याता नो हुवै ते भणी मनुष्य प्रवेशन उत्कृष्ट पदे ते समुच्छिम मनुष्य नै विषे सर्व पिण हुवै । हिवै द्विकसयोगिक १ भागों कहै छै—
- ५२. अथवा समुच्छिम मनुष्य विषे ह्वं, गर्भेज मे पिण होय। द्विकसयोगिक ए इक भगो, श्री जिन वचने जोय।।
- ५३. प्रभु । समुच्छिम मनुष्य प्रवेशन, गर्भज मनुष्य प्रवेशन ।
  कुण-कुण जोव विशेषाधिक छै, हिवै उत्तर दे श्री जिन ॥
- पू४ सर्व थकी थोडा गंगेया! गर्भज मनुष्य प्रवेशन। समुच्छिम मनुष्य प्रवेशन, असखेज गुणा प्रापन्न॥
- ५५ नवम शतक नो देश वतीसम, ढाल सी एकाणू विमासी। भिक्षु भारोमाल ऋपिराय प्रसादे, 'जय-जश' आनद थासी।।

- ५१. उक्कोमा भते । मणुम्मा—पुच्छा।
  गोया । नव्वे वि ताव समुन्छिममणुम्मेमु होज्जा।
  वा०—मंमूच्छिमानामसर्यानाना भावेन प्रविदान.मणसन्याताना सम्भवस्ततस्य मनुष्वप्रवेशनक प्रत्युत्कृष्टपदिनस्तेषु सर्वेऽपि भवति । (वृ० प० ४५३)
- ५२ अहवा समुच्छिममणुस्सेमु य गव्भवनकतियमणुम्सेमु य होज्जा। (ण० ६।११२)
- ५३. एयस्स ण भते । समुन्धिनमण्म्मपवेमणगम्म गर्धन-यक्कतियमण्स्मपवेमणगम्म य कयरे कयरेहिनो अपा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विमेमाहिया वा ?
- ५४ गगेया । सन्वत्योवे गन्भवत्ततियमणुम्मपवेमणण समुन्धिममणुम्सपवेमणए असरोज्जगुणे ।

(भ० ६।११३)

ढाल: १६२

## •दूहा

- १. देव प्रवेशन हे प्रभु । आख्यो किते प्रकार ? जिन कहै गोया । सुणे, चिउविध कह्यो उदार ॥
- २. प्रथम भवनवासी कत्यो, देव प्रवेशन देख। यावत वंगानीक तुर्य, अमर-प्रवेशन पेखा।
- ३. हे भदत । इक जीव ते, देव प्रवेश करत। स्यू हो भवनपति विषे, जाव वैमानिक हुत ?
- ४. जिन हर्ह भयनपति विषे, अथवा व्यतर धार। जोतिषि वैमानिक तथा, इकसयोगिक च्यार॥

- १ देवपवेसणए ण भते ! फतिबिहे पण्याने ? गगेथा ! चउच्चिहं पण्यात्ते,
- २ त जहा भवणवानिदेवप्येमणए जान वेमाणियदेव-पवेमणए । (श॰ ६१११४)
- ३ एगे भते । देवे देवत्येमणएण पित्रमाणे ति भवणः वासीमु होज्ञा । वाणमतर-जोडीसप-येगाणिएमु होज्ञा ?
- ४. गगेवा । भवणवासीमु वा होण्या, वारामगर-तेष-मिय-वेमारिएमु वा होण्या । (१० ८१११४)

शंव ६, ७० ३२, वान १६१,१६२ ११७

# \*प्रश्न करै गंगेय जी ॥ [ध्रुपदं]

- ५. जीव दोय भगवंत जी ! देव प्रवेशन करता जी काइ। स्य हवे भवनपति विषे, जाव वैमानिक वरता जी कांइ?
- ६. जिन कहै भवनपति विहु, अथवा न्यतर मझारो जी काइ। जोतिपी वैमानिक तथा, इक संयोगिक च्यारो जी काइ। [जिन कहै गोया! सुणे]
- ७ अथवा एक भवनपति, इक व्यंतर मे होयो। तिरिक्ख प्रवेशन जिम कह्यो, तिम सुर भणवा जोयो॥
- द. जाव असंख्याता लगै, हिवै उत्कृष्ट पद पृच्छा। जिन कहै जोतिपि ह्वै सहु, ए इकयोगिक इच्छा।।

चा० — जोतिपी नै विषे जाणहार घणां ते माटै उत्कृष्ट पद ना घणी देव प्रवेशनवत सगनाई हुवै।

- श्यवा जोतिपी ने विपे, भवनपित मे होयो।
   अथवा जोतिपी ने विपे, वाणव्यतर मे जोयो।।
- १० अथवा जोतीपी नै विपे, वैमानिक मे जोयो। दिक्सजोगिक आखिया, ए त्रिहुं भागा ताह्यो॥
- ११. अथवा जोतिपी नै विषे, भवनपति मे होयो। वाणव्यतर मे ह्वं विल, ए धुर भांगो जोयो।।
- १२. अयवा जोतिपी ने विपे, भवनपति रै माह्यो। वैमानिक में ह्वे विलि, द्वितीय भग कहिवायो॥
- १३. अथवा जोतिपी नै विषे, वाणमतर रै मांह्यो। वैमानिक मे ह्वै वली, तृतीय भग एपायो॥
- १४. अयवा जोतिपी नै विषे, भवनपति मे पेखो। व्यंतर वैमानिक विषे, चउक्कसयोगिक एको।।
- १५ भवनपित व्यंतर प्रभु! जोतिपी देव प्रवेशो। विल प्रवेश वैमानिके, कुण-कुण जाव विशेषो ?
- १६. जिन कहै थोड़ा सर्व थी, वैमानिक सुप्रवेशो।
  भवनपति मे प्रवेश ते, असखेजगुण एसो।।
  १७ वाणमंतर में प्रवेशनं, असंख्यातगुण जाणी।
  जोतिपी देव-प्रवेशन, सख्यात-गुणा पहिछाणी।।

वाणमतर मे प्रवेशन, असंख्यात गुण जाणी । ज्योतियी देव प्रवेशनं, असंख्यात गुणा पहिछाणी ।।

यहां जोड़ की मूल प्रति तथा उसकी प्रतिलिपि वाली प्रतियो में 'अमख्यात गुणा' लिखा हुआ है। किन्तु अगसुत्ताणि भाग २, जो आगम-सम्पादन की श्रुखला

- ४. दो भते । देवा देवपवेसणएण-पुच्छा ।
- इ. गगेया । भवणवामीमु वा होज्जा, वाणमतर-जोड-सिय-वेमाणिएसु वा होज्जा ।
- अहवा एगे भवणवामीयु एगे वाणमतरेयु होज्जा, एवं जहा तिरिक्चजोणियपवेसणए तहा देवपवेमणए वि भाणियव्ये ।
- जाव अससेज ति । (श० ६।११६) जनकोमा भते ! पुच्छा ।
  गगेया ! मच्चे वि ताव जोडिमिएमु होज्जा,
  वा० ज्योतिष्कगामिनो बहव डित तेपूत्कृष्टपिनो
  देवप्रवेशनकवन्त मर्वेऽपि भवन्तीति (वृ० प० ४५३)
- अहवा जोइसिय-भवणवासीमु य होज्जा, अहवा जोइ-सिय वाणमंतरेमु य होज्जा,
- १०. अहवा जोडिमय-वेमाणिएमु य होज्जा,
- अहवा जोडिनिएनु य भवणवामीसु य वाणमतरेनु य होज्जा,
- १२. अहवा जोडिमएमु य भवणवामीमु य वेमाणिएमु य होज्जा,
- १३ अहवा जोइसिएमु य वाणमतरेमु य वेमाणिएसु य होज्जा,
- १४. अहवा जोडसिएमु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिएमु य होज्जा। (ग० ६।११७)
- १५. एयस्म ण भते । भवणवानिदेवनवेमणगस्म, वाण-मतरदेवपवेमणगस्स, जोइसियदेवपवेमणगस्स, वेमा-णियदेवपवेमणगस्स य कयरे कयरेहितो जाव (स॰ पा॰) विमेमाहिया वा ?
- १६ गगेया । सञ्बत्योवे वेमाणियदेवपवेमणए, भवण-वागिदेवपवेसणए असत्वेज्जगुणे,
- १७. वाणमतरदेवपवेमणए असक्षेजजगुणे, जोइसियदेवपवे-सणए सक्षेजजगुणे । (श० ६।११८)

<sup>\*</sup>लय: कुगल देश सुहामणी

भगवृती की जोड ढाल १६२ गाया १७ में व्यन्तर एवं ज्योतिषि देवों में जीव के प्रवेश का वर्णन करते हुए लिखा गया है—

## सोरठा

१८. वैमानिक मे जान, जावणहारा अल्प छै। तथा अल्प ते स्थान, ते कारण थोड़ा कह्या।। हिवै च्यार गति मे प्रवेशन नो अल्पवहुत्व कहै छै—

दूहा

- १६. ए प्रभु । नरक-प्रवेशनं, तियँच मनुष्य प्रवेशो । देव-प्रवेशन ने विषे, कुण-कुण जाव विशेषो ?
- २०. जिन कहै थोड़ा सर्व थी, मनुष्य-प्रवेशनवतो । मनुष्य क्षेत्र में इजं हुवै, ते भणी अल्प कहतो।।
- २१. तेहथी नरक-प्रवेशन, असंखेजगुण आख्या। नरक गमन करै तिके, नर ते असखगुणा भाख्या।।
- २२ तेहथी देव-प्रवेशन, असखेजगुण जाणी। तिरि-प्रवेशन तेह थी, असखगुणा पहिछाणी।।

#### सोरठा

- २३ तियंच गति रै माय, नरक मनुष्य सुर थी हुवै। असखगुणो इण न्याय, विजातिया नुप्रवेशनं॥
- दूहा
  २४. पूर्व प्रवेशन आखियो, ते तो छै उत्पाद।
  विल उद्वर्त्तन रूप है, तसु सवध इम लाध।।
  २५. नरकादिक नां ते विहुं, उत्पत उद्वर्त्तन।
  अतर-सहित रहितपणे, कीजै तेहिज प्रश्न।।
- \*२६. नारक हे भगवत जी । उपजे अतर-सहीतो। कै नारक ना नेरइया, उपजे अतर-रहीतो?
- २७ असुर अतर-सहित ऊपजै, उपजै अतर-रहीतो। जाव वैमानिक ऊपजै, अतर-रहित-सहीतो?

मे सम्पादित होकर 'जैन विषव भारती' द्वारा प्रकाशित हुआ है, के शतक ६ सूत्र ११८ मे 'सखेज्जगुणा' पाठ है। मूल पाठ के इस अन्तर ने एक सन्देह खडा कर दिया। उसके निराकरण हेतु भगवती सूत्र की प्रतियो का निरीक्षण किया। प्राचीन प्रतियो मे 'सखेज्जगुणा' पाठ मिला। तव हमने 'हेमभगवती' को देखा। यह भगवती सूत्र की वह प्रति है जिसके आधार पर जयाचार्य ने 'जोड' की रचना की थी, जो जयाचार्य के विद्यागुरु मुनि हेमराजजी के लिए स्वय जयाचार्य (मुनि अवस्था) एव मुनि सतीदासजी द्वारा लिखित है।

'हेम भगवती' के मूल पाठ में 'असबेज्जगुणा' पाठ लिखकर 'अकार' को दो रेखाओ द्वारा चिह्नित किया गया है, पर उसके अर्थ में असख्यातगुणा ही लिखा हुआ है। इमसे यह सिद्ध होता है कि सखेज्जगुणा' की बात समझ में आ गई थी, किन्तु अर्थ लिखते समय वह विस्मृत हो गई। जोड की रचना करते समय अर्थ की बात ही ध्यान में रहने से असख्यातगुणा हो गया। जोड के सम्पादन काल में अगसुत्ताणि तथा हेमभगवती को आधार मानकर यहां सख्यातगुणा किया गया है।

- १८. 'सन्वथोवे वेमाणियदेवप्पवेसणए' ति तद्गामिनां तत्स्थानानां चाल्पत्वादिति । (वृ० प० ४५३)
- १६. एयस्स ण भते । नेरइयपवेमणगस्स तिरिक्खजोणिय-पवेसणस्स मणुस्सपवेसणगस्स देवपवेसणगस्स य कथरे कथरेहिंतो जाव (स॰ पा॰) विसेसाहिया वा ?
- २०. गगेया । सन्वत्योवे मणुस्सपवेसणए, मनुष्यक्षेत्र एव तस्य भावात्, तस्य च स्तोकत्वात्, (वृ० प० ४५३)
- २१. नेरइयपवेसणए असखेज्जगुणे, तद्गामिनामसङ्ख्यातगुणत्वात्, (वृ० प० ४५३)
- २२. देवपवेसणए असखेज्जगुणे. तिरिक्खजोणियपवेसणए असखेज्जगुणे। (श० ६।११६)

- २४,२५ अनन्तर प्रवेशनकमुक्त तत्पुनरुत्पादोद्वर्त्तनारूप-मिति नारकादीनामुत्पादमुद्वर्त्तना च सान्तरनिरन्तरतया निरूपयन्नाह— (वृ० प० ४५३)
- २६ सतर भते । नेरइया अववज्जति निरतर नेरइया अववज्जति
- २७ सतर असुरकुमारा उववज्जितिः निरतर असुरकुमारा उववज्जित जाव सतर वेमाणिया उववज्जित निरतर वेमाणिया उववज्जित निरतर

<sup>\*</sup>लय: कुशल देश सुहामणी

- २८. नार्राक संतरे नीकलै, नीकलै अतर-रहीतो। यावत व्यतर नीकलै, अतर-रहित-सहीतो?
- २६. जोतिषि नै वैमानिया, अतर-सहित चवंतो। तथा निरतर ते चवै ? ए प्रवन समूह पूछतो॥
- ३०. जिन कहै नारिक ऊपजै, अतर-सहित-रहीतो। इमहिज भवनपित दशू, उपजै तेह वदीतो।।
- ३१ सातर पृथ्वी न ऊपजै, उपजै अतर-रहीतो। एवं जावत वणस्सई, शेप नरक जिम कहोतो।।
- ३२ अंतर-सहित पिण नेरइया, नोकले छै किणवारो। अतर-रहित पिण नीकलै, इम जाव यणियक्मारो॥
- ३३. सांतर पृथ्वी न नीकलै, नीकलै अतर-रहिता। एव जाव वनस्पति, शेप नरक जिम कहितो॥
- ३४ णवर जोतिषि विमाणिया, चयति इहविध कहितो । यावत वैमानिक चवै, अंतर-सहित रु रहितो ॥

## सोरठा

- ३५ हिव नारकादि प्रपन्न, अन्य प्रकार करी तसु। उत्पत्ति उद्दर्तन, कहियै छै ते साभलो।।
- ३६. 'प्रमु । छना नेरइया ऊपजै, अछता ऊपजै तेहो ? जिन कहै छताज ऊपजै, अछता नहीं उपजेहो ॥

वा—छना ते विद्यमान द्रव्यार्थपणे करी, पिण सर्वथा अछतो काइ न कपजै अछतापणा थकीज खरश्रुग नी परें। जे माटे विद्यमानपणो तो तेहनां जीव द्रव्य नी अपेक्षा करी अथवा नारक पर्याय नी अपेक्षा करी। तिण प्रकार करिके हीज भावी नारक पर्याय नी अपेक्षाए द्रव्य थी नेरइया छता नेरइएपणे ऊपजै अयदा नरक ना आउखा ना उदय यकी भाव नेरइया हीज नेरइयापणें करी ऊपजै।

भाव नेरङया किणनै कहियै ? उत्तर—जे नरक नो आउखो भोगवै ते भाव नेरङया कहियै । अन्तराल गति ने विषे वर्त्तमान इत्यर्थ ।

अथवा सतो कहिता विभिवित ना परिणाम थी छता नै विषे ते पूर्व ऊपना नै विषे अनेरा ऊपजै पिण अछता नै विषे न ऊपजै लोक नै णाश्वतपणै करी मदाकाल हीज सद्भाव थी।

३७ एव जाव विमाणिया, छता ऊपजै सोयो। पिण अछता वैमाणिक तणो, ऊपजवू नहि होयो।। ३८. प्रभु । छता नेरइया नीकले, के अछता निकलै त्याही? जिन कहै छताज नीकलै, अछता नीकलै नाही।।

\*लय: फुशल देश सुहामणी

- २८. सतर नेरइया उन्बट्टीत निरतर नेरडया उन्बट्टीत जाव मंतर वाणमंतरा उन्बट्टीत निरतरं वाणमतरा उन्बट्टीत ?
- २६. सतर जोडसिया चयति निरतर जोडसिया चयति सतर वेमाणिया चयति निरतर वेमाणिया चयति ?
- ' ३०. गगेया ! सतर पि नेरज्ञ्या उववज्जित निरतर पि नेरज्ञ्या उववज्जिति जाव सतर पि थणियकुमारा उववज्जिति निरतर पि थणियकुमारा उववज्जित,
  - ३१. नो सतर पुढिविक्जाइया उववज्जित निरतरं पुढ विक्काइया उववज्जित, एव जाव वणस्सइकाइया सेमा जहा नेरडया जाव सनरं पि वेमाणिया उववज्जिति निरतर पि वेमाणिया उववज्जित।
  - ३२. सतर पि नेरज्या उब्बट्टित निरतर पि नेरडया उब्बट्टिन, एव जाव श्रीणयकुमारा ।
  - ३३ नो सतरं पुढविकाइया उब्बट्टिन निरतर पुढिव-क्काडया उब्बट्टिति, एव जाव वणस्मइकाइया । सेसा जहा नेरइया,
  - ३४. नवर जोडिमय-वेमाणिया चयित अभिनावो जाय सतर पि वेमाणिया चयिति निरतरं पि वेमाणिया चयित । (श०६/१२०)
  - ३५ अथ नारकादीनामेव प्रकारान्तरेणोत्पादोद्वर्त्तने निरूपयन्नाह — (वृ० प० ४५५)
  - ३६. सतो भते । नेरडया उब्बज्जित ? असतो नेरइया उववज्जित ? गगेया ! मतो नेरइया उववज्जित, नो असतो नेरइया उववज्जित ।

वा॰—'मन्त' विद्यमाना द्रव्यार्थतया, निह मर्वथै-वासत् किञ्चिदुत्पद्यते, अमत्त्वादेव खरविपाणवत्, मत्व च तेपा जीवद्रव्यापेक्षया नारकपर्यायापेक्षया वा, तथाहि—भाविनारकपर्यायापेक्षया द्रव्यतो नारका मन्तो नारका उत्पद्यन्ते, नारकायुष्कोदयाद्वा भाव-नारका नारकत्वेनोत्पद्यन्त इति।

(वृ० प० ४५५)

अथवा 'मओ' त्ति विभक्तिपरिणामात् मत्सु प्रागुत्पन्ने-प्वन्ये समुद्यद्यन्ते नामत्मु, लोकस्य गारवनत्वेन नारकादीना सर्वदैव सद्भावादिनि ।

(ৰূ০ ৭০ ४५५)

३७ एव जाव वेमाणिया।

3 द सतो भते । नेरडया उच्चट्टित ? असतो नेरइया उच्चट्टित ? गगेया । सतो नेरइया उच्चट्टित, नो असतो नेरइया उच्चट्टित ।

- ३६ एवं जाव विमाणिया, णवर विशेष लहित्। जोतिषी वैमानिक विषे, चयति पाठज कहित्।।
- ४०. प्रभु । छता नेरइया उपजै, कै अछता उपजतो । छता असुर जे ऊपजे, जाव वैमानिक हुतो ?
- ४१ छता नेरडया नीकलैं, के अछता नीकलतो। छता अमुर जे नीकलैं, जाव वैमानिक चयतो ?
- ४२. जिन कहै गगेया मुणे, छता नारक उपजतो। पिण अछता नहि ऊपजे, इम जाव वैमानिक हुतो।।
- ४३ छता नेरइया नीकलै, अछता नीकलै नाही। जाव छता वैमानिक चवै, अछता न चवै नयाही।।

#### सोरठा

- ४४. नरक प्रमुख सुविशेष, उत्पादन उद्दर्सन। सातर आदि प्रवेश, पूर्व निरूपण ते कियो।। ४५ विल निरूपण तास, करिवा नो कारण किसु। तसु उत्तर इम भास, वृत्ति विषे इम आखियो॥ ४६. पूर्व नारक आदि, जुदो-जुदो उत्पाद नो। दाख्यो सातरत्वादि, तिमहिज उद्दर्सन तणु॥ ४७. इहा विल नारक आद, सर्व जीव भेदा तणो। उद्दर्सन उत्पाद, आख्यो है समुदाय थी॥
- ४= \*िकण अर्थे प्रभु । इम कह्यो, छता नारक उपजंतो । विण अछता नहि ऊपजं, जाव वैमानिक चयतो ?
- ४६. जिन कहै गगेया । मुणे, पुरिसादाणीय पासो। पुरिस विषे आदानीय, अरहा अर्हन जासो। ५०. सास्वतो लोक कह्यो जिणे, आदि अत करि रहितो। जिम पंचम णत नै विषे, नवम उदेशे कहिनो।। ५१ यावत जे प्रवलोकियै, लोक तिको इज लिवयै। तिण अर्थे गगेय। कह्य, छता वैमानिक चिवयै।

#### सोरठा

५२ पार्श्व अर्हत तेह, शाब्वत लोकज आखियो। ते शाख्वत भावेह, छता नारका ऊपजे॥ ५३ अथवा छता गहेह, पूर्व ऊपना तेह विषे। अन्य नारक ऊपजेह, इमहिज निकलै चवनकह्यु॥

V.

- ३६ एवं जाव वेमाणिया, नवर---जोइमिय-वेमाणिएसु वयित भाणियन्व ।
  - (अगसुत्ताणि भा.२ पृ० ४२८)
- ४०. सतो भते । नेरइया उववज्जति, असतोने रइया उववज्जति, मतो असुरकुमारा उववज्जति जाव मतो वेमाणिया उववज्जति, असतो वेमाणिया उववज्जति ?
- ४१ मनो नेरडया उव्वट्टित, असतो नेरडया उव्वट्टित, सतो असुरकुमारा उव्वट्टित जाव मतो वेमाणिया चयित, अमतो वेमाणिया चयित ?
- ४२ गगेया । सतो नेरइया उववज्जति, नो अमतो नेरइया उववज्जति, जाव सतो वेमाणिया उववज्जति, नो अमतो वेमाणिया उववज्जति,
- ४३. सतो नेरइया उव्बट्टित, नो अमतो नेरइया उव्बट्टित जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति । (श० ६।१२१)
- ४४,४५. अथ नारकादीनामुत्पादादे मान्तरादित्व प्रवेशन-कात्पूर्व निरूपितमेवेति कि पुनस्तन्निरूप्यते ? इति, अयोच्यते, (वृ० प० ४५५)
- ४६ पूर्व नारकादीना प्रत्येकमुत्यादस्य सान्तरत्वादि निरुपित, ततक्व तथैवोद्वर्त्तनाया, (वृ०प०४५५)
- ४७. इह तु पुनर्नारकादिमवं जीवभेदाना ममुदायत समुदितयोरेव चोत्पादोद्वत्तंयोस्तन्निरूप्यत इति ।,
- (वृ० प० ४५५)
  ४८ से केणट्ठेण भते। एव वृच्चइ सनो नेरइया
  उथवज्जति, नो अमतो नेरइया उववज्जिति जाव
  सतो वेमाणिया चयति, नो अमतो वेमाणिया
  चयति ?
- ४६ से नूण भे गगेया । पानेण अन्ह पुनिसादाणीएण
- ५०,५१ मानए लोए बुउए अणादीए अणादको जहा पचम-नए (सू० २५५) जाव (म० पा०) जे लोउनइ से लोए। से तेणट्ठेण गोवा । एव बुच्नउ—जाव गतो वेमाणिया चयति, नो असतो नेमाणिया नयित । (श० ६।१२२)
- ४२,४३ यत पादर्नेनार्ह्ता शाध्यती गोक उक्तोऽनी लोकस्य शाय्वतत्वात्सन्त एव सत्स्वेय वा नारकादय उत्सवन्ते स्वयन्ते चेति साध्येयोज्यन उति । (वृ० प० ४५४)

<sup>\*</sup>लय · गुराल देश गुहामणो

- ५४. पार्के तणो जे नाम, महावीर देवे कह्यं। स्व मत पुष्टज पाम, वृत्ति विषे इम आखियो॥
- ५५. \*शत नवम वतीसम देश ए, ढाल इकसी वाणुमी विमासी । भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी, 'जय-जश' आनंद थासी ।।

५४. 'में णूर्ण भते ! गगेया' उत्पादि, अनेन च नित्महा-न्तेनैय स्त्रमत पोपित, (वृ० प० ४५५)

ढाल: १६३

#### दूहा

- १ हिवै गगेय भगवत नी ज्ञान संपदा जेह। चितवतोज थको सही, विकल्प करत वदेह।। † प्रभु नी ज्ञान संपदा केरी।
- २. स्वयं आपणपै इज प्रभूजी, चिह्न विना ए जाणो। अथवा चिह्न थकी ए वस्तु, जाणो आप प्रमाणो।। कीमत करतो छतो गगेयो प्रश्न पूछै छै फेरी।। (ध्रुपदं)
- ३ अणमुणियो आगम विण ए इम, जाणो आप प्रभूजी ! तथा अन्य वच साभल जाणो, आगम श्रुत करि वूझी ॥
- ४ जिन भाखें सांभल गंगेया! निज ज्ञाने करि जाणू। चिह्न विना ए सर्व पिछाण्ं, चिह्न थकी नहिं माणूं॥
- प्. अणमुणिया आगम श्रुत विण हूं, इम जाणू गगेया! अन्य पुरुप नां मुख थी साभल, आगम थकी न जेया।।
- ६. छता नेरइया उपजै पिण ए, अछता उपजै नाही। जाव वैमानिक छता चवै छै, अछता न चवै क्याही।।
- ७ हे भदत । किण अर्थे ए, इम भाखो आप प्रभूजी ! जाव वैमानिक अछता न चवै ? इम गगेये बूझी ॥
- मान-सिंहन' पिण वस्तू जाणे, मान-रिहत' पिण जाणे।
- ह. दक्षिण दिशा मे पिण इम जाणे, जिम कह्य शब्द उद्देशे। पचम शत नो तुर्य भलायो, वारू रीत विशेषे॥
- १०. जाव निरावरण ज्ञान केविल नों, तिण अर्थे इम कहिये। निमहिज जाव वैमानिक अछता, चवै नही इम लहिये।

- १. अय गाङ्गेयो भगवतोऽतिणायिनी ज्ञानसम्पदं सम्भाव-यन् विकल्पयन्नाह— (वृ० प० ४५५)
- २. मय भते । एतेव जाणह, उदाहु असय, 'मय भते' इत्यादि, स्वयभात्मना निष्ट्वानपेक्षमित्यर्थः 'एव' ति वदयमाणप्रकार वस्तु 'असय' ति अस्वय परनो लिङ्गतः इत्यर्थः, (वृ० प० ४५५)
- असोच्चा एतेवं जाणह उदाहु सोच्चा—
   'असोच्च' ति अश्रुत्प्राऽज्ञामानपेदाम् 'एतेव' ति एतदेविमत्यर्थं., 'मोच्च' ति पुरुपान्तरवचनं श्रुत्वाऽऽ-गमत इत्ययं:
   (वृ० प० ४५४)
- ४ गगेया । मयं एतेयं जाणामि, नो असय,
- ५. असोच्चा एतेवं जाणामि, नो मोच्चा-
- ६ मतो नेरइया उववज्जिति, नो अमतो नेरइया उवव-ज्जित जाव सतो वेमाणिया चयित, नो अमतो वेमा-णिया चयिति । (१० ६।१२३)
- ७. में केणट्ठेण भते । एव वुच्चइ—त चेव जाव (म॰ पा॰) नो अमतो वेमाणिया चयति ?
- नगया किवली ण पुरित्यमे ण मिय पि जाणइ,
   अमिय पि जाणइ।
- दाहिणे ण एव जहा सद्दुद्देमए (४।६४-६७)
- १०. जाव (म० पा०) निव्वुडे नाणे केविनस्म । ने तेण-ट्ठेण गगेया ! एव वृच्चइ—सय एतेव जाणामि, नो असय, अमोच्चा एतेव जाणामि, नो मोच्चा—त चेव जाव नो असतो वेमाणिया चयति । (श० ६।१२४)

<sup>\*</sup>लय: कुशल देश सुहामणी।

<sup>†</sup>लय कहो नी किम करि आवूजी

१ परिमाणवत् गर्भेज मनुष्य जीव द्रव्यादिक मख्याता ।

२. वनस्पति पृथिन्यादिक जीव अनता वा असल्याता ।

- ११. हे भगवंत! नारकी नरके, पोतेइज उपजै छै। कै पोते नींह उपजै, पर ना वण थी नरक पढै छै?
- १२. जिन भाखै पोतै इज नारिक, नरक विषे उपजै छे। पिण पर ना वण थकी नारकी, नरके नांहि पडै छै।।

१३. किण अर्थे भगवत । इम भाख्यो, जिन कहै सुण गगेया !

- निज कृत कर्म उदय करि जतु, स्वय नरक उपजेया।।

  वा॰—जिम कोई कहै छै— ए जीवात्मा नै सुख-दुख उपजे ते ईश्वर नो
  प्रेरधो स्त्रगं मे जाय छै तथा नरक मे जाय छै। पिण पोता नै वण जातो नथी,
  परवश जाय छै। तेहनो मत खडन की घो, एतलै ईश्वर सुख-दुख नो कर्त्ता
  नथी।
  - १४. कर्मगुरू ते महत कर्म करि, कर्मभार करि जाणी। कर्मगुरूसभारपणे करि, अति प्रकर्ष पिछाणी।।
  - १५ ए तीनूइं पुन्य कर्म नी, अपेक्षाय पिण विदयै। तिण कारण आगल इम अखियै, अशुभ कर्म ने उदियै।।
  - १६. उदय प्रदेश थकी पिण ह्वं ते, तिण कारण इम किह्यै। अशुभ कर्म ना विपाक करिके, बंध्यो अनुभव लिह्यै।।
  - १७ ते तो मंद थकी पिण ह्वं छै, तिण कारण इम कहै छै। अशुभ कर्म फल विपाक करिके, स्वय नरक उपजे छै।।
  - १८. तिण अर्थे ? करिनै गगेया । इम आख्यो अवलोई। पोतै नारकी नरक उपजै, परवश पडें न कोई।।
  - १६. हे प्रभु । पोतै असुर ऊपजै, कै परवण उपजै त्याही। जिन कहै असुर ऊपजै पोतै, परवण उपजै नाही।।
  - २०. ते किण अर्थे । तव जिन भाखै, कर्म उदै करि जाणी। कर्म-विगम ते अणुभ कर्म नी, विगम-स्थिति पहिछाणी।।
  - २१. कर्म-विसोहि ते रस आश्री, कर्म-विशुद्धी जेहना।। कर्म प्रदेश अपेक्षा ए वच, तथा अर्थ इम एहना।।
  - २२. शुभ कर्म उदय वलि, शुभ कर्म विपाक करीने लहिये। पुन्य कर्म फल विपाक करिके, स्वय असुर ऊपिजये॥
  - २३. तिण अर्थे करि असुरपणे, पोर्नेज उपर्ज ज्याही। एवं यावत धणियकुमारा, परवण उपर्ज नाही॥
  - २४. हे प्रमु! पुढवी उपजे पोते, कै परवण उपजे छै ? जिन कहै पृथ्वी उपजे पोते, परवण नाहि पड़े छै।।

- ११ सय भंते ! नेरह्या नेरहएसु उववज्जंति ? अमयं नेरह्या नेरहएसु उववज्जति ?
- १२. गगेया । सय नेरइया नेरइएसु उबवज्जंति, नो अमय नेरइया नेरइएसु उववज्जति । (१० ६।१२५)
- १३ मे केणट्ठेण भते । एव चुच्चइ— गगेया ।

  कम्मोदएण,

  चा० यथा कैश्चिदुच्यते —

  'अज्ञो जन्तुरनीकोऽयमात्मन. मुखदु खयो ।

  ईश्वरप्रेरितो गच्छेत्स्यर्गं वा श्वश्रमेय वा ।

  (वृ० प० ४५५)
- १४ कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, वम्मगुरुमभारियत्ताए, अतिप्रकर्पाव्स्थयेत्यर्थं, (वृ० प० ४५६)
- १५ एतच्च त्रय युभकम्मिपिक्षयाऽपि स्यादत आह—'असु-भाण' मित्यादि, (वृ० प० ४५६) असुभाण कम्माण उदएण
- १६ उदय प्रदेशतोऽपि स्यादत आह— अमुभाग कम्माण विवागेण, 'विवागेण' ति विपाको यथाबद्धरमानुभूति ,

(वृ० प० ४५६)

- १७ स च मन्दोऽपि स्यादत आह— (वृ० प० ४५६) असुभाण कम्माण फनविवागेण मय नेण्ड्या नेरद्रएसु उववज्जति,
- १८ से तेणट्ठेण गगेया । एव वृच्चइ—मय नेरइया नेरइएसु उववज्जति, नो असय नेरइया नेरइएसु उववज्जति । (श० १।१२६)
- १६ सय भते । असुरकुमारा—पुच्छा ।
  गोया । सय असुरकुमारा असुरकुमारेसु चयवज्जति,
  नो असय असुरकुमारा असुरकुमारेसु उपवज्जति ।
  (१० ६।१२७)
- २० मे केणट्ठेण त चेव जाव जववज्जित ? गगेया ! कम्मोदएण, कम्मविगतीए, 'कम्मविगईए' ति कम्मणामद्युभाना विगत्वा—विगमेन स्वितमाश्रित्य (वृ० ५० ४५६)
- २१ कम्मविमोहीए, कम्मविमुद्धीए, 'कम्मविमोहीए' ति रममाश्रित्य 'कम्मविमुद्धीए' ति प्रदेशापेक्षया, (वृ० प० ४५६)
- २२ सुभाण वस्माण उदएण, सुभाण कस्माण विजानेण सुभाण वस्माण पत्रविवागेण सय असुरवृमात्त च्युर-बुमारत्ताए उववज्जति,
- २३ में तेणट्ठेण जान जनवज्जित । एव जान चिवत-कुमारा । (ग० १।१२=)
- २४ तय भते ! पुढविवनगटमा—पुन्छा ।
  गगेया! सय पुढविवनगटमा पुढविवनगटम्मु उवद्यादिः
  नो असर्य पुढविवनगटम्मु उव्यवज्यति । (श्व. १।१२१)

- २५. किण अर्थे ? तव श्री जिन भाखै, कर्म उदय करि घारं। कर्मगुरू फुन कर्मभार करि, कर्मगुरूसंभार॥
- २६ शुभ अशुभ जे कर्म उदय करि, शुभाशुभ जे जाणं। कर्म तणां जे विपाक करिने, अनुभावे पहिछाणं।।

#### सोरठा

- २७ शुभ जे वर्ण गधादि, जाति एकेंद्रियादिक अशुभ। नाम प्रकृति ए वादि, तेह तणे उदये करी।।
- २८ रेशुभाशुभ जे कर्म तणां फल, विपाक करिकै ज्याही। पुढवीपणे ऊपजे पोते, परवश उपजे नाही।।
- २६ तिण अर्थे करि जाव ऊपजै, जाव मनुष्या एमो। व्यतर जोतिपि विमानिया ते, असुरकुमारा जेमो।।
- ३० तिण अर्थे गगेय । कह्यो इम, सुर वैमानिक ज्यांही । यावत पोतै ईज ऊपजै, परवश उपजै नाही ॥
- ३१ ते वस्तु किह तेह समय ने, आदि देइ गगेय! महावीर भगवत श्रमण ने, प्रत्यक्ष ही जाणेय।।
- ३२ सर्व वस्तु ना जाणणहारा, सर्वज्ञ वीर पिछाणै। सर्व वस्तु ना देखणहारा, इम प्रत्यक्षज जाणै।
- ३३ गगेयो अणगार तिवारे, वीर प्रभू प्रति जेही। तीन वार दक्षिण पासा थी, प्रदक्षिणा करेई।।
- ३४ वदै स्तुति करै वचन थी, नमस्कार शिर नामी। इम कहै आप समीपै वांछू, हे प्रभु! अंतरजामी।।
- ३५. च्यार महाव्रत रूप धर्म थी, पच महाव्रत धर्मो। कालासवेसी पुत्र कह्यो जिम, तिमहिज भणवो मर्मो॥
- ३६ यावत सर्व दुख प्रक्षीण करीने मोक्ष सिधाया। सेव भंते । सेवं भते ! गोतम वीर वधाया॥
- ३७ नवम णतक वतीसमुद्देणक, इकसौ त्राणूमी ढालं। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' गणि गुणमाल।। ३८ ए गगेय तणा भागा मे, भूल चूक कोइ आयो। तो मिच्छामिदुक्कडं म्हारे, पंडित शुद्ध करायो॥ नवसशते द्वात्रिशत्तमोद्देशकार्थः॥६।३२॥
- १ पाछलै उद्देश आख्यो, गगेयो गुण-आगलो। वीर सेवा थकी सीधो, कीधो आतम नो भलो।। २ वीजो कोई कर्मवश, विपरोतपणु पिण पावियै।

जिम जमाली त्रयस्त्रिशत उद्देशक देखावियै।।

\*लय: पूज मोटा भांज तोटा

- २५. से केणट्ठेणं जाव उवयज्जिति ? गगेया । कम्मोदएण, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारिय-त्ताए, कम्मगुरुसभारियत्ताए,
- २६. सुभामुभाण कम्माण उदएण, मुभामुभाण कम्माण विवागेण,
- २७ 'मुभासुभाण' ति शुभाना शुभवर्णगन्धादीनाम् अशु-भाना तेपामेकेन्द्रियजात्यादीना च ।

(वृ० प० ४५६)

- २८. सुमामुभाण कम्माण फलविवागेण सय पुढविक्काइया पुढविक्काइएमु खववज्जति, नो असय पुढविक्काइया पुढविक्काइएसु खववज्जति ।
- २६ में तेणट्ठेण जाव उववज्जंति । (श॰ ६।१३०) एव जाव मणुस्ता । (श॰ ६।१३१) वाणमतर-जोडसिय-वेमाणिया जहा अमुरकुमारा ।
- ३० में तेणट्ठेण गगेया । एव वुच्चड मय वेमाणिया वेमाणिएमु उववज्जति, नो असय वेमाणिया वेमा-णिएमु उववज्जति । (श० ६।१३२)
- 3१,3२ तप्पभिति च णं से गगेये अणगारे ममण भगव महाबीर पच्चभिजाणड मब्बण्णु सब्बदिर्सि । 'तप्पभिद्र च' त्ति यस्मिन् समयेऽनन्तरोक्त वस्तु भग-वता प्रतिपादित ज्ञानस्य तत्त्रया, (वृ० प० ४५६)
- ३३ तए ण से गगेये अणगारे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेड,
- ३४ वदड नमसड, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी— इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिय
- ३५ चाउज्जामाओ धम्माओ पचमहब्बइय एव जहा कालासवेसियपुत्तो (२१० ११४३१-४३३) तहेव भाणियव्वं
- १,२ गागेयो भगवदुपामनात सिद्ध अन्यस्तु कर्मवशा-द्विपर्ययमप्यवाप्नोति यथा जमानिरित्येतदृर्शनाय त्रयस्त्रिशत्तमोद्देशक, (वृ०प०४५६)

- १. तिण काले ने तिण समय, वर माहणकुड ग्राम। नामे नगर हुतो भलो, अति वर्णन अभिराम।।
- २. चैत्य प्रवर वहु साल वन, धातु चित्र् चयनेह। वर्णन करिव् तेहनु, अधिक अनोपम एह।। ३ ते माहणकुड ग्राम जे, नगर विपेज प्रसिद्ध। ऋषभदत्त नामे वसै, ब्राह्मण ऋद्ध समृद्ध।।
- ४. दित्त तेजस्वी तेजवत, दर्पवान वा दित्त। वित्ते प्रसिद्ध जाव ते, अपरिभृत कथिता।।
- ५ ऋग यजू नै साम फुन, वेद अथर्वण मान। जिम खघक जावत अन्य, वहु ब्राह्मण नय जान।।
- ६. श्रमणोपासक जाणिया, जीवाजीव-स्वरूप। पुन्य पाप ना अर्थ फुन, लाधा अधिक अनूप॥
- ७ यावत मुनि प्रतिलाभतो, आनम भावित आप।। विचरे छे ते ऋपभदत्त, ब्राह्मण जिन वच थाप।।
- तसु देवानदा न्नाह्यणी, हुती अधिक अनूप।
   कोमल कर पग जाव तसु, न्नियदर्शण अतिरूप।।
- ह. ते पिण श्रमणोपासिका, जीवाजीव पिछाण।
   पुन्य पाप फल ओलखी, यावत विचर जाण।

\*जी काइ देव जिनेन्द्र समवसर्या। जी काइ जगतारक जिनराज।। (घ्रुपद)

- १० तिण कारो ने तिण समे जी काइ, समवसर्या महावीर। परिपद पर्युपासन करी जी काइ, तिरवा भवदिघ तीर।।
- ११. त्रटपभदत्त तिण अवसरे जी काइ, स्वाम पधार्या जान । हरप गंतोप पायो घणो जी काइ, जाव हृदय विकसान ॥
- १२ जिहा देवानदा ब्राह्मणी जी काउ, आयो तिहा चलाय। देवानदा ब्राह्मणी प्रते जी काइ, बोल इहविघ वाय।।
- १३ इम निरचे देवानुप्रिया जी काइ, श्रमण तपस्वी सार।
  भगवत श्री महावीर जी काइ. वर्म आदि करणहार॥
- १४. यावत प्रभ् सर्वज्ञ छै जी काइ, सर्व वस्तु ना सोय। देखणहार दयाल है जी काइ, सर्वदर्शी इम होय॥
- १५ धर्म-चक्र आकाश मे जी काइ, तिण करि यावत ताम। सुन्दे-मुद्रो विचरता छता जी काइ, वीर प्रभू गुणधाम।।

- तेण कालेण तेण ममएण माहणकुढगामे नयरे होत्या—वण्णसो।
- २ बहुमालए चेइए वण्णओ।
- ३ तत्य ण माहणकुउग्गामे नयरे जममदत्ते नाम माहणे परिवसड— अड्ढे 'अड्ढे' ति समृद्ध (वृ० प० ४५६)
- ४ दित्ते वित्ते जाव बहुजणम्म अपरिभूए 'दित्ते' त्ति दीप्त - तेजस्वी दृष्तो वा - दप्पंवान् 'वित्ते' त्ति प्रसिद्धः, (वृ० प० ४५६)
- ५. रिव्वेद-जजुब्वेद-मामवेद-अधव्यणवेद जहा रादवो जाव अण्णेसु (म० पा०) य वहूमु वभण्णएसु नवेमु सुपरिनिद्विए
- ६ समणोवासए अभिगयजीवाजीवे उवलद्वपुण्णपावे
- ७ जाव अहापरिग्गहिएहिं तबोकम्मेहि अप्पाण मावे-माणे विहरइ।
- तस्म ण जमभदत्तस्म माहणस्स देवाणदा नाम माहणी होत्या —सुबुमालपाणिपाया जाव पियदमणा सुम्वा
- समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा उवत्रद्भुण्णपावा जाव अहापिरग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावे-माणी विहरइ। (ग०६।१३७)
- १० तेण कालेण तेण समएण सामी ममोमहे। परिमा पज्जुवामइ। (१० ६।१३८)
- ११ तए ण से उमभदत्ते माहणे इमीमे कहाए लद्घट्टे ममाणे हट्ट जाव (म॰ पा॰) हियए
- १२. जेणेव देत्राणदा माहणी तेणेव उत्रागच्छति, उवा गच्छिता, देवाणद माहणि एव वयानी---
- १२ एव खलु देवाणुणिए । नमणे भगव महावीरे आहि-गरे
- १४ जाव मध्यण्णू मध्यारिमी
- १४. आगामगएण चातेण जाव गुह्मुर्ग विहरमाचे

<sup>\*</sup>लय: म्हारी सासूजी र पाच पुत्र

- १६ वहुसाल चैत्य विषे प्रभू जी कांइ, यथाप्रतिरूप तंत। अवग्रह आज्ञा ले करी जी काइ, यावत जिन विचरत।।
- १७ महाफल निञ्चै ते भणी जी काइ, देवानुप्रिय । तथारूप अरिहत भगवत नु जी काइ, नाम गोत्र सुणवा नु होय ।।
- १८ तो विल स्यू किहवो अर्छ जी काइ, अरिहत साहमु जाय । फल वदणा करिवा तणो जी काइ, नमस्कार नु सवाय ।।
- १९ प्रश्न विल पूछण तणु जी काइ, सेव करण नु सार। ते फल नो कहिवो किसु जी काइ, निह सदेह लिगार।।
- २० इक पिण आर्य घर्म नु जी काइ, सुवचन श्री जिन पास । साभलवो तन मन करी जी काइ, महाफल तास विमास ।।
- २१ तो विल स्यू किहवो अछं जी काइ, विस्तीरण जे अर्थ। ग्रहिवै किर ते फल तणु जी काइ, स्यू वर्णवियै तदर्थ॥
- २२. ते भणी देवानुप्रिया । जी काइ, जझ्ये श्री जिन पास । श्रमण भगवत महावीर ने जी काइ, वदा स्तवना तास ।।
- २३ नमस्कार शिर नामिय जी काइ, यावत जिन नी जाण। सेव करा साचै मनै जी काइ, ऊजम अधिकी आण॥
- २४ ए सेवा आपा भणी जी काइ, इहभव परभव हेर। हित सुख खम ने अर्थ छै जी काइ, अनुगम आस्ये केड।।

#### सोरठा

- २५ हिताय हित् नै अर्थ, सुष्वाय सुख ने अर्थ फुन। क्षमज युक्त तदर्थ, शुभानुवच आनुगामिक।।
- २६ देवानदा तिण अवसरे जी काइ सुण ऋपभदत्त नी वाय। हरप सतोप पायो घणो जी काइ, जाव हृदय विकसाय।।

# सोरठा

- २७ अतिहि हर्प कथित, हृष्ट तुष्ट नो अर्थ ए। तथा हृष्ट विस्मित, सतोपवान चित तुष्ट ने।।
- २ आ ईपत कहिवाय, मुख सौम्यादि भाव करि। समृद्धि पामी ताय, अति समृद्धि फुन नदिता।।
- २६ प्रीतिमना काहिवाय, तृष्तिपणो अति मन विषे। परम भलो मन थाय, पाठ परम सोमणस्सिया।।
- ३० हर्प वशे करि तास, विकस्यो छै तेहनो हियो। जाव गव्द में जास, अर्थ विचारी आखियै।।
- ३१ \*विहुं करतल यावत करी जी काइ, ऋपभदत्त नो वचन्न। विनय करीने ग्रगीकरै जी काइ, तन मन थयो प्रसन्न।।
- ३२. शत नवम तेतीसम देश ए जी काइ, सौ चउराण्मी ढाल । भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी जी कांइ, 'जय-जश' हरप विशाल ॥

- १६. वहुसालए चेइए अहापटिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।
- १७ त महप्फल रालु देवाणुष्पिए । तहारूवाण अरहताण भगवताण नामगोयस्म वि सवणयाए,
- १८,१६ किमग पुण अभिगमण-वटण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ?
- २०,२१ एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्म सवण-याए, किमग पुण विजलस्स अट्ठस्स गहणयाए ?
- २२. त गच्छामो ण देवाणुष्पिए । समण भगव महावीर वंदामो
- २३. नमसामो जाव (स० पा०) पज्जुवासामो ।
- २४. एय णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सड । (ग०।१३६)
- २५ 'हियाए' त्ति हिताय"" "'खमाए' त्ति क्षमत्वाय सगतत्वायेत्यर्थं, 'आणुगामियत्ताए' आनुगामिकत्वाय शुभानुवन्धायेत्यर्थ (वृ० प० ४५६)
- २६. तए ण सा देवाणदा माहणी उसभदत्तेण माहणेण एव वृत्ता समाणी हट्ट जाव (स॰ पा॰) हियया।
- २७. हृष्टतुष्टम् अत्यर्थं तुष्ट हृष्ट वा विस्मितं तुष्ट तोपनिच्चत्त यत्र तत्तथा, (वृ० प० ४५६)
- २८. आनदिता ईपन्मुखसौम्यतादिभावे समृद्धिमुपगता, ततश्च नन्दिता समृद्धितरतामुपगता
  - (वृ० प० ४५६)
- २६ 'पीइमणा' प्रीति प्रीणन—आप्यायन मनसि यस्या सा प्रीतिमना 'परमसोमणस्सिया' परमसौमनस्य— सुष्ठु सुमनस्कता सञ्जात यस्या सा परमसौमनस्यिता (वृ० प० ४५६)
- ३० 'हरिसवसविसप्पमाणहियया' हर्पवशेन विमर्प्द् विस्तारयापि हदय यस्या सा तथा (वृ० प० ४४६)
- ३१. करयल जाव (स॰ पा॰) कट्ट उसभदत्तस्स माहण-स्स एयमह विणएण पडिसुणेइ। (श॰ ६।१४०)

<sup>\*</sup>लय: म्हारी सासूजी रै पाच पुत्र

# दूहा .

- १ ऋषभदत्त ब्राह्मण तदा, कोडिवक नर तेड। कहै धार्मिक रथ त्यार करि, वृपभे-जुक्त समेर॥
- २ \*करो काज अति क्षिप्र, अहो देवानुप्रिया, वृपभ विहु अति चतुर, शीघ्र तसु गमन क्रिया। गमन क्रिया जी, तिण जुगत लिया, रथ सग विहु ते जोतिरया, महै तो जासा-जासा वदन वीर, अधिक तन मन रिलया।।
- ३ अतिहि प्रशस्त पिछाण, जोगवत रूप भिला। सम खुर ने तसुं पूछ, विल सम प्राग भला। सम प्राग भलाजी, अतिहि उजला, लक्षण गुणरूप अधिक निमला। महै तो जासा-जासा वदन वीर, प्रभू गुण ज्ञाननिला।
- ४ कठाभरण कलाप, जबूनद स्वर्णमयी। वेगादिक गुण करी, विशिष्ट प्रधान सही। प्रधान सही जी, अति कीर्ति कही, जन जोवत ही आनद लही। महै तो जासा-जासा वदन वीर, अधिक तन मन उमही॥
- ५ रजत रूप्यमय घट, भणण भिणकार वणै। सूत्र-रज्जु ते रासिंड सूत नी वृपभ तणै। वृपभ तणै जी, अति दिप्तपणै, तसु जातिवत, लौकीक गिणै। महै तो जासा-जासा वदन वीर, हरप आनद घणै।
- ६ नाथ नासिका-रज्जु, प्रवर सुवरण मिडत । सुवरण तेह प्रधान, तिणे करि अवग्रहित । अवग्रहित, जिन जश कहित, पेखत जन मन आनद लहितं । म्है तो जासा-जासा वदन वीर, परम प्रभु स्यू प्रीत ॥
- ७ नील वर्ण जे उत्पल, कमल करी नीको। शिर-शेखर अभिराम, वलभ है जग जी को। जग जी को जी, निरखण पीको, तसु आभरण करि रूपे अधिको। म्है तो जासा-जासा वदन वीर, प्रभू त्रिभुवन टीको।।
- द. वृषभ प्रधान युवान, लक्षणवता आणी। ते रथ जोतर कह्यो, वृषभ वरणन माणी। वरणन माणी जी, हिव रथ जाणी, आगल वरणन कहियै ठाणी। म्है तो जासा-जासा वदन वीर, प्रभू केवल नाणी।।
- स्वानाविध ना न्हाल, प्रवर मणि रत्न तणी।
   घटा अधिक रसाल, जाल चउफेर वणी।
   चउफेर वणी जी िक्तणकार घणी, मन प्रवन हुवै तसु शब्द सुणी।
   म्है तो जासा-जासा वदन वीर, धीर प्रभु तीर्थ घणी।।

- १ तए ण से उसभदत्ते माहणे कोड्वियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—
- २,३. खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइय-समखुरवालिहाण-समिलिहियसिंगेहि, लघुकरण — शीझिक्रयादक्षत्व तेन युक्तौ यौगिकौ च — प्रशस्तयोगवन्तौ " ""'वालिहाण' त्ति वालधाने —पुच्छौ (वृ० प० ४५६)
- ४. जबूणयामयकलावजुत्त-पतिविसिट्ठेहि, जाम्बूनदमयी—सुवर्णनिर्वृत्ती यौ कलापौ—कण्ठा-भरणविशेषौ ताभ्या युक्तौ प्रतिविशिष्टकौ च— प्रधानौ जवादिभियौं तौ (वृ० प० ४५६)
- ५,६. रययामयघटा-सुत्तरज्जुय-पवरकचणनत्यपग्गहोग्ग-हियएहिं, रजतमय्यौ—रूप्यविकारौ घण्टे ययोस्तौ तथा, सूत्र-रज्जुके—कार्प्पासिक-सूत्रदवरकमय्यौ वरकाञ्चने— प्रवरसुवर्णमण्डितत्वेन प्रधानसुवर्णे ये नस्ते —नासि-कारज्जू तयो. प्रग्रहेण—रिष्मनाऽवगृहीतकौ—बद्धौ यौ तौ (वृ० प० ४५६)
  - ७. नीलुप्पलकयामेलएहि,
    नीलोत्पलै —जलजिवशेपै. कृतो—विहित. 'आमेल'
    त्ति आपीड:—शेखरो ययोस्तौ (वृ० प० ४५६)
- ८. पवरगोणजुवाणएहिं
- ६ नाणामणिरयण-घटियाजालपरिगयं,

<sup>\*</sup>लय: धन-धन भिक्षु स्वाम्

- १० प्रशस्त रूडा काप्ठ, तणो जूसर जासं। योत्र रज्जुका युग ए, अतिही शुभ तास। शुभ तास जी, वर सुख वास, निरखत ही हरप अधिक आस। म्है तो जासा-जासां वदन वीर, करण जिन पर्युपास।।
- ११. कारीगर अति निपुण, भलेज प्रकार करी।
  ए सहु विरचित निर्मित, कीवा हरप घरी।
  हरप घरी जी, जन जश उचरी, अति परम लक्षण करि सहित वरी।
  म्है तो जासा-जासा वदन वीर, स्वाम सपति सखरी॥
- १२. एहवो वार्मिक जाण-पवर जोतिर थापो। जीघ्र करी सफ त्यार, आण मुफ ने आपो। मुफ ने आपो जी, तज सतापो, वर विनय करी तुफ जस व्यापो। म्है तो जासा-जासा वदन वीर, मिटै प्रभु थी पापो॥
- १३ नवम तेतीसम देश, ढाल इकसी पच्चाणु।
  भिक्षु भारिमाल ऋषिराय, गणी 'जय-जश' भाणु।
  जय जश भाणु जी, गण गुण-खाणु, महावीर तणो शासण जाणू।
  म्हानै लागै-लागै स्वाम सुभाव, भाव सपत माणु।।

१०,११. सुजायजुग-जोत्तरज्जुयजुग-पसत्यसुविरिचयिनिमिय, सुजात—मुजातदारुमय (वृ० प० ४५६)

## ढाल : १६६

## दूहा

- शेडुविक तिण अवसरे, ऋपभदत्त नी वाय। सांभल ने हरण्यो घणो, जाव हियो विकसाय।।
   करतल जोडी इम कहै, एव इम हे स्वाम। तहत वचन ए आपरो, गीघ्र करेसू काम।।
   आज्ञा विनय करी वचन, यावत अगीकार। कार्य सर्व करी तिणे, सूपी आज्ञा सार।।
   ऋपभदत्त ब्राह्मण तदा, स्नान जाव अल्प भार। मोल करी मुह्गा इसा, आभरण पहिर्या सार।।
   अलकृत तनु ने करी, निज घर थी निकलत। वाह्य साल उवट्ठाण ज्या, जिहा घाम्मिक रथ तत।।
   तिहा आव्या आवी करी, घामिक यान प्रधान। आरूढ थयो चढ्यो तदा, पेखत ही पुन्यवान।।
   देवानदा तिण अवसरे, अतेउर मे न्हाय। कुलीन स्त्री ते कारणे, प्रच्छन स्नान कहाय।।
- द देवानदा नो इहा, वर्णन इम देखाय। वाचनातरे ते अछै, साभलज्यो चित ल्याय।।

- १. तए ण ते कोडुवियपुरिसा उसभदत्तेण माहणेण एव वृत्ता समाणा हट्ट जाव (स॰ पा॰) हियया
- २,३. करयल जाव (स॰ पा॰) एव सामी । तंहताणाए विणएण वयणं पडिसुर्णेति, पडिसुर्णेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त जाव धम्मिय जाणप्पवर जुत्तामेव उवद्ववेत्ता, तमाणत्तिय पच्चिप्पिता। (श॰ ६।१४२)
- ४,५. तए ण से उसभदत्ते माहणे ण्हाए जाव अप्पमहग्धा-भरणालिकयसरीरे साओ गिहाओ पिङ्णिक्खमित, पिङ्णिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणमाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे
  - ६. तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणप्पवर दुरुढे । (श॰ ६।१४३)
  - ७. तए ण सा देवाणदा माहणी (पा० टि० ६) अतो अतेउरिस ण्हाया। 'अन्त.' मध्येऽन्त पुरस्य स्नाता, अनेन च कुलीना स्त्रिय. प्रच्छन्ना स्नान्तीति दिशत, (वृ० प० ४५९)

ज. इह च स्थाने वाचनान्तरे देवानन्दावर्णक एव दृश्यते (वृ० प० ४५६)

\*पुण्य प्यारी सुणज्यो देवानंदा अधिकार । (ध्रुपदं)

ह. करी स्नान विलक्षम सार, कीधा कोतक विविध प्रकार।

मसी तिलकादिक सुविचार रे।।

१० मगलीक नै अर्थे प्रसाधि, ग्रहै सरसव नै द्रोवादि । टालवाज अशुभ सुपनादि ॥

११ विल अन्य कीघो ते किहयै, वर नेउर चरणे लिहयै।
मणी मेखला किट-तट गहियै।

१२ हार करिकै रिचत हिय छायो, उचित युक्त करि शोभायो । तसु पेखत नेत्र टरायो ॥

१३ कडै करिकै अधिक काति होते, मुद्रिका अगुलिया सोहै। जन देखत ही मन मोहै।।

१४ विचित्र मणिमय जाणी, एकावली काति वखाणी। तिणसु देवानदा दीपाणी।।

१५ कठ-सूत्र अधिक श्री कार, विल उर रह्या आभरण सार। रूढिगम्य कह्या वृत्तिकार।

१६ ग्रैवेयक प्रसिद्ध किहयै, ए तो आभरण कठ नां लिहयै। तिणसू देवानदा गहगिहयै।।

१७ कटिसूत्रेण नाना प्रकार, मणि रत्ना ना भूपण सार । तिणसू शोभित अग उदार ।।

१८ चीन अशुक नाम ए दोय, वस्त्र मध्ये प्रवर ते होय। तिके पहिर्या छै अवलोय।।

१६ दुकूल वृक्ष तणी सुविधान, वल्कल थी नीपनो जान। तिको दुकूल वस्त्र पहिछान।।

२० ते पिण वस्त्र घणु सुखमाल, ऊपर ओढणो तेह विशाल। मन हरपै नयण निहाल।

२१ सर्व ऋतु ना नीपना अशेष, सुगंघ फूल करी सुविशेष। तिण सूं वीट्या शिर ना केश।

२२. वर चदन चरचित चगी, निलाट विषेज सुरगी। आभरण भूषित अगी।।

२३ क्रुष्णागर सुगव अशेष, धूषे धूषित सुविशेष । श्री देवी सरिखो वेष' ।।

२४ काया चलक-चलक चलकती, प्रभा भलक-भलक भलकती। जाणै मुलक-मुलक मुलकती।।

#### सोरठा

२५ एह थकी हिव सोय, प्रकृत छै जे वाचना। कहियै छै अवलोय, एहवु आख्यो वृत्ति मे।। ११ किंच [किते (व) ]—वरपादपत्तणेउर-मणिमेहला-

१२ हाररिचत-उचिय-उचितै: युक्तै. (वृ० प० ४५६)

१३ कडग-खुड्डाग-'खुड्डाग' त्ति अड्गुलीयकैंग्च (वृ० प० ४५६)

१४. एकावली-विचित्रमणिकमय्या (वृ० प० ४५६)

१५,१६. कठसुत्त-उरत्यगेवेज्ज-कण्ठसूत्रेण च—उर.स्थेन च रुढिगम्येन (वृ० प० ४५६)

१७. मोणिसुत्तग-नाणामणि-रयणभूसणविराइयगी,

१८. चीणसुयवत्यपवरपरिहिया,

१६,२० दुगुल्लसुकुमालउत्तरिज्जा, दुकूलो—वृक्षविशेपस्तद्वल्काज्जात दुकूल—वस्त्र-विशेपस्तत् सुकुमारमुत्तरीयम् उपरिकायाच्छादन यस्या. सा तथा (वृ० प० ४६०)

२१ सन्वोतुयसुरिभकुसुमवरियसिरया,

२२. वरचदणवदिता, वराभरणभूसितगी, वरचन्दन वन्दित—ललाटे निवेशित

(वृ० प० ४६०)

२३. कालागरुषूवयूविया, सिरिसमाणवेसा श्री.—देवता तया समाननेपथ्या,

(वृ० प० ४६०)

२५ इतः प्रकृतवाचनाऽनुश्रियते- (वृ० प० ४६०)

६,१० कयवलिकम्मा कय-कोजय-मगल-पायन्छित्ता, तत्र कौतुकानि—मपीतिलकादीनि मङ्गलानि— सिद्धार्थंकदूर्वादीनि (वृ० प० ४५६)

<sup>\*</sup>१. राणी भाखें सुण रे सूड़ा

१ प्रस्तुत ढाल की गाथा ७ से २३ तक की जोड वाचनान्तर के आघार पर की गई है, जो अगसुत्ताणि पृष्ठ ४३४ टि॰ ६ से यहा उद्धत किया हैं।

२६ \*जाव तोल हलका मोल भारी, एहवा आभरण अधिक उदारी। अलकृत तनु सिणगारी ॥ अनुपम तनु सोवन वरणी। २७ एहवी देवानदा मन हरणी, की बी पूर्व भव मे करणी।। २८ दास्या कृब्जका साथ घणेरी, विल चिलात देशज केरी। जाव जव्द थी एह अनेरी।। २६ वामणी ह्रस्व तन् नी कहियै, वडभी' हियो ऊचो लहियै। वव्वरी वव्वर देश नी गहियै।। ३० वर्सिया देश नी उपनी, ऋषिगणिका देश नी निपनी। वासीगणिका देश नी जन्नी।। पल्हवित देश नी पिण चेरी। ३१ उपनी योनिका देश केरी, देश ल्हासिया तणी घणेरी।। ३२ देग लउसिया नी प्रकाशी, आरव दमिल सिहल देश वासी। पुलिदि पक्कण नी गुणरासी।। ३३ वहिल मुरुड देश नी जाणी, सब्वर पारसी देश नी स्थाणी। वहविध जनपद थी आणी ॥ ३४ नेहवा देश तणी अपेक्षायो, अन्य देश विषे पिण थायो। तिके कीघी एकठी ताह्यो।। ३५ निज देश विपे ते जाणी, वस्त्र पहिरै जेम पिछाणी।। ग्रहण कियो है वेप सयाणी।। ३६ इगित चेप्टा नेत्रादि, चितित पर चितव्यू सावि। एतो जाणै घर अहलादि॥ ३७. प्राथित परवांद्या जाणद, कुशल डाही विनीत अमद।

३८ वरिसघर ते नपुसक कीवा, स्थिवर प्रयोजने सुप्रसिघा।
जावै अतेउर मे सीघा।।
३६ कचुइज पोलिया गहियै, महतरग तणो अर्थ कहियै।
अतेउर ना कार्य चितवियै।।
४० एतला ना वृद थी अमदा, परवरी थकी देवानदा।

चेटिका

वद ॥

चक्रवालज

अतेउर थी नीकली आनदा।।

# सोरठा

४१. वली सर्व ए जाण, अन्य वाचना ने विषे। छै साक्षात पिछाण, एहवु आख्यु वृत्ति मे।। ४२ \*जिहा वाहिरली उवट्ठाण साला, जिहा घार्मिक यान निहाला। तिहा आवी छै गुणमाला।। २६. जाव अप्पमहग्घाभरणालिकयमरीरा

२८ वहूहि घुज्जाहि, चिलातियाहि जाव

२६ 'वामणियाहि' ह्रस्वशरीराभि 'वडहियाहि' मडह-कोण्ठाभि. 'वव्यरियाहि (वृ० प० ४६०)

३०. पत्नोसियाहि ईसिगणियाहि वासगणियाहि

् (वृ० प० ४६०)

३१. जोण्हियाहि परहिवयाहि स्हासियाहि

(वृ० प० ४६०)

३२. लजिमयाहि आरबीहि दिमलाहि मिहलीहि पुलिदीहि पक्कणीहि (वृ० प० ४६०)

३३,३४. वहलीहि मुरुडीहि सवरीहि पारमीहि णाणादेस-विदेसपरिपिडियाहिं नानादेशेन्यो— बहुविद्यजनपदेभ्यो विदेशे— तद्देशापेक्षया देशान्तरे परिपिण्डिता या.

(बृ० प० ४६०)

३५. सदेसनेवत्थगहियवेसाहि (वृ० प० ४६०)

३६,३७. 'इगियचितियपित्ययवियाणियाहि' इङ्गितेन— नयनादिचेष्टया चिन्तित च परेण प्रायित च— अभिलपित विजानन्ति य।स्तास्तया ताभि 'कुसर्लाहि विणीयाहि' युक्ता इति गम्यते 'चेडियाचवकवाल' (वृ० प० ४६०)

३६-४०. विरसधर-थेरकचुइण्ज-महत्तरकवदपरिविखता'
वर्षधराणा—विधितककरणेन नपुमकीकृतानामन्त
पुरमहल्लकाना 'थेरकचुइज्ज' त्ति स्थविरकञ्चुिकना
—अन्त पुरप्रयोजनिनवेदकाना प्रतीहाराणा वा
महत्तरकाणा च – अन्त पुरकार्यविन्तकाना वृन्देन
परिक्षिप्ता (वृ० प० ४६०)

४१. इद च सर्वं वाचनान्तरे साक्षादेवास्ति । (वृ० प० ४६०)

४२. निग्गच्छित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ,

१ अगसुत्ताणि मे वाचनान्तर का पाठ उद्धृत किया है, वहा 'वउसियाहि' पाठ है। जोड इसी पाठ के आदार पर की हुई प्रतीत होती है। पर वृत्ति मे इस स्थान पर 'पओसियाहि' पाठ है। इस सन्दर्भ मे समग्र पाठ वृत्ति से लिया गया है। इसलिए यहां भी उसे ही उद्धृत किया जा रहा है।

<sup>ै</sup>लयः राणी भाखै सुण रे सूड़ा २. जिसका थागे का भाग निकला हुआ हो ।

४३ तेह धार्मिक यान प्रधान, आरूढ थई गुणवान।
मन हरप घणो असमान।
४४ शत नवम तेतीसम देश, एक सौ ने छन्नूमी एस।
कही ढाल रसाल विशेप।।
४५. भिक्षु भारीमाल ऋपिराय, सुख सपित 'जय-जश' पाय।
गण आनद हरप सवाय।।

४३. उवागच्छिता धम्मियं जाणप्यवरं दुरूढा । (श० ६।१४४)

#### ढाल १६७

#### दूहा

- १ ऋपभदत्त तिण अवसरे, देवानंदा साथ। धार्मिक यान प्रधान प्रति, आरूढ थकै विख्यात!।
- २. पोता नै परिवार करि, परवरियो पुन्यवत । माहणकुड जे ग्राम ते, नगर मध्य निकलत ।।
- ३ चैत्य जिहा वहुसाल छै, तिण ठामे आवत। छत्रादिक जितवर तणा, वर अतिशय देखत।।
- ४ घामिक यान प्रधान प्रति, तिण ठामे स्थापत । घामिक यान प्रधान थी, ऋपभदत्त उतरत ॥
- ५ भगवत श्री महावीर प्रति, पर्चावधे पहिछाण। अभिगम करि सनमुख गमन, सखर साचवै जाण।।
- ६ सचित्त द्रव्य पुष्पादि तज, जिम वीजे शतकेह। नचमुद्देशा मे कह्यो, ते विघ इहा कहेह।।
- ७ जाव त्रिविध पर्युपासना, मन वच काया जाण । शुद्धपणे सेवा करे, अधिक उलट मन आण ।।

'जगतारक वीर जिनदा, लाल सुगणजी। (ध्रुपद)

- द देवानदा तिण अवसर, लाल सुगण जी,
  - वर घार्मिक रथ थी उत्तर जो ।।
- ६ वहु कुठ्ज साथ सचरी, जाव महत्तर वृद परवरी।।
- १० प्रभु प्रति पचविध चित्त त्यावै, अभिगम करि सन्मुख जावै।।
- ११ द्रव्य सिचत्त पुष्पादि पिछाणी, तसु अलगा मूकै जाणी।।
- १२ द्रव्य अचित्त् वस्त्रादि वारू, ते अणतजवे सुख सारू॥
- १३ गात्रलट्टी ते देही, ते नमी विनय करि तेही।।
- १४ चक्षु देखता मन मोडै, अजलि वेहु कर जोड़ै।।
- के केरी ने समी नित्र करि

- १ तए णं से उसभदत्ते माहणे देत्राणदाए माहणीए सद्धि धम्मिय जाणप्यवरं दुरूढे समाणे
- २ नियगपरियालसपरिवृडे माहणकुडग्गाम नगर मज्झ-मज्झेण निग्गच्छइ,
- ३ जेणेव वहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवाग-च्छिता छत्तादीए तित्यकरातिसए पासइ,
- ४ धम्मिय जाणप्पवर ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाओ जाण-प्पवराओ पच्चोरुहइ,
- ४ समण भगव महावीर पचिवहेण अभिगमेण अभि-गच्छति,
- ६,७ सिन्वताण दन्त्राण विओसरणयाए एव जहा वितियसए [२।६७] जाव (स॰ पा॰) तिविहाए पञ्जुवासणाए पञ्जुवासइ। (श॰ ६।१४४)
  - तए ण सा देवाणदा माहणी धम्मियाओ जाणव्य-वराओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता
  - ह. वहूहि खुज्जाहि जाव • महत्तरग-वदपरिक्यित्ता
- १०. समण भगव महावीर पचिवहेण अभिगमेण अभिगच्छइ,
- ११ सिचत्ताण दव्वाण विओसरणयाए पुष्पताम्बूलादिद्रव्याणा व्युत्सर्जनया त्यागेनेत्यर्थ (वृ० प० ४६०)
- १२ अचित्ताण दव्वाण अविमोयणयाए वस्त्रादीनामत्यागेनेत्यर्थ (वृ० प० ४६०)
- १३ विणयोणयाए गायलद्वीए
- १४. चक्खुप्फासे अजलिपग्गहेण

\*लय: सुखपाल सिहासण लायज्यो राज

१५. मन चंचल ते स्थिर करते, विघ पंच एम अनुसरते॥ १६ जिहा भगवत श्री महावीर, तिहा आवै छै गुणहीर।। १७ प्रभु प्रति त्रिणवार विचक्षण, दक्षिण कर थकी प्रदक्षिण ।।

१८ वदै वच स्तुति वरती, विल नमस्कार आति करती।। १६ द्विज ऋपभदत्त प्रति जाणी, आगल कर रही सयाणी।।

### सोरठा

२०. ठिया चेव नो ताय, छै गव्दार्थ स्थिता रही। वृत्तिकार कहिवाय, ऊभी पिण वैठी नहीं।। २१ 'ष्ठागति निवृत्ति घातु, वैसण रो पिण अर्थ ह्वै। ऊभी तणो कहातु, कारण को दीसै नहीं।। २२ सूत्र उवाई' माय, कोणिक नृप राण्या सहित। श्री जिन वदन आय, एहवु आख्यू छै तिहा।। २३ कोणिक कर अगवाण, रमण सुभद्रो प्रमुख जे। ठिया पाठ पहिछाण, सेव करे प्रभु पे रही।।

२४ जिन वाणी सुण ताम, कोणिक ऊठै ऊठ ने। जिन वदी सिर नाम, आयो जिण दिशि ही गयो।। २५ रमण सुभद्रा आदि, ऊठै ऊठी ने तदा। जिन वदी अहलादि, नमण करी ते पिण गई।। २६ जो वैठी निंह होय, तो ऊठै ऊठी करी। इम किम आख्यो जोय, पाठ देख निर्णय करो।। २७ तृतीय उत्तराभयण, सुरवर जे सुरलोक मे। ठिच्चा रही सुवयण, चवी मनुष्य मे ऊपजै।। २८ इहा पिण घातू तेह, अर्थ हुवै ऊभा तणो। तो स्यू सुर वर जेह, मुरलोके वेसे नही।। २६ तिण कारण अवलोय, पठा घातू नो अर्थ जे। वेसण नो पिण होय, नियम नयीं ऊभा तणो॥' (ज॰म॰) ३० परिवार सहित विधि घरती, सुश्रूपा सेवा करती।। ३१ वले नमस्कार जिर नमती, सन्मुख विनये करि रमती। ३२ कर जोड करै इम सेवा, तसु करण जोग सुघ लेवा।। ३३ तिण अवसर देवानदा, प्रभु पेखता आणदा।। ३४. पुत्र स्नेह थकी सुख पायो, स्तनमुखे दूव तव आयो।।

३५ सुत दर्शन करि चित ठरिया, आनद जल लोचन भरिया।।

३६ अति हरप-वृद्धि तनु थावै, विलिया मे वाह न मावै।।

१. ओ० सू० ६६,७०

१५. मणस्स एगत्तीभावकरणेणं)

१६ जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ,

१७ समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ,

१८. वदइ नमसइ,

१६ उसभदत्त माहण पुरको कट्टु

२० ठिया चेव 'ठिया चेव' त्ति ऊद्ध्वंस्थानस्थितव अनुपविष्टेत्यर्थ (वृ० प० ४६०)

२३ तए ण ताओ सुभद्ष्यमुहाओ देवीओ ......कूणिय-राय पुरओ कट्टु ठिइयाओ चेव सपरिवाराओ अभिमुहाओ विणएण पजलिकडाओ पज्जुवासित (ओवाइय सू० ७०)

२४. तएण से कूणिए राया भिभसारपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा " जामेव दिस पाउन्भूए तामेव दिस पडिगए। (ओवाइय सू॰ ५०)

२७ तत्य ठिच्चा जहाठाण, जक्खा आउक्खए चुया। उर्वेति माणुस जोणि, से दसगेऽभिजायई ॥ (उत्तर० ३/१६)

३० सपरिवारा सुस्सूसमाणी

३१ नमसमाणी अभिमुहा विणएण

(श॰ ६/१४६) ३२ पजलिकडा पज्जुवासइ।

३३ तए ण सा देवाणदा माहणी

३४ आगयपण्हया 'आयातप्रस्रवा' पुत्रस्नेहादागतस्तनमुखस्तन्येत्यर्थ.

(वृ० प० ४६०)

३५ पप्पुयलोयणा प्रप्लुतलोचना पुत्रदर्शनात् प्रवित्ततानन्दजलेन (वृ० प० ४६०)

३६. सवरियवलयवाहा सवृतौ- हर्पातिरेकादतिस्यूरीभवन्तौ निपिद्धौ वलयैः ---कटकै र्वाह्-भुजी यस्या. सा (वृ० प० ४६०)

२३२ भगवती-जोड़

३७ कंचुक ना अचल खुलिया, कस छूट तनु वृद्धि रलिया।।

३८ घन नी घारा करि हणिया, तरु कद पुष्प जिम फलिया।।

३६ तिम रोमकूप उलसाया, इम आनद अधिको पाया ॥ ४० दृष्टि प्रति अणमीचती, प्रभु पेख रही पुन्यवती ॥

४१ गोतम भगवत विशेखी, ए सगलो विरतन देखी।। ४२ प्रभु वदी नमण करता, लाल स्वाम जी,

हे भगवत । एम वदता ।।
४३ हे भगवत ए किण कारण, देवानदा गुण धारण ।।
४४ स्तनमुखे दूध तसु आयो, आनद जल नेत्र भरायो ।।
४५ विलिया में वाह न माने, कस छूटी कचुक भाने ॥
४६. रू कूप तास उलसाया, जिम घन थी पुफ विकसाया ॥
४७ देवानुप्रिय ने देखी, इणरे जाग्यो स्नेह विशेखी ॥
४८ तुम जोय रही इक घारा, निह खडे निजर लिगारा ॥
४६ निरखती मूल । धापै, इणरे तन मन प्रेमज व्यापै ?॥
५० तव भगवत श्री महावीर, लाल गोयमा,

गोतम प्रति वदै सघीर ।।
(गोतम जी सुणियै कारण, लाल गोयमा ।)
५१ इम निश्चै गोतम जाणी, ए देवानदा स्याणी ॥
५२ ए ब्राह्मणी म्हारी मात, ह छू एहनो अगजात ॥

५३ रात्री वयासी ताह्यो, प्रभु रह्या कूख रै माह्यो ॥
५४ ए आचारण मे जाणी, इहा समचै वात वखाणी ॥
५५ तिण कारण देवानदा, आ रोम-रोम हुलसदा ॥
५६ प्रथम गर्भआधानु, ते पुत्र स्नेह करि जानु ॥
५७ तिण कारण प्हानो आयो, जाव रोम-कूप विकसायो ॥
५० मुभ इक धारा निरखती, मुभ देख-देख हरषती ॥
५६ निरखती निजर न खडे, पूरव सुत-नेह न छडे ॥
६० क्षत नवम तेनीसम देशो, इकसौ सताणूमी एसो ॥
६१ भिक्षु भारीमाल ऋपिराया, 'जय-जश' सुख हरप सवाया ॥

- ३७ कचुयपरिक्खित्तया कञ्चुको—वारवाण परिक्षिप्तो—विस्तारितो हर्षा-तिरेकस्यूरीभूतशरीरतया यया सा (वृ० प० ४६०)
- ३ धाराहयकलवग पिव मेघधाराभ्याहतकदम्बपुष्पमिव (वृ० प० ४६०)
- ३६ समूसवियरोमकूवा
- ४०. समण भगव महावीर अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ। (श० ६/१४७)
- ४१, ४२ भतेति । भगव गोयमे समण महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—
- ४३ किंण भते । एसा देवाणदा माहणी
- ४४ आगयपण्हया पप्पुयलीयणा
- ४५ सवरियवलयवाहा कचुयपरिविखत्तिया
- ४६. धाराहयकलवग पिव समूसवियरोमकूवा
- ४७-४६ देवाणुष्पिय अणिमिसाए दिट्टीए देहमाणी-देहमाणी चिट्टइ ?
- ५० गोयमादि । समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी----
- ५१ एव खलु गोयमा । देवाणदा
- ५२ माहिणी मम अम्मगा, अहण्ण देवाणदाए माहिणीए अत्तए।
- ५३ · · · · · वासीतिहिं राइदिएहिं वीइक्कतेहिं (आयार चूला १५/५)
- ४५-५७. तण्ण एसा देवाणदा माहणी तेण पुन्वपुत्तिसणे-हरागेण आगयपण्हया जाव (स० पा०) समूसवियरोम-कूवा
- ४८, ४६. मम अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ। (श० ६/१४८)

- १ गोतम प्रति ए वीर जिन, आखी वात उदार। देवानंदा साभली, पामी तन मन प्यार॥ \*प्रभुजी । आप छो भय भजना जी। (ध्रुपद)
- २. श्री जिन-वचन सुणी देवानदा, होजी आतो पामी परम आनंदा ॥
- ३ भाग्यवत मुभ पुन्य सवाया, होजी एतो वीर म्हारी कूखे आया ॥
- ४ उत्पत्ति मूलगी तो छै म्हारी, होजी लियो क्षत्रियकुल अवतारी ॥
- ५ श्रमण भगवत म्हारा अगजातो,

होजी महै तो कदेय मुणी नहिं वातो।।

६ चरण केवल घर वीर विख्यातो,

होजी हुआ तीन लोक रा नायो।।

- ७ च्यार तीर्थ ना नायक स्वामी, होजी एतो मुक्ति जावा रा कामी ॥
- देवािवदेव तीथँकर जानी, पासू वात नहीं कोड छानी।।
- ६ जग दीपक जल द्वीपा समान, होजी एतो तिरण तारण भगवान ॥
- १० अभयदायक जिनदेव विख्याता, होजी एतो ज्ञान चक्षु ना दाता ॥
- ११ राग-द्वेप अरि जीतणहारा, प्रभु गुण करि ज्ञान भडारा ॥
- १२. अनिशय घारक आप जिनदा, होजी एतो मेटण भव दुख फदा ॥
- १३ जगत उद्घारक श्री जिन नीको,

होजी ओतो तीन भवन जश टीको ॥

- १४ नाथ अनाथा रा आप अमीरा, एतो धर्म चक्री जिन हीरा।।
- १५ ऐसा है वीर-प्रभ् गुण घार, होजी महै तो देख्यों है आज दिवार ॥
- १६. ते मुक्त कुक्षि विषे अवतरिया, होजी ज्यानै पेखत लोचन ठरिया ॥ १७ इम देवानदा हरप मन वरती,

होजी आतो श्री जिनदर्शन करती।।

### दूहा

१८. एह ढाल कही वारता, सूत्र विषे ते नाय। परपराइ करि कही, अनुमानं कर ताय।।

१६. \*नवम तेतीसम देश विशालं, होजी आतो इकसी अठाणूमी ढाल ।। २०. भिक्षु भारीमाल ऋषिराय पसायो,

होजी ओतो 'जय-जग' आनद पायो।।

⁴लय : आज अंवाजी रे नोपत वाजै

- तिण अवसर प्रभु वीर जिन, ऋपभदत्त नै ताय।
   देवानदा नै विल, मोटी परपद माय।।
   अति मोटी परपद विये, ऋपि परपदा माय।
  - २. आत माटा परेपद ।वप, ऋषि परेपदा माय । जाव परिपदा पडिगया, घर्म सुणी नै ताय ।!
- ३ जाव शब्द मे अर्थ ए, मुनि-परपदा माय।। वाचयम मुनि नाम है, वचन गुप्त अधिकाय।।
- ४ यती परपदा ने विपे, धर्म क्रिया रै माय। यत्नवान अतिही तिको, यती अर्थ कहिवाय।।
- ५ अनेक सय नी परिपदा, अनेक सय परिमाण। तास वृद परिवार जसु, इत्यादिक पहिछाण।। \*प्रभु मोरा शोभ रह्या मुनिगन मे, सुर नर परिपद वृदन मे।।
- ६ ऋपभदत्त व्राह्मण तिण अवसर, जिन वच सुण हरष्यो मन मे। ७. अधिक सतोप पायो हिरदा विच, ऊठी ऊभा ह्वं तन मे॥

(ध्रुपद)

- द्र. तीन प्रदक्षिण देई प्रभु नै, वदन स्तुति करि प्रणमे।। ६ वीर प्रतै कहै हे प्रभु । इमहिज, सत्य वचन तुभना जग मे।।
- १० जिम खधक कह्यो तिम यावत, ए तुम्है कहो छो तिमज गमे।। ११ एम कही जई कृण ईशाणे, आभरण माल्य उतार वमे।।
- १२ स्वयमेव लोच पच मुष्टी करि, वीर पे आय वदै प्रणमे ।। १३. कर जोडी कहै जीव लोक प्रभु । समस्तपणे ए ज्वलित धमे ।।
- १४. प्रकर्षे करि ज्वलित जीव ए, जरा मरण करि अधिक भमे॥
- १५ जिम खधक तिम दीक्षां लीधी, ऋपभदत्त मुनि चरण रमे।
- १६ जाव सामायक आदि देई ने, अग इग्यार भण्यो हिय मे।। १७ जाव वहु चौथ छट्ठ अट्टम तप, दशम तप करि आत्म दमे।। १८ जाव विचित्र तपे करि आतम, भावित वासित शासन मे।।

- १,२ तए ण समणे भगव महावीरे उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणदाए माहणीए तीसे य महतिमहालियाए इमिपरिसाए जाव (स॰ पा॰) परिसा पडिगया (श॰ ६/१४६)
- ३ यावत्करणादिद दृश्यं— मुणिपरिसाए (वृ०प०४६०) तत्र मुनयो—वाचयमा. वृ०प०४६०)
- ४. जइपरिसाए
  यतयस्तु—धर्मिकयासु प्रयतमाना (वृ० प० ४६०)
- ५. अणेगसयाए अणेगमगयवदाए अणेगसयवद परियालाए अनेकानि शतानि यस्याः सा तथा तस्यै अनेकशत। प्रमाणानि वृन्दानि परिवारो यस्या सा तथा तस्यै। (वृ० प० ४६०)
- ६,७. तए ण से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ठे उट्टाए उट्ठेइ,
- प्त, ६ समण भगव महावीर तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, विद्ता नमिसत्ता एव वदासी—एवमेय मते । तहमेय भते ।
- १०,११. जहा खदओ जाव (म० पा०) से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्टु उत्तरपुरित्यम दिसिभाग अवक्कमित्त। अवक्किमत्ता सयमेव आभर-णमल्लालकार ओमुयइ,
- १२,१३ सयमेव पचमुद्विय लोय करेइ, करेत्ता जेणेव समणे भगव महाबीरे तेणेव उवागच्छई .... वदइ नममइ, विदत्ता नमसित्ता एव वयासी—आलित्ते ण भते । लोए,
- १४ पितते ण भते ! लोए, आलित्त-पितते ण भते ! लोए जराए मरणेण य ।
- १५ एव एएण कमेण जहा खदओ तहेव पन्वइओ। (पा॰ टि॰ ७)
- १६,१७ जाव सामाइयमाइयाइ एउकारम अगादं अहिज्जइ अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्यछ्ट्टदुम-दसम
- १८ जाव (स॰ पा॰) विचित्तेहिं तबोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे

<sup>\*</sup>लय: हाजरी में स्वामीनाय हमेशा याद करू

- १ ते माहणकुड ग्राम नगर नै, पिश्चम दिशि में पेख । इहा क्षत्रियकुड ग्राम जे, हुतो नगर विशेख ॥ २. वर्णक उवाई' थकी, तेह क्षत्रियकुड ग्राम । नगर विषे क्षत्रिय-सुत, वसै जमाली नाम ॥ ३. समृद्ध धनादि पिरपूर्ण, तेजवत ते जोय ॥ यावत अपिरभूत छै, पराभवि सकै न कोय ॥ ४ घन किर वल किर रूप किर, गज सकै निर्ह तास । इसो जमालीकुमर ते, पुन्यवत सुप्रकाश ॥
- ५ ऊपर प्रसाद वर वैठा थका रे, अतिहि रभस करि तेह। आस्फालित मस्तक मृदग नारे, फूटवा नी पर जेह।।

चरित्र जमाली नो तुम्हे साभलो रे ।। (ध्रुपद)

- ६ द्वात्रिगत प्रकार अभिनय तणा, तेह थकी सवद्ध। अथवा पात्रे करी इम इक कहै, नाटक में सन्नद्ध।
- ७ नानाविध वहु देश नी ऊपनी, चितहरणी तनु चग । प्रवर प्रधानज तिण तरुणी करी, सप्रयुक्त रस रग ।। द जे जमाली ने पास रह्या छता, नृत्य करण थी जेह । नाटिकया नाचै विल जमाली तणा, गुण गावै धर नेह ।।
- ह वाछित अर्थ प्रतेज पमाडवै, दिवरावते छते दान। जे वाजित्र वजावै तेहना, वाछितार्थ करण थी जान।।
- १० श्रावण भाद्रव पाउस फुन वर्षा, आसोज कार्त्तिक मत । मृगशिर पोप शरद ऋतु जाणवी, माह फागुण हेमत ॥
- ११ चैत वैशाख वसत ऋतु कही, जेठ आपाढ सुलेह। ग्रीष्म छेहडे ए छहु ऋतु भली, ते काल-विशेष विषेह।।
- १२ जिम जे-जे ए छहु ऋतु नै विषे, ते ऋतु नो पहिछाण। सुख अनुभाव प्रतै अनुभवतो थको, काल गमावतो जाण।।
- १३ वल्लभ शब्द फरिस रस रूप ने, विल शुभ गध करेह। पच-विध मनुष्य तणा काम भोगने, भोगवतो विचरेह।।
- \*लय: साधुजी नगरी आया सदा भला रे
- १ ओवाइय सू० १

- तस्स ण माहणकुडग्गामस्स नगरस्स पच्चित्यमे ण एत्थ ण खत्तियकुडग्गामे नाम नयरे होत्या—
- २. वण्णओ । तत्य णं खत्तियकुडग्गामे नयरे जमाली नाम खत्तियकुमारे परिवसइ—
- ३ अड्ढे दित्ते जाव वहुजणस्स अपरिभूते,
- ५ उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहि मुइगमत्थएहि
  'फुट्टमाणेहि' ति अतिरभसाऽऽस्फालनात्स्फुटिब्भिरव (वृ० प० ४६२)
- ६ वत्तीसतिवद्धेहि णाडएहिं 'वत्तीसतिवद्धेहिं' ति द्वात्रिशताऽभिनेतच्यप्रकारैं पात्रैरित्येके (वृ० प० ४६२)
- ७ वरतरुणीसपउत्तेहि
- प्त उवनिच्चिज्जमाणे-उवनिच्चिज्जमाणे, उविगिज्जमाणे-उविगिज्जमाणे, 'उवनिच्चिज्जमाणे' त्ति उपनृत्यमान तमुपश्चित्य नर्त्त-नात् 'उविगिज्जमाणे' त्ति तद्गुणगानात् (वृ० प० ४६२)
- ६ उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे,
   'उवलालिज्जमाणे' त्ति उपलाल्यमान ईप्सितार्थ-सम्पादनात् (वृ० प० ४६२)
- १०. पाउस-वासारत्त-सरद-हेमत'पाउसे' त्यादि, तत्र प्रावृट् श्रावणादि वर्पारात्रोऽश्वयुजादि शरत् मार्गशीर्पादि हेमन्तो माघादि ।
  (वृ० प० ४६२)
- ११ वसत-गिम्ह-पज्जते छप्प उक वसन्त चैत्रादि ग्रीष्मो ज्येष्ठादि ' ' 'ऋतून्' कालविशेपान् (वृ० प० ४६२)
- १२. जहाविभवेण माणेमाणे, काल गालेमाणे, 'माणमाणे' त्ति मानयन् तदनुभावमनुभवन् 'गालेमाणे' त्ति 'गालयन्' अतिवाहयन् । (वृ० प० ४६२)
- १३ इहें सद्-फरिस-रस-रुव-गद्ये पचित्रहे माणुस्सएं कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ। (श० ६।१५६)

- १४ तव क्षत्रियकुड ग्राम नगर विषे, सिंघाटक त्रिक चउनक । चच्चर यावत वहु जन वोलता, एक-एक ने वक्क ॥ १५ जिम उववाड-उपगे आखियो, जावत इम पन्नवेह । तेह विषे ए फुन दाख्यो तिको, लेग थकी निसुणेह ॥
  - सोरठा
- १६ जन-व्यूह जन समुदाय, वोल ते अव्यक्त वर्ण। ध्विन कलकल तेहिज ताय, वचन विभागज लाभते॥
- १७. जन-ऊम्मि ए जान, लोक तणु सवाघ जे। जन-उत्कलिका मान, अति लघु जे समुदाय ते।।
- १८ जन-सन्निपातज सोय, अपर-अपर स्थानक थकी। वहु जन नु अवलोय, मिलवू जे इक स्थानके।।
- १६ वहु जण माहोमाहि, इम आखै सामान्य थी। विल इम भाखै ताहि, प्रगट पर्यायज वचन करि।।
- २० एहिज अर्थ जु दोय, पर्याय थी अनुक्रम करि। कहिये छै अवलोय, चित्त लगाई साभलो॥
- २१ <sup>४</sup>डम पन्नवेइ कहितां विशेष थी, जन कहै माहोमाय। एव परूवेड तह प्ररूपणा, करता जन समुदाय।।
- २२ इम निश्चै देवानुप्रिया । श्रमण भगवत महावीर। धर्म नी आदि तणा करणहार छै, जाव सर्वज सधीर॥
- २३ भला ने पघारचा हो श्री महावीरजी, जगत उधारण जिहाज।
  पूर्ण ज्ञान दर्शन करि परिवर्या, जयवता जिनराज।।
- २४ देखणहार प्रभु सर्व वस्तु ना, माहणकुड ग्राम जेह। नगर ने वाहिर छै भलु, बहुसाल चैत्य विपेह।।
- २५ यथाप्रतिरूप जाव विचरै प्रमु, इहां जाव शब्द में जान। अवग्रह प्रति ग्रही सजम तप करी, आतम भावित मान।।
- २६ ते भणी महाफल देवानुप्रिया । निश्चै करिनै न्हाल। तथारूप अरिहत तणो विल, भगवत नो सुविजाल।।
- २७. जिम उववाई उपग विषे कह्यु, जाव इक दिशि साहमा जाय। सूत्र उवाई में जे आखियो, ते निसुणो चित ल्याय।
- २८ नाम गोत्र जिन नो मुणवे करी, मोटो फल छै तास। तो स्यु किहिंचो सनमुख गमन नो, इहां जयणा सुविमास।।
- २६. बदन स्तुति करवा नु विल, नमस्कार जिर नाम। प्रश्न पूछ्या नो विल किह्वो किस्, मोटो फल गुण घाम।।

\*लय: साधुजी नगरी आया सदा भला रे

१. बो० सु० ५२

- १४,१५ तए ण खत्तियकुडग्गामे नयरे सिंघाडग-तिक-चउक्क-चच्चर-जाव (स० पा०) वहु जणसद्दे इ वा जाव एव भासइ
- १६. जणवृहे इ वा जणवीले इ वा जणकलकले इ वा 'जनव्यूह' जनसमुदाय वील:—अव्यक्तवर्णो ध्विन. कलकलः—स एवीपलभ्यमानवचनविभाग.
- (वृ० प० ४६३) १७. जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा क्रिम्म.—सम्बाध. उत्कलिका—लघुतर समुदाय (वृ० प० ४६३)
- १८ जणसण्णिवाए इ वा सनिपात — अपरापरस्थानेभ्यो जनानामेकत्र मीलन (वृ० प० ४६३)
- १६ वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाडक्खइ एव भासइ, आख्याति सामान्यत भापते —व्यक्तपर्यायवचनत, (वृ० प० ४६३)
- २० एतदेवार्थद्वयं पर्यायत क्रमेणाह— (वृ० प० ४६३)
- २१ एव पण्णवेइ, एव परुवेइ,
- २२ एव खलु देवाणुष्पिया । समणे भगव महावीरे आदि-गरे जाव मन्वण्णू
- २४ सन्तदिरमी माहण भुडग्गामस्स नगरस्स बहिया बहु-सालए चेइए
- २५ अहापिडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।
- २६. त महप्फल खलु देवाणुष्पिया । तहारूवाण अरहताण भगवताण
- २७ जहा ओववाइए [सूत्र ५२] जाव एगाभिमुहे
  'जहा उववाइए' ति, तदेव लेशतो दर्श्यते—
  (वृ० प० ४६३)
- २८,२६. त महप्फल खलु भो देवाणुष्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवताण नामगोयस्सवि सवणयाए किमग पुण अभिगमणबदण-णमसणपिंडपुच्छणपच्जुवासणयाए (ओवाइय सू ४२)

# सोरठा

- ३०. "इहा महाफल सार, प्रश्न पूछवा नु कह्यू। ते जयणा स्यूं घार, तिम जयणा सू गमन फल।। ३१ निरवद्य कारज एह, मन जिन ने वदण तणो। तसु अर्थे पग देह, जयणा थी ते पिण पवर।। ३२ मन वचन ने काय, निरवद्य ए त्रिहु योग नी। आज्ञा दे जिनराय, ते काय भली किम प्रवर्ते॥ ३३ मुनि प्रतिलाभण हेत, अथवा दर्शण निमित्त जे। सू पग देत, तथा करादि हलायवै ॥ ऊभो ह्वं ३४ जयणा सू अवलीय, ते वेस ने। प्रतिलाभै वदै मुनि ॥ होय, ३५ पिण ते हस्त थकीज, वहिरावै तनु योग थी। जयणा थीज, एहमे श्री जिन आगन्या।। ३६ गृही ने न कहै स्वाम, चालो तथा हलाव तू। ते किण कारण ताम ? सभोग नहीं छै ते भणी।।" (ज० स०)
- ३७ \*डक पिण आर्य धार्मिक सुवच नो साभलवै फल सार। तो स्यू किह्वी विपुलज अर्थ नै, ग्रहवै किर सुविचार।। ३६ ते माटै हे देवानुप्रिया। जावा आपा ताम। श्रमण भदत वीर प्रभु विदयै. करा नमस्कार शिर नाम।। ३६. सतकारा आदर देवा विल, फुन सनमाना स्वाम। प्रभु जोग भिक्त किरवै करी, निरवद्य ते अभिराम।।
- ४० कल्लाण हेतु किल्याण ना, विल प्रभुजी मगलीक। दुरित विघन उपगम करिवा तणा, हेतू स्वाम सघीक।।
- ४१. तीन लोक ना अधिपति ते भणी, देवय देवाधिदेव। सुप्रशस्त मन हेतु स्वाम जी, तिण सू चैत्य कहेव।।

#### सोरठा

- ४२. शब्द देवय सोय, विल चैत्य नो अर्थ जे। इहा कह्यो अवलोय, रायप्रश्रेणी वृत्ति थी।। ४३ \*विनय करी सेवा प्रभु नी करा, ए स्वाम वदना आदि। आपारै पर भव जन्मातरे, फुन इहभव अहलादि॥ ४४ हियाए हित ने अर्थे अछै, पत्थ अन्नवत पेख। सुहाए सुख ने अर्थे अछै, वदनादिक सुविशेख॥
- ४५ खमाए सर्व वस्तू मेलवा, ममर्थ अर्थे सोय। निस्सेयसाए कहिता जाणवू, मोक्ष अर्थे अवलोय।।

- ३७ एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए किमंग पुण विजलस्स अट्ठस्स गहणयाए
- ३८ त गच्छामो ण देवाणुष्पिया । समण भगव महावीर वदामो णमसामो (ओ० सु० ५२)
- ३६ सक्कारेमो सम्माणेमो (ओ० सू० ५२)
  'सवकारेमो' ति सत्कुर्म आदर वस्त्राद्यर्चन वा
  विदध्म 'सम्माणेमो' ति सन्मानयाम उचितप्रतिपत्तिभि (ओ० वृ० प० १०६)
- ४० कल्लाण मगल (ओ० स्० ५२) कल्याण—कल्याणहेतुत्वादम्युदयहेतु मगल—दुरितो-पशमहेतु (ओ० वृ० प० १०६)
- ४१ देवय चेइय (ओ० सू० ५२) देवता —देव त्रैलोक्याधिपतित्वात्, चैत्य सुप्रशस्त-मनोहेतुत्वात् (रायपसेणइय वृ० प० ५२)
- ४३ पज्जुवासामो एय णे पेच्चभवे 'इहभवे य' (ओ० सू० ५२)
- ४४ हियाए सुहाए (ओ० सू० ५२) 'हियाए' त्ति हिताय पथ्यान्तवत् 'सुहाए' त्ति सुखाय शर्मणे (ओ० वृ० प० १०६)
- ४५ खमाए निस्तेयसाए (ओ० सू० ५२) 'खमाए' त्ति क्षमाए सगतत्वाय 'निस्तेयसाए' त्ति निश्रेयसाय मोक्षाय (ओ० वृ० ५० १०६)

<sup>\*</sup>लय: साधुजी नगरी आया सदा भला रे

# सोरठा

- ४६. इणहिज भव रै माय, दालिद्र विघन मूकायवै। फुन परभव में ताय, कर्म मूकावा ने अरथ।।
- ४७. \*फुन जे भव नी परंपरा विषे, हुस्यै सुख ने अर्थ। इण हेतु थी प्रभुजी विदयै, कीजे सेव तदर्थ॥
- ४८ एम कहीने वहु उग कुलोत्पना, थापित आदिम देव। कोटवाल ना वग विषे थया, ते कुल उग्र कहेव॥
- ४९ उग्र पुत्र जे तेहनाईज छै, पुत्र पोतादि कुमार। इमहिज भोग राजन क्षत्रिय कह्या, वहु भट सुभट उदार।।
- ५० केइक वदण निमित्तज नीसर्या, केडक पूजण काज। इम सत्कार सम्मान ने, दर्शण निमत्त सुस्हाज।।
- ५१ इम कोतुहल निमित्तज नीसरचा, इत्यादिक अवधार। जावत इक दिशि सन्मुख जन वहु, चाल्या घर मन प्यार॥
- ५२ क्षत्रियकुड ग्राम नगर तणे, मध्योमध्य थइ निकलेह। जिहा माहणकुड ग्राम नगर छै, जिहां बहुसाल चैत्य विपेह।।
- ५३. इम जिम उववाइ में आखियो, जाव त्रिविध जोगेह। पर्युपासना सेत्रा करता छता, ढाल दोय सोमी एह।

- ४७. भाणुगामियत्ताए भविस्सइ (ओ० सू० ५२) 'भाणुगामियत्ताए' ति आनुगामिकत्वाय भवपरम्परामु सानुबन्धमुखाय भविष्यतीतिकृत्वा—इति हेनोरित्ययं.।
- ४८. इतिकट्टु वहवे उग्गा (ओ० सू० ४२) 'उग्ग' ति आदिदेवायम्यापितारक्षवदाजा
- ४६. उग्गपुत्ता भोगा राइन्ना प्यत्तिया भागः जोहा) (ओ० सू० ५२)

'उगगुत्त' ति त एव कुमारावस्या

(ओ० वृ० प० १०६)

- ५०. अप्पेगइया वदणवित्तय एव पूयणवित्तय मक्कारवित्तय (सम्माणवित्तय) (वृ० प० ४६३)
- ५१. को उहलवित्तर्य (वृ० प० ४६३)
- ५२ खत्तियकुण्डग्गामं नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए,
- ५३. एव जहा भोववाइए (सूत्र ५२) जाव तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासित । (श० ६/१५७)

ढाल: २०१

# द्रहा

- १ ते जमाली ने तदा, क्षत्रियकुमर ने ताप। अथवा जन-सन्निवाय।। जन-रव जाव ही, २. वहु जन रव सुणता थका, अथवा वहु जन देख। आश्रित एहवा, अध्यवसाय विशेख। आतम शब्द मे जाव ३ जावत सम्यक ऊपना, घार । प्रार्थित वाछित चितित ते, स्मरण रूप सार ॥
- ४ मनोगत मन मे रह्यु. वाहिर प्रकास्यु नाय। सकल्प विचार ऊपनो, ते सुणज्यो चित ल्याय॥ †वन माहै वीर पघार्या स्वामी, भविजन अन्तरजामी रे। दरसण कर वहु जन ऊम्हाया, हरप हिये हुलसाया रे॥ (ध्रुपद)
- १२ तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुगारस्स त महया-जणसद् वा जाव जणसिन्नवाय वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झित्यए 'अज्झित्यए' त्ति आध्यात्मिक —आत्माश्चित. (वृ० प० ४६३)
- जाव (सं० पा०) समुप्पिज्जित्या
   यावत्करणादिद दृश्य—'चितिए' ति स्मरणरूपः
   'पित्यए' ति प्राथित —लब्धु प्राथित.

(वृ० ५० ४६३)

४ 'मणोगए' त्ति अवहिः प्रकाशित 'सक्पे' ति विकल्प (वृ० प० ४६३)

\*लय: साधुजी नगरी आया सदा मला रे †लय: लाल हजारी को जामो

२४० भगवती-जोड़

५ क्षत्रियकुड ग्राम नगर विषे स्यु, इन्द्र महोच्छव आजो रे। अथवा लघक कार्त्तिकेय नु महोच्छव,

कै हरि वलदेव नो स्हाजो रे?

- ६ अथवा नाग देव नु महोच्छव, कै जक्ष व्यतर नो जाणी।
  अथवा भूत तणो महोच्छव छै कै कूप महोच्छव माणी।।
  ७ अथवा तलाव तणो महोच्छव छै, कै नदी महोच्छव न्हाली।
  अथवा आज महोच्छव द्रह नो, कै गिरि महोच्छव सुविशाली।।
  ८ अथवा रूख तणो महोच्छव छै, कै चैत्य महोच्छव चगो।
  अथवा मृतक वालै ते ऊपर, चोतरो थभ प्रसगो।।
  १ जे भणी ए वहु उग्र वश ना, ऊपना वर कुलभूता।
  भोगा भोग-वश मे ऊपना, कै राजन-वश प्रसूता।।
  १० ईखाग वश तणा फुन ऊपना, ज्ञातपुत्र गुणवता।
  कोरव क्षत्रिय क्षत्रिय ना सुत, सुभट सुभटसुत मता।।
  ११ सेनापति सेना ना नायक, सीखदायक पसत्थारो।
  लेच्छकी जाति ना वलि ब्राह्मण, इव्भ गजतईव्य भूमि मभारो।।
- १२ जिम उववाइ माहि कह्यो छै, सार्थवाह सुखकारो। प्रमुख सगलाइ स्नान करी फुन, करि विल कर्म ववहारो॥
- १३ जिम जववाइ उपगे आख्यु, जावत निकलै ताह्यो। जन वृद इक दिशि सन्मुख जायै, स्यु महोच्छव पुर माह्यो॥
- १४ इम मन माहि विचारी जमाली, कचुइज पुरुप वोलायो। अत पुर नी चिता नो कारक, ते कचुइज ने कहै वायो।।
- १५ अहो देवानुप्रिया । क्षत्रियकुडज, ग्राम नगर रै माह्यो। आज महोच्छव इद्र तणो स्यु, जाव निकले जन वृद ताह्यो ?
- १६ तिण अवसर ते पुरुप कचुइज, जमाली क्षत्रियकुमारो। इम पूछ्ये छते हरपित हुवो, पायो सतोष जिहवारो।।
- १७ श्रमण भगवत महावीर तणो जे, आगम आविव घारो। तेह विषे जै ग्रह्मुकीधू जिण, निश्चय निर्णय सारो।।
- १८ हाथ दोनूड जोड जमाली नै, क्षत्रियकुमर प्रतेहो। जय विजय शब्द करिने वधावै, वधावी वचन वदेहो।।

#### गीतक-छंद

- १६ जय त्व विजय त्व एहवै आशीर्वाद वचन कही। भगवत नु आगमन ते, आनद करि तुभ वृद्धि ही।।
- २० \*अहो देवानुप्रिया । क्षत्रियकुडज ग्राम नगर मे आजो। निश्चै नही छै इद्र महोच्छव, जाव निकले तेहथी समाजो।।
- **\***लय: लाल हजारी को जामो
- १ ओवाइय सूत्र ५२ के वाचनान्तर मे "पायदहरेण " 'एगदिसि एगाभिमुहे" पाठ है। देखें ओ० वृ० प० ११३

- ५. किण्णं अञ्ज खत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इं वा, खदमहे इ वा, मुगुंदमहे इ वा, 'खदमहेइ व' त्ति स्कन्दमह — कार्तिकेयोत्मव' 'मुगुदमहेइ व' त्ति इह मुकुन्दो वासुदेवो वलदेवो वा (वृ० प० ४६३)
- ६ नागमहे इ वा, जनखमहे इ वा, भूयमहे इ वा, क्वमहे इ वा,
- ७. तडागमहे इ वा, नईमहे इ वा, दहमहे इ वा, पन्वयमहे इ वा,
- ८ रुक्खमहे इ वा, चेइयमहे इ वा थूभमहे इ वा,
- ६ जण्ण एते वहवे खग्गा, भोगा, राइण्णा,
- १०. इक्खागा, णाया, कोरव्वा, खत्तिया, खत्तियपुत्ता भडा, भडपूत्ता,
- १२. जहा ओववाइए (ओ० सू० ५२) जाव (स० पा०) सत्यवाहप्पभितयो ण्हाया कयविलकम्मा
- १३,१४ जहा ओववाइए (ओ० सू० ५२) जाव खत्तिय-कुडग्गामे नयरे मज्झमज्झेण निग्गच्छति ? —एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता कचुइ-पुरिस सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वदासी—
- १५, किण्ण देवाणुष्पिया ! अज्ज खत्तियकुडग्गामे नयरे इदमहे इ वा जाव निग्गच्छति ? (श० ६/१५८)
- १६. तए ण से कचुइ-पुरिसे जमालिणा खत्तियकुमारेण एव वृत्ते समाणे हट्टुतुट्टे
- १७ समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहिय-विणिच्छए।
- १८ करयल जाव (स॰ पा॰) जमालि खत्तियकुमार जएण विजएण वद्धावेद्द, वद्धावेत्ता एव वयासी—
- १६. जय त्व विजयस्व त्विमत्येवमाशीर्वंचनेन भगवत समागमनसूचनेन तमानन्देन वर्द्धयतीत भाव । (वृ० ५० ४६३)
- २० नो खलु देवाणुप्पिया । अज्ज खित्तयकुडग्गामे नवरे इदमहे इ वा जाव निग्गच्छति ।

- २१. अहो देवानुप्रिया । इम निञ्चै करि, श्रमण भगवंत महावीरो । निज तीर्थ मे आदि ना कर्ता, जाव सर्वज पुरुप सधीरो ।। २२ सर्व वस्तु नां देखणहारा, माहणकुंड इण नामे । ग्राम नगर मे वाहिर रूडो, वहु साल चैत्य सुवामे ।। २३. यथा योग्य अभिग्रह प्रति गृही ने, जावत विचर जाणी । ते भणी ए वहु उग्र वश नां, भोग-वय ना माणी ।।
- २४ जावत केइयक वदणा निमित्ते, यावत निकले ताह्यो । मोटे मडाण करीने वहु जन, वीर समीपे जायो ॥
- २५ जमाली क्षत्रिय-सुत तिण अवसर, कचुइज नर ने पासो।
  एह अर्थ सुण हिये घारी, पायो हरप सतीप विमासो॥
  २६ दोय सौ एकमी ढाल विपे कह्यु, जमाली मन हरपायो।
  भिक्षु भारीमाल ऋपिराय प्रसादे, जय-जग' हरप सवायो॥

- २१. एवं खलु देवाणुष्पिया ! अज्ज (समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव सव्वण्णू
- २२. सन्वदिरसी माहणकुटग्गामरस नयरस्म बहिया बहुसालए चेइए
- २३. अहापिटिरुवं ओग्गह ओगिण्हित्ता मजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरद्द । तए ण एते वहवे उग्गा, भोगा ।
- २४. जाच अप्पेगद्या वदणवत्तिय निग्गच्छति । (ण० ६/१५६)
- २५ तए णं से जमानी यत्तियकुमारे कचुड-पुरिसस्स अंतियं एयमट्टं गोच्चा निमम्म हदूत्द्वे ।

#### ढाल: २०२

## दूहा

- १ कोडुविक नर तेडने, वोले एहवी वाय। चडघट हय रथ जोतरी, मुक्तपै थापो ताय।।
- २ इहिवध जमाली कह्या, कोडुविक नर जाण। यावत रथ त्यारी करी, आज्ञा सूपी आण।।
- 3. तव जमाली क्षत्रिय-सुत, तिहा मज्जन घर सीघ। तिहा आवै आवी करी, स्नान विल-कर्म कीघ।।
- ४ जिम उवाइ ने विपे, परिपद वर्णक ख्यात। कोणिक नी परिपद कही, तिम कहिवो अवदात॥

वा०—जिम कोणिक ने उवाइ उपग ने विषे परिवार-वर्णक कह्य ते वर्णक, तिम ए जमाली नो पिण । तिहा अनेक जे गणनायक प्रकृतिमहत्तर, दडनायक ते तत्रपालिका, राजा ते मडलीक, ईश्वर ते युवराजा, तलवर ते राज तुष्टमान थइ ने दीधो पट्टवध तेणे करीने विभूषित राजस्थानिका, माडविक ते छिन्नमडप ना अधिपती, कोटुविक ते केतलायक कुटुव थी ऊपना ते सेवक, मत्री प्रसिद्ध, महामत्री ते मत्री ना समूह मे प्रधान हस्ती ना दल इति वृद्धा । गणका ते गणित शास्त्र ना जाण, भडारी इति वृद्धा । दोवारिय ते पोलिया, अमच्च ते राज्य अधिष्ठायका, चेड ते पग ने मूल रहै, पीठमइ ते सभा ने विषे आसन के समीप रहै ते सेवक, नगर ते नगरवासी प्रजा, निगम ते कारणिक काण-मुल्हायदा वाला, सेट्ठि ते श्री देवता नो दीधो सुवर्णपट्ट करि विभूषित मस्तक जेहनो एतले श्री देवी नो सुवर्ण

- १ कोटुवियपुरिसे सद्दावेड, सद्दावेत्ता एव वयामी— चिष्पामेव भो देवाणुष्पिया । चाउग्घट आसरह उवट्ठवेह, जुत्ताभेव उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तिय पच्चिष्पणह। (श० ६।१६०)
- २. तए ण ते कोडुवियपुरिसा जमालिणा प्रत्तियकुमारेण एव वृत्ता समाणा चाउग्घंट आसरह जुत्तामेव उवट्ठवेति, उवट्टवेत्ता तमाणत्तिय पच्चिष्पणित । (ण० १/१६१)
- ३. तए ण मे जमाली खत्तियकुमारे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता ण्हाए कयविलकम्मे
- ४. जाव ओववाइए (ओ० सू०६३) परिसावण्णओ तहा भाणियव्व

वा०—तत्रानेके ये गणनायका.—प्रकृतिमहत्तरा दण्डनायका.—तन्त्रपालका राजानो—माण्डलिका ईश्वरा—युवराजान तलवरा —परितुष्टनरपितप्रदत्त-पट्टवन्धविभूपिता राजस्थानीया माडम्बिका छिन्न-मडम्बाधिपा कोडुम्बिका.—कितपयकुटुम्बप्रभवः अवलगका —सेवका मन्त्रिण प्रतीता महामन्त्रिणो —मन्त्रिमण्डलप्रधाना हस्तिसाधनोपिरका इति च वृद्धाः। गणका —गणितज्ञा भाण्डागारिका इति च वृद्धाः। योवारिका —प्रतीहारा अमात्या—राज्याधि-प्रत्यका, चेटा,—पादमूलिका. पीठमर्दा —आस्थाने

पट्टबंध मस्तक ने विषे छै जेहने, सेनापित ते सेना ना नायक, सार्थवाह, दूत, सिंधपाल ते राज्य-सिंध ना रक्षक, तेणे करि सिंहत परिवरचो ।

- प्र जावत ते चदन करी, लीप्यो गात्र शरीर। सर्व अलकारे करी, थई विभूपित हीर॥
- ६ मजणघर सू नीकली. जिहा वाहरली सोय। उपस्थान-साला अछै, दिवानखानो जोय।।
- ७ जिहा च्यार घटा तणो, हय रथ त्या आवेह। चउघट हय रथ ऊपरै, चढै चढी नै तेह।।
- द सकोरट नामे तरु, तसु फूला नी माल। तिणे करीने छत्र ते, घरीजते सुविशाल।।
- ह मोटा सुभट अने नफर', अति विस्तार सुवृंद। तिण करिने वीट्युं थक्, शोभ रह्युं सुसकद।।
- १० क्षत्रियकुड नामें प्रवर, ग्राम नगर ने ताम। मध्योमध्य थई करी, निकलै निकली आम।।
- ११ जिहा माहणकुड प्रवर जे, ग्राम नगर अवलोय। तिहा चैत्य वहुसाल त्या, आवै आवी सोय॥
  - \*प्रभुजी जग प्यारे। ओ तो त्रिभवनतिलक सुहायो, जिनजी हद प्यारे॥ (ध्रुपद)
- १२ तुरग ग्रहै ग्रही ने तामो, रथ थापै थापी तिण ठामो।।
- १२ तुर्ग प्रह प्रहान ताना, र्य पाप पाप ताप ठाना ॥
  १३ रथ उत्तर उत्तरी तिवारो, छाडै फूल तवोल हथियारो ॥
- १४ आदि शब्द थकी अवलोई, तजे चामर छत्रादी जोई।।
- १५ विल पानही पग थी तजतो, प्रभु भक्ति करै घर खतो।।
- १६ इक पट विचै सीवण नाही, तिण सु करि उत्तरासग त्याही ।।
- १७ शौच अर्थे उदक फर्शतो, चोखो अशौच द्रव्य टालतो।।
- १८ एह थकीज अवलोई, ओतो परम शुचिभूत होई॥
- १६ अजली कर सुप्रसीघ, दोडा नी पर जिण कीघ।।
- २० जिहा श्रमण भगवत महावीर, तिहा आवै आवी जिन तीर।।
  †करै शुद्ध सेव जिन देव नी क्षत्रिय-सुत। (घ्रुपद)

आसनासीनसेवकाः वयस्या इत्यर्थः । नगर—नगर-वासि प्रकृतय निगमा —कारणिका श्रेष्ठिनः—श्री-देवताऽध्यासितसीवर्णपट्टिवभूषितोत्तमाङ्गाः सेनापतयः —सैन्यनायकाः दूता —अन्येषा राजादेशनिवेदकाः सन्धिपाला—राज्यसन्धिरक्षका (वृ० प० ४६३,४६४)

- ५. जाव चदणुक्खित्तगायसरीरे सव्वालकारविभूसिए
- ६. मज्जणघराओ पिडिनिक्खमइ, पिडिनिक्खिमत्ता जेणेव बाहिरिया खबट्ठाणसाला
- ७. जेणेव चाउम्घटे आसरहे तेणेव उनामच्छइ, उवा-गच्छित्ता चाउम्घट आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता
- सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण
- ६. महयाभडचडकरपहकरवदपरिविखत्ते
- १०. खत्तियकुडग्गाम नगरं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छत्ता
- ११. जेणेव माहणकुडग्गामे नयरे, जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव जवागच्छइ, जवागच्छित्ता
- १२. तुरए निगिण्हेइ, निगिण्हेत्ता रह ठवेइ, ठवेत्ता
- १३,१४ रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पुष्फतवोला-उहमादिय

इहादिशब्दान्छेखरन्छत्रचामरादिपरिग्रह (वृ० प० ४६४)

- १५ पाहणाओ य विसज्जेति
- १६ एगसाडिय उत्तरासग करेड
- १७ आयते चोनखे
  'आयते' त्ति शौचार्यं कृतजलस्पर्शः 'चोक्खे' त्ति
  आचमनादपनीताशुचिद्रव्यः (वृ० प० ४६४)
- १८. परमसुइन्भूए 'परमसुइन्भूए' त्ति अत एवात्यर्थं शुचीभूतः (वृ० प० ४६४)
- १६ अजलिमचलियहत्ये अञ्जलिना मुकुलिमव कृती हस्ती येन सः (वृ० प० ४६४)
- २० जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छई, उवागच्छिता

१. सेवक

<sup>\*</sup>लय: ज्यांर शोभे केसरिया साड़ी

<sup>†</sup>लय: कड़खो

२१ श्रमण भगवंत महावीर प्रते वार त्रिण, जीमणा पासा थी जाव जाणी। त्रिविध-त्रिविध मन वचन काया त्रिहु जोग नी, पर्युपासनाइ करी सेव ठाणी।।

२२. श्रमण भगवंत महावीर तिण अवसरे,

जमानी क्षत्रिय सुतन ने जाणी।

मोटी विस्तारवत ऋषि परिषद आदि ने,

जावत धर्म-कथा वखाणी ॥

२३. मजाव परपद गई निज स्थान, वारू वीर तणी सुण वान ॥

२४. जमाली क्षत्रियकुमर तिवारै, वीर वाणी सुणी हिये घारै।।

२५. वहु हरप सतोपज पायो, जाव हृदय अति विकसायो।। २६. ऊठवै करि ऊभो थावै, ओतो ऊभो थई इम भावै।। २७. एतो श्रमण भगवत महावीर, त्याने तीन वार गुणहीर ॥ २८ जाव नमस्कार करि ताह्यो, ओतो वोलै इहविघ वायो।। २६ सरध् छू हे भगवान । निर्ग्रंथ नां प्रवचन जानं।। ३०. प्रीत विषय करू छूं भदंत, निग्नैय ना प्रवचन तत ॥ ३१. हूं तो रोचवु प्रभुजी ! उदारू, एतो निग्नैय प्रवचन वार ॥ ३२. उद्यमवत ययो छूं भदत ! एतो निर्ग्य प्रवचन तत ॥ ३३. इमहिज प्रभुजी ! जे उक्त, जायमान प्रकार सजुक्त ॥

३४. तिमहिज हे भगवंत ! आप्त वच करि जाणिय तत।।

३५ अवितथ ए अन्यथा न थाई, प्रभु ! किणही काल रै माही ॥

३६. हे भगवंत । सदेह रहीत, एतो आपरा वचन वदीत ॥ ३७. जावत ते जिम एह, प्रभु तुम्है वदो छो जेह।। ३८. जे एतलु विशेष सुवामी, अहो देवानुप्रिया । अतरजामी।। ३६. कही ढाल दोयसी दूजी, प्रतिवोच्यो जमाली ने प्रभूजी ॥

ढाल : २०३

दूहा

१. मात पिता ने पूछसूं, तठा पछे अवघार। देवानुप्रिय आगलै, मुंड थई ने सार।।

२१. समणं भगवं महाबीरं तिवयुत्तो आवाहिण-गवाहिण करेइ, करेता वंदा नमगा, विदत्ता नमीमना तियिहाए पञ्ज्वासणाए पञ्ज्वासइ (म॰ ६/१६२)

२२. तए णं ममणे भगवं महावीरे जमातिस्य सत्तिय-युगारस्त, तीमे य महतिमहानियाए इमि जाव (स॰ पा॰) धम्मकहा

२३. जाव परिमा पटिगया।

(म० ६/१६३)

२४. तए ण से जमाली यत्तियकुमारे समणस्य भगववी महाबीरसा अतिए धम्म मोच्चा नियम्म

२५. हट्ट जाय (सं० पा०) हियए

२६ चट्टाए उट्ठेड, उट्ठेता

२७. ममण भगव महाबीर तिक्युत्ता

२८. जाव (स॰ पा॰) नमित्ता एव वयामी-

२६. सद्द्वामि ण भते ! निरगयं पावयणं

३०. पत्तियामि ण भते ! निगाय पावयणं

३१. रोएमि ण भते । निग्गंयं पावयण

३२. अवभुट्ठेमि णं भते ! निगायं पावयण

३३. एवमेयं भते !

'एवमेयं' ति उपलभ्यमानप्रकारवत् (वृ० प० ४६७)

३४. तहमेय भते !

'तहमय' ति आप्तवचनावगतपूर्वाभिमतप्रकारवत्

(वृ० प० ४६७)

३५ अवितहमेयं भते !

'अवितयमेतत्' न कालान्तरेऽपि विगताभिमतप्रकार-मिति । (वृ० प० ४६७)

३६. असदिखमेयं भते !

३७. जाय (म० पा०) से जहेयं तुरने यदह

३८. ज नवरं-देवाणुष्पया !

१. अम्मापियरो आपुच्छामि, तए ण अह देवाणुप्पियाण अंतिय मुडे भवित्ता

\*लय: ज्यारे शोभे केसरिया साड़ी

२४४ भगवती जोड

- २ गृहस्थावास अगार थी, अणगारपणां प्रतेह। अगीकार करसू सही, निमल चरण गुणगेह।।
- ३ जिम सुख देवानुप्रिया । मा प्रतिवध करेह। जमाली जिन वचन सुण, हरण सतीप लहेह।।
- ४. श्रमण भगवत महावीर नै, तीन वार घर खत। जावत नमण करै करी, चउघट रथे चढत।।
- ५ श्रमण भगवत महावीर ना, समीप थी अवलोय। यहुसाल नामा चैत्य थी, पाछो निकलै सोय।।
- ६. सकोरट पुफमाल करि, जावत छत्र घरेह। मोटा भट नफरे करी, जावत वीट्यू जेह।।
- ७ जिहां क्षत्रियकुड जे, ग्राम नगर तिहा आय। क्षत्रियकुड ग्राम नगर मे, मध्योमध्य थइ ताय।।
- द जिहा पोता नो घर अछै, जिहा वाहिरली जेह। उपस्थान-साला तिहा, आवै आवी तेह।।
- ह. तुरग प्रति ग्रहै ग्रही करी, रथ प्रति स्थापै सोय।रथ थापी फुन रथ थकी, उतरै उतरी जोय।।
- १० जिहा अभ्यतर माहिली, उवस्थान जे साल। जिहा मात अरु तात त्या, आवै आवी न्हाल।।
- ११ मात पिता ने जय विजय, वचने करी वधाय। जय विजय गटद वधायने, वोलै एहवी वाय।।

# \*हू अरज करूं छू आपसू ।। (ध्रुपद)

- १२ इम निश्चै करि म्है सही, अहो मात पिता सुखदाय। हो माजी । श्रमण भगवत महावीर पै म्है, धर्म सुण्यो चित ल्याय।। हो पिताजी!
- १३ ते पिण धर्म म्है विछियो, वछ्यो विल वारूवार । हो माजी । अथवा भाव थी पडिवज्यो, ते पडिच्छिय सुविचार ।। हो पिताजी ।
- १४ अभिरुइय ते धर्म नो स्वादपणा प्रति पाय। हो माजी । ओपमा वाची ए शब्द छै, सरस धर्म सुखदाय।। हो पिताजी ।
- १५ तिण अवसर जमाली तणा, मात पिता हरपाय। रे जाया । जमाली क्षत्रियकुमर ने, बोलै एहबी वाय।। रे जाया । [धन्य धन्य पुत्र । धन्य तू।]
- १६ वन्य लिंव्य छै ते भणी, अहो पुत्र । तू घन्न । रे जाया । कृतार्थ पुत्र तू अछै, कीधू निज प्रयोजन्न ॥ रे जाया ।
- १७ कीघू छै पुन्य पुत्र ! तै, पिवत्र घर्म उदार। रेजाया ! अर्थ सिंहत लक्षण देह ना, तू कृत-लक्षण सार।। रेजाया!

- २ अगाराओ अणगारिय पव्वयामि ।
- ३. अहासुह देवाणुष्पिया । मा पडिवंध । (श० ६।१६४)
- ४ समण भगव महाविश्र-तिक्खुत्तो जाव (सं० पा०) नमसित्ता तमेव चाउग्घट आसरह दुरुहइ
- भ समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पिडिनिक्खमइ
- ६. सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण महया भड-चडगरपहकरवदपरिक्खित
- ७ जेणेव खर्तियमुडग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता खत्तियमुडग्गाम नयर मज्झमज्झेण
- जेणेव सए गेहे जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
- ह. तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रह ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चीरहइ, पच्चीरुहित्ता
- १० जेणेव अन्भितरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव अम्मा-पियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
- ११ अम्मापियरो जएण विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एव वयासी---
- १२ एव खलु अम्मताओं। मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मे निसते
- १३. से वि य में धम्मे इच्छिए, पिड्निछए 'पिडिच्छिए' ति पुन पुनिरिष्टः भावतो वा प्रतिपन्न (वृ० प० ४६७)
- १४ वीमरेइए (श० ६।१६५) 'अभिरुइए' ति स्वादुभाविमवीपगत (वृ० प० ४६७)
- १५. तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो एव वयासी---
- १६ धन्ने सि णं तुम जाया । कयत्ये सि ण तुम जाया । 'कयत्येऽसि' त्ति 'कृतार्थं 'कृतस्वप्रयोजनोऽसि (वृ० प० ४६७)
- १७. कयपुण्णे सि ण तुम जाया । कयलक्खणे सि ण तुम जाया !
- ्. 'कयलक्खणे' त्ति कृतानि—सार्थकानि लक्षणानि— देहचिह्नानि येन स कृतलक्षणः। (वृ० प० ४६७)

<sup>\*</sup>ल्यः जो स्वामी म्हारा राजा ने धर्म सुणावज्यो

- १८ जे भणी श्रमण भगवंत ने, महावीर ने पास। रे जाया । वर्म सूणी ते पिण वर्म ने वाछ्यो आण हुलास।। रे जाया।
- १६ पडिच्छिय कहिता तिको, वंछ्यो वारूवार । रे जाया ! अभिरुइय स्वाद भाव जे, पाम्यो तू सुखकार ॥ रे जाया <sup>।</sup>
- २० क्षत्रिय सुत जमाली तदा, मात पिता ने ताय। हो माजी ! द्वितीय वार पिण विधि करी, बोर्ल एहवी वाय।। हो पिताजी !
- २१. डम निश्चै माता । पिता । श्रमण भगवत वीर पास । हो माजी ! वर्म सुणी दिल घारियो, जाव रोचव्यो हुलास ॥ हो पिताजी ।
- २२ ते माटै माता ! पिता ! चतुर्गतिक ससार । हो माजी ! तेहनां भय थी उद्देग जे, पाम्यो खेद अपार ।। हो पिताजी !
- २३. वीहनो जनम मरणे करी, ते माटै अववार । हो माजी ! वाछू छूं हे माता ! पिता !, तुम्ह आज्ञा थया सार ।। हो पिताजी !
- २४ श्रमण भगवत महावीर पै, मुंड थई घर त्याग। हो माजी । वर अणगारपणा प्रतै, पडिवजवू जिव माग।। हो पिताजी ।
- २५. जमाली क्षत्रियकुमर नी, माता ते तिण वार । हो भवियण ! तेह अनिष्ट अवछका, वचन सुण्या दुखकार ।। हो भवियण ! (विरुक्षो मोह ससार मे ।)
- २६. अकात ते मनोहर नहीं, अप्रिय अप्रीतिकार। हो भवियण । अमनोज्ञ मन में न जाणिय, वच नु सुदरपणु सार।। हो भवियण।
- २७. अमणाम ते मन ने विषे, नहीं संभरिये वारूवार । हो भवियण ! एहवा वचन अलखावणा, अति अणगमता अपार ।। हो भवियण !
- २८ पूर्वे कदेई सुणी नही, एहवी निसुणी वाण।हो भवियण । हृदय विषे घारी करी, उपनो दुक्ख अचाण।।हो भवियण।
- २६ परिसेवो आविवै करी, रोम-कूप थी तेह। हो भवियण! भरवा लागा विदुवा, क्लीन थई तसु देह।। हो भवियण!
- ३०. अतिही शोक करी विल, प्रकर्षे किर सोय। हो भिवयण ! कंपण लागो अग जसु, तेज वीर्य रहित होय।। हो भिवयण !
- ३१. दीन विमन जिम मुख जसु, करतल मसली जेह। हो भवियण ! कुमलाणा फूला तणी, माला जिम थइ तेह।। हो भवियण !
- ३२. दीक्षा-वचन सुणी ततिखणे, ग्लान दुर्वल थड देह । हो भवियण । फुन लावण्य करि शून्य थई,
  - विल कांति रहित थड जेह ।। हो भवियण ।
- ३३ गोभा रहित थई तिको, प्रकर्षे अवलोय। हो भवियण । गिथिल भूपण थया जेहना, दुर्वलपणां थी सोय।। हो भवियण ।
- ३४. भूपण पडवा लागा वली, वहु कृश थकी जेह। हो भवियण ! नमती भूइ पड़वा थकी, अन्य प्रदेश विपेह।। हो भवियण !

- १८ जण्णं तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मे निसते, से वि य ते धम्मे इन्छिए
- १६. पढिच्छिए, अभिरुइए । (ग॰ ६।१६६)
- २०. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो दोच्च पि एवं वयामी—
- २१. एवं खलु मए अम्मताओ ! समणस्स भगवओ महानीरस्स अंतिए धम्मे निसते जान (स॰ पा॰) अभिरुद्ध ।
- २२. तए ण अहं अम्मताओ ! ससारभजिवनो
- २३. भीते जम्मण-मरणेणं, त इच्छामि ण अम्मताओ । तुटभेहिं अटमणुण्णाए समाणे
- २४. समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पन्वइत्तए। (२० ६।१६७)
- २५. तए ण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता त अणिट्ठं 'अनिट्ठ' ति अवाच्छिताम् (वृ० प० ४६७)
- २६. अकंत अप्पिय अमणुण्ण 'अकंत' ति अकमनीयाम् 'अप्पिय' ति अप्रीतिकरीम् 'अमणुन्न' ति न मनसा ज्ञायते सुन्दरतयेत्यमनोज्ञा ताम् (वृ० प० ४६७)
- २७. अमणाम
  'अमणाम' ति न मनसा अम्यते —गम्यते पुन पुन
  सस्मरणेनेत्यमनोज्ञा ता (वृ० प० ४६७)
  २८. अस्सुयपुब्वं गिरं सोच्चा निसम्म
- २६. सेयागयरोमक्वपगलतचिलिणगत्ता
- ३०. सोगभरपवेवियगमगी नित्तेया (वृ० प० ४६७)
- ३१ दीणविमणवयणा करयलमलिय व्व कमलमाला
- ३२ तक्खणओलुग्गदुन्वलसरीरलावण्णसुन्ननिन्छाय। तत्क्षणमेव-प्रव्रजामीतिवचनश्रवणक्षण एव अवरुगण-म्लानं दुर्वेल च शरीर यस्या सा (वृ० प० ४६७)
- ३३. गयसिरीया पसिढिलभूसण प्रशिथिलानि भूपणानि दुर्वेलत्वाद्यस्या सा (वृ० प० ४६८)
- ३४,३५. पडतखुण्णियसचुण्णियधवलवलय-पट्मट्टउत्तरिज्जा पतन्ति—कृशीभूतवाहुत्वाद्विगलन्ति 'खुन्निय' ति भूमिपतनात् प्रदेशान्तरेषु निमतानि संचूणितानि च— भग्नानि कानिचिद्ववलवलयानि—नथाविधकटकानि

- ३५. चूर्णे थया भागा वली, घवल निमल विलया जास । हो भिवयण ! व्योकुलपणा थी ओढणो, मस्तक थी पडचो तास ।। हो भिवयण ! ३६ मूच्छी-वश न्हाटी चेतना, भारीपणों तन नु तास । हो भिवयण ! सुकमाल केश चोटी तणा, विखरिया छै जास ।। हो भिवयण !
- ३७ फरसी ते कुहाडे करी, छेदै छतै जिवार। हो भवियण ।
  भूड पडै चपक लता, तिम पडी राणी तिवार।। हो भवियण ।
  ३८ निवर्त्या महोच्छव यदा, इद्रलट्टी पहिछाण। हो भवियण ।
  विमुक्त-सिंघ वघण जसु, भूड पडै तिम जाण।। हो भवियण ।
  ३६ मणि भूमितल नै विपे, घसक ऊतावली घार। हो भवियण !
  सर्वांगे करि भूइ पडी, थई अचेत तिवार।। हो भवियण !
  ४० ढाल दोयसी ऊपरै, तीजी आखी ताय। हो भवियण !
  मोह वंगे माता थई, अथि-अथि मोह वलाय।। हो भवियण !
- यस्याः सा तथा, प्रम्नष्ट न्याकुलत्वादुत्तरीयं वमन-विशेषो यस्याः सा (वृ० प० ४६८)
- ३६. मुच्छावमणहुचेतगरुई मुकुमानविकिण्णकेसहत्या मूच्छाविशान्नष्टे चेतिस गुर्व्यी—अलघुगरीरा या मा (वृ० प० ४६८)
- ३७. परसुणियत्त व्य चपगलया परशुच्छिन्नेय चम्पकलता (वृ० प० ४६८)
- ३८,३६. निव्यत्तमहे व्य इदलट्ठी, विमुक्कमधियधणा कोट्टिमतलंसि धसत्ति सव्यगेहिं सनिवाहिया। (श० ६।१६८)

# ढाल: २०४

#### दूहा

- १ जमाली क्षत्रियकुमर नी, माता ते तिणवार। सभ्रमचित व्याकुलपणे, थई अचेत अपार।।
- २. ताम शीघ्र दासी तसु, कचन वर भृगार। तसु मुख थी निर्गत विमल, शीतल जल नी घार।।
- ३ तिण जलघाराङ करी, सीचवै करि घार। निर्वापिता स्वस्थी कृता, गात्र-लिट्ट तनु सार।।
- ४ उत्क्षेपक वशादिमय, मुष्टिग्राह्य जस दङ। तालवृन्त तरु ताल नो, पत्रच्छोड सुमङ॥
- प्र अथवा किह्यै चर्ममय, तालपत्र आकार। वीजनक वज्ञादिमय, तेह तणीज प्रकार॥
- ६ इत्यादिक वीजन करी, जिनत वाय सुखदाय। तेह वीजणो जल करी, भीजोवी करै वाय॥
- ७ विदु-सिहत वीजणे करी, वीज्या थई सचेत। अनेउर परिजन करी, आसासतीज तेथ।।
- द्र. रोवती आक्रन्द फुन, करती शब्द विशेख। घरती शोक मने करी, विलपती सुत पेख।।
- इ. जमाली क्षत्रियकुमर, तेह प्रते अवघार।मोह वश माता इहविघे, वचन वदे तिहवार।।

- १. तए णं सा जमालिस्स खित्तयकुमारस्स माया समध-मोवित्तयाए ससम्ब्रम च्याकुलिचत्ततया (वृ० प० ४६८)
- २,३. तुरिय कचणिभगारमुह्विणिग्गय-सीयलजनविमल-धारपरिसिच्चमाणनिव्वावियगायलट्टी निर्व्वापिता—स्वस्थीकृता (वृ० प० ४६८)
- ४,६. उन्सेवय-तालियंट-त्रीयणगजणियवाएण
  उत्सेपकोवशदलादिमयो मुप्टिग्राह्यदण्डमध्यभाग.
  तालवृन्त—तालाभिधानवृक्षपत्रवृन्त तत्पत्रच्छोट
  इत्यर्थं. तदाकार वा चम्ममय वीजनक तु— वशादि-मयमेवान्त ग्रीह्यदण्ड एतैंजीनतो यो वात म तथा तेन (पृ० प० ४६८)
  - ७ सफुसिएण अतेउरपरिजणेण आसामिया ममाणी 'सफुसिएण' सोदकविन्दुना (वृ० प० ४६८)

  - ६. जमानि यत्तियकुमार एवं वयामी-

# \*रे जाया । इम किम दीजै रे छेह ॥ (ध्रुपदं)

- १० एक पुत्र तू माहरै रे, वल्लभ इष्ट अपार। कात मनोहर तू सही रे, प्रिय ते प्रीतीकार।।
- ११ मनोज्ञ मनगमतो घणो, मणाम ते मन माय। वार-वार हू सभक्ष, अहिनिश्चि मे अधिकाय।।
- १२ स्थिरता गुण जोगे करी, थेज्जे कहियै जान।
  , वेसासिए कहिता वली, विश्वास नो तू स्थान।।
- १३ मान्य हुवै सहज्या सही, जेणे कीधो कार्य। समत कहियै तेहनै, न करै ते अविचार्य।।
- १४ बहुमत बहु कारज विषे, पिण मानवा योग्य उमग। अथवा तू मुफ्त ने घणो, मानवा योग्य सुचग।।
- १५ अनुमत ते कारज विषे, कदा हुवै व्याघात। पछै पिण मानण योग्य छै, अणगमतो नहि तिलमात।।
- १६ भड करडक सारिखो, भड ते आभरण जाण। तसु भाजन जे डावडो, तेह करड समान॥
- १७ रयण कहिता नर-जात मे, उत्कृष्टपणा थी रत्न। अथवा रजक तू सही, रयण अर्थ सप्रयत्न॥
- १८ तूरत्न चितामणि सारिखो, जीविकसविए जाण। मुभ जीवित छै तुभ थकी, तुभ विण नहि रहै प्राण।।
- १६ अथवा जीवित नै विषे जी, ओच्छव सम अधिकाय। फुन मन समृद्ध कारको, देख्या हिय हरखाय।।
- २०. ऊवर फूल लाधै नहीं, तिम सुणवो दुर्लभ सोय। फुन देखण रो कहिवो किसू ? अग आमत्रणे जोय।।
- २१. ते माटे निश्चे करी, तुभ विजोग खिण-मात'।
  निह वछा महै निह सुणा, हे सुत । साभल वात।।
  २२. ते भणी रहो घर ने विषे, त्या लग हे सुत । सार।
  महै जीवा छां ज्या लगे, महै काल गया पछै धार।।
  २३ वय-परिणत वृद्ध थया पछै, पुत्र-पोत्रादि वधार।
  कुल रूप वश ततु तिको, दीर्घपणै विस्तार।।

\*लय: खिम्यावंत जोय भगवत रो रे ज्ञान

१. क्षण भर

- १० तुमं सि णं जाया । अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते पिए
- ११. मणुणो मणामे
- १२ थेज्जे वेसासिए
  'थेज्जे' त्ति स्थैर्यगुणयोगात्स्थैर्य. 'वेसासिए' त्ति विश्वासस्थानं (वृ० प० ४६८)
- १३. समए
  'समए' त्ति समतस्तत्कृतकार्याणा समतत्वात्
  (वृ० प० ४६८)
- १४. वहुमए
  'वहुमए' त्ति वहुमत वहुष्विप कार्येषु वहु वा —
  अनल्पतयाऽस्तोकतया मतो वहुमत । (वृ० प० ४६०)
- १५ अणुमए
  'अणुमए' त्ति कार्य्यव्याघातस्य पश्चादिष मतोऽनुमत (वृ० प० ४६८)
- १६ भडकरडगसमाणे भाण्ड—आभरण करण्डक तद्भाजन तत्समानस्त-स्यादेयत्वात् (वृ० प०४६५)
- १७ रयणे

  'रयणे' त्ति रत्नं मनुष्यजाताबुत्कृष्टत्वात् रजनो वा
  रञ्जक इत्यर्थ (वृ० प० ४६८)
- १८,१६ रयणव्भूए जीविकसिवए हिययनिवजणणे हिययन निवजणणे 'रयणभूए' त्ति चिन्तारत्नाविविकल्प 'जीविकसिवए' त्ति जीवितमुत्सूते—प्रसूत इति जीवितोत्सव। जीवितविषये वा उत्सवो—मह स इव य स जीवितोत्सिविक (वृ० प० ४६८)
- २० उवरपुष्फ पिव दुल्लभे सवणयाए, किमग । पुण-पासणयाए ? 'उवरे' त्यादि, उदुम्बरपुष्प ह्यलभ्य भवत्यतस्तेनोप-मान 'किमग पुण' ति किं पुन अगेत्यामन्त्रणे (वृ० प० ४६८)
- २१ त नो खलु जाया । अम्हे इच्छामो तुब्म खणमिव विष्पयोग।
- २२. त अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहि कालगएहिं समाणेहि
- २३. परिणयवए विड्ढयकुलवसततुकज्जिम्म विद्वते—पुत्रपौत्रादिभिवृंद्विमुपनीते कुलरूपो वशो न वेणुरूप कुलवश.—सन्तानः स एव तन्तुर्दीर्घत्वसा-धम्यात् कुलवशतन्तुः (वृ० प० ४६८)

- २४. एहिज सहु कारज करी, थइ विषय नी वाछा-रहीत। सकल प्रयोजन साधने, चरण थकी घर प्रीत।।
- २५ श्रमण भगवत महावीर पे, मुड थई सुखकार। अगार गृहस्थावास थी, तू थार्ज अणगार॥ २६. वे सी चीथी ढाल मे, मोह तणे वश माय। सुत घर मे राखण भणी, किया अनेक उपाय॥

# ढाल: २०५

#### दूहा

- १ तव जमाली खित्र-सुत, [कहै] मात पिता नैं वाय। तिमहिज ते निह अन्यथा, जे मुक्त आख्यु ताय।। २ हे मात । पिताजी । जे भणी, थे मुक्त इम भाखत। तू छै इक सुत माहरे, हे जात । इच्ट अरु कत।। 3, तिमहिज ते पूर्वे कह्यं, तिम किहवू अवदात। जाव अणगारपणा प्रते, पिडवजे तू जात। ४ इम निश्चे मा। तात जी। ए मनुभव अवतार। अनेक जन्म जरा मरण, रोग रूप अवधार।। ४, शारीरिक तापादि फुन, चिंता मन नु जान। ए दोनूई दुख तणु, भोगविवू असमान।। ६ चौर्य द्युतादिक ना व्यसन, जेह सैंकडा जोय। उपद्रव किर पराभवू, ए नर भव अवलोय।।
- ७. इण कारण थी अधुव ए, नियत काले ताय। अवश्य उदय जिम रिव तणु, तिम ध्रुव नर भव नाय।।
- द. नियत रूप नहिं ए वली, राजा ने पिण जेम। दालिद्रपणु हुवै कदा, नर-भव अनियत एम।।
- १. नर भव वली अशाश्वतो, खिरण-स्वभाव पिछाण।
   तेहिज किहयै छै हिवै, उपमाये किर जाण।
- १० सघ्या ना वादल जिसो, पच रग सम पेख।
  जल परपोटा सारिखो, मनुष्य आउखो देख॥
  ११ डाभ अग्र जल विंदु सम, स्वप्न-दर्शन उपमान।
  चचल वीजल नी परं, ए तनु अनित्य जान॥

- २४. निरवयनसे 'निरवकाक्षः' निरपेक्ष. सन् सकलप्रयोजनानाम् (वृ० प० ४६⊏)
- २४. समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुढे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइहिसि । (श॰ ६।१६६)

- १. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी--तहा वि ण त
- २. अम्मताओ ! जण्ण तुन्भे मम एव वदह--तुम सि ण जाया ! अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते
- ३. त चेव जाव पव्वइहिंसि
- ४. एव खलु अम्मताओ । माणुस्सए भवे अणेगजाइ-जरा-मरण-रोग-
- ५. सारीरमाणसपकामदुवखवेयण
- ६ वसणसतोवद्वाभिभूए व्यसनानां च—चौर्यद्यादीना यानि जतानि उपद्रवाश्च (वृ० प० ४६६)
- ७. अधुवे 'अधुवे' ति न घ्रुव.—सूर्योदयवन्न प्रतिनियतकालेऽ-वश्यम्भावी (वृ० प० ४६६)
- म. अणितिए
   'अणितिए' त्ति इतिशब्दो नियतस्पोपदर्शनपर. तत्तक्च
  न विद्यत इति यत्रामावनितिक —अविद्यमानियतस्वरूप इत्यर्थं. ईण्वरादेरिप दारिद्रघादिभायात्
  (वृ० प० ४६६)
- स्तासए
   'असासए' ति क्षणनश्वरत्वात्, अशाश्वतत्वमेवोपमान-दंशंयन्नाह— (यृ० प० ४६६)
- १०. संझब्भरागसरिसे जलवुब्बुदममाणे
- कुनग्गजलिंदुमिन्निभे सुविणदनणोपमे विज्जुलया-चचले अणिच्चे

श० ६, उ० ३३, हाल २०४,२०५ र्४६

# गीतकछंद

- १२. सडवूज अगुलि आदि नु, कुष्टादि रोगे करि कही।
  पडवूज वाहू प्रमुख नु, खडगादि जोगे करि वही।।
- १३. फुन तनु विधसन क्षय हुवै, एहीज छै जसु घर्म ही। तेहथी पहिला पछै वा, हुस्यै त्यजिवू अवस्य ही।।

#### दुहा

- १४ कुण जाणे हे मात । पितु । पिता पुत्र नों जोय। पहिला मरित्रु केहनु, पाछ केहनु होय?
- १५ तिणसू हू वांछू अछू, अहो मात । फुन तात। तुम्ह आज्ञा दीधे छते, दीक्षा ल्यू प्रभु हाथ।।
- १६. तिण अवसर क्षत्रिय-तनय, जमाली ने वाय। मात-पिता कहै इहविधे, साभलज्यो चित त्याय।। \*मात कहै वच्छ । सांभले। (ध्रुपद)
- १७. ए तनु हे सुत ! तांहरो, अतिहि विभिष्ट सुरूपो रे। लक्षण व्यजन गुण भला, तिण करि सहित अनूपो रे।।
- १८. लक्षण श्रीवच्छ प्रमुख जे, व्यजन मस तिलकादि। विहु ना गुण करि सहित छै, ए तुज तनु अहलादि।।

#### गीतकछंद

- १६ स्थिर अस्थि जेहनी तेहनों फल, अर्थ लाभ विशेप ही। फुन मास उपचित ने विषे, जे रह्युं सुख सपेख ही।।
- २०. त्वच पातली नै विषे लहियै, भोग लाभ म जाणियै। विशिष्ट चक्ष् तास फल वर, लाभ स्त्री नुमाणिये।।
- २१ रमणीक सुदर गति तणु, फल यान लाभ लहीजियै। स्वर शोभनीकज फल तसु, वर आण तास वहीजियै।
- २२ गुण सत्व में सगला रह्या इम, वृत्तिकार वखाणियो। ते थकी अधिकार सगलो, अत्र महै पिण आणियो॥
- २३. \*उत्तम वल करि सहित छै, उत्तम वीर्य सहीतो। उत्तम सत्व सहित जे, तू सुत पवर पुनीतो।।
- २४. वल ने शरीर तणु कह्यु, वीर्यमन नु आधारो। सत्व ते चित्त ना अवीखरचा अध्यवसाय उदारो॥
- २५ अथवा उत्तम जे बिहु, वल फुन वीर्य उदारो। तेह विषे सत्व जे सत्ता तिण करि युक्त कुमारो।
- २६ विज्ञान वहुत्तर कला करि, तू छै विचक्षण डाहो। सोभाग्य सहित गुणे करी तू, ऊचो अधिक अथाहो।।
- २७. अभिजात कुलीन छै, मोटी क्षमा वरदाई। अथवा कुलीन छै तेह मे, पुजनीक नै समर्थाई।

- १४. से केस ण जाणइ अम्मताओ । के पुब्ति गमणवाए, के पच्छा गमणवाए ?
- १५. त इच्छामि णं अम्मताओ । तुन्भेहि अन्मणुण्णाए समाणे समणस्स जाव (सं० पा०) पन्वइत्तए। (म्र० ६।१७०)
- १६. तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो एव वयासी—
- १७ इम च ते जाया ! मरीरग पविसिट्धरूव लक्खण-वजण-गुणोववेय

१६-२१ लक्षणम्—
'अस्यिष्वर्थः सुख मासे, त्विच भोगा. स्त्रियोऽक्षिपु ।
गतौ यान स्वरे चाज्ञा, सर्वं सत्त्वे प्रतिप्ठितम्
(वृ० प० ४६६)

# २३. उत्तमवलवीरियसत्तजुत्त

- २४. तत्र वलं गारीर. प्राणो वीर्यं मानसोऽवष्टम्भः सत्त्वं चित्तविशेष एव (वृ० प० ४६६)
- २५. अथवा उत्तमयोर्वलवीर्ययोर्यत्मत्त्व—सत्ता तेन युक्त (वृ० प० ४६९)
- २६. विण्णाणवियक्खण ससोहग्गगुणसमूसिय
- २७. अभिजायमहक्खम
  'अभिजायमहक्खम' ति अभिजात—कुलीन महती
  क्षमा यत्र तत्तथा अथवाऽभिजाताना मध्ये महत्—
  पूज्य क्षमं—समर्थं च (वृ० प० ४६९)

१२,१३. सटण-पडण-विद्धंसणधम्मे, पुन्ति वा पच्छा वा अवस्सविष्पजिह्यच्ये भविस्सइ 'यडणपडणविद्धसणधम्मे' त्ति शटन--कुष्ठादिनाऽगु-ल्यादे. पतन बाह्यादे. पट्गच्छेदादिना विध्यमन--क्षयः एत एव धर्मा यस्य म (वृ० प० ४६६)

⁴लय : मुशालांजी मन चिन्तवें

- २८. विविध प्रकार नी व्याधि ते, रोग कुष्टादिक न्हालो । तिण करि पुत्र रहीत ही, तुभ तनु महा सुखमालो ॥ २१. विल उपघात नही अछै, निह पित-वायु विकारो। उत्तम वर्णादिक तणो, गुण तुभ अधिक उदारो।। ३० इण कारण थी लष्ट छै, मनहर इद्रिय पचो। आप-आपरा विषय ने, ग्रहण विषे पटु सचो।।
- ३१ प्रथम वय जोवन भरी, तेह विषे रह्यो पुत्तो। अपर अनेक उत्तम भला, गुण करि सहित ससुत्तो ॥
- ३२ ते भणी भोगव प्रथम ही, हे सुत । निज तनु चारू। तसु रूप सोभाग्य जोवन तणा, गुण वर्णादि उदारू।।
- ३३ तिवार पछै ते भोगवी, निज तनु रूप उदारो। सौभाग्य गुण जोवन तणा, म्है काल किये छते घारो।।
- ३४ वृद्ध थया वय परिणम्यां, कुल वश सतान वधारी। कार्य एह करी वली, विषय नी वाछा निवारी।।
- ३५ श्रमण भगवत महावीर पे, मुड थइने सारो। गृहस्थावास तजी करी, तू थाजै अणगारो।।
- ३६ जमाली क्षत्रियकुमर तदा, कहै मात पिता नै वायो। तुम्है कह्यं तिमहीज छै, हे मात ! पिताजो। ताह्यो।।
- ३७ जे भणी थे मुभ इम कहो, हे सुत । ए तनु थारो। त चेव जावत त्यां लगै, अणगारपणा प्रति घारो।।
- ३८ इम निश्चै हे माता । पिता । ए नरतनु दुख नो अगारो। विध-विध व्याधि सैकडा, तेहनो स्थान असारो।। [पुत्र कहै सुणो मातजी 1]
- ३६ हाड रूप काष्ठे करी, नीपनो ए तनु नाह्यो। कठिनपणा ना साधम्यं थो, अस्थि-काष्ठ कहिवायो।।
- ४० नाडी अने नसा तणु, तिण करि अति ही वीटाणो'। अश्चि अमेध्य करी तनु, प्रत्यक्ष दुष्ट पिछाणो॥
- ४१ असमाप्त पूरा थावै नही, सर्व काल रै माह्यो। थाप्या जे कार्य शरीर ना, ते हुवै सपूर्ण ताह्यो।।
- ४२ जरा करी जीरण तनु, मृतक कलेवर गधो। जर-जर जीरण घर जिंको, तेह सरीखो मदो।।

# २८. विविहवाहिरोगरहिये

- २६,३० निरुवहय-उदत्त-लट्टपचिदियपडु निरुपहतानि-अविखमानवाताचुपघ्रातानि उदात्तानि --- उत्तमवर्णादिगुणानि अत एव लष्टानि---मनोहराणि पञ्चापीन्द्रियाणि पटूनि च--स्विवपयग्रहणदक्षाणि यत्र (वृ० प० ४६६)
- ३१ पढमजोव्वणत्य अणेगउत्तमगुणेहि संजुत्तं
- ३२. त अणुहोहि ताव जाया ! नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे,
- ३३ तओ पच्छा अणुभूय नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वण-गुणे अम्हेहि कालगएहि समाणेहि
- ३४. परिणयवए विड्डयकुलवंसततुकज्जिम्म निरवयक्खे
- ३५ समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पन्वइहिसि । (श० ६।१७१)
- ३६. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी--तहा वि ण त अम्मताओ ।
- ३७. जण्ण तुब्भे मम एव वदह—इम च ण ते जाया ! सरीरग त चेव जाव पव्वइहिसि
- ३८. एव खलु अम्मताओ । माणुस्सग सरीर दुक्खाययणं विविहवाहिसयसनिकेत सनिकेत —स्थानम् (वृ० प० ४६६)
- ३६. अद्वियकट्ठुद्विय 'अद्वियकट्ठुद्विय' ति अस्थिकान्येव काष्ठानि काठिन्य-साधर्म्यात्तेभ्यो यदुत्थित तत्तया (वृ० प० ४६६)
- ४० छिराण्हारुजाल-ओणद्धसपिणद्ध असुइसिकलिट्ठ शिरा-नाड्य 'ण्हारु' ति स्नायवस्तासा यज्जाल-समूह म्तेनोपनद्ध सपिनद्ध-अत्यर्थं वेष्टित यत्तत्तथा 'असुइ⊦सकिलिट्ठ' ति अञुचिना—अमेध्येन सक्लिष्ट — दुष्ट यत्तत्तथा (वृ० प० ४६६)
- ४१ अणिट्टविय-सव्वकालसठप्पय अनिष्ठापिता -असमापिता सर्वकाल - सदा सस्या-प्यता—तत्कृत्यकरण यस्य स तथा (वृ० प० ४६१)
- ४२. जराकुणिमजज्जरघर व जराकुणपश्च--जीर्णताप्रधानशवी जर्जरगृह च--जीर्णगेहसमाहारद्वन्द्वाज्जराक्णपजर्जरगृह (वृ० प० ४६६)

१ अगसुत्ताणि भाग २ श० ६।१७२ मे 'ओणद्ध-सिपणद्ध' के बाद 'मट्टियभड व दुव्वल' पाठ है। इस पाठ की जोड नहीं है। सभवतः जयाचार्य को प्राप्त आदर्श मे यह पाठ नही था।

- ४३ सडवु पडवु विनाज नु, धर्म स्वभाव विमासी।
  पूर्व अथवा पछै तनु, अवश्य छाडवु थासी।।
  ४४ ते कुण जाणे हो मात जी । पहिला मरण किणरो न्हालो।
  तिर्माहज जाव दिख्या ग्रहू, ए दोयसी पचमी ढालो।।
- ४३. सडण-पडण-विद्यसणधम्मं, पुन्वि वा पन्छा वा अवस्सविष्पजहियन्व भविस्सइ ।
- ४४. से केस ण जाणइ अम्मताओ । के पुब्वित चेव (स॰ पा॰) पव्वइत्ता (श॰ ६।१७२)

# ढाल: २०६

## दूहा

१. जमाली क्षत्रिय-सुत प्रते, मात पिता तिणवार। वली वचन इहविय वदै, ते सुणज्यो सुविचार।।

'जमाली मान रे जाया ! इम किम दीजै छेह । (ध्रृपद)

- २ प्रत्यक्ष ए ताहरी वली जाया <sup>।</sup> वाला रूप<sup>े</sup>रसाल । मोटा कुल नी ऊपनी जाया <sup>।</sup> तुभ सरिखी सुखमाल ।।
- ३ सरीखीं छै तनु चामडी जाया । वय सरिखीं सुवदीत । सरीखो लावण्य रूप छै जाया । जोवन गुण थी सहीत ।।
- ४ सरीखो कुल पक्ष पितर नो जाया । तेह थकी सुविचार। आणी ते परणी सही जाया । केहवी ते वर नार।।
- ५ कला-कुञल डाही घणी जाया । सर्व काल रे माय। लालिता किणहि दुहवी नही जाया । ते सुख जोग्य सुहाय।।
- ६. मार्दव मृदु गुण युक्त ही जाया । निपुण विनय उपचार । तेह विषे पडित घणी जाया । एहवी विचक्षण नार ।।
- ७ मजुल कोमल शब्द थी जाया । ते पिण मित मर्याद। मधुर ते अर्थ थकी भलु जाया । वोलिवु जेहनु स्वाद।।
- ८ हसवु देखवुं चालवु जाया । नेत्र-विकार विलास । रहिवु विजिप्टपणे वली जाया । चतुर सहु मे विमास ॥
- १ अविकल कहिना ऋद्वी करि जाया । परिपूर्ण कुल है जास। जील आचार करी वली जाया । शोभावत विमास।।
- १० विशुद्ध कुल वश सतान ही जाया । ततु वर्द्धन करि तेह ।

  समर्थ वय जोवन भली जाया । सत्ता तास विपेह ।।

  चा० विशुद्ध कुल वश हीज सतान-ततु ते विस्तारिततु, ते वधारवै करी —
  पुत्र उत्पादन द्वारे करी तेहनी वृद्धि नै विषे प्रगल्भ ते समर्थ जे वय जोवन, तेहनो
  भाव सत्ता विद्यमान छै जेहने एह्वी स्त्रिया । अथवा 'विसुद्धकुलंवससताणततुवद्धणनगव्भव्वनवपभाविणीओ' ति पाठातर तिहा विल विशुद्ध कुल वश सतान-ततु

वद्यारण वालो जे प्रगव्भा -- प्रकृष्ट गर्भ, तेहनो उद्भव प्रगट होयवो, तेहने विषे

१ तए ण तं जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो एव वयासी----

- २, इमाओ य ते जाया । विपुलकुलवालियाओ सरिसियाओ (पृ० ४४४-टि० १)
- ३. सरित्तयाओ सरिव्वयाओ सरिसलावण्णरूप-जोव्वण-गुणोववेयाओ (पृ० ४४४-टि० १)
- ४. सिरसएहिंतो कुलेहिंतो आणिएल्लियाओ (पृ० ४४४-टि० १)
- ५. कलाकुसल-सव्वकाललालिय-सुहोचियाओ,
- ६. मद्वगुणजुत्त-निउणविणक्षोवयारपडिय-वियक्खणाओ
- ७. मजुलिमयमहुरभणिय मञ्जुल—कोमल शन्दत मित—परिमित मधुर— अकठोरमर्थतो यद्भणित (वृ० प० ४६६)
- विहसिय-विष्पेक्खिय-गति-विलास-चिट्ठियविसारदाओ
   विलासश्च—नेत्रविकारो विस्थित च—विशिष्टा
   स्थितिरिति (वृ० प० ४६६)
- १०. विसुद्धकुलवससताणततुबद्धण-प्पगव्भव्भवपभाविणीओ

वा०—विशुद्धकुलवश एव सन्तानतन्तु —विस्तारितन्तु-स्तद् वर्द्धनेन—पुत्रोत्पादनद्वारेण तद्वृद्धौ प्रगल्म —समर्थं यद्वयो – योवन तस्य भाव सत्ता विद्यते यासा तास्तथा… पाठान्तर तत्र च विशुद्धकुलवशसन्तानतन्तुवर्द्धना ये प्रगल्भा. —प्रकृष्टगर्भास्तेपा य उद्भव —सम्भूतिस्तत्र य प्रभाव — सामर्थ्यं स यासामस्ति ता.। (वृ० प० ४७०)

वत्यः जम्बू! तूतो मान रे जाया!

जे प्रभाव—समर्थपणो छै जेहनै तिके विशुद्ध कुलवशसतानततुवर्द्धेनप्रगर्भेउद्भव-प्रभाविका ।

- ११. मन अनुकूल गमती घणी जाया । हृदय स्यू वाछणहार। ए आठूई सुदरी तुभ गुण करि वल्लभ सार॥
- १२ ए उत्तम छैं कामणी जाया । नित्य जे चित्त नु प्रेम। तिण करिने राती घणी जाया । सर्वाग सुदर तेम।।
- १३. भोगव भोगी भ्रमर ज्यूं जाया । ज्या लग सामर्थ्य सुजात । कामभोग विस्तीर्ण मनुष्य ना जाया । ए रमणी सघात ।।
- १४. भुक्त भोगी थइ नै पछैँ जाया । विषय-रहित थई चित्त । अत्यत क्षीण कोतृहल करी जाया ।
  - म्हा काल गया लीजे व्रत पवित्त ।।
- १५. जमाली क्षत्रियकुवर तदा, कहै मात-पिता ने वाय। तिमहिज ते हो माता पिता माजी । अन्यथा निंह छै ताय। [माजी । तू तो मान लै जननी । लेस्या हे सजम भार।।]
- १६ जे अम्ह नै तुम्है इम कहो माजी । ए तुम रमण हे जात ।
  मोटा कुल नी ऊपनी, जाव दीक्षा लीजै प्रभु हाथ।।
- १७ इम निश्चे हे माता । पिता । काम भोग मनुष्य ना ताय। अशुचि अपवित्र छै घणा विल अशास्त्रता स्थिर नाय।।

#### सोरठा

- १८ इहा काम भोग ग्रहणेह, तेहना जे आधार थी। पुरुष अने स्त्री जेह, ग्रहिवा ए तसु तनु प्रतै।।
- १६ \*वमन प्रते आश्रवे भरे माजी ! पित्त प्रते आश्रवत । खेल क्लेष्म प्रते श्रवे माजी ! शुक्र ने रुधिर भरत । [सुणो मोरी मात जी ! सुणो मोरा तात जी !
  - मुभने अनुमति दीजै आज ।।
- २० उच्चार-पासवण खेल थी माजी । सिघाण वमन नै पित्त । राघ शुक्र लोही विल माजी । एतला थी उपित्त ॥
- २१ अणगमता दुष्ट रूप ही माजी । मूत्रे करी कुह्यु उचार। तिणे करी प्रतिपूर्ण छै माजी । ए तनु अशुचि-भडार।।
- २२ मृतक जिसो गघ जेहनो माजी । एहवा उस्सास पिछाण। अशुभ नि स्वास तिणे करी माजी । जन-उद्देगका जाण।।
- २३ ए काम-भोग दुगछा तणा माजी । छै उपजावणहार। लघु स्वभाव हलवा आपणो माजी । कामभोग नो घार।।

- ११. मणाणुकूलहियइच्छियाओ, अट्ठ तुन्भ गुणवल्लहाओ
- १२ उत्तमाओ, निच्च भावाणुरत्तसव्वगसुदरीओ
- त भुजाहि ताव जाया । एताहि सिद्ध विउले माणु-स्सए कामभोगे
- १४. तओ पच्छा भुत्तभोगी विसय-विगयवोच्छिण्ण-कोउहल्ले अम्ट्रेहि कालगएहि जान (स० पा०) पन्वहहिसि। (श० ६।१७३)
- र्थ. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—तहा वि ण त अम्मताओ ।
- १६. जण्ण तुब्भे मम एय वदह—इमाओ ते जाया । विपुलकुलवालियाओ जाव पञ्चहिस्स ।
- १७. एव खलु अम्मताओ । माणुस्सगा कामभोगा असुई असासया
- १८. इह कामभोगग्रहणेन तदाधारभूतानि स्त्रीपुरुप-शरीराण्यभित्रेतानि (वृ० प० ४७०)
- १६. वतासवा, पित्तासवा, खेलासवा, सुक्कासवा, सोणिया-सवा (पृ० ४४४ टि० ८)
- २० उच्चार-पासवण-खेल-पिघाणग-वत-पित्त-पूय-सुक्क-सोणिय समुब्भवा ।
- २१ अमणुष्णदुरुय-मुत्त-पूर्य-पुरीसपुष्णा अमनोज्ञाश्च ते दूरूपमुत्रेण पूतिकपुरीपेण च पूर्णाश्चेति विग्रह, इह च दूरूप—विरूप पूतिक च—कुथित (वृ० प० ४७०)
- २२. मयगधुस्सास-असुभिनस्सासउव्वेयणगा मृतस्येव गन्धो यस्य स मृतगन्धि स चासावुच्छ्वासश्च मृतगन्ध्य पुच्छ्वासस्तेनाशुभिन श्वासेन चोद्वेगजनका— उद्वेगकारिणो जनस्य ये ते तथा (वृ० प० ४७०)
- २३ बीभच्छा, अप्यकालिया, लहुनगा
  'वीभच्छ' ति जुगुप्सोत्पादका 'लहुस्सग' ति लघुस्वका.
  लघुस्वभावा (वृ० प० ४७०)

- २५ वहु जन ने साधारणा माजी । स्त्रियादिक ने अवलोय। भोगविवु वछै घणा माजी । इम वहु जन साधारण जोय।। २६ क्लेंग महामानसी दुख करी माजी । अति तनु दुख करि ताय। वंग करियै कामभोग ने माजी ! दुख थी साधिवु थाय।।
- २७ अबुव मूर्ख जन सेविया माजी । सदा मुनि नैं निंदनीक । अनत ससार वघारणा माजी ! कामभोग तहतीक ॥ २८ फलरूप विपाक कटुक जसु माजी ! वलतो जिम तृण-पूल । ते अणमूक्या कर वलैं, तिण कामभोग दुख-मूल ॥
- २६ सिद्धि गति जाता जीव नै माजी । विघ्न तणां करणहार । कुण जाणे हो माता पिता । पहिला पछे मरण केहनु धार ॥ ३०. ते माटै हू वाछू अछूं, अहो मात-पिताजी । विशाल । जावत दीक्षा धारवी, आखी दोय सौ छट्टी ए ढाल ॥

२४. कलमलाहिवासदुक्खा
कलमलस्य—शरीरसत्काशुभद्रव्यविशेपस्याधिवासेन—;
अवस्यानेन दु.खा—दुःखरूपा ये ते (वृ० प० ४७०)

२५. वहुजणसाहारणा

- २६. परिकिलेसिकच्छदुक्खसज्झा
  परिक्लेशेन—महामानसायासेन कृच्छूदु खेन च—
  गाढणरीरायासेन ये साध्यन्ते—वशीकियन्ते ये ते
  (वृ० प० ४७०)
- २७. अबुहजणणिसेविया, सदा साहुगरहणिज्जा अणत-ससारवद्धणा
- २८. कढुगफलिववागा चुडिल्लिव अमुच्चमाणदुक्खाणु-विधणो 'कडुगफलिववागा'.....फलरूपो विपाक: फलिवपाक कटुक. फलिवपाको येपा ते तथा 'चुडिलिग्ब' ति प्रदीप्ततृणपूलिकेव (वृ० प० ४७०)
- २६. सिद्धिगमणविग्वा। से केस णं जाणइ अम्मताओ। के पुष्टिं गमणयाए ? के पच्छा गमणयाए ?
- २०. त इच्छामि ण अम्मयताओ <sup>।</sup> जाव (स० पा०) पव्वइत्तए। (श० ६।१७४)

ढाल: २०७

# दूहा

- १. तिण अवसर क्षत्रिय-सुत, जमाली प्रति वाय। मात पिता इहविघ कहै, ते सुणज्यो चित त्याय।।
  \*पुत्र । कह्यो मान हमारो रे, प्राण-वल्लभ तू प्यारो रे। (ध्रुपद)
- २ हे पुत्र । ए तुभ दादा तणो रे, परदादा नो पेख। पिता ना परदादा तणो रे, सचियो द्रव्य अशेख।।
- ३ अति वहु हिरण्य ते अणघडचुं रे, सुवर्ण ते घडचुं सार। विल भाजन कासी तणां, अरु वस्त्र विविध प्रकार॥
- ४ विपुल कहिता विस्तीर्ण घणु रे, घन ते गवादि कहेज। कणग ते घान्य भणी कह्युं, जाव सतसार सावतेज।।

#### सोरठा

प्रजावत कहिवा थीज, रत्न कर्केतन आदि जे। चद्रकातादि मणीज, मोती शख प्रसिद्ध छै।।  तए णंत जमालि खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—

- २,३ इमे य ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिजपज्यागए सुबहू हिरण्णे य सुवण्णे य, कसे य, दूसे य । आर्यः—पितामह प्रार्येक.—पितु. पितामह पितृ-प्रार्येकः—पितु प्रपितामहस्तेभ्यः सकाशादागत यत्तत्त्रया (वृ० प० ४७०)
- ४. विजलघण-कणग जाव सतसार-सावएज्जे 'विपुलघणे' ति प्रचुर गवादि 'कणग' ति घान्य (वृ० प० ४७०)
- ५,६. रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्यवालरत्तरयण यावद् करणादिद दृश्य····'रयण' त्ति कर्केतनादीनि 'मणि' त्ति चन्द्रकान्ताद्याः मौक्तिकानि शह्वाश्च

" लयः राजनगर भणतां थकां रे।

- ६. शिल प्रवाल विद्रुमादि, रक्त-रत्न पद्म राग ते। इत्यादिक सवादि, ए दीसै जाव शब्द में।।
- ७. \*सत कहिता विद्यमान छै रे, आप तणे वश जेह। सार प्रधानज द्रव्य ही रे, तिके छै तुभ घर ने विषेह।।
- द अलाहि कहिता पर्याप्त है रे, ज्यां लग ए परिमाण। कुल वश सात पीढ्या लगैरे, जे देवै अति घणु दान।।
- १ पोते भोगववै करी रे, न्याती-गोती ने जेह। वाटी ने वहु देता थका रे, सात पीढचा लगै न खूटेह।।
- १०. ते भणी पहिला भोगवी रे, हे सुत! मनुष्य तणाय। विस्तीर्ण कामभोग ने रे, विल ऋद्धि सत्कार समुदाय।।
- ११ कल्याणकारी भोगवी रे, तिवार पछै सुविचार। कुलवश ततु वधारने रे, जाव सजम लीजै सार।।
- १२ जमाली क्षत्रिय-सुत तदा रे, कहै मात पिता ने एम। तिमहिज छै माता पिता काइ, जे तुम्ह भाख्यो तेम।।
- १३ जे तुम्है मुफ्त ने इम कहो, इम वली ताहरै ए जात । घन दादा परदादा रो सचियो, जाव दीक्षा लीजै प्रभु हाथ ॥
- १४ इम निश्चै हे माता पिता । हिरण्य सुवर्ण जावत द्रव्य । अग्नि साधारण अग्नि मे वलै, चोर साधारण भव्य ।।
- १५. राय साघारण नृप लिये रे, मृत्यु साघारण मान। न्याती गोती साघारण वली रे, एतो हिरण्यादिक पहिछाण।

## सोरठा

- १६ एहिज द्रव्य प्रतेह, अति परवशपणु जणायवा। अन्य पर्याय करेह, कहियै छै ते सांभलो।।
- १७ \*अग्नि सामान्य ते अग्नि थी रे, हुवै हिरण्यादिक नु विणास । जाव पुत्रादि सामान्य छै तिके रे, कुटव सामान्य विमास ।। वा०—पूर्वे कह्यो साधारण, इहा सामान्य कह्या ते एकार्य जाणवू ।
- १म अध्नुव अनित्य अशाश्वतो रे, पूर्व तथा पछै जेह। अवश्य छाडिवू हुस्यै सही रे, काङ हिरण्यादिक द्रव्य तेह।।
- १६ ते माटै कुण जाण वली रे, त चेव तिमहिज न्हाल। जाव प्रवच्या आदरू रे, तुभ आज्ञा थी सुविज्ञाल।।
- २० क्षत्रिय-सुत जमाली तणा रे, मात पिता तिहवार। जमाली प्रति चलायवा काइ, समर्थ नही जिहवार॥
- २१ विषय शब्दादिक जेहने रे, अनुलोम ते विषय विषेह। प्रवृत्ति जनकपणे करि तिके रे, अनुकूल वचन करेह।।

- प्रतीताः 'सिलप्पवाल' ति विद्रुमाणि 'रत्तरयण' ति पद्मरागास्तान्यादिर्यस्य (वृ० प० ४७०)
- ७. 'संत' ति विद्यमानं स्वायत्तिमित्यर्थः 'सार' ति प्रधान (वृ० प० ४७०)
- द. अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पकाम दाउ 'पकाम दाउ' न्ति अत्यर्थं दीनादिभ्यो दातुम् (वृ० प० ४७०)
- एकाम भोत्तु परिभाएउ
   भोक्तु—स्वय भोगेन 'परिभाएउ' ति परिभाजियतु
   दायादादीना प्रकामदानादिषु यावत् स्वापतेयमल
   तावदस्ति (वृ० प० ४७०)
- १०. त अणुहोहि ताव जाया । विउले माणुस्सए इड्डि-सक्कारसमुदए,
- ११. तओ पच्छा अणुहूयकल्लाणे, विड्ढयकुलवम जाव (स॰ पा॰) पव्वइहिसि। (श॰ ६।१७५)
- १२. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—तहा वि ण त अम्मताओ ।
- १३. जण्ण तुब्भे मम एव वदह—इम च ते जाया । अज्जय-पज्जय-पिजपज्जयागए जाव पन्वइहिसि ।
- १४,१५. एव खलु अम्मताओ । हिरण्णे य, मुवण्णे य जाव सावएज्जे अग्गिसाहिए, चोरसाहिए रायसाहिए मच्चुसाहिए, दाइयसाहिए अग्न्यादे. साधारणमित्यर्थे । (वृ० प० ४७०)
- १६. एतदेव द्रव्यस्यातिपारवश्यप्रतिपादनार्थं पर्यायान्तरे-णाह--- (वृ० प० ४७०)
- १७. अग्निसामण्णे जाव (स॰ पा॰) दाइयसामण्णे 'दाइयसाहिए' त्ति दायादा —पुत्रादय

(वृ० प० ४७०)

- १८ अधुवे, अणितिए, असासए, पुन्ति वा पच्छा वा अवस्सविष्पजहियन्वे भविस्सइ
- १६ से केस ण जाणइ त चेव जाव (स० पा०) पब्बइत्तए। (श० ६।१७६)
- २०. तए ण त जमालि खित्तयकुमार अम्मताओ जाहे नो सचाएति
- २१ विसयाणुलोमाहिं 'विसयाणा- शन्दादीनामनु-लोमा.-तेषु प्रवृत्तिजनकत्वेनानुकूला विषयानुलोमा-स्ताभिः (वृ० प० ४७०)

<sup>\*</sup>लय: राजनगर भणतां थकां रे

- २२. घणुं सामान्यपणें करि कहिवुं, तिण वचने करि आम। विल विशेषपणें करि कहिवुं, तेह वयण करि ताम।।
- २३ वचने करि जगाडवू रे, जिम रहै संसार माय। विल प्रेम युक्त प्रार्थना करी तिको, वीनती करि अधिकाय।। २४ वचन सामान्यपणे कही रे, विल कही वयण विशेख। संवोधन वचन कही वली, विनती प्रेम युक्त संपेख।। २५ वचन विषे अनुलोमका रे, कही थाका तिण काल। विषये प्रतिकृल वच हिवे कहै, आखी दोय सी सातमी ढाल।।
- २२. बहूर्हि आघवणाहि य पण्णवणाहि य 'आघवणाहि य' त्ति आख्यापनाभिः—सामान्यतो भणनैः 'पन्नपणाहि य' त्ति प्रज्ञापनाभिष्च—विशेष- कथनैः (वृ० प० ४७०, ४७१)
- २३-२५. सण्णवणाहि य विष्णवणाहि य बाघवेत्तए वा पण्णवेत्तए वा 'सन्नवणाहि य' त्ति सञ्ज्ञापनाभिण्च – सम्बोधनाभिः 'विन्नवणाहि य' त्ति विज्ञापनाभिण्च—विज्ञप्तिकाभि मप्रणयप्रार्थनैः (वृ० प० ४७१)

#### ढाल: २०५

#### दूहा

- १ विषय तणो परिभोग जे, तास निपेघक ताम। तेह विषे प्रतिलोमका, वचने करि कहै आम।।
- २ सजम थी भय ऊपजै, विल तसु चिलवु होय। इसो जील छै जेहनु, ते वचने करि सीय।।
- ३ जे विशेप वचने करि, कहिता वचन विशेख। मात-पिता इह विध कहै, जमाली प्रति पेख।।

\*जाया । संजम दुक्कर कार। (ध्रुपद)

४ इम निश्चै करिनै हे जाया । निर्प्रथ प्रवचन सार । सत्य अणुत्तर एह थकी अन्य, निह अति प्रवर उदार ॥ ५ केवल ए सम निह को दूजो, जेम आवश्यक माहि । यावत अत करै सहु दुख नों, मुनि प्रवचन थी ताहि ॥

# सोरठा

- ६ जाव शब्द थी देख, पडिपुन्ने ते शिव गति। पमाडवा ना पेख, गुणे करी भरियो अछै।। ७. नेयाउए ए न्हाल, नायक प्रापक शिव तणो। अथवा न्याय विशाल, प्रवचन समय विषे कह्यो।।
- द ससुद्धे अतिहि शुद्ध, समस्तपणे करी तिको। सल्लगत्तणे बुद्ध, कापणहारज सल्य नो।।

- १. ताहे विसयपिडकूलाहि
   विषयाणा प्रतिकूला —तत्पिरभोगनिषेधकत्वेन प्रति-लोमा यास्ता (वृ० प० ४७१)
- २. संजमभयुव्वेयणकरीहि
  सयमाद्भय—भीति उद्वेजन च—चलन कुर्वन्तीत्येवशीला यास्ता (वृ० प० ४७१)
- ३. पण्णवणाहि पण्णवेमाणा एवं वयासी—
- ४. एवं खलु जाया <sup>1</sup> निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे
- प्र. केवले जहा आवस्सए (४१६) जाव (स॰ पा॰) सव्वदुक्खाण अत करेंति 'केवल' त्ति केवल—अद्वितीयं (वृ॰ प॰ ४७१)
- ६. पडिपुण्णे अपवर्गप्रापकगुणैर्मृत (वृ० प० ४७१)
- ७. नेयाउए नायक मोक्षगमकिमत्यर्थः नैयायिक वा न्यायानपेत-त्वात् (वृ० प० ४७१)
- म् ससुद्धे सल्लगत्तणे सामस्त्येन शुद्ध 'सल्लगत्तणे' मायादिशल्यकर्त्तंन (वृ० प० ४७१)

<sup>&</sup>lt;sup>4</sup>लय: सीता आवै रे घर राग

१ स० पा० के अनुसार पाचवी गाथा मे पूरा पाठ आ गया है। उसके वाद पुन ६ से १५ तक की गाथाओं मे पूरे पाठ की जोड की गई है।

- ह सिद्धिमग्ग सुविधान, हितार्थ प्राप्ति उपाय जे।
   मुत्तिमग्ग महिमान, अहित-विच्युति उपाय जे।।
- २०. निज्जाणमग्गे ताय, सिद्ध क्षेत्र तेहने विषे। जावा तणो उपाय, निर्ग्य-प्रवचन जाणवू॥
- ११ निव्वाणमग्गे न्हाल, सकल कर्म नां विरह थी।
   उपनो सुख सुविक्षाल, तेह तणोज उपाय ए॥
- १२ अवितह कहितां सोय, कालातर पिण अनपगत। तथाविध अवलोय, अभिमत प्रकार एह छै।।
- १३ अविसंघि' सुवदीत, प्रवाह करी विच्छेद नही। तथा सदेह रहीत, अर्थ अविसदिद्ध नु॥
- १४ सहु दुख प्रतीक्षण मग्ग, एह प्रवचन विपे जिके। जीवा रह्या उदग्ग, सिज्कै बुज्कै मुच्चवै॥
- १५ हुवै शीतलीभूत, अत करै सहु दुख तणो। जाव शब्द मे सूत, कह्या आवसग थीज ए।।
- १६ \*सर्पं तणी पर एकात-निश्चय, दृष्टि—बुद्धि अवलोय। इण निर्म्रथ प्रवचन विषे, चारित्र पालण सोय।।

- १७ अहि नी आमिष काज, एकान्ता—एकनिश्चया। दृष्टि हुवै निर्व्याज, तिम चरण पालण इक दृष्टि—चुद्धि॥
- १८ \*जेह पाछणा नी परै, एकात जे समान-धारा, जिम क्रिया जसु, जे चरण विषे सुविधान ।।
- १६ जिम लोह ना जव चाविवा, तिम निग्नैथ प्रवचन सार। निरअतिचारपणे पालिव्, दुक्कर चरण उदार॥
- २० सार रहित जिम कवल वालु ना, निर्ग्रथ प्रवचन तेम। विषय तणा सुख स्वाद रहित छै, चरण घरण सुख खेम।।
- २१. महानदी गगा नैं साहमे, स्रोते दुखे गमन। तिम सजम मार्ग आचरता, दुस्तर है प्रवचन।।
- २२ महासमुद्र जिम भुजा करीने, तिरणो दुक्करकार। तिम प्रवचन वर चरण पालवु, दुस्तर अधिक अपार।।

- सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे
   (सिद्धिमग्गे' हितार्थप्राप्त्युपाय 'मृत्तिमग्गे' अहितविच्युतेरुपाय (वृ० प० ४७१)
- १०. निज्जाणमग्गे सिद्धिक्षेत्रगमनोपाय. (वृ० प० ४७१)
- ११ णिव्वाणमग्गे सकलकर्मविरहजसुखोपायः (वृ० ७० ४७१)
- १२. अवितहे कालान्तरेऽप्यनपगततथाविद्याभिमतप्रकारम् (वृ० प० ४७१)
- १३ अविसधि प्रवाहेणान्यविष्ठन्न (वृ० प० ४७१)
- १४. सन्बदुक्खप्पहीणमग्गे, एत्य ठिया जीवा सिज्झित, बुज्झित मुच्चिति
- १५ परिनिन्नायति सन्वदुक्खाण अत करेति
- १६ अहीव एगतिदट्ठीए अहेरिव एकोऽन्तो— निण्चयो यस्या सा (एकान्ता सा) दृष्टि — बुद्धिर्यस्मिन् निर्ग्रन्थप्रवचने चारित्र-पालन प्रति तदेकान्तदृष्टिकम् (वृ० प० ४७१)
- १७. अहिपक्षे आमिपग्रहणैकतानतालक्षणा एकान्ता—
  एकनिश्चया दृष्टि दृग् यस्य स एकान्तदृष्टिक
  (वृ० प० ४७१)
- १८. खुरो इव एगतधाराए
  एकान्ता—उत्सर्गलक्षणैकविभागाश्रया धारेव धारा—
  किया यत्र तत्त्तया (वृ० प० ४७१)
- १६ लोहमया जवा चावेयव्वा लोहमया यवा इव चर्वियतव्या, नंग्रेन्थ प्रवचन दुष्करमिति हृदय (वृ० प० ४७१)
- २० वालुयाकवले इव निस्साए वालुकाकवल इव निरास्वाद वैपयिकसुखास्वादना-पेक्षया प्रवचनमिति (वृ० प० ४७१)
- २१. गगा वा महानदी पिडसीय गमणयाए

  गगा वा गगेव महानदी प्रतिश्रोतसा गमन प्रतिश्रोतोगमन तद्भावस्तत्ता तया, प्रतिश्रोतोगमनेन
  गगेव दुस्तर प्रवचनमिति भाव । (वृ० प० ४७१)
- २२ महासमुद्दो वा भुयाहि दुत्तरो एव समुद्रोपम प्रवचनमपि (वृ० ५० ४७१)

१. जयाचार्यं को प्राप्त आदर्श मे अविसिध और अविसिद्धि—ये दो पाठ मे रहे होगे। अगसुत्ताणि ६।१७७ मे यहा एक ही पाठ है—अविसिध। इस पाठ मे पाठान्तर की भी कोई सूचना नही है।

<sup>\*</sup>लय: सीता आवै रे घर राग।

- २३. खडगादिक नी तिथिण घारा, ऊपर गमन दुखेह। तिम दुक्कर है चरण पालिवु, सजम घार विपेह।।
- २४ महाशिला रज्जु वाघी ने, कर धरता दुक्करकार। तिम प्रवचन गुरुता प्रति घरवू, चरित्र निरतिचार॥
- २५. असिवार अतिक्रमता दुक्कर, तिम व्रत नेम उदार। निर्यंथ प्रवचन प्रते पालिवु, तेहथी दुक्करकार॥

- २६. चारित्त दुक्करकार, किण कारण इहा आखियो ? वर मुनि नो आचार, देखालै हिव आगले।।
- २७. \*श्रमण निग्रंथ भणी निह करपे, निश्चै करि हे जात । मुनि अर्थे असणादिक कीधु, आधाकर्मी ख्यात ।।
- २८ सर्व दर्शणी अर्थ कर्यु ते, उद्देशिक कहिवाय। मुनि-गृहि विहु ने अर्थ निपायु, मिश्र कहीजै ताय॥
- २६ आधण में अधिको ऊर्यू जे, मुनि ने अर्थे आ'र। अज्भोयर ते श्रमण मुनी ने, कल्पै नही लिगार॥
- ३० सीत मिली आधाकर्मी नी, अन्य आ'र रै मांय। पूतिकर्म कहीजै तेहनै, ए पिण कल्पै नाय।।
- ३१ साधु अर्थे मोल लियो जे, कृतगड कहियै तास।। साधु अर्थे लियो उघारो, पामिच्च कहियै जास।।
- ३२. अन्य तणो जे खोसी देवै, अच्छिज कहियै तेह। अणिसिट्ट एक तणी डच्छा विण, दियै सीर नो जेह।।
- ३३ अभिहड ते साहमो आण्यो, फुन कतार भत्तेहं।। अटवी विषे भिक्षाचर अर्थे, निपजायो अन्न जेह।।
- ३४ दुर्भिनलभक्त दुकाल विपे, भिखारचा अर्थे कीव। गिलाणभक्त फुन रोगी अर्थे, निपजायो सुप्रसीय।।
- ३५ वहिलयाभत्त मेह वर्पतां, जे भिखार्या काज। असणादिक निपजायो ते पिण, कल्पै नही समाज।।
- ३६ वली प्राहुणा अर्थ निपायो, घर का जीमै नांहि। प्राहुणभत्त कहीजै तेहनै, ते पिण कल्पे नाहि॥
- ३७ सेज्जातर फुन राजिंपड फुन, मूल-भोजन विल जाण। कद-भोजन विल फल नो भोजन, वीज-भोजन पहिछाण।।
- ३८. हरित-भोजन वा रव सहु ठामे, भोगविवो अवलोय। अथवा जे पीवू नहिं कल्पै, सत मुनी ने सोय।।
- ३६ सुख भोगविवा योग्य पुत्र । तू, वा सुख उपचय ताय। पिण दुख नें भोगविवा योग्यज, निश्चै करिने नाय।।
- \*लय: सीता आवै रे घर राग

- २३. तिक्खं किमयव्यं यदेतत् प्रवचन तत्तीक्षण खड्गादि ऋमितव्य (वृ० प० ४७१)
- २४. गरुय लवेयव्व
  'गुरुक' महाशिलादिक 'लम्ययितव्यम्' अवलम्बनीय
  रज्ज्वादिनियद्ध हस्तादिना धरणीयं प्रवचनं
  (वृ० प० ४७१)
- २५. असिधारग वय चरियन्व असेर्धारा यस्मिन् व्रते आक्रमणीयतया तदसिधाराक 'व्रतं' नियमः 'चरितन्यम्' आसेवितन्य, यदेतत् प्रवचनानुपालनं तद्वहुदुष्करिनत्यर्थं. (वृ० प० ४७१) २६. अथ कस्मादेतस्य दुष्करत्वम् ? (वृ० प० ४७१)
- २७. नो खलु कप्पइ जाया । समणाण निग्गयाण अहाकिम्भए इ वा २८. उद्देसिए इ वा, मिस्सजाए इ वा
- २६. अज्झोयरए इ वा, स्वार्यं मूलाद्रहणे कृते साध्वाद्यर्थमधिकतरकणक्षेपण-मिति (वृ० प० ४७१) ३०. पूहए इ वा
- ३१. कीते इ वा, पामिच्चे इ वा
- ३२. अच्छेज्जे इ वा, अणिसट्ठे इ वा
- ३३. अभिहडे इ वा, कंतारभत्ते इ वा
  'कतारभत्तेइ व' ति कान्तार—अरण्य तत्र यद्भिक्षुकार्यं सस्त्रियते तत्कान्तारभक्तम् (वृ० प० ४७१)
  ३४. दुव्भिक्खभत्ते इ वा गिजाणभत्ते इ वा
- ३५ वहलियाभत्ते इ वा
- ३६. पाहुणगभत्ते इ वा
- ३७. सेज्जायरिपडे इ वा, रायिपडे इ वा, मूलभोयणे इ वा, कदभोयणे इ वा, फलभोयणे इ वा, वीयभोयणे इ वा
- ३८. हरियभोयणे इ वा, भोत्तए वा पायए वा
- ३६. तुम सि च णं जाया । सुहसमुचिए नो चेव ण दुहसमुचिए

- ४० नही समर्थ सी खमवा उष्णज, सहिवा समर्थ नांय। भूखं अने तिरखा सहिवा ने, समर्थ नहिं तुभ काय।। ४१. चोर तणा उपद्रव सहिवा ने, समर्थ नही छ ताय। इवापद भुयग तणा उपद्रव पिण, सिहवा समरथ नाय।। ४२ दंस तणाँ उपद्रव सहिवा पिण, समर्थ नही छै कोय। माछर ना उपद्रव सहिवा नै, समर्थ नहीं छै सोय।। ४३ वाय पित्त कफ वली एकठा, थया तिको सन्निपात। विविध प्रकार तणा ते रोगज, कुष्ठादिक आख्यात।। ४४ आतक जीघ्र हणे जूलादिक, तेह परीसह आय। फून उपसर्ग उदय आया तू, सहिवा समर्थ नाय।। ४५ ते माटै निश्चै करि जाया ! क्षण मात्र पिण ताय। विरह तुम्हारो म्है निह वाछा, साभल सुत! मुभ वाय।। ४६ तिणस् घर मे रहिवै पहिला, महै जीवां जिहा लगेह। म्हा काल गया पाछै यावत ही, प्रवर प्रवर्या लेह।। ४७ ए दोयसौ ऊपर आख़ी, ढाल अष्टमी माय। दुक्कर चारित्र धर्म वतायो, मात पिताइ ताय।।
- ४०. नालं सीयं, नालं उण्हं, नालं खुहा, नालं पिवासा
- ४१. नालं चोरा, नाल वाला
- ४२. नालं दंसा, नाल मसगा
- ४३,४४. नाल वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सिन्नवाइए विविहे रोगायके परिस्सहोवसग्गे उदिण्णे अहियासेत्तए। 'रोगायके' त्ति इह रोगा.—कुष्ठादय आतका— आजुषातिन. शूलादयः (वृ० प० ४७१)
- ४५. त नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुन्म खणमिव विष्योगं
- प्रंद. त अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं जाव (स० पा०) पव्वइहिसि । (श० १।१७७)

ढाल: २०६

# दूहा

- १ तव जमाली क्षत्रिय-सुत, कहै मात पिता ने वाय। तिमहिज हे माता ! पितर । कह् युं अन्यथा नांय।।
- २. जे तुम्ह मुभ नैं इम कहो, इम निश्चै हे जात। निर्ग्रथ प्रवचन सत्य फुन, सर्वोत्कृष्ट सुहात।।
- ३ केवल शुद्ध इत्यादि जे, तिमहिज जावत तेह।
  प्रव्रज्या लेज्यो तुम्है, मुक्त काल गयां पाछेह।।

  \*जमाली ना चरणमहोत्सव जाण।
  मात-पिता महिमानिला रे करता कोड किल्याण।।(ध्रुपद)
- ४ इम निश्चै माता ! पिताजी । निग्नंथ प्रवचन सार । क्लीव मद सघयण ना घनी, तास दुक्करकार ॥
- ५ अथिर चित्त छै जेहनों रे, कायर तेह कहाय। इण कारण थी कापुरुप ने रे, दुक्कर चरण अथाय॥
- ६ इहलोक ना सुख विये राता, परलोक नो भय नांहि। ते उपराठा परलोक थी रे, वले विषय तिसिया ताहि॥

- तए णं से जमाली खित्तयकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि ण त अम्मताओ ।
- २. जण्ण तुब्भे ममं एव वदह एव खलु जाया ! निरगथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे
- ३. केवले त चेव जाव पव्वइहिसि
- ४. एव खलु अम्मताओ । निग्गथे पावयणे कीवाण 'कीवाण' ति मन्दसहननाना (वृ० प० ४७१)
- ४, कायराणं कापुरिसाण 'कायराण' ति चित्तावष्टम्भवर्जितानाम् । (वृ० प० ४७१)
- ६. इहलोगपिडवद्धाण परलोगपरमुहाण विसयतिसियाण

<sup>\*</sup> लयः कपि रे विया संदेशो कहें रे

- पूर्व अर्थ आख्यात, अन्वय फुन व्यतिरेक कर।
   विल किंद्य अवदात, चित्त लगाई प्रसामलो।।
- द \*दुखे सेववा योग्य छै इम, निर्मंथ प्रवृत्त्वन ख्यात। ते पागय-प्राकृत पुरुप नैं, दुंककर चरण विख्यात॥
- ह बीर जे साहसीक छै जे, तेहने पिणे अवलोय। ए कार्य करिव हिज मुक्तने, इम निक्चैवत ने सोय॥
- १०. तेह विषे पिण जे वली दे, उद्यमवंत ने ताम।
  जे कार्य ना उपाय ने दे, प्रवर्त्तक ने आम।।
  ११ निश्चै कर तसु इह प्रवचने तिको दे, अथवा लोक विषेह।
  किंचित पिण दुक्कर नहीं दे, क्रिया करेवी जेह।।
  १२ वे भणी हं बाल अलं दे अही मात्र। फन तात्।
  - १२ ते भणी हूं वाछू अछूं रे, अही मात ! फुन तात । आप तणी आज्ञा थया रे, जाव चरण ग्रहूं जिन हाथ ॥
  - १३ जमाली क्षत्रिय-सुत प्रतै रे, मात पिता तिणवार। घर माहै राखण भणी रे, समर्थ नही जिवार॥
  - १४ विषय अनुकुल वचने करि रे, विषय प्रतिकूल चरित्त । ते चरण पालिवू कठिन है रे, इम वचन करीने कथित्त ।।
  - १५ जे सामान्यज वच करी रे, विशेष वचन करेह। सवोधन वचन जगाडवै रे, प्रेम युक्त वचनेह।।
  - १६. जे सामान्यज वच कही रे, जावत वीनवी जोय। विण इच्छा हीज चरण नी रे, अनुमत दीघी सोय।।
  - १७ जमाली क्षत्रिय-सुत तणो रे, जनक तदा तिण ठाय। कोटुविक नर तेडने रे, वोले एहवी वाय॥
  - १८ गीं अहो देवानुप्रिया रे, क्षत्रियकुंड अवघार। ग्राम नगर छै ते प्रते रे, अभ्यंतर फून वार।।
  - १६ छिडकाव करो उदके करी रे, पूजो प्रमाजिका करेह। लीपो गोवर आदि सूरे, जिम उववाई विपेह।।

२० जिम उववाई मांहि, आख्यो हैं तें इहिवधे।
श्रृंगाटक त्रिक ताहि, चतुष्क चच्चर चतुर्मख।।
२१ फुन महापथ विषेह, छाटो ईपत जल करी।
फुन अति जल छिड़केह, इण कारण थी शुचि करो।।
२२ फुन कचरो काढेह, सेरी सेरी सुब करो।
आपण वीथी जेह, हाट मार्ग तेहने विषे।।

७. पूर्वोक्तमेवार्थमन्वयव्यतिरेकाभ्यां पुनराह— (वृ० प० ४७१)

7:

- इरणुचरे पागयजणस्स'द्रुरनुचरं' दु खासेव्यं प्रवचनमिति प्रकृतं(वृ० प० ४७१)
- धीरस्स निन्छियस्स
   'धीरस्स' त्ति साहसिकस्य तस्यापि 'निश्चितस्य'
   कर्त्तव्यमेवेदमितिकृतनिश्चयस्य तस्यापि
   (वृ० प० ४७१,४७१)
- १०. ववसियस्स 'व्यवसितस्य' उपायप्रवृत्तस्य (वृ० प० ४७२)
- ११. नो खलु एत्यं किंचि वि दुक्करं करणयाए 'एत्यं' ति प्रवचने लोके वा (वृ० प० ४७२)
- १२. तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुन्भेहि अन्मणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव (सं० पा) पन्बद्दत्तए । (श० ६।१७८)
- १३ तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो जाहे नो सचाएंति
- १४ विसयाणुलोमाहि य, विसयपिडकूलाहि य
- १५,१६. बहूि आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवेत्तए वा जाव (स० पा०) विण्णवेत्तए वा ताहे अकामाइ चेव जमालिस्स खत्तिय-कुमारस्स निक्खमण अणुमण्णित्या। (श० १।१७१)
- १७. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडु-वियपुरिसे सद्दावेद, सद्दावेत्ता एव वयासी--
- १८. खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! खत्तियकुडग्गाम नयर सिंक्भत्रवाहिरियं
- १६. आसिय-सम्मिष्जिओविलत्त जहा ओववाइए (सू० ५५) जाव आसिक्तमुदकेन संमाजित प्रमार्जनिकादिना उपिलप्त च गोमयादिना यत्तत्त्रथा। (वृ० प० ४७६)
- २०-२२. 'जहा जववाइए' त्ति एव चैतत्तत्र—'सिंघाडगतियचजननचन्चरचजुमुहमहापहपहेसु आसित्तसित्तसुइयसमट्टरत्थतरावणवीहिय' आसिन्तानि—ईपत्सिन्तानिसिक्तानि च—तदन्यान्यत एव शुचिकानि—
  पवित्राणि समृष्टानि कचवरापनयनेन रथ्यान्तराणि—
  रथ्यामध्यानि आपणवीययश्च—हट्टमार्गा यत्र तत्तथा
  (वृ० प० ४७६)

<sup>\*</sup>लय: कपि रे प्रिया संदेशो कहै रे

- २३. वली मच पर मच, तिणै करीने सहित फुन। नानाविध रग सच, तिण करि ऊची ध्वज वली।।
- २४ चक्र सीहादि जाण, लाछन करी सहीत ते। हवजा पताका माण, तेह करि मिडत वली।।
- २५ इत्यादिक अवलोय, सूत्र उववाइ में कह्यूं। यावत आज्ञा सोय, पाछी सूपै नफर ते॥
- २६ \*तव जमाली क्षत्रियकुमर नों रे, जनक दूजी वार। कोटुविक नर तेडनै रे, वोलै इम अवधार॥ २७ शीघ्र अहो देवानुप्रिया। रे, जमाली क्षत्रियकुमर ने जाण। महाअर्थ प्रयोजन प्रतै रे, विल महामूल्य पिछाण॥
- र्म मोटा माणस जोग्य जे रे, विस्तीरण सुविचार। दीक्षा महोच्छव सामग्री प्रतै रे, करो सज्ज उदार॥
- २६ कोटुविक नर तिण अवसरे रे, तिमहिज जावत जाण ॥ सर्व सामग्री सज्ज करी रे, आज्ञा सूपी आण ॥
- ३० जमाली क्षत्रियकुमर ने रे, मात पिता तिणवार। प्रवर सिंघासण ने विषे रे, पूर्व सन्मुख वैसार॥
- ३१ पूर्व साहमो वेसार नै रे, एकसो आठ उदार। कलशा जे सोवन तणा इम, जिम रायप्रश्रेणि मभार॥

- ३२ इकसी आठ उदार, कलशा जे रूपा तणां। मणी तणा फुन सार, कलश एक सौ आठ ह्वं।।
- ३३ सोवन रूप मभार, कलश एक सौ आठ फुन। सोवन मणि रासार, ते पिण इकसौ आठ छै।।
- ३४ कलश एक सौ आठ, रूपा ने फुन मणि तणा। इकसौ आठ सुघाट, सोवन रूप मणी तणा।।
- ३५ 'जावत जे माटी तणा रे, कलश एक सौ आठ। आठसौ ने चौसठ कह्या रे, कलशा रूडे घाट।।
- ३६ सर्व ऋद्धि करिनै तिको रे, समस्त जे छत्राद। राजचिह्न रूपे करी रे, यावत महारव साद॥

#### सोरठा

३७. जाव गव्द मे श्रेष्ठ, सहु द्युति आभरणादि नी। अथवा उचित यथेष्ट, वस्तु घट ना लक्षण करी।।

- २३,२४. 'मंचाइमंचकलिय णाणाविहरागभूसियभयपडागाइपडागमडिय' नानाविद्यरागै रुच्छृतैद्दंजै चन्नसिंहादिलाञ्छनोपेतै. पताकाभिश्च—तदितराभिरति
  पताकाभिश्च पताकोपरिवर्त्तिनीभिर्मण्डित यत्तत्त्या
  (वृ० प० ४७६)
- २५......ते वि तहेव पच्चिप्पणित । (श० ६।१८०)
- २६. तए ण से जमालिस्स खित्तयकुमारस्स पिया दोच्च पि को बुवियपुरिसे सद्दावेत्ता एव वयासी—
- २७. खिप्पामेव भो देवाणुष्पिया । जमालिस्स खित्तयः कुमारस्स महत्यं महत्य 'महत्य' ति महाप्रयोजन 'महग्य' ति महामूल्य (वृ० प० ४७६)
- २८. महरिह विपुल निक्खमणाभिसेय जवट्ठवेह ।
  'महरिहं' ति महाहँ—महापूज्यं महता वा योग्य
  'निक्खमणाभिसेय' ति निष्क्रमणाभिषेकसामग्रीम्
  (वृ० प० ४७६)
- २६. तए णं ते कोडुवियपुरिसा तहेव जाव उवहुर्वेति । (श० ६।१८१)
- ३०. तए ण त जमानि खत्तियकुनार अम्मापियरो सीहासणवरिस पुरत्याभिमुह निसीयार्वेति
- ३१. निसीयावेत्ता अट्ठसएण सोवण्णियाण कलसाण एव जहा रायप्पसेणइज्जे (सूत्र २७१) जाव (स० पा०)
- ३२. अट्ठसएण रुप्यमयाण कलसाण, अट्ठसएण मणिमयाण कलसाणं
- ३३ अट्ठसएण सुवण्णरुप्पामयाण कलसाण, अट्ठमएण सुवण्णमणिमयाण कलसाण
- ३४. अट्टुसएणं रूप्पमणिमयाण कलसाण अट्टुसएण सुवण्ण-रूप्पमणिमयाणं कलसाण
- ३५. अटुसएण भोमेज्जाण कलसाण
- ३६. सिव्वड्ढीए जाव (स० पा०) रवेण सर्व्वद्वर्या—समस्तछत्रादिराजिचह्नरूपया (वृ० प० ४७६)
- ३७ सन्वजुतीए यावत्करणादिद दृश्य —'सन्वजुईए' सर्वद्युत्या — आभ-रणादिसम्बन्धिन्या सर्वयुक्त्या वा उचितेष्टवस्तुघटना-लक्षणया (वृ० प० ४७६)

१ ओवाइय सू० ६१,६२ ु

<sup>\*</sup>ल्य : कपि रे प्रिया संदेशो कहै रे

- ३८ सहु यल सेन्य करेह, सर्वज समुदाये करी।
  पुरवासी जन जेह, तेह तणे मिलवे करी।।
- ३६ सर्व उचित जे जोग, कृत्य करण रूपे करी।। मर्व विभूति अरोग, सर्व सपदाये करी।।
- ४० सर्व विभूषा सार, तेह सर्व शोभा करी। सह सभ्रम उदार, प्रमोद कृत उत्सुक करी॥
- ४१ सर्व पुष्प वर गव, माल्य अलंकारे करी। सर्व वाजित्र अमद, तसु रव मिल महाघोप जे।।
- ४२ सर्व गट्द अवलोय, अल्प अर्थ मे पिण हुवै। तिण कारण थी जोय, आगल कहियै छै हिवै॥
- ४३. मोटी ऋदि करि सोय, महाद्युति आभरणादि करि। महावल करिकै जोय, मोटे समुदाये करी।।
- ४४. महा वर वार्जित्रेह, जमक-समक समकाल करि । प्रकर्षे करि जेह, वजाडत्रै करिने वली।।
- ४५. शख गव्द सुप्रतीत, पणव पडह जे भाड नो। पडहग ढोल वदीत, भेरी ते मोटी ढक्का।
- ४६. ऊची अल्प विमास, महामुख वीटी चर्म करि। कही भल्लरी तास, खरमुही ते काहला।।
- ४७ हुंडुक वार्जित्र नाम, मुरज तिको मृदग महा। मृदग मादल ताम, ढक्का विशेष दुंदुभि।।
- ४८. शखादिक नो जेह, निर्घोप महा प्रयत्न करि। उपजायो रव तेह, फुन निनाद व्वनि मात्र जे।।
- ४१. शब्द अने ध्वनि वेह, एहिज लक्षण जेह रव। ते ध्वनि शब्द करेह, ए जाव शब्द में जाणवा।।
- ५० \*मोटे-मोटे दीक्षा तणो रे, करै ताम अभिपेक। इम अभिपेक करी तदारे, करतल जाव संपेख।।
- ५१. जय विजय शब्दे करी रे वधावे वधावी कहै एम। कहै जाया! स्यू दीजियं रे ? तुभ प्रार्थना प्रेम।।

- ५२. अथवा देवां जोय, किह्यै ते सामान्य थी। प्रार्थना अवलोय, विशेष थी किह्यै तिको।।
- ५३. \*अथवा किण वस्तु थकी रे, ताहरूं अर्थ प्रयोजन । दोयसी ने नवमी कही रे, सरस ढाल गोभन ॥

- ् ३६. सव्ववलेणं सव्वसमुदएण 'सव्ववलेणं' सर्व्वंसैन्येन 'सव्वममुदएण' पौरादिमीलनेन (वृ० प० ४७६)
  - ३६. सव्वादरेणं सन्वविभूईए
    'सव्वायरेणं' सर्वोचितकृत्यकरणरुपेण 'सव्वविभूईए'
    सर्वसम्पदा (वृ० प० ४७६)
  - ४०. सन्वविभूसाए सन्वसंभ्रमेण 'सन्वविभूसाए' ममस्तशोभया 'सन्वसभर्मण' प्रमोदकृतौत्मुक्येन । (वृ० ५० ४७६)
  - ४१. सव्वपुष्फगधमल्लालकारेणं सव्वतुिंहयसह्मण्णिणाएणं सर्व्वतूर्यंणव्दाना मीलने य. संगती निनादी —महाघोपः स तथा तेन (वृ० प० ४७६)
  - ४२. अल्पेष्विप ऋद्वचादिषु सर्वशब्दप्रवृत्तिर्दृष्टेत्यत आह— (वृ० प० ४८६)
  - ४३. महया इड्ढीए महया जुईए महया वलेणं महया समुदएण
  - ४४. महया वरतुिंडय-जमगसमग-प्यवाइएण
     यमकसमक युगपदित्यर्थः (वृ० प० ४७६)
  - ४५. संख-पणव-पडह-भेरि-पणवो—भाण्डपटह. भेरी—महती ढक्का (वृ० प० ४७६)
  - ४६. झल्लरि-घरमुहि

    भत्लरी-अल्पोच्छ्या महामुखा चम्मीवनद्वा खरमुखी-काहला (वृ० प० ४७६)
  - ४७. हुदुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुहि मुरजो—महामईंल: मृदङ्गो—मईंल: दुन्दुभी—दक्का-विशेष एव (वृ प० ४७६)
  - ४५.४६. णिग्घोसणाइयरवेणं
    ततः शङ्घादीनां निर्धोपो महाप्रयत्नांत्पादितः शब्दो
    नादितं तु—ध्वनिमात्रं एतद्द्वयलक्षणो यो रवः स
    तथा तेन (वृ० प० ४७६)
  - ५०. महया-महया निक्खमणाभिसेगेण अभिसिचित, अभि-सिचित्ता करयल जाव (स॰ पा॰)
  - ५१. जएण विजएण चढावेंति, वढावेत्ता एव वयासी— भण जाया! किं देमो ? किं पयच्छामो ?
  - ५२. अथवा ददा सामान्यत प्रयच्छाम. प्रकर्पेणेति विशेष. (वृ० प० ४७६)
  - ५३. किणा व ते अहो ? (श० ६।१८२)

<sup>\*</sup>लय: कपि रे प्रिया संदेशो कहे रे

#### दूहा

- १ तव जमाली क्षत्रिय-सुत कहे मात पिता ने एम। अहो मात । ने तात जी । हू वळू घर पेम।।
- २ कुत्रिकापण थी रजोहरण, पात्र अणावो फेर। काश्यप ते नाई प्रतै, तेडावो फुन हेर॥
- ३ कु कहिता महि त्रिक त्रितय, स्वर्ग मर्त्य पाताल । तत्सभवि वस्तु अपि कुत्रिक कहियै न्हाल ॥
- ४ ते वस्तू सम्पादिका, आपण हाट अखेह। कही कुत्रिकापण तिका, देवाधिष्ठित एह।।

वा०—कुत्तियावण दुकान नो धणी ते केहवो हुवै ? ते कहै छै—क्रोध, रिहत, गर्व-रिहत, राग-द्वेप-माया-लोभ-रिहत, जिताश, जितपरीपह, शूर, बाता, अविरित सम्यग्वृष्टि, भगवत ऊपर राग, पर-उपगारी, राजादिक जेहने घणु माने ? देवता वैमानिक पूर्व ने स्नेह किर प्रिय मित्र तथा पितर—दादो, पितादिक तीन भुवन माहि जे वस्तु ते सर्व दियै। कुत्तियावण जे नगर मा होय, ते नगर नो राजा सर्व प्रकारे अणाचार वर्जे, न्याय मे चाले, तिहा असोक वृक्ष नित्य हुवै। जेहने घर ने विषे कुत्रिकापण हाट हुवै, तेहने देव अधिष्ठायक हुवै। रत्नप्रवोध ग्रन्थ मध्ये एहन् कह् यू छै।

- प्र जमाली क्षत्रिय-सुत, तास पिता तिहवार। कोटविक नर तेहने, इम वोले अवदार॥
- ६ अहो देवानुप्रिय । तुम्है, श्री भडार थकीज। सोनैया त्रिण लक्ष ते, ग्रहण करी शीघ्रहीज॥
- ७ सोनैया वे लक्ष कर, कुत्रिक आपण थीज। रजोहरण फुन पात्र जे, आणो ए वर चीज।।
- द सोनैया एक लक्ष दे, काश्यप—नापित जेह। तेह प्रते तेडाविये जनक आज्ञा इम देह।।

\*सुण सुखकारी, दीक्षा महोत्सव जमाली ना भारी। (ध्रुपद)

- ए कोडिवक तिणवारो. ओतो जमाली क्षत्रियकुमारो।
   तसु जनक तणो वच ताह्यो, सुण हरप सतोपज पायो।।
- १० करतल जोडी जिवारो, ओतो वचन करै अगीकारो। शीघ्र भडार थी सारो, ओतो त्रिण लक्ष लेई दीनारो॥
- ११ तिमहिज यावत देई भावै, इक लक्ष नापित तेडावै। वे लक्ष सुवर्ण करि माणै, रजोहरण पात्र प्रति आणै॥
- १२ काश्यप नापित तिवारो, जमाली ने पिता जिहवारो । कोडुविक नर पास तेडाया, ओतो हरष सतोपज पाया ॥

- तए णं से जमाली खित्तयकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—इच्छामि ण अम्मताओ ।
- २-४. कुत्तियावणाओ रयहरण च पिडग्गह च आणिय, कासवर्गं च सद्दाविय (श० ६।१८३) 'कुत्तियावणाओ' त्ति कुत्रिक—स्वर्गमत्यंपाताललक्षण भूत्रय तत्सम्भवि वस्त्विप कुत्रिक तत्सम्पादको य आपणो—हट्टो देवाधिष्ठितत्वेनासौ कुत्रिकापणस्त-स्मात्। 'कासवग' ति नापित (वृ० प० ४७६)

- ५ तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिता कोडू-वियपुरिसे सद्दावेद, सद्दावेत्ता एव वयामी—
- ६. खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइ गहाय 'सिरिघराओ' ति भाण्डागारात् (वृ० प० ४७६)
- ७. दोहि सयसहस्सेहि कुत्तियावणाओं रयहरण च पडिग्गह च आणेह
- स्यसहस्सेण कासवग सद्दावेह । (श० ६।१८४)
- ६. तए ण ते कोडुवियपुरिसा जमानिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एव वृत्ता समाणा हट्टतुट्टा
- १०. करयल जाव (स० पा०) पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सिरिघराओं तिण्णि सयसहस्साइ गिण्हति
- ११ दोहि सयसहस्सेहि कुत्तियावणाओ रयहरण च पडिग्गह च आर्णेति, सयमहस्सेण कासवग सद्दावेंति । (श० ६/१८४)
- १२ तए ण से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुविय पुरिसेहिं सद्दाविए ममाणे हट्टलुट्ठे

<sup>\*</sup>लय: सुण चिरताली थारा

१३ स्नान विलक्षमं कीवा, जाव तनु श्रंगार सीवा। जिहा जनक जमाली नो जाणी, तिहा आवे आवी पहिछाणी।। [मुण भव प्राणी, ए तो चरण-महोच्छव जाणी]

१४ करतल जोडी तामो, जमाली ना पिता ने शिर नामो। जय-विजय वचन सू वधायो, ओतो वोले इहविध वायो।।

- १५. अहो देवानुप्रिया जी । मुक्त आजा देवो तुम ताजी । जे मुक्त कार्य करिवू, तिको हरप घरी आदिरवू ॥ १६ जमाली अत्रियकुमारो, तास जनक तिहवारो । तेह नापित प्रति एमो, ओतो वचन वदे घर प्रेमो ॥ १७ अहो देवानुप्रिया जी । जमाली अत्रिय-सुत ने समाजी । परम यत्न करि पेखी, चिहुं आगुल वर्जी विशेखी ॥ १८ दीक्षा प्रयोग सुस्थापो, अग्रभूत केश प्रति कापो । लोच ने अर्थे विशेषो, चिहुं आगुल राखो केशो ॥
- १६ काव्यय नापित तिवारो, जमाली ने जनक जिहवारो । इम वचन कहाँ छते ताह्यो, ओतो हरप सतोपज पायो ।। २० करतल यावत एमो, स्वामी तहत्ति आज्ञा कहि तेमो । विनय करी सुविचारो, ओतो वचन करें अगीकारो ॥ २१ सुगव गवोदक करिनें, कर पग पखाले पखाली ने । निर्मल अठ पुड वस्त्र करीनें, मुख वांवें मुख वांवी ने ॥ २२ जमाली क्षत्रियकुमर नें, परम यत्न करि चित्त घर नें । चिहु आगुल वर्जी दीक्षा योग्य, पवर केंग कापे सुप्रयोग्य।।
- २३ जमानी क्षत्रियकुमारो, ओतो तास माता तिहवारो। हंस नक्षण पट शाटक करीने, अग्र गहै सुग्रही ने ॥

# सोरठा

२४ उज्जल हस सरीस, अथवा क्वेतज हस ना। चिह्न रूप सुजगीस, हस लक्षण कहिये तसु।। २५ शाटक जे पट रूप, पट-शाटक कहिये तसु। शटन तणो तद्रूप, कर्त्ता पिण शाटक हुवे।। २६ ते व्यवछेदन अर्थ, पट नो ग्रहण कियो इहां। वा शाटक तदर्थ, वस्त्र मात्र ते पृथुल पट।।

वा॰ —पडसाटएण पटस्प शाटक ते पट णाटक। घटन ते वस्त्र, तेहनो करणहार पिण घाटक किह्यै। ते व्यवछेदन अर्थे पट नो ग्रहण कर्यू। अथवा गाटक ते वस्त्र मात्र ते पृथुल विस्तारवत पट किह्यै ते भणी पट-णाटक जाणवो। २७ सुग्ध गथोदके न्हाली, तिके केश पखाले पखाला। अग्र प्रधान करी पेखो, वर श्रेष्ठ करी सुविशेखो।।

२८ गंव ने फुन माल करीने, तिके केश अर्चे अर्ची ने। शुद्ध वस्त्रे वांधी नें, रत्नकरड प्रक्षेपे प्रक्षेपी ने।।

- १३. ण्हाए कयविनकम्मे जाव (म० पा०) सरीरे जेणेव जमालिस्म प्रत्तियकुमारस्म पिया तेणेव उवागच्छः उवागच्छिता
- १४. करमल जाव (स॰ पा॰) जमानिस्म चत्तियकुमारम्म पियय जएण विजएण वद्घावेइ वद्घावेत्ता एव वयासी —
- १६. तए ण से जमानिस्स खत्तियकुमारस्य पिया त कास-वगं एवं वयामी---
- तुमं देव।णुष्पिया ! जमालिस्म यत्तियकुमारस्स परेण जत्तेणं चटरंगुनवज्जे
- १८. निवयमणपाओगो अगाकेमे कप्पेहि । (ज० ६/१८७) 'अगगकेसे' त्ति अग्रभूता. केशा अग्रकेशास्तान् (व्०प० ४७६)
- १६. तए ण से कासवगे जमानिस्म खत्तियकुमारस्स पिउणा एव वृत्ते समाणे हट्टतुद्ठे
- २०. करयल जाव (मं० पा०) एवं सामी । तहत्ताणाए विणएण वयण पटिसुणेइ
- २१. सुरिमणा गंघोदएण हत्यपादे पक्खालेड, पक्खालेसा सुद्धाए अट्टपडलाए पोत्तीए मुहं वधड, विधत्ता
- २२. जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेण जत्तेण चडरगुन-वज्जे निक्खमणपाओगो अग्गकेमे कप्पेइ। (श० ६।१८८)
- २३ तए ण सा जमानिस्स खत्तियकुनारस्म माया हसनक्खणेण पडसाटएणं अग्मकेसे पडिच्छइ
- २४. 'हसलक्खणेण' युक्लेन हसिचह्नेन वा (वृ० प० ४७६)
- २४,२६ 'पडमाडएण' ति पटरूप शाटक. पटगाटक, शाटको हि शटनकारकोऽप्युच्यत इति तद्व्यवच्छेदार्थं पटग्रहणम्, अथवा शाटको वस्त्रमात्र म च पृयुत. पटोऽभिद्यीयत इति पटगाटक. (वृ० प० ४७६)
- २७. सुरिमणा गधोदएण पक्खालेइ, पक्खालेता अगोहिं वरेहिं 'अगोहिं' ति 'अपूर्य.' प्रधाने (वृ० प० ४७६) २८ गधेहिं मल्लेहिं अच्चेति, अच्चेता 'सुद्वे बत्थे' वधइ, विधत्ता रयणकरडगिस पिक्खिति, पिक्खितिता

- २६. हार मोत्या रो उदक नी धारो, सिंदुवार तरु विशेष विचारो। केइ कहै निर्गुडी ना फूलो, तिके उज्जल अधिक अतूलो।।
- ३० छेदी मोती नी मालो, जेहवी दीसै तेहवा आसू न्हालो। सुत-विरह दुसह चित डोले, आसू मूकती इम वोले।। ३१ ए जमाली क्षत्रियकुमारो, तेहना अग्र-केश वस्तु सारो। वर मदन त्रयोदशी आदि, घणी तिथि विषे सुसवादि।।
- ३२. पर्व दीवाली प्रमुख विषेहो, वली वहु उत्सव विषे एहो। ते प्रिय-जन-सगम समुदायो, कौमुदी प्रमुख कहिवायो।।
- ३३ यज्ञ नागादि पूजा कहेहो, छण इद्र महोत्सवादि विषेहो। ए केश तणु सुविमासी, मोने अपच्छिम दर्शण थासी।।

- ३४ अपच्छिम इहा अकार, अमगल टालण ने अर्थ। हुस्यै दर्श छेहलो सार, केशा तणो।। जमाली तणा। गिर ना ३५ दशे केश न् एह, जेह, दर्शण दीठो तणो ॥ सुन केश थी। ३६ वा पश्चिम छेहडो नाहि, वार-वार ए
- त्रह वा पारयम छहुडा गाहि, वार-वार ए करा पा जमाली नो ताहि, मुभने दर्शण थापसै।। वा॰—नही पश्चिम छेहडो ते अपश्चिम कहिये। एतले वार-वार करिके
- जमालीकुमार नो दर्शन ए केश देख्ये छते थास्यै, सभारिवा थही । ३७. एम कहीने तेहो, एतो ओसीसामूल विषेहो । स्थापै केशा ने जिवारो, आनो मोह वश मात तिवारो ॥
- ३८ जमाली क्षत्रियकुमारो, तसु मात पिता तिहवारो। दूजी वार उत्तर दिश स्हामो, सिहासन रचावै अभिरामो॥

#### सोरठा

- ३६ उत्तरावक्रमणक होय, उत्तरवो उत्तर दिशि । जेह थकी अवलोय, त्या वेसाड़े सुत भणी ।।
- ४० \*क्षत्रिय-सुत जमाली ने, रूपा सोना ना कलश करी ने । स्नान करावै सुचगो, स्नान करावी ने लूहै अगो ॥
- ४१ पशमवत सुकुमाल, सुरिभगव प्रघान विशाल। रक्त वस्त्र रुमाल करी ने, गात्र प्रते लूहै लूहीने।।

- २६. हार-वारिधार-सिंदुवार
  - 'सिंदुवार' त्ति वृक्षिविशेषो निर्गुण्डीति केचित् तत्कुसुमानि सिन्दुवाराणि तानि च शुक्लानीति (वृ० प० ४७६)
- ३० छिण्णमुत्तावलिप्पगासाइं सुयवियोगदूमहाङ असूइ विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी एव वयासी—
- ३१. एस ण अम्हं जमालिस्म सत्तियकुमारस्स बहूसु तिहीसुय --

'एम ण' ति एतत्, अग्रकेशवस्तु ''तिहीसुय' ति मदनत्रयोदश्यादितिथिपु (वृ० प० ४७६)

३२ पन्वणीसु य उस्सवेसु य 'पन्वणीसु य' ति पन्वंणीपु च कार्तिक्यादिपु 'उस्सवेसु य' ति प्रियसङ्गमादिमहेपु

(वृ० प० ४७६)

३३ जण्णेसु य छणेसु य अपिच्छमे दिरमणे भविस्सिति , 'जन्नेसु य' त्ति नागादिपूजासु 'छणेसु य' त्ति ्, इन्द्रोत्सवादि लक्षणेपु (वृ० प० ४७६)

- ३४. 'अपच्छिमे' त्ति अकारस्यामगलपरिहारार्थं त्वात् पश्चिम दर्शन भविष्यति (वृ० प० ४७७)
- ३५ एतत् केश्रदर्शनमपनीतकेशावस्थस्य जमालिकुमारस्य यहर्शन ' (वृ० प० ४७७)
- हेर्स. अथवा न पश्चिम पौन पुन्येन जमालिकुमारस्य दर्शनमेतद्शेने भविष्यतीत्यर्थ (वृ० प० ४७७)
- ३७ इति कट्टु ऊमीसगमूले ठवेति । (श० ६/१८६)
- ३८ तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो दोच्च पि उत्तरावक्कमण सीहासण रयावेंति
- ३६ 'उत्तराववकमण' ति उत्तरस्या दिश्यपक्रमण— अवतरण यस्मात्तद् उत्तरापक्रमणम्—उत्तराभिमुख (वृ० प० ४७७)
- ४० जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सेया-पीयएहि कलसेहि ण्हार्वेति ण्हावेत्ता 'सीयापीयएहिं' ति रुप्यमये. मुवर्णमयेश्वेत्यर्थ
- ४१. पम्हलसुकुमालाए सुरभीए मधकामाईए गायाद लूहेंति, लूहेता 'पम्हलसुकुमालाए' ति पक्ष्मवत्वा सुकुमालया चेत्यां 'गधकासाइए' ति गन्धप्रधानया कपायरक्तया शाटिकयेत्यर्थ (वृ० प० ४७३)

(वृ० प० ४७७)

<sup>\*</sup>लय: सुण चिरताली थारा

- ४२ सरस तत्काल नों घस्यो जेह, गोशीर्ष चंदन तेह। ते प्रधान चदन करीने, गात्र प्रते लीपे लीपी ने ॥ ४३. न।सिका ने नि.स्वासज वाय, तेणे करी उडे कपाय। अति ही हलुओ वस्त्र विचारी, ते तो चक्षु ने आनदकारी॥
- ४४. प्रवर वर्ण फर्न सहित न्हालो, हय-लाल थी अधिक सुहालो। अत्यंत ववन उज्जास, मुवर्ण खिचत विहुं छेहडा जासं॥

- ४५ मोटा योग्य उज्जल हस सरिखो, अथवा हंस ना रूप सरिखो।
  एहवा पट्ट बाटक सुखदाय, पहिरावे पहिरावी ताय।।
  ४६ अठारैसरियो हार, पहिरावे अधिक उदार।
  विल नवसरियो अद्वहार, पहिरावे पहिरावी सार।।
- ४७. इम जिम मुरियाभ ने जाणी, अलकार तिमहिज पिछाणी। नानाविव रयण संकट उत्कृष्टं, वारु मुकुट पहिरावे सुइष्ट।।

- ४८. मुरियाभे सुर सोय, अलंकार पहिर्या तिमज। इहा कहिवो अवलोय, रायप्रश्रेणी थी कहू। ४९. विचित्र मणी में ताहि, पहिरावे एकावली। इम मुक्ताविल ताहि, केवल मुक्ताफलमयी।।
- ५० कनकाविल कहिवाय, सुवर्ण-मणिमय शोभती। रत्नावली सुहाय, माला केवल रत्न नी।।
- ५१ अगद केयूर दोय, वाहू नां आभरण जे। तास विशेष सुजोय, जुदा कह्या किण कारणे।।
- ५२ नाम कोप रै माहि, एकार्थ ए आखिया। इहा जुदा कह्या तग्हि, फेर आकार नु जाणवू।।
- ५३. कटक तिको अवलोय, कलाचिका आभरण जे। त्रुटित वहिरखा होय, कटिसूत्र कणदोरो वली।।
- पू४ हस्तागुलि दग देख, दीपती दग मुद्रिका। सुवर्ण-साकल पेख, हिय-गेहणो वक्ष-सूत्र ए।।
- ५५. वच्छा-सूत्रज एह, पाठातर कह्यूं वृत्ति में। सकल ए शुभ रेह, उत्तरासग जिम पहिरिड।।

- ४२. सररोणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुनिपंति अणुनिपत्ता
- ४३. नासानिस्मामवायवोज्ञ चक्युहर
  'नासानीसासे' त्यादि नामानि ग्वामवातवाह्यमितनपुत्वात्
  चक्षुहर-नोचनानन्ददायकत्वात् । (वृ० प० ४७७)
- ४४. वण्ण-फरिसजुत्त हयलालापेलवातिरेगं धवल फणगयचितंतकम्म 'वन्नफरिसजुत्त' ति प्रधानवर्णस्पर्गमित्यर्थं. हयनालायाः सकाशात् पेलवं - मृदु अतिरेकेण—अतिशयेन यत्तत् तथा कनकेन राचित—मण्डित अन्तयो —अंचलयो कर्म-वानलक्षण यत्तत्तया। (वृ० प० ४७७)
- ४५. गहरिह हंसलग्यणपटमाडग परिहिति परिहित्ता
- ४६. हार पिणद्वेति पिणद्वेत्ता अद्वहार पिणद्वेति, पिणद्वेत्ता 'हार' ति अप्टादणमरिक 'पिणद्वति' पिनह्यत पितरा-विति शेप. 'अद्वहार' ति नवसरिकम् (वृ० प० ४७७)
- ४७ एव जहा सूरियाभस्म अलकारो तहेव जाव (स॰ पा॰) चित्त रयगसकडुनकड मजड पिणर्द्वेति रत्नसंकट च त दक्कट च—जत्कृष्ट रत्नसकटोत्कट (व॰ प॰ ४७७)
- ४८. रायपसेणइय सूत्र २८५
- ४६ एगाविन पिणद्वेति मुत्ताविन पिणद्वेति तत्रैकावली—विचित्रमणिकमयी मुक्तावली—केवल-मुक्ताफलमयी। (वृ० प० ४७७)
- ५०. रयणार्वील पिणर्द्धेति कनकावली—सौवर्णमणिकमयी रत्नावली—रत्नमयी (वृ० प० ४७७)
- ४१. अगयाइं केयूराइ अङ्गदं केयूरं च वाह्वाभरणविशेष

(वृ० प० ४७७)

- ५२. एतयोग्च यद्यपि नामकोशे एकार्यंतोक्ता तथाऽपीहाऽऽ-कारविशेपाद् भेदोऽत्रगन्तन्य (वृ० प० ४७७)
- ५३ कडगाइ तुडियाइ कडिसुत्तग कटक —कलाचिकाभरणविशेष. त्रुटिकं —वाहुरक्षिका (पृ० प० ४७७)
- ४४ दसमुद्दाणतग विकच्छमुत्तग दशमुद्रिकानन्तक —हस्ताङ्गुलीमुद्रिकादशक वक्ष-सूत्र—हृदयाभरणभूतमुवर्णसकलक (वृ० प० ४७७)
- ५५ 'वेच्छासुत्त' ति पाठान्तर तत्र वैकक्षिकासूत्रम् उत्तरासगपरिधानीयं संकलक (वृ० प० ४७७)

५६. मादल नैं आकार, मुखी कहियै मादलो। फुन कठमुखी सार, गेहणु तेह गला तणु॥

कहियै छै पहिछान. ५७ पालव जे ्पहिर्या कान, चूडामणि शिर सेहरो॥ वर्णक ५८ वाचनातरे ए आभरण वान, सूत्र विषे सुविधान, दीसै छै साक्षात ए॥ ५६ \*घणु वखाण स्यू कीजै, गथिम सूत्रे करि माल गूथीजै। वेढिम वीटी ने निपजाई माला, पुष्फ लवूसकादि विशाला।। ६०. पुरिम वश शिलाकादी पोई, हिवै सधातिम अवलोई। माहोमाहि नालिका करेह, नालिक गूथी माला निपावेह ।।

६१ ए चिहु विध माला करि सोय, कल्प वृक्ष नी पर अवलोय। कल्प वृक्ष फूल करि शोभेह, तिम अलक्कृत विभूपित करेह।।

वा॰—वाचनातरे वली ए अधिक दीसै छै—'दह्रमलयसुगिधगिधिए हिं गायाइ भुकुँ ति' ति । एहनो अर्थ —ितहा दद्दर अने मलय नार्में विहु
पर्वंत सबधी तेह यनी ऊपना चदनादि द्रव्यजपणे करी जे सुगध, तेहनी गिधका
ते वामना, तेणे करी । वली अनेरा आचार्य इम कहै छै—दर्दर ते वस्त्रे करी
वाध्यो कुडिकादिक भाजन नो मुख, तेणे करी गाल्यो अथवा तेहने विषे पचायो
जे। मलयगिरि ने विषे ऊपजवै करि मलयज— श्रीखड सबधी सुगध—गिधका
नी वासना, तेणे करी गायाइ—गात्र प्रते भुकुँ ति अर्थात् उद्धूलै —लेपन करें।
६२, ए दोयसौ दशमी ढालो, तिण मे आखी वात विशालो।
चरण लेवा जमाली थयो त्यारी, जनक करें महोत्सव भारी।।

ढाल: २११

#### दूहा

- १ जमाली क्षत्रियकुवर, तास जनक तिहवार । कोटुविक नर तेडनै, इम कहै वच अवधार ॥ २ देवानुप्रिय ! शीघ्र ही, अनेक सैकडा थभ । तेह वि ेलीला करी, रही पूतल्या रभ ॥
- वा॰ —वाचनातरे विल ए इम दीसै छै —-अब्भुग्गय-सुकयवइरवेइय-तोरण-वररइयलीलट्टियसालभजियाग ति । तिहा अब्भुग्गय — ऊची सुकय—सम्यक्

- ५६ मुर्राव कठमुर्राव मुरवी—मुरजाकारमाभरणं कण्ठमुरवी—तदेव कण्ठा-सन्ततरावस्थानं (वृ० प० ४७७)
- ५७ पालव कुडलाइ चूडार्मीण प्रालम्ब—झुम्बनक (वृ० प० ४७७)
- ५८. वाचनान्तरे त्वयमलकारवर्णकः साक्षाल्लिखित एव दृश्यत इति (वृ० प० ४७७)
- ५६,६० कि बहुणा ? गथिम-वेढिम-पूरिम-सघातिमेण इह ग्रन्थिम-प्रथनिवर्नृत्तं सूत्रग्रथितमालादि वेष्टिम —वेष्टितनिष्पन्न पुष्पलम्बूसकादि पूरिमं—येन वश- शलाकामयपञ्जरकादि कूर्चादि वा पूर्यंते सघातिम तु यत्परस्परतो नालसङ्घातनेन सङ्घात्यते

(वृ० प० ४७७) ६१. चउिव्वहेण मल्लेण कप्परुक्खग पिव अलक्विय-विभूसिय करेति । (श० ६।१६०)

वा० — वाचनान्तरे पुनिरदमिष्ठक स्थिते, तत्र च दर्द्रमल-याभिष्ठानपर्वतयो सम्बन्धिनस्तदुद्भूतचन्द नादिद्रव्यजत्वेन ये सुगन्धयो गन्धिका — गन्धावासास्ते तथा, अन्ये त्वाहु — दर्द्र — चीवरावनद्ध कुण्डिकादिभाजनमुख तेन गालिता स्तत्र पक्वा वा ये 'मलय' ति मलयोद्भवत्वेन मलयजस्य— श्रीखण्डस्य सम्बन्धिन: सुगन्धयो गन्धिका—गन्धास्ते तथा तैर्गात्राणि 'भुकुर्डेति' ति उद्धूलयन्ति (वृ० प० ४७९)

- १ तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुवि-यपुरिसे सद्दावेद्त एव वयासी—
- २ खिप्पामेव भो देवाणुष्पिया अणेगखभसयसण्णिवट्ठ लीलद्वियसालभजियाग शालिभञ्जिका —पुत्रिकाविशेषा वृ० प० ४७७) वा०—वाचनान्तरे पुनरिदमेव दृश्यते तत्र चाभ्युद्गते-उच्छिते सुकृतवस्त्रवेदिकाया सम्बन्धिन तोरणवरे रचिता
  - १ अगसुत्ताणि भाग २ श० ६।१६० के टि० १० में 'विकच्छसुत्तग' के स्थान पर वृत्ति के दो पाठान्तर उद्धृत किये है—वच्छसुत्त और वेकच्छसुत्त। जयाचार्य ने इस स्थान पर वच्छासुत्त पाठ रखा है।

<sup>\*</sup> लय: सुण चिरताली थारा

प्रकारे कीघी वडरवेइय—वज्र नी वेदिका सवधी तोरण वररइय—प्रधान तोरण नै विषे रची लीलद्वियसालभिजयागं—लीला करी रही पूतल्यां जेहने विषे तिका। लीलास्थिता णानभञ्जिका यस्या सा तथा तो (वृ० प० ४७७)

#### दहा

- ३ जिम रायप्रश्रेणी नै विषे, वर सूर्याभ विमाण। तेह तणु वर्णक कह्यू, तेम इहा पिण जाण॥
- ४. जाव मणि रत्नां तणी, सखर घटिका जाल। तेणे करी सहीत छै, प्रवर पालखी न्हाल।। वा॰—विमाण नुवर्णक तिम पालखी नुं वर्णक ते इम।

# गीतकछंद

- ५ ईहामृगा ते वरगडा फुन वृषभ हय नर मगर ही। पंखी वली वालग्ग अहि वा स्वापदा अर्थ उभय ही।
- ६. किन्नर सुरा मृग सरभ चमरज गज प्रवर वन नी लता। ए सर्व चित्रामे सुचित्रित सेविका रिचर्य रता॥
- ७ स्तम विषे स्थापी वज्र नी, वर वेदिका करि परिगता। इह कारणे अभिराम ते, रमणीक देख्या चितरता॥
- द विद्याघरा नी श्रेणि यमलज, युगल द्वय स्त्री पुरुपही। तिणहीज यत्रे करीने ते, युक्त सिवका छै वही।।
- ह अर्च्ची हजारा तणी माला, आवली छै जे विषे। फुन रूप सहस्रगमैज सहित मुदीप्यमानज जन अखै।।
- १० अत्यर्थ करि फुन दीष्तिमानज तेह छै अति दीपती। विल चक्षु लोचन लेस तेहन्, अर्थ कहिये वृत्ति थी।।
- ११ चक्षु तिका जसु देखवै करि, श्लिष्यती इव ते हुवै। देखवा योग्यपणे करी, आनद अति ही अनुभवै॥
- १२. सुखकारियो छै फर्श जेहनु, रूप शोभा सहीत ही। घटावली चलते छते तसु, मधुर मनहर स्वर वही।।
- १३ शुभ कात देखण योग्य जे, फुन निपुण पुरिसे ओपिता। देदीप्यमानज मणि रतन नी, घटिका वृद परिखिता।।

# सोरठा

१४. आख्यो ए विस्तार, रायप्रश्रेणि सूत्र थी। वाचनांतरे सार, दीसै छै साक्षात सहु।।

#### दूहा

१५ प्रवर पालकी प्रति पुरुष. सहस्र उपाई जेह। ते स्थापो स्थापी करी, मुक्त आजा सूपेह।।

- ३. जहा रायप्पमणइज्जे (सू० १२४) विमाणवण्णको
- ४. जाव मणिरयणघटियाजालपरिविद्यत्त
- ४,६. ईहामियसममतुरगनरमगरिवहगवालगिकन्तरहरू-सरभचमरकुजरवणलयपसमलयभित्तिच्तः ईहामृगा—। वृका. ऋषभाः वृषभा व्यालका —ण्वापदा भुजगा वा किन्नरा—देवविशेषा हरवो—मृगविशेषा.

(ৰূ০ ৭০ ४७७,४७८)

७ 'खभुगयवद्दरवेदयापरिगयाभिराम' स्तम्मेपु उद्गता— निविष्टा या वज्जवेदिका तथा परिगता—परिकरिता अत एवाभिरामा च रम्या या मा

(बृ० प० ४७८)

- पीवज्जाहरजमनजुयलजंतजुत्तिपव' विद्याघरयोर्यद्
   यमल—समश्रेणीकं युगर्ल—हयं तेनेव यन्त्रेण—ताम्
   मञ्चिरिष्णुपुष्ठपप्रतिमाद्वयरूपेण युक्ता या सा तथा
   (वृ० प० ४७८)
- ६. 'अच्चीसहस्समालिणीय' अच्चि.सहस्रमाला.— दीप्तिसहस्राणामावत्यः मन्ति यस्यां सा ः रूवगमह-स्सक्तिय 'भिममाण' दीप्यमाना (वृ० प० ४७८)
- १०,११ 'भिन्मिसमाणां' अत्ययं दीप्यमानां 'चनखु-लोयणलेस' चसु कतृं लोकने —अवलोकने सित लिशतीय —दर्शनीयत्वातिशयात् प्रिलप्यतीव यस्या सा तथा ता (वृ० प० ४७८)
- १२. 'सुहफास सिस्सरीयरूव' सशोभरूपका 'घटावित्तच-लियमहुरमणहरमर' (वृ० प० ४७८)
- १३. सुहं कत दरिमणिज्जं निज्जोवियमिनिमसतमणि-रयणघटियाजालपरिविखत्तं (वृ० प० ४७८)
- १४. वाचनान्तरे पुनरय वर्णक. साक्षाद् दृश्यत एवेति । (वृ० प० ४७८)
- १५ पुरिससहस्सवाहिणि सीय उबट्टवेह, उबट्टवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चिप्पणह ।

२६८ भगवती जोड़

- १६. कोडंविक तिण अवसरे, जावत सूपै आण । शिविका पूर्व कही तिमज, त्यार करी सुविधान ॥ \*चारू जमाली ना चरणमहोत्सव साभलो । (ध्रुपद)
- १७ हारे लाला, जमाली क्षत्रिय-सुत तदा, हारे लाला केशालकार करेह । हारे लाला, केश तेहिज अलकार छै,

हा रे लाला, केशालकार कह्यु एह ॥

- १८. यद्यपि केशज तास, पहिला जे काप्या हुता। इण हेतू थी जास, सम्यक ए नींह सभवे।।
- १६. तथापि केइय केश, रह्या हुता जे तेहनु। अलकार कह्यु एस, प्रथम अर्थ इम वृत्ति मे॥
- २०. तथा केश नु सार, अलकार पुष्पादि जे। ते केशालकार, करी विभूपा तिण करी॥
- २१. \*वस्त्र ने अलकारे करी, माला ने अलकारेह। आभरण अलकारे करी, ए चिहु अलकार करेह।
- २२. चिहु अलकार कीधे छते, प्रतिपूर्ण अलकार। गेहणा पहिरी सिंहासन थकी, ऊठै ऊठी तिहवार।।
- २३ सिवका प्रते जे प्रदक्षिणा, करतो छतो मन रग। सिवका विषे चढै ते तदा, सिवका चढी नै सुचग।।
- २४. सखर सिंहासन ने विषे, पूरव साम्हों पेख। मुख करीने वेसै तदा, मन मांहै हरप विशेख।।
- २५ जमाली क्षत्रियकुमर नी, माता करीने स्नान। जाव शरीर श्रुगार ने, वस्त्र गेहणा परिधान।।
- २६ हस लक्षण पट शाटक ग्रही, सिवका नै प्रति तह।। अनुप्रदक्षिण करती थकी, चढुँ चढी नै जेह।।
- २७ जमाली क्षत्रियकुमार ने, दक्षिण पासै देखे। प्रवर भद्रासन ने विषे, आय वैठी सुविशेख।।
- २८ जमाली क्षत्रियकुमार नी, घाय माता तिहवार। स्नान करी सुविशेख थी, यावत तनु श्रृगार॥
- २६ रजोहरण पात्रा ग्रही, सिवका प्रति सुविशेख।। अनुप्रदक्षिणा करती थकी, चढै चढी सपेख।।
- ३० जमाली क्षत्रियकुमार नै, डावै पासै चित ढाय। प्रवर भद्रासण ने विषे, वैठी छै धाय माय॥
- ३१. जमाली क्षत्रियसुत नै तदा, पूठै इक तरुणी प्रघान। श्रृगार रस तणी घर जिसो, मनहर वेप सुजान।।
- ३२ गमन प्रमुख विषे चतुर ते, जावत रूप आकार। योवन वय ने विलास जे, तिण करि सहित उदार।।
- \*लय: ऐसी जोगणी री जोगमाया

- १६. तए ण ते कोडुवियपुरिमा जाव पच्चिप्पणीत । (श० ६।१६१)
- १७. तए ण से जमानी खित्तयकुमारे केसालकारेण 'केसालकारेण' ति केशा एवालङ्कार केशालङ्कारस्तेन (वृ० प० ४७६)
- १८ यद्यपि तस्य तदानी केशा. कित्पता इति केशालङ्कारो न सम्यक् (वृ० प० ४७८)
- १६. तथाऽपि कियतामिप सद्भावात्तद्भाव इति (वृ० प० ४७८)
- २० अथवा केशानामलकार पुष्पादि केशालकारस्तेन (वृ० प० ४७८)
- २१,२२. वत्यालकारेण, मल्लालकारेण आभरणाल-कारेण —चउित्वहेण अलकारेण अलंकारिए समाणे पिडपुण्णालकारे सीहासणाओ अव्मुट्ठेइ अव्मुट्ठेता
- २३. सीय अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीय दुरुहइ दुरुहित्ता
- २४. सीहासणवरिस पुरत्थाभिमुहे सिष्णसण्णे । (श० ६।१६२)
- २५. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता ण्हाया कयविलकम्मा जाव अप्पमहग्घाभरण।लिकियसरीरा
- २६. हसलक्खण पडसाडग् गहाय सीय अणुप्पदाहिणी-करेमाणी सीय दुरुहइ, दुरुहित्ता
- २७. जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासण-वरसि सिण्णसण्णा। (श० ६।१६३)
- २८ तए ण जस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मद्याती ण्हाया कयवलिकम्मा जाव अप्पमहग्वाभरणालिकय-सरीरा
- २६ रयहरण पिडागह च गहाय सीय अणुष्पदाहिणी-करेमाणी सीय दुरुहइ, दुरुहित्ता
- ३० जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामे पासे भद्दासणवरसि सण्णिसण्णा। (श० ६।१६४)
- ३१ तए ण तस्स जमालिस्स खित्तयकुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिगारागारचारुवेसा श्रुगारस्य—रसविशेपस्यागारिमव (वृ० प० ४७८)
- ३२ सगयगय जाव (स० पा०) रूवजोव्वणविलास-कलिया

- ३३. जाव शब्द मे जाण, हिसवा भणिवा में चतुर। फून चेप्टित पहिछाण, विलास नेत्र विकार जे।।
- ३४ भणिवं मांहोमाय. सलाप कहियै तेहने। उल्लाप जे कहिवाय, वक्रोक्ति वर्णन भणी।।
- ३५. \*आसन स्थान गमन वली कर भ्रू नेत्र विकार। तिणे करीने सहीत ही, तेह विलास विचार॥
- ३६ मुन्दर थण कह्यू सूत्र में, इण वच करि सुप्रयोग्य। जघन्य वदन कर चरण ही, लावण्य वछवा योग्य।।
- ३७. हप आकार कहीजिये, तरुणपणो ते योवन्न । गुण ते मृदु स्वर प्रमुख ही, तिण करि सहित सुजन्न ।।
- ३८. वरफ रूपो ने कुमोदनी, मचकुन्द चद सरीस। कोरट तरु नां फुला तणी, माला सहीत जगीस।।
- ३६. एहवा घवल जे छत्र नं, ग्रहण करी लीला सहीत। शिर ऊपर घरती छती, तिप्ठे ते रमण सुरीत।।
- ४० जमाली क्षत्रियकुमार ने, उभय पासे तिहवार। तरुणी उभय मुप्रवान ही, शुगार रस नो आगार॥
- ४१ जाव यौवन गुण सहीत ही, उभय चामर ग्रहि हाय ॥ तेह चामर छै केहवा, साभलजो अवदात ॥
- ४२. नाना मणी कनक रत्न मे, निर्मल मोटा योग्य। उज्जल तपाया सोना तणो, विचित्र दड आरोग्य।।

# सोरठा

- ४३ कनक तपनीय मांय, स्यू विशेष इहा आखियो। कनक पीत कहिवाय, रक्त वर्ण तपनीय जे॥
- ४४ \*देदीप्यमानज दीपतो, शख अने अक रत्न।
  फूल मचकुन्द तणो विल, जल नां फुहारा सुजन्न।।
- ४५ अमृत ने मिथया थका, तेहना जे फेण नी राजि। तेह सरीखा सफेत जे, चामर उभय विमासि॥
- ४६ एहवा जे चामर ग्रही करी, लीला सहित विहुं पास। वीजती वीजती रमणि विहु, तिष्ठे छै आण हुलास।।

काववा वर्णनम्ल्लापः सलापो भाषण मिथः।।

# \*लय: ऐसी जोगणी री जोगमाया

१ गाया ३३ एव ३४ के प्रतिपाद्य से मम्बन्धित दो पद्य सूक्त के रूप में प्राप्त होते हैं— हावो मुखविकार स्याद् भावस्चित्तसमुद्भवः। विलासो नेत्रजो ज्ञेयो, विश्रमो सूममुद्भव ॥ अनुलापो मुहुभीपा प्रलापोऽनयंक वच.।

- ३३. हिमय-भणिय-चेट्टिय-विलास-इह च विलामो नेत्रविकार: (वृ० प० ४७८)
- ३४. संलाव-निर्ण' जुत्तोवयारकुमला सलापो—मियोभाषा उल्नापम्तु काकुवर्णन (वृ० प० ४७६)
- ३५. स्यानायनगमनाना हस्त श्रूनेत्रकम्मंणा चैव उत्पद्यते विदेशो यः क्लिप्टोऽमी विलास. स्यात् । (वृ० प० ४७६)
- ३६ मुदरयण-जघण-ययण-कर-चरण-नयण-नावण्ण-नावण्य चेह स्पृहणीयता (वृ० प० ४७८)
- ३७ रूप —आकृति:यौवनं तारुण्य गुणा मृदुस्वरत्वादय (वृ० प० ४७८)
- ३८ हिम<sup>3</sup>-रयय-कुमुद-कुर्देदुष्पगाम मकोरेंटमल्लदाम सकोरेण्टकानि—कोरण्टपुष्पगुच्छ्युक्तानि माल्यदा-मानि—पुष्पमाना यत्र तत्त्तया (वृ० प० ४७८)
- ३६ धवलं आयवत्तं गहाय मलील 'ओधरेमाणी-ओधरेमाणी चिट्ठति । (य॰ ६।१६५)
- ४०,४१ तए ण तस्म जमालिस्म (खत्तियकुमारस्स<sup>?</sup>) उभयो पामि दुवे वरतरुणीओ मिगारागार जाव (म० पा०) कलियाओ
- ४२. नाणामणि-कणग रयण-विमलमहरिहतवणिज्जुज्जल-विचित्तदंडाओ
- ४३. अयात्र कनकतपनीययो को विशेष. ? उच्यते, कनक पीतं तपनीयं रक्तिमिति (वृ० प० ४७८)
- ४४ चिल्लियाओ, सर्लंक-कुद-दगरय-'चिल्लियाओ' ति दीप्यमाने : इह चाको रत्नविशेष-(वृ० प० ४७८)
- ४५,४६ अमय-महिय-फेणपुजसिष्णकासाओ धवलाओ चामराओ गहाय मलीलं वीयमाणीओ-वीयमाणीओ चिट्ठति । (ग० ६।१६६)
  - १. वृत्ति में इम स्यान पर संलावुल्लावनिज्ण पाठ है।
  - २. इस गाया में हिम शब्द से पाठ गुरू होता है। अग-सुत्ताणि में इसमें पहले 'सरदब्म' शब्द और है। यह शब्द कई आदर्शों में नहीं है। जयाचार्य को उपलब्ध आदर्श में भी यह नहीं रहा होगा, इसलिए इसकी जोड़ नहीं है।

- ४७. जमाली क्षत्रियकुमार ने, ईशाण कूण तिवार ।
  एक तरुणी सुप्रधान ते, श्रुगार रस नों आगार ॥
  ४८. जाव योवन गुण सहीत ही, श्वेत रूपा नो उदार ।
  निर्मल जल करिने भरियो, मत्त गज महा मुखाकार ॥
  ४६. तेह समान भगार ते, पाणी नो भारो पिछाण ।
  तेह कलश प्रति ग्रही करी, तिष्ठे ए रमण ईशाण ॥
  ५०. जमाली क्षत्रियकुमार ने, अग्नि कूणे तिहवार ।
  एक तरुणी सुप्रधान ते, श्रुगार रस नो आगार ॥
  ५१. जाव जोवन गुण सहीत ही, विचित्र कनक नो दंड ।
  ताल वृंत वीजणा प्रते, ग्रही ने तिष्ठे सुमड ॥
  ५२ जमाली क्षत्रियकुमार नो, जनक सेवग ने वोलाय ।
  इम कहै अहो देवानुप्रिया ! शीघ्र कार्य करो जाय ॥
- ५३. मरीखा पुरुष सरीखी त्वचा, सरीखी वय सुसगीत। सरीखो लावण्य आकार छै, रूप गुणे करि सहीत।। ५४. एक सरीखा दीसै एहवा, आभरण वस्त्र उदार। तिणरो गृहीत परिकर जिणे, तरुण कोडुविक वार।।
- ४५. एहवा वर संहस पुरुप तेडविये, कोडविक तिहवार । जावत वचन अंगीकरी, शीघ्र सरीखा नर घार ॥
- ५६ जाव तेडावै सहस्र पुरुप ने, कोडविक तिहवार। जमाली जनक ना कोडिविके, तेडाया हरप अपार।। ५७ विल संतोप पाम्या घणा,

स्नान करी शुद्ध थाय। कीघा वलिकर्म विल कोतुक किया,

तिलक मपी प्रमुख ताय।।

- प्रत. मगल कीवा विष्न मिटायवा, प्रायश्चित्त सुप्रयोग। एक सरीखा गेहणा वस्त्र नै, ग्रह्मा परिकर निर्योग।।
- ५६ जमाली क्षत्रियकुमार नो,जनक जिहां छै तिहा आय। करतल जाव वयावे ते तदा, वधावी कहै इम वाय।।
- ६० अहो देवानुप्रिया जी ! तुम्है, दीजै आदेश उदार। कार्य करिवा जोग जे, ते मुक्त करिवू सार।। ६१. जमाली क्षत्रियकुमार नो, जनक तिको तिहवार। वर तरुण सहस्र कोटुम्बिक भणी,डहविध बोलै विचार।। ६२ तुम्है अहो देवानुप्रिया। न्हाया कृत जावत सुजोय। ग्रह्या निर्योग वस्त्राभरण जे, एक सरीखा पहिरी सोय।। ६३ जमाली क्षत्रियकुमार नी, सिवका उपाडो वहो सार। तव कोटुम्बिक जमाली ना जनक नो,वचन करै अगीकार।।

- ४७. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स उत्तर-पुरित्थमे णं एगा वरतरुणी सिंगारागार-
- ४८,४६. जाव (स॰ पा॰) कलिया सेतं रययामय विमल-सिललपुण्ण मत्तगयमहामुहाकितिसमाण भिगार गहाय चिट्ठइ । (श॰ ६।१६७)
- ५० तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्य दाहिण-प्रत्यिमे ण एगा वरतरुणी सिगारागार
- ५१. जाव (स॰ पा॰) कलिया चित्तकणगदड तालवेंट गहाय चिट्ठइ। (श॰ ६।१६८)
- ५२. तए ण तस्स जमालिस्स खित्तयकुमारस्स पिया कोडुवियपुरिसे सद्दावेद, सद्दावेत्ता एव वयासी— खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !
- ५३ सरिसय सरित्तय सरिव्वय सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण गुणोववेय
- ५४. एगाभरणवसण-गहियनिज्जोय कोडुवियवरतरुण-एक.—एकादश साभरणवसनलक्षणो गृहीनो निर्योग. —परिकरो यैस्ते तथा (वृ० प० ४७६)
- ५५. सहस्स सहावेह। (श० ६।१६६) तए ण ते कोडुवियपुरिसा जाव पिडसुणेत्ता खिप्पामेव सिरसय जाव (सं० पा०) सिरत्तय।
- ५६,५७ कोडुवियवरतरुणसहस्सं सद्दार्वेति ।
  (श० ६।२००)
  तए ण ते कोडुवियवरतरुणपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुवियपुरिसेहि सद्दाविया समाणा
  हट्ठतुट्ठा ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउय-
- ५८. मगलपायच्छिता एगाभरणवसण-गहियनिज्जोया
- ५६ जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता करयल जाव (स॰ पा॰) वद्वावेत्ता एव वयासी—
- ६०. सर्दिसंतु ण देवाणुप्पिया । ज अम्हेहि करणिज्जं । (श० ६।२०१)
- ६१ तए ण से जमालिस्स खित्तयकुमारस्स पिया त कोडु-वियवरतरुणसहस्म एव वयासी -
- ६२. तुब्भे णं देवाणुष्पिया । ण्हाया कय जाव (स॰ पा॰) गहियनिज्जोया

<sup>\*</sup>लय: ऐसी जोगणी री जोगमाया

६४. स्नान करि यावत जिणे, प्रह्या निर्योग परिकर जेण। जमाली क्षत्रियकुमार नी, सिविका वहै शुभ श्रेण।। ६५ दोयसौ ने इंग्यारमी, ढाल विशाल सुचग। जमाली चरण लेवा भणी, त्यार थयो मन रग।।

६४. ण्हाया जाव एगाभरणवसण-गहियनिज्जोगा जमालिस्स खत्तियकृमारस्म सीय परिवहंति । (घ० ६।२०३)

ढाल: २१२

### दूहा

१. तव जमाली क्षत्रिय-सुत, वहै जसु पुरुप हजार ।
एहवी वर सिविका प्रते, चढचे छते अवधार ।।
२. विवक्षित वस्तू मभे, प्रथमपणे ते मत ।
मगलीक अठ-अठ क्रमे, मुख आगल चालत ।।
३ अष्ट-अष्ट वे वार जे, अत्र शब्द आख्यात ।
वीष्सा विषेज द्विचचन, मगल वस्तू ख्यात ।।
४ अन्य आचार्य इम कहै, अठ-अठ सख्यक जाण ।
आठ मागलिक वस्तु जे, चाले आगीवाण ।।
५ अप्ट मगल कहिये तिके, प्रथम साथियो पेख ।
श्रीवत्स यावत जाणवो, दर्पण अप्टम देख ।।

## सोरठा

- ६ जाव शब्द थी जोय, नंद्यावर्त्त निहालियै।
  वर्द्धमान अवलोय, तेह सराव कही जियै।।
  ७ अन्याचार्य कहेह, पुरुपारूढज पुरुप ए।
  फुन अन्य इम आखेह, स्वस्तिक पचक ए अछै।।
  ८ फुन अन्य कहै प्रासाद, भद्रासण नै कलश फुन।
  मच्छयुग्म अहलाद, जाव शब्द में पंच ए।।
  \*जी काइ चरण लेवा नै सचर्यो,
  जी कांइ खत्रियकुवर घर खत। (ध्रुपद)
- ह तदनतर चालै तदा जी काइ, पूर्ण कलश भृगार। जिम उववाई ने विषे जी काइ, जात्र गगन तल घार।।

#### सोरठा

१० वाचनातरे वाय, दीसै छै साक्षात ए। ते छै इहविच ताय, चित लगाई साभलो।।

## गीतक-छंद

- ११ वर दिव्य छत्र सहीत जे, पताक चामर सहित ही।
  फुन रचित आरीसो जिहां, अतिहीज उच्चपणे रही।
- \* लय: म्हारी सासूजी रै पांच पुत्र

- १. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरिससहस्य-वाहिणि सीय दुरुढस्स समाणस्स
- २ तप्पढमयाए ६मे अट्टट्टमगलगा पुरलो अहाणुपुव्वीए सपिट्टिया
- ३. 'अट्टहुमगलग' ति अप्टावप्टाविति वीप्साया द्विवं-चन मगलकानि मागल्यवस्तुनि (वृ० प० ४७६)
- ४. अन्ये त्वाहु ---अष्टसस्यानि अष्टमगलकसञ्ज्ञानि वस्तूनि (वृ० प० ४७६)
- ५ त जहा- सोत्यिय-सिरियच्छ जाव [स॰ पा॰] दप्पणा
- ६. णदियावत्त-बद्धमाणग तत्र वर्द्धमानकं--- शरावं (वृ० प० ४७६)
- ७. पुरुपारूढपुरुप इत्यन्ये स्वस्तिकपञ्चकमित्यन्ये (वृ० प० ४७६)
- द. भद्दामण-कलस-मच्छ प्रासादविशेपमित्यन्ये (वृ० प० ४७६)
- ह. तदाणतर च ण पुण्णकलसिंभगारं छहा ओववाइए (सु० ६४) जाव (स० पा०) गगणतलमणुलिहती....
- १०. 'जहा उववाइए' (सू० ६४) ति अनेन च यदुपात्त तद्वाचनान्तरे साक्षादेवास्ति तच्चेद (वृ० प० ४७६)
- ११-१३. दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दसण-रइयझालोय-दरिसणिज्जा वाउद्ध्य-विजयवेजयती य ऊसिया' गगणतलमणुलिहती पुरको अहाणुपुठ्वीए सपट्टिया।

१२ जन निजर पहुंचे ज्यां लगै, दीसै छै जे दृष्टी करी।
पवने करी उडती छती, विहुं पास वे लघु घ्वज घरी।।
१३. एहवी विजय नी करणहारी वैजयती घ्वज छती।
नभतल प्रतेज उल्लघती, अनुक्रमे आगल चालती।।

वाo—विहुं पासे चामर सिहत जिका तिका सचामर किहये। आरीसो रच्यो छै जेहने विषे ते अदसरइय किहये। आलोक ते दृष्टिगोचर ज्या लगे दीसे छै अति ऊचैपणे किर जिका, तिका आलोकदर्शनीया ध्वजा किहये। ते भणी इहा कर्मधारय समासं किरवू—सचामरादसणरइयआलोय-दिरसणिज्जित्त। पाठातरे तु सचामरे ति भिन्नपदं। दर्शन जमाली नो दृष्टि पथ, तिण ने विषे रचित अथवा दर्शन ने विषे रितदा किहता सुख नी दाता ते दर्शणरितदा किहये। ते इसी आलोकदर्शनीया ध्वजा छै। इम कर्मधारय समास।

१४ \*इम जिम उववाई विषे, तिमहिज भणिवू सार। जाव आलोक करता थका, जय-जय शब्द उचार॥

### गीतकछंद

- १५ तदनतर जे छत्र चालै, तास वर्णक जाणियै। वैडूर्यमय देदीप्यमानज, विमल दह वलाणियै॥
- १६ लबायमानज वृक्ष कोरट, तेहना पुष्पदाम ही। तिण करी उपशोभित, जे छत्र अति अभिराम ही।।
- १७ शशि तणु मडल ते सरीखू, उर्द्ध कीघू विमल ही। आतपत्र तडको टालवा नै, छत्र उज्जल निमल ही।।
- १८. फुन वर सिंहासण रत्न मणि नु पायपीठ सुहामणू। निज पादुकायुग करो सिंहतज, दीसतू रिलयामणू।।
- १६ प्रभु पूछने जूजुआ कारज करें ते किंकर कह्या। विण पूछियाजे करें कारज, कर्मकर ते पिण वह्या।।
- २०. किंकर करमकर पुरुष पायक-वृद वीट्यू जलहलै। एहवू सिंहासण शोभतो, अनुक्रमे चालै आगलै।।
- २१ तदनतर वहु लहिग्राहक, कुतग्राहक जाणियै। चामर तणा जे ग्रहणहारा, पासग्राहक माणियै।
- २२ फुन धनुषग्राहक पोथग्राहक, फलगग्राहक वहु जना । विल पीढग्राहक वीणग्राहक, कुतुपग्राहक नर घना ॥

#### सोरठा

- २३ चोवा ने चपेल, शतपाकादिक ना वली। मोगरेल फुन तेल, तास डावडा कुतुप ते॥
- २४ हडप्पग्राहक तेह, ग्राहक जे नाणा तणा। वा तावूल अर्थेह, भाजन पूगफलादि ना।।
- २५ यथानुक्रमे जोय, आगल ए सहु चालिया। विल विशेष अवलोय, चालै ते कहियै हिवै॥

वा०—सह चामराभ्या या सा सचामरा आदर्शो रिचतो यस्या साऽऽदर्शेरिचता आलोकं—दृष्टिगोचरं यावद्दृश्यतेऽत्युच्चत्वेन या साऽऽलोकदर्शः तया, तत. कर्म्भधारय, 'सचामरा दसणरइयआलोयदिसणिज्ज' ति पाठान्तरे तु सचामरेति भिन्नपद, तथा दर्शनेजमालेर्दृष्टिपथे रिचता—विहिता दर्शनरिचता दर्शने वा सित रितदा—सुखप्रदा दर्शनरितदा सा चासावालोकदर्शनीया चेति कर्मधारयः। (वृ० प ४७६)

१४. 'जहा उववाइए' (सू० ६४) ति अनेन यत्सूचित तदिद (वृ० ५० ४७६)

- १५. तदाणतर च ण वेरुलिय-भिसत-विमलदड (वृ० ५० ४७६)
- १६ पलवकोरटमल्लदामोवसोभिय

कराश्च तदन्यथाविधास्ते

- १७. चदमडलणिभ समूसिय विमल आयवत्त
- १म. पवर सीहासण वर मणिरयणपादपीढ सपाउया-जोयसमाउत्त
- १६,२० वहुर्निकर कम्मकर पुरिस-पायत्त परिविखत्त पुरको अहाणुपुन्वीए सपट्टियं । किंकरा.—प्रतिकम्मं प्रभो पृच्छाकारिण कर्म्म-
- २१ तदाणतर च ण बहवे लिट्डिग्गाहा कुतग्गाहा चामर-ग्गाहा पासग्गाहा

(वृ० प० ४७६)

- २२ चावग्गाहा पोत्ययग्गाहा फलगग्गाहा पीढग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा
- २३ कुतुपः —तैलादिभाजनविशेष (वृ० प० ४७६)
- २४ हडप्पाेन्द्रमादिभाजन ताम्यूलार्थं पूगफलादिभाजन वा (वृ० प० ४७१)

२५. पुरको अहाणुपुन्वीए सपट्टिया।

**<sup>\*</sup>**लय . म्हारी सासूजी र पाच पुत्र

### गीतकछंद

- २६ तदनंतरा वहु दडग्राहक, मुडिता शिरमुंडिका। चोटी तणां जे धरणहारा, जटाघारी तुडिका।
- २७. फुन मोर-पिच्छज तणा घारक, हास्यकारक फुन कह्या। विग्रह तणा कारक वली, परिहास ना कारक वह्या॥
- २८ चाटूकरा प्रियवादना, कंदिंप्पका केलीकरा। कुक्कुड्या ते भांड अथवा भाड सरिखानर घरा॥
- २६ क्रीडा कुतूहल वली रामत, करें ते किड्डाकरा। वाजत्र नेज वजावता फुन, गीत गावता नरा।। ३०. विल नाचता अति नृत्य करता, अन्य प्रति ही नचावता। अति हास्य करता हसे फुन जे, अन्य प्रति ही हसावता।। ३१. विल विविध भाषा भाखता अरु सीख प्रति देता सही। सभलावता अमुको रु अमुको, हुस्ये पौर परार ही।।
- ३२ फुन राखता अन्याव प्रति जे, एह प्रथम-उपग' ही। वर अर्थ आख्यो तेम भाख्यो, जाव शब्द सुचग ही।। ३३ फुन वाचनांतर विषे प्रायज, एह सगलू जाणियै। साक्षात टीसै प्रगट पाठज, वृत्तिकार वखाणियै।।
- ३४ \*आलोक करता देखता, मगल अर्थे न्हाल। आरीसादिक वस्तु ने, विल गज प्रमुख विशाल।। ३५ जय-जय शब्द प्रजूभता, अनुक्रम आगल ताय। चालता चित्त चूप सू, मन में हरप अथाय।।

### सोरठा

३५ तथा अपर अविकाय, तेहिज वाचनांतर विषे। जेह कह्युं वृत्ति मांय, हय गय रथ पय वणाओ।।

### गीतक छंद

- ३७ तदनतर जे जातिवंतज, प्रवर माल्याघान ही। जे पुष्प-ववन स्थान घिर ना, केश-समूह पिछान ही।।
- ३८ अथवा विकस्वर पवर पुष्पज, तेहवत तसु घ्राण ही। तरमिल्लहायणाण किहाइक, तास अर्थ हिव आण ही।।

\*लय: म्हारी सासूजी रै पांच पुत्र

१. ओवाइय सू० ६४

२. पदाति

- २६. तदाणतरं च ण बह्वे दहिणो मृटिणो मिहहिणो जहिणो सि हंटिणो— शिसाधारिणः जटिणो—जटाघराः (यृ० प० ४७१)
- २७ पिछिणो हासकरा टमरकरा दवकरा पिच्छिणो—मयूरादिपिच्छवाहिन. हासकरा ये हमित टमरकरा—विद्वदकारिणः दवकरा.—पिरहास-कारिणः (वृ० प० ४७६)
- २८. चाढुकरो कंदिप्यया कोक्कुइया चाटुकरा — प्रियवादिन: कंदिप्पया — कामप्रधानकेलि-कारिण: कुकुइया — भाण्डा. भाण्डप्राया वा (वृ० प० ४७६)
- २६ किहुकरा य वायंता य गायता य
- ३०. णच्चंता य हसता य
- ३१. भासता य सामंता य सार्वेता य 'सार्विता य' इद चेद भविष्यतीत्येयभूतवचांसि श्रावयन्तः (यृ० प० ४७६)
- ३२. रनयता य अन्यायं रसन्तः (वृ० प० ४७६)
- ३३ एतच्च वाचनान्तरे प्रायः साक्षाद्दृश्यत एव (वृ० प० ४७६)
- ३४. आलोय च करेमाणा
- ३५. जय-जय सहं पर्जजमाणा पुरक्षो अहाण्पुट्वीए सप-द्विया।
- ३६. तथेदमपरं तत्रैवाधिक (वृ० प० ४७६)
- ३७ तयाणतर च ण जच्चाण वरमिल्लिहाणाण · · · वर माल्याधान पुष्पवन्धनस्थान शिरः केशकलापो येपा ते (वृ० प० ४७६,४५०)
- ३८ अथवा वरमिलकावद् शुक्तत्वेन प्रवरिवचिकित-कुमुमवद् घ्राण—नासिका येपा ते तथा तेपा क्विचत् 'तरमिल्लहायणाण' ति दृश्यते तत्र च

(वृ० प० ४५०)

- ३६. तर वेग अथवा वल प्रवल तसु, घरणहारो छै सही। हायन संवत्सर वर्त्तवू जसु, सखर योवन वय रही।।
- वा॰—तर कहितां वेग अथवा वल अने मिल्ल धातु ते धारण अर्थ ने विषे ते भणी तर ते वेग—वल नो धरणहार, हायन कहितां संवत्सर वर्त्ते जै जेहने तेतरो 'मिल्लहायणा' कहियै, एतलै योवनवत इत्यर्थः।
- ४०. वर मिल्ल भासणाण किहाइक पाठ दीसै छै सही। वर माल्यवान इण कारणे हिज, दीप्तिवता शोभही॥

वा॰ — वर किहता प्रधान, मिल्ल किहता माल्यवान इण कारण थकीज भासणाण किहता दीप्तिमान।

- ४१ चच्चुरित जे कुटिल गमन, वा शुक-चांच तणी परे।
  जे वक्रता करि ऊर्द्ध थावू, चरण-उत्पाटन' करे।
- ४२ तेहीज लिलत विलास नी पर, पुलित गमन-विशेष ही। विशिष्ट क्रमण क्षेत्र लघन प्रवर गति सुउल्लास ही।।
- ४३ क्वचित फुन चचुरित लिलतज, पुलितरूपा गित सही। चल चपलथीज अत्यत चचल, अधिक ही मनहर रही।।
- ४४ हरिमेल नामै वनस्पति नु, मुकुल डोडो जाणियै। जे मल्लिका विकसर समी, तसु चक्र घवल पिछाणियै।।
- ४५ दर्पण तणे आकार हय नुं, अलंकार विशेष ही। अम्लान चामर दंड करि परिमंडिता जसु कटिक ही।।
- ४६. मुख तणु जे आभरण ही, लवायमान गुच्छा वही। दर्पणाकार आभरण हय नु, प्रवर तास पलाण ही।।

वा॰ — 'चमरीगडपरिमडितकटय' इति एहनों अर्थे — चमरी गाय ना चामर दंड किर मिडत — शोभायमान किट छै जे अथव नी। किहाइक विल ए इम दीसे — थासगअहिलाणचामरगडपरिमंडियकडीणं ति। अहिलाण किता लगाम छै जे अथव नी, शेप पूर्ववत्।

### सोरठा

४७ एहवा प्रवर तुरंग, इक्सी आठ सुओपता। यथानुक्रमे सुचग, आगल चालंता छता॥

- ३६. तरो—वेगो बलं तथा 'मल मल्ल घारणे' ततश्च तरोमल्ली—तरोघारको वेगादिघारको हायन — सवत्सरो वर्त्तते येथा ते तरोमल्लिहायना.—यौवनवत इत्यर्थः (वृ० प० ४८०)
- ४०. वरमिल्लभासणाणं ति क्वचिद्दृश्यते, तत्र तु प्रधान-माल्यवतामत एव दीप्तिमता चेत्ययं:

(वृ० प० ४८०)

- ४१,४२. 'चंचुिच्चयलियपुलियविक्कमिवलासियगईण'
  ति 'चंचुिच्चय' ति प्राकृतत्वेन चञ्चुरित—कुटिलगमनम्, अथवा चञ्चु शुक्रचञ्चुस्तद्वद्वक्त्रतया
  उच्चितम्—उञ्चताकरण पदस्योत्पाटन वा (शुक)
  पादस्येवेति चञ्चुिच्चत तच्च लित क्रीडित पुलित
  च—गतिविशेप: प्रसिद्ध एव विक्रमण्च—विशिष्ट
  क्रमणं क्षेत्रलंघनमिति द्वंदस्तदेतत्प्रधाना विलामिता—
  विशेषेणोल्लासिता गतिर्यस्ते (वृ० प० ४८०)
- ४३. क्विचिदिद विशेषणमेवं दृश्यते— 'चचुिच्चयलित्य-पुलियचलचवलचचलगईण' ति तत्र च चञ्चुरित-लितिपुलितरूपा चलाना— अस्थिराणा सता चञ्च-लेभ्यः सकाशाच्चञ्चला—अतीवचटुला गतिर्येषा ते (वृ० प० ४८०)
- ४४. 'हरिमेलमजलमिलयच्छाण' ति हरिमेलको— वनस्पितिविशेपस्तस्य मुकुलं—कुड्मलं मिल्लका च —विचिकलस्तद्वदक्षिणी येपा, शुक्लाक्षाणामित्यर्थः (वृ० प० ४८०)
- ४५. 'थासगअभिलाणचामरगडपरिमडियकरीण' ति स्था-सका—दप्पणाकारा अश्वालंकारविशेपास्तैरम्लान-चामरैर्गण्डैश्च—अमिलनचामरदण्डैः परिमण्डिता कटिर्येषां ते (वृ० प० ४८०)
- ४६. तत्र मुखभाण्डक—मुखाभरणम् अवचूलाश्च—प्रलंब-मानपुन्छाः स्थासकाः प्रतीताः 'मिलाण' त्ति पर्या-णानि च येपां सन्ति ते । (वृ० प० ४८०) वा०—चमरी (चामर) गण्डपरिमण्डितकटय इति पूर्वेवत् ""क्विन्त्युनरेविमद दृश्यते — 'थासगअहिलाण-चामरगंडपरिमडियकडीणं' ति (वृ० प० ४८०)

१. पांव उठाना

# गीतक छंद

- ४८. तदनंतरं गज कलभ ते, लघु दंत अल्पज नीसर्या।
  फुन अल्प जे मदवत विल तसु, दत केहवा उच्चर्या।।
  ४६ फुन जेहने वर दत ना जे पृष्ठ देश विशेष ही।
  ईषत विशालज यौवनारंभवित्त घवलज दंत ही।।
- ५०. कंचन तणी खोली विपे जे, दत पैठा छै म्ही।
  तिण करीने उपशोभिता, ए कलभ नीं महिमा कही।।
  ५१. गज तणां कलभज एहवा, जे एकसी अठ सोहता।
  मुख आगले अनुक्रमे चाले, जन तणा मन मोहता।।
  ५२ तदनतर जे छत्र-सहितज, ध्वजा सहित वखाणिये।
  विल घट-सहित पताक-सहितज, प्रवर रथ पहिछाणिये।
  ५३ गरुडादि रूपे करी युक्तज, ध्वजा तेह कहीजिये।
  तेह थकी अन्य पताक फुन, तोरण सहित सलहीजिये।।
  ५४. लघु घटिका तेणे करी जे, सहित ही सुदर किया।
  वर हेम जाले करी रथ पर्यंत, चिहुं दिशि वीटिया।
- प्रप्रात्व नंदि-घोप सहीत द्वादश, तूर्यघ्विन समुदाय ही ।
  भभा मकुद रु मई्लादिक, प्रवर रव सुखदाय ही ।।
  - ५६ लघु घंटिका तेणे करी जे, सिहत ही सुंदर कियो। वर हेम जाले करी रथ, पर्यंत चिहुं दिशि वीटियो॥ ५७ गिरि हेमवत ना नीपना जे, चित्र विविध प्रकार ना। कठ तिनिश नामे तरु तणां ते, कनक खचित रथ तना॥
  - ५८ अति भला छै जे चक्र जेहने, मंडला वृत वाटला। विल धुरा पिण रमणिक अर शोभायमानज भिलमिला।।
  - ५६ अय जेह कालायस विशेषणं, तिण करी कीधु भलु।
    नेमी तिका जे चक्र नु वर भाग ऊपरलु भिलु।।
    ६०. तिण अय करी जे चक्रघारा, वाघवा नी वर क्रिया।
    रथ चक्र नु जे अग्र भागज, नेमि ते दृढता लिया।।
    ६१. विल जातिवतज वर तुरगम, जोतरचा ते रथ तणे।
    नर चतुर अवसर जाण सारिथ, सग्रह्मा प्रयतनपणे।।

- ४८. 'ईसि दंताणं' ति 'ईपद्दान्ताना' मनाग्ग्राहितशिक्षाणा गजकलभानामिति योग: । (वृ० प० ४८०)
- ४६. ईनि उच्छगउन्नयिक्सालघवलदंताण ति उत्संगः—
  पृष्ठदेश. ईपदुत्सगे उन्नता विद्यालाश्च ये यौवनारम्भवर्तित्वात्ते तथा ते च ते घवलदन्ताश्चेति

(बृ० प० ४८०)

- ५०. कंचणकोरीपिवट्टदतोवसीहियाण' ति इह काञ्चन-कोषी--सुवर्णमयी योला (वृ० प० ४८०)
- ५२,५३. 'मञ्ज्ञयाण सपडागाण' इत्यत्र गरुडादिर पयुक्तो ध्वज. तदितरा तु पताका (वृ० प० ४८०)
- ५४ 'सिंखियणीहेमजालपेरतपरिविखत्ताण' ति सिंक-किणीकं—क्षुद्रघण्टिकोपेत यद् हेमजाल—सुवर्ण-मयस्तदाभरणविशेपस्तेन पर्यन्तेपु परिक्षिप्ता ये ते (वृ० प० ४८०,४८१)
- ५५. 'सन दिघोसाणं' ति इह नन्दी—द्वादशतूर्यसमुदाय, तानि चेमानि— "भभा मउद मद्दल कडव झल्लिर हुडुक्क कसाला। काहल तिलमा वसो संखो पणवो य वारसमो॥" (वृ० प० ४८१)
- ५७ 'हेमवयित्ततिणिसकणगिनजुत्तदारुगाण' ति हैमव-तानि—हिमवद्गिरिसम्भवानि चित्राणि—विवि-धानि तैनिशानि—तिनिशाभिधानतरुसम्बन्धीनि कनकनियुक्तानि—सुवर्णखिचतानि दारुकाणि— काष्ठानि येपु ते (वृ० प० ४८१)
- ५८. 'सुसंविद्धचक्कमडलघाराण' ति सुष्ठु सविद्धानि चक्राणि मण्डलाश्च वृत्ता घारा येपा ते (उ० प० ४८१)
- ५६,६० कालायससुकयनेमिजतकम्माण' ति कालायसेन-लोह्विशेपेण सुष्ठु कृत नेमे —चक्रमण्डनधाराया यन्त्रकर्म—बन्धनिक्रया येपा ते
- ६१. 'आइन्नवरतुरगसुसपउत्ताण' ति आकीर्णे जात्यैवंर-तुरगे सुष्ठु सप्रयुक्ता ये ते ' कुसलनरच्छेपसारहि-सुसपग्गहियाण' ति कुशलनरे विज्ञपुरुपैग्छेकसारथि-भिग्च—दक्षप्राजितृभि सुष्ठु सप्रगृहीता ये ते (वृ० प० ४८१)

- ६२. गर घालवा नां भायडा वत्तीस कर मंडित वही। इक एक भायड विषे सौ-सौ वाण छै अत प्रवर ही।।
- ६३ कवचे करीने वली जे, अवतंस शेखर सहित ही। शिर-त्राण रक्षा कारका, तिण करीने युक्त ही॥
- ६४ फुन घनुप गर करिकै सहित, हथियार खड्गादिक घणा। हालादि करि विल रथ भर्यो ए, सज्ज है जोघां तणां।।
- ६५. वर एहवा रथ एकसी अठ, सुघट सखर सुहामणा। अनुक्रमे आगल चालता वहु जन भणी रलियामणां।।
- ६६ तदनतर फुन असी शक्ती, कुत तोमर सूल ही। विल लकुट ने भिडमाल घनु कर घरी सिक्स्या मूल ही।।
- ६७ वर सुभट एहवा यथा अनुक्रम, चालता आगल वही। ए वाचनांतर वृत्ति में, चतुरग वर्णन छै सही॥
- ६८. \*तदनतर वहु चालिया, उग्र कुले उत्पन्न। ऋपभ कोटवालपणे स्थापिया, तास वंश ना जन्न॥
- ६९ वहु भोग कुल ना ऊपनां, प्रभु ऋपभदेवजी जाण।
  गुरुपणेजे स्थापिया, तास वश नां माण।।
- ५० जिम उववाई में कह्यु, जाव महापुरुप घार। सर्व परिवारे वीटिया, आगल चाल्या सार।

- ७१ जाव शब्द में एह, राजन कुल ना ऊपना। क्षित्रय कुल ना लेह, ऋषभ वंश ईक्ष्वाकु जे॥
- ७२. विल उपना कुल ज्ञात, ईक्ष्वाकुवश विशेष ए। कुरुवशी फुन स्यात, इत्यादिक अवधारवा।।
- ७३ \*जमाली क्षत्रियकुमार ने, आगल फुन विहुं पास । पूर्वे उग्रादिक कह्या, तिके अनुक्रम चाल्या तास ॥
- ७४ जमाली क्षत्रियकुमार नो, जनक तिको चित चग। स्नान करी कीघो वलि, जाव विभूपित ग्रग।।
- ७५. वर गज खघ वैठो थको, कोरट तरु ना मूल। तसु माला सहित जे छत्र छै, ते घरते अनुकूल।।
- ७६ क्वेत प्रवर चामर करी, वीजते छते जेह। हय गय रथ वर भट भला, तिण करि सहितज नेह।।
- ७७ चउरगणी सेन्या सभ करी, परिवरची तेण सघात। महा भट चाकर वृद सू, जावत वीटची विख्यान॥
- \*लय: म्हारी सासूजी रै पाच पुत्र

६२ 'सरसयवत्तीसतोणपरिमंहियाणं' ति शरशतप्रधाना ये द्वात्रिशत्तोणा भस्त्रकास्तै परिमण्डिता ये ते

(वृ० प० ४८१)

- ६३ 'सकंकडवर्डेसगाणं' ति सह ककटै. कवचैरवतंसकैश्च-शेखरकै शिरस्त्राणैवां ये ते (वृ० प० ४८१)
- ६४. 'सचावसरपहरणावरणभारियजुद्धसज्जाण' ति सह चापै. शरैश्च यानि प्रहरणानि—कुन्तादीनि आवर-णानि च—स्फुरकादीनि तेपा भरिता युद्धसज्जाश्च युद्धप्रगुणा ये ते (वृ० प० ४८१)
- ६८. तदाणतर च णं वहवे उग्गा तत्र 'उग्रा.' आदिदेवेनारक्षकत्वे नियुक्तास्तद्वश्याश्च (वृ० प० ४८१)
- ६६. भोगा भोगास्तेनैव गुरुत्वेन व्यवहृतास्तद्वश्याश्च - (वृ० प० ४८१)
- ७०. जहा स्रोवनाइए (सू० ६४) जाव महापुरिसवग्गुरा-परिक्खिता
- ७१. खित्तया इक्खागा तत्र 'राजन्या' आदिदेवेनैव वयस्यतया व्यवहृतास्त-द्वंश्याश्च क्षत्रियाश्च प्रतीता. 'इक्ष्वाकव,' नाभेय-वंशजाः
- ७२ नाया कोरव्वा
  'ज्ञाता' इक्ष्वाकुवंशविशेषभूता. 'कोरव्व' ति
  कुरव.—कुरुवंशजा. (वृ० प० ४८१)
- ७३. जमालिस्म खित्तयकुमारस्स पुरको य मग्गतो य पासको य अहाणुपुन्त्रीए सपट्टिया। (श० ६/२०४)
- ७४. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ण्हाए कयवलिकम्मे जाव विभूसिए (सं० पा०)
- ७५. हित्यक्खधवरगए सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्ज-माणेण
- ७६. सेयवरचामराहि उद्बुव्वमाणीहि-उद्बुव्वमाणीहि हय-गय रहपवरजोहकितयाए।
- ७७. चाउरिंगणीए सेणाए सिंद्ध मपरिवृद्धे मह्याभटचड-गरिंवदपरिक्विते

७८ जमाली क्षत्रियकुमार नैं, इहिवच जनक सुजाण।
पीठे पूठे चालतो, वारू कर मंडाण॥
७६ ते जमाली क्षत्रियकुमार नें, आगल हय चालंत।
तेह तुरगम केहवा, अश्व विषे वर मत॥

# सोरठा

- ८०. पाठातर आख्यात, आसवारा असवार जे। अक्वारूढ सुजात, पुरुप तिके आगल चलै।।
- ५१. \*विहु पासे नागा गजा, ते गज माहि प्रवान । पूठे रथ अति शोभता, रथ-समुदाय सुजान ॥
- द२ जमाली क्षत्रियकुंवर तदा, सन्मुख जेहने जोय।
  भृंगार कलग उपाडियो, ग्रह्मो वीजणो सोय॥
  द३. उर्द्ध २वेत छत्र छै, जसु, अतिहि वीजते जेह।
- द३. उर्द्ध क्वेत छत्र छै, जसु, अतिहि वीजते जेह । क्वेत चामर वाल ना समूह करीने तेह ।।
- दर सर्व ऋदि करि सहित छै, जावत वाजंत्र जान। तेह तणे शब्दे करी, अतिही शोभायजमान।।
- ८५. तदनंतर वहु चालिया, लाठीग्राहा कुतग्राह। जावत पुस्तकग्राहका, जाव वीणग्रहा ताय।
- द्भ. तदनंतर वहु चालिया, इकसी अठ मातग। तुरग एकसी अठ वली, इकसी अठ रथ चग।।
- द७. तदनतर लकुट करे, इकसौ आठ विख्यात। इकसौ अठ असी कर विषे, इकसौ अठ कुत हाथ।।
- **८८ बहुला नर पाळा वली, आगल थी घर खत।**
- चालता चित चूप सूं, मन मांहे हरप अत्यंत। दश्. तदनंतर वहु राजवी, ईश्वर तलवर मत।
- न्ट. तदनतर वहु राजवा, इश्वर तलवर मत । जाव सार्थवाह प्रमुख ही, आगल थी चालत ।।
- ६०. क्षत्रिय कुडग्राम नगर नै, मध्योमध्य थइ न्हाल। जिहा माहणकुड ग्राम नगर छै, चैत्य जिहा वहुसाल।।
- ६१ जिहा श्रमण भगवंत महावीर छै, तिणहिज स्थानक जोय।
  जावा ने उद्यत थया, सकल्प कीघो सोय।।
- ६२ जमाली क्षत्रिय-सुत ने तदा, क्षत्रियकुड ग्राम नगर विषेह। मध्योमध्य थई करी, नीकलता ने जेह।।
- ६३ त्रिक आकारे सघाट ने, चउक्क मिलै पथ च्यार। यावत महापथ ने विषे, वह घन अर्थी घार॥
- ६४ जिम उववाई ने विषे, जाव अभिनदताय। तू समृद्धि पाम चिर जीवजे, स्तवना कर कहै वाय।।

- ७८. जमालि खित्तयकुमारं पिट्टओ अणुगच्छइ। (গ্ল০ ६/२०५)
- ७६. तए णं तस्स जमालिस्म खत्तियकुमारस्स पुरशो मह शासा शासवरा
- प्तः 'आसवरा' अग्वानां मध्ये वराः 'आसवार' ति पाठान्तरं तत्र 'अग्ववारा 'अग्वारुढपुरुपाः

९७५५गः, (वृ० प० ४५१)

- ५१. उभन्नो पासि नागा नागवरा, पिटुन्नो रहा, रहसंगेल्ली। (श० ६।२०६) 'रहसगेल्लि' ति रथसमुदाय.। (वृ० प० ४५१)
- दर. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अव्मुग्गतिमगारे परिग्गहियतालियटे
- ५३. क्सवियसेतछते पवीद्दयसेतचामरवालवीयणीए उच्छितस्वेतच्छत्रः "प्रवीजिता स्वेतचामरवालाना सत्का व्यजनिका (वृ० प० ४८१)
- **८४. सिन्बड्ढीए जाव दुदुहिणिग्घोसणादितरवेण**
- ५५. तदाणंतरं च णं वहवे लिट्टिग्गाहा कुतग्गाहा जाव पुरथयग्गाहा जाव वीणग्गाहा
- न्द. तदाणतरं च ण अट्टमयं गयाण अट्टसयं तुरयाण, अट्टसयं रहाण
- ५७. तदाणतरं च णं लउडअसिकोतहत्थाण
- **८५. वहूण पायत्ताणीणं पुरक्षो संपद्धिय**
- दश्चित्रताणतर च ण बहुवे राईसरतलवर जाव सत्य-वाहप्पियओ पुरओ सपद्विया।
- ६०. खत्तियकुडग्गाम नयर मज्झमज्झेणं जेणेव माहण-कुडग्गामे नयरे जेणेव वहुसालए चेइए
- ६१. जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव पाहारेत्य गमणाए। (श० ६/२०७)
- ६२. तए ण तस्स जमालिस्स खित्तयकुमारस्स खित्तय-कुडग्गाम नयर मञ्झमज्झेण निग्गच्छमाणस्स
- ६३. सिघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह जाव पहेसु बहवे अत्यत्थिया
- ६४. जहा ओववाइए (सू॰ ६८) जाव अभिनदता<sup>र</sup>
  - १. यह जोड सिक्षप्त पाठ के आधार पर की गई है। इससे आगे की गायाओं में सिक्षप्त पाठ में छोड़े गए सब शब्दों की जोड है। अगसुत्ताणि भाग २ श ६।२०८ में पाठ पूरा किया हुआ है। आगे की गायाओं में वही पाठ उद्धृत किया गया है।

<sup>\*</sup>लप: म्हारी सासूजी रै पाच पुत्र

- ६५. जिम जववार्ड ताम, इण वचने इम जाणवू। युभ शब्द रूप ए काम, तेह तणां अर्थी जना।। ६६. भोग गघ रस फास, तेह तणा अर्थी वली। घनादि लाभ विमास, अर्थी ते फुन लाभ ना।। ६७ किल्विप ते भडादि, कारोडिया कापालिका। कारवाहिया वादि, राजदेय द्रव्य जे वहै।।
- ६८. वली सिखया घार, चदन गर्भज कर जसु। ते छै मगलकार, अथवा जे शखवादिका।।
- ६६ विल चिक्रिया जाण, चक्र प्रहरण छै, कर जसु।
  द्वितीय अर्थ फुन माण, कुभकारादिक चाक्रिका।।
- २०० नगलिका कहिवाय, सुवर्ण-गहणा हल सदृश। पहिरचा ते भट ताय, अथवा कहियै करसणी।।
- १०१ मुखमगलिया ताय, मुख वोलै मगलीक जे। वर्द्धमान कहिवाय, खघ आरोपित पुरुप जे॥
- १०२. पूसमाणया ताय, मागघ वदी जन जिके। इंज्जिसिया पिडिसिया य घटिका दीसै किहां।।
- १०३ पूजा वाछक पेख, अयवा जे पूजा प्रते। गवेपता सुविशेख, इज्जिसिया ते जाणवा।।
- १०४ भोजनवाछक भाल, अथवा जे भोजन प्रते। गवेपता सुविशाल, पिडिसिया कहियै तसु।।
- १०५ घटा करि चालत, घटा प्रते वजाडता। तेह घटिका मत, ए त्रिहु पाठ दीसै किहा॥
- १०६ ते वाछित शब्देह, कहियै छै जे आगले। इष्ट वलभ वच जेह, वोलै छै शुभ शब्द जे।।
- १०७ इष्ट वचन पिण जोय, प्रयोजन तणाज वश थकी। किणही स्वरूप थी सोय, कमनीय तथा अकात ह्वै।।
- १०८ इण कारण थी आम, आगल कहियै छै हिवै। ते इष्ट किसो वच ताम, कात वाछा करियै जसु॥

- ६५ ६६. कामित्यया भोगित्यया लाभित्ययां जहा उववाइए' ति करणादिद दृश्य-कामी-शुभशञ्दरूपे भोगा - शुभगन्धादय 'लाभ त्यिया' धनादिलाभायिन.। (वृ० प० ४८१)
- ६७. किव्विसिया कारोडिया कारवाहिया किव्विपिका भाण्डादय इत्यर्थः, " "कारोडिया' कापालिका. 'कारवाहिया' कार—राजदेय द्रव्यं वहन्तीत्येवशीलाः कारवाहिनस्त एव कारवाहिका (वृ० प० ४८१)
- ६न. सखिया 'सखिया' चन्दनगर्भशंखहस्ता मागल्यकारिण शखवादका वा (वृ० प० ४८१)
- ६६. चिक्कया
  'चिक्किया' चाक्रिका —चक्र प्रहरणा कुभकारादयो
  वा (वृ० प० ४८१)
- १००. नगलिया 'नगलिया' गलावलम्बितसुवर्णादिमयलाङ्गलप्रतिकृति-धारिणो भट्टविशेषा कर्षका वा

(वृ० प० ४५१,४५२)

- १०१. मुहमगिलया वद्धमाणा

  'मुहमगिलया' मुखे मगल येषामिस्ति ते मुखमगिलका
  चाटुकारिण. 'वद्धमाणा' स्कन्धारोपितपुरुषा

  (वृ० प० ४८२)
- १०२ पूसमाणया

  'पूसमाणवा' मागधा 'इजिजसिया पिंडिसिया घटिय'

  त्ति क्वचिद् दृश्यते (वृ० प० ४८२)
- १०३,१०४ तत्र च इज्या—पूजामिच्छेन्त्येवयन्ति वा ये ते इज्यैपास्त एव स्वार्थिके कप्रत्ययविद्यानाद् इज्यैपिका, एव पिण्डैपिका अपि, नवर पिण्डो—भोजन (वृ० प० ४८२)

१०५ घाण्टिकास्तु ये घण्टया चरन्ति ता वा वादयन्तीति (वृ० प० ४८२)

१०६,१०७ इट्ठाहिं इष्यन्ते स्मेतीष्टास्ताभिः प्रयोजनवशादिष्टमिप किञ्चित्स्वरूपत कान्त स्यादकान्त चेत्यत आह— कमनीयशब्दाभिरित्यर्थे । (वृ० प० ४८२)

१०८. कताहि

अगसुत्ताणि भाग २ श० ६।२०० मे पूसमाणया के बाद 'खिडियगणा' पाठ है। जयाचार्य ने इसकी जोड नहीं की। वृत्ति में भी इस पाठ का सकेत नहीं है।

- १०६. प्रिय वचने करि पेख, मनोज्ञ सुदर भाव थी। मणाम ते सुविशेख, अतिही सुदर वचन करि॥
- ११० उदार तेह प्रधान, शब्द थकी फुन अर्थ थी। कल्याणकारी जान, कल्याण प्राप्ति-सूचक कह्यो॥
- १११. ञिव उपद्रव-रहीत, शव्दार्थ दूपण रहित । घन ना लाभ सहीत, मगल अनर्थ घातक हुवै ।।
- ११२ सस्सिरीयाइ सोय, सोभायुक्तज वचन करि। हृदये गमती जोय, अर्थ गभीर सुवोध करि॥
- ११३ हृदय कोप शोकादि, तास विलयकारी जिका। हृदय विषे सवादि, अति अह्लादज वचन करि।।

### गीतकछंद

- ११४. मित अक्षरे करि परिमिता, परिमाण सहित सुवर्ण ही। फुन मधुर कोमल वच कह्या, गभीर ते महाव्वनि कही।।
- ११५. जे दुख करीने घारिये, ते अर्थ पिण श्रोता भणी। वाणीजु ग्रहण करावता, तसु घनादिक आज्ञा घणी।।

वा०—िमयमहुरगभीरमिस्सरीयाहि क्वचिद् दृश्यते । किहाइक दीसै छै। तिहा मिता ते अक्षर थकी, मधुरा गव्द थकी, गभीर ते अर्थ थकी विल ध्विन थकी स्व श्री ते आत्म-सपत् जेहनी ते वाणी करिकै।

# सोरठा

- ११६ अर्थ सैकडा न्हाल, छै ते वाणी नै विषे। वा स्मृति वह विशाल, अर्थ थकी छै जसु विषे॥
- ११७ अपुनरुक्त वच जास, एहवी वर वाणी करी। वा एकार्थ विमास, प्राये इष्टादी वचन।।
- ११८ वदै निरतर वाय, एह भलावण घुर-उपग'। अभिनदता ताय, आदि देइ सूत्रे लिख्यो।।
- ११६ \*ढाल दोय सौ अपरै, द्वादशमी सुविचार ॥ चरण लेवा नै संचरचो, जमाली क्षत्रियकुमार ॥

- १०६. पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि

  'मणुन्नाहि' मनसा ज्ञायन्ते सुन्दरतया यास्ता मनोज्ञा
  भावतः सुन्दरा इत्यर्थः ताभिः 'मणामाहि' मनसाऽम्यन्ते—गम्यन्ते पुनः पुनर्याः सुन्दरत्वातिशयात्ता
  मनोऽमास्ताभि (वृ० प० ४५२)
- ११०. 'ओरालाहि' उदाराभि शब्दतोऽर्थतम्च 'कल्लाणाहि' कल्याणप्राप्तिसूचिकाभि (वृ० प० ४८२)
- १११. 'सिवाहि' उपद्रवरहिताभि शव्दार्थदूपणरहिताभि-रित्यर्थ 'धन्नाहि' धनलम्भिकाभि. 'मगल्लाहि' मगले—अनर्थप्रतिघाते साध्वीभि. (वृ० प० ४८२)
- ११२ 'सस्सिरीयाहि' शोभायुक्ताभि. 'हिययगमणिज्जाहिं गम्भीरार्थत. सुवोद्याभिरित्यर्थ (वृ० प० ४८२)
- ११३. 'हिययपल्हायणिज्जाहि' हृदयगतकोपशोकादिग्रन्थि-विलयनकरीभिरित्यर्थ (वृ० प० ४५२)
- ११४,११५. 'भियमहुरगभीरगाहियाहि' मिता —परिमिता-क्षरा मधुरा कोमलशब्दा गम्भीरा—महाध्वनयो दुरवधार्यमप्यर्थं श्रोतॄन् ग्राहयन्ति यास्ता ग्राहिकास्तत (वृ० प० ४८२)
- वा॰ 'मियमहुरगभीरसस्सिरीयाहि' ति कृचिद् दृश्यते तत्र च मिता अक्षरतो 'मधुरा शब्दतो' गम्भीरा - अर्थतो ध्वनितश्च स्वश्री — आत्मसम्पद् यासा तास्तथा ताभि (वृ॰ प॰ ४८२)
- ११६ 'अट्ठसइयाहि' अर्थेशतानि यासु सन्ति ता अर्थेशति-कास्ताभि., अथवा सइ—वहुफलत्व अर्थेत (वृ० प० ४८२)

११७ 'ताहि अपुणक्ताहि वग्गूहि' वाग्भिगीभिरेकायिकानि वा प्राय इष्टादीनि वाग्विशेषणानीति

(वृ० प० ४५२)

११८. अणवरय अभिनदंता य
'अणवरय' सन्ततम् 'अभिनदता ये' त्यादि तु
लिखितमेवास्ते (वृ० प० ४८२)

<sup>\*</sup>लय : म्हारी सासूजी रे पांच पुत्र १. सोवाइय सू० ६८

दूहा

- श. जमाली रै मुख आगलै, वच मगलीक उदार।
   धनादि ना अर्थी वदै, ते सुणज्यो विस्तार।।
   \*हो म्हारा सौभागी वर लाल कुवरजी,
  - धन्य-धन्य थारो अवतार । (ध्रुपद)
- २. जय जय नदा धर्म करीनै, वर्धमान थावो गुणधार। जय-जय आशीर्वचन वखाण्यो, भक्ति अर्थे कह्यु वे वार।।
- ३ जय-जय नदा तपे करीने, द्वादश तप कर ताय। नदा कहिता तुम्है वृद्धि पामज्यो, उग्र तपे अधिकाय।।
- ४ अथवा जय-जय कहता जीपज्यो, हे नद । विपक्ष प्रतेह । विपक्ष जे अधर्म छै तेहनै, तुम्हे धर्म करी जीपेह ॥
- ५ जय-जय नदा भद्र ते तुभ, तू जय हे जगत नदिकार। तुभ भद्र कल्याण थावो अभिग्रह करि,

उत्तम ज्ञानादि चिहु करि सार ॥

- ६ इद्रिय वर्ग न जीत्या ज्यानै, तुम्है जीपेज्यो महाभाग। जीती नै तुम्हे शुद्ध पालज्यो, श्रमण धर्म शिव माग॥
- ७ विल जीपज्यो विघ्न प्रतै तुम्ह, टालज्यो धर्म अतराय। अहो देव<sup>ा</sup> तुम्ह वसज्यो सुखसू, वारू शिवगति माय।।
- द हणज्यो राग द्वेप विहु मल्ल प्रति तपसा करिकै ताम। धृती रूप गाढी वाधी नै, कच्छा कच्छोटी अभिराम॥

#### सोरठा

- ६ वलवत मल्ल सुदक्ष, समर्थ अन्य मल्ल जीपवा। गाढो वाध्यो कक्ष, एहवू छत्ज तेह मल्ल।।
- १० \*मर्द्रुज्यो अष्ट कर्म शत्रु प्रति, घ्यान प्रवर उत्कृष्ट। तेह उत्तम ने शुक्ल घ्यान करि, अप्रमत्त' छतो सुइष्ट॥
- ११. ग्रहिज्यो आराघन रूप पताका, हे घीर । त्रिलोक रग मध्य । ते मल्ल युद्ध बहु जन अवलोकन, स्थान रग मध्य अनवद्य ॥

वाo-आराधना ते ज्ञानादिक सम्यक्त्व पालना, तिकाहिज पताका शत्रु ने जीती ते नट ने ग्रहिवा योग्य ते आराधना पताका प्रते ग्रहण कीजें।

- \*लय: हो म्हारा राजा रा गुरुदेव
- १. अगसुत्ताणि भाग २ श० ६।२०८ के सपादित पाठ तथा उसकी वृत्ति के अनुसार अप्पमत्तो शब्द का मम्बन्ध आराधना पताका के साथ है। जयाचार्य ने जोड मे कर्म शत्रुओ का मर्दन करने के सदर्भ मे इसका सम्बन्ध रखा है, इस दृष्टि से 'अप्पमत्तो' शब्द को इस गाथा के सामने उद्धृत किया गया है।

- २. जय-जय नदा ! धम्मेणं
  'जय जये' त्याशीर्वचन भिक्तसम्भ्रमे च द्विवचन
  'नदा धम्मेणं' ति 'नन्द' वर्द्धस्व धर्मेण
  (वृ० प० ४८२)
- ३. जय-जय नदा तवेण
- ४. अथवा जय जय विपक्ष, केन ? धर्मेण हे नन्द !
- ५ जय जय नदा । भद्द ते अभग्गेहि नाण-दसण-चरि-त्तेहिमुत्तमेहि जय त्व हे जगन्नन्दिकर । भद्र ते भवतादिति गम्य (वृ० प० ४८२)
- ६ अजियाइ जिणाहि इदियाइ जिय पालेहि समणधम्म (श० ९।२०८)
- ७. जियविग्घो वि य वसाहि त देव । सिद्धि मज्झे
- न निहणाहि य रागदोसमल्ले तवेण धितिधणियवद्धकच्छे धृतिरेव धनिक अत्यर्थं वद्धा कक्षा (कच्छोटा) येन (वृ० प० ४८२)
- ध. मल्लो हि मल्लान्तरजयसमर्थो भवति गाढबद्धकक्षः सन्नितिकृत्वोक्त (वृ० प० ४८२)
- १० मद्दाहि य अट्ट कम्मसत्त् झाणेण उत्तमेण सुक्केण अप्पमत्तो
- ११ हराहि आराहणपडाग च धीर । तेलोक्करगमज्झे त्रैलोक्यमेव रङ्गमध्यं—मल्लयुद्धद्रष्ट्रमहाजनमध्य तत्र (वृ० प० ४८२)
- वा॰ —आराधना—ज्ञानादिसम्यक्पालना सैव पताका जय-प्राप्तनटग्राह्या आराधनापताका (वृ॰ प॰ ४८२)

- १२. वितिमर निमल गयूं छै अंघारो, अनुत्तर सर्वोत्कृष्ट । प्रवर प्रधान ज्ञान जे केवल, पावज्यो अतिहि वरिष्ठ ॥
- १३. मोक्ष परम पद प्रति फुन जायज्यो, देखाङ्घो जिनेद्र शिव पंथ। अकृटिल वक्रता रहित ते मारग, तिणे करीने गच्छ गुणवंत।।
- १४ परिषह रूप सेना प्रति हणीने, पांचू इंद्रिया ने कांटा समान। उपसर्ग प्रति जीपी तुभ धर्म मे विघ्न म थावो सुजान॥
- १५ इम कही घन अर्थी प्रमुख जे, वहु जन वृंद तिवार । अभिनदंता मंगल रव वोले, विरुदावली स्तवना उदार ॥
- १६ तिण अवसर क्षत्रि-सुतन जमाली, श्रेणीभूत जे नर ना शोभाय। नेत्रा नी माला सहस्रगमे करि, तेह देखीजतो छतो ताय।।
- १७ इम जिम उववाइ' में आख्यो प्रभु, वदन कोणिक घार। यावत तिमज जमाली निकलै, निकली नै तिहवार॥

- १८. वचन तणी सुखकार, माला जे पक्ती तणा'। सहस्रगमें करि सार, स्तवीजते स्तवीजते छते॥
- १६. हृदय-माल सहस्रे ह, जन-मन ना समूहे करी। समृद्धि पमाड़तो तेह, जय जीव नद इम चिंतवै॥
- २०. मनोरथ-माल सहस्रे ह, वहु जन नां विकल्प करि। विशेष करिके जेह, स्पृश्यमान हुंतो छतो॥

- २१ तनु काति फुन रूप, सौभाग्य योवन गुण करी। प्रार्थ्यमान अनूप, स्वामीपणे बहु जन करी॥
- २५ अगुली नहीं पहिछाण, माला जे पक्ती तणां'-सहस्रगर्में करि जाण, देखाडतो-देखाडतो ॥
- २३ दक्षिण हस्त करेह, वहु नर नारी सहस्र नी। अजलिमाल सहस्रेह, पडिच्छमाण ग्रहितो छतो॥

- १२. पाषयवितिमिरमणुत्तरं केवलं च नाणं
- १३ गच्छ य मीषखं पर पद जिणवरीवदिट्ठेणं सिद्धि-मग्गेणं असुहिलेणं
- १४. हता परीसहचम् अभिभविय गामकटकोवसमा ण धम्मे ते अविग्धमत्यु इन्द्रियग्रामप्रतिकृलोपसर्गानिस्ययः (वृ० प० ४८२)
- १५. त्ति कट्टु अभिनंदति य अभियुणति य । (ग० ६।२०८)
- १६. तए ण से जमानी घत्तियकुमारे नयणमालासहस्मेहिं पेन्छिज्जमाणे पेन्छिज्जमाणे 'नयणमालासहस्सेहिं' ति नयनमाला.—श्रेणीभूतजन-नेत्रपंक्तयः (यु० प० ४८२)
- १७. एव जहा ओववाइए कूणियो जाव [स॰ पा॰] निग्गच्छइ।
- १८. वयणमालासहस्सेहि अभियुव्यमाणे अभिपुच्यमाणे (बृ० प० ४८२)
- १६. हिययमालामहस्सेहि अभिनंदिञ्जमाणे-अभिनदिज्ज-माणे जनमनः-समूहै समृद्धिमुपनीयमानो जय जीवनन्देत्या-दिपर्यालोचनादिति भावः। (वृ० प० ४८२, ८३)
- २०. मणोरहमालासहस्ते हिं विच्छिप्पमाणे-विच्छिप्पमाणे एतस्य पादमूले वत्स्याम इत्यादिभिर्जनविकल्पैविशेषेण स्पृश्यमान इत्यर्थः (वृ० प० ४८३)
- २१. कितसोहगगुणेहि पित्यज्जमाणे-पित्यज्जमाणे कान्त्यादिभिगुणैहेंतुभूतैः प्रार्थ्यमानो भर्तृतया स्वामि-तया वा जनैरिति (वृ० प० ४८३)
- २२. अगुलिमालासहस्सेहि दाइज्जमाणे २ (वृ० प० ४५३)
- २३. दाहिणहत्येणं वहूण नरनारिसहस्साण अजलिमाला-सहस्साइ पडिच्छेमाणे पडिच्छेमाणे (वृ० प० ४५३)

१. बो॰ सू॰ ६५

२. अगसुत्ताणि भाग २ श० ६।२०६ मे 'नयणमाला' के वाद हिययमाला और 'मणोरहमाला' वाला पाठ है। पर भगवती की वृत्ति मे 'औपपातिक' का सकेत देकर जो पाठ उद्धृत किया है, उससे 'वयणमाला' को पहले रखा गया है। और उक्त दोनो पाठों को वाद मे। जोड इसी क्रम से की हुई है। इसलिए अगसुत्ताणि के पाठ को आगे पीछे करके उद्धृत किया गया है।

३. अगुलीमाला वाला पाठ अगसुत्ताणि मे नही है।

- २४ भवन महिल कहिवाय, तेह तणी जे भीत ना। सहस्रगमै करि ताय, उलघतो अतिक्रमतो॥
- २५ तती वीणा ताम, तल ते हस्त तणा तला। तालकासिका नाम, गीत वार्जित्र ना करी।।
- २६. मधुर मनोहर आम, जय एहवा वर शब्द नां। उद्घोपण अभिराम, तिण करिने जे मिश्र छै।।
- २७ अति कोमल ध्वनि करेह, स्तवनाकारक जन तणा। वा नूपुर प्रमुखेह, भूषण सवधी ध्वनि करी।।
- २८ अपडिबुद्धचमानेह, अन्य शब्द अणधारतो। तथा वैराग्यवशेह, ते रव चित्त हरतू न तसु।।
- २६. विवर भूमि रै माय, कदर तेह कहीजिये। गिरि नी गुफाज ताय, अथवा अतर गिरि तणा।।
- ३०. प्रधान पर्वत सार, प्रासाद सप्तभूमि प्रमुख। उच्च अविरल आगार, ऊर्ध्वघण भवण तणो अरथ।।
- ३१ वली देवकुल ताम, प्रृंघाटक त्रिक चउक फुन। चच्चर ने आराम, वर पुष्प जाति वनखड जे।।
- ३२. तरु पुष्पादीमत, तेह उद्यान कहीजियै । कानन जे इोभत, नगर दूरवर्ती तिको ।।
- ३३. सभा अने पो स्थान, जसु प्रदेश लघु भाग जे। मोटा भाग पिछान, देश रूप कहियै तसु॥
- ३४. तेह विषे पडछद, शत सहस्र लक्ष सकुला। करतो छतो सोहद, नगर विचै थइ नीकलै।।
- ३५. हय नुरव हीसार, गुलगुलाट रव गज तणा। वर रथ ना भिणकार, घणघणाट रव मिश्र करि॥
- ३६ जन ना अति मधुरेण, महा कलकल शब्दे करी। अवर तल प्रति तेण, सर्व प्रकारे पूरतो॥
- ३७ सुगध फूल नी ताम, वली चूर्ण नी वास रज। ऊर्द्ध गई अभिराम, तिण करिने नभ मलिन जे।।
- ३८ वर कृष्णागरु ताम, चीडा सिल्लक धूप फुन। तसू निवह करि आम, जीव लोक जिम वासतो।।

- २४. भवणभित्ती (पन्ती) सहस्साई समइन्छिमाण-सम-इन्छिमाणे' समतिकामन्नित्यर्थः (वृ० प० ४८३)
- २५. 'ततीतलतालगीयवाइयरवेण' तन्त्री—वीणा तला हस्ता ताला —कासिका. तलताला वा—हस्तताला. गीतवादिते—प्रतीते एपा यो रवः स तथा तेन । (वृ० प० ४८३)
- २६. 'महुरेण मणहरेण' 'जय जय सद्दुग्घोसमीसएण' जयेतिशब्दस्य यद् उद्घोपण तेन मिश्रो य स तथा तेन (वृ० प० ४८३)
- २७. 'मंजुमंजुणा घोसेण' अतिकोमलेन ध्वनिना स्ताव-कलोकसम्बन्धिना नूपुरादिभूसणसम्बन्धिना वा (वृ० प० ४८३)
- २८. 'अप्पडिबुज्झमाणे' त्ति अप्रतिबुद्धचमान —शब्दान्त-राण्यनवधारयन् अप्रत्युद्धमानो वा—अनपह्रियमाण-मानसो वैराग्यगतमानसत्वादिति (वृ० प० ४८३)
- २६ कन्दराणि—भूमिविवराणि गिरीणा विवरकुहराणि— गुहा पर्वतान्तराणि वा (वृ० प० ४८३)
- ३०. गिरिवरा.—प्रधानपर्वता. प्रासादा —सप्तभूमिका-दय ऊर्द्वधनभवनानि—उच्चाविरलगेहानि (वृ० प० ४८३)
- ३१. देवकुलानि—प्रतीतानि श्रृङ्गाटकत्रिकंचतुष्कचत्वराणि प्राग्वत् आरामा.—पुष्पजातिप्रधाना वनखण्डा (वृ० प० ४८३)
- ३२ उद्यानानि —पुष्पादिमद्वृक्षयुक्तानि काननानि नगराद् दूरवर्त्तीनि (वृ० प० ४८३)
- ३३ सभा—आस्यायिका प्रवा—जलदानस्यानानि एतेपा ये प्रदेशदेशरूपा भागास्ते तथा तान्, तत्र प्रदेशा— लघुतरा भागा देशास्तु महत्तरा (वृ० प० ४८३)
- ३४ 'पडिमुयासयसहस्ससकुले करेमाणे' ति प्रतिश्रुच्छत-सहस्रसकुलान् प्रतिशब्दलक्षसड्कुनानित्यर्थः कुर्वन् निर्गच्छतीति सम्बन्ध (वृ० प० ४८३)
- ३५. हयहेसियहित्यगुलुगुलाइयरहघणघणाइयसद्मीसएण (वृ० प० ४८३)
- ३६ महया कलकलरवेण य जणस्स सुमहुरेण पूरेंतोऽबर (वृ० प० ४८३)
- ३७. समता सुयधवरकुसुमचुन्नउव्विद्धवासरेणुमइलणभ करेंते' सुगन्धीना —वरकुसुमाना चूर्णाना च 'उव्विद्ध: कद्ववातो यो वासरेणु. —वासक रजस्तेन मिलन यत्तत्त्वा (वृ० प० ४८३)
- ३८ कालागुरुपवरकुदुरुक्कतुरुमम्ब्र्यनिवहेण जीवलोगमिव वासयते' कालागुरु गन्धद्रव्यविशेष. प्रवरकुन्दुरुक्के —वरचीडा तुरुक्क —सिल्हक पूष्-—तदन्य. एतरलक्षणो वा एपामेतस्य वा यो निवहः स तथा तेन जीवलोक वासयन्निवेति (वृ० प० ४८३)

- ३६. सर्वे थकी शोभात, जन-मंत्रन चक्रयान जे। तमु गमन विषे आस्यान, ते जिम ही तिम नीकरी।।
- ४०. पंडर जन पित्रहाण, प्रचूर जना ना पुर जना। बात वृद्ध बहु जाण, जेंद्र प्रमोदन पायना।।
- ४१ शीघ्र चालना मांग. ते अनि स्यापुत नत्ना। जे बोल बहु जिता होय, एहव् नभ मस्या स्या ।
- ४२ क्षत्रियनुष्ठ जे याम, नगर मध्य-मध्य चट करी। एह भलावण ताम, गृत्ति थही आग्यो छहा॥
- ४३. \*जिहा माहण एउ ग्राम नगर छै, जिटा नैत्य भली वट मात । तिण स्थान आबै निण स्थान आभी ने देगी,

जिन अनिशय गुरिशान ॥

- ४४. छनादिक जिन ना अनिवय देगी, पुरुष महस्य उपार्व जाम । एहबी पबर सियका थी जनरें, सिविका थी उनरी हरतास ॥
- ४५ जमाली धात्रयकुमर प्रतं तय, मात पिता आगत परि ताम । जिहा श्रमण भगवत महावीर प्रभु छै।

निहा आवै आवी गुणगाम ॥

४६. श्रमण भगवत महाबीर प्रभु ने, जाव नमण करि वदै नाय। इम निइने प्रभुजी । ए एक पुरा मुक्त,

जमाली क्षत्रियमुत मुनदाव ॥

- ४७. इन्ट कात मुक्त बन्तभ यायत. किमनपारणयाएं सोय । अवर फूल तणी पर एहनो, जाय दर्शण दोहिलू जोय।
- ४८ ते यथानाम दृष्टात करीने, उत्पल चद्रविकामी कव । पद्म कमल ते सूर्यविकामी, जाव गहन्तपत्र मनरता।

# सोरठा

- ४६ जाव शब्द थी बाद, गुमुद निलन वा मुभग पुन। सीमधिक इत्याद, लोक रुटि थी भेद तमु।।
- ५०. रए कमल पक कादा विषे ऊपनो, जल कर विधियो नाय। न लिपाउ पक रूप रजे करि, जल रज करिक न लिपाय।।
- ५१. डण दृष्टाते क्षत्रियमुत जमाली, काम शब्दादि करि उत्पन्त । गय कर्श रस रप भोग करि, वृद्धिपणुज प्रपन्त ॥

\*लय: हो म्हारा राजा रा गुरुदेव

- ४०,४१ 'पट्टरण्यानपूर्यामुख्यास्याहारियविद्या-द्यानेष्यद्वां सम्बद्धे पोगलनास्य सम्बद्धाः प्रमुख्यान्ताः जनारतः सःस वृद्धान्य ये प्रगृत्तिः स्वर्धा प्रपर्धनता-द्या-स्थाय मन्द्र-तर्वेषो स्यानप्रास्त्रासा- मैतरा-सृत्तात् यो योतः सःस्या यतः सस्या वद्धानम्ब नमः स्वर्थितः (प्रथा ४८३)
- ४२, मधियण्डामानि माने मञ्ज्ञमञ्जीम निर्माण्डाः
- ४३,४४. विशेष मारमक्रामांत नगरे वेश्वेष बहुमायत भेरमनेत्रीय प्रताम्ब्यद्व, प्रतामां ग्रम्स ग्रम्स शिए जिल्ला मसी तात पासद, वर्शनामा पुरिसानस्मा सर्तिम सीप कोड पुरिसमस्मानार्गस्मी के सीमानी पश्चीरण्य ॥ (१० दारक्ट)
- रथ पार्य वं जनानि घनिष्णुमार तम्पारित्यो पुरणी काउ रिपेर नगर्ने भगर महासिर सेनेक उपारस्कृति, उपार्यस्थाना
- ४६. ममर्ग भगव महाबीर विस्तृती जात (मल्याक) समित्रमा गृत भगामी वात मृतु मते! जनायी मनिष्कृमारे जन गरे पुने
- ४७ इट्डे पी का (सक पाक) निमर्ग पुर पामणवार्ह
- ४० में रहानामए उपाने इ. या, पड़ने इ. या जान महामगरी इ.या
- ४६ यापत्तरणादिक पृथ्य--'हुमुदेह वा नित्येह वा मुभगेद या गोर्गागण्य या' इत्यादि, एपा च भेरी गटिगम्यः (युव्यव ४८३)
- ५०. परे जाए कते मयुद्धे मी प्रतिपाति परारएपं, नोज-जिपानि कत्रराण
- प्रश. एवामेव जमाली वि मित्तिगुनारे कामेटि जाए, भोगेति मयुद्दे 'कामेटि जाए' ति कामेपू—जव्यादिस्पेषु जात-'भोगेटि सबुद्दे' ति भोगा—गन्धरमस्पर्शास्तेषु मध्ये मयुद्धो—युद्धिमुग्गत (युव्प ० ४८३)

१. २५-४१ तक की जोड वृत्ति के आधार पर की गई है। अगमुत्ताणि मे यह पाठ नहीं है। केवल २६ वी गाथा का सवादी पाठ वहा है, पर वह भी वृत्ति से मिलता नहीं है। वृत्ति मे पाठ लिया है—"मजुमजुणा घोरोण अपाडियुज्झ-माणे" जविक अगसुत्ताणि का पाठ है—"मजुमजुणा घोरोण आपडियुज्छ-माणे।

- ५२. काम रज करिन न लिपाव, अथवा काम रागे न लिपाय। विल भोग रूप रज करि न लिपाव, तेह विषे अनुरागता नाय।।
- ५३ मित्र प्रसिद्ध न्याती ते स्व जाति, निजक मामादि कहाय। स्व जन पिता पितरियादिक ते, सविघ ते सुसरादिक ताय।।
- ५४ परिजन ते दासी दास प्रमुख जे, एतला नै विषे घार। स्नेह करीने नाहि लिपावै, ए तो जमाली क्षत्रियकुमार।।
- ५५ अहो देवानुप्रिया । एह जमाली, पायो ससार भय थी उद्वेग । वीहनो है जन्म मरण ना दुखे करि, पायो है परम सवेग ।।
- ५६ हे देवानुप्रिया । तुम्हारे समीपे, मुड थइ सुखकार। ग्रहस्थावासपण् छाडीने, थास्य ए अणगार।।
- ५७ ते मार्ट हे देवानुप्रिया । तुम्हने, अम्है शिष्य-भिक्षा देवा एह । अहो देवानुप्रिया । ये वाछो, शिष्य रूपणी भिक्षा प्रतेह ।।
- ५८ वीर कहै जिम सुख होवै तिम करो, अहो देवानुप्रिया जी । मा प्रतिवध विलव न करिवू, इम दीक्षा री आज्ञा ताजी ॥
- ५६ जमाली क्षत्रियकुमर तिण अवसर, श्रमण भगवत महावीर। एम कह्ये थके हरप थयो अति, पायो सतोप सुघीर॥
- ६० श्रमण भगवत महावीर प्रते जे, तीन वार घर खत। यावत नमण करी प्रभुजी ने, ओ तो कूण इशाणे जत।।
- ६१ उत्तर पूर्व दिशि भाग जईनै, स्वयमेव पोतै इज तेह। आभरण नै माला पुष्पादिक नी, अलकार प्रतै मूकेह।।
- ६२ जमाली क्षत्रिकुमर तणी जे, माता ते तिहवार। हस लक्षण पट-शाटक करिने, ग्रहै आभरण मल्लालकार।।
- ६३ आभरण मल्लालकार ग्रही नै, पवर मोत्या नो हार। जल नी घार यावत आंसू प्रति, न्हाखती-न्हाखती तिहवार।।

- ६४ जाव शब्द थी जोय, सिंदुवार जे वृक्ष ना। वा निर्गृन्डी सोय, तास कुसुम अति शुक्ल जे।।
- ६५ छिन्न-मुक्तावली जाण, प्रकाश ते सम ऊजला। आसू तास पिछाण, जाव शब्द मे ए कह्या।।
- ६६ \*जमाली क्षत्रियकुमर प्रतै कहै, हे जात । वल्लभ गुणगेह। अप्राप्त सजम योग तणी जे, प्राप्ति अर्थे तू घटना करेह।।
- ६७ पाम्या है सयम जोग प्रतै तू, यत्न कीजे रूडी रीत । सजम नै विषे उद्यम कीजे, पराक्रम फोडवजे पुनीत ॥

- ५२ नोवलिप्पति कामरएणं नोवलिप्पति भोगरएणं 'नोवलिप्पइ कामरएण' ति कामलक्षणः रज काम-रजस्तेन कामरजसा कामरतेन वा—कामानुरागेण (वृ० प० ४८३)
- ५३,५४ नोविलप्पति मित्त-णाइ-णियग-सयण-सविध-परि-जणेण
  'मित्तनाई' इत्यादि, मित्राणि—प्रतीतानि ज्ञातय. स्वजातीया. निजका—मातुलादय स्वजना — पितृपितृव्यादय सम्वन्धिन.—श्वसुरादय परिजनो— दासादि इह समाहारद्वन्द्वस्ततस्तेन नोपिलप्यते— स्नेहत सम्बद्धो न भवतीत्यर्थं. (वृ० प० ४८३)
- ५५. एस ण देवाणुष्पिया । ससारभयुव्विग्गे भीए जम्मण-मरणेण
- ५६. इच्छइ देवाणुष्पियाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए
- ५७ त एय ण देवाणुष्पियाण अम्हे सीसिभिनख दलयामो, पिडच्छतु ण देवाणुष्पिया । सीसिभिनख । (श० ६।२१०)
- ५५ तए ण समणे भगव महावीरे जमानि खत्तियकुमारे एव वयासी —अहासुह देवाणुष्पिया । मा पडिवध ॥ (श० ६।२११)
- ५६ तए ण से जमाली खित्यकुमारे समणेण भगवया महाबीरेण एव वृत्ते समाणे हट्ट तुट्टे
- ६० समण भगव महावीर तिक्खुत्तो जाव (स० पा०) नमसित्ता उत्तरपुरित्यम विसिभाग अवक्कमइ,
- ६१ अवक्किमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ। (श० ६।२१२)
- ६२ तए ण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हस-लक्खणेण पडसाडएण आभरणमल्लालकार पडिच्छइ
- ६३ पडिच्छिता हारवारि जाव विणिम्मुयमाणी
- ६४,६५ सिंदुवारिछन्नमुत्ताविलप्पगासाइ असूणि विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी
- ६६,६७ जमार्लि खित्तयकुमार एव वयासी—'जइयव्य जाया । घडियव्य जाया । परक्किमयव्य जाया । 'जइयव्य' ति प्राप्तेषु सयमयोगेषु प्रयत्न कार्य 'जाया ।' हे पुत्र । 'घडियव्य' ति अप्राप्ताना सयम-योगाना प्राप्तये घटना कार्या 'परिक्किमयव्य' ति पराक्रम. कार्य पुरुपत्वाभिमान सिद्धफल. कर्त्तव्य इति भाव. (वृ० प० ४५४)

<sup>\*</sup>लय : हो म्हांरा राजा रा गुरुदेव

- ६७. इण अर्थ विषे प्रव्रज्या पालण में, प्रमाद न करिवूं लिगार। इम कही जमाली क्षत्रियकुमार नां, मात पिता तिहवार॥
- ६६. श्रमण भगवंत महावीर ने वांदै, नमस्कार करै करि ताय। जिण दिशि थी आया प्रगट हुआ था, तिण दिशि पाछा जाय।।
- ७० जमाली क्षत्रियकुमर तिण अवसर, स्वयमेव पोर्त निज हाथ। पंच मुप्टी लोच करै करीने, आयो जिहा जगनाथ॥
- ७१ इम जिम ऋपभदत्त दीक्षा लीघी, तिमज प्रव्रज्या लीघं। णवर पच सी पुरुप सघाते, तिमहिज सवं प्रसीध।।

- ७२. कह्यु ऋपभदत्त जिम जाण, इह वचने महाबीर प्रति । तीन वार पहिछाण, दक्षिण ना पासा थकी ॥ ७३ करे प्रदक्षिण ताम, वदे नमण करे करी। इम बोले अभिराम, आलित्त लोक इत्यादि जे॥
- ७४ \*जाव सामायिक आदि देडने, काड अग एकादय सार। भणे भणी वहु चीय छठ तप, अठम भक्त उदार।।
- ७५ मास अने अर्द्धमास खमण वली, विचित्र तप कर्म करेह। आतम प्रति भावतो विचरे, वीर प्रभू समीपेह॥
- ७६ तिण अवसर अणगार जमाली, अन्य दिवस किणवार ।। जिहा श्रमण भगवत महावीर प्रभु, तिहां आवे आवीने घार ।।
- ७७ श्रमण भगवत महावीर प्रते जे, वादे करे नमस्कार। प्रमु वादी नमस्कार करीने, इम वोले जिहवार॥
- ७८ वां हू हू हे प्रभु । तुभ आज्ञा थी, पच सी सत सघात। वाहिर जनपद देश विषे जे, विहार करियूं जगनाथ।।
- ७६. श्रमण भगवत महावीर तदा, जमाली ना ए अर्थ प्रतेह। आदर न दियै तेह अर्थ विषे, अणआदर देता जेह।।
- द० वित चित्त में भलो पिण निहं जाणे, देख्यो दोप ऊपजवा नो भाव। ते माटे आज्ञा निहं दीवी, प्रभु मून रह्या ते प्रस्ताव।।
- दश तव जमाली अणगार श्रमण भगवत महावीर प्रते दूजी वार। तीजी वार पिण इहविव वोलें, हूं वाछू छू जगतार॥

- ६८. अस्सि च णं अट्ठे णो पमाएतव्यं ति कट्टु जमानिस्न यत्तियकुमारस्न अम्मापियरो 'अस्मि चे' त्यादि, अस्मिप्रचार्ये—प्रव्रज्यानुपालन-लक्षणे न प्रमादयितव्यमिति (वृ० प० ४८४)
- ६८. ममणं भगय महाबीर वर्दीत नमंगित, विस्ता नमित्ता जामेव दिनं पाउच्मूया तामेव दिनं पटि-गया। (घ० टा२१३)
- ७०. तए णं से जमात्री मित्तयकुमारे सबमेव पचमुद्धिय लोप करेड, करेत्ता जेणेव समणे भगव महाबीरे तेणेय जवागन्छड
- ७१. एवं जहा उसभदत्तो तहेव पन्तरक्षी नवरं पंचहि पुरिसमएहि मद्धि तहेत जाव (म॰ पा॰)
- ७२,७३. एव जहा उममदत्तो इत्यनेन यत्सूचितं नदिद—
  (वृ॰ प॰ ४८४)
  उवागिच्छत्ता नमण भगव महावीर निक्युत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, वरेत्ता वंदइ नममइ, वदित्ता
  नमित्ता एव वयामी—
  आलिते ण भंते !
- ७४,७५. जाव सामाइयमाइयाइ एक्कारम लगाइ अहि-जजइ, अहिज्जित्ता बहूरि चउत्य-छट्टट्टम-दमम-दुवाल-गेहि मासद्धमासप्पमणेहि विचित्तेहि तबोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ। (ग० ६।२१५)
- ७६ नए ण ने जमाली अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव समणे भगव महाबीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता
- ७७ नमणं भगवं महावीर वंदइ नमंगइ, वंदिता नमसिता एवं वयानी---
- ७८ इच्छामि णं भंते ! तुन्भेहि अवमणुण्णाए समाणे पर्चाह अणगारसएहि मद्धि वहिया जणवयिवहार विहरित्तए। (ग्र० ६।२१६)
- ७६,८० तए ण ममणे भगव महावीरे जगालिस्स अणगा-रस्म एयमट्टं नो आढाइ, नो परिजाणइ, तुसिणीए सचिट्टइ।। (घ० ६।२१७)
- ५१. तए णं से जमाली अणगारे ममण भगव महावीर दोच्चं पि तच्च पि एवं वयामी—इच्छामि ण भते!

<sup>\*</sup>लय: हो म्हारा राजा रा गुरुदेव

१. पा० टि० ७ मे सं० पा० दिया गया है। इस पाठ की जोड करने के बाद आगे की दो गाथाओं में विस्तृत पाठ के आधार पर जोड लिएकर फिर दो गायाओं में सं० पा० को आधार बनाया गया है। इमलिए इन गाथाओं के सामने कहीं पा० टि० का और कहीं मूल का पाठ उद्धृत है।

- दर आप तणी प्रभु । आज्ञा हुवा थी, पंचसौ श्रमण सघात । जाव विचरवू जनपद देशे, विहार करीने विख्यात ।।
- द तव श्रमण भगवत महावीर प्रभुजी, जमाली अणगार ना जेह। वे त्रिण वार ही एह अर्थ प्रति, आदर न दिये तेह॥ द जाव पूर्ववत मौनपणे रहै, तव ते जमाली अणगार। श्रमण भगवंत महावीर प्रभु ने, वादे करें नमस्कार॥
- दर्भ वंदी नमण करी श्रमण भगवत महावीर तणा पासा थी। वहुसाल चैत्य थकी पाछो निकलै, निकली विण आज्ञा थी।
- द्द. पांच सौ अणगार साधु सघाते, वाहिर ते तिणकाल। जनपद देश विपे विचरतो, एकही दोय सौ तेरमी ढाल।।

दर. तुब्भेहि अब्भणुष्णाए समाणे पंचिह अणगारसएहि सिद्धं विहया जणवयिवहार विहरित्तए।

(হা০ হা২१৮)

- द३ तए ण समणे भगव महावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्च पि, तच्च पि एयमट्ट नो आढाइ,
- ८४ जाव (स॰ पा॰) तुसिणीए सचिट्ठइ।

(श० ६।२१६)

- तए ण से जमाली अणगारे समण भगव महावीर वदइ नमसइ
- ५५. विदत्ता नमसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पिडिनिक्खमइ, पिडिनिक्खिमत्ता
- न्दः पचिं अणगारसएिं सिद्धं विहया जणवयिवहार विहरइ। (श० १।२२०)

#### ढाल: २१४

## दूहा

- १ तिण काले ने तिण समे, नगरी सावत्थी नाम। हुती अति रिलयामणी, वर्णक तसु अभिराम।। २.कोट्टम नामे वाग थो, जे वर्णववा जोग।
- यावत ते वन-खड लग, कहिवू ते सुप्रयोग।। ३ तिण काले ने तिण समय, नगरी चपा नाम।
- हुंती अतिही शोभती, तसु वर्णक अभिराम।।
- ४ पूर्णभद्र त्यां चैत्य थो, तसु वर्णक वहु ताम। यावत जे पृथ्वी तणों ज्ञिला-पट्ट अभिराम।
- ५ तव जमाली अणगार ते, अन्य दिवस किण काल। श्रमण पच सय साथ थी, परवरियो थको न्हाल।।
- ६ पूर्वानुपूर्वे चालतो, विल ग्रामानुग्राम। व्यतिक्रमतो विचरतो, जिहा सावत्थी नाम।।
- ७. जिहा कोट्टग नार्में चैत्य छै, तिहा आवै आवी ताम। यथायोग्य अवग्रह प्रते, ग्रहै ग्रही ने आम।।
- द सजम ने फुन तप करी, आतम प्रति अवधार। भावतो ते वासितो, विचरे छै तिहवार।।
- ६. तव श्रमण भगवत महावीर जी, अन्य दिवस किण काल ।पूर्वानुपूर्वी प्रभु, चालता गुणमाल ।।
- १० यावत सुखे-सुखे करी, करता प्रभू विहार। जिहा चम्पा नामे भली, नगरी छै सुखकार॥

- १ तेण कालेण तेण समएण सावत्थी नाम नयरी होत्या—वण्णओ
- २ कोट्टए चेइए--वण्णको जाव वणसडस्स
- तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी होत्या—
   वण्णओ
- ४ पुण्णभद्दे चेइए—वण्णको जाव पुढविसिलापट्टको । (श० ६।२२१)
- ५ तए ण से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ पचिंह अणगारसएिंह सिद्ध सपिरवृडे
- ६ पुन्वाणुपुन्वि चरमाणे गामाणुग्गाम दूइज्जमाणे जेणेव सावत्थी नयरी
- ७ जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव जवागच्छइ, जवागच्छित्ता अहापिडरूव ओग्गह ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता
- द. सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ। (श० ६।२२२)
- ह तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कथाइ पुव्वाणु-पुव्वि चरमाणे
- १०. जाव (स० पा०) सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव चम्पा नयरी

- ११. जिहां पूर्णभद्र चैत्य छै, तिहां आवे आवी ताय। यथायोग्य अवग्रह प्रते, ग्रहे ग्रही जिनराय।।
- १२. गजम नै फुन नप करी, आतम प्रति अवधार। भावता ते वासिता, विचरे जिन जगतार॥ भवि! मांभलो रे,

साभनज्यो जमाली नु चरित्त, वीतराग ना वच अवितत्थ ॥ (ध्रपदं)

- १३ ते अणगार जमाली ने निहवार, नेह अरम आहारे करि घार। भवि ! साभली रे। हीग प्रमुख नो नहिं सरकार, ते किंदिये अरस रस-रिहत आहार। भवि ! साभलो रे॥
- १४. पुराणपणां थी गयो रस जास, विरस आहार किह्यै छै तास । अत ते अरसपणे किर तेह, सर्व घान्य में अत वर्चेंट्र ॥
- १५ तेहिज अरस जीम्या पछै जोय, ऊवरियो ना वासी होय। ने प्रकर्षे करि अत वर्चेंह, प्रात आहार कहीजै जेट्।।
- १६ लुक्व अने नुच्छ अन्य आहारेह, कालातिकात करीने तेह । भूव तृपा नागी तिण काल, आहार-पाणी अणपास्ये न्हाल ॥
- १७. प्रमाणातिक्रात करेट्, मात्रा श्री अधिक भोगविये जेह। शीतन जल भोजन करि न्हान, अन्यदा दिवस किण कारा॥
- १८. गरीर विषे विस्तीणं जेह, रोग ते व्याघि करी पीउेह। तेहिज आतक रपष्ट दीमत, जीवितव्य ने कष्टकारी अत्यत।
- १६. उज्जल सुरा-विंदु करि रहीत, तिउले कहिता त्रितुल संगीत। मन वच तनु ना अर्थ प्रतेह, तुले कहिता जीपै तेह।।
- २० किहांडक विपुल सकल तनु व्याप, प्रकर्षे करि गाट यताप। कर्कण द्रव्य जिम दृट कठोर, कटुक वस्तु जिम अनिग्ट जोर॥
- २१. चड रीद्र दुक्से दुख हेतु, दुर्गम तेह दुसाध्य कहेतु। तीव्र नीव नी पर अवलोय, दुक्ये करी अहियागता मोय॥
- \* लय: मेरी खिण गई, लाखीणी रे मेरी खिण
- १ अगसुत्ताणि भाग २ ग० ८।२२४ में तिउले के स्थान पर विउले पाठ है । वहा 'तिउले' पाठान्तर मे रसा गया है ।

- ११. जेणेव पुण्यभद्दे भेदण् गेणेय उत्तमन्छः, उयामन्छिना, आरापदिस्यं औरगठ औमिष्यद्व औमिष्यसा
- १२. संजनेषं तयमा अप्याण भावेमाणे विहरद । (घ० ६/२२३)
- १३. तम् ण यस्य जमालिस्य श्रणनायस्य तेति 'श्रयमेहि य' 'अरमेहि य' 'ति तिपुष्याविभारमेरम् अस्याविधमान-पमे (यु० प० ४८६)
- १४. विस्मिति य अनेति य 'विस्मिति य' नि पुराणसाद्विमनरमैः 'अतिहि य' ति अस्मनया मर्वधान्यान्तयनिभित्रेतननपराज्ञित.

(यु० प० ४८६)

- १५. पतिहि म 'पनेदि म' लि नैरेम भुक्तानशेषम्बेन पर्मणिनत्वेन मा प्रसर्वेणान्त्रयक्तित्वास्त्रानीः (यु० प० ४८६)
- १६. नृहेिंह य, तुब्धेिंह य गानाइनरतेहि य 'नृहेिंह य' त्ति रखें. 'तृत्तेहिं य' ति बलें' 'कालाइनरतेहि य' ति तृष्णानुभुक्षानानाप्राप्ने' (यु० प० ४८६)
- १७. पमाणाइनरतेहि य पाणभोषणेति अन्तर्वा कयाद 'पमाणाइनरतेहि य' ति युभुक्षाविषासामाणानुनितैः (यु० प० ४८६)
- १८ गरीरगति विद्रते रोगातके पाउन्सूए 'रोगायक' ति रोगो—स्याधि, म चातावातद्वरन कृष्ट्रवीवितकारीति रोगातद्व (पृ० प० ४८६)
- १६. उज्ज्ञेन विद्वते
  'उज्ज्ञेन' ति उज्ज्ञ्ञेन विपक्षनेशेनाप्यकनिद्धतत्वात्
  'तिउने' नि शीनिष मन प्रभृतिकानर्यान् तुनयति —
  जयतीति त्रितुन. (यु० प० ४८६)
- २०. पगाडे फमाने फटुए
  गरिचिद्वपुल इत्युच्यते, तम विपुल. मकलकायव्यापकत्वात्, 'पगाउं' ति प्रकर्षवृत्ति 'कक्कते' ति
  गरागेणद्रव्यमिय मनगंगोऽनिष्ट इत्ययं. 'कटुए' ति
  मदुक नागरादि तदिय य म नटुकोऽनिष्ट एवेति

(वृ० प० ४८६)

२१. चडे दुनसे दुन्मे तिन्वे दुरिहयासे
'चडें' ति रौद्र 'दुन्से' ति दुन्महेतु 'दुन्मे' ति
फप्टमाध्य इत्ययं 'तिन्वे' ति तीग्र - तिन्तं निम्वादि
द्रन्य तदिव तीग्र किमुक्त भवति ? 'दुरिहयासे' ति
दुरिधसहा. (यू० प० ४८६)

- २२. पित्त ज्वर करी व्याप्त तसु देह, विल तनु ऊपनो दाह अछेह। एहवो थको जमाली अणगार, विचरै सावत्थी नगर मभार॥
- २३ अणगार जमाली ते तिणवार, पराभव्यो वेदन करि घार। श्रमण निर्ग्रंथ तेड़ावै ताय, तेडावी इम वोलै वाय।। २४ तुम्है देवानुप्रिया । मुक्त काज, सेज्जा सथारो सथरो आज। ते श्रमण निर्ग्रंथ तिण अवसर जेह, जमाली ना ए अर्थ प्रतेह।। २५. विनय करीने करै अंगीकार, अगीकार करीने तिवार। जमाली अणगार ना जेह, सेज्जा सथारो सथरै तेह।।

२६ सेज्जा कहिता सोय, सूवा ने अर्थे जिको। सथारो अवलोय, तिण सू सेज्या-सथारो कह्यो॥

२७ \*तिण अवसर ते जमाली अणगार,

अतिगाढी वेदनाइ पराभव्यो तिवार। श्रगण निर्ग्रथ ने वीजी वार, तेडै तेडी इम वचन उचार।।

२८ अहो देवानुप्रिया ! मुफ्त काज, स्यू सेज्या-सथारो कीघो आज ? कै करिये छै सेज्या-सथार, स्यू नीपायो कै नीपावो छो घार ?

२६ श्रमण निर्प्रथ तिके तिह वेर, जमाली अणगार ने इम कहै हेर। अहो देवानुप्रिया । सेज्जा-सथार, निश्चै न कीघो, करियै घार।।

## सोरठा

ुसूवा नै जमाली एम, मुज ३० पूछचो कै करियै घर प्रेम, कीघो काल निर्देश करि। ३१ इण वचने करि न्हाल, अतीत देखाववू ॥ तेह वर्त्तमान जे काल, तण् भेद कह्यु ए तेह विषे। ने क्रियमाण, ३२ की घो इमहिज कह्यो ॥ पिण साध् उत्तरदायक जाण, आखियो। अणकीघो इम लागा जास, ३३ करवा तास, जमाली चितवै ॥ कारण थी इम मुनि नो वली। सथार, करणहार ३४ मुभ वच फुन नो वच अवघार, इम विचारणा करतो हुवो ।। कीघो अगीकर्यै । पक्ष ३५ करवा लागो तास, विमास, तेह वचन मिलतो नथी।। सम्यग प्रकार जे कीघ, ३६ क्रियमाण जिण नर एह अगीकर्यू। तिण विद्यमान नी सीध, करण क्रिया थाय, जे कीधू ३७ तथा दोप वह क्रियमाण नहि । नी परै।। चिरतन विद्यमान ताय, घट \*लय: मेरी खिनगाई, लाखीणी रे मेरी खिण

- २२. पित्तज्जरपरिगतसरीरे, दाहवक्कंतिए या वि विहरइ। (श० ६/२२४)
  - दाहो व्युत्कान्तः—उत्पन्नो यस्यासौ (वृ० प० ४८६)
- २३. तए ण से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूए समाणे समणे निग्गथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—
- २४,२५ तुडभे ण देवाणुष्पिया । मम सेज्जा-सथारग सथरह । (श० ६/२२५) तए ण से समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एतमट्ठ विणएण पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जा-संथारग सथरति ।

(য়০ ৪/२२६)

- २६. 'सेज्जा-सथारग' ति शय्यायै—शयनाय संस्तारक शय्यासस्तारक: (वृ० प० ४८६)
- २७. तए ण से जमाली अणगारे बिलयतर वेदणाए अभि-भूए समाणे दोच्च पि समणे निग्गथे सद्दावेद, सद्दावेत्ता एव वयासी—

'विलयतर' ति गाढतर (वृ० प० ४८६)

- २८ मम णं देवाणुष्पिया ! सेज्जासथारए कि कडे ? कज्जइ ?
  - 'र्कि कडे कज्जइ' त्ति कि निष्पन्न उत निष्पाद्यते ? (वृ० प० ४८६)
- २६ तते ण ते समणा निग्गथा जमानि अणगार एव वयासी—नो खलु देवाणुप्पियाण सेज्जा-सथारए कडे, कज्जइ। (१४० ६/२२७)
- ३१,३२ अनेनातीतकालनिर्देशेन वर्त्तमानकालनिर्देशेन च कृतिक्रियमाणयो भेंद उक्त उत्तरेऽप्येवमेव ('(वृ० प० ४८६)
- ३३ तदेव सस्तारककर्तृसाधुभिरिप कियमाणस्याकृततोक्ताः (वृ० प० ४८७)
- ३४. ततश्चासौ स्वकीयवचनसस्तारककर्तृसाघुवचनयोविम-र्शात् प्ररूपितवान् (वृ० प० ४८७)
- ३५ कियमाण कृत यदभ्युपगम्यते तन्न सङ्गच्छते (वृ० प० ४८७)
- ३६ यतो येन क्रियमाण क्रुतिमत्यभ्युपगत तेन विद्यमानस्य करणक्रिया प्रतिपन्ना (वृ० प० ४८७)
- ३७ तथा च वहवो दोषा, तथाहि—यत्कृत तिक्रियमाण न भवति विद्यमानत्वाच्चिरन्तनघटवत्

(वृ० प० ४५७)

# गीतक छंद

३८ अथ कर्यू पिण जो कीजियै तो नित्य ही करिवू वही। कीधापणां थी घुर समय जिम क्रिया-समाप्ती ह्वं नही॥

३६. सहु काल मे क्रियमाण थी जे आदि समया नी परे। करिवाज मांडचू करचू ह्वै तो क्रिया विफल हुवै तरे।।

४०. जे पूर्व अछतो हीज छै ते हुतो छतो दीसै वही।
प्रत्यक्ष एह विरोध छै विल जमाली चिन्ते सही।।
४१. तिम घट प्रमुख जे कार्य नी निष्पत्ति विषेज जाणियै।
जे क्रिया करिवा तणु कालज दीर्घ ही पहिछाणियै।।
४२. जे भणी प्रारभ काल मे घट आदि कार्य न देखियै।
विवादि-पिंडादि अवस्था विषे पिण नहिं पेखियै।।
४३. क्रिया ना अवसान में घट आदि कारज सभवै।
तो क्रिया काले कार्य युक्त न क्रिया अवसाने हुवै।।

बा०—भाष्यकार कहें छै—इहलोक ने विषे जे पुरुषे क्रियमाण—करवा लागू ते कृत कहिता कीघू, इम अगीकार करचूं तिण पुरुषे विद्यमान नीज करण क्रिया अगीकार वीधी। वली तिण प्रकार छते वह दोष नी निष्पत्ति हवै।

इहा जे कीचू ते कियमाण न हुवै कस्मात्—िकण कारण यकी र तटमावाओ ते सत्पणा थकी —वस्तु ना विद्यमानपणा थकी इत्यर्थ. । केहनी परै ? चिरंतन घट नी परै । अथवा कृत अपि कियते किहता कीधा प्रतै पिण कीजियै तो नित्य किर्यू। वली किया समाप्ति न हुवै सदा काल कीधा नै हीज कियमाणपणा थकी।

जो कियमाण कहिता करवा लागा ते कृत कहिता की घो हुवै तिवार किया नो निर्फलपणो हुवै। तया पूर्वे न थयु ते थातो दीसै तथा जे भणी घटादिक नीं निष्पत्ति नै विषे दीर्घ किया काल दीसै छै। ३८. कृतमिप ऋियते ततः क्रियता नित्यं कृतत्वात् प्रयम-समय इवेति, न च क्रियाममाप्तिभैवति

(वृ० प० ४८७)

३६. सर्वेदा कियमाणत्वादादिममयवदिति, तथा यदि कियमाण कृत स्यात्तदा कियावैफल्य स्याद्

(वृ० प० ४६७)

४०. तथा पूर्वमसदेव भवद्दृण्यते इत्यध्यक्षविरोधण्च (वृ० प० ४६७)

४१. तथा घटादिकार्यनिष्पत्तौ दीर्घ. क्रियाकालो दृश्यते (वृ० प० ४६७)

४२. यतो नारम्मकाल एव घटादिकार्यं दृश्यते नापि स्थासकादिकाले (वृ० प० ४८७)

४३. युक्त तर्हि, तिस्त्रयाऽवसाने, यतम्चैयं ततो न क्रिया-कालेषु युक्तं कार्यं किन्तु क्रियाऽवमान एवेति (वृ० प० ४८७)

वा० — आह च भाष्यकारः —
जम्सेह कज्जमाण कयित तेणेह विज्जमाणस्स ।
करणिकिरिया पवन्ना तहा य बहुदोसपिहवत्ती ।।
कयिमह न कज्जमाणं तव्मावाओं चिरतणघढोव्य ।
अहवा कयिप कीरइ कीरज निच्चं न य ममती ।।
किरियावेफल्लिप य पुव्वमभूय च दीसए हुंतं ।
दीसइ दीहो य जओ किरियाकालो घढाईणं ।।

१. इहास्मिन् लोके येन नरेण क्रियमाणं कृतिमत्यम्युपगत तेन नरेण विद्यमानस्यैव करणिकयाप्रतिपन्नागीकृता तथा च सति बहुदोपनिष्पत्तिर्भवति ।

२. तथाहि कयिमहित्यादि इह यत् कृत तत् कियमाण न भवति कस्मात् तद्भावाओत्ति तत्सत्त्वाद् वस्तुनो विद्यमानत्वादित्यर्थः । किंवत् ? चिरतनघटवत् । अथवा कृतमिप कियते ततः नित्य कियता न च कियासमाप्तिभवति सर्वेदा कृतस्यैव कियमाणत्वात् ।

३ किरियेत्यादि यदि कियमाणं कृत स्यात्तदा किया-वैफल्यं स्यादिति । तथा पूर्वमभूत च भवद्दृश्यते । तथा यतः घटादीना निष्पत्तौ दीर्घः कियाकालो दृश्यते ।

आरंभ काल नै विषे पिण घटादि कार्य न दीसै शिवादि अद्धा ने विषे--पिंडादि अदस्था ने विषे पिण न दीसै ते भणी किया काल ने कार्य युक्त नहीं, किन्तु किया ना अस ने विषेहीज कार्य युक्त छै।

४४ ते अणगार जगाली नै तिहवार, एहवू अध्यवसाय विचार।
यावत उपनो छै मन माय, आगल ते किहयै छै ताय।।
४५ जे भणी श्रमण भगवत महावीर, ए विघ आखै छै जन तीर।
यावत एम परूपै वाय, इम निश्चै चलमान ते चल्यू कहाय।
४६. उदीरवा माड्यो छै ताम, तिणने उदीर्यू भाखे स्वाम।
जाव निर्जरवा माड्यू सधीक, तसु निर्जर्यू कहैते भूठो अलीक।।

जाव निजरवा माड्यू संघाक, तसु निजर्यू कहत मूठा अलाक ।।
४७ इम निइचै दीसै छै एह, सयन अर्थ सथारो जेह।
करिवा लागू ते कर्यू न कहाय,सथरिवा लागू ते सथर्यू नाय।।

४८ जे भणी सूवा अर्थ सथार, करिवा माड्यू ते अणकर्यू धार। सथरवा माड्यू छै तेह, अणसथर्यू कहियै जेह।।

४६. चलवा लागू छै पिण जेह, अणचालियू कहियै छै तेह। जाव निर्जरिवा माड्यू तास, अणनिर्जर्यू कहीजै जास।।

५०. एम विचारै विचारो जेह, श्रमण निर्ग्य प्रते तेडावेह। तेडावी इम वोलै वाय, अहो देवानुप्रिया । जे ताय।।

५१ श्रमण भगवत महावीर सुजेम, इम कहै जाव परूपै एम। इहविध निश्चै करिने जेह, चलवा लगू ते चलियु कहेह।। ५२ तिमहिज जाव सर्व पहिछाण,

निर्जरिवा माड्यू ते अनिर्जर्यू जाण।

तव जमाली अणगार नु तेह,

इम कहिता जाव परूपतां जेह।।

५३ केइ श्रमण निर्ग्रंथ ते अर्थ प्रतेह,

सद्हे प्रतीते फुन रोचवेह। केड श्रमण निर्ग्रंथ ते अर्थ प्रति ताय,

न सद्दहै नही प्रतीते रुचै नाय।।

### सोरठा

५४ श्रमण निर्ग्रथ जमाली अणगार ताम, सद्दहै नहिंतसु एह मत। एक अर्थ प्रति आम, करिवू न ४५ क्रियमाण विद्यमान, वस्तु नु अविद्यमान पिछान, वस्तु नु करिवू ह्वै।। पिण ५६. जिम विपेह, पुष्प कदापि हुवै नही। पिण अछती वस्तु ह्वं नथी।। -वस्तु हुवै जेह, ५७ जो अछती वस्तू होय, तो खर-श्रुग किम नहि हुवै। युक्ती जोय, विशेषावश्यक ग्रथ थी।। इम

नारभे च्चिय दीसइ न सिवादद्धाइ दीसइ तदंते । तो नहि किरियाकाले जुत्त कज्जं तदंतिम ।। (वृ० प० ४८७)

४४. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स अयमेयारूवे अज्झित्थिए जाव (स॰ पा॰) समुप्पिजित्था

४५. जण्णं समणे भगव महाबीरे एवमाइक्खइ जाव एवं परुवेइ एव खलु चलमाणे चलिए

४६. उदीरिज्जमाणे उदीरिए जाव (स॰ पा॰) निज्ज-रिज्जमाणे निज्जिणो तण्णं मिच्छा ।

४७. इमं च ण पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे सथरिज्जमाणे असंथरिए।

४८. जम्हा ण सेज्जा-सथारए कज्जमाणे अकडे, संथ-रिज्जमाणे असथरिए

४६. तम्हा चलमाणे वि अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिणो —

५०. एव सपेहेइ, सपेहेत्ता समणे निग्गथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी---जण्ण देवाणुष्पिया ! (श० ६/२२८)

५१. समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ— एव खलु चलमाणे चलिए

५२. त चेव जाव (स० पा०) निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे। (श० ६/२२८) तए ण तस्स जमालिस्स अणगारस्स एवमाइक्ख-माणस्स जाव परूवेमाणस्स

५३. अत्थेगतिया समणा निग्गथा एयमट्ठ सद्दृहति पत्ति-यति रोयति अत्थेगतिया समणा निग्गथा एयमट्ठ नो सद्दृहति नो पत्तियति नो रोयंति ।

५४ 'अत्थेगइया समणा णिग्गथा एयमट्ठं णो सद्दहंति' ति ये च न श्रद्धित तेषा मतिमदं (वृ० प० ४८७)

५५ नाकृत अभूतमविद्यमानिमत्यर्थं क्रियते अभावात् (वृ० प० ४८७)

५६. खपुष्पवत् (वृ० प० ४८७)

५७ यदि पुनरकृतमिप असदपीत्यर्थः क्रियते तदा खर-विपाणमिप क्रियतामसत्त्वाविशेषात् (वृ० प० ४८७)

१. नारभे इत्यादि आरभकाले एव घटादिकायँ न दृश्यते शिवाद्यऽद्धायां पिडाद्यवस्थायामपि कायँ न दृश्यते किन्तु तदते स्थासादिकियावसाने कायँ दृश्यते द्वतः क्रियाकाले कायँ न युक्त किंतु तदते एवेति । ्रवा॰—केयक श्रमण निग्रंथ जमाली नां ए अर्थ प्रति न श्रद्धे । तेहनुं मत— जे कडेमाणे कडे किहता करतो थको ते क्रियमाण—विद्यमान वस्तु, तेहनु करिवू (-पिण अविद्यमान वस्तु नु करिवू न हुवै । जिम आकाश ने विषे फूल न हुवै । छती . वस्तु हुवै, अछती न हुवै । जो अछती हुवै तो खरविसाण पिण हुवै । अछतापणा नां अविशेष थकी ।

वली जे की घा नु करिवू ते पक्ष नै विषे नित्यिकियादिक दोप कहा। छै, ते अछता नु करिवू ते पक्ष नै विषे पिण तुल्य वर्ते। तथा निश्चै अत्यत अछतो न करिये असद्भाव थकी, खर विसाण नी परे। अथ अत्यंत अछतो पिण करिये तिवारे नित्य ते अछतो करण प्रसग। वली अत्यत अछता करण कै विषे किया समाप्ति न हुवै। तथा अत्यन्त अछता ना करण कै विषे किया ना हुवै अछतापण। थकीज खरविसाण नी परे।

अथवा अविद्यमान नो करणो अगीकार कीघे छते नित्यिक्तयादिक दोप कप्टतरका हुवै अत्यत अभाव रूपपणा थकी। विद्यमान पक्ष ने विषे तो पर्याय विद्येषण अर्पण थकी किया व्यपदेश पिण हुवै यथा आकाश कुरु तथा बली नित्य कियादिक दोप न हुवै वली अत्यत अछता खरिवपाणादिक ने विषे ए न्याय न हुवै।

्र जे वली कहा — पूर्व अछतो हीज ऊपजतो यको दीसै इति प्रत्यक्ष विरोध तेहने विषे कहिये छै — जो पूर्व न थयु छतो हुतो दीसै छै तो पूर्व न थयु छतो किण कारण थकी तुभ ने खरविषाण पिण न दीसै।

ं जे वली कह्यु —दीर्घ कियाकाल दीसे तेहने विषे कहिये छै — प्रति समय उत्पन्न होवा वाली परस्पर किंचिद भिन्न रूपवाली स्थाम कोशादिक प्रारम्भ - समय ने विषय पिण त्यार होवा वाली घणी कार्य कोटी नो पिण दीर्घ कियाकाल दीसे, तदा इहां घट नो स्यू ? जेणे करी कहिये छै दीसे छै दीर्घ किया काल घटादिक नु इति।

वली जे कहां —नारभे एव दृश्यते इत्यादि, घट ना आरभ ने विषे घट न दीसै, तेहनु उत्तर कहै छैं —अनेरा कार्य ना आरभ ने विषे अनेरो कार्य किम दीसै, पट ना आरभ ने विषे जिम घट न दीसै तिम शिवक अने स्थासकादिक कार्य विशेष घट स्वरूप न हुवै तिण कारण थकी शिवकादिक काल ने विषे किम घट दीसै इति ।

ं - 'विल स्यू अंत समय ने विपेहीज घट प्रारम्यो, तिण काल ने विपेहीज ए घट दीस्नै, तिवारे काइ दोप ? इम कियमाण किहता करिवा लागो ते कीघू हुवै कियमाण समय निरशपणा थकी। अने जो वर्त्तमान समय किया काल ने विपे पिण अणकीधी वस्तु, तिवारे अतिक्रमे छते किम करिवू ? अथवा किम आगामी काले ? किया ना उभय काल ने विपे पिण विनष्ट अने अनुत्पन्नपण करी असत-पणा थकी असव-पणा थकी । ते भणी किया कालहीज कियमाण कहिता किया लागो ते छत कहिता कीघू कहिये। आह च—

वा०—अपि च—ये कृतकरणपक्षे नित्यिक्रयादयो दोषा भणितास्ते च असरकरणपक्षेऽपि तुल्या वर्त्तन्ते, तथाहि— नात्यन्तमसत् क्रियतेऽमद्भावात् खरिवपाणिमव, अथात्यन्ता-सदिपि क्रियते तदा नित्य तत्करणप्रमञ्जः, न चात्यन्तामत करणे क्रियासमाप्तिभविति, तथाऽत्यन्तासत करणे क्रिया वैफल्य च स्यादसत्त्वादेव खरिवपाणवत्।

अय च अविद्यमानस्य करणाभ्युपगमे नित्यिक्रयादयो दोपा कष्टतरका भवन्ति, अत्यन्ताभावरूपत्वात् खरिब-पाण इवेति विद्यमानपक्षे तु पर्यायिवशेषेणापंणात् स्या-दिप क्रियाव्यपदेशो यथाऽऽकाश कुरु, तथा च नित्यिक्रया-दयो दोपा न भवन्ति, न पुनरयं न्यायोऽत्यन्तासित खर-विपाणादावस्तीति

यच्चोनत -- 'पूर्वमसदेवोत्पद्यमान दृश्यत इति प्रत्यक्ष-विरोध ', तत्रोच्यते, यदि पूर्वमभूतं सद्भवद्दृश्यते तदा पूर्वमभूतं सद्भदत् कस्मात्त्वया खरविषाणमि न दृश्यते ।

'यच्चोक्त-दीर्घ कियाकालो दृश्यते, तत्रोच्यते प्रतिसमयमुत्पन्नाना परस्परेणेपद्विलक्षणाना सुबह्वीना स्यासकोमादीनामारम्भसमयेप्वेव निष्ठानुयायिनीना कार्यकोटीना दीर्घ. क्रियाकालो यदि दृश्यते तदा किमत्र घट-स्यायात ? येनोच्यते – दृश्यते दीर्घश्च क्रियाकालो घटा-दीनामिति

यच्चोनत—'नारम्भ एव दृश्यते' इत्यादि तत्रोच्यते, कार्यान्तरारम्भे कार्यान्तर कथ दृश्यता पटारम्भे घटवत् ? शिवकस्थासकादयश्च कार्यविशेषा घटस्वरूपा न भवन्ति, तत शिवकादिकाले कथ घटो दृश्यतामिति ?

किच—अन्त्यसमय एव घट समारव्ध ? तत्रैव च यद्यसी दृश्यते तदा को दोप ? एव च क्रियमाण एव कृतो भवित क्रियमाणसमयस्य निरणत्वात्, यदि च सप्रतिसमये क्रियाकालेऽप्यकृत वस्तु तदाऽतिकान्ते कथ क्रियता कथ वा एप्यति ? क्रियाया उभयोरिप विनष्टत्वानुत्पन्तत्वेना-सत्त्वादसम्बध्यमानत्वात्, तस्मात् क्रियाकाल एव क्रियमाण कृतिमिति

१. यह वार्तिका टीका के आधार पर की हुई है। प्रथम पेराग्राफ की टीका ऊपर ुके चार सोरठो के सामने आ गई। इसलिए वार्तिका के सामने उसे नहीं रखा गया।

स्थिवरां नों ए पक्ष-अणकीधा प्रतै न करियै किण कारण थकी, अभाव थकी आकाश-पुष्प नी परै। अथवा अकृत ते अविद्यमान प्रते पिण करियै तो खर के श्रृग पिण करियै।

ननु शब्द निश्चय अर्थ ने विषे । जे नित्य िक्यादिक दोप कृत करण पक्ष ने विषे तुम्हे कह्या ते असत करण पक्ष ने विषे पिण तुल्य वा कष्टतरका हुवै । तथा तुम्हारे मते पूर्वे न थयु ते थातो दीसै, तिको नही । जो अणथयुं थातो दीसै तो खर-विसाण पिण किम न दीसै ।

समय-समय प्रति ऊपना परस्पर विलक्षण अति वहु स्थासकोसादिक कार्य कोटि नो दीर्घ क्रियाकाल जो दीसे तो इहा कुभ नो किसू कहिवू ?

अन्य कार्य ना प्रारभ नै विषे अन्य कार्य किम दीसे, जिम पट ना आरभ ने विषे घट नी परें। सिवक अने स्थासकादिक कार्य विशेष घट सरूप न हुवै, ते भणी सिवकादि काल ने विषे घट किम दीसें।

अत समय ने विपेहीज घट प्रारभ्यो तिणहिज समय ने विपे ए घट दीसै तिवारे काइ दोप ? एतले काइ पिण दोप नथी। अने जो सप्रति— वर्त्तमान काल ने विषे अणकी घो हुनै तो गन—अतीत काल ने विपे किम कर्यु हुनै अने अनागत काल ने विपे किम करिये इत्यादि वहु विस्तार ते विशेपावश्यक ग्रथ थकी जाणवी।

५८ \*तिहा जे तेह श्रमण निर्मथ, जमाली अणगार नो वच सद्दृत । प्रतीते रुचे ते जमाली प्रतेह, अगीकार करी विचरेह ।।

५६ तिहा जे तेह श्रमण निर्प्रथ, जमाली ना ए अर्थ ने नहीं सद्हत। नहीं प्रतीते न रुचै लिगार,

ते जमाली अणगार नां कना थी तिवार ॥

आह च---

थेराण मय नाकयमभावओं कीरए खपुष्फं व। अहव अकयिप कीरइ कीरउ तो खरिवसाणि।। निच्चिकिरियाइदोसा नणु तुल्ला असइकट्ठतरया वा। पुठ्वमभूय च न ते दीसइ कि खरिवसाणि ?

पइसमज्प्पन्नाण परोप्परिवलक्खणाण सुबहूण । दीहो किरियाकालो जइ दीसइ कि च कुभस्स ॥ अन्नारभे अन्न किह दीसज? जह घडो पडारभे । सिवगादओ न कुंभो किह दीसज सो तदद्धाए?

अते च्चिय आरद्धो जइ दीसइ तिम चेव को दोसो ? अकय च सपइ गए किंहु कीरज किंह व एसिम ?' इत्यादि वहु वक्तव्य तच्च विशेपावश्यकादवगन्तव्य-मिति। (वृ० प०४६७, ४६६)

५८. तत्य णं जे ते समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठ सद्हति पत्तियति रोयति, ते ण जमालि चेव अणगार जवसपिज्जत्ता ण विहरति ।

५६. तत्य ण जे ते समणा निग्गया जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठ नो सद्दहित नो पत्तियति नो रोयति, ते ण जमालिस्स अणगारस्स अतियाओ

स्थिवराणामय पक्ष. नाऽकृत क्रियते कस्मात् अभावात् खपुष्पवत् अथवा कृतमिप कियते तदा खरिवपाणमिप क्रियताम् ।

२. नच्चेत्यादि ननु इति निश्चये ये नित्यिक्रियादयो दोषाः कृतकरणपक्षे त्वया भणितास्ते सत्करणपक्षेपि तुल्याः कष्टतरका वा भवति । तथा तव मते पूर्वमभूत भवद् दृश्यते तना यदि दृश्यते तदा खरविपाणमपि कथं न दृश्यते ।

पइसमेत्यादि प्रतिसमयोत्पन्नाना परस्परिवलक्षणाना सुबह्वीनां स्थासकोशादीना कार्यकोटीनां दीर्घ क्रिया-कालो यदि दृश्यते तदात्र कुभस्य किमायात न किम-पीति ।

४. अणारभेत्यादि अन्यारभेऽन्यत् कयं- दृश्यता यथा पटारभे टवत् शिवकादयश्च कार्यविशेषा घटस्वरूपा न ततः तदद्धाए शिवकादिकाले स घट. कथ दृश्यता-भिति ।

५. अन्तेच्चियेत्यादि अन्त्यसमये एव घट प्रार्व्य, तिम— तर्नेव समये यदि दृश्यते घटे तदा को दोप. ? न को पीति । यदि च सप्रति वर्त्तमाकालेऽकृत तदागतेऽतीते काले कर्य क्रियता कथ वा एप्यति काले चेति ।

<sup>\*</sup>दशकंघर राजा

- ६०. ते कोट्टग वाग थकी निकलंत, पूर्वानुपूर्वी गमन करंत। ग्रामानुग्राम विचरता सोय, जिहां चंपा नगरी अवलोय।।
- ६१. जिहा पूर्णभद्र चैत्य सुमीर, जिहां श्रमण भगवत महावीर। तिहां आवै आवी गुणगेह, श्रमण भगवंत महावीर प्रतेह।।
- ६२ जीमण पासा थी त्रिणवार, प्रदक्षिणा करता सुविचार। वादै स्तुति करत उदार, नमस्कार करे करीने तिवार।।
- ६३. श्रमण भगवंत महावीर प्रतेह, श्रगीकार करी विचरेह। जमाली ने छोड्यो खोटो जाण, प्रभु तणे पगे लागा आण।।
- ६४. तिवारै ते जमाली अणगार, कदाचित् अन्य दिवस किणवार। ते रोगातक थकी विश्रमुक्त, हुष्ट थयुंगद रहित प्रयुक्त।।
- ६५ तनु वलवत थयु जिह वार, सावत्थी नगरी थी अवधार। कोट्टग वाग थकी निकलेह, वाग थकी निकली ने तेह।।
- ६६ पूर्वीनुपूर्वी गमन करत, ग्रामानुग्राम प्रते विचरत । जिहा चपा नगरी अवधार, जिहा पूर्णभद्र चैत्य उदार ॥
- ६७ श्रमण भगवत महावीर छै जेथ, तिहा आवै आवी ने तेथ। श्रमण भगवत महावीर ने जास, निह अति दूर ने निकट विमास।।
- ६ इम रहि श्रमण भगवत प्रति ताय, महावीर ने वदै इम वाय। जिम देवानुप्रिया ना जाण, वहु शिष्य ग्रतेवासी पिछाण।।
- ६६. श्रमण निर्मंथ छन्नस्थ थका जेह, गुरुकुलवास थी नीकल्या तेह। तिम छन्नस्थ थको हूं ताय, निश्चे गण थी निकल्यो नाय।।
- ७०. हू उत्पन्न नाण दंसण धार, केवलज्ञान दर्शन छत् सार। जिन अरिहत रु केवली थाय, छते गण थी निकल्यू ताय।।

# यतनी

- ७१ः तब भगवंत गोतम जेह, जमाली अणगार प्रतेह। इम वोलै वचन विचार, अहो जमाली ! निश्चै तूं घार।। ७२. केवली रै दर्शण ज्ञान, गिरियंभ थूभे करि जान। थोड़ो सो नही आवरै ताय, तथा विशेष आवरियै नाय।।
- ७३ जो तुम्है जमाली घार, उत्पन्न ज्ञान दर्शण घरणहार। जिन केवली अरिहत थाय, केवल छते निकलियु ताय।।
- ७४. तो ए दोय प्रश्न कहो न्हाली, शाश्वतो छै लोक जमाली । कै लोक अशाश्वतो जाणी, ए प्रथम प्रश्न पहिछाणी।।
- ७५. शाश्वतो छै जीव जमाली ! कै जीव अशाश्वतो न्हाली। - ए द्वितीय प्रश्न नो जाव, तुम्है उत्तर देवो सताव।।
- ७६. जमाली अणगार तिवार, भगवत गोतम इम कह्य सार। संकित काक्षित जेह, कलुपभाव सहित थयु तेह।।

- ६०. कोठुगाओ चेदयाओ पडिनिक्खमंति पडिनिक्खिमत्ता पुट्याणुपुट्यि चरमाणा गामाणुग्गाम दूइज्जमाणा जेणेव चंपा नयरी
- ६१. जेणेव पुग्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता समणं भगवं महावीर
- ६२. तिक्युत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वदंति नमंसति, विदत्ता नमसित्ता
- ६३. समणं भगवं महावीरं जवसपिज्जित्ता णं विहरंति । (श॰ ६।२२६)
- ६४. तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ ताओ रोगायंकाओ विष्पमुक्के हुट्ठे जाए, अरोए
- ६५. विलयसरीरे सावत्थीओ नयरीओ कोट्टगाओ चेड्याओ पिटनिक्खमइ, पिटनिक्खिमत्ता
- ६६. पुन्वाणुपुन्वि चरमाणे गामाणुग्गाम दूइज्जमाणे जेणेव चपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए,
- ६७. जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छिता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते
- ६ द. ठिच्चा समण भगव महावीर एव वयासी—जहा ण देवाण्पियाण वहवे अतेवासी
- ६९. समणा निग्गथा छउमत्थावनकमणेणं अवनकता, नो खलु अह तहा छउमत्थावनकमणेणं अवनकंते 'छउमत्थावनकमणेण' ति छद्मस्थानां सतामपक्रमण— गुरुकुलान्निगंमन छद्मस्थापक्रमण तेन
- ७०. अह ण उप्पन्ननाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवनकमणेण अवनकते।

(श० ६।२३०)

- ७१,७२. तए णं भगव गोयमे जमालि अणगार एव वयासी—नो खलु जमाली । केवलिस्स नाणे वा दसणे वा सेलिस वा 'थभिस वा' थूभिस वा आव-रिज्जइ वा निवारिज्जइ वा 'आवरिज्जइ' त्ति ईपद्जियते 'निवारिज्जइ' त्ति नितरा वार्यते प्रतिहन्यत इत्यर्थ. (वृ० प० ४८८)
- ७३ जिंद ण तुम जमाली । उप्पन्ननाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेण अवक्कते
- ७४. तो ण इमाइ दो वागरणाई वागरेहि—सासए लोए जमाली । असासए लोए जमाली ?
- ७५. सासए जीवे जमाली । असासए जीवे जमाली ? (श० ६।२३१)
- ७६. तए ण से जमाली अणगारे भगवया गोयमेण एव वृत्ते समाणे सिकए किखए जाव (स॰ पा॰) कलुस-समावण्णे जाए याबि होत्या।

७७. नहीं समर्थं गोतम प्रतेह, किचत पिण उत्तर देवो जेह।
मौनपणें रहैं तिह्वार, हिव भाखें श्री जगतार।।
७८. अहो जमाली । इम आमत्रेह, श्रमण भगवत महावीर जेह।
जमाली अणगार प्रतेह, इम भाखें प्रभु गुणगेह।।
७६ अहो जमाली । म्हारा जाण, वहु ग्रतेवासी पिछाण।
श्रमण निर्ग्रथ छन्नस्थ ताय, तिके समर्थ छै अधिकाय।।
८०. ए प्रश्न ना उत्तर देवा, जिम हू कहू तिम स्वयमेवा।
नहि निश्चें एण प्रकार, भाषा वोलवा ने अवघार।।
६१ जिम तू कहैं हू सर्वज्ञानी, तिम कही न सकें सुजानी।
इम कि प्रभु उत्तर आखे, साक्षात देखें तिम दाखे।।
वा०—एतावता अम्हे जिम कहू छू प्रश्न ना उत्तर तिम प्रश्नोत्तर किवा
ने ते मुनि समर्थं छै। पिण जिम तू छन्नस्थ थको कहै छै हू केवली छू, एहवो
वचन ते श्रमण निर्ग्रथ कही सकें नही।

एम कही नै भगवान प्रश्ना नो उत्तर आखै-

#### यतनी

- दर. शाश्वतो छै लोक जमाली । जेन कदापि न हुवो न्हाली । अनादिपणा थी जाणी, कदे नहि हुओ तिम नहि ठाणी ।।
- द निह कदापि निहं हुवै जेह, सदैव भाव थी एह। निह कदापि निह लोग, अपर्यवसित भाव थी जोग।।
- दथ. तो स्यू ते भणी लोक ए जोय, हुवो हिवडा छै होस्यै ए सोय। तिण सूत्रिकाल भावीपणेह, घ्रुव अचल मेरु जिम एह।।
- द्रभ्र णितिए कहिता नियताकार, तिको नियतपणा थी विचार। शाश्वतो ते खिण-खिण प्रति जोय, अछता ना अभाव थी होय।।
- द्ध अक्षय ते विनाश रहीत, अक्षयपणा थी सगीत। अव्यय ते प्रदेश अपेक्षाय, अवस्थित द्रव्य आश्रयी ताय।।
- ८७. नित्य ते विहु नी अपेक्षाय, द्रव्य प्रदेश आश्रयी ताय। अथवा कह्या ए पद सात, एकार्थवाची अवदात।।
- द्रद. अशाश्वतो ए लोक जमाली, तेहनों न्याय कहू सुविशाली। जे अवर्साप्पणी थई ने अद्धा, उत्सीप्पणी थाय प्रसिद्धा।।
- दह उत्सिंपिणी थई पश्चात, अवसिंपिणी हुई विख्यात।
  कह्य लोक तणु ए न्याय, हिव जीव नु कहै जिनराय।।
  \* सुण रै जमाली ! प्रभूजी भाखै सुविशाली। (ध्रुपद)
- ह०. जीव शारवतो छै रे जमाली । जे न कदापि न हुआ निहाली । यावत नित्य कहीजै ताय, ए द्रव्य जीव नु अभिप्राय ।।

- ७७ नो सचाएति भगवओ गोयमस्स किंचि वि पमोक्ख-माइक्खित्तए तुसिणीए सचिट्टइ। (श० ६।२३२)
- ७८. जमालीति समणे भगव महावीरे जमालि अणगार एव वयासी —
- ७६ अत्यिणं जमाली । मम वहवे अतेवासी समणा निग्गथा छजमत्या, जेण पभू।
- ५०,६१. एय वागरण वागरित्तए, जहा णं अह, नो चेव ण एतप्पगार भासं भासित्तए जहा ण तुम

- ५२ सासए लोए जमाली । ज न कयाइ नासि, 'न कयाइ नासी' त्यादि तत्र न कदाचिन्नासीदना-दित्वात् (वृ० प० ४८८)
- ५३. न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ— न कदाचिन्न भवति सर्दैव भावात् न कदाचिन्न भविष्यति अपर्यवसितत्वात् (वृ० ५० ४८८)
- प्तर. भुवि च भवइ य, भविस्सइ य—धुवे कि तर्हि ? 'मुवि चे' त्यादि ततरचाय त्रिकानभा-वित्वेनाचलत्वाद् ध्रुवो मेर्वादिवत् ध्रुवत्वादेव (वृ० प० ४८८)
- ५५. नितिए सासए

  'नियतः नियताकारो नियतत्वादेव शाश्वतः प्रतिक्षणमप्यसत्त्वस्याभावात् शाश्वतत्त्वादेव (वृ० प० ४८८)
- न्दः. अक्खए, अन्वए, अवट्ठिए अक्षय निर्विनाशः, अक्षयत्वादेवान्यय प्रदेशापेक्षया अवस्थितो द्रन्यापेक्षया (वृ० प० ४८८)
- ८७ निच्चे नित्यस्तदुभयापेक्षया, एकार्या वैते शब्दा. (वृ० प० ४८८)
- दन. असासए लोए जमाली । ज ओसप्पिणी भवित्ता उस्सप्पिणी भवइ,
- ८६. उस्सप्पिणी भवित्ता ओसप्पिणी भवइ
- ६०. सासए जीवे जमाली ! ज न कयाइ नामि जाव (स॰ पा॰) निच्चे ।

- ११. अशाश्वतो जीव छै रे जमाली, नारिक थई तिर्यंच ह्वं न्हाली। तिर्यंच थड मनुष्यपणु पाय, मनुष्य थई देवता थाय।।
- ६२. तिण अवसर जमाली अणगार, श्रमण भगवंत महावीर सार। एम सामान्य थी कहितां सोय, जाव एम परूपता जोय।।
- ६३. एह अर्थ प्रति निह सद्देह, निह प्रतीते निह रोचवेह। एह अर्थ प्रति अणसद्दहतो, अणप्रतीततो अणरोचवंतो।।
- ६४- श्रमण भगवंत महावीर उदार, ज्यांरा समीप थी वीजी वार। स्वयमेव पोतै नीकलै जेह, दूजी वार पोतै निकली तेह।।
- ६५ \*वहु असत्य अर्थ नो माण, प्रकट करिवै करि पहिछाण। मिथ्यात्व ना उदय यकी अववार,

अभिनिवेश कदाग्रह करिने तिवार ॥

- ६६. आतम फुन पर उभय प्रतेह, विरुद्धपणु करतू अधिकेह। दुर्लभ वोविपणु कहिवाय, दग्व वीज जिम करतो ताय।।
- ६७ वहु वर्ष चारित्र पर्याय, पालै पाली ने ते ताय। संलेखणा अर्घ मास नी जोय, आतम दुर्वल करै करी सोय।
- ६८ तीस भक्त अणसण करि ताम, छेदै छेदी अदगुण-घाम। ते स्थानक नै अणआलोय, अणपडिकमिये जमाली जोय।।
- ६६. काल ने समय करीने काल, लंतक कल्प विषेज निहाल। सागर तेर तणे स्थितिकेह, उपन् सुर किल्विपिकपणेह।।
- १०० ते भगवत गोतम तिहवार, जमाली अणगार ने घार। काल गयो जाणी ने ताय, वीर प्रभु पे आवी चलाय।।
- १०१. श्रमण भगवत महावीर पे आय, वदै स्तुति करत सवाय। नमस्कार करे शीस नमाय, नमण करीने वदै इम वाय।
- १०२. इम निश्चै देवानुप्रिया नों देख, श्रतेवासी कुशिप्य विशेख। जमाली अणगार नीहाल, काल ने समय करीने काल।।
- १०३. किहां गयो ने ऊपनो केथ, गोतम प्रति आमंत्री तेथ। श्रमण भगवत महावीर सुहेम, भगवत गोतम ने भाखे एम।
- १०४. इम निञ्चे करि गोयम ! जगीम, म्हारो ग्रतेवासी कुगीप। जमाली नाम अणगार, ते मुक्त कहिता थका तिवार।।

६१. अमामए जीवे जमानी । जण्णं नेरइए भवित्ता तिरिक्खजीणिए भवड निरिक्खजीणिए भवित्ता मणुस्मे भवड, मणुस्से भवित्ता देवे भवइ।

(य० ६।२३३)

- ६२ तए ण से जमाली अणगारे ममणस्म भगवओ महा-वीरस्म एवमाज्ञ्यसाणस्म जाव एव पहवेमाणस्म
- ६३. एतमट्ठं नो सदृहड नो पत्तियड नो रोएड, एतमट्ठ असदृहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे
- ६४. दोच्च पि समणस्स भगववो महावीरस्म व्यतियावो व्यापाए व्यवकममइ, व्यवकामित्ता
- ६५. वहूर्ति 'असन्मावुन्मावणाहि मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य 'असन्मावुन्मावणाहि' ति असद्भावाना—वितयार्था-नामुद्भावना—उत्प्रेक्षणानि असद्भावोद्भावना-स्ताभि. 'मिच्छत्ताभिनिवेमेहि य' ति मिथ्यात्वात्– मिथ्यादर्थनोदयाद् येऽभिनिवेशा—आग्रहास्ते तथा तै. (वृ० प० ४८६)
- ६६. अप्पाण च पर च तदुभय च वुग्गाहेमाणे वुष्पाएमाणे 'वुग्गाहेमाणे' त्ति व्युद्ग्राहयन् विरुद्धग्रहवन्तं कुर्वेन्नि-त्ययं 'वुष्पाएमाणे' त्ति व्युत्पादयन् दुर्विदग्धीकुर्व-नित्यतं । (वृ० प० ४८६)
- ६७. वहूई वासाई सामण्णपित्याग पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमामियाए सलेहणाए अत्ताणं झूसेड, झूसेता
- ६८ तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोडयपडिक्कते
- हह. कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे तेरसमागरोव-मिटतीएमु देविकिट्यिसएसु देवेसु देविकिट्यिसयत्ताए उववन्ते। (श० हार्३४)
- १००. तए णंभगव गोयमे जमालि अणगार कालगय जाणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवा-गच्छइ,
- १०१ उवागच्छिता समणं भगव महावीर वदइ नमसङ, वंदिता नमसिता एवं वयासी—
- १०२ एव खलु देवाणुष्पियाण अतेवासी कुसिस्से जमाली नाम अणगारे काल-मासे काल किच्चा
- १०३. किंह गए ? किंह जनवन्ने ? गोयमादी ! समणे भगव महानीरे भगवं गोयमं एव वयासी—
- १०४. एव खलु गोयमा । मम अतेवामी कुमिस्ने जमाली नामं अणगारे से ण तदा मम एवमाइक्लमाणस्स एव भासमाणस्स एव पण्णवेमाणस्स एव परूवेमाणस्स

<sup>\*</sup>लय: मेरी खिण गई, लायीणी रे मेरी खिण

१०५. एह अर्थ प्रति नहिं सद्देह, अणसद्दहतो प्रतीततो नाय, १०६ मुक्त पासा थी वीजी वार, वहु असत्य अर्थ नो माण, १०७ तिमहिज यावत ऊपनो जेह, इम सूणने गोयम गणधार, नही प्रतीत करें न रुचेह। अणरोचवतो थकोज ताय।। पोतै निकलै निकली तिवार। प्रगट करिवै करी अयाण।। सुर किल्विपिकपणा नै विपेह। प्रश्न करें प्रभु नै तिहवार।।

# यतनी

१०८ हे भगवत । कितै प्रकार, कह्या सुर किल्विपिक विचार। तव जिन भाखे अवदात, सुर किल्विपिक त्रिविव आख्यात।। १०६ जे जिम छै तिम हिव कहियै, त्रिण पत्योपम स्थितिका लहियै। वली तीन सागर स्थितिकरा, तेरै सागर स्थितिका हेरा।।

# दूहा

११० तीन पल्योपम स्थितियुता, सुर किल्विपिक जेह। किहा वसै भगवत जी ? हिव जिन उत्तर देह। १११ अमर ज्योतिपि ऊपरै, सौधर्म ईशाण हेठ। तीन पल्योपम स्थितियुता, इहा वसै ते नेठ।।

११२. त्रिण सागरोपम स्थितिका, जे किल्विपिका देव। किहा वसै भगवत जी रिप्त कहै सुण शिष्य। भेव।। ११३ सौधर्म ईशाण ऊपरै, तृतीय तुर्य कल्प हेठ।

त्रिण सागरोपम स्थितिका, इहा वसै ते नेठ।।

११४ तेर सागर नी स्थितिका, सुर किल्विपिका देव। किहा वसै छै हे प्रभु । जिन भाखे स्वयमेव।। ११५ ब्रह्मलोक कल्प ऊपरै, लतक कल्प ने हेठ। तेर सागर नी स्थितियुता, इहा वसै ते नेठ।।

#### यतनो

११६ सुर कित्विपिका भगवान, कुण कर्म हेतु करि जान। सुर कित्विपिकाजपणेह, अवतार हुवै तसु जेह?

११७ जिन भाखै ए प्रत्यक्ष जेह, प्रत्यनीक आचार्य ना नेह। उपाध्याय तणा प्रत्यनीक, कुल ना प्रत्यनीक अलीक।। ११८ गण ना प्रत्यनीक पिछाण, सघ ना प्रत्यनीक अजाण।

आचार्य उपाध्याय ना पेख, अयंग ना करणहार विशेख।।

११६ अवर्णवाद ना वोलणहार, वले अकीर्ति ना करणहार। अयश अवर्ण अकीर्ति केरा, त्रिहु पद ना अर्थ हिव हेरा।।

#### सोरठा

१२० सहु दिशिगामी हीज, यश किंदये छै तेहने। तास निसेध थकोज, अयशकरा किंदये तसु॥ १०५ एतमट्ठं नो सद्दह नो पत्तियइ नो रोएइ, एतमट्ठं असद्दमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे

१०६. दोच्च पि मम अतियाओ आयाए अवन्तरमङ, अवक्कमित्ता वहूहि असन्माबुन्मावणाहि

१०७. त चेव जाव देव (स॰ पा॰) किव्विमियत्ताए जववन्ने । (श॰ ६।२३५)

१०८. कतिविहा णं भते । देविकिन्विसिया पण्णत्ता ? गोयमा । तिविहा देविकिन्विसिया पण्णत्ता

१०६. त जहा—तिपिलओवमिट्टिइया, तिसागरोवमिट्टिइया, तेरससागरोवमिट्टिइया। (श० ६।२३६)

११० कींह ण भते <sup>।</sup> तिपिलओवमिटुइया देविकिव्यिसया परिवसित <sup>?</sup>

१११ गोयमा । उप्पि जोइसियाण, हिट्ठि सोहम्मीमाणेसु कप्पेसु, एत्य ण तिपिलओवमिट्ठिइया देविकिव्विसिया परिवसति । (श० ६।२३७)

११२. किंह ण मते ! तिसागरोवमिट्टइया देविकिन्त्रिसया परिवसति ?

११३ गोयमा । जिंप्प सोहम्मीसाणाण कप्पाण, हिर्डि सणकुमार-माहिदेसु कप्पेमु एत्य ण तिसागरोवम-ड्रिइया देविकविनिया परिवसति । (२० ६।२३८)

११४. किं ण भते । तेरससागरोवमिं इया देविकि विव-सिया परिवसित ?

११५ गोयमा । उप्पि वमलोगस्य कप्पस्म, हिद्धि लतए कप्पे एत्य ण तेरससागरोवमद्धिइया देविकिव्विसया देवा परिवसति । (श० ६।२३६)

११६. देविकिन्तिसिया ण भते । केसु कम्मादाणेमु देव-किन्तिसियत्ताए उत्रवत्तारो भवित ? 'केसु कम्मादाणेसु' त्ति केपु कर्महेतुपु सित्स्वत्यर्थ. (वृ० प० ४८६)

११७ गोयमा । जे इमे जीवा आयरियपडिणीया, उवज्ञा-यपडिणीया, कुलपडिणीया,

११८ गणपटिणीया, सघपडिणीया, आयरिय-उवज्झायाण अयसकारा

११६ अवण्णकारा अकित्तिकारा

१२० 'अजसकारगे' त्नादौ सर्वेदिग्गामिनी प्रमिद्धिर्यंशस्त--त्प्रतिपेद्यादयशः (वृ० प० ४८६)

धा० ६, उ० ३३, डाल २१४ २६७

१२१. अवर्ण अप्रसिद्धि मात्र, तसु कारक अवर्णकरा। दिशगामी विमात्र, अप्रसिद्धि अकीर्ति ह्वै ॥ १२२. \*बहु असत्य अर्थ नों माण,

करिवै करि पहिछाण। प्रगट मिथ्यात्व ना उदय थकी अवधार,

अभिनिवेश कदाग्रह करिने तिवार ॥

१२३. आतम फून पर उभय प्रतेह, विरुद्धपणु करवू अधिकेह। दुर्लभ वोधिपणु कहिवाय, दग्ध वीज जिम करतो ताय।।

१२४. वहु वर्ष चारित्र पर्याय, पालै पाली नै ते ताय। ते स्थानक नै अणआलोय, अणपडिकमियै पिण ते जोय।।

१२५ काल ने समय करीने काल, या त्रिहुं माहिलो एक निहाल। ते अन्यतर किल्विप सुर माय, किल्विप सुरपणे उपजै जाय।।

१२६. ते जिम छै तिम कहियै तेह, तीन पल्योपम स्थितिक विपेह। अथवा त्रिण सागर स्थितिकेह, तथा तेर सागर स्थितिक विषेह ।।

१२७. सुर किल्विपिक हे भगवान ! ते सुरलोक थकी पहिछान । आयु क्षय भव क्षय करि आम, स्थिति क्षय करिनै ते सुर ताम। १२८. अतर रहित चवी किहा जाय, किण स्थानक ते उपज ताय?

जिन कहै जाव चत्तारि पच, नारक तिरि मनु सुर भव सच।।

१२६. संसार भ्रमण करीने जेह, तठा पछै सीभै वुभेह। जावत अत करै अवलोय, के किल्विपिका एहवा होय।। १३०. केयक आदि-रहित ते घार, अंत रहित पिण तेह विचार।

दीर्घ अद्धा चिहु गति ससार-अटवी माहे भमै निराघार ।। १३१. हे प्रभुजी । जमाली अणगार, अरस आहार नो कारक धार।

विरस आहार तणो करणहार, अताहारि पत-आहारि विचार ।। १३२. लुक्ख आहारी तुच्छ आहारी जेह, अरस आहार करिने जीवेह । यावृत तुच्छ आहार करि जाण, जीविवा नु तसु शील पिछाण ।।

१३३. उपशांत अंतर्वृत्ति करेह, जीविवा नु तसु शील सुलेह। इमहिज प्रशांत-वृत्ति हुत, णवर वाहिर वृत्ति प्रशत।।

१३४. विवित्तजीवी ते स्त्रियादि रहीत, सेज्या सथारा नों भोक्ता सगीत। जिन कहै हता गोयम ! घार, अरस-आहारि जमाली अणगार॥

१३५ जाव विवक्तजीवी कहिवाय, विल पूछै गोयम ऋपिराय। जो प्रभुजी ! जमाली अणगार, अरस आहारी ते अवधार ॥ १२१. अवर्णस्त्वप्रसिद्धिमात्रम्, अकोत्तिः पुनरेकदिग्ग-मिन्यप्रसिद्धिरिति (वृ० प० ४८६,४६०)

१२२. बहुिं असवभावुवभावणाहि मिच्छत्ताभिनिवेमेहि य

१२३. अप्पाण पर च तदुभय च वुग्गाहेमाणा वुष्पाएमाणा

१२४. वहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणति, पाउणिता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिनकता

१२५ कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देविकिव्विसिएसु देविकिव्विसयत्ताए उववत्तारो भवति

१२६ त जहा-तिपलिओवमद्गितिएसु वा, तिसागरोवमद्गि-तिएसु वा तेरससागरोवमद्वितिएसु वा।

(श० ६।२४०)

१२७ देविकि व्विसिया ण भते । ताओ देवलोगाओ आउ-क्यएण, भवक्खएण, ठितिक्खएण

१२८. अणतर चय चइत्ता किंह गच्छित ? किंह उवव-ज्जति ? गोयमा । जाव चत्तारि पच नेरइय-तिरिक्खजो-णिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइ

१२६. ससार अणुपरियद्वित्ता तओ पच्छा सिज्झति बुज्झति जाव (स॰ पा॰) अत करेंति

१३० अत्येगतिया अणादीयं अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससार-कतार अणुपरियट्टति । (श० ६।२४१)

१३१ जमाली ण भते । अगगारे अरसाहारे विरसाहारे अतग्हारे पताहारे

१३२ लूहाहारे तुच्छाहारे अरमजीवी जाव (स०पा०) तुच्छजीवी

१३३ उवसतजीवी पसतजीवी 'उवसतजीवि' त्ति उपशान्तोऽन्तर्वृत्त्या जीवतीत्येव-शील उपशान्तजीवी एव प्रशान्तजीवी नवर प्रशान्ती वहिर्वृत्त्या (वृ० प० ४६०)

१३४. विवित्तजीवी ? हंता गोयमा! जमाली ण अणगारे अरसाहारे विरसाहारे 'विवित्तजीवि' त्ति इह विविक्त स्त्र्यादिसंसक्तासना-

(वृ० प० ४६०) १३५ जाव विवित्तजीवी। (श० ६।२४२) जित ण भते ! जमाली अणगारे अरसाहारे विरसा-हारे

दिवर्जनत इति ।

\*लय: मेरी खिण गई, लाखीणी रे मेरी खिण

- १३६ जाव विविक्तजीवी सुविचार, तो किण कारण जमाली अणगार। काल नै समय करीने काल, लतक कल्प विषे ते न्हाल।।
- १३७ सागर तेर तणी स्थितिकेह, सुर किल्विपिका नेज विपेह। देवपणे ते ऊपनो जाय ? जिन कहै गोयम! सुण चित ल्याय।।
- १३८. जमाली अणगार अलीक, आचार्य नु ते प्रत्यनीक । उपाध्याय नुं विल ते जाण, प्रत्यनीक निंदक पहिछाण ।।
- १३६ आचार्य नै वलि उपाध्याय, तेहनु अयशकारक अधिकाय। अवर्णकारक जावत जोय, दग्ध वीज करतो अवलोय।।
- १४०. वहु वर्ष चारित्र पर्याय, पाली अर्द्धमास नी ताय। सलेखणा करिने सवेद, तीस भक्त अणसण कर छेद।।
- १४१ तेह स्थानक ने अणआलोय, अणपिडकिमिये छते फुन जोय। काल ने समय काल कर जन्न, लतक कल्पे जाव उत्पन्न।।
- १४२ हे प्रभुजी । जमाली देव, ते सुरलोक थकी स्वयमेव। आउखो क्षय करिने ताम, जावत उपजस्यै किण ठाम?
- १४३ तव जिन कहै चत्तारि पच, तिरि मनु सुर भव ग्रहण सुसच। ससार भमण करीने तेह, तिवार पछै सीभस्यै जेह।।
- १४४. जावत करस्यै दुख नो अत, सेव भते । सेव भत। तहित्त भगवत । तहित्त भगवत । आप तणा वच सत्य उदत ॥
- १४५. केइ जमाली ना भव पनर कहत, केई कहै भव वीसज हुत। केयक सप्तवीस कहै ताय, निश्चै जाणै श्री जिनराय।।

- १४६ अथ श्री महावीर भगवत, जे सर्वज्ञपणा थकी। सगलो ए वृत्तत, जमाली नो जाणता।।
- १४७. किम एहने अवधार, प्रव्रज्या दीधी प्रभु । इह विघ प्रश्न प्रकार, पूछ्ये तसु उत्तर हिवै।।
- १४८ अवश्यभावी होणहार, महानुभाव पिण मेटवा। समर्थ नही लिगार, वा इहा गुण देखी प्रभु॥
- १४६ अमूढ-लक्ष भगवान, निष्प्रयोजन क्रिया विषे। प्रवर्त्ते नही सुजान, वृत्तिकार इम आखियो।।
- १५० वली जमाली लार, थया पच सय चरणघर।
  फुन जिनेद्र जगतार, भव घटता देखें सही।।
- १५१ इत्यादिक अवधार, वहु गुण जाणीने प्रभु। जमाली ने सार, दीक्षा दीघी दीपती।।
- १५२ \*एह दोयसौ ने चवदमी ढाल, नवसौ तेतीसमो अक निहाल। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय प्रसाद, 'जय-जश' सपित सुखअहलाद।।

नवमणते त्रयस्त्रिशोद्देशकार्थः ॥६।३३॥

- १३६. जाव विवित्तजीवी कम्हा णंभते । जमाली अण-गारे कालमासे काल किच्चा लंतए कप्पे
- १३७. तेरससागरोवमद्वितिएसु देविकिव्विसिएसु देवेसु देव-किव्विसियत्ताए उववन्ने ?
- १३८ गोयमा ! जमाली ण अणगारे आयिरयपिंडणीए, उवज्झायपिंडणीए
- १३६. आयरियउवज्झायाण अयसकारए अवण्णकारए जाव (सं० पा०) वुष्पाएमाणे
- १४० वहूइ वासाइ सामण्णपिरयाग पाउणित्ता, अद्धमासि-याए सलेहणाए तीसं भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता
- १४१ तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे जाव (स॰ पा॰) उववन्ने । (श॰ ६।२४३)
- १४२. जमाली ण मते । देवे ताओ देवलोगाओ आउक्ख-एण जाव (स॰ पा॰) कहि उवविज्जिहिति ?
- १४३. गोयमा । चत्तारि पच तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइ ससार अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झिहिति
- १४४ जाव (स॰ पा॰) अत काहिति । (श॰ ६।२४४) सेव भते । सेव भते । ति ।

(য়৹ ६।२४५)

- १४६. अय भगवता श्रीमन्महावीरेण सर्वज्ञत्वादमु तद्द्यति-कर जानताऽपि (वृ० प० ४६०)
- १४७. किमिति प्रज्ञाजितोऽसौ ? इति, उच्यते । (वृ० प० ४६०)
- १४८ अवश्यम्भाविभावाना महानुभावैरिप प्रायो लङ्घिय-तुमशक्यत्वाद् इत्यमेव वा गुणविशेषदर्शनाद् । (वृ० प० ४६०)
- १४६ अमूढलक्षा हि भगवन्तोऽर्हन्तो न निष्प्रयोजन क्रियासु प्रवर्त्तन्त इति (वृ० प० ४६०)

<sup>\*</sup>लय : खिण गई रे, लाखीणी रे मेरी खिण्

# दूहा

- १. तेतीसम उद्देश में, आख्या गुरु प्रत्यनीक। नाश तास निज गुण तणु, दाख्यो जिन तहतीक ।।
- २ चउतीसम उद्देश फुन, पुरिस नाश करि पेख । तेह थकी अन्य जीव ना, कहियै नाश विशेख ॥
- ३ तिण काले नै तिण समय, नगर राजगृह नाम। यावत गोतम वीर प्रति, प्रश्न करें छै ताम।।

# \*प्रश्न गोयम करै वीर प्रभु नै ।। (ध्रुपद)

- ४. पुरुप प्रभुजी । पुरुप प्रतै जे, हणते छते इम भणियै रे लोय। पुरुप प्रते स्यू तेह हणे छै, कै पुरुप थकी अन्य हणिये रे लोय?
- ५ जिन कहै पुरुप प्रतै पिण मारै, नोपुरुप प्रतै पिण हणियै। किण अर्थे प्रभु । हणे विहू ने, हिव जिन उत्तर भणिये।। [बीर प्रभु इम उत्तर देवै]
- ६ इम निश्चे हू एक पुरुष प्रति हणू, एहवी मन आणी। एक पुरुष प्रति हणती थको ते, हणे अनेकज प्राणी।।

# सोरठा

- गडोलक ७. जीव अनेकज ख्यात, जुं कृमि प्रमुख । तनु आश्रित घात, तिण अर्थे विहु ने हणे।। अथवा तेहनो रूद्र¹, पडतो वहु जीवा
  - हणे तिको नर क्षुद्र, इम वहु जीवा नै हणै।।
  - तास, सकोचवै प्रसारवे। वहु जीव विणास, तिण कारण वहु ने हणे।।
- १० <sup>१</sup>पुरुप प्रभुजी अश्व प्रतै जे, हणतो थको इस भणियै।
- अर्रेन प्रते स्यू तेह हणें छै, कै अर्रेन थकी अन्य हणियै ? १११ जिन कहै अर्रेन प्रते पिण मारे, नोअर्रेन प्रते पिण हणियै। किण अर्थे प्रभु । हणै विहू नै ? हिव जिन उत्तर भणियै।।
- १२ इम निश्चै हू एक अश्व प्रति हणू एहवी मन आणी। एक अश्व प्रति हणतो थको ते, हणे अनेकज प्राणी।।
- १३ तिण अर्थे करिने इम भाख्यो, अश्व नोअश्व हणतो। छण्णइ पाठ किहा क्षण घातु, हिंसा अर्थे वर्त्ततो।।
- १४. इम गज सीह नै वाघ हणे ते, जाव चिल्ललग जाणी। अटवी जीव विशेष कह्यु ए, पूर्व रीत पिछाणी।।

- १. अनन्तरोद्देशके गुरुप्रत्यनीयकतया स्वगुणव्याघात (वृ० प० ४६०)
- २. चतुस्त्रियत्तमे तु पुरुपव्याघातेन तदन्यजीवव्याघात (वृ० प० ४६०) उच्यते
- ३ तेण कालेण तेण ममएणं रायगिहे जाव एव वयामी-
- ४. पुरिसे णं भते ! पुरिस हणमाणे कि पुरिस हणइ? नोपुरिसे हणइ? 'नोपुरिस हणड' ति पुरुपन्यतिरिक्त जीवान्तर हन्ति (वृ० प० ४६०)
- ५. गोयमा <sup>।</sup> पुरिस पि हणइ, नोपुरिमे वि हणइ। (ग० ६।२४६) से केणट्ठेण भते । एव वुच्चइ--पुरिस पि हणइ,

नोपुरिसे वि हणइ ?

- ६ गोयमा । तस्स ण एव भवइ—एव सलु अहं एग पुरिस हणामि से ण एग पुरिस हणमाणे 'अणेगे जीवें हणइ। (श० ६।२४७)
- ७,८. 'अणेगे जीवे हणइ' त्ति 'अनेकान् जीवान् यूकाश-तपदिकाकृमिगण्डोलकादीम् तदाश्रितान् तच्छरीरा-वष्टव्धास्तद्रुधिरप्लावितादीश्च हन्ति

(वृ० प० ४६०)

- ६. अथवा स्वकायस्याकुञ्चनप्रसरणादिनेति (वृ० प० ४६१)
- १० पुरिसे ण भते । आस हणमाणे कि आस हणइ? नोआसे हणइ?
- ११. गोयमा । आस पि हणइ नोआसे वि हणइ। से केणट्ठेण ?
- १२,१३ अड्डो तहेव। 'छणइ' त्ति क्वचित्पाठस्तत्रापि स एवार्य , क्षणघातो-हिंसार्थत्वात् (वृ० प० ४६१)
- १४. एव हरिय, सीह वग्घ जाव चिल्ललग । (হা০ ৪।২४८)

<sup>\*</sup>लय: देखो रे भोला चेते ना

१. रुधिर

- १५. पुरुप प्रभू । जे एकज त्रस प्रति, हणतो थको आख्यातो। स्यू एकज त्रस तेह हणे छै, कै तेहथी अनेरा त्रस घातो?
- १६ जिन कहै इक त्रस पिण हणे छै, तेहथी अनेरा पिण हणियै। किण अर्थे प्रभु । हणे विहू नै, हिन जिन उत्तर भणियै।।
- १७ इम निश्चै हू एकज त्रस प्रति, हणू एहवी मन धारै। ते जीव इक जे त्रस हणतो. जीव अनेक सहारे।।
- १८ तिण अर्थे कह्यु इक त्रस हणता, जीव अनेक हणीजे। ए गज प्रमुख नां सर्व अलावा, एक सरीखा कहीजें।।।
- १९ पुरुप प्रभूजी । ऋषि साधु प्रति, हणते छते इम भणियै। स्यु ऋषि मुनि प्रति तेह हणे छै, कै ऋषि थी अनेरा हणियै।।
- २० जिन कहै ऋषि प्रत तेह हणे छै, ऋषि थी अन्य पिण हणियै। किण अर्थे प्रभु हणे विहू ने, हिव जिन उत्तर भणियै।।
- २१ इम निश्चै हू एक साधु प्रति, हणू एहवी मन धारै। एक साधु प्रति हणतो छतो ते, जीव अनत सहारै॥

- २२ ते ऋषि कीघा काल, घातक अनत नु हुवै। हुवै अविरती न्हाल, घातक अनत नु तिको।।
- २३ अथवा ऋषि वहु जीव, प्रतिवोधे ते अनुक्रमे। शिव सुख लहै अतीव, सिद्ध अघातक अनन्त ना।।
- २४ ते ऋषि नो वध कीघ, प्रतिवोधादि हुवै नही। तिण अर्थेज प्रसीध, ऋषि हणिवै जिय अनत वध।।
- २५ \*तिण अर्थे करने इम किहयै, ऋषि प्रति पिण हणे सोइ। साघ्र विना अन्य नो पिण घातक, एह निक्खेवो होइ।।
- २६ पुरुष प्रमु ! पुरुष प्रतै हणतो, स्यू पुरुष वैर करि फर्शें। अथवा पुरुष थकी जीव अनेरा, तास वैर आकर्षें?
- २७ श्री जिन भाखे पुरुप हण्या थी, तिश्चै थी पहिछाणी। पुरुप वध पापे करि फर्जे, ए धुर भगो जाणी।
- २८ अथवा एक पुरुष ने हणतो,डक जीव अन्य हणीजै। एक पुरुष इक नोपुरिस वव तसु, द्वितीय भग इम तीजै।।

- १४. 'पुरिसे ण भते । अण्णयरं तस् पाण हणमाणे कि अण्णयर तस पाणं हणइ, नोअण्णतरे तसे पाणे हणइ ?
- १६. गोयमा । अण्णयर पि तस पाणं हणइ, नोअण्णतरे वि तसे पाणे हणड । मे केणट्टेण भते । एव युच्चइ
- १७ गोयमा । तस्स ण एव भवइ एव खलु अहं एग अण्णयर तस पाण हणामि, से ण एग अण्णयरं तमं पाणं हणमाणे अणेगे जीवे हणइ।
- १८. से तेणट्ठेण गोयमा । त चेय । एए सब्बे वि एक्कगमा ।" (अ० सु० भाग २ पृ ४६३ टि ०४) 'एते सब्बे एक्कगमा' 'एते' हस्त्यादय, 'एकगमा.' सदृशाभिलापाः (वृ० प० ४८१)
- १६. पुरिसेण भते । इमि हणमाणे कि इसि हणइ? नोइमि हणइ?
- २०. गोयमा । इसि पि हणइ, नोइसि पि हणइ। (ग्र० ६।२४६) से केणहुण भते। एव वुच्चइ—इमि पि हणइ नोइसि पि हणइ?
- २१. गोयमा । तस्स ण एवं भवइ—एव यनु अह एग इसि हणामि, से ण एग इसि हणमाणे 'अणते जीवे' हणइ।
- २२. यतस्तद्यातेऽनन्ताना पातो भवति, मृतस्य तस्य विरतेरभावेनानन्तजीवघातकत्वभावात्

(वृ० प० ४६१)

- २३. अथवा ऋषिर्जीवन् वहून् प्राणिन प्रतिवोधयिति, ते च प्रतिबुद्धा क्रमेण मोक्षमासादयन्ति, मुक्ताध्वानन्ता-नामपि ससारिणामधातका भवन्ति (वृ० प० ४६१)
- २४. तद्वधे चैतत्सर्वं न भवत्यतस्तद्वधेऽनन्तजीववधो भव-तीति (वृ० प० ४६१)
- २५ से तेणट्ठेण गोयमा । एव वुच्चइ—इसि पि हणइ, नोइसि पि हणइ। (श० ६।२५०)
- २६ पुरिसे ण भते । पुरिस हणमाणे कि पुरिसवेरेण पुट्ठे ?'
- २७ गोवमा ! नियम—ताव पुरिसवेरेण पुट्टे पुरुपस्य हतत्वान्तियमात्पुरुपवद्यपापेन स्पृष्ट इत्येकी भङ्ग (वृ० प० ४६१)
- २८ अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेण य पुट्टे तत्र च यदि प्राण्यन्तरमि हत तदा पुरुपवैरेण नोपुरुपवैरेण चेति द्वितीय । (वृ० प० ४६१)

<sup>\*</sup>लय: देखो रे भोला चेतं ना

१. पन्द्रह से अठारह गाया के सामने जो पाठ उद्धृत किया गया है, वह कई आदर्शों मे नही है। अगसुत्ताणि मे उसे पाठान्तर के रूप मे स्वीकृत किया है। यहा पाठान्तर का पाठ उद्धृत किया गया है।

- े २६ अयता एक पुरुप नै हणतो, वहु जीव अन्य हणीजै। एक पुरुप वहु नोपुरुप वय तमु, तृतीय भग इम लीजै।।
- ३०. एम तुरगम यावत इमहिज, चिल्ललग वन जीवो। त्रिण-त्रिण भागा सहु ना करिवा, जिन वचनामृत पीवो।। ३१. पुरुप प्रभु । ऋषि प्रते हणतो, स्यू साधु वैर करि फर्जे।
- अथवा ऋषि थकी जीव अनेरा, तास वैर करि दर्गे ? ३२. श्री जिन भाखें साधु हण्या थी, निश्चे प्रथमज जोइ। इक ऋषि ने ऋषि विन अन्य वहु ने वैर फश्यों होइ।।

३३. ऋषि पक्षे सुविचार, इक ऋषि ऋषि विन अन्य वहु। घार, एकहीज होवै भग ३४ अनत जीव ऋपिपाल, ते मुनि ने हणिया थका। तेह मुनी करि काल, सुर ह्वं घाति अनत नो।। जीव नों जाण, वेरे फर्स्यो इह विधे। ह्वं सत सयाण, ते आश्री कह्युं घर्मसी।। ३६. वृत्ति विषे इम वाय, जो जे मुनि मर सिद्ध हुस्यै। ऋषि वघवे करि ताय, ऋषि नो वैरज प्रथम भंग।। निरुपक्रम ३७. अथ फुन चरम गरीर, आयुष्क जे। शिवगामी गुणहीर, तास हनन नहिं सभवे। ३८ घर भग ते किम होय, तिण सु अचरम-तनु मुनि। जोय, तृतीय भग ए सभवै।। अपेक्षा अवलोय, यद्यपि चरमशरीरिक । थकी आयू जे मुनि तणो।। सोय, छ निरुपक्रमज अर्थ, प्रवत्त्यी तिण कारणै। नसु वघ वध भावेज तदर्थ, धुर भग सभव सत्य इम।। ४१. फुन जे ऋपि नु जोय, सोपक्रम आयुप पुरुप कृत वघ होय, ते ऋषि आश्री सूत्र ए।। नो सहार, मुख्यवृत्ति स्यू पुरुपकृत। अववार, वृत्तिकार इह विघ कह्यु।। ४३. \*नवम जतक चउतीसम देशज, वेसी पनरमी ढालो। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय, प्रसादे, 'जय-जश' मगलमालो ।।

- २६. अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेहि य

  यदि तु वहव. प्राणिनो हतास्तत्र तदा पुरुपवैरेण
  नोपुरुपवैरेष्चेति तृतीयः (वृ० प० ४६१)
- ३०. एव आस जाव चिल्ललग। (श० ६/२५१) एवं सर्वेत्र त्रयम् (वृ० प० ४६१)
- ३१. पुरिसे णं भते । इसि हणमाणे कि इमिवेरेण पुट्ठे ? नोइसिवेरेण पुट्ठे ?
- ३२. गोयमा । नियम इसिवेरेण य नोइसिवेरेहि य पुट्ठे। (श० ६/२५२)
- ३३ ऋषिपक्षे तु ऋषिवैरेण नोऋषिवैरेणचेत्येवमेक एव (वृ० प० ४६१)
- ३४ ननु यो मृतो मोक्ष यास्यत्यविरतो न भविष्यति तस्यर्पेवंधे ऋषिवैरमेव भवत्यतः प्रथमविकल्पसम्भव. (वृ० प० ४६१)
- ३७,३८. अथ चरमशरीरस्य निरुपक्रमायुष्कत्वान्न हनन-सम्भवस्ततोऽचरमणरीरापेक्षया यथोक्तमञ्जकसम्भवः (वृ० प० ४६१)
- ३६. यतो यद्यपि चरमशरीरो निरुपक्रमायुष्क.

(वृ० प० ४६१)

- ४०. तथाऽपि तद्वधाय प्रवृत्तस्य यमुनराजस्येव वैरमस्त्ये-वेति प्रथमभङ्गकसम्भव इति सत्य (वृ० प० ४९१)
- ४१ किन्तु यस्य ऋषे सोपक्रमायुष्कत्वात् पुरुपकृतो वधो भवति तमाश्रित्येद सूत्र प्रवृत्त (वृ० प० ४६१)
- ४२ तस्यैव हननस्य मुख्यवृत्त्या पुरुपकृतत्वादिति (वृ० प० ४६१)

<sup>\*</sup>लय: देखो रे मोला चेते नां

१. पूर्वे वध श्राख्यात, उश्वासादि वियोग ते । तिण सूं हिव अवदात, उस्वासादिक नो कहू ।!

\*प्रभुवच प्यारा जी,

हे देव जिनेन्द्र दयाल विश्व उजारा जी ।। (ध्रुपदं)

२. पृथ्वीकाय प्रभु ! पृथ्वीकाय प्रति, आणपाण ते लेवै। उस्वास ने नि स्वास लेवै छै ? जिन कहै हता वेवै।।

### सोरठा

- ३ इहा व्याख्या पूज्य कथित, जिण प्रकार कर वणस्सई। अन्य ऊपर अन्य स्थित, तेज खाचलै तेहनो।। अन्योऽन्य सवद्ध ४. पृथ्वी प्रमुख एम, तेम, करै उस्सासादिक तिको।। प्रतेज प्र तिहा इक पृथ्वी काय, स्व सबद्ध अन्य पृथ्वी प्रति। करै उस्सासज ताय, तिण ऊपर दृष्टात ए॥ तेह कपूर स्वभाव प्रति। ६. पुरुष उदर घनसार, करै उम्सास तिवार, इम अपकायिक प्रमुख पिण।। ७. \*पृथ्वीकाय प्रभु आउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास नैं निःस्वास लेवे छै<sup>?</sup> जिन कहै हता वेवै।।
- द. पृथ्वीकाय प्रभु । तेजकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि'स्वास लेवै छै, जिन कहै हता वेवै ॥ १. पृथ्वीकाय प्रभु । वाजकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि.स्वास लेवै छै, जिन कहै हता वेवै ॥ १०. पृथ्वीकाय प्रभु ! वनस्पति प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि:स्वास लेवै छै ? जिन कहै हता वेवै ॥ ११, आजकाय प्रभु । पृथ्वीकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि स्वास लेवै छै ? जिन कहै हता वेवै ॥
- १२ आउकाय प्रभु ! आउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि स्वास लेवै छै ? जिन कहै हता वेवै ॥ १३ आउकाय प्रभु ! तेउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि स्वास लेवै छै ? जिन कहै हता वेवै ॥ १४ आउकाय प्रभु ! वाउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि:स्वास लेवै छै ? जिन कहै हता वेवै ॥

- १ प्राग् हननमुक्त, हनन चोच्छ्वासादिवियोगोऽत उच्छ्वासादिवक्तव्यतामाह— (वृ० प० ४६१)
- २ पुढिनिक्काइए ण भते ! पुढिनिक्काय चेन आणमइ ना ? पाणमइ ना ? ऊससइ ना ? नीससइ ना ? हता गोयमा । ............................... (श० ६/२५३)
- ३ इह पूज्यव्याख्या यथा वनस्पतिरन्यस्योपर्यन्य स्थित-स्तत्तेजोग्रहण करोति । (वृ० प० ४६२)
- ४. एव पृथिवीकायिकादयोऽप्यन्योऽन्यसवद्धत्वात्तत्तद्रूप प्राणापानादि कुर्वन्तीति (वृ० प० ४६२)
- ५. तत्रैकः पृथिवीकायिकोऽन्य स्वसवद्ध पृथिवीकायिकम् अनिति—तद्रूपमुच्छ्वास करोति (वृ० प० ४६२)
- ६. यथोदरस्थितकर्प्र. पुरुषः कर्पूरस्वभावमुच्छ्वास करोति, एवमप्कायादिकानिति (वृ० प० ४६२)
- ७ पुढिविक्काइए ण भते । आजक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा ? हता गोयमा । पुढिविक्काइए ण आजक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा ।
- प्द-१०. एव तेउक्काइय, वाउक्काइय, एव वणस्सइकाइय (श० १/२४४)
- ११ आजक्काइए ण भते ! पुढविक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा हता गोयमा ! ........ (श० ६/२५४)
- १२-१५ आउक्काइए ण भते । आउक्काइय चेव आणमइ वा <sup>१</sup> एव चेव । एव तेज-वाज-वणस्सइकाइय । (श० ६।२५६)

<sup>\*</sup>लय: साचू बोलोजी

१५. आडकाय प्रभु! वनस्पति प्रति, आणपाण ते लेवे ? उस्वास ने नि स्वास लेवे छै ? जिन कहै हता वेवे ॥ १६ तेलकाय प्रभु ! पृथ्वीकाय प्रति आणपाण ते लेवे ? उस्वास ने निस्वास लेवे छै ? जिन कही होना वेवे ॥ १७ तेजकाय प्रभु । आजकाय पति, आणपाण ते लेवे ? उस्वास ने नि'स्वास लेवे छै ? जिन कहै हता वेवे ।। १८. तेंडकाउ प्रभु । तेंडकाय प्रति, आणपाण ते लेवें ? चस्वास ने नि स्वास लेवे छै<sup>?</sup> जिन कहै हता येवै।। १६ तेडकाय प्रभु ! वाडकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास नै नि.श्वास लेवें छै ? जिन कही हता वेवें ॥ २०. तेडकाय प्रभु वनस्पति प्रति, आणपाण ते लेवै? उस्वास ने नि.स्वास लेवे छैं? जिन कहे हता वेवे।। २१ वाउकाप प्रभु ! पृथ्वीकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि स्वास लेवें छै ? जिन कहै हता वेवे।। २२ वाउकाय प्रभा आउकाय प्रति, आणपाण ते नेवै ? उस्वास ने निःस्वास लेवे छै ? जिन कहै हंता वेवे।। २३. वाउकाय प्रभु ! तेउकाय प्रति, आणपाण ते लेवें ? उस्वास ने नि स्वास लेवे हैं? जिन कहै हता वेवे।। २४. वाडकाय प्रभु । वाडकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि स्वास लेवे छै ? जिन कही हता वेवे ।। २५. वाउकाय प्रभु । वनस्पति प्रति, आणपाण ते लेवे ? उस्वास ने नि स्वास लेवें छै ? जिन कहै हता वेवे ॥ २६ वनस्पति प्रभु । पृथ्वीकाय प्रति, आणपाण ते लेवे ? उस्वास ने नि स्वास लेवे छै ? जिन कहै हता वेवे ॥ २७. वनस्पति प्रभु ! आउकाय प्रति, आणपाण ते लेवै ? उस्वास ने नि स्वास लेवें छै ? जिन कहै हता वेवें।। २८. वनस्पति प्रभु । तेउकाय प्रति, आणपाण ते लेवे ? उस्वास ने नि.स्वास लेवे छै ? जिन कहे हता वेवे।। २६. वनस्पति प्रभु ! वाउकाय प्रति, आणपाण ते लेवे ? उस्वास ने नि.स्वास लेवे छै<sup>?</sup> जिन कही हता वेवे।। ३०. वनस्पति प्रभु ! वनस्पति नो, आणपाण ते लेवै ?

१६-३०. तेजक्काइए ण भते ! पृष्टविषकाद्य आणम्य वा ? एवं जाय वणस्मइकाइए ण भने ! यणस्मड-काइयं चेय आणम्ह वा ? तहेव । (श० ६।२५७)

# सोरठा

उस्सास ने नि.स्वास लेवे छै ? जिन कहै हता वेवे ॥

- ३१ कह्या सूत्र पणवीस, क्रिया सूत्र पिण हिव कहूं। ते पणवीस जगीस, चित्त लगाई साभलो।।
- ३२ \*पृथ्वीकाय प्रभु । पृथ्वीकाय प्रति, भ्यतर ते आणपाण । वाह्य उस्वास-निस्सास लेवता, किती क्रिया तसु जाण?
- ३३ श्री जिन भाखें कदाचि क्रिया त्रिण, कटा चिउ क्रियावत । कदाचित पंच क्रियावंत ह्वें, हिव नमु न्याय कथत ॥

३१. पञ्चिवशति. सूत्राण्येतानीति । क्रियासूत्राण्यपि पञ्च-विशति. । (वृ० प० ४६२)

३२ पुढविक्काडए ण भते ! पुढविक्काइय चेव आणममाणे वा, पाणममाणे वा क्यसमाणे वा नीससमाणे वा कतिकिरिए ?

३३ गोयमा । सिय तिकिरिए, सिय चर्जकिरिए, सिय पचिकिरिए। (श॰ ६/२४८)

<sup>\*</sup>लय: साचू वोलोजी

२०४ भगवती-जोह

- ३४. पृथ्वीकाय जिवार, उस्वास पृथ्वी नो लियै। न करं पीड तिवार, तसु काइयादिक त्रिण क्रिया॥
- ३५ यदा पीड उपजाय, तदा क्रिया तसु च्यार ह्वै। जीव घात जो थाय, पच क्रिया तेहने हुवै॥
- ३६ \*पृथ्वी प्रभु । अपकाय प्रतै जे, आणपाण लेवत। एव चेव इमज यावत ही, वनस्पति प्रति हुत।।
- ३७ इम अप पिण मही अप तेउ प्रति, वाउ वनस्पति नो जाणी। आणपाणादि ले तो तसु किरिया, त्रिण चउ पच पिछाणी।।
- ३८ तेउकाय इम पृथ्वी अप तेउ प्रति, वाउ वनस्पति नो जोय। आणपाणादि ले तो तसु क्रिया, त्रिण चउ पचज होय।।
- ३६ वाउकाय इम पृथ्वी अप तेउ प्रति, वाउ वनस्पति नु घार। आणपाणादि ले तो तसु किरिया, त्रिण चउ पच विचार।।
- ४० वनस्पति इम पृथ्वी अप तेउ प्रति, वाउ वनस्पति नो शरीर। आणपाणादि ले तो तसु किरिया, त्रिण चउ पच समीर॥

### सोरठा

४१ कह्या सूत्र पणवीस, अन्योन्ये उश्वास ना। वली कह्या सुजगीस, पचवीस क्रिया तणा।।

वाo — अथ इहा कह्यो — पृथ्वीकाय पृथ्वीकाय नो उथवास लेवै यावत वनस्पति वनस्पति नो उथवास लेवै अने तेहथी तेहनै तीन, च्मार, पाच किया लागै। इहा पाच थावर ना मूकेलगा वायु रूप छै, तेहनो उथवासादिक लेवै इम सम्भव छै। भगवती शतक २।३ में कह्यो — चउवीस दडक ना जीव उथवास निश्वास लेवै द्रव्य थकी तो अनतप्रदेशिक खद्य नो, क्षेत्र थकी असख्यात प्रदेशावगाढ नो, काल थकी अन्यतर्थितिया नो, भाव थकी वर्णमतादिक नो अने तेहथी आगला पाठ नी टीका में कह्यो — उथवास ना पुद्गल वायु रूप छै अने वायु पिण ते अचित्त छै।

- ४२ ''तेहथी इहा प्रतिपत्ति, पृथ्वीकाय पृथ्वी उदक। तेउ वाउ वनस्पत्ति, उदवासादिकपणे लियै॥
- ४३ इमज वनस्पति जाव, पृथ्वी अप तेउ वाउ तणो। वनस्पति तणो सुभाव, उश्वासादि लिये सदा।।
- ४४ ए पच थावर ना जाण, मूकेलगा पुद्गल सह । वायु रूप पिछाण, तेहनो उश्वासादि लहै ॥
- ४५ हिव आगका विल थाय, मूकेलगा पुद्गल तणो। उश्वासादि लिराय, तो क्रिया तीन चिहु पच किम।।

- ३४ यदा पृथिवीकायिकादिः पृथिवीकायिकादिरूपमुच्छ्वासं कुर्वन्निप न तस्य पीडामुत्पादयति स्वभावविशेपात्त-दाऽसौ कायिक्यादित्रिक्तिय स्यात् । (वृ० प० ४९२)
- ३५ यदा तु तस्य पीडामुत्पादयित तदा पारितापनिकी-क्रियाभावाच्चतुष्क्रिय प्राणातिपातसद्भावे तु पञ्च-क्रिय इति । (वृ० प० ४६२)
- ३६. पुढविक्काइए ण भते ! आउक्काइय आणममाणे वा ?

एव चेव<sup>ा</sup> एव जाव वणस्सइकाइय।

- ३७ एव आउक्काएण वि सन्वे भाणियन्वा ।
- २८,३६ एव तेउनकाइएण वि, एव वाउनकाइएण वि जाव— (श० ६/२५६)
- ४० वणस्सइकाइए ण भते । वणस्सइकाइय चेव आणम-माणे वा—पुच्छा ? गोयमा । सिय तिकिरिए, सिय चजिकरिए, सिय पचिकरिए । (श० ६/२६०)

<sup>\*</sup>लय: साचू वोलो जी १. भगवई १७/१५

- ४६. तेहनो उत्तर एम, शतक भगवती सतरमें । प्रथम उदेशे तेम, कहियो छै ते सांभलो।।
- ४७. मन वचन रा जोग, निपजावता क्रिया किती? त्रिहुं चिहुं पच सुयोग, निमल चित्त आलोचिये।।
- ४८. मन वचन रा जाण, पुद्गल चउफर्शी कह्या। भगवती वारम' माण, पंचमुद्देशे पाठ ए॥
- ४६. चउफर्शी थी जाण, जीव-घात किम संभवे ? जीव-घात विण ताण, पच क्रिया किम ह्वे तदा।।
- ५०. मन अरु वचन प्रयोग, निपजावे तिण अवसरे । वर्त्ते अशुभज जोग, तिणसु पच क्रिया कही ।।
- परा जिथुने जान, तिजसू पर्य क्रिया कहा ।। ५१. तिमहिज श्वासोश्वास, वायु नो लेता थका। अशुभ योग सुविमास, तिणसू तसु क्रिया कही ॥" [ज० स०]

वा॰—इहाँ कह्यो पाच थावर ना मूकेलगा वायु रूप छै, ते उपवासपणें लेता अथवा लिया पछै अधुभ कार्य मे प्रवर्तो । तेहथी क्रिया लागे अने क्रिया लागवा रा अन्य पिण कारण घणा छै ते शास्त्र थी जाणवा ।

- ५२. कह्यो क्रिया अधिकार, हिवै तेहिज क्रिया तणो। कहियै छै विस्तार, चित्त लगाई साभलो॥
- ५३. <sup>4</sup>वाडकाय प्रभु । वृक्ष तणा जे, मूल प्रति हलावतो। अथवा मूल प्रते पाडतो, तेह किती क्रियावतो ? ५४. श्री जिन भाखे कदाचि क्रिया त्रिण,
  - कदा च्यार पच किरिया। न्याय तास पूर्ववत कहियै, पवर बुद्धे उच्चरिया।।

# सोरठा

- ५५ नदी भिंतादिक मांय, तरू-मूल होवै तदा।
  पृथ्वी में न टिकाय, कंपावै पाड़ै पवन।।
- ५६. पाडतो तरु मूल, तीन क्रिया किम तेहने। परितापादिक स्थूल, ते वायू ने संभवे॥
- ५७. उत्तर किह्यै जास, सूक गई जड तरु तणी।
  मूल अचेतन तास, तेह अपेक्षा इम वृत्ती॥
- ५८. \*एव तरु नो कद चालवतो, इम जाव वीज चालत। त्रिण चड पच क्रिया पूर्ववत, सेव भते । सेव भंत।।
- प्र नवम शतक चउतीसमुदेशक, वे सौ सोलमी ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय प्रसादे, 'जय-जश' हरप विशाल।।

नवमशते चतुस्त्रिशोद्देशकार्थः ।।६।३४।।

५२. त्रियाधिकारादेवेदमाह— (वृ० प० ४६२)

- ५३ वाउवकाइए ण भते ! रुवयस्स मूलं 'पचालेमाणे वा' पवाटेमाणे वा कतिकिरिए ?
- ५४ गोयमा । सिय तिकिरिए, मिय चउकिरिए, सिय पंचिकिरिए।

५५,५६ इह च वायुना वृक्षमूलस्य प्रचलन प्रपातनं वा तदा सभवति यथा नदीभित्त्यादिपु पृथिव्या अनावृत तत्स्यादिति । अथ कथ प्रपातेन त्रिकियत्व परितापादे. सम्भवात् ?

(वृ० प० ४६२)

५७. उच्यते, अचेतनमूलापेक्षयेति । (वृ० प० ४६२)

५८ एव कंद एव जाव— वीयं पचालेमाणे वा—पुच्छा ? गोयमा <sup>।</sup> सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए। सेव भते <sup>।</sup> सेव भते ! त्ति। (श० ६/२६१-२६३)

लय: साचू बोलो जी १. भगवई १२।११७

२. मन से मत्र पढ़कर, वचन से मत्र का जाप कर हिंसा करे, उससे पाच किया लगती है।

# गीतकछंद

१. मम मन गगन तल ने प्रचारी पाश्वं तरणी तेज थी। अति क्रूर मोह तम दूर कर भरपूर हिषत हेज थी।। २ वर रीति नवमा शतक नी कर जोड रचना मनरली। गुरुदेव ने प्रसाद करि मुफ प्रवर ही आशा फली। १,२. अस्मन्मनोव्योमतलप्रचारिणाः श्रीपार्घ्वसूर्यस्य विसप्पितेजसा । दुर्घृष्यसंमोहतमोऽपसारणाद् विभक्तमेव नवमं शत मया ॥ (वृ० प० ४६२)

दशम शतक

,			
	,		

# दशम शतक

ढाल: २१७

### दूहा

१. व्याख्यात नवम शत, अथ दशम कहिवाय।
पुन. तास संवध ए, निसुणो चित्त लगाय।।
२ शतक अनतर आखिया, जीवादिक ना अर्थ।
प्रकारातरे करि हिवै, किहयै तेह तदर्थ।।
३. उद्देशक चउतीस तसु, दिशि आश्रित धुर देख।
सनुडा अणगार नो, द्वितीय उद्देशक लेख।।
४ आत्म ऋद्धि करि सुर सुरी, सुर वासतर सोय।
उल्लंघियै इत्यादि जे, तृतीय उद्देशे होय।।
५. श्याम हस्ति महाबीर शिष्य, प्रश्न तुर्य, उद्देश।
पचम चमरादिक तणी, अग्रमहेषि विशेष।।
६ सुधमं सभा तणु छठु, उत्तर दिशि अठवीस।
अतरद्वीप उद्देशका, दशम शते चउतीस।।

७ नगर राजगृह ने विषे, यावत गोतम स्वाम। प्रश्न करै प्रभुजी प्रतै, कर जोडी शिर नाम।।

\*स्वाम थारा विचनामृत सुखकारी । वारी हो नाथ । आप शिवमग ना नेतारी ॥ (ध्रुपद) द पूरव दिशि ए स्यू प्रभु । किहये ? जिन कहै घर अहलादो । जीव एकेद्रियादिक किहये, अजीव धर्मास्ति आदो रा ॥

- इमहिज पिंचम दिशि पिण किह्यै, दिक्षण उत्तर इम लिहियै।एव ऊर्द्ध दिशि एव अधो दिशि, जीव अजीव ने किहियै रा।।
- १० केतली भगवत । दिशा परूपी ? जिन कहै दश दिशि भाखी । पूर्व दिशि पूर्व दक्षिण विच, अग्निकूण मे दाखी रा ।। (हो प्रभुजी । धिन-धिन आपरो ज्ञान । सशयितिमिर हरण वर केवल जाणक ऊग्यो भान ।।)

- १. न्याख्यातं नवम शतम् अथ दशम न्याख्यायते, अस्य चायमभिसम्बन्धः (वृ० प० ४६२)
- २. अनन्तरशते जीवादयोऽर्था प्रतिपादिता इहापि त एव प्रकारान्तरेण प्रतिपाद्यन्ते (वृ० प० ४६२) ३-६. १ दिस २ सवुडअणगारे

३ आइड्ढी ४ सामहित्य ५ देवि ६ सभा । ७ उत्तरअतरदीवा दसमिम्म सयम्मि चउत्तीसा ॥ (श० १० संगहणी-गाहा)

'दिसे' त्यादि, 'दिस' त्ति दिशमाश्रित्य प्रथम उद्देशक । 'सवुडअणगारे' ति सवृतानगारविषयो द्वितीय । 'आइड्ढिं' त्ति आत्मद्ध्या देवो देवी वा वासान्तराणि व्यतिकामेदित्याद्यर्थाभिद्यायकस्तृतीय । 'सामहित्य' ति श्यामहस्त्यभिधानश्रीमन्महावीरशिष्यप्रश्नप्रति-वद्धश्चतुर्थे । 'देवि' ति चमराद्यग्रमहिपीप्ररूपणार्थे पञ्चम. । 'सभ' ति सुद्यमंसभाप्रतिपादनार्थं पष्ठ । 'उत्तर अतरदीवि' ति उत्तरस्या दिशि येऽन्तरद्वीपा स्तत्प्रतिपादनार्था अष्टाविशति हद्देशका, एव चादितो दशमे शते चतुस्त्रिशदुदेशका भवन्तीति ।

(वृ० प० ४१२)

७. रायगिहे जाव एव वयासी--

- द किमियं भते । 'पाईणा ति' पवुच्चइ ?
  गोयमा ! जीवा चेव अजीवा चेव । (श० १०।१)
  तत्र जीवा—एकेन्द्रियादय. अजीवास्तु— धर्मास्तिकायादिदेशादय. । (वृ० प० ४६३)
- ६. किमिय भते । पडीणा ति पवुच्चइ ? गोयमा । एव चेव । एव दाहिणा, एव उदीणा, एव उड्ढा एव अहो वि । (भ० १०।२)
- १०. कित ण भते । दिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा । दस दिसाओ पण्णत्ताओ, त जहा— पुरित्यमा, पुरित्यमदाहिणा

**\***लय : भिरमिर-झिरमिर मेहा वरसे, आगण होय गयो आलो ।

- ११. दक्षिण दिशि दक्षिण पश्चिम विच, नैक्टंत कूण निहारी। पश्चिम दिशि पश्चिम उत्तर विच, वायव्य कूण विचारी रा॥
- १२. उत्तर दिशि उत्तर पूरव विच, कहिये गूण ईशान। ऊर्द्व ऊची दिशि अधो नीची दिशि, एदश दिशि पहिछानं रा।।
- १३ ए दण दिशि ना नाम किता प्रभु । जिन भाखे दण नाम ॥ इद्र देवता जेहने अछै ते, इंद्रा पूर्व छै ताम रा॥
- १४. अग्नि देवता जेहनें अर्छ ते, आग्नेयी ए कूण। यम देवता जेहने अर्छ ते, यमा दक्षिण दिशि ऊण रा॥
- १५. निर्ऋति देवता जेहनें अर्छै ते, नेर्ऋत कूण कहाई। वरुण देवता जेहने अर्छै ते, वारुणी पश्चिम थाई रा॥
- १६. वायु देवता जेहने अछै ते, वायव्य कूण विशेखी। सोम्य देवता जेहने अछै ते, सोम्या उत्तर सपेखी रा॥
- १७. ईशान देवता जेहने अछै ते, कहियै कूण ऐयानी। विमलपणे करि विमल ऊर्द्ध दिशि, तमा अघो दिशि जानी रा॥

- १८. सकट ओवि आकार, पूर्वादिक चिहुं दिशि हुवै। धूर विहुं प्रदेश घार, क्रम वृद्धि असख अनन्त लग।।
- १६ विदिशि चिऊ सुविचार, आखी एक प्रदेश नी।
  मुक्ताविल आकार, तेहनी वृद्धि हुवै नही॥
- २०. ऊर्द्ध अघो दिशि दोय, रुचक प्रदेशाकार है। समय वचन करि जोय, च्यार-च्यार प्रदेश नी।।
- २१. \*इदा पूर्व दिशि स्यू प्रभुजी ! जीवां तणा खघ कहियै। कै जीव तणां जे देश कहीजै, कै, जीव-प्रदेशा लहियै ?
- २२ अथवा अजीव के देश अजीव ना, अजीव-प्रदेश कहेसा। जिन कहै जीवा पिण छै तिमहिज, जाव अजीव-प्रदेशा॥
- २३. जे जीवा ते निश्चै एगिंदिया, जाव पचेंद्रिया जाणी। अणिंदिया ते केवलज्ञानी, पूरव दिशि पहिछाणी।।
- २४. जीव तणा जे देश हुवै ते, नियमा एगेदिय-देसा। जाव अणिदिया केवलज्ञानी, तसु वहु देश कहेसा।। २५. जे जीव-प्रदेशा ते नियमा एगेदिय तणा प्रदेश कहेसा। वेइदिया ना प्रदेश घणा छै, जाव अणिदिया नां प्रदेश।।

- ११. दाहिणा दाहिणपच्चित्यमा पच्चित्यमा पच्चित्यमुत्तरा
- १२. उत्तरा उत्तरपुरित्यमा उट्डा अहो । (१० १०।३)
- १३. एयामि ण भते ! दमण्ह दिमाण किन नामयेज्जा पण्णत्ता ? गोयमा ! दस नामयेज्जा पण्णत्ता, त जहा—दंवा 'इदे' त्यादि, इन्द्रो देवता यस्या. सैन्द्री (वृ० प० ४६३)
- १४. अगोयी जम्मा य 'अग्निर्देवता यस्याः साऽऽग्नेयी, एव यमी देवना याम्या (वृ० प० ४६३)
- १५. नेरई वारुणी य निऋंतिर्देवता नैऋंती वरुणो देवता वारुणी (वृ० प० ४६३)
- १६. वायव्या सोमा वायुर्देवता वायव्या मोमदेवता सौम्या (वृ० प० ४६३)
- १७. ईसाणी य, विमला य तमा य वोद्धव्वा ।
  (श० १०।४)
  ईशानदेवता ऐशानी विमलतया विमला ......विमला
  तूद्घ्वी तमा पुनरघोदिगिति । (वृ० प० ४६३)
  १८. इह च दिश. शकटोद्धिसस्थिता: (वृ० प० ४६३)
- १६. विदिशस्तु मुक्तावल्याकारा. (वृ० प० ४६३)
- २०. कर्घ्वाधोदिशो च रचकाकारे, (वृ० प० ४६३, ४६४)
- २१. इदा णं भते ! दिसा कि जीवा, जीवदेमा, जीवपदेमा
- २२. अजीवा अजीवदेसा अजीवपदेसा ?, गोयमा ! जीवा वि त चेव जाव (स० पा०) अजीवपदेसा वि ।
- २३. जे जीवा ते नियमा एगिदिया वेइदिया जाव (स॰ पा॰) पिंचिदया अणिदिया । तत्र ये जीवास्त एकेन्द्रियादयोऽनिन्द्रियाश्च केवितन (वृ॰ प॰ ४६४)
- २४ जे जीवदेसा ते नियमा एगिदियदेसा जाव अणिदिय-देसा।
- २५. जे जीवपदेसा ते नियमा एगिदियपदेसा वेइदियपदेसा जाव अणिदियपदेसा ।

<sup>\*</sup>लय : झिरमिर-झिरमिर मेहा वरसे

- २६ जे अजीवा छै पूरव दिशि, द्विविध तेह कहीवा। रूपी अजीवा कह्या पूर्व दिशि, वलि अरूपी अजीवा।। २७ जे रूपी अजीवा ते च्यार प्रकारे, खघ, खघ ना देशा। खध तणा प्रदेश कह्या वलि, परमाणु-पुद्गल कहेसा।। २८. अजीव अरूपी ते सप्त प्रकारे, नींह धर्मास्तीकाय। पूर्व दिशि मे खघ नहिं तस्, सह धर्मास्ती नाय।।
- २६. धर्मास्ती नो देश कहीजै, तास न्याय इम जाणी। एक देश भागरूप पूर्व दिशि, धर्मास्ती पहिछाणी।।
- ३० धर्मास्तिकाय तणाज प्रदेशा, तिका पूर्व दिशि होय। दिशि अवलोय।। प्रदेश प्रमाणै, पूरव
- ३१ अधर्मास्तिकाय नही छै, खघ सपूरण अधर्मास्ति तणो देश वलि, प्रदेश बहु तसु पाय।।
- ३२. आगासित्यकाय नहीं खघ आश्री, आगासित्य नो देश। आगासित्थ प्रदेश वह छै, अद्धा समय सुविशेष।।
- ३३ ते इम सप्त प्रकार अरूपी, अजीव रूप ए इदा। पूरव दिशि ए प्रगटपणे छै, सुण गोयम । सुखकदा ।।
- ३४ अग्नेयी कूण दिशा स्यू प्रभुजी । जीवा जीव ना देसा। जीव तणा प्रदेश पूर्ववत, प्रश्न गोयम सुविशेषा।।
- ३५ जिन कहै नोजीवा खघ आश्री, विदिशि प्रदेशिक एक। एक प्रदेश विपेज जीव नी, अवगाहना नहि लेख।।
- ३६- जीव तणी अवगाहना आखी, असख्यात प्रदेश। ते माटे अग्नेयी कूण में, जीव नथी वच
- ३७ जीव तणा तिहा देश अछै, वलि, जीव तणाज प्रदेशा। अजीवा अजीव ना देश अछै वलि, अजीव नाज पएसा।।
- ३८ जेह जीव ना देश कह्या ते, निश्चै करि अवलोई। वहु एकेद्री ना देश घणा त्या, वेइद्री आदि न होई।।

- लोक व्यापकपणै। ३६ एकेद्रिया अनंत, सकल अग्नेयी निक्चै देश एकेदिया। हुत, ४० इकयोगिक ख्यात, द्विकयोगिक त्रिण भग हिव।
- आगल तसु अवदात, श्रोता चित देई
- ४१. अथवा एकेद्रिय ना देश वहुला, एक वेइद्री नो अग। एक देश पावै तिण कूणे, द्विकयोगिक धुर भग।।
- \*लय: झिरमिर-झिरमिर मेहा वरसे

- २६. जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा-रूविअजीवा य अरूविअजीवा य ।
- २७ जे रूविअजीवा ते चउवित्रहा पण्णत्ता, त जहा-खघा, खयदेसा, खधपदेसा, परमाणुपोग्गला ।
- २८. जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णता, त जहा-नोधम्मत्यिकाए अयमर्थं - धर्मास्तिकाय समस्त एवोच्यते, स च प्राचीदिग् न भवति तदेकदेशभूतत्वात्तस्या (वृ० प० ४६४)
- २६. धम्मित्यकायस्स देसे धर्मास्तिकायस्य देश, सा तदेकदेशभागरूपेति (वृ० प० ४६४)
- ३०. धम्मत्यिकायस्स पदेसा तथा तस्यैव प्रदेशा सा भवति असख्येयप्रदेशात्मकत्वा-(वृ० प० ४६४)
- ३१. नोअधम्मित्यकाए अधम्मित्यकायस्स देसे अधम्मित्य-कायस्स पदेसा
- ३२. नोक्षागासित्यकाए आगामित्यकायस्स देसे आगास-त्थिकायस्स पदेसा अद्धासमए। (श० १०१५)
- ३३. तदेव सप्तप्रकारारूप्यजीवरूपा ऐन्द्री दिगिति। (वृ० प० ४६४)
- ३४ अगोयी ण भते । दिसा किं जीवा, जीवदेसा, जीव-पदेसा—पुच्छा ।
- ३५ गोयमा । नोजीवा विदिशामेकप्रदेशिकत्वादेकप्रदेशे च जीवानामवगाहा-(वृ० प० ४६४) ३६ असल्यातप्रदेशावगाहित्वात्तेषा

(वृ० प० ४६४)

- ३७. जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि अजीवदेसा वि अजीवपदेसा वि ।
- ३८. जे जीवदेसा ते नियमा एगिदियदेसा
- ३६ एकेन्द्रियाणा सकललोकव्यापकत्वादाग्नेय्या नियमादे-केन्द्रियदेशा. सन्तीति (वृ० प० ४६४)
- ४१,४२ अहवा एगिदियदेसा य वेइदियस्स य देसे 'अहवे' त्यादि, एकेन्द्रियाणा मकललोकव्यापकत्वादेव द्वीन्द्रियाणा चाल्पत्वेन क्वचिदेकस्यापि तस्य समभवा-

४२. एकेद्री बहु देश, वेइंदिय अल्पपणें गरी। किहा लहे सुविशेष, एक वेइंदिय देश इका।

४३. \*अथवा एकेंद्रिय नां देश वहुला, इक वेइद्रि नां जाण। देश वहु पाने तिण कृणे, द्वितिय भग इम माण॥

# सोरठा

४४. यदा वेइंदिय एक, दोय आदि देश करी। फर्को विदिशि विशेख, द्वितिय भग होवे तदा।।

४५. \*अथवा एकेदिय ना देश यहुला, यहु वेडंद्रिय नां जाण। देश वहु पार्व तिण कूणे, तृतिय भग इम माण॥

#### सोरठा

४६. बहु वेइदिय घार, दोय आदि देशे करी। फर्शे विदिशि तिवार, तृतियो भंग हुवै तदा।। ४७. देश तणा सुविशेष, द्विकयोगिक भंग एह में। एगेदिया बहु देश, कहिया त्रिहु भागा मके॥

४८. \*अथवा एकेद्री तेइद्री संघाते, इमह्जि त्रिण भंग कहिया। जाव एकेंद्री अणिदिया साथे, तीन भागा इम लहिया॥

४६. जे जीव नां प्रदेश कह्या ते, निश्चै करिनें त्याही। वहु एकेद्री नां प्रदेश वहु छै, वेंदियादिक ना नाही॥

#### सोरठा

५०. इकयोगिक ए त्यात, द्विकयोगिक भंग वे हिवै। प्रथम भंग निह पात, न्याय सहित निसुणो सह ॥ ५१. \*अथवा एकेद्री ना प्रदेश वहुला, इक वेइंद्री नों ताय। एक प्रदेश ए पहिलो भागो, अग्नेयी कूण न पाय॥

# सोरठा

५२. तेद्री जाव अणिद, प्रदेश तणी अपेक्षया। वहु वचनात कथिद, इक वचनात हुवै नही।।

५३. लोक व्यापक अवस्थान, अणिद्रिय विण जीव ना।
एक प्रदेशे जान, असंस्थात प्रदेश ह्वं॥
५४. अणिद्रिय सुविशेष, सर्व लोक व्यापक यदा।
इक आकाश प्रदेश, एक ईज प्रदेश तसु॥
५५. तो पिण अणिदिय जोय, तमु प्रदेश पद ने विषे।
वहु वच निश्चे होय, अग्नि आदि चिउ विदिश में॥

मुख्यते एकेन्द्रियाणां देशादन द्वीन्द्रियन्य देशकंति द्विसयोगे प्रथमः (यृ० प० ४६४)

४३. बहुवा एगिदियदेगा य वेद्यवियम्त य देसा अथवैकेन्द्रियपद तथैय द्वीन्द्रियपदे स्वेभयचन देनादे पुनर्यहुवननमिति द्वितीयः (यु॰ प॰ ४६४)

४४. अय च यदा द्वीन्द्रियो द्वचादिनिवर्गेन्नां न्युगति तदा स्यादिति (वृ० ५० ४६४)

४५. अहमा एगिदिगरेगा य वेददियाण य देगा। अयवैगेन्द्रियपर्व तर्यंत्र द्वीन्द्रियपद देशपद च बहु-वचनान्गमिति तृतीय. (वृ० प० ४६४)

४८. अत्वा एगिदियदेमा य तेइदियस्य य देते । एव चेन तियभगो भाणियच्यो । एव जाव अगिदियाणं तिय-भगो ।

४६. जे जीवपदेमा ते नियमा एगिदियपरेमा ।

५२ एव 'त्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियपञ्चेन्द्रियानिन्द्रियै. मह प्रत्येक भाष्ट्रक्षययं दृश्यम् एव प्रदेशपक्षोऽपि वाच्यो, नवरिमह द्वीन्द्रियादिषु प्रदेशपदं बहुवचनान्तमेव । (वृ० प० ४६४)

५३. यतो लोकन्यापकावस्यानिन्द्रियवर्जनीवाना यत्रैक प्रदेशस्तत्रासस्यातास्ते भवन्ति (वृ० प० ४६४)

४४. लोकन्यापकावस्थानिन्द्रियस्य पुनर्यं चप्येकत्र क्षेत्रप्रदेशे एक एव प्रदेश. (यृ० प० ४६४)

५५,५६. तथाऽपि तत्प्रदेशपदे बहुवचनमेवाग्नेय्या तत्प्रदेशा-नामसरुयातानामवगाढत्वाद् (वृ० प० ४६४)

\*लय: झिरमिर-झिरमिर मेहा वरसे

विख्यात, असंख्यात प्रदेश ५६. विदिश तणा प्रदेश वहु वच ते भणी।। अणिदिय थात, तिहा जोय, इक वेइदिय जीव ५७ तिण सू विदिशे एक प्रदेश न होय, प्रथम वरजियो ॥ भग इम वेद्री जाव अणिदिय । ५८. वीजो तीजो भग, पावै ते आश्री कहू जूजुआ ॥ चग, प्रदेश ५६. \*अथवा एकेद्री ना प्रदेश वहुला, एक वेइदिय तणां जे।

# सोरठा

प्रदेश वहु पानै तिण कूणे, द्वितीय भग इम छाजे।।

प्रदेश करि । ६०. यदा वेइदिय एक, असंख्यात विशेख, द्वितियो भग हुवै तदा।। विदिश ६१. \*अथवा एकेद्रिय प्रदेश वहुला, वहुवेइद्रिय तणा जे। प्रदेश वहु पानै तिण कूणे, तृतीय भग इम साजे।।

# सोरठा

- जिवार, असंख्यात प्रदेश ६२. वहु वेइदिय विदिशि तिवार, तृतीयो भग हुवै तदा।। फर्शे द्विकयोगिक भग एह मे। सुविशेष, ६३. प्रदेश ना वहु प्रदेश, ए पिण कहिवा भग विहुं।।
- ६४. \*प्रदेश आश्री प्रथम भग विण, दोय भग पहिछाणी। जाव अणिदिया नै इम कहिवो, जीव विस्तार ए जाणी ॥
- ६५. अग्नेयी कूण मे जेह अजीवा, तेहना दोय प्रकार। रूपी अजीव ते वर्ण सहित छै, अरूपी अजीव विचार।।
- ६६ जे रूपी अजीव ते च्यार प्रकारे, खघ खघ नो देश। खघ तणो प्रदेश कह्यो वली, परमाणु-पोग्गल विशेष।।
- ६७. जेह अरूपी अजीव कह्या ते, सात प्रकारे धर्मास्तिकाय नही तिण कूणे, खघ सपूरण नांही।।
- ६८ देश धर्मास्तिकाय तणो छै, वलि वहु तास प्रदेशा। अधर्मास्तिकाय तणा इम, देश प्रदेश
- ६९ इमज आकास्तिकाय तणा वे, देश प्रदेश कहाया । अद्धा समय ए भेद सातमो, अरूपी अजीव ना पाया।।
- ७०. वली विशेष थकीज कहै छै, विदिश विपे नहि जीवा। जीव तणो देश एह भग ह्वं, सर्व विदिश मे कहीवा।। ७१ जम्मा दक्षिण दिशि स्यूं प्रभु । जीवा, जिम पूर्व दिशि भाखी।
- तिमहिज सर्व दक्षिण दिशि कहिनी, श्री जिन वच ए साखी।।
- ७२ नैऋतकूण जे अग्निकूण तिम, पश्चिम दिशि पहिछाणी। पूर्व दिशि जिम समस्त कहिवू, वायव्य अग्नि जिम जाणी ।।
- ७३ उत्तर दिशि जिम पूर्व दिशि कही, अग्नेयी जेम ईशाणी। ऊर्द्ध दिशा जीवा अग्निकूण जिम, अजीवा पूर्व जिम जाणी।।

\*लय : झिरमिर-शिरमिर मेहा वरसे

- ५७,५८. अतः सर्वेषु द्विकयोगेष्वाद्यविरहित भगकद्वयमेव भवतीत्येतदेवाह---(वृ० प० ४६४)
- ५६. अहवा एगिदियपदेसा य वेइदियस्स पदेसा

६१. अहवा एगिदियपदेसा य वेइदियाण य पदेसा

- ६४. एव आइल्लविरहिओ जाव अणिदियाण ।
- ६५. जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा-रूविअजीवा य अरूविअजीवा य।
- ६६. जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा-खघा जाव परमाणुपोग्गला ।
- ६७. जे अरुविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, त जहा---नोधम्मत्थिकाए
- ६८,६९ धम्मत्यिकायस्स देसे, धम्मत्यिकायस्स पदेसा, एव अधम्मत्यिकायस्स वि जाव आगासत्यिकायस्स पदेमा, अद्धासमए । (য়০ १০।६)
- ७१. जम्मा ण भते । दिसा कि जीवा ? जहा इदा 'तहेव निरवसेस'
- ७२. नेरती य जहा अगोयी। वारुणी जहा इदा। वायव्वा जहा अगोयी
- ७३. सोमा जहा इन्दा । ईसाणी जहा अगोयी । विमलाए जीवा जहा अगोयीए, अजीवा जहा इदाए

- नहिं जीव ७४. ऊर्द्धं च्यार प्रदेश, खय आश्री त्यो। अग्नी जिम कही।। कहेस, तिण सू प्रदेश देश ७५ अजीव भेद डग्यार, पावै ऊर्द दिशा विषे। अरूपी ना मही ॥ रूपी तणाज च्यार, सप्त
- ७६ \*ऊर्द्ध दिशा विमला जिम भाग्वी, तिमज तमा पिण कहियै। णवर अरूपी ना भेद तिहा छह, अद्धा समय निंह लहियै।।

#### सोरठा

- ७७. ऊर्द्ध दिशे सिद्ध वास, तिण सू अणिदिया तणा । सिद्ध स्थान तमा नथी।। विमास, ना देश, वील प्रदेश तसु किम हुवै। ७८. अणिदिया चित्त लगाई कहेस, साभलो ॥ उत्तर तास फर्शत, लोक समुद्घात केवल समय। ७६. सर्वे हुत, तेह जे आश्रयी ॥ तिहा प्रते ८०. हुवै तास इक देश, तथा हुवै वहु देश युक्तहीज तिण मू तिहां।। पएस, वहु ८१. विल समय व्यवहार, रवि-सचरण प्रकाश कृत। नही रिव चार, अद्धा समय निह ते भणी।। तमा
- दर तो विमला दिशि जोय, मदर मध्य हुवै तिहा । रवि प्रकाश किम होय, कथ समय व्यवहार त्यां।। मेरू पवत नो तिहां। तस् इम जाण, **८३ उत्तर** पिछाण, फटिक काड छै तेह विषे। अवयवभूत चंदादि प्रकाश, किरण काति द्वारे करी। कर्द्व दिशे रवि तास, प्रकाश सचरता दिशि इण न्याय, समय तणो व्यवहार है। **८**५. विमला तमा विपे निंह पाय, वृत्ति विपे इम आखियो।। जीवादी पूर्वे ८६. दिशि तेह परूपिया। रूप, चूप, शरीर नो अघिकार हिव ॥ जीव शरीरी
- द७. \*िकता प्रभुजी ! शरीर परूप्या ? जिन कहै पच गरीर। ओदारिक ने जाव कार्मण, जूजुआ भेद समीर॥
- पन्तवण पद इकवीसमें आख्यो, भणवो सर्व पिछाण।
  पन्तवण पद इकवीसमें आख्यो, भणवो सर्व पिछाण।।
  वा०—वृत्तिकार रें कथनानुमार एक सग्रहगाथा इहा लागें छैं। तेहनों अर्थ—कित केतला शरीर? एहवो किहवो ओदारिकादि पंच। सठाण— ओदारिक ना सस्थान ते आकार किहवा। ते जिम अनेक प्रकार ने सस्थान औदारिक। पमाणित तेहनोज प्रमाण किहवो, जिम औदारिक शरीर जघन्य यकी अगुल नो असक्षेय भाग मात्र, उत्कृष्ट थी साधिक योजन सहस्र मान। पोग्गल-

\*लय: क्षिरमिर-क्षिरमिर मेहा वरसे

- ७६. एव तमाए वि, नवरं—अस्वी छिन्त्रहा, अद्वासमयो न भण्णति । (श० १०।७) 'एव तमावि' ति विमलावत्तमाऽपि वाच्येत्यर्थः (वृ० प० ४६४)
- ७७,७८. अय विमलायामिनिन्द्रियमम्भवात्तहेगादयो युक्ता-स्तमायां तु तस्यामम्भवात्कय ते ? इति, उच्यते (वृ० प० ४६४)
- ७६,८०. दण्डाद्यवस्यं तमाश्रित्य तस्य देशो देशाः प्रदेशाश्च विवक्षाया तत्रापि युक्ता एवेति । (व्० प० ४६४)
- प्तर 'अद्वासमयो न भन्नइ' ति समयव्यवहारो हि मञ्चिरिष्णुसूर्यादिप्रकाशकृत., स च तमाया नास्तीति तत्राद्धासमयो न भण्यत इत्यर्थः । (वृ० प० ४६४)
- प्तरः अय विमलायामिप नास्त्यमाविति कयं तय समय-व्यवहारः ? इति । (वृ० प० ४६४)
- ६३,६४. उच्यते, मन्दरावयवसूतस्फटिककाण्ढे सूर्यादिप्रभास-क्रान्तिद्वारेण तत्र सञ्चरिष्णुसूर्योदिप्रकाशभावादिति। (वृ० प० ४९४)
- ५६. अनन्तरं जीवादिरूपा दिश. प्ररूपिता, जीवाश्च शरीरिणोऽपि भवन्तीति शरीरप्ररूपणायाह— (वृ० प० ४६४)
- न७. कित ण भते ! सरीरा पण्णत्ता ?
  गोयमा ! पच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए
  जाव (सं० पा०) कम्मए। (श० १०।८)
- प्त ओरालियसरीरे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ? एवं ओगाहणासठाण निरवसेस भाणियव्य
- वा० कइ सठाण पमाण, पोगगलचिणणा सरीरसजोगो । द्ववपएसप्पवहु, मरीरओगाहणाए या ॥ तत्र च कंतीति कति शरीराणीति वाच्यं, तानि पुनरौदारिकादीनि पञ्च, तथा 'सठाण' ति औदारिका-दीनां सस्यानं वाच्यं, यथा नानासस्यानमौदारिक, तथा 'पमाण' ति एपामेव प्रमाणं वाच्यं, यथा—

चिणणा—पुद्गल चय किह्वो । सरीर-औदारिक नो निर्व्याघाते छ दिशि नै विषे व्याघात प्रते आश्रयी ने किंवारैक तीन दिशि ने विषे इत्यादिक । सयोग एहनो सयोग किह्वो । यथा ओदारिक शरीर हुवै तेहनै, वै किय हुवै इत्यादि । दव्वप्पएस —एहनो द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणै करी अल्पवहुत्व किह्वो, यथा सव्वत्योवा आहारग-सरीरदव्वहुयाए इत्यादि । सरीरोगाहणा—अवगाहना नो अल्पवहुत्व किह्वो, यथा सव्वत्योवा ओरालियसरीरस्स जहन्निया ओगाहणा इत्यादि ।

दश्यावत अल्पावहुत्व लग इम, सेव भते ! सेव भत । दशम शते ए प्रथम उदेशे, जिन वच महा जयवत ।। ह० ढाल दो सौ सतरमी ए, भिक्षु भारीमाल ऋषिराया । उगणीसे वीसे जेष्ठ जोघाणे, 'जय-जश' हरष सवाया ।। दशमशते प्रथमोद्देशकार्थः ।।१०।१॥

शोदारिक जघन्यतोऽड्गुलासंख्येयभागमात्रमुत्कृष्टतस्तु सातिरेकयोजनसहस्रमान, तथैपामेव पुद्गलचयो वाच्यो, यथौदारिकस्य निर्व्याघातेन पट्सु दिक्षु व्याधात प्रतीत्य स्यात् त्रिदिशीत्यादि, तथैपामेव सयोगो वाच्यो, यथा यस्यौदारिकशरीर तस्य वैक्रिय स्यादस्तीत्यादि, तथैपामेव द्रव्यार्थप्रदेशार्थतयाऽल्प वहुत्व वाच्य, यथा 'सन्वत्थोवा आहारगसरीरा दन्वद्वयाए' इत्यादि, तथैपामेवावगाहनाया अल्पवहुत्व वाच्य, यथा 'सन्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स जहन्निया ओगाहणा' इत्यादि। (वृ० प० ४६५)

द्ध. जाव अप्पावहुगं ति । (श० १०।६) सेवं भते <sup>|</sup> सेव भते <sup>|</sup> ति । (श० १०।१०)

### ढाल: २१८

#### दूहा

- १ पूर्व शरीर परूपिया, जीव शरीरी जाण। करणहार क्रिया तणो, हुवै तिको पहिछाण।। २ ते माटै कहियै हिवै, क्रिया परूपण अर्थ। द्वितीय उद्देशक नै विषे, वर जिन वयण तदर्थ।।
  - \*जय-जय ज्ञान जिनेन्द्र तणो रे, जयवता जिन जाणी जी । जयवता गोयम गणधरजी, पूछचा प्रश्न पिछाणी जी ॥ (ध्रुपद)
- ३ राजगृह जाव गोतम इम वोल्या, प्रभु सबुड अणगारो रे। वीयी पाठ ते कपायवत ने, तसु अशुभ जोग व्यापारो रे॥

### सोरठा

- ४ सामान्य करिकें मत, प्राणातिपातादि जे। आश्रव द्वार रूघत, सवर सहितज सवृत ॥ ५ वीचि शब्द आख्यात, कहियै ते सयोग मे। तिको विहूनो थात, इहा कपाय रुजीव नो॥
- ६ तथा विचिर् ए धातु, पृयक् भाव जुदै अरथ। ए वच थी कहिवातु, यथाख्यात थी ए जुदो।।

१,२. अनन्तरोहेशकान्ते शरीराण्युक्तानि शरीरी च कियाकारी भवतीति कियाप्ररूपणाय द्वितीय उहेशक.। (वृ० प० ४६५)

- ३ रायगिहे जाव एव वयासी---सबुडस्स ण भते। अणगारस्स वीयीपथे
- ४ सवृतस्य सामान्येन प्राणातिपाताद्याश्रवद्वारसवरो-पेतस्य । (वृ० प० ४६५)
- ५. वीचिशन्य सम्प्रयोगे, स च सम्प्रयोगोर्द्धयोर्भवति, ततश्चेह कपायाणा जीवस्य च सम्बन्धो वीचिशन्य-वाच्य ततश्च वीचिमत कपायवत (वृ० ५० ४६५)
- ६. अथवा 'विचिर् पृथग्भावे' इति वचनात् विविच्य-पृथग्भय यथाऽऽल्यातसयमात् कपायोदयमनपवार्येत्यर्थः. (वृ० प० ४६५)

<sup>\*</sup>लय: कुंकुवर्णी हुंती रे देही

- ७. अथवा विचित्य घार, राग तणींज विकार तसु। तथा विरूपाकार, क्रिया सरागपणे करि॥
- द्र. जे अवस्थाने जेह, राग विकारज जिम हुवै। क्रिया सरागपणेह, अर्थ कह्यो ए वृत्ति थी।।
- ह. \*पंथ मारग ने विषे रही ने, उपलक्षण थी जेहो। अन्य आचारे रही मुख आगल रूप जोवे घर नेहो।
- १०. पूर्ठ रूप अर्छे त्यारी पिण, देखण इच्छा धरतो। विहु पस वाडे रूप्रते पिण, अति अवलोकन करतो॥
- ११ ऊर्ढ़ रह्या ते रूप विलोकत, अघो रूप पिण जोवै। स्यूं प्रभु! तसु इरियावहि किरिया, के सपरायिकी होवै ?
- १२. श्री जिन भाखें सुण गोतम शिप । संवृत जे अणगारो। कपायवत पथ रहि मारग, जोवे रूप जिवारो॥
- १३ यावत जेहने इरियावहिया किरिया मूल न थाई। सपरायिकी किरिया जेहने, उपजे अञ्चभ वधाई।।
- १४ किण अर्थे करिने हे प्रभुजी । आखी एहवी वायो। सत्रुत ने यावत संपरायिकी किरिया अशुभ वधायो॥
- १५. जिन कहै जेहने क्रोघ मान विल, माया लोभ पिछाणी। जिम सप्तम शत प्रथम उद्देशक', यावत उत्मुत्रे ठाणी।।
- १६. वृत्तिकार<sup>ग</sup> कह्यो जाव शब्द मे, वोच्छिण्णा जास कपायो । तहने इरियार्वाह्या किरिया, चोकड़ी उदय न ताह्यो ॥
- १७. क्रोब मान अरु माय लोभ जमु, अवीच्छिण्णा कहिवायो । उदय कपाय नही क्षय उपजम, किरिया सपरायिकी ताह्यो ॥
- १८ अहासुत्त जिम सूत्रे कहा, तिम चाले न चूकै लिगारो। वीतराग मुनि आश्री वचन ए, तसु इरियावहि सुविचारो॥
- १६. उत्सूत्र ते आगम अनिक्रम नै, चालै जिनाज्ञा बारो। संपरायिकी क्रिया तेहनै, अञ्चभ जोग व्यापारो॥
- २०. जाव शब्द में एह कह्या छै, जे पथ रही रूप जोवे। तेह उत्सूत्रपर्णेज प्रवर्तो, अशुभ जोगी इम होवे॥

७. अयवा विचिन्त्य रागादिविकल्पादित्यथैः, अयवा विरूपा कृति.—क्रिया सरागत्वात् ।

(वृ० प० ४६५)

द. यस्मिन्नवस्थाने तद्विकृति येथा भवतीत्येवं (वृ० ५० ४६५)

- हिन्ना पुरक्षो व्याइ निज्ञायमाणस्म 'पथे' त्ति मार्गे 'अवयक्यमाणस्म' त्ति अवकांक्षनोऽपेक्ष-माणस्य वा, पियग्रहणस्य चोपलक्षणत्वादन्यत्राप्या-धारे स्थित्वेति द्रष्टव्यं (वृ० प० ४६६)
- १०. मग्गवो रूवाइं अवयक्यमाणम्स, पामवो रूवाइं अवलोएमाणस्स
- ११. उड्ड रूवाइ ओलोएमाणस्स, अहे रूवाइ आलोए-माणस्म तस्स ण भते! कि इरियाविहया किरिया कज्जइ? सपराइया किरिया कज्जड?
- १२. गोयमा ! मबुद्धम्स णं व्यणगारस्स वीयीपंथे ठिच्चा
- १३. जाव (स॰ पा॰) तस्म णं नो इरियावहिया किरिया कज्जड सपराइया किरिया कज्जड । (श॰ १०।११)
- १४. से केणट्ठेणं भंते । एव वुच्चड—संवुडस्स णं जाव सपराइया किरिया कज्जइ ?
- १५. गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा एवं जहा सत्तमसए पढमजद्देसए (सू० २१) जाव (स० पा०)
- १६. से वोच्छिण्णा भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया फजजइ
- १७. जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवति तस्म ण संपराइया किरिया कज्जइ
- १८. अहासुत्त रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ
- १६ उस्मुत्त रीयमाणस्स सपराइया किरिया कज्जइ।
  'से ण उस्मुत्तमेव' ति स पुनरुत्सूत्रमेवागमातिक्रमणत एव। (वृ० प० ४९६)
- २०. से णं उस्सुत्तमेव रीयति ।

<sup>&</sup>quot;लय : कुंकुवर्णी हुंती रे देही

१ यह जोड सिक्षप्त पाठ के आधार पर की गई है, इसलिए इसके सामने पाद-टिप्पण का पाठ उद्धृत किया है।

२. जयाचार्य ने जोड की रचना सक्षिप्त पाठ के आधार पर की। उसके बाद वृत्ति के आधार पर जाव की पूर्ति कर छूटे हुए पाठ की जोड लिख दी। अंगसुत्ताणि में सिक्षप्त पाठ को पाद टिप्पण में रखा गया है और मूल में पाठ पूरा लिया है। इसलिए यहा वृत्तिकार का उल्लेख होने पर भी अंगसुत्ताणि का पाठ उद्धृत किया गया है।

२१. ते तिण अर्थं करीने गोतम ! जावतः ससंपरायो। संपराइया किरिया होवै, प्रमादी एह कहिवायो॥

# सोरठा

- २२. कह्यो संवृत अणगार, सकषाई प्रमत्त है। तास विपर्यय सार, अकषाइ नो प्रश्न हिव।।
- २३. \* हे प्रभु ! संबुड़ा मुनिवर ने, अकषाई वीतरागो। पथ मारग रहिने मुख आगल, रूप जोवै तिज रागो॥

#### सोरठा

- २४. अवीचि अकषाय, संवध नहीं कषाय नों। तथा अविचिर् कहाय, यथाख्यात थी नहि जुदो।।
- २५. तथा अविचित्य सार, राग विकार न मन तसु। तथा विरूपाकार, ते पिण नहिं छै तेहनो।।
- २६. \*यावत स्यू इरियावहि पूछा ? भाखे तव जिनरायो। सवृत जाव तास इरियावहि, सपराय नहिं थायो॥
- २७. किण अर्थे प्रभु ! जिम सप्तम शत, भाख्यो सप्तमुदेशे। यावत ते जिम सूत्रे आख्यो, तिमहिज चालै विशेपे।।
- २८. तिण अर्थे गोतम ! इम भाख्यो, सवृत जे अकषाई। जाव तास इरियावहि किरिया, संपराय नींह थाई॥

#### सोरठा

- २६. पूर्वे किरियावंत उक्त, तेहनें बहुलपणें किर । योनि पामवूं हुत, हिव ते योनि-परूपणा ।।
- ३०. \*िकते प्रकारे हे भगवत जी ! योनि कही जिनरायो। जीव ूं उत्पत्तिस्थानक तेहने, योनि कहीजे ताह्यो॥

चा० — यु घातु मिश्र अर्थ ने विषे । इण वचन थकी तैजस कार्मण शरीरवत यको ओदारिकादिक शरीर योग्य खघ समुदाये करी मिश्र हुवे जीव जेहने विषे, ते योनि कहिये।

- ३१. जिन कहै त्रिविघा योनि परूपी, शीत योनि घुर जाणी। उत्पत्ति स्थानक शीत फर्श-करि, परिणत तेह पिछाणी।।
- ३२. उष्ण योनि ते उष्ण फर्शवत, तीजी शीतोष्णा जानो । शीत-उष्ण ए बिहु फर्शकरि, परिणत उत्पत्ति स्थानो ।

- २१. से तेणट्ठेणं जाव संपराइया किरिया कर्ज्जइ। (श॰ १०।१२)
- २२. 'संबुडस्से' त्याद्युक्तविपर्ययसूत्रं (वृ० प० ४६६)
- २३. सबुडस्स ण भते । अणगारस्स अवीयीपथे ठिच्चा पुरको रूवाइ निज्ज्ञायमाणस्स
- २४ तत्र च 'अवीइ' त्ति 'अवीचिमतः' अकपायसम्बन्धवतः 'अविविच्य' वा अपृथग्भूय यथाऽऽख्यातसयमात् (वृ० प० ४६६)
- २५. अविचिन्त्य वा रागविकत्पाभावेनेत्पर्थे अविकृति वा यथा भवतीति । (वृ० प० ४६६)
- २६. जाव तस्स ण भते ! कि इरियाविह्या किरिया कज्जइ — पुच्छा । गोयमा । सबुहस्स '\*\*\*जाव तस्स ण इरियाविह्या किरिया कज्जइ, नो सपराइया किरिया कज्जइ । (श० १०।१३)
- २७. से केणट्ठेण भते । ......जहा सत्तमसए सत्तमुद्देसए (सू० १२६) जाव (सं० गा०) से .....

(श० १०।१४)

- २८. तेणट्ठेण जाव नो सपराइया किरिया कज्जइ। (श० १०।१४)
- २६. अनन्तर क्रियोक्ता, कियावतां च प्रायो योनिप्राप्ति-र्भवतीति योनिप्ररूपणायाह— (वृ० प० ४६६)
- ३०. कतिविहा णं भते ! जोणी पण्णत्ता ?

वा०—'यु मिश्रणे' इतिवचनात् युवन्ति—तैजस-काम्मणशरीरवन्त औदारिकादिशरीरयोग्यस्कन्धसमु-दायेन मिश्रीभवन्ति जीवा यस्या सा योनि.

(वृ० प० ४९६)

- ३१. गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, त जहा—सीया 'सीय' ति शीतस्पर्शा (वृ० प० ४६६)
- ३२. उसिणा सीतोसिणा
  'उमिण' त्ति उष्णस्पर्णा 'सीयोसिण' त्ति द्विस्वभावा
  (वृ० प० ४६६)

<sup>&</sup>quot;लय: कुंकुवणीं हुंती रे देही

३३. योनी पद इम सर्वज भिणवो, सूत्र पन्नवणा मांह्यो । नवमे पद ए भाव कह्या छै, ते सगला कहिवायो ॥ वा०—रत्नप्रभा सर्वेरप्रभा वालकप्रभा पथ्वी में नारक नां जे उपजवा न

वा०—रत्नप्रभा सकरप्रभा वालुकप्रभा पृथ्वी में नारक नां जे उपजवा ना क्षेत्र कुभी छै, ते सर्व शीतस्पर्श परिणत छै अने कुभी विना अन्यत्र सर्व उपण स्पर्श परिणत छै। तिणै करि तिहा नारक शीतयोनिया छै अने उपण वेदना भोगवै छै।

पकप्रभा पृथ्वी में घणा उपपात-सेंग कूंभी शीत-स्पर्श परिणत छै अने योडा उपपात-क्षेत्र कुभी उप्ण-स्पर्श परिणत छै। जिण पायछे, नरकावासे उपपात-क्षेत्र शीत-स्पर्श परिणत छै, तिहा अन्यत्र सर्व उप्ण-स्पर्श परिणत छै। ते पायछा नां नरकावामा ना नारक घणा शीतयोनिया उप्ण वेदना वेदै छै अने जे पायछे नरकावासा उपपात-क्षेत्र उप्ण-स्पर्श परिणत छै, तिहा अन्यत्र सर्व क्षेत्र शीत-स्पर्श परिणते। ते पायछा नां नरकावासा ना नारक उप्णयोनिया शीत वेदना वेदै छै। ते माटे पंकप्रभा में घणा नारकी शीत योनिया छै।

नथा धूमप्रभा में घणा उपपातक्षेत्र उप्ण-स्पर्ध परिणत छै, तिहा नारक घणा उप्णयोनिया शीत वेदना वेदै छैं। अने जे पाथहें नरकावासे थोटा उपूरात-क्षेत्र शीत-स्पर्श परिणत छै—ितहा अन्य क्षेत्र मयं उप्ण स्पर्श परिणत छै। तिहा ना थोटा नारक शीतयोनिया उप्ण वेदना वेदै छैं। ते माटै धूमप्रभा में घणा नारक उप्ण-योनिया जीत वेदना वेदै छैं अने थोड़ा नारक शीत-योनिया ते उप्ण वेदना वेदै छैं।

अनै छठी सातमी नारकी मे सर्व उष्णयोनिया धीत वेदना वेदै छै, ते माटै नारकी मे शीत योनि छै, उष्ण योनि छै, पिण शीतोष्णा योनि नयी।

शीतादि योनि प्रकरणार्थं संग्रह बिल बहुलपण करी — सर्व देवता अने गर्भेज नी शीतोष्णा योनि । अने तेउकाय नी उष्ण योनि । अने नरक ने विषे शीत अने उष्ण ए वे योनि । शेप ने विषे तीन् योनि ।

भते ! योनि केतला प्रकार नी कहिये ? गोतमा । योनि नीन प्रकार नी कहिये —सचित्त, अचित्त और मिश्र ।

जेह उपपात क्षेत्र ममग्रपणं जीव-परिगृहीत हुवै, ते सचित्त योनि किह्यै। जे उपपात क्षेत्र सर्वथा जीव रहित हुवै ते अचित्त योनि किहयै। उपपात क्षेत्र ना पृद्गल केतलाइक जीव-परिगृहीत हुवै अने केतलाइक जीव-रहित हुवै ते मिश्र योनि किहयै।

वित सिचतादि योनि प्रकरणार्थं सग्रह वहुलपणे इम-नारकी देवता नी अचित योनि अने गर्भेज नी मिश्र, थेप ने विषे तीनू।

३३. एव जोणीपदं निरवसेसं भाणियव्वं । (म० १०११)
योनिपदं च प्रज्ञापनाया नवमं पदं (वृ० प० ४६६)
वा०—रत्नप्रभाया मकंराप्रभायां वानुकाप्रभाया च
यानि नैरियकाणामुण्यानक्षेत्राणि नानि सर्वाण्यपि गीतस्पर्वंपरिणामपरिणतानि, उपपातक्षेत्रव्यतिरेकेण चान्यत्सर्वंपपि तिमृष्विषि पृथिवीपूष्णस्पर्वंपरिणामपरिणत
तेन तत्रत्या नैरियका. शीतयोनिका उष्णा वेदनां
वेदयन्ते ।

पक्रमाया वहून्युपपातक्षेत्राणि शीतस्यगंपरिणामपरिणनानि स्तोकान्युष्णस्यशंपरिणामपरिणनानि येषु
च प्रस्तटेषु येषु च नरकावामेषु शीतस्यशंपरिणामान्युपपातक्षेत्राणि तेषु तद्व्यतिरेकेणान्यत्मर्वमुष्णस्यगंपरिणामं येषु च प्रस्तटेषु येषु च नरकावामेषु उष्णस्यशंपरिणामानि चपपातक्षेत्राणि तेषु तद्व्यतिरेकेणान्यत्सर्वं धीतस्यगंपरिणामं तेन तत्रत्या बहवो नैरियकाः
शीतयोनिका चष्णां वेदना मेदयन्ते स्तोका उष्णयोनिकाः धीतवेदनामिति ।

पूमप्रभायां बहून्युपपातक्षेत्राणि उष्णस्पर्धंपरिणामपरिणतानि स्तोकानि शीतस्पर्धंपरिणामानि, वेषु च
प्रस्तटेषु येषु च नरकावामेषु चोष्णस्पर्शंपरिणामपरिणतानि उपपातक्षेत्राणि तेषु तद्व्यतिरेकेणान्यरसर्वं शीतपरिणाम येषु च शीतस्पर्शंपरिणामान्युपपातक्षेत्राणि
तेष्यन्यदुष्णस्पर्शंपरिणामं, तेन तत्रत्या वहवो नारका
उष्णयोनिकाः शीतवेदना वेदयन्ते स्तोकाः शीतयोनिका
उष्णवेदनामिति ।

तम - प्रभाया तमस्तम - प्रभायां च ः ः तत्रत्या नारका उप्णयोनिका शीतवेदना वेदियतार इति । (प्रभापना, वृ० प० २२४)

धीतादियोनिप्रकरणार्थं संग्रहस्तु प्रायेणैयं — सिक्षोसिणजोणीया सन्वे देवा य गटभवनकती। उतिणा य तेउकाए दुह निरए तिविह सेसेसु।

(वृ० प० ४६६)

'कितिविहा ण भंते ! जोणी पन्नता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पन्नता, तं जहा—सिंच्यता अचिता मीसिया' (वृ० प० ४६६) सिंचता जीवप्रदेशसंवद्धा, अचिता सर्वथा जीविव-प्रमुक्ता, मिश्रा जीविविष्रमुक्ताविप्रमुक्तस्वरूपा । (प्रज्ञापना वृ० प० २२६)

सिचत्तादियोनिप्रकरणार्थसग्रहस्तु प्रायेणवम्— अचित्ता रालु जोणी नेरइयाण तहेव देवाण मीसा य गव्भवासे तिविहा पुण होई सेसेसु। (वृ० प० ४६६) जे नारक देवता रे उपपात क्षेत्र सूक्ष्म एकेंन्द्रिय जीव नो संभव छै, तथा -पोलाड़ मे वादर वायुकाय नो संभव छै, तो पिण नारक देवता ना उपपात क्षेत्र ना पुद्गल समूह किणही जीवे करि परिगृहीत निह ते भणी देवता नारक नै अचित्त योनि किंदिये।

अनै गर्भवास योनि मिश्र—शुक्र शोणित पुद्गल तो अचित्त अनै गर्भ नो ठिकाणो सचित्त ना भाव थी। शेप पृथ्वीन्यादि सम्मुन्छिम तिर्यंच मनुष्य नो जीव ग्रहण कीद्या क्षेत्र ने विषे उत्पत्ति ते सचित्त। जीव ग्रहण अणकीद्या क्षेत्र ने विषे उपजवो ते अचित्त। अनै उभग्र रूप क्षेत्र ने विषे उपजवो, ते मिश्र। इम त्रिविद्यापि योनि इत्यर्थः।

मते ! योनि केतला प्रकार नी कहियै ?

गोतम । योनि तीन प्रकार नी कहियै—सबुडा जोणी, वियडा जोणी, संबुड-वियडा जोणी।

उत्पत्ति स्थानक सवृत—आच्छादित हुवै ते सवृत योनि कहियै। उत्पत्ति स्थानक विवृत—उघाडो हुवै ते विवृता योनि । काइक सवृत काइक विवृत हुवै, ते सवृत-विवृता योनि ।

संवृतादि योनि प्रकरणार्थं सग्रह वहुलपणे इम—एकेंद्रिय ने सवृता योनि । तथा सभाव थकी एकेंद्रिय ने उत्पत्ति-स्थानक स्पष्टपणे ओलखाये नहीं, ते माटै संवृता योनि ।

नारक नै पिण संवृता योनि हीज जे कारण थकी नरक निष्कुटा ते कुभी सवृत ते ढक्या गवाक्ष सरीखी छै। एतले नारकी ने उत्पत्ति-स्थानक कुभी- ढाक्या गोखें ने आकार छै। तेहने विषे ऊपना ते देह वध्या छता तेह थकी पडें शीत निष्कुट थकी उष्ण क्षेत्र ने विषे पडें अने उष्ण निष्कुट थकी शीत क्षेत्र ने विषे पडें।

अने देवता नी पिण सवृत हीज योनि कहिये। जे भणी देव-सेज्या नै विषे देवता ऊपजे, देव-दूष्य वस्त्रे करी ते सेज्या ढाकी। ते सेज्या ने विषे ऊपजता आगुल ने असख्यातमे भाग अवगाहना देवता नी जाणवी।

विकलेंद्री वियडा योनि छै। तेहना उत्पत्ति-स्थानक जलाशयादि प्रत्यक्ष दीसै छै। समुन्छिम पर्चेद्रिय तियँच ने अने समुन्छिम मनुष्य ने इमज़ विवृता योनि कहिवी। विवृता योनि विशेषणपणे उत्पत्ति-स्थानक जलाश्रय प्रमुख प्रगट योनि दीसै छै। शेष वे योनि नथी।

अने गर्भण तिर्यञ्च अने मनुष्य ने सवृता योनि नथी, विवृता योनि पिण नथी। सवृत-विवृता योनि छै। गर्भ अभ्यतर सरूप जणाए नही, वाह्य रूपै उदरवृद्ध्यादिक प्रत्यक्ष दीसे छै ते माटै गर्भण ने सवृत— विवृता योनि छै।

भते ! योनि केतला प्रकार नी किहये ? गोतम ! योनि तीन प्रकार नी किहये — कुर्मोन्नता, शखावर्त्ता, वशीपत्रा।

त्रिण भेदे योनि परूपी ते कहै छै—काछवा नी पीठ नी पर उन्नत हुवै ते कुर्मीन्नता योनि । तिण मे तीर्थंकर, चक्रवर्ती, वासुदेव, वलदेव उत्तम पुरुप गर्मे अपजे । उदर-पृद्धि न हुवै गूढगर्भपणे करी ।

सख नी पर आवर्त्त हुवै जिहा ते शखावर्त्त योनि । स्त्री रत्न ने घणा जीव संबद्ध पुद्गल आवे, गर्भपणे उपजे पुष्ट हुवै, विशेप थी पुष्ट हुवै, पिण नीपजे सत्यप्येकेन्द्रियसूक्ष्मजीवनिकायसम्भवे नारकदेवानां यदुपपातक्षेत्र तन्न केनचिज्जीवेन परिगृहीतिमत्य-चित्ता तेपा योनि (वृ० प० ४९६)

गर्भवासयोनिस्तु मिश्रा शुक्रशोणितपुद्गलानामित्ताना गर्भाशयस्य सन्तेतनस्य भावादिति, शेपाणा पृथिव्या-दीना संमूर्च्छनजाना च मनुष्यादीनामुपपानक्षेत्रे जीवेन पिरगृहीतेऽपरिगृहीते उभयरूपे चोत्पत्तिरिति विविधाऽ-पि योनिरिति । (वृ० प० ४६७) 'कितिविहा ण भते ! जोणी पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पन्नत्ता, त जहा—सवुडा जोणी वियडाजोणी संवुडिवयडाजोणी' (वृ० प० ४६७)

संवृत्तावियोनिप्रकरणार्थसंग्रहस्तु प्राय एवम्—
एकेन्द्रिया अपि संवृतयोनिका तेपामिप योने. स्पष्टमनुपलक्ष्यमानत्वात् (प्रज्ञापना वृ० प० २२७)
नारकाणामिप सवृत्तेव यतो नरकिनष्कुटा सवृतगवाक्षकल्पास्तेपु च जातास्ते वर्द्धमानमूर्त्तयस्तेम्य पनित्त
शीतेभ्यो निष्कुटेभ्य उष्णेषु नरकेषु उष्णेभ्यस्तु
शीतेष्वित्त (वृ० प० ४६७)

देवानामिप सवृतैव यतो देवशयनीये दूष्यान्तरितोऽ-गुलासस्यातभागमात्रावगाहनो देव उत्पद्यत इति । (वृ० प० ४६७)

द्वीन्द्रियादीना चतुरिन्द्रियपर्यन्ताना समून्छिमितयंक्-पञ्चेन्द्रियसंमून्छिममनुष्याणा च विवृता योनि. तेपा-मुत्पत्तिस्थानस्य जलाशयादे स्पष्टमुपलभ्यमानत्वात्। (प्रज्ञापना वृ० प० २२७)

गर्भव्युत्कान्तिकतियंवपञ्चेन्द्रियगर्भव्युत्कान्तिकमनुष्याणा च सवृतिववृता योनि , गर्भस्य सवृतिववृत- रूपत्वात्, गभो ह्यन्त स्वरूपतो नोपलभ्यते वहिस्तूदर-वृद्ध्यादिनोपलक्ष्यते इति । (प्रज्ञापना वृ० प० २२७) कतिविहा ण भते ! जोणी पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पन्नत्ता, त जहा—कुम्मुन्नया सप्या-वत्ता वंसीपत्ता

कूर्मपृष्ठिमवोन्तता कूर्मोन्तता (प्रज्ञापना वृ० प० २२८) ""कुम्मुण्णयाए ण जोणीए उत्तमपुरिमा गट्ये वनक-मित त जहा — अरहता चनकवट्टी वलदेवा वासुदेवा (पण्ण० ६।२६)

शंखस्येवावर्ती यस्या. सा शयावर्ता

(प्रज्ञापना वृ० पर्व २२८)

ते योनि माहि जे जीव ठपजै ते मर्रज। नीकलिया ने मार्ग मिलै नही अने वृद्धि पामी न मकै ते भणी हत-गर्भ योनि कहियै। ते स्त्री रतन नै बीजो पुरुष भोगवी न सकै। चकवर्ती नै इज भोग में आवै।

वंशी नां पत्र नै आकारै हुवै ते वणीपत्रा योनि । घणी मनुष्यणी स्त्री नै हुवै । ते वंणीपत्रा योनि नें विषे घणा गर्भ अपत्रमै, सक्रमै, गर्मपणै कपजै । पृथग-जना प्राकृतजना इत्यथं: ।

# सोरठा

- ३४. पूर्वे योनी उक्त, योनिवंत जीवां तणै। वेदन जिन-वच युक्त, कहियै छै हिव वेदना॥
- ३५. \*हे प्रभु । वेदना किने प्रकारे ? जिन कहै तीन प्रकारो । शीत वेदना उप्ण वेदना, शीतोष्णा वेदना घारो ॥
- ३६ पन्नवण वेदन पद पैतीसम, जाव नारक स्यूं भदंतो ! दुख-वेदन के सुख नी वेदन, के अदुख असुख वेदंतो ?
- ३७. जिन कहै दुख-वेदन पिण वेदै, सुख-वेदन पिण वेदै ॥ अदुख असुख वेदन पिण वेदै, भाखी ए त्रिहुं भेदै ॥

#### सोरठा

- २८. केवल दुख निहं होय, विन केवल पिण सुख नहीं। अदुख असुख अवलोय, अर्थ पन्नवणा में इसो।। वा॰—वेदना-पद ते पन्नवणा नां पैतीसमा पद नै विषे कह्यो छै ते देखाई कै—
- ३६. नारक हे भगवंत । स्यू वेदै जीत वेदना। तथा उप्ण वेदंत, कै जीत उप्ण वेदैति कै ?
- ४०. जिन कहै शीत वेदंत, एम उष्ण पिण वेदिये। पिण ते नारक जंत, शीतोष्णा वेदै नथी।।
- ४१. असुरकुमार सुजोय, वेदै ए त्रिहुं वेदना। एवं जावत सोय, कहिवुं वैमानिक लगै।।

था० — इहां वृत्ति में कह्यो — नारक ने शीत वेदना अने उष्ण वेदना, पिण शीतोष्णा वेदना नथी। एहनो पाठ लिख्यो ते तो शुद्ध। एवं वेदना पद भणवो। अने आगल कह्यो — एवमसुरादयो वैमानिकाता: असुरकुमार थी वैमानिक तक इमज जाणवो, एहवो कह् घुं। "पन्नवणा सूत्रे नारक से प्रथम दोय वेदना कही

\*लय: कुंकुवर्णी हुंती रे देही

संखावत्ता णं जोणी इत्यिरयणस्म मधावत्ताए णं जोणीए बहवे जीवा य पोगमा य ववकमंति विउपक-मंति चयंति, उवचयंनि नो चेव ण णिप्कञ्जति। (पण्ण ६।२६)

शसावतीयां योनी बहुवो जीवा जीवसंबद्धापुद्गलाण्-चावक्रमन्ते—आगच्छंति, च्युत्क्रामन्ति—गर्मनयोत्पद्यन्ते तया चीयन्ते—मामान्यतप्रचयमागच्छन्ति, उपचीयंते —विशेषत उपचयमायान्ति परं न निष्यद्यन्ते अति-प्रवलकामान्निपरितापतो ध्वंसगमनादिति

(प्रज्ञापना वृ० प० २२८)

मंयुक्तवंशीपत्रद्वयाकारत्वाद् वंशीपत्रा

(प्रज्ञा० वृ० प० २२८)

वसीपत्ता ण जोणी पिहुजणन्स, वंगीपत्ताए णं जोणीए पिहुजणा गन्भे वक्कमित । (पण्य ६।२६)

- ३४. अनन्तरं योनियस्ता, योनिमतां च वेदना भवन्तीति तत्प्ररूपणायाह— (वृ० प० ४६७)
- ३५. कतिविहा णं भंते ! वेयणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा वेयणा पण्णत्ता, तं जहा—मीया, उमिणा, सीबोसिणा ।
- ३६. एवं वेयणापदं (प० ३५।११) माणियव्य जाव— (ग० १०।१६) नेरइया णं भते ! किं दुक्यं वेयणं वेदेंति ? सुहं वेयण वेदेंति ? अदुक्यममुहं वेयणं वेदेंति ?
- ३७. गोयमा ! दुक्खं पि वेयणं वेर्देति, सुहं पि वेयण वेर्देति, अदुक्खमसुहं पि वेयणं वेर्देति ।

(घा० १०।१७)

वार व्यापायं भाणियव्वं ति वेदनापदं च प्रज्ञापनायां पञ्चित्रशत्तमं तच्च लेशतो दश्यंते । (वृ० प० ४६७)

वाo—नेरइयाणं भंते ! कि मीय वेयण वेयति ? गोयमा ! सीयंपि वेयण वेयति एव उत्तिणपि णो मीओमिण एव मुरादयो वैमानिकान्ता.

(वृ० प० ४६७)

असुरकुमार मे तीन कही। एवं जाव वेमाणिया इम कह्युं। ते माटे सूत्रे कहा, ते सत्य अने सूत्र थी न मिले ते वृत्ति विरुद्ध जाणवी।" (ज० स०) ४२. इम वेदन च्यार प्रकार, द्रव्य खेत्र काल भाव थी। ए चिहु नो विस्तार, किहयै छै ते साभलो।। ४३ नारक आदिक तास, पुद्गल द्रव्य सवव थी। वेदन द्रव्य विमास, चउवीसू दडक विपे।। ४४ नारक आदि विचार, क्षेत्र तणाज संवध थी। क्षेत्र वेदना घार, चउवीसू दडक विषे॥ ४५ नारक आदि कहेह, तसु भव काल सवघ थी। ्दंड्क चउवीसू विषे॥ काल वेदना लेह, ४६ कर्म वेदना जेह, तेहनां उदय थकी जिके। भाव वेदन सहु दडके।। वेदन प्रति वेदेह, तीन, प्रथम शरीरी ४७ तथा वेदना मानसिक फुन चीन, तीजी शरीर-मानसिक।। ४८. नारक में त्रिहुं पाय, एव जाव वेमाणिया। विशेप ताय, एकेद्री विकलेन्द्रिये ।। ४६ पाच थावर में पेख, फुन तीनू विकलेन्द्रिया। वेदै एक, ज्ञारीरिक वेदन तसु॥ ५० तथा वेदना तीन, घुर साता नी वेदना। द्वितिय असाता चीन, तीजी सात-असात नी।। ५१. सहु ससारी मांय, आखी ए त्रिण वेदना। निमल विचारो न्याय, श्री जिन वचन प्रमाण छै।। ५२ तथा वेदना तीन, प्रथम दुख नी वेदना। द्वितीय सुख नी चीन, तृतिय अदुख-असुख तणी।। ५३. सर्व ससारिक जात, वेदै ए त्रिहु वेदना। सुख-दुख सात-असात, तिणमें एह विशेष छै॥ कर्म वेदनीनांज दल। ५४. अनुक्रमै करि जेह, उदय पामिया तेह, अनुभव सात असात ही।। ५५ फुन सुख-दु ख कहाय, अन्य जन उदीरतां छता। वेदनी ताय, अनुभवरूपज जाणजू।। ५६. तथा वेदना सोय, दाखी दोय प्रकार नी।

होय, औपक्रमिकी दूसरी ।।

वेदन वेदै सोय, आतापन लोचादि जिम।।

वा उदीरणा पाम, उदय आण वेदै तिको।।

द्वितीय अनिदा सिंघ, तेह अचित्तवती भणी।।

मनुष्य व्यतरा वादि, वेदै ए विहुं वेदना।।

औपक्रमिकी

दश-असुरादि, पचेद्री तियँच फून।

५८. औपक्रमिकी ताम, स्वय उदय आव्यां प्रतै।

५६. पचेद्रिय तिर्यच, विल मनुष्य में ए विहु।

६० फुन वेदन द्विविध, निदा कहिये चित्तवती।

सच,

होय, अगीकार पोर्त करी।

आभ्पुपगमिकी

शेष दडके

६१ नारक

५७ आम्युपगमिकी

४२. 'एवं चउब्विहा वेयणा दव्वको सेत्तको कालको (वृ० प० ४६७) ४३. तत्र पुद्गलद्रव्यमम्बन्धात्द्रव्यवेदना (वृ० ५० ४६७) ४४. नारकादिक्षेत्रसम्बन्धात्क्षेत्रवेदना (वृ० प० ४६७) ४५. नारकादिकालसम्बन्धात्कालवेदना (वृ० प० ४६७) ४६. शोककोधादिभावसम्बन्धाद्भाववेदना, सर्वे संसारिण-श्चतुर्विधामपि (वृ० प० ४६७) ४७. तथा 'तिविहा वेयणा-सारीरा माणसा सारीरमाणसा। (वृ० प० ४६७) ४८,४६. समनस्कास्त्रिविधामपि असञ्ज्ञिनस्तु शारीरीमेव (वृ० प० ४६७) ५०. तथा 'तिविहा वेयणा साया असाया सायासाया । (वृ० प० ४६७) ५१. सर्वे ससारिणस्त्रिविद्यामपि (वृ० प० ४६७) ५२. तथा तिविहा वेयणा—दुक्खा सुहा अदुक्खमसुहा (वृ० प० ४६७) ५३ सर्वे त्रिविधामपि, सातासातसुखदु.खयोश्चाय विशेषः (वृ॰ प॰ ४६७) ५४ सातासाते अनुक्रमेणोदयप्राप्ताना वेदनीयकर्मेपुद्गला-नामनुभवरूपे (बृ० प० ४६७) ५५ सुखदु खे तु परोदीयं माणवेदनीयानुभवरूपे (वृ० प० ४६७) ५६. तथा 'दुविहा वेयणा-अन्भुवगमिया उवक्कमिया (वृ० प० ४६७) ५७ बाम्युपगमिकी या स्वयमभ्युपगम्य वेद्यते यथा साधव केशोल्लुञ्चनातापनादिभिर्वेदयन्ति (वृ० प० ४६७) ५८ औपक्रमिकी स्वयमुदीर्णस्योदीरणाकरणेन तु चोदयमुपनीतस्य वेद्यस्यानुभवात् (वृ० प० ४६७) ५६. द्विविधामपि पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्याश्च शेपास्त्वौप-कमिकीमेवेति (वृ० प० ४६७) ६० तथा 'दुविहा वेयणा--निदा य अनिदा य' निदा--चित्तवती विपरीता त्वनिदेति (वृ० प० ४६७) ६१-६४ सज्ञिनो द्विविधामसज्ञिनस्त्विनिदामेवेति (बृ० प० ४६७)

६२ ए जे सन्नीभूत, निदा वेदना तेहने। असन्नीभूत सजूत, वेदे अनिदा वेदना।। ६३ सगला पृथ्वीकाय, असन्नी तसु निदा नथी। अनिदा वेदे ताय, इम जावत चर्डारिंद्रया।। ६४. अमर जोतिपी जोय, फुन मानिक देवता। तसु पिण वेदन दोय, न्याय तास निसुणो हिवै॥ ६५. माई मिथ्यावत, वेदे अनिदा वेदना। जेह निदा वेदत, अमाई समद्प्टि ते।।

वा०—इहा निदा ते नितरा—अतिही तथा निण्चय सम्यक् प्रकारे दिये चित्त जे बेदना ने विषे ते निदा सम्यक् विवेकवती इत्यथं। एह थी अनेरी ते अनिदा। चित्त विकला चित्त रहित सम्यक् विवेक रहित। नेरउया सन्नीभूत ते निदा बेदना वेदैं। १० भवनपित, व्यंतर पिण इमिहज कहिवा। पाच थावर, तीन विकलेंद्री अनिदा वेदना वेदैं। तियेंच पचेंद्री ने सन्नी मनुष्य ते निदा बेदना वेदैं, असन्नी ते अनिदा वेदणा वेदैं। जोतिपी, वैमानिक तिहा जे मायावंत मिथ्यावृष्टि ऊपना छैं, ते मिथ्यावृष्टि माटे तत्त्व विराधना यकी अज्ञान तप थकी अम्हे इहा ऊपना छा इम सम्यक् प्रकारे न जाणे ते माटे अनिदा वेदना वेदैं। अने जे माया रहित सम्यक् दृष्टि ऊपना छै ते सम्यग् वृष्टिएणे करी यथावस्थित स्वरूप जाणे ते माटे निदा वेदना वेदै छै—विल इहा पननवणा ने विषे द्वार गाया छै तिका इम—

सीता य दन्त्र सारीरा सात तह वेदणा हवति दुक्खा। अञ्जूवगमोवककिमया निदा य अनिदा य णायन्त्रा ।।

अधिकृत वाचना ने विषे गाथा पूर्वार्द्ध मे कह्यो तिकोहीज दुख पर्यंत द्वार नो कथन कियो—वेयणापय भाणियव्वं जाव नेरडयाण भते । कि दुक्खिमत्यादि । एतो ए अधिकृत वाचना ने विषे भाख्यो ते कह्युं। अने अन्य वाचना ने विषे संपूर्ण गाथा कही । ते भणी तिहां अन्य वाचना ने विषे पिण कह्यो निदा य अनिदा य वज्ज ।

६६ वेद्रन कर्म प्रसूत, तेह तणां प्रस्ताव थी।
 वेदन हेतूभूत, प्रतिमा प्रति कहियै हिवै॥
 ६७ \*हे भगवत । मासिकी प्रतिमा-प्रतिपन्न जे अणगारो रे।
 स्नानादिक परिकर्म वर्जवै, छाडचो तनु-शृगारो रे।।

६८. त्यक्तदेह उपसर्ग सहतो, जिम दगाश्रुतखंघ माह्यो रे। यावत आज्ञा करि आराधक, सहु विस्तार कहायो रे॥

# सोरठा

६१. आराधना इम होय, जिन आज्ञा करिने कह्यो। ते माटे अवलोय, आराधन कहिये हिने॥ ७०. \*भिक्षु अन्यतर एक अकारजसेवी विण आलोयो रे। काल कियां नहिं तास आराधन, आलोया सुध होयो रे।।

- ६७. मासियण्ण भिक्खुपिडमं पिडवन्तस्स अणगारस्स, निच्चं वोसटुकाए। 'वोसट्ठे काए' सि व्युत्सृष्टे स्नानादिपरिकर्म्मवर्जनात्। (वृ० प० ४६८)
- ६८. चियत्तदेहे जे केइ परीसहोवसग्गा उप्पज्जिति जहा दसाहि (७।२६-३४) जाव (७) स्नाराहिया भवइ। (घ० १०।१८)
- ६६. आराहिया भवतीत्युक्तमयाराधना. यथा न स्याद्यथा च स्यात्तदृश्येयन्नाह— (वृ० प० ४६=)
- ७०. मिनखू य अण्णयर अिकच्चट्ठाण पिडसेवित्ता से ण तस्स ठाणस्स अणानोइय-पिडक्कते काल करेइ नित्य तस्स आराहणा, से ण तस्स ठाणस्स आलोइयपिड-क्कते काल करेइ अत्यि तस्स आराहणा।

(श० १०।१६)

लय : कुंकुवणी हुंती रे देही

१ पन्नवणा ३५।१

६६. वेदनाप्रस्तावाद्वेदनाहेतुभूता प्रतिमां निरूपयन्नाह— (वृ० प० ४६७)

- ७१. पडिसेवित्ता सोय, वाचनातरे इम कह्युं। पडिसेविज्जा होय, प्रतिसेव्य सेवी करी।।
- ७२. \*भिक्षु अन्यतर एक अकारजसेवी इम मन घारै रे। मरण अवसरे ए स्थानक ने, आलोवीस जिवारै रे॥
- ७३ तेह अकरवा जोग स्थानक नै, आलोया विण कालो रे। कीधो तास आराधन नाही, दाखै दीनदयालो रे॥
- ७४ तेह अकरवा जोग स्थानक नै, अत समय आलोई रे। काल किया तेहने आराधना, ए जिन वच अवलोई रे।।
- ७५ भिक्षु अन्यतर एक अकारजसेवी एम विचार रे। जे श्रावक पिण काल करीने, सुरलोके संचार रे।।
- ७६. तो हूं स्यू व्यतर नहीं होइस, इम चितव ते स्थानो रे। आलोया विण काल कियो तो, आराधक मित जानो रे।।
- ७७. ते स्थानक आलोइ पडिकमी, काल कियो ते सतो रे। आराघक कहिये छै तेहने, सेव भते । सेव भतो । रे॥ ७८ दशम शते ए द्वितीय उद्देशक, वे सौ अठारमी ढालो रे। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय प्रसादे, 'जय-जश' मंगलमालो रे॥ दशमशते द्वितीयोद्देशकार्थ ॥१०।२॥

- ७१. 'पिंडसेवित्त' ति अकृत्यस्थान प्रतिपेविता भवतीति गम्य वाचनान्तरे त्वस्य स्थाने 'पिंडसेविज्ज' ति दृश्यते (वृ० प० ४६ )
- ७२. भिक्खू य अण्णयरं अिकच्चट्ठाण पिडसेवित्ता तस्स ण एव भवइ—पच्छा वि ण अहं चरिमकालसमयिस एयस्स ठाणस्स आलोएस्सामि
- ७३. से ण तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिनकते काल करेइ नित्य तस्स आराहणा
- ७४. से ण तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कते काल करेइ अरिय तस्स आराहणा। (श० १०।२०)
- ७५ भिक्सू य अण्णयर अिकच्चहाण पिडसेवित्ता तस्स ण एवं भवइ—जइ ताव समणोवासगा वि कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति ।
- ७६. किमंग ! पुण अह अणपिन्नियदेवत्तणिप नो लिभ-स्सामि त्ति कट्टु से ण तस्स ठाणस्स अणालोइय-पिडवकते काल करेइ नित्य तस्स आराहणा,
- ७७ से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ अत्थि तस्स आराहणा। (श० १०।२१) सेव भते! सेव भते। ति। (श० १०।२२)

# ढाल: २१६

# दुहा

- १. द्वितीय उद्देशक अत मे, देवपणो आख्यात । तृतीय उद्देशक हिव कहूं, अमर तणो अवदात ।।
- २. नगर राजगृह जाच इमें, गौतम एम वदत। आत्म-ऋद्धि स्त्र शक्ति करी, सुर सामान्य भदत!
- ३ जाव च्यार अरु पच जे, सामान्य सुर ना ताय! वासतर प्रति लघ नै, वीतिक्कते ते जाय?
- ४. च्यार पच वासा थकी, उपरत सुर सामान। जावै पर शक्ती करी ? जिन कहै हता जान।।

- द्वितीयोहेशकान्ते देवत्वमुक्तम्, अथ तृतीये देवस्वरूप-मिभ्रधीयते (वृ० प० ४६८)
- २. रायिगिहे जाव एव वयासी—आइड्ढीए ण भते । देवे 'आइड्ढीए ण' ति आत्मद्वर्घा स्वकीयशक्त्या (वृ० प० ४६६)
- ३. जाव चत्तारि, पंच देवावासतराइ वीतिक्कंते 'देवे' ति सामान्य. .... लिघतवान्

(वृ० प० ४६६)

४. तेण पर परिड्ढीए ? हता गोयमा !

लयः कुंकुवणी हुंतीं रे देही

- ५. एव असुरकुमार पिण, णवरं इतो विशेख।
   लघे वासा असुर नां, शेप तिमज सपेख।।
   ६. इम इण अनुक्रमे करी, यावत थणियकुमार।
   इम व्यतर ने जोतिपी, वैमानिक सुविचार।।
   \*प्रश्न गोतम तणां ए। (ध्रुपद)
- ७. प्रभु दिव अल्प ऋदि नो घणी ए, महिद्धिक सुर विच होय। जावै ? तव जिन कहै ए, अर्थ समर्थ निहं कोय।।
- द. प्रभु । देव सरीखी-ऋदि नों घणी ए, सम ऋदि सुर विच होय। जावै ? तव जिन कहै ए, अर्थ समर्थ निंह कोय।। ६. ते देव प्रमादी हुवै वली ए, तो सरिखी ऋदिवत देव। तास विच में थई ए, जावै छै स्वयमेव।।
- १०. ते देव विमोह उपजायने ए, जावा समर्थ भगवत । धूअर प्रमुख करी ए, ग्रधकार करि जत ?

वाo — धूअर प्रमुख अन्धकार करिवे करी मोह प्रति उपजावी ने ते अण-देखता छता ईज देव प्रते उल्लंधी ने जाय।

- १४. अथवा घूअर प्रमुखे करी ए, अघकार विण कीघ। तास विमोह्या विना ए, जावा समर्थ सीघ?
- १२. जिन भाखे विमोह्यां विना ए, जावा समर्थं न कोय। विमोह उपजाय ने ए, जावा समर्थं होय।।
- १३. ते प्रभु । स्यू पहिलां थको ए, विमोह उपजाई जाय। कै पहिला उल्लघ ने ए, पछै विमोह उपाय?
- १४ जिन कहै पहिला विमोह ने ए, पछ उलघी जाय। पिण पहिला उल्लघ ने ए, पछ विमोह नांय।।
- १५. प्रभु ! महाऋदिवत देवता ए, अल्पऋदिवत सुर वीच। जायै मध्योमध्य थई ए ? जिन कहै हत समीच।।
- १६ ते प्रभु । स्यू विमोही करी ए, जावा समर्थ जेह। तथा विमोह्या विना ए, महद्धिकगमन करेह?
- १७ जिन भाखेँ विमोही करी ए, जावा समर्थ जाण। विल विमोह्या विना ए, समर्थ तेह पिछाण।।
- १८. ते स्यू प्रथम विमोह ने ए, पछै उलघी जाय। तथा पहिला जई ए, पछै विमोह उपाय?
- १६. जिन कहै प्रथम विमोह ने ए, पछै उलघी जाय। तथा पहिला जई ए, पछै विमोह उपाय।।
- २०. अल्प ऋदिवत असुर प्रभु ! ए, असुर महऋदिक विच होय-जावे ? तव जिन कहै ए, अर्थ समर्थ निंह कोय।।
- \*लय: छट्ठो व्रत रयणी तणो ए

- एवं असुरकुमारे वि, नवर— असुरकुमारावासंतराई, सेस त चेव
- ६. एव एएण कमेणं जाव थणियकुमारे, एव वाणमंतरे जोइसिए वेमाणिए जाव तेण पर परिड्ढीए। (श० १०।२३)
- ७. अप्पिड्ढीए णं भते । देवे महिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ? नो इणट्टे समट्टे । (श० १०।२४)
- प. सिमड्ढीए ण भते ! देवे सिमड्डियस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ? नो इणट्टे समट्टे।
- एमत्तं पुण वीइवएज्जा । (श० १०।२५)
- १०. से भते । कि विमोहित्ता पभू ?

  महिकाद्यन्धकारकरणेन मोहमुत्पाद्य अपण्यन्तमेव त

  व्यतिक्रामेदिति भाव. (वृ० प० ४६६)
- ११. अविमोहित्ता पभू ?
- १२ गोयमा ! विमोहित्ता पभू, नो अविमोहित्ता पभू। (श. १०।२६)
- १३. से भते ! कि पुन्ति विमोहित्तः, पच्छा वीइवएज्जा ? पुन्ति वीइवहत्ता, पुच्छा विमोहेज्जा ?
- १४. गोयमा । पुन्ति विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा, नो पुन्ति वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा । (श० १०।२७)
- १५ महिड्ढीए णं भते । देवे अप्पिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ? हता वीइवएज्जा । (श० १०।२८)
- १६. से भते !्रांकि विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?
- १७. गोयमा । विमोहित्ता वि पभू, अविमोहित्ता वि पभू। (श० १०।२६)
- १८. से भते ! कि पुन्वि विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुन्वि वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ?
- १६. गोयमा ! पुर्वित वा विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा, पुर्विव वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा । (श० १०।३०)
- २०. अप्पिड्ढिए ण भते । असुरकुमारे महिड्ढियस्स असुरकुमारस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ? नो इणहे समद्रे।

२१ समचे देव तणा कह्या ए, तीन आलावा तेह। असुर ना तिम इहा ए, आलावा तीन कहेह'।।
२२. अल्पऋद्विक महाऋद्विक नो ए, प्रथम आलावो पेख।
समिद्धिक समऋद्वि नो ए, दूजो आलावो देख।।
२३ महिद्धिक अल्पऋद्विक तणो ए, तीजो आलावो ताय।
समुच्चय सुर तणा ए, तेम असुर ना थाय।।
२४ वाणव्यतरा जोतिषो ए, वैमानिक इम जाण।
अगुलावा एहना ए, तीन-तीन पहिछाण।।
२५ प्रभु । देव अल्पऋद्वि नो घणी ए, महिद्धिकसुरी विच होयजावै ? तव जिन कहै ए, अर्थ समर्थ निह कोय।।

२६ प्रभु दिव सरीखी ऋद्धिनो घणी ए, समऋद्धिसुरी विच होय-जावै ? तव जिन कहै ए, अर्थ समर्थ निह कोय ॥ २७ जो प्रमादी ते देवी हुवै ए, तो तसु विच होय जाय । आलावो दूसरो ए, पूर्व कह्यो ज्यू कहाय ॥ २८ प्रभु देवता महाऋद्धि नो घणी ए,

अल्प ऋद्धि सुरी विच होय-जाव<sup> ?</sup> तव जिन कहै ए, हता समर्थ जोय।। २६ इम असुर व्यत्तर जोतिपी तणा ए, तीन-तीन आलाव। वैमानिक ना वली ए, सुर सुरी वीच कहाव ।। ३० प्रभु देवी अल्प ऋद्धिवत छै ए, महद्धिक सुर विच होय-जावे ? तव जिन कहै ए, अर्थ समर्थ निह कोय।। ३१ प्रम्<sup>।</sup> देवी सरीखी ऋद्धिवत छै ए, समऋद्धिसुर विच होय। पूर्ववत दूसरो अवलोय ॥ आलावो ३२ प्रभा देवी महाऋदिवत छै ए, अल्प-ऋदि सुर विच होय-जावै ? तव जिन कहै ए, हता समर्थ जोय।। ३३. इम असूर व्यतर जोतियी तणा ए, तीन-तीन आलाव। वैमानिक ना वली ए, देवी देव-विच ३४ प्रमु । देवी अल्प-ऋद्धिवत छै ए, महर्द्धिक देवी विच होय-जावै ? तव जिन कहै ए, अर्थ समर्थ नहि कोय।। ३५ इम सम ऋद्धि देवी समऋद्धि विचै ए, जावा समर्थ नाय। प्रमत्तपणै जो हुवै ए, तो पूर्ववत विच जाय।। ३६ स्यू देवी महाऋदिवत छै ए, अल्पऋदि देवी विच होय-जावै ? तव जिन कहै ए, हता समर्थ जोय।। ३७ इमहिज असुरकुमार ना ए, कहिवा तीन आलाव। व्यतर जोतियी तणा ए, तीन आलाव कहाव।।

२१-२३. एवं असुरकुमारेण वि तिण्णि आलावगा भाणि-यव्वा जहा ओहिएण देवेण भणिया। 'एव असुरकुमारेण वि तिन्नि आलावग' त्ति अल्पिद्धिकमहिंद्धिकयोरेक. समिद्धिकयोरन्य महिंद्धिकाल्प-द्धिकयोरपर इत्येव त्रय। (वृ० प० ४९६)

२४. वाणमतर-जोइसियवेगाणिएणं एव चेव।
(श० १०।३१)
२५. अप्पिड्ढिए ण भते । देवे महिङ्ढियाए देवीए
मज्भमज्झेण वीइवएज्जा ?
नो इणहे समहे। (श० १०।३२)
२६-२६. सिमिङ्ढिए ण भते । देवे सिमिङ्ढियाए देवीए
मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?

वेमाणियाए।

एव तहेव देवेण य देवीए य दडओ भाणियव्वो जाव

(হা০ १০।३३)

३०-३३ अप्पिड्ढिया ण भते । देवी महिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ? एव एसो वि ततिओ दडओ भाणियव्वो जाव— महिड्ढिया वेमाणिणी अप्पिड्ढियस्स वेमाणियस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ? हता वीइवएज्जा । (श० १०।३४,३५)

३४ अप्पिड्ढिया ण भते ! देवी महिड्ढियाए देवीए मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

३५ एव सिमिड्ढिया देवी सिमिड्ढियाए देवीए तहेव।

३६ महिड्ढिया वि देवी अप्पिड्ढियाए देवीए तहेव।

३७. एव एक्केक्के तिष्णि-तिष्णि आलावगा भाणियव्वा जाव—— (श० १०।३६)

१. इसके बाद अगमुत्ताणि भाग २ श० १०।२१ में 'एव जाव थणियकुमारेण' पाठ है। पर इसकी जोड नहीं है।

२. इस ढाल की गाथा २६ से २६ तक की जोड विस्तृत पाठ के आघार पर की हुई है। उसका सकेत न अगसुत्ताणि मे है और न वृत्ति मे है। इसलिए इन गाथाओं के सामने अगसुत्ताणि का सिक्षप्त पाठ ही उद्धृत किया गया है।

- ३८ वैमानिक ना पिण वली ए, तीन आलावा एम। कहूं हिव तीसरो ए, साभलज्यो घर प्रेम।। ३९. महद्धिक सुरी वेमानिक तणी ए, अल्पऋद्धि नी ताय। वैमानिक नी सुरी ए, तास विचै होय जाय।।
- ४०. ते प्रभु । स्यू विमोही करी ए, जावा समर्थ तेह। तिमज कहिवो सहू ए, पूर्वली परे जेह।।
- ४१. यावत प्रथम उलघ ने ए, पछै विमोह उपजाय। सुरी ते सुरी विचै ए, तुर्य दडक ए थाय।। ४२. दशम शते देश तीसरो ए, वे सौ गुनीसमी ढाल। भिक्षु दीर्घ रायथी ए, 'जय-जश' हरप विशाल।।

# ढाल: २२०

# दूहा

- १. पूर्वे देव क्रिया कही, विस्मयकारिणी तेह। विस्मय करि अन्य वस्तु नो, गोतम प्रश्न करेह।
- २. अश्व दोडतो हे प्रभु । 'खु खु' शब्द करत।
  ए किण कारण स्वाम जी ! भाखै तव भगवत।।
  ३ अश्व दोडता ने तदा, हृदय कालजा वीच।
  कर्कट नामैं वायू ते, उपजै कर्म कलीच।।
- ४. ते कर्कट वायू करी, अश्व दोडतो एह।
  'खु खु' शब्द करैं अछै, भाखैं जिन गुणगेह।।
  ५ पूर्व 'खु खु' रव कह्यो, ते भाषारूपेह।
  तिणसू हिव भाषा कहू, विल भाषणीयपणेह।।
  \*चतुर नर गोयम प्रश्न उदार।। (ध्रुपद)
- ६. गोतम पूछै वीर ने रे, अथ हिव हे भगवान । आश्रयणीय पदार्थ ने रे, अम्है आश्रयस्यू जान।
- ७. अम्है सुयस्यू विल अम्है ऊभो रिहस्यू धार। अम्हे विल इहा वैसस्यू, आडो होयस्यू सथार।।
- द. इत्यादिक भाषा तिका, प्रज्ञापनी पिछान । भाषा परूपण जोग छै ? ते प्रज्ञापनी जान ॥

१. अनन्तर देविक्रयोक्ता, सा चातिविस्मयकारिणीति विस्मयकरं वस्त्वन्तरं प्रश्नयन्नाह—

३६ महिड्डिया ण 'भते । वेमाणिणी अप्पिड्डियाए

४०. सा भते ! कि विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?

४१. जाव पुन्ति वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा। एए

विमोहित्ता वि पभू, अविमोहिता वि

वेमाणिणीए मज्ज्ञमज्ज्ञेण वीइवएज्जा ?

हता वीइवएज्जा।

चत्तारि दंडगा।

गोयमा । पभू। तहेव

(वृ० प० ४६६)

(ঘ০ १০।३७)

(श० १०।३८)

- २. आसस्म ण भते । घावमाणस्स कि 'खु-खु' ति करेति ?
- ३. गोयमा । आसस्स ण धावमाणस्स हिययस्स य जगस्स य अतरा एत्य ण 'कक्कडए नाम' वाए समुच्छइ । 'हिययस्म य जगयस्स य' ति हृदयस्य यकृतश्च — दक्षिणकुक्षिगतोदरावयविकोपस्य (वृ० प० ५००)
- ४. जेण आसस्स धावमाणस्स 'खु-खु' ति करेति । (श० १०।३६)
- ५ 'खु-खु' ति प्ररूपित तच्च शब्द, स च भापारूपोऽपि स्यादिति भापाविशेषान् भाषणीयत्वेन प्रदर्शयितुमाह-(वृ० प० ५००)
- ६ अह भते <sup>।</sup> आसइस्सामो 'आसइस्सामो' त्ति आश्रयिष्यामो वयमाश्रयणीय वस्तु (वृ० प० ५००)
- ७. सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो, निसिइस्सामो तुयिहुस्सामो 'सइस्सामो' ति शिवच्याम 'चिट्ठिस्सामो' ति उर्घ्व-स्थानेन स्थास्याम.'''''तुयिहुस्सामो' ति सस्तारके भविष्याम (वृ० प० ५००)
- द्र. पण्णवणी ण एस भासा ? इत्यादिका भाषा कि प्रज्ञापनी ? (वृ० प० ५००)

लय: राम पूछे सुग्रीव

वा॰ — "इहा वैमस्यू, सूवस्यू इत्यादिक अनागत काल आश्रयो कहै, जद तो निश्चयकारणी हुवै। पिण ए वर्त्तमान काल मे वैसण, सूवण का भाव, तिवारें कहै — हिवडा वेसू, शयन करू छू अथवा ए आश्रयवा जोग वस्तु हिवडा आश्रू छू, इत्यादि कह्या निश्चयकारिणी नहीं, ए वोलवा जोग छै ते माटै। ए भाषा ने प्रज्ञापनी कहियै, पिण मृषा न कहियै। वर्तमान रे समीप ए अनागत काल छै, ते माटैवर्तमान कार्य ने विषे आसइस्सामो ए अनागत नो पाठ कह्य जणाय छै।" (ज॰ स॰)

- ६. उपलक्षण पर वचन ए, ते कारण थी जाण। एहवी भाषाजात नो, पूछचो प्रश्न पिछाण।।
- १० विल भाषा नी जात नै, परूपवा योग जेह।
  पूछै वे गाथा करी, आमंत्रणी आदेह'।।
- ११ हे देवदत्त ! आमत्रणी, इत्यादिक अवधार। सत्य असत्य मिश्र नही, व्यवहार वृत्ति मभार।
- १२ आज्ञापनी कारज विषे, प्रवर्त्तावणहार। कहै अमुको कारज करो, घट कर इत्यादि विचार।।
- १३ याचणी मागे वस्तु नै, पूछणी अर्थ पूछेह। जेह अर्थ जाण्यो नही, जाणवा अर्थे जेह।।
- १४ प्रज्ञापनी सुविनीत ने, उपदेशरूप प्रयोग। निवर्त्त प्राणी-वब थकी, ते दीर्घायु अरोग।।
- १५. प्रत्याख्यानी जे हुवै, मागे तास निपेध। देण तणी इच्छा नही, मित मागो इम भेद॥
- १६ इच्छा-अनुलोमा इसी, वोलै इच्छा लार। किण कह्यो—ए कारज करा<sup>?</sup> हा, मुभ पिण रुचिकार।।
- १ आमतणी आणवणी, जायणी तह पुच्छणी य पण्णवणी।
  पच्चक्खाणी भासा, भासा इच्छाणुलोमा य।।
  अणभिग्गहिया भासा, भासा य अभिग्गहिम्म बोद्धव्वा।
  ससयकरणी भासा, वोयडमव्वोयडा चेव।।

इन दो सग्रह गाथाओं में असत्यामृषा—व्यवहारभाषा के वारह प्रकार निरूपित है। प्रज्ञापना के भाषापद में इनका निरूपण इसी प्रकार हुआ है। प्रज्ञापनी भाषा के प्रस्तुत प्रकरण में प्रासिगक रूप से ये सग्रहगाथाएं लिखी हुई थी। किसी प्रतिलिपिकार ने इनका मूलपाठ में समावेश कर दिया। उत्तरकाल में भी यह परम्परा इसी रूप में चलती रही। वृत्तिकार ने भी मूल के साथ ही इनकी व्याख्या कर दी।

अगसुत्ताणि भाग २ पृ० ४७३ मे इनको पा० टि० (४) मे उद्धृत किया है। उसी के आधार पर इनको जोड के साथ न रखकर टिप्पण मे रखा गया है।

- १०. अनेन चोपलक्षणपरवचनेन भाषाविशेषाणामेवजाती याना प्रज्ञापनीयत्व पृष्टमथ भाषाजातीना तत्पृच्छिति
   —'आमंतिण' गाहा (वृ० प० ५००)
- ११. तत्र आमन्त्रणी' हे देवदत्त । इत्यादिका, एपा च किल वस्तुनोऽविद्यायकत्वादिनिपेधकत्वाच्च सत्यादिमापा- त्रयलक्षणवियोगतश्चासत्यामृपेति प्रज्ञापनादावुक्ता (वृ० प० ५००)
- १२. 'आणवणि' त्ति आज्ञापनी कार्ये परस्य प्रवत्तंनी यथा घट कुरु (वृ० प० ५००)
- १३ 'जायणि' त्ति याचनी—वस्तुविशेषस्य देहीत्येवमार्गण-रूपा 'पुच्छणी य' त्ति प्रच्छनी—अविज्ञातस्य सदिग्धस्य वाऽर्थस्य ज्ञानार्थं तदिभयुक्तप्रेरणस्पा (वृ० प० ५००)
- १४ पण्णवणि' त्ति प्रज्ञापनी—विनेयस्योपदेशदानरूपा यथा— पाणवहाओ नियत्ता भवति दीहाउया अरोगा य (वृ० प० ५००)
- १४ 'पच्चक्खाणीभास' त्ति प्रत्याख्यानी याचमानस्या-दित्सा मे अतो मा मा याचस्वेत्यादि प्रत्याख्यानकृषा भाषा (वृ० प० ५००)
- १६ 'इच्छाणुलोम' त्ति प्रतिपादियतुर्या इच्छा तदनुलोमा
  —तदनुकूला इच्छानुलोमा यथा कार्ये प्रेरितस्य एवमस्तु ममाप्यभिष्रेतमेतदिति वच (वृ० प० ५००)

- १७. अनिभग्रहिता जेहनों, अर्थ न होवे कोय। डित्थ डिवत्थवत शब्द नो, अर्थ नही छै सोय।। १८. अभिग्रहिता भाषा इसी, अर्थ सहित छै एह। घट वस्त्रादिक नी परे, तास अर्थ समभेह।।
- १६. ससयकरणी इक तणा, अर्थ वहू अवलोय। सैंघव शब्द कह्या छता, पुरुप लवण हय होय।।
- २० वोयड व्याकृत स्पष्ट जे, लोक प्रसिद्ध पिछाण। भाषा तणो प्रयोग ह्वै, गज अश्वादिक जाण॥
- २१ अवोयड ते प्रगट नहीं, शब्द अर्थ गम्भीर। अथवा मन्मन अक्षरे, अर्थ न समभै तीर।।
- २२. ए भाषा भगवतजी । प्रज्ञापनी कहाय? स्पष्ट अर्थ प्रकटनपरा, मृषा न कहियै ताय?
- २३ जिन कहै हता गोयमा । आश्रयस्यू ए आदि। जाव मृपा भाषा नहीं, सेव भते । सेव भंते। साघि।।

### सोरठा

- २४. निरर्थक वच ओलखाय, किह्यै डित्य डिवित्य भणी। एम वतावा ताय, योग्य परूपण इम हुवै।।
  २५. इहा पृच्छा अभिप्राय, आश्रयस्यू ए आदि दे। काल अनागत माय, कार्य न थया असत्य हुवै।।
  २६ उत्तर तेहनो आर्य, निश्चयकारणी ए नही। वर्त्तमान जे कार्य-काल मभे वोल्या छता।।
  २७ वर्त्तमान रै जोग, वेसू सोवू इम कह्या। असत्य तणो न प्रयोग, इम निहं निश्चयकारणी।।
  २८. तथा पाठ में जाण, आसइस्सामो वहु वचन। इक वच विपय पिछाण, ए वहु वच किण कारणे।।
  २६ उत्तर तेहनों एह, आत्म विपे विल गुरु विपे। एकार्थ विषयेह, आज्ञा छै वहु वचन नी।।
  ३०. तिण स्यू भाषा एह, किहयै किहवा योग्य ए। तेहनु नाम कहेह, प्रज्ञापनीज जाणव्।।
- वा०—तथा आमत्रणी आदि पिण वस्तु विषे विधि ते कार्य नो करिवो अने प्रतिपेद्य ते कार्य करिवा नो निपेद्य करिवो ए बिहु नी कहिणहारी नहीं। पिण जे निरवद्य पुरुपार्थ साधनी प्रज्ञापनीज कहियै। प्रज्ञापनी कहिता ए भाषा वोलवा योग्य जाणवी।
- ३१. \*दशम शते तीजो कह्यो, दोयसौ वीसमी ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी, 'जय-जश' हरप विशाल।।

- १७. अणभिग्गहिया भासा' अनिभगृहीता—अयोनिभ-ग्रहेण योच्यते टित्यादिवत् (वृ० प० ५००)
- १८. 'भासा य अभिग्गहमि वोद्धव्वा' भाषा चाभिग्रहे वोद्धव्या-अर्थमभिगृह्य योच्यते घटादिवत्

(वृ० प० ५००)

- १६. 'ससयकरणी भास' त्ति याज्नेकार्यप्रतिपत्तिकरी सा सणयकरणी यथा सैन्धवणब्द. पुरुपलवणवाजिपु वर्त्तमान इति (वृ० प० ५००)
- २०. 'बोयड' त्ति व्याकृता लोकप्रतीतशव्दार्था (वृ० प० ५००)
- २१. 'अन्वीयड' त्ति अन्याकृता—गम्भीरणन्दार्था मन्मना-क्षरप्रयुक्ता वाडनाविभावितार्था (वृ० प० ५००)
- २२. 'पन्नवणी ण' ति प्रज्ञाप्यतेऽर्थोऽनयेति प्रज्ञापनी— अर्थकथनी वक्तन्येत्यर्थः (वृ० प० ५००) न एसा भासा मीसा ?
- २३. हता गोयमा । आसइस्सामो त चेव जाव (स॰ पा॰) न एसा भासा मोसा। सेव भते ! सेव भते ! ति । (ण० १०।४०,४१)
- २५. पृच्छतोऽयमिभप्राय —आश्रयिष्याम इत्यादिका भाषा भविष्यत्कालविषया सा चान्तरायसम्भवेन व्यभि-चारिष्यपि स्यात् (वृ० प० ५००)
- २६,२७ उत्तर तु 'हता' इत्यादि इदमत्र हृदयम् अाश्रयिष्याम इत्यादिकाऽनवद्यारणत्याद्वर्त्तमानयोगे- नेत्येतद्विकत्पर्गर्भत्वात्.... (वृ० प० ५००)
- २६,३०. गुरौ चैकार्थत्वेऽपि वहुवचनस्यानुमतत्वात्प्रज्ञा-पन्येव (वृ० प० ५००)

वा० — तथाऽऽमन्त्रण्यादिकाऽिप वस्तुनो विधिप्रतिपेधा-विधायकत्वेऽिप या निरवद्यपुरुपार्थसाधनी सा प्रज्ञा-पन्येवेति। (वृ० प० ५००)

३१. दशमशते तृतीयोद्देशक. (वृ० प० ४००)

<sup>\*</sup>लय: राम पूछे सुग्रीव

## दूहा

- १. तृतीय उद्देशक देव नी, वक्तव्यता आख्यात। तुर्य उदेशे पिण वली, अमर तणो अवदात ॥ २. तिण काले ने तिण समय, वाणिय ग्राम पिछाण। नाम नगर तस वण्णओ, दूतिपलास उद्यान।। ३ त्या श्री वीर समोसर्या, यावत परषद जान। सुण वाणी स्वामी तणी, पोंहती निज-निज स्थान ॥ ४. तिण काले ने तिण समय, वीरप्रभु नों सार। अतेवासी ज्येष्ठ वर, इद्रभूति अणगार ॥ ५ यावत जानू ऊर्द्ध करि, अघो सीस वर घ्यान। सजम तप करि आतमा भावत विचरै जान।। ६. तिण काले ने तिण समय, स्वाम तणो सुखकार। अतेवासी गुणनिलो, सामहत्थि अणगार ॥ ७ प्रकृति स्वभावे भद्र वर, जिम रोहो गुणवत ।
- द. \*सामहित्य ने तिण समय गुणघारी रे, कांइ जात—प्रवर्ती जाण।
  मुनि सुखकारी रे।
  श्रद्धा ते इच्छा कही गुणघारी रे, प्रश्न तणी पहिछाण।

यावत जानू ऊर्द्ध करि, यावत मुनि विचरत।।

श्रद्धा ते इच्छा कही गुणघारी रे, प्रश्न तणी पहिछाण। मुनि सुखकारी रे।

- श्वावत ऊठी आवियो गुणधारी रे, भगवत गोतम पास।तीन प्रदक्षिणा दे वदे गुणधारी रे, जाव करी पर्युपास।
- १० छै भगवत । चमर तणे गुणघारी रे, काइ असुर इद्र ने एव। असुर तणे राजा तणे गुणघारी रे, तायित्रसगा देव।।

## सोरठा

- ११ त्रायस्त्रिशा जाण, सुर तेतीस सुहामणा।
  मत्री तुल्य पिछाण, एहवु आख्यो वृत्ति मे।।
- १२ \*गोतम कहै हता अत्थि गुणघारी रे, ते किण अर्थे स्वाम। त्रायित्रसगा चमर ने गुणघारी रे, आप कह्या अभिराम?
- १३. इम निश्चै गोयम । कहै गुणवारी रे, हे सामहित्थ अणगार ॥ तिण कालै नै तिण समय गुणवारी रे, इण जवूद्वीप मफार ॥
- १४. भरत क्षेत्र माहे भली गुणधारी रे, काकदी अभिधान। नगरी ऋद्ध समृद्ध छै गुणधारी रे, तसु वर्णन पहिछान।।
- \*लय: मोजी तुररा रे १. अगसुत्ताणि भार २ घ० १०।४६ मे यहा 'तावत्तीसगा' पाठ है। 'तायत्तीसगा' को पाठान्तन मे लिया गया है।

- १. तृतीयोद्देशके देववक्तव्यतोक्ता, चतुर्थेप्यसावेवोच्यते (वृ० प० ५०१)
- २. तेण कालेण तेण समएण वाणियग्गामे नयरे होत्या— वण्णओ । दूतिपलासए चेइए ।
- ३. सामी समोसढे जाव परिसा पिंडगया। (श० १०।४२)
- ४. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावी-रस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूई नाम अणगारे
- प्र. जाव उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। (श० १०।४३)
- ६. तेण कालेण तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावी-रस्स अंतेवासी सामहत्यी नामं अणगारे
- ७ पगइभद्दए जहा रोहे जाव (सं॰ पा॰) उड्ढजाणू जाव विहरइ। (श॰ १०।४४)
- तए ण से सामहत्थी अणगारे जायसड्ढे
- शाव उद्घाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता भगव गोयम तिक्खुत्तो जाव पञ्जुवासमाणे एव वयासी—

(হা০ १০।४५)

- १० अत्थि ण भते । चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा । तावत्तीसगा देवा ?
- ११ 'तायत्तीसग' ति त्रायस्त्रिशा-मन्त्रिविकल्पा.

(वृ० प० ५०२)

- १२. हता अत्य । (श० १०।४६) से केणट्ठेण भते । चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार-रण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
- १३. एव खलु सामहत्यी । तेण कालेण तेण समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे
- १४. भारहे वासे कायदी नाम नयरी होत्या-वण्णओ।

- १५. तिण काकंदी नगरी विषे गुणधारी रे, मित्र हुंना नेतीस। मांहोमाहि सखाड्या गुणधारी रे, करण सहाय सरीस।।

श्रमणोपासक छै सहू मुनिराया रे, महा ऋद्वियत जगीस ॥ सुण मुनिराया रे ॥

१७. यावत अपरिभूत छ मुनिराया रे, कांड घन करिने अवलोय। सुण मुनिराया रे।

पराभवि कोई ना सकै मुनिराया रे, कांड गज सकै निह कोय ॥ स्ण मुनिराया रे ॥

- १८. जाण्या जीव अजीव ने मुनिराया रे, काङ पुन्य पाप पहिन्द्रान । वर्णव तास वखाणवो मुनिराया रे, यावत विचरे जान ॥
- १६. तेतीस सहाया तिण समय मुनिराया रे, काइ गाथापती गिणाय। कुटव तणा नायक तिके मुनिराया रे, काइ ममणोपासक ताय।।
- २०. पहिला उत्कृष्ट भाव थी मुनिराया रे, उग्र कह्या सुपकार। विल भला अनुष्ठान थी मुनिराया रे, काइ उग्र विहार आचार॥
- २१. सविग्गा शिवगमन नी मुनिराया रे, कांइ उच्छा तसु अभिलाप। तथा उरे ससार थी मुनिराया रे, भ्रमण तणो भय भास।।
- २२. सविग्गविहारी ते वली मुनिराया रे, काइ सविग्ग तमु अनुण्ठाण । क्रडे अनुण्ठाने रता मुनिराया रे, काइ पूरव काल पिछाण ॥
- २३ पछै पासत्था ते थया मुनिराया रे, काड ज्ञान दर्शन थी बार। बाहिर देश चारित्र थकी मुनिराया रे,
- काड सम्यनत्व विरित्त निवार ॥ २४ पासत्थिवहारी ते थया मुनिराया रे, काइ छेहडा लग पिण जाण । पासत्थिपणो मूक्यो नहीं मुनिराया रे, काइ एहवा मूड अयाण ॥
- २५ ओसन्ना थाका नी परं मुनिराया रे, काड खेदातुर जिम जेह। पवर भला अनुष्ठान थी मुनिराया रे, काइ थया आलसू तेह।।
- २६. वले ओसन्नविहारिका मुनिराया रे, कांड छेहडा ताइ ताय। शिथिलाचारी ते थया मुनिराया रे, काइ पाछा मडिया नाय।।
- २७ वले कुशीला ते थया मुनिराया रे, काइ ज्ञानादिक गुण मार। तेह तणा आचार ने मुनिराया रे, विराधना अधिकार॥
- २८ वले कुगीलविहारिका मुनिराया रे, काइ छेह्टा लग पहिछाण। ज्ञानादिक आचार ना मुनिराया रे, अधिक विराधक जाण।।

- १५, तत्य ण कायंथीए नयरीए नायशीमं महाया
  त्रयस्त्रिशतारिमाणाः 'महाया.' परम्परेण माहायककारिणः (बृ० प० ५०२)
- १६. गाहायई ममणोयामया परिवमति—अङ्हा
  'गृष्टपतय.' कुटुम्बनायका (वृ० प० ५०२)
- १७. नाय बहुनणरम अपरिभूता
- १८. अभिगयजीवाजीवा, उवलद्भपुण्यपावा जात्र ... विदर्तत । (म० २०१४७)
- १६. तए णं ते तायत्तीम महाया गाहावई ममणोतानवा
- २०. पुट्यि चगा, उगागिहारी 'उगा' ति उग्रा उदात्ता भावत. 'उगायिहारि' नि उदात्ताचारा: गदनुष्ठानत्यात् (यू० प००५००)
- २१. मविग्गा

  'सविग्ग' त्ति सविग्ना —मोसं प्रति प्रचित्ता. ननारभीरवो वा (यू० प० ५०२)
- २२. सविगाविहारी भवित्ता
  'मविगाविहारि' ति मंविगाविहार.—सविगानुष्ठानमस्ति येपा ते सचा (वृ० ५० ५०२)
- २३. तथो पच्छा पासत्वा 'पासित्य' त्ति शानादिवहिर्देत्तिन' (यु० प० ५०२)
- २४. पासत्यविहारी (त आकाल पारवं स्थममाचारा (वृ० प० ४०२)
- २५. ओसन्ना 'नोसण्ण' त्ति अयसन्ना इव—श्रान्ता इवायसन्ना आलस्यादनुष्ठानासम्यन्नरणात् (वृ० ५० ५०२)
- २६. ओसन्नविहारी 'आसन्नविहार' ति आजन्मदिविलाचारा इत्यर्थ (वृ० ५० ५०२)
- २७. गुसीला 'कुसील' त्ति ज्ञानाद्याचारिवराघनात् (वृ० प० ५०२)
- २८. कुसीलविहारी 'कुसीलविहारि' त्ति आजन्मापि शानाद्याचारविराधनात् (व० प० ५०२)

- २६. विल अपछदाते थया मुनिराया रे, निह आगम तणो विचार। स्व-इच्छाचारी सह मुनिराया रे, कांइ थाप जिनाज्ञा वार।
- ३०. अपच्छदिवहारी ते थया मुनिराया रे, काइ छेहडा ताई घार । अपछदपणो नही छोडियो मुनिराया रे, काइ थाप करें अविचार ॥
- ३१. वहु वर्षे श्रावकपणो मुनिराया रे, कांइ पाली ने पर्याय। सलेखणा अर्द्धमास नी मुनिरायारे, कांइ तीस भक्त छेदाय।।
- ३२. ते स्थानक विण पडिकम्यां मुनिराया रे, आलोयां विण आम । मरण तणे अवसर सह मुनिराया रे, कांइ काल करीने ताम ॥
- ३३. चमर असुर ना इद्र ना मुनिराया रे, असुरराय नां जेह। तीवतीसगा सुरपणे मुनिराया रे, कांइ मित्रपणे उपजेह॥
- ३४. सामहित्य तिण अवसरे मुनिराया रे, कांइ गोयम प्रति पूछत । हे भदत । जे दिवस थी मुनिराया रे, ए तावतीसगा हुंत ।
- ३५. तेतीस सहाया गाहावई मुनिराया रे, कांइ काकंदी नां जाण। मित्रपणे ए ऊपनां मुनिराया रे, कांइ चमर तणे ए आण॥
- ३६. ते दिन थी किहये अछै मुनिराया रे, असुरेद्र ने ताय। तीवत्तीसगा देवता मुनिराया रे, पिण पहिला किहये नाय॥
- ३७ भगवत! गोतम ने तदा मुनिराया रे, काइ सामहित्य अणगार। कह्ये छते सकित थया मुनिराया रे, काखित थया तिवार।।
- ३८ मन वितिगिच्छा ऊपनी मुनिराया रे, काइ ऊठी ऊभा थाय। सामहित्य साथे तदा मुनिराया रे, वीर समीपे आय॥
- ३६ भगवत श्री महावीर ने मुनिराया रे, वदै वच स्तुति ताय। नमस्कार शिर नाम ने मुनिराया रे, कांइ वोले एहवी वाय॥
- ४० छै भगवत । चमर तणे मुनिराया रे, काइ तावत्तीसगा देव ? जिन भाखे हता अत्थि मुनिराया रे, किण अर्थे प्रभु । भेव ?
- ४१. इम तिम हीज कह्यो सह मुनिराया रे, काइ विण आलोया दीस। देवपणे ए ऊपना मुनिराया रे, काइ चमर तणे तेतीस।।
- ४२ जे दिन थी ए ऊपना मुनिराया रे, काइ तावत्तीसगा आय। ते दिन थी कहियै अछै मुनिराया रे, तिण पहिला कहियै नाय।।
- ४३ जिन कहै अर्थ समर्थ नही मुनिराया रे, इम निश्चै करि ताम। तावत्तीसगा चमर ने मुनिराया रे, कह्या शाश्वता नाम।।
- ् ४४. नहीं कदापि निंह हुआ मुनिराया रे, काड नहीं हुवै इम नाय। नहीं हुसै इम पिण नहीं मुनिराया रे, काइ छता काल त्रिहु माय।।

- २६. अहाच्छेदा 'अहाछद' त्ति यथाकथञ्चिन्नागमपरतन्त्रतया छन्द'
- ३०. अहाच्छदिवहारी
  'अहाच्छदिवहारि' त्ति आजन्मापि यथाच्छन्दा एवेति
  (वृ० प० ५०२)
- ३१. वहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, अद्ध-मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेत्ता, तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता
- ३२. तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे काल किच्चा
- ३३. चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेव-त्ताए खववण्णा। (श०१०।४८)
- ३४,३५. जप्पभिइ च ण भते ! ते कायदगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना,
- ३६. तप्पभिइ च ण भंते ! एव वृच्चइ—चमरस्स असुरि-दस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्ती-सगा देवा ?
- ३७ तए ण भगव गोयमे सामहत्थिणा अणगारेण एवं वृत्ते समाणे सिकए किखए
- ३५. वितिगिच्छिए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेता सामहित्यणा अणगारेण सिद्ध जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ,
- ३६. उवागि च्छत्ता समण भगव महावीर वदइ, नमसइ विदत्ता नमसित्ता एवं वयासी— (श० १०।४६)
- ४०. अत्थि ण भते । चमरस्म असुरिदस्स असुरकुमार-रण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ? हता अत्थि । (श० १०।५०) से केणट्ठेण भते । एव वुच्चइ—
- ४१. एव त चेव सन्व भाणियन्व जाव
- ४२ जप्पभिइ च ण भते । . ....तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना तप्पभिइ च ण भते । एव वृच्चइ.... 'तप्पभिइ च ण' ति यत्प्रभृति त्रयस्त्रिशत्संस्योपेतास्ते श्रावकास्तत्रोत्पन्नास्तत्प्रभृति न पूर्वभिति (वृ० प० ५०२)
- ४३ नो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा । चमरस्स ण असुरि-दस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगाण देवाण सासए नामधेज्जे पण्णत्ते—
- ४४ ज न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ

४५ हुवा हुवै होस्यै वली मुनिराया रे, काइ यात्रत नित्य पिछाण। अन्वोच्छित्ति नय आश्रयी मुनिराया रे, काइ देव शास्वता जाण।।

४६. चवे अनेरा देवता मुनिराया रे, कांइ अन्य अमर उपजाय। पिण स्थानक ने नाम थी मुनिराया रे, काङ एहनों विच्छेद नाय।।

४७ विल वेरोचन इद्र ने गुणवारी रे,

छै तावत्तीसगा भत ! महागुणघारी रे।

जिन भार्य हंता अतिण गुणवारी रे,

काङ किंण अर्थे प्रभु । हुत । महागुणवारी रे ॥

४८ जिन भाखें सुण गोयमा । मुनिराया रे,

इम् निदचै अवलोय । मुण मुनिराया रे ।

तिण कालै ने तिण समें मुनिराया रे,

इण जंबू भरत मे जोय । मुण मुनिराया रे ॥

४६. विभेल एहवै नाम थो मुनिराया रे, सन्निवेस नुम्वदाय। वर्णन तास वयाणवो मुनिराया रे, तिहा वसै तेतीस सहाय।।

५०. जेम चमर ना आलिया मुनिराया रे, तिम विन ने कहिवाय। जाव तेतीसू ऊपना मुनिराया रे, मित्रपण मुर आय॥

५१. हे भदंत । जे दिवस थी मुनिराया रे, विभेलगा तेतीस। विभेल ना वासी तिके मुनिराया रे, काइ सखाइया सुजगीस।

५२ विल वैरोचनराय नै मुनिराया रे, भेप तिमज कहिवेह ॥ जाव नित्य ते आखिया मुनिराया रे, अव्वोच्छित्त नय एह ॥

प्रः चवै अनेरा देवता मुनिराया रे, काइ वली अनेरा देव। तिहा ऊपजे आयने मुनिराया रे, काइ भावे जिन ए भेव।।

५४ प्रभु ! नागकुमार ना इद्र ने गुणवारी रे, काइ नागराय ने ताम । महागुण घारी रे ।

घरण तणे छै देवता गुणघारी रे,

काइ तावत्तीसगा नाम ? महागुणधारी रे।।

प्र जिन भार्ज हता अत्थि गुणवारी रे, किण अर्थे ए वाय ? जिन कहै नागकुमार ना गुणवारी रे, काइ इंद्र तणे कहिवाय॥

४६ नागकुमार ना राय ने गुणघारी रे. काड घरण तणे अभिराम । तावत्तीसगा देवता गुणघारी रे, काइ कह्या शाक्वता नाम ॥

तावत्तीसगा देवता गुणघारो रे, काइ कह्या शाश्वता नाम ।। ५७. जे नहीं कदापि नींह हुआ गुणघारी रे, काड यावत अन्य चवत।

वले अनेरा ऊपजे गुणधारी रे, काइ पूरवली पर हुत।।

५८ इमितज भूतानद ने मुनिराया रे,

काइ एव जाव जगीस । सुण मुनिराया रे । महाघोप ने पिण कह्यो मुनिराया रे,

ए वीस इद्र ने दीस ।। सुण मुनिराया रे ॥

५६ छै प्रभु । शक्र सुरिद्र ने गुणवारी रे,

काइ देवराय ने जोय। महागुणवारी रे।

तावत्तीसर्गां देवता गुणवारी रे,

काइ जिन कहै हता होय।। महागुणवारी रे।।

४५. भविमु य, भवित य, भविरमद य - घुवे नियए मानए अनुदाए अन्यए अवद्विए निच्चे, अञ्जोन्छित्तिनयद्वयाए ४६. अण्णे चयति, अण्णे उवपञ्जनि । (१० १०।५१)

४७. अतिय णं भते । विनस्त वहरोयणियन्य वहरोयण-रण्यो तावतीसमा देवा-नावत्तीममा देवा ? हंता अत्य । (म० १०१५२) मे मेणट्टेण भते । एवं यूच्चह—

४८. एव घलु गोषमा । तेण कालेणं तेणं गमएण इहेन जबुद्दीवे धीये भारहे वामे

४६ वेभेने नाम मण्जियेने होत्या-—यण्णश्रो । तत्य णं येभेले गण्जियेने तायत्तीम सहाया गाहावई समणो-यामया परिवमति

५०. जहा चगरस्म जाव तावत्तीसगदेवत्ताए उववण्या । (१०० १०।५३)

४१. जप्पभिष्ठ च णं भते ! ते वेभेनगा तायत्तीमं महाया गाहावई ममणीवामगा

५२. यलिस्म वहरोयणिवस्म वहरोयणरण्गो नावत्तीमग-देवत्ताए उववन्ना, मेम त चेव जाव निच्चे, अव्वोच्छि-त्तिनयद्वयाए

५३. अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति । (१०१०।५४)

५४. अत्य ण भते । घरणस्य नागकुमारिदस्त नागकुमार-रण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीमगा देवा ?

५५,५६. हंता अत्य । (य० १०।५५)
मे केणट्ठेण जाव तावत्तीमगा देवा-तावत्तीसगा देवा?
गोयमा ! धरणस्म नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो
तावत्तीसगाणं देवाणं सामए नामधेज्जे पण्णत्ते—

५७. जं न कया६ नासी जाव अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति

५८. एवं भूयाणदस्स वि, एव जाव महाघोसस्स । (श॰ १०।५६)

५६ अत्य णं भते ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो तावत्ती-सगा देवा-तावत्तीसगा देवा ? -- हता अत्य । (श॰ १०।५७)

- ६० किण अर्थे प्रभु । इम कह्यो गुणघारी रे, काइ तव भाखें जिनराय। महागुणघारी रे। तिण काले ने तिण समै मुनिराया रे,
  - ्इण जबू भरत रै माय ! सुण मुनिराया रे ॥
- ६१. पालए नामें हुंतो मुनिराया रे, काङ सन्निवेस सुखदाय। वर्णन तास वस्नाणवो मुनिराया रे, तिहा वसै तेतीस सहाय।।
- ६२. कुटव तणा नायक सहू मुनिराया रे, काड श्रमणोपासक हुंत। जेम चमर नां तिम इहा मुनिराया रे, काड जावत ते विचरत।।
- ६३. तेतीस सहाया गाहावई मुनिराया रे, काइ श्रमणोपासक साव। पहिला पिण शुद्ध भाव था मुनिराया रे, काइ पाछै पिण शुद्ध भाव।।
- ६४. उग्रा उत्कृष्ट भाव थी मुनिराया रे, उग्रविहार आचार। सविग्गा इच्छा शिव तणी मुनिराया रे, विल सविग्गाविहार॥
- ६५ वहु वरसा श्रावकपणो मुनिराया रे, पाली ने पर्याय। मास तणी सलेखणा मुनिराया रे, साठ भक्त छेदाय।।
- ६६ सह आलोई पडिकमी मुनिराया रे, काड पाम्या समाघी तेह। काल समय करि काल ने मुनिराया रे, जाव ऊपना जेह।। ६७ हे भदत । जे दिवस थी गुणधारी रे,

काइ पाला ना वसवान । महागुणघारी रे । तेतीस सहाया गाहावई मुनिराया रे,

कांइ श्रमणोपासक जान ।। सुण मुनिराया रे ।।

- ६न. शेप कह्यो जिम चमर ने मुनिराया रे, तिम सगलो कहिवाय। चवे अनेरा देवता मुनिराया रे, काइ अन्य ऊपजै आय॥
- ६९ छ भदत ! ईशाण ने मुनिराया रे, जेम शक्र तिम एह। णवर चपा ने विषे मुनिराया रे, काइ यावत उपना जेह।।
- ७०. जे दिन थी प्रभु चिपज्जा' मुनिराया रे, तेतीस सहाया हुत । शेष् वात तिमहीज सहु मुनिराया रे, काइ जाव अन्य उपजत ॥
- ७१ छैप्रभु । सनतकुमार ने मुनिराया रे, देव इद्र ने देख। देव तणा राजा तणे मुनिराया रे, काइ तावत्तीसगा पेख?
- ७२ जिन भाखे हता अत्य मुनिराया रे, ते किण अर्थे स्वाम ! जेम कह्यो छै घरण ने मुनिराया रे, काइ तिमहिज कहिव ताम ॥

#### सोरठा

- ७३ घरण तणे अधिकार, पूरव भव चाल्यो नथी। तेम इहा सुविचार, निह पूर्वभव वारता॥
   ७४ \*इम यावत पाणत तणे मुनिराया रे, काइ अच्युत ने पिण एम। जाव अन्य सुर ऊपजे मुनिराया रे, काइ सेव भते ! तेम॥
- \* लव: मोजी तुररा रे
- १. चपा नगरी के वासी।

- ६०. से केणट्ठेणं जाव तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ? एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे |
- ६१. पालए नाम सिण्णवेसे होत्या—वण्णओ । तत्य ण पालए सिण्णवेसे तायत्तीस सहाया
- ६२. गाहावई समणोवासया जहा चमरस्स जाव विहरति। (श० १०।५५)
- ६३. तए ण ते तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासया पुर्विव पि पच्छा वि
- ६४ उगा उगाविहारी संविग्गा सविगाविहारी
- ६५. बहूइं वासाइं समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, मासि-याए सलेहणाए अत्ताण झूसेत्ता, सिंटु भत्ताइं अण-सणाए छेदेता
- ६६. आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे काल किच्चा जाव (स० पा०) उववन्ना ।
- ६७ जप्यभिइ च ण भते । ते पालगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणीवासगा,
- ६८. सेस जहा चमरस्स जाव अण्णे उववज्जित । (श० १०।५६)
- ६६. अत्थि ण भते । ईसाणस्स देविदस्स देवरण्णो ताव-त्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ? एवं जहा सक्कस्स, नवर—चपाए नयरीए जाव उववण्णा
- ७०. जप्पभिइ च ण मते !
  ते चिपज्जा तायत्तीस सहाया, सेस त चेव जाव अण्णे चववज्जति । (श० १०।६०)
- ७१ अत्यि ण भते । सणकुमारस्स देविदस्स देवरण्गो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
- ७२ हता अत्य । (श० १०।६१) से केणट्ठेण <sup>?</sup> जहा धरणस्स तहेव
- ७४. एव जाव पाणयस्स, एव अच्चयस्स जाव अण्णे उवज्जति। सेव भते । सेव भते त्ति। (श० १०।६२,६३)

## सोरठा

७५. तीजा थकी विचार, स्वर्ग वारमा इद्र नें। घरण जेम अवघार, पूरव भव न कहाा प्रभु॥ ७६. चमर वली ना जाण, सोघम ने ईशाण नां। तावत्तीसगा माण, पाछिल भव जिन आग्यियो॥ ७७. \*दशमे शत चोथो कहाो गुणघारी रे,

वेसी इकवीसमी ढाल । महा गुणधारी रे । भिवलु भारीमाल ऋषिराय थी गुणधारी रे, कांइ 'जय-जश' मंगलमाल ॥ महागुणधारी रे ॥ दशमशते चतुर्थोद्देशकार्थः ॥१०।४॥

## हाल: २२२

### दूहा

- १. तुयं उदेशे सुर तणी, वक्तव्यता दाखंत। पचमुदेश सुरी तणी, ते निसुणो घर खत।।
  २. तिण काले ने तिण समय, नगर राजगृह जान। यावत परिपद वंदने, पहुंती अपणे स्थान।।
  ३ तिण काले ने तिण समय, वीर तणा वहु शीस। भगवत स्थविर गुणे भला, गणिहतकार गणीस।।
  ४. जातिवंत उत्यादि गुण, जिम अप्टम घतकेह। सप्तमुदेश विपे कह्यो, यावत विचरे जेह।।
  ५ ते भगवंत स्थविर तदा, जात—प्रवर्त्ती जास। श्रद्धा इच्छा प्रश्न नी, जातससया तास।।
- ६ जिम गोतम स्वामी तिमज, यावत वारू सेव।
  करता थकाज इम कहै, अलगो किर अहमेव।।
  †अव सुणले प्राणी! ऋद्वि चमरादि नी जी।। (ध्रुपदं)
- ७. हे भदंत । असुरिंद्र ने काइ, असुरकुमार नों राय। चमर तणे छै केतली जी, अग्रमहेणी ताय।।
- इ. हे आर्यो । इम जिन कहै, तसु अग्रमहेपी पच।
   काली राई रयणी कही जी, विज्जू मेघा सच।।
- एक-एक देवी तिहा कार्ड, अठ-अठ सहस्र उदार।
   देवी ना परिवार ने जी, इम भाख्यो जगतार।।
- १०. समर्थ ते इक-इक सुरी, अन्य अठ-आठ हजार। सुरी रूप परिवार छै जी, विकुवंण ने सार?

- १. चतुर्थोद्देशके देववक्तव्यतोक्ता, पञ्चमे तु देवीवक्त-व्यतोच्यते (यृ० प० ५०२)
- २. तेणं कालेण तेण नमएण रायगिहे नामं नयरे । गुण-मिलए चेदए जाव परिमा पटिगया ।
- तेण कानेण तेण नमएणं नमणस्य भगवनो महावीरस्य बहुवे अंतेवासी थेरा भगवंतो
- ४. जाइसंपन्ना जहा अट्ठमे सए सत्तमुद्देमए (सू० २७२) जाय संजमेणं तयसा अध्याणं भावेमाणा विहरति ।
- ५. तए ण ते घेरा भगवंती जायमङ्ढा जायसंमया
- ६. जहा गोयमसामी जाव पञ्जुवासमाणा एवं वयासी— (दा० १०।६४)
- ७. चमरस्स ण भंते असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो कति अगमहिसीओ पण्णताओ ?
- द. अज्जो । पंच अग्गमहिसीओ पण्णताओ, त जहा— काली, रायी, रयणी, विज्जू, मेहा।
- स्तरय ण एगमेगाए देवीए अट्टट्ट देवीमहस्स परिवारो पण्णतो। (श० १०१६४)
- पम् णं भते ! ताओ एगमेगा देवी अण्णाइ अट्टट्ठ देवी-सहस्साइ परियारं विज्ञित्तए ?

\*लय: मोजी तुररा रे

†लय: अब लगज्या प्राणी ! चरणे प्रमु तणे जी

३३६ भगवती-जोड़

- ११. पूर्व सहित ए पार्छली कांइ, सुरी सहस्र चालीस।
  तुटित इसे नामे करी जी, काइ वर्ग' कह्यो जगदीश।।
- १२ हे भदत ! समर्थ अछै काइ, चमर असुर नों इद। राजा असुरकुमार नो जी कांइ, महापुन्यवत सोहद॥
- १३ चमरचंचा नामे भली काइ, राजधानी रै माय। सभा सुघर्मा ने विषे जी काइ, चमर सिंघासण ताय॥
- १४ तुटित<sup>ँ</sup>वर्ग साथे तिहा काड, देव संवधी भोग। भोगवतो थको विचरवा जी काइ, समर्थ चमर प्रयोग<sup>?</sup>
- १५ जिन कहै अर्थ समर्थ नहीं काइ, प्रभु । किण अर्थे ए वाय। चमर सुघर्मा भोग ने जी काइ, भोगविवा समर्थ नाय?
- १६. हे आर्यो । इम जिन कहै काइ, चमर असुर नों राय। चमरचचा नामे भली जी काइ, राजघानी रै मांय।।
- १७ सभा सुधर्मा ने विषे काइ, माणवक इण नाम। चैत्य स्तभ छै तिण विषे जी काइ, डावा वहु अभिराम।।
- १८. वज्र माहि ते डावडा काइ, वृत्त गोलकाकार। रहै तिहा जिन नी वहू जी काइ, दाढा प्रमुख उदार।।

### सोरठा

- १६ 'जिन नी दाढा होय, तो छै एह अशाश्वती। असख काल अवलोय, तेहनी स्थिती कही नथी॥
- २० जिन-दाढा आकार, पुद्गल स्थित्या तेहनै। कहि जिन-दाढा सार, तो तसु कहियै शाश्वती।।
- २१ सुरियाभादिक सार, तसु पिण जिन-दाढा कही। ए दाढा आकार, पुद्गल-स्थित्या तेह छै।।
- २२ जिन-दाढा तो जोय, इंद्र विना अन्य सुर तणे। कर निंह आवे कोय, प्रवर न्याय अवलोकियै॥
- २३. सौधर्म नै ईशाण, चमर वली चिहुं इद्र ने। जिन-दाढा पिण जाण, पिण छै तेह अशाश्वती।।' जि० स०]
- २४. \*चमर असुर ना राय ने काड, अन्य वहु असुरकुमार। देव अने देवी वली जी काइ, ए जिन-दाढा विचार।।
- २५. चदन आदि सुगघ थी काइ, अछै अरचवा जोग। वदन वच स्तुति जोग छै जी काइ, नमण करेवा जोग।।
- २६ वलै पूजवा जोग छै काइ, पुष्पादिक थी एह। विल सत्कारण जोग छै जी काइ, विल सन्मान करेह।।
- \*लय : अब लगज्या प्राणी ! चरणे प्रमु तणे जी
- १ एणी पर सपूर्वापर समाते चालीस सहस्र देवी आठ सहस्रगुणां करिये तिवारे बत्तीस कोड देवागना थावे तेहने तुटित वर्ग कहिये।

११. एवामेव सपुन्वावरेण चत्तालीसं देवीसहस्सा । सेत्तं तुडिए । (श० १०।६६) 'से तं तुडिए' ति तुडिकं नाम वर्गः

(वृ० प० ५०५)

- १२. पभू ण भते । चमरे असुरिदे असुरकुमारराया
- चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरिस सीहासणिस
- १४. तुडिएणं सिंद्ध दिव्वाइं भोगभोगाइ भुजमाणे विहरि-त्तए ?
- १५ नो इणट्ठे समट्ठे। (श० १०।६७) से केणट्ठेण भते । एवं वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए जाव विहरिक्तए ?
- १६. अज्जो ! चमरस्स ण असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचचाए रायहाणीए
- १७. सभाए सुहम्माए, माणवए चेइयखभे
- १८. वइरामएसु गोल-वट्ट-समुग्गएसु वहुओ जिणसकहाओ सन्निक्षित्ताओ चिट्ठति, गोलकाकारा वृत्तसमुद्गकाः गोलवृत्तसमुद्गकास्तेषु (वृ० प० ५०५)

२४,२५. जाओ ण चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अण्णेंसि च वहूण असुरकुमाराण देवाण य देवीण य अच्चिणिज्जाओ वदिणिज्जाओ नमसिणिज्जाओ 'अच्चिणिज्जाओ' ति चन्दनादिना 'वदिणिज्जाओ' ति स्तुतिभि 'नमसिणिज्जाओ' प्रणामत (वृ० प० ५०५)

२६. पूर्याणज्जाओ सक्काराणज्जाओ सम्माणाणज्जाओ 'पूर्याणज्जाओ' पुष्पै: (वृ० प० ५०५)

२७. कत्याणकारी जाणने कांइ, विल जाणी मंगलीक। दैवत जाणी तेहने जी काइ, चित्त प्रसन्नकारीक।। २८ इम जाणी वहु असुर ने काइ, देव देवी ने जाण। सेवा किरवा जोग छै जी कांइ, ए मग लोकिक पिछाण।। २६. तास पूज्य जाणी करी काइ, भोग भोगविवा तेह। चमर तिको समर्थ नही जी काइ, रीत अनादी एह।।

## सोरठा

३०. पिण रायप्रश्रेणी' माय, राज वेसवा अवसरे। प्रतिमा दाढा ताय, पूजै छै सुरियाभ सुर।। ३१. पहिला पछै पिछाण, पाठ हियाए आदि दे। ए मग लौकिक जाण, पिण पेच्चा परभव नही।। ३२ निस्सेसाए पहिछाण, विघ्न तणी ए मोक्ष है। पच्छा शब्दे जाण, इह भव द्रव्य मगलीक ए ।। ३३. वाद्या श्री वर्द्धमान, ते सुरियाभे पेच्चा पाठ पिछान, परभव हियाए प्रमुख।। ३४. निस्सेसाए पहिछाण, ए परभव नी मोक्ष है। पेच्चा शब्दे जाण, लोकोत्तर मारग कह्यो।। ३५. खघक ने अधिकार, सूत्र भगवती भें कह्यो। लाय थकी वन वार, काढै जे गाथापती।। ३६. पहिला पछैज होय, हियाए प्रमुख कह्या। प्रतिमा पूजै सीय, तेह सरीखो पाठ त्या।। ३७. निस्सेसाए सुविचार, दालिद्र नी ए मोक्ष है। पच्छा रव अनुसार, इह भव हित सुख मोक्ष है।। ३८. खघक दीक्षा लीघ, परलोके हित सुख प्रभु। ए लोकोत्तर सीघ, निस्सेसाए परलोक शिव।। ३६. लाय थकी घन वार, प्रतिमा दाढा पूजता। पच्छा पाठ विचार, ए खाते लोकीक रै॥ ४० खघक दीक्षा लीघ, सुरियाभे जिन वादिया। पेच्चा परभव सीघ, लोकोत्तर खाते इहां।। ४१ वलि वहु ठामे जोय, जिन-वादण दीक्षा समय। पेच्चा परभव होय, पच्छा शब्द किहा नथी।। ४२. प्रतिमा ने पूजत, पेच्चा वा परलोक नो। किहाइक पाठ न हुंत, न्याय विचारी लीजियै॥ ४३. तिण सूं यां पिण ताय, दाढा ना कारण थकी। भोग भोगवै नांय, कल्पस्थिति लोकीक मग।। ४४ त्रायतिस गुरु-स्थान, इन्द्र विनय तेहनों करै। अम्युत्थान पिछान, ते मग लोकिक तेम ए॥ ४५ मेघ-जमाली-माय, चरण लियां सुत ए मुभ दर्शण थाय, मोह कर्म नो उदय ए॥

- २७. कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं
- २८. पञ्जुवासणिज्जाओ भवंति ।
- २६. से तेणट्ठेणं अज्जो । एवं वुच्चइ—नो पम् चमरे असुरिदे असुरकुमारराया जाव (म० पा०) विहरि-त्तए। (स० १०।६८)

१. सु० २६१

२. म० २।५२

४६. तिम ए पिण छै जेह, जीत आचार भणीज इन्द। पूजेह, पिण ते धर्म खाते नथी।। ल्ये ४७ श्रावक सरिखा जाण, जिन दाढा लेता नथी। एह 'जीत व्यवहार' छ।। इन्द्र तणाज पिछाण, ४८. अभव्य सुर पूजत, जिन-प्रतिमा दाढा सुधर्मा छै तसु॥ इन्द्र सामानिक हुत, सभा ४६ आवश्यक नी वृत्ति, गथाग्र वावीस हजार तसु। कह्यो सामायक वृत्ति मे।। सूरि हरिभद्र प्रवृत्ति, सामानिक ते जक्र नो। मुघर्म ५० सगम वास, यू ही प्रशसतो ॥ चलाव् तास, इन्द्र

वा० – विल सामानिक देवपणे जो अभव्य मिथ्यादृष्टि जीव न ऊपजे तो तुम्हारे मतेज आवश्यक नी वृत्ति वावीस हजारी हरिभद्र सूरि नी कीधी, ते मध्ये मामायक नामा अध्ययन नी टीका मे अभव्य सगम देवता नो अधिकार छै। तिहा महावीर ना उपसर्ग ने अधिकारे शकेंद्र वोल्यो—महावीर ने चलावी न सकें। तिवारे शकेंद्र नो सामानिक अभव्य देवता सगम वोल्यो—इओ य सगमओ नाम सोहम्मकप्पवासी देवो सक्कसामाणिओ अभवसिद्धिओ सो भणित—देवराया अहो रागेण उल्लवेइ, को माणुसो देवेण न चालिज्जइ ? अह चालेमि, ताहे सक्को त न वारेइ। मा जाणिहिइ—परणिस्साए भगव तवोकम्मं करेति, एव सो आगओ -- इहा सगमो देवता शकेन्द्र ने सामानिक देवता नै कह्यो।

वली 'सदेहदोलावलि' प्रथ छै तेहनी वृत्ति मध्ये कह्यो—नन्येव तर्हि सगमक-प्रायो महामिण्यादृष्टि देविनातस्याम् सिद्धायतनप्रतिमा अपि सनातनिमिति चेत् न, नित्यचैत्येषु हि सगमवत् अभव्या अपि देवा मदीयमदीयमिति बहुमानात् कल्पस्थितिव्यवस्थानुरोधात् तद्भूतप्रभावाद् वा न कदाचित् असयमित्रया आरभन्ते।

एस सगमो देवता अभव्य कहाो, इद्र नो सामानिक कहाो सामानिक देवता इंद्र सरिखा विमान नो धणी ऊपजती वेला सुरियाभ नी परें प्रतिमा दाढा पूजें पोता नी कल्पस्थिति माटें। अने सुधर्मा सभा ने विपे दाढा ने मुरातवपणें करी काम भोग न भोगवें ते पिण कल्पस्थिति जीत आचार माटें पिण धर्म खाते नथी, तिमहिज अनेरा इन्द्र सुरियाभादिक ने जाणवू।

५१ सूत्र उनवाई माय, पूर्णभद्र वहु लोक ने। अर्चन जोग कहाय, वन्दन पूजन योग्य विला।

- ५२ सतकार सनमान जोग, कल्लाण मगल वली। दैवत चैत्य प्रयोग, जाणी सेवा योग्य छै॥
- ५३ वहुं जन ने ए ताय, कह्या पूजवा जोग ए।
- आस्या जन-अभिप्राय, पिण निह अरिहत आगन्या।। ५४ सुर नर ने अवधार, भोग वछवा योग्य ए।
- चीथे आश्रव द्वार, इहा पिण जिन आज्ञा नहीं।। ५५. तिम सुर ने कहिवाय, दाढा पूजण योग्य ए।

प्रश्रातम सुर न कोहवाय, दाढा पूजण योग्य ए। कह्या तास अभिप्राय, पिण आज्ञा जिन नी नथी।।

१. महत्त्व

२. सू० २

- प्रद. कृष्णादिक घर प्रेम, सभा सुवर्मा ने विषे।
  भोग भोगवे कंम, तो सुर किण विव भोगवे।।
  प्र७ दाढा नो सुविशेख, अविक मुरातव आखियो।
  जीत आचार सपेख, कल्प-स्थिति लौकीक मग।।
  प्रद भव्य अभव्य सुर ताय, समवृष्टी ने मिच्छदिट्टि।
  सभा सुवर्मा माय, काम भोग नहिं भोगवे।।
  प्र६. ए च्याकं अवधार, विमाण ना स्वामी हुवै।
  राखे जीत आचार, चमर सुरियाभ तणी परे।।
  द०. चमर सुधर्मा तेम, काम भोग नहिं भोगवे।
  जीत आचारे एम, पिण ते धर्म खाते नही।।" (ज० स०)
- ६१. \*हे आर्यो ! समर्थ अछै कांइ, चमर असुर नो राय । चमरचंचा नामे भली जी कांड, राजधानी रे मांय ॥ ६२ सभा सुधर्मा ने विषे काड, चमर सिंघासण ताय । चउसठ सहस्र अछै भला जी काइ, सामानिक सुखदाय ॥ ६३ तावत्तीसग यावत वली काइ, अन्य वहु असुरकुमार । अमर सुरी सग परिवर्यो जी काइ, महाऽहत जाव विचार ॥

वा०—इहा जाव शब्द थकी इम जाणवो 'नट्टगीयवाइयततीतलतालघण मुयगपहुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइति । तिहां महता नाम मोटा, अहत नाम अच्छिन्न निरन्तर अथवा कथा स्यू वध्या जे गीत, नाट्य वाजव तेहने शब्दे करी अने तत्री तल ताल ना शब्द करी अने तुडिय कहिता शेप वाजा वली घन-मृदंग ते मेघ समान ध्वनि वालो मार्चल तेहने पटु कहिता चतुर पुरुपे वजायो तेहनो जे शब्द तेणे करी दिव्य भोग प्रतं भोगवतो विचरवा समर्थं इम कहा ।

तेहने विपेहीज विशेष कहैं छैं—'केवल परियारिड्डीए'—केवलं नवर परिचार ते परिचारणा, ते इहा स्त्री शब्द श्रवणरूप देखवादिरूप, तेहिज ऋहि— सपदा ते परिचारणाऋहि । तेणे करी कलत्रादि परिजन परिचार मात्र करिकें इत्यर्थं.।

- ६४. भोगवतोज छतो तिहा काइ, विचरण समरथ तेह। केवल ऋदि परिचारणा जी काइ, शब्द रूप आदेह॥ ६५. स्त्री रव सुणवा नी विपे काइ, रूप देखवो आदि। तेहिज ऋदिनी सपदा जी काइ, तिण करि चित अहलादि।॥ ६६. पिण निह ते निश्चे करी काइ, मैथुन प्रत्यय पेख। भोग भोगवतो विचरवा जी काइ, समर्थ निह छै विशेख॥
- ६७ चमर असुरिंद नो प्रभु । काइ, तास सोम महाराय। अग्रमहिंपी केतली जी काइ? जिन कहै च्यार कहाय।।
- \*लय: अव लगज्या प्राणी ! चरणे प्रमु तणे जी
  - १ गाया ६४ एव ६५ की रचना पाठ और वृत्ति दोनो के आधार पर की हुई है। वृत्ति का अंश पूर्ववर्ती वार्तिका मे उद्धृत है, इसलिए उसे यहा नही रखा गया है।

- ६१. पभू ण अज्जो । चमरे अमुरिदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए
- ६२. सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहामणसि चउमट्ठीए सामाणियसाहस्सीहि
- ६३. तायत्तीसाए जाव (स० पा०) अर्ण्णीह य बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं य, देवीहि य सिंद्धं सपिरवुढें महयाहय जाव (स० पा०)
- वा०—इह यावत्करणादिद दृश्य—'नट्टगीयवाइयतनीतल-तालतुडियघणमुद्दगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोग-भोगाइ' ति तत्र च महता—वृहता अहतानि— अच्छिन्नानि आख्यानकप्रतिवद्धानि वा यानि नाट्य-गीतवादितानि तेपा तन्त्रीतलतालाना च 'तुडिय' ति शेप तूर्याणा च घनमृदगस्य च मेघसमानध्वनिमई-लस्य पटुना पुरुषेण प्रवादितस्य यो रव स तथा तेन प्रभुभोगान् भुञ्जानो विहर्सुमित्युवत ।

तत्रैव विशेषमाह—'केवल परियारिड्ढीए' ति केवल नवर परिवार'—-परिचारणा स चेह स्त्रीशब्दश्रवण- रूपसदर्शनादिरूप स एव ऋद्धि:—सम्पत् परिवार- द्विस्तया परिवारद्वर्था वा कलत्रादिपरिजनपरिचारणा- मात्रेणेत्यर्थः। (वृ० प० ५०६)

६४. भुजमाणे विहरित्तए ? केवल परियारिड्ढीए

६६. नो चेव ण मेहुणवित्तय । (श० १०।६६) 'नो चेव ''' '' ति नैव च मैथुनप्रत्यय यथा भविति एव भोगभोगान् भुञ्जानो विहर्तुं प्रभृरिति ।

(बृ० प० ५०६)

६७. चमरस्स णं भते ! असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो कित अग्गमिहसीओ पण्णत्ताओ ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमिहसीओ पण्णताओ, त जहा—

- ६८. कनका कनकलता कही काइ, चित्तगुप्ता तन चंग। वसुघरा चउथी वली जी काइ, ए चिहु रूप सुरग।।
- ६९. एक-एक देवी तिहा काइ, सहस्र-सहस्र सुविधान। सुरी परिवार परूपियो जी काइ, इम भाखे भगवान।।
- ७०. समर्थ ते इक-इक सुरी काइ, अन्य एक-एक हजार। परिचारण अर्थे तिका जी काइ, रूप विकुवण सार।।
- ७१ इमहिज पूर्वापर सही काइ, देवी च्यार हजार। तुटित वर्ग' कहियै तसु जी काइ, इम भाखे जगतार।।
- ७२. लोकपाल प्रभु । चमर नों काइ, समर्थ सोम महाराय। सोमा राजधानी विषे जी काइ, सभा सुधर्मा माय।।
- ५३ सोम नाम सिघासणे काइ, तुटित वर्ग सघात। शेष चमर नी पर सहु जी काइ, वरणविये अवदात॥
- ७४ णवर इतो विशेष छै काइ, सोम तणो परिवार। जिम सूर्याभ तणो कह्यो जी काइ, इम कहिवो सुविचार।।
- ७५. शेप तिमज चमरेद्र जिम काइ, जाव सौंधर्म माय। मिथुन भोग करिवा भणी जी काइ, निश्चै समरथ नाय।।
- ७६ लोकपाल प्रभु । चमर नो काइ, जम-नामे महाराय। अग्रमिह्वी तसु किती जी काइ ? एव चेव कहिनाय।।
- ७७ णवर इतो विशेष छै काइ, जमा नाम पहिछाण। रजधानी रिलयामणी जी काइ, शेप सोम जिम जाण।।
- ७८. एम वरुण ने पिण कह्यु काइ, णवर इतो विशेख। वरुण नामे तेहनी जी काइ, रजधानी सपेख।।
- ७६ एम वेश्रमण नो अछै काइ, णवर इतो विशेख। वेश्रमणा नामे भली जी काइ, रजधानी वर रेख।।
- द०. शेप तिमज जावत तिके काइ, सभा सुधर्मा माय। मिथुन प्रत्यय भोगने जी काइ, सेवण समरथ नाय।।
- दश. देश दशम पचम तणो कांइ, बेसौ वावीसमी ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी जी कांइ,

'जय-जश' मगलमाल ॥

- ६८. कणगा, कणगलता, चित्तगुत्ता, वसुंधरा ।
- ६६. तत्य णं एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्सं परिवारे पण्णत्ते । (श० १०।७०)
- ७० पभू ण ताओ 'एगामेगा देवी' अण्णं एगमेग देवी-सहस्स परिवार विजिब्बत्तए ?
- ७१. एवामेव सपुन्वावरेण चत्तारि देवीसहस्सा। सेत्तं तुडिए। (श० १०।७१)
- ७२. पभू ण भते ! चमरस्त असुरिदस्त असुरकुमाररण्णो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए
- ७३. सोमिस सीहासणिस तुडिएण सिद्धः अवसेसं जहा चमरस्स
- ७४. नवर-परियारो जहा सूरियाभस्स ।
- ७५. सेस त चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तिय। (श० १०।७२)
- ७६. चमरस्स ण भते । असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो जमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ ? एव चेव,
- ७७. नवर-जमाए रायहाणीए, सेस जहा सोमस्स ।
- ७८. एव वरुणस्स वि नवर-वरुणाए रायहाणीए
- ७६. एव वेसमणस्स वि, नवर—वेसमणाए रायहाणीए।
- द०. सेसं त चेव जाव नो चेव णं मेहुणवित्तय । (श० १०।७३)

१. एणी परे सपूर्वापर संघाते ४००० सहस्र ने १००० सहस्र गुणा करिये तित्रारे ४०००००० लाख एतला रूप थावे तेहने तुटित वर्ग कहिये।

## दूहा

- १ प्रभृ ! विल वैरोचन इंद्र ने, प्रय्न महेपी संच । जिन कहै हे आर्यो । कही अग्रमहेपी पंच ॥ २ जुमा निशुमा ने रंभा, प्रवर निरभा पेख । मदना आखी पचमी, वर्ण रूप वर रेख ॥ ३ एक-एक देवी तणे, अठ-अठ सहस्र उदार । येप चमर नी पर सहु, कहिवू सर्व विचार ॥ ४. णवर विलचचा भली, रजवानी मुवियेप । तमु परिकर तीजे जतक, मोया घुर उद्देश' ॥
- प्र इम परिकर किंहवू इहां, शेप सर्व त चेव। जाव मुघर्मा ने विषे, मिथुन न सेवे देव।। ६ प्रभु विल वेरोचन इद्र ने, सोम नाम महाराय। अग्रमिह्पी तमु किती? जिन कहै च्यार किहवाय।।
- ७. प्रथम मेनका नाम है, द्वितीय सुभद्रा घार।

  नृतीय विद्युता सुभग तनु, चउथी असनी सार।।

  प्रक-एक देवी तिहा, शेप चमर महाराय।

  आस्यो तिम कहिवो इहा, जाव वेसमण ताय।।

  \*स्थविर प्रश्न नो उत्तर जिन आहै। (ध्रुपदं)
- ह नाग कुमारिंद्र घरण तणे प्रभु ! केतली अग्रमहेपी उक्त ? जिन कहै पट अला सक्का सतेरा,

सोदामनी इद्रा घनविद्युता प्रयुक्त ॥

- १०. इक-इक सुरी छ:-छ: सहस्र परिवारे समर्थ ने अन्य छ -छ: हजार । सर्व छत्तीस सहस्र रूप विकुर्वे, तुटित वर्ग' तसु कहिये उदार ॥
- १ समर्थ हे भगवत । वरण छै, शेप त चेव पूर्ववत पेख । णवर वरणा नामे राजवानी है, वरण सिंहासण विषे विशेष ॥ १० वरण नं पोता नो परिवार कहिवो, सामानिक पट सहस्र है तास । इत्यादि परिवार छै तिको कहिवो, शेप तिमज पूर्व पाठ अम्यास ॥
- १ अगसुत्ताणि भाग २, ण० ३।४
- २. अगसुत्ताणि भाग २ श० १०।७५ में वेसमण के स्थान पर वरुण पाठ है। वहा वेसमण को पाठान्तर में रखा गया है।
- ३ एणी प्रकारे मपूर्वापर सघाते छत्तीम सहस्र नै छ सहस्र गुणा करियै तिवारे २१ कोडि ६००००० लाख एतला रूप थावै, तेहनै तुटित वर्ग कहियै।

- वित्स्म णं भते ! वङ्रोयणिदस्स—पुच्छा । अन्जो ! पच अग्ममिह्मीओ पण्णत्ताओ,
- २. मुमा, निसुभा, रंभा, निरमा, मदणा।
- ३. तत्य ण एगमेगाए देवीए अट्टट्ट देवीमहस्मं परिवारो, मेस जहा चमरस्म,
- ४. नवरं—वित्वचाए रायहाणीए, परियारो जहा मोउद्देगए। 'मोउद्देगए' ति तृतीयशतस्य प्रयमोद्देशके इत्यर्थः (वृ० प० ५०६)
- भेसं त चेव जाव नो चेव ण मेहुणवित्तयं।

(ঘা০ १০।৬४)

- ६. वितस्म णं मंते । वडरीयणिदस्म वडरीयणरण्णो सोमस्म महारण्णो कित अग्गमिह्मीक्रो पण्णत्ताक्रो ? अरुजो । चत्तारि अग्गमिह्मीक्षो पण्णताक्षो
- ७. मीणगा, सुमद्दा, विज्जुया, असणी
- ६ घरणस्य णं भते ! नागकुमारिवस्स नागकुमाररण्णो कित अग्गमिहसीओ पण्णत्ताओ ? अज्जो । छ अग्गमिहमीओ पण्णत्ताओ त जहा— अला, सक्का सतेरा सोदामिणी इदा घणविज्जुया।
- १०. तत्व ण एगमेगाए देबीए छ-छ देवीसहस्स परिवारो पण्णत्तो । पभू ण ताओ एगमेगा देवी अण्णाइ छ-छ देवीसहस्साइ परियार विउव्वित्तए ? एवामेव सपुन्वावरेणं छत्तीसाइ देविसहस्साइं । सेतं तुहिए । (श० १०।७६,७७)
- ११. पमू णं भते ! घरणे ? सेसं तं चेव, नवर—घरणाए रायहाणीए, घरणिस सीहामणिस,
- १२. सओ परियारो । सेस तं चेव । (श० १०।७८) 'सओ परिवारो' त्ति धरणस्य स्वक. परिवारो वाच्यः स चैवं— (वृ० प० ५०६)

- १३. निज परिवार कहिवै षट सहस्र सामानिक, तावतीस तेतीस लोकपाल च्यार। अग्रमहिषी छ अणिय कटक सप्त,
  - सात अणिय कटक नां अधिपति घार।।
- १४ चउवीस सहस्र आत्मरक्षक सुर छै, अन्य विल वहु नागकुमार। 💉 १४ चउवीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीहि अन्नेहि य वहूहि देव देवी संघाते परवरियों, नृत्य गीत रव भोग उदार।।
- १५ नागकुमारिद घरण नों हे प्रभु<sup>।</sup> कालवाल लोकपाल महाराय। केतली अग्रमहेथी तेहने ? जिन कहै च्यार सुभग सुखदाय।।
- १६. अशोगा विमला सुप्रभा सुदर्शना, इक-इक नो वैक्रिय परिवार । अवशेष चमर ना लोकपाल जिम,

वलि त्रिण लोकपाल इम घार।।

- १७ भूतानद नी पूछा जिन उत्तर, छ अग्रमहिषी रूया ने रूयसा। सुरूवा रूयगावती रूयकता, रूयप्रभा परिवार घरण जिम वशा ।।
- १८ नागकुमारिंद भूतानन्द नो, लोकपाल चित्र प्रश्न सुजना। जिन कहै अग्रमहिषी च्यार है, सुनदा सुभद्रा सुजाता सुमना ॥
- १६ इक-इक देवो रूप विकुर्वे, चमर लोकपाल नी पर जाणी। शेप तीन लोकपाल तणो पिण, इमहिज कहिवो सर्व पिछाणी।।
- २०. दक्षिण दिश ना इद्र अछै तसु, धरण तणी पर किह्वू उदत । तेह तणा जे लोकपाल ने, भूतानद लोकपाल<sup>र</sup> ज्यू हुत ।।
- २१ णवर सर्व राजधानी सिंहासण, इद्र ना नाम सरीखे नाम। परिवार मोया उद्देश विषे तिम, तीजै शतक घुर उद्देशे ताम।।
- २२ लोकपाल नी राजधानी ने सिंहासण, लोकपाल रै सरीखा नाम । परिवार चमर ना लोकपाल जिम, सर्व विचारी कहिव ताम ।।
- २३ काल पिसाच ना इद्र ने भगवन । अग्रमहिषी केतली आखी। जिन कहै च्यार कमला कमलप्रभा, उत्पला चउथी सुदर्शना दाखी।।

२. अगसुत्ताणि भाग २, श० ३/४

- १३. 'र्छाह' सामाणियसाहस्सीहि तायत्तीमाए तायत्तीसएहि चउहि लोगपालेहि छहि अग्गमहिसीहि सत्ति अणि-एहि सत्ति अणियाहिवईहि (वृ० प० ५०६)
- नागकुमारेहि देवेहि य सद्धि सपरिवृडे' ति (वृ० प० ५०६)
- १५. धरणस्स ण भते । नागकुमारिदस्स नागकुमारन्ण्णो महारण्णो कति कालवालस्स अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? अज्जो । चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णताओ,
- १६ असोगा, विमला, सुप्पभा सुदसणा। तत्य ण एग-मेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारो, अवसेस जहा चमरलोगपालाण । एव सेसाण तिण्ह वि । (হা০ १০।৬৪)
- १७. भूयाणदस्स भते । पुच्छा अज्जो । छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा - रूया, रूयसा सुरूया रूयगावती रूयकता रूपप्पमा। तत्य ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, अव-(হা০ १০।৮০) सेसं जहा धरणस्स ।
- १८ भूयाणदस्स ण भते । नागकुमारिदस्स नागकुमार-रण्णो नागचित्तस्स पुच्छा । अज्जो । चत्तारि अग्ग-महिसीओ पण्णताओ, त जहा-सुणदा, सुभदा, सुजाया, सुमणा ।
- १६. तत्य ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे अवसेस जहा चमरलोगपालाण। एव सेसाण तिण्ह वि लोगपालाण ।
- २० जे दाहिणिल्ला इदा तेमि जहा धर्राणदस्स लोगपालाण वि तेसि जहा धरणस्स लोगपालाण
- २१ नवर-इदाण सव्वेसि रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परियारो जहा मोउद्देसए।
- २२. लोगपालाण सन्वेसि रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि परियारो जहा चमरस्स लोगपाताण । (श० १०।८१)
- २३ कालस्स ण भते । पिसायिदस्य पिसायरण्णो कति अगगमहिसीओ पण्णत्ताओ ? अज्जो ! चतारि अगग-महिसीओ पण्णताओ, त जहा-कमला, कमलप्पभा, उप्पला, सुदसणा ।

१. अगसुत्ताणि भाग २ श० १०। द मे 'जहा धरणस्त लोगपालाण' के बाद उत्तरिल्लाण इदाण जहा भूयाणदस्स ""पाठ है। अन्य आदशों मे यह पाठ नहीं है। इमकी सूचना उक्त ग्रन्य के पृ० ४८० टिप्नण-सख्या ६ मे दी गई है। जयाचार्य ने उपर्युक्त पाठ की जोड नहीं की। जयाचार्य को प्राप्त प्रतियों मे यह पाठ नहीं रहा होगा। यही सम्भावना पुष्ट होती है।

- २४. एक-एक देवी रूप विकुर्वें, इक-इक सहस्र सुंदर सिणगार। शेप चमर लोकपाल तणी पर. परिवार पिण इमहीज विचार॥
- २५ णवर काला नामे राजघानी है, काल सिंहासण शेप त चेव। इमहिज महाकाल पिण किहवो, वे इद्र एह पिसाच ना भेव।।
- २६ भूतेन्द्र नाम सुरूप दक्षिण नो, प्रश्न नो उत्तर महिपी च्यार। रूपवती वहुरूपा सुरूपा सुभगा, ए चिहु रूप उदार।।
- २७. एक-एक देवी नो कहियै, इक-इक देवी सहस्र परिवार। शेप ज्यू काल पिशाच इन्द्रवत, इम प्रतिरूप तणो विस्तार।।
- २८ पूर्णभद्र यक्षेन्द्र नी पूछा, उत्तर अग्रमहीपी च्यार। पूर्णा वहुपु्रिका नै उत्तमा, तारका ए चिहु रूप उदार।।
- २६ एक एक देवी रूप विकुर्वें, डक-इक सहस्र शेप काल जेम। एव माणभद्र इद्र उत्तर नो, वे इद्र जक्ष तणा नित्य क्षेम।।
- ३० राक्षस इद्र दक्षिण ना भीम नै, प्रश्न नो उत्तर महिपी च्यार। पद्मा पदमावती कनका रत्नप्रभा, इक-इक देवी सहस्र परिवार।।
- ३१. जेप काल जिम वर्णन किह्वो, महाभीम उत्तर नो एम। च्यार सुरी सहस्र-सहस्र परिवारे, ए राक्षस ना दोय इद्र सुप्रेम।। ३२. किन्नर नी पूछा कीघा जिन भाखै, अग्रमहेपी च्यार सुलेवा। अवतसा केतुमती रितिसेना, रितिप्रिया शेप त चेव कहेवा।।
- ३३. सतपुरुप पूछा चिउ अग्रमहिपी, रोहणी नविमका ही पुष्फवती। इक-इक सहस्र परिवार शेप तिम, महापुरुप ने पिण इम हुती।।
- ३४. अतिकाय नामे इद्र च्यार महिपी, भुजगा भुजगवती नै महाकच्छा। फूडा सहस्र परिवार शेप तिम, महाकाय नै पिण इम अच्छा।।

- २४. तत्य णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारो सेस जहा चमरलोगपालाण । परिवारो तहेव,
- २५. नवर कालाए रायहाणीए, कालिस सीहासणिस, सेस त चेव । एव महाकालस्स वि ।
- २६ सुरूवस्म ण भते । भूतिदस्स भूतरण्णो—पुच्छा अज्जो । चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा रूववर्ड बहुरूवा सुरूवा सुभगा।
  - ७. तत्य ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्सं परिवारे सेस जहा कालस्स । एव पडिरूवस्स वि । (श० १०।८३)
- २८ पुण्णभद्दस्स ण भते ! जिक्खदस्स-पुच्छा । अज्ञो । चत्तारि अग्गमिहसीओ पण्णत्ताओ, त जहा ---पुण्णा, बहुपुत्तिया, उत्तमा, तारया ।
- २६ तत्य ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्सं परिवारे, सेसं जहा कालस्स । एव माणभद्दस वि । (श० १०।८४)
- ३० भीमस्त ण भते । रक्खसिदस्त-पुच्छा
  अज्जो । चत्तारि अग्ममहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा
  ---पडमा वसुमती कणगा रयणप्पभा । तत्य ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्तं परिवारे,
- ३१ सेस जहा कालस्स । एव महाभीमस्स वि । (शा० १०।८५)
- ३२. किन्नरस्स ण—पुच्छा अज्जो । चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—वर्डेसा केतुमती रतिसेणा रइप्पिया। . . . परिवारे सेस त चेव। (श० १०।८६)
- ३३. सप्पुरिसस्स ण पुच्छा ।

  अज्जो । चत्तारि अग्गमिहसीओ पण्णत्ताओ, त

  जहा रोहिणी, नविमया, हिरी, पुष्फवती । तत्थ

  ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस

  त चेव । एव महापुरिसस्स वि । (॥० १०।०७)
- ३४. अतिकायस्स ण—पुन्छा
  अन्जो । चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त
  जहा—भुयगा, भुयगवती, महाकन्छा, फुडा । तत्य ण
  एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेस त
  चेव । एवं महाकायस्स वि । (श० १०।८८)

१. अगसुत्ताणि मे 'पउमावती' को पाठान्तर मे रखा गया है, वहा मूल मे 'वसुमती' शब्द है।

२. इसके वाद अगसुत्ताणि भाग २ श० १७। द में एव किंपुरिसस्स वि'पाठ है। इस पाठ की जोड़ नहीं है। सम्भव है कुछ आदर्शों में यह पाठ नहीं रहा ' होगा।

- ३४. गीतरित इद्रच्यार महिपी, सुघोपा विमला सुस्वरा जाणी। सरस्वती सहस्र परिवार शेप तिम, गीतजश ने पिण इम् माणी।।
- ३६ ए सर्व ने काल तणी पर किहवो, णवर आप आपणो छै नाम। ते सरीखे नामे रजधानी सिहासण, किहवो शेप तिमहिज तमाम।।
- ३७ ज्योतिवी इद्र चद्र नी पूछा, जिन कहै अग्रमहेपी च्यार । चद्रप्रभा ने जोत्स्नाभा, अचिमाली ने प्रभकरा सार ।।
- ३८ इम जिम जीवाभिगम¹ सूत्र में, कह्यो ज्योतिपी उदेशा मभार । सर्व इहा पिण तिमहिज कहिवो, इक-इक चिहु-चिहुं सहस्र परिवार ।।
- ३६ सूर्य ने पिण इमहिज कहिवू, अग्रमहेपी च्यार उदार। सूरप्रभा ने दूजी आदित्या, अचिमाली ने प्रभकरा सार॥
- ४० शेष थाकतो तिमहिज कहिवो, जाव सुधर्मा सभा रै माय। मिथुन-प्रत्यय भोग भोगविवा, निश्चय करिने समर्थ नाय।।
- ४१ महाग्रह अगार ने भगवत, केतली अग्रमहेपी कहाय ? जिन कहै च्यार विजया वेजयती, जयती ने अपराजिता ताय ।।
- ४२ इक-इक देवी रूप विकुर्वे, शेष त चेव चद्र जिम आख्यो। णवर विमान अगार अवतसक, प्रगार नाम सिहासण भाख्यो।।
- ४३ इम व्याल नामे महाग्रह पिण कहिवो,

एव अठचासी महाग्रह भणवा। जावत भावकेत् पिण णवर, विमान सिहासण स्व नाम थुणवा।।

४४ प्रभु । शक ने अग्रमहेषी नी पूछा, जिन कहै अष्ट महिषी जाणी। पद्मा शिवा सूची अगू ने अमला,

अप्सरा नविमका रोहिणी माणी।।

- ४५ इक-इक देवो ने प्रभु भाख्यो, सोलै-सोलै सहस्र नो परिवार। समर्थ इक-इक सुरी अनेरा, वैक्रिय करण सोल-सोल हजार।।
- ४६ एहीज पूर्व अपर कही सगली, इक लक्ष सहस्र अठावीस रूप। परिचारणा ने अर्थे विकुर्वे, तेह तुटित वर्ग कहियै अनुप।।

- २. अगसुत्ताणि (१०।६०) 'आयवा' पाठ है। आयच्चा को वहा पाठान्तर मे रखा गया है।
- ३. अगसुत्ताणि १०।६२ में सची पाठ है। वहा सेया और सुयी को पाठान्तर में रखा गया है।
- ४ एणी परे सपूर्वापर सघाते एक लाख अठावीस सहस्र ने सोलै सहस्र गुणा करियै तिवार २०० दोय सौ कोडि ४८० लाख एतला रूप थानै तेहने तुटित वर्ग किहयै।

- ३५. गीयरइस्स णं—पुच्छा अज्जो <sup>।</sup> चत्तारि अगगमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—सुघोसा, विमला, सुस्सरा, सरस्सई । तत्य
  - जहा---सुघासा, विमला, सुस्सरा, सरस्सई। तत्य णं एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्सं परिवारे सेस त चेव। एव गीयजसस्स वि।
- ३६. सन्वेसि एएसि जहा कालस्स नवर—सिरसनामियाओ रायहाणीओ सीहासणाणि य, सेस त चेव । (श० १०।८६)
- ३७ चदस्स ण भते । जोइसिंदस्म जोइसरण्णो पुच्छा । अज्जो । चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा — चदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभकरा ।
- ३८ एव जहा जीवाभिगमे जोडसियउद्देसए तहेव।
- ३६ सूरस्स वि सूरप्पभा, आयवा, अन्विमाली पभकरा
- ४० सेस त चेव जाव नो चेव ण मेहुणवत्तिय। (श० १०।६०)
- ४१. इगालस्स ण भते । महग्गहस्स कित अग्गमिहसीओ—
  पुच्छा ।
  अज्जो ! चत्तारि अग्गमिहसीओ पण्णत्ताओ, त जहा —
  विजया, वेजयती, जयती, अपराजिया ।
- ४२. तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे सेस जहा चदस्स नवर —इगालवडेंसए विमाणे इगाल-गसि सीहासणसि, सेस त चेव।
- ४३. एव वियालगस्स वि । एव अट्ठासीतिए वि महग्गहाण भाणियन्व जाव भावकेउस्स नवर—वर्डेसगा सीहास-णाणि य सरियनामगाणि सेस त चेव।(श० १०।६१)
- ४४ सक्कस्स ण भते । देविदस्स देवरण्णो—पुच्छा । अज्जो । अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णताओ, त जहा— पउमा, सिवा, सची, अजू, अमला, अच्छरा, नविमया, रोहिणी
- ४५ तत्य ण एगमेगाए देवीए सोलस-सोलस देवीसहस्सा परिवारो पण्णत्तो। (श॰ १०१६२) पभू ण ताओ एगमेगा देवी अण्णाइ सोलस-सोलस देवीसहस्साइ परिवार विजिब्बत्तए ?
- ४६. एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठावीसुत्तर देवीसयसहस्स । सेत्त तुडिए । (श० १०।६३)

१. जी० प० ३।६६८-१०३६

- ४७ समर्थ छै प्रभु ! शक्न देवेद्रज, देवराजा सौवर्म देवलोक। विमान सौवर्म अवतसक नै विषे, सभा सुवर्मा नै विषे सयोग।।
- ४८ यक्र सिहासणे तुटिक वर्ग सग, गप चमर नी परे सह कहिवो। णवर परिवार जे तीजा शतक' नों, मोय उद्देशो पहिलु गहिवो।।
- ४६ शक्र देवेद्र नो सोम महाराजा, अग्रमहिपी किती प्रभु । तास । जिन कहै च्यार रोहिणी, मदना चित्रा ने सोमा म्प गुणरास ॥
- ५०. तिहा एक-एक देवी शेप चमर ना, लोकपाल जिम नवर कहीजै। सयप्रभ विमाने सभा-सुवर्मा सोम सिंहासन शेप तिमहीजै॥
- ५१. इम जाव वेसमण लोकपाल लग, णवरं ज्जुआ विमाण ना नाम । तीजा शतक<sup>र</sup> जिम संभव्पभ वरसिंह सयजल वग्गु ताम ॥
- ५२ ईगाण पूछा आठ महिपी, कृष्ण कृष्णराई रामा मुनाम। रामरक्षिता वसु वसुगुष्ता, वसुमित्ता ने वसुवरा ताम।।
- ५३. इक-इक देवी बक्र जिम सगलू, हिवै ईसाणेद्र नुलोकपाल। सोम महाराय ने किती पटराणी?

जिन कहै च्यार कही मुविशाल।।

- ५४ पृथिवी रात्री रत्नी विद्युत चौथी, शक्र ना लोकपाल जेम शेप । इम जाव वरुण चौथा लग कहिंवू, णवर विमाण नाम ए देख ॥
- ५५. चरुथा शतक' में कह्या तिम कहिंवा, सुमन सर्वतोभद्र वग्गु नाम। सुवग्गु शेप तिम जाव सुवर्मा, मिथुन सेवन समर्थ निंह ताम।।
- ४६. सेव भते! सेव भते! कही ने, यावत विचरे स्थविर घ्यान-सुधारस । ए दशमा शतक नो पचमुद्देशो,

उगणीमें इकवीसे पोह सुदि ग्यारस ॥
५७ ढाल भली दोय सी तेवीसमी, शहर वालोतरे जोडी विद्याल ।
भिक्षु भारीमाल ऋपिराय प्रतापे, 'जय-जश' सम्पत्ति मगलमाल ॥
दशमशते पचमोद्देशकार्थः ॥१०।५॥

- १. अगसुत्ताणि भाग २, २० ३।४
- २. अगमुत्ताणि भाग २ श० ३।२४८
- ३. अगमुत्ताणि भाग २ दा० ४।२

- ४७. पभू ण भते । सक्के देखिंद देवराया सोहम्मे कप्पे, सोहम्मवर्टेमत् विमाणे, सभात् महम्मात्,
- ४५ गर्कान मीहानणिन तुष्टिएण मिंह दिख्वाङ भोग-भोगाङ भुजनाणे विहरिक्ताः। नेम जहा चनरस्म नवर—परियाने जहा मोडहेगए। (ण० १०।६४)
- ४६. मनमस्य ण देविदरम दे । रण्णो मोनस्य महारण्णो कित अगमहिमीओ—पुष्ठा । अपनी । चत्तारि अगमहिमीओ पण्णताओ, त जहा— रोहिणी, मदणा, नित्ता, सोमा
- ५०. नत्य ण एगमेगाए देशीए एगमेग देशीमहम्स परिवारे, सेमं जहा चमरलांगपालाण, नवर —सयपमे विमाणे, नभाए मुहम्माए, सोमसि सीहासणित सेम त चेत्र।
- ५१ एवं जाय वेमनणस्म, नवर—विनाणाउं जहा निवय-मए। (ण० १०१६५) 'त्रिमाणाड जहा तद्यमए' ति तत्र नीमस्योक्तमेव यमवरूणवैश्रमणाना तु ऋमेण वरुमिट्ठे स्यजने वस्मृत्ति विमाणा। (यु० प० ५०६)
- ५२. रिनाणस्म ण भते ! पुच्छा ।
  अञ्जो । अट्ट अग्नर्माहमीओ पण्णत्ताओ, त जहा —
  कम्हा, कम्हराई, रामा, रामरिक्यमा, वमू, वमुगुत्ता
  वसुमित्ता वसुधरा
- ५३ तत्य ण एगमगाए देवीए एगमेग देवीमहस्मं परिवारे मेम जहा गवरस्म । (श० १०१६६) ईमाणस्म ण भते । देविदस्म देवरण्णो मोमस्म महारण्णो कति अगमहिमीओ—पुच्छा । अण्जो । चत्तारि अगमहिमीओ पण्णताओ, त जहा —
- ५४ पुत्वी, रार्ट, रयणी, विज्जू । · · मेम जहा सकम्स नोगपालाण एव जाय वकणस्म, नवर —विमाणा ।
- ५५ 'जहा चडत्यमए' सेस त चेय जाव नो चेत्र ण मेहुण-वित्तय। (श० १०१६७) जहा चडत्यमए' त्ति क्रमेण च तानीज्ञानलोकपाला-नामिमानि—'मुमणे सव्वबोभद्दे वन्गू सुवन्गू' इति। (य० प० ५०६)
- ५६ सेव भते । सेव भने । ति (श० १०18=)

दूहा

- १ पचमुद्देशक देव नी, वक्तव्यता कही जेह। छट्ठै सुर नो आश्रय-विशेष कहियै तेह।। २ शक्र सुरिंद्र तणी प्रभु! सभा सुधर्मा नाम। किहा कही ? तव जिन कहै, सुण गौतम । गुणधाम।। ३. जवू मदर-गिर तणी, दक्षिण दिशि मे जेण। रत्नप्रभा पृथ्वी अछै, इम जिम रायप्रसेण।।
- ४. जाव पच अवतसका, जाव शब्द मे ठीक। घणु वरोवर सम अछै, भूमिभाग रमणीक।।
- ५ तेह भूमि थी ऊर्घ्व छै, चद्र सूर्य ग्रह गन्त। नक्षत्र तारारूप थी, ऊचो वहु योजन्त।।
- ६ योजन वहुसय वहु सहस्र, वहु लक्ष ने वहु कोड । योजन कोडाकोड वहु, ऊर्द्ध दूर इम जोड ।।
- ७. सोवर्म कल्प तिहा कह्यो, इत्यादिक अवघार। रायप्रसेणी' मे कह्यु, तिम कहिवू सुविचार॥
- द पच अवतसक में प्रथम, वर असोग अवतस। जावत मध्ये सौधरम-ग्रवतसक सुप्रशस।।

### सोरठा

- ह. जाव शब्द थी जाण, सप्तपर्ण-अवतस फुन।चपकवतस माण, तुर्य चूय-अवतस ही।।
  - दूहा
- १० सौधर्म-अवतसक तिको, महाविमाण पिछाण। योजन साढा वार लक्ष, लावो चोडो जाण।।
- ११. एव इण अनुक्रम करि, जिम सुरियाभ-विमाण। रायप्रश्रेणी सूत्र मे, आख्यो तास प्रमाण॥
- १२. सुधर्म-अवतसक विषे, तिमहिज कहिवू ताम। त्रिगुणी जाभी परिधि है, अतिही मन अभिराम।।

वा० — लावपणै चोडापणै पूर्वे कह्यो हीज। शेप परिधि रही, ते इम—
गुणचालीस लक्ष, वावन हजार, आठसै अडतालीस योजन — ए सीधर्मावतसक नामै
महाविमाण नी परिधि जाणवी।

- १३ जिम सुरियाभ तणो कह्यो, देवपणे उपपात। तिम उपपातज शक्र नु, कहिव् सहु अवदात।।
- १४. अभिपेक फुन शक्र नो. तिमहिज कहिवू जाण। जिम सुरियाभ तणु कह्यु, तिणहिज रीत पिछाण।।
- १५ अलकार ने अर्चनिका, जिम सुरियाभ सुरेव। तिमहिज कहिवू इद्र नो, जाव आयरवख देव।।

- १ पञ्चमोद्देशके देववक्तन्यतोक्ता, पष्ठे तु देवाश्रयविशेष प्रतिपादयन्नाह— (वृ० प० ५०६)
- २. किं ण भते ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सभा ंसुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा !
- ३. जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए "" एव जहा रायप्पसेणइज्जे (सू० १२४)
- ६ वहूइ जोयणसयाइ एव सहस्साइ एव सयसहस्साइं बहूओ जोयणकोडीओ वहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढ दूर वीइवइत्ता (वृ० प० ५०६)
- ७. एत्थ ण सोहम्मे नाम कप्पे पन्नत्ते इत्यादि

(वृ० प० ५०६)

- प्त. त जहा-असोगवडेंसए जाव (स॰ पा॰) मज्झे सोहम्मवडेंसए।
- इह यावत्करणादिद दृश्य—'सत्तवन्नवडेसए चपग-वर्डेसए चूयवडेंसए' त्ति (वृ० प० ५०७)
- १०. से ण सोहम्मवर्डेसए महाविमाणे अद्धतेरस-जोयणसय-सहस्साइ आयामविक्खभेण
- ११,१२ एव जह सूरियाभे तहेव माण 'एव' अनेन क्रमेण यथा सूरिकाभे विमाने राज-प्रश्नकृताख्यग्रन्थोक्ते प्रमाणमुक्त तथैव।स्मिन् वाच्य

(वृ० प० ५०७) वा० — तत्र प्रमाण — आयामविष्कम्भसम्बन्धि दिशत, शेष पुनरिदम् — 'ऊयालीस च सयसहस्साइ वावन्न सहस्साइ अट्ठ य अडयाले जोयणसए परिक्खेवेण' ति । (वृ०प० ५०७)

१२,१४. तहेव उववाओ
सक्कस्स य अभिसेओ तहेव जह सूरियामस्स
यथा सूरिकाभाभिधानदेवस्य देवत्वेन तत्रोपपात
उक्तस्तर्यवीपपातः शक्रस्येह वाच्योऽभिषेभग्येति,
(वृ० प० ५०७)

१५ अलकारअच्चणिया तहेव जाव आयरवछ ति । (म० १०।६६)

१. सू० १२५

२. सू० १२६

- १६ हिव वर्णेक अभिषेक नु, इंद्र तणी अवधार। रायप्रश्रेणी सूत्र थी, कहिये इहा उदार।। \*शक्र सुर राजा, तिणरा चढता है सुजग दिवाजा।।(ध्रुपदं)
- १७. तिण अवसर गक्न देविंद, ओ तो देवराजा सुम्बकद। ऊपजवारी सभा थी ताह्यो, ओ तो नीकल द्रह में न्हायो॥
- १८ द्रह थी नीकल सुररायो, अभिषेक सभा मे आयो। वेठो सिंहासण तेही, मुख पूरव साहमो करेहो।।
- १६. सामानिक परपद ना देवा, सेवग सुर प्रति कहै स्वयमेवा। इद्राभिषेक थापवा काजो, स्नान करिवा पाणी आणो साजो।।
- २०. सेवग सुण हरव्या तिण वारो, वचन विनय सहित अगीकारो। आया ईशाणकूण मक्तारो, वैक्रिय समुद्घात दोय वारो॥
- २१ एक सहस्र विल आठो, ए तो सोना राकलश सुघाटो। एक सहस्र आठ सुजाणी, एतो रूपा रा कलश पिछाणी।।
- २२. एक सहस्र अठ मणि रत्ना नां, एक सहस्र अठ सुवर्णरूपा नां। एक सहस्र आठ सुवर्ण मणी नां, इमहिज रूपमणिमय सुचीना।।
- २३ सुवर्ण-रूप-मणिमय सुघाटो, ए तो कलग एक सहस्र आठो। एक सहस्र नै आठ माटी नां, आठ सहस्र नै चउसठ सुविवाना।।
- २४ इम भृगार आरिसा ने थालो, ए तो एक सहस्र ने आठ विकालो । पात्री एक सहस्र ने आठो, इतरा सुप्रतिष्ठिया वर घाटो ।
- २५ चित्र-रत्न-करिंडया' विचारी, एतो एक सहस्र ने अप्ट उदारी। सहस्र अठ फूल चगेरी, इतरी फूल-माल चगेरी फेरी।।

- १८. हरयाओ ""पञ्चोत्तरित्ता जिणेव अभिनेयममा तेणेव उवागच्छति "मीहामणवरगए पुरत्वाभिमुहे मण्णिसण्णे। (राय० सू० २७७)
- १६. •••सामाणियपरिसोववण्णगा देवा आभिन्नोगिए देवे महार्वेति, महावेत्ता एवं वयागी—धिष्पामेव भी ! ••• ••• दंदाभिनेय उवहुवेह । (राय० सू० २७८)
- २०. तए ण ते आभिओंगिआ देवा "एव बुत्ता नमाणा हट्ट "विणएण वयण पिटमुणित, पिटमुणित्ता उत्तर- पुरित्यम दिसीभाग अवन्त्रमित, वेडव्वियममुखाएण ममोहण्णित "दोच्चं पि वेडव्वियममुखाएणं ममोहण्णित (राय० मू० २७६)
- २१. · · अट्टमहम्मं मोवण्णियाण कलमाण, अट्टमहस्स रुप्पमयाण कलसाण (राय० सू० २७६)
- २२. अट्ठसहस्स मणिमयाण कलमाण, अट्ठमहस्म मुवण्ण-रुप्पामयाण कलसाण, अट्ठमहस्म सुवण्णमणिमयाण कलमाण, अट्ठमहम्स रुप्पमणिमयाण कलमाण (राय० सू० २७६)
- २३. अट्ठसहस्स सुवण्णरूपमणिमयाण कतसाण अट्टमहम्स भोमिज्जाण कनसाण (राय० सू० २७६)
- २४. एवं—भिगाराण आयमाण थानाण पाईण सुपतिद्वाण (राय० सू० २७६)
- २५. रयणकरडगाण (चित्ररत्न करण्डक (वृ० प० २४२) पुष्फचगेरीण महत्रचगेरीणं (राय० सू० २७६)
- १. भगवती सूत्रकार ने शक देवेन्द्र के सीधर्मावतसक महाविमान के वर्णन प्रसग (२० १०।६६) में 'राय-पसेणइय' सूत्र का सकेत देते हुए लिखा है- 'शक देवेन्द्र के विमान का प्रमाण, उपपात सभा, अभिपेक सभा, अलंकार मभा तथा अर्चनिका से लेकर आत्म-रक्षक देवो तक पूरा प्रसग सूर्याभ देव की तरह समझना चामिए। यह वात 'भगवती जोड' (ढाल २२४, गा० १५ तक था गई है। इसके बाद जयांचार्य ने जोट मे राजप्रश्नीय सूत्र के अनुमार कही विस्तार के साथ और कही सक्षेप मे पूरा वर्णन किया है। इसी ढाल की १७ वी गाया मे प्रारभ हुआ यह वर्णन ३१२ वी गाया तक च नता है। सूर्याभ देव और शक देवेन्द्र के वर्णन मे घोडा अन्तर है। प्रस्तुत ऋम मे सूर्याभ देव के नाम, राजधानी, परिवार आदि के स्थान की खाली छोडते हुए जोट के सामने 'रायपसेणइय' का पाठ उद्धृत किया गया है।

इस पाठ की जोड में केवल एक ही णव्द है—'चित्र रत्नकरिण्डया' जो वृत्तिकार द्वारा किए गए अर्थ का सवादी लगता है। इससे निष्कर्प यह निकलता है कि जयाचाय को प्राप्त आदर्श में वायकरगाण और चित्ताण पाठ नहीं थे। ये पाठ कई प्रतियों में उपलब्ध नहीं है। यह सूचना रायपसेणइय पृ० १०७ की टिप्पण संख्या २ में दी गई है।

१७. तए ण में ' ' ' ' ' उववायमभावो पुरित्यमिल्तेण दारेण निग्गच्छः, जेणेव हरा, तेणेव ' ' जनमज्जण करेइ, (राय मू० २७७)

<sup>\*</sup>लय: सुण चरिताली । थारा लक्षण

१. 'रायपसेणइय' सूत्र २७६ में सपितट्ठाण के बाद वायकरगाण चित्ताण रयण-करडगाण पाठ है। इसकी मुद्रित वृत्ति में वायकरगाण और रयणकरडगाण ये दो पाठ हैं। वृत्ति के अनुसार रयणकरडग शब्द का अर्थ है—चित्र रत्न करडग (वृ० प० २४२)।

- २६. आभरण चगेरी चगी, एक सहस्र ने आठ सुरगी। मयूरपिच्छ पूजणी नी चगेरी, एक सहस्र ने आठ भलेरी।।
- २७ पुष्पपडल पिण एता, जाव लोमहत्थ पडल समेता। एक सहस्र ने आठ सुछत्रो, चामर सहस्र ने आठ पवित्रो॥
- २८ सुगध तेल ना डावडा इतरा, जाव अजन डावडा जितरा। एता कुडछा धूप उखेवा, सहु विकुर्वे सेवग देवा॥ ः
- २६. स्वभाविक वैक्रिय ना तेही, कलशा यावत घूप कुडछा लेई। सौधर्मावतसक थी चाल्या, ए तो उत्कृष्ट गति थी हाल्या।।
- ३०. ग्रहै क्षीरसमुद्र नो पाणी, तेहना उत्पल कमल पिछाणी। जाव लक्षपत्र' कमल लेई, आया पुष्करोदक दिंघ तेही।।
- ३१ ग्रहै पुक्खरदिघ जल सारो, कमल सहस्रपत्रादि उदारो। आया समय-क्षेत्र रै माह्यो, क्षेत्र भरत एरवत ताह्यो॥
- ३२. तीर्थ मागध वर दाम प्रभास, सुर उदक माटी लै तास। ए लौकिक तीरथ होई, पिण धर्म तीर्थ नहि कोई॥
- ३३ ग्रहै गगा सिधु नो पाणी, वली रत्ता रत्तवती नो जाणी। विहु तट नी माटी उदारो, ते पिण देव ग्रहै तिणवारो॥
- ३४ भरत सीमा चूल हेमवतो, एरवत सीमा सिखरी सोह्तो। तिहा आया देव हुलासो, सर्व तूवर रस ले तासो।
- ३५ सर्व फूल सर्व गधो, ग्रहै सर्व माल्य सुखकदो। ओपिध सर्व उदारो, विल ग्रहै सरिसव सुविचारो।।
- ३६. हेमवते पद्म द्रह ठीक, सिखरी पर्वत द्रहे पुडरीक। विहु द्रह ना उदक ग्रहै आछा, जाव कमल सहस्रपत्र जाचा।।
- ३७ युगल क्षेत्र हेमवत वासो, तिहा नदी रोहिया रोहितासो। क्षेत्र एरणवत में पिछाणी, सुवर्णकूला रूपकूला जाणी।।
- ३८. ए पिण महानदी नो सारो, ग्रहै उदक धरी अति प्यारो। विहुतट नी माटो आछी, ते पिण देव ग्रहै अति जाची।।
- ३६. वृत्त चैताढ्य ते विहु खेतो, सद्दावई वियडावई तेथो। सर्व तूवर रस पुष्फ गध माला, ओपधि सरिसव ग्रहै सुविशाला।।
- ४०. गिरि महाहेमवत ने रूपी, ग्रहै खाटो रस पुष्पादि अनूपी। महापदा द्रह महापुडरीक, तेहनो उदक कमल लै सधीक॥
- १ 'रायपसेणइय' मूल पाठ मे यहा 'सहस्सपत्ताइ' पाठ है। इस पाठ के पाठातर का यहा उल्लेख नहीं है। इस ढाल की अनेक गायाओं मे इसी प्रकार लक्षपत्र या लाख पाखुडिया शब्द प्रयुक्त है।

२६. आभरणचंगेरीणं "लोमहत्यचंगेरीणं

, (राय० सू० २७६)

- २७. पुष्फपडलगाण जाव (स० पा०) लोमहत्यपडलगाण ....छत्ताण चामराणं (राय० स० २७६)
- २८ तेल्लसमुग्गाण जाव (स० पा०) अजणसमुग्गाण · · · अट्ठसहस्स घूवकडुच्छुयाण विज्ञव्वति (राय० सू० २७६)
- २६. विउन्वित्ता ते साभाविए य वेउन्विए य कलसे य जाव कडुच्छुए य गिण्हति, गिण्हिता (सोहम्मवर्डेसाओ) विमाणाओ पिंडिनिक्खमिति, पिंडिनिक्खिमित्ता ताए उक्किट्ठाए "देवगईए ""वीतिवयमाणा (राय० स० २७६)
- ३०. "खीरोयग गिण्हति, गिण्हित्ता जाइ तत्युष्पलाइ जाव (स० पा०) सहस्सपत्ताइ ताइ गिण्हित्ता गिण्हित जेणेव पुनखरोदए समुद्दे तेणेव उवागच्छित (राय० स० २७६)
- ३१ उवागिकछत्ता पुक्खरोदय गेण्हति, गेण्हित्ता जाइ तत्युप्पलाई सहस्सपत्ताइ ताइ गिण्हति, गिण्हित्ता जेणेव समयक्षेत्रे जेणेव भरहेरवयाइ वासाइ
- (राय॰ सू॰ २७६) ३२. जेणेव मागहवरदामपभासाइ तित्थाइ तेणेव उवा-गच्छति, उवागच्छिता तित्योदग गेण्हति, गेण्हिता
- तित्थमट्टिय गेण्हित (राय० सू० २७६) ३३ जेणेव गग-सिंधू-रत्ता-रत्तवईओ महानईओ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सिललोदग गेण्हिति, गेण्हित्ता उभओकूलमट्टिय गेण्हिति, (राय० सू० २७६)
- ३४. जेणेव चुल्लिहिमवतसिहरिवासहरपव्वया तेणेव जवा-गच्छिति, तेणेव जवागच्छित्ता सव्वतुयरे
- (राय० सू० २७६) ३५ सन्त्रपुष्फे सन्वगधे सन्वमल्ले सन्त्रोसहिसिद्धत्थए गिण्हति, (राय० सू० २७६)
- ३६. जेणेव पउमपुढरीयदहा तेणेव उवागच्छति, उवाग-च्छिता दहोदग गेण्हति, गेण्हित्ता जाइ तत्य उप्पलाइ (जाव) सहस्सपताइ ताइ गेण्हति (राय० सू० २७६)
- ३७,३८ जेणेव हेमवयएरण्णवयाइ वासाइ जेणेव रोहिय-रोहियससुवण्णकूल-रुप्यकूलाओ महाणईओ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सितलोदग गेण्हति, गेण्हित्ता उभओकूलमट्टिय गिण्हति (राय० सू० २७१)
- ३६ जेणेव सद्दावाति-वियडावाति वट्टवेयड्ढपञ्चया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता सन्वतूयरे सन्वपुष्फे सन्व-गधे सन्वमल्ले सन्वोसहिसिद्धत्यए गिण्हति
- ४० जेणेव महाहिमवत-रुष्पि-वानहरपव्यया सव्वत्यरे सव्वपुष्फे " जेणेव महापउम-पुडरीयद्दा दहोदग " सहस्सपत्ताइ ताइ गेण्हित (राय० सू० २७६)

- ४१. क्षेत्र हरिवास सोहता, नदी हरिसलिला हरिकंता। रम्यकक्षेत्र नरकता नारीकता, ग्रहै उदक माटी घर खता॥
- ४२. तिणे विहुं क्षेत्रे अवलोय, वृत्त वैताढ्य गिरि है दोय। गघावई मालवत, तूवर रस पुष्पादि ग्रहत।।
- ४३. निपव नीलवत गिरि केरो, तूवर पुष्पादि लेवै भलेरो। द्रह तिगिच्छ केसरी ना जाचा, लियै उदक कमल अति आछा।।
- ४४. पछै क्षेत्र विदेह तिहा आया, नदी सीता सीतोदा सुखदाया। तेहनो निर्मल पाणी लेवै, विहुं तट नी माटी ग्रहेवै॥
- ४५ विजय सर्व चक्री नी तास, तीर्थ मागघ वर दाम प्रभास। तेह तीर्थ नु उदक ग्रहता, विल माटी ग्रहे घर खता॥
- ४६. विदेह क्षेत्रे अंतर नदी वार, तसु उदकादिक लिये उदार। विल वक्खारा पर्वत सोल, लिये तूवर पुष्पादि सुचोल।।
- ४७. हिवे मदरगिरि गुणमाल, भूमि ऊपर वन भद्रसाल। ग्रहै सव तूवर सर्व फूल, सर्व माल्य प्रमुख जे अमूल।।
- ४८ ऊई पाच सी योजन सुहाया, नंदन वन छै तिहां सुर आया। सर्व तुवर आदि ग्रहता, सरस गोशीर्प चंदन लेवता।।
- ४६ तीजो वन सोमनस उदार, ऊची योजन वासठ हजार। ग्रहै सर्व तूवर रस जाव, सर्व ओपिंघ सरिसव साव॥
- ५० विल चदन सरस गोसीस, दिव्य फूलमाला सुजगीस। गाल्यो तथा पचायो श्रीखड, जेहवो गय सुगय सुमड।।
- ५१ तेहथी छत्तीस सहस्र योजन्न, ओ तो ऊचो पडग वन्न। सर्व तूवर रस अमद, श्रीखड गघ सरीखो सुगव॥
- ५२. सेवग सर्व वस्तु लेई सघीक, जिहा अभिपेक-सभा रमणीक। जिहा इद्र तिहा शीघ्र आय, सिर आवर्त्त करि अधिकाय।।
- ५३ अर्जाल विहु कर जोड़ी ने, जय विजय कर वद्यावी ने। ते महाअर्थ महामूल्य, वर मोटा योग्य अतुल्य।।
- ५४ विपुल विस्तीर्ण आरोग्य, इन्द्राभिपेक करिवा योग्य। उदक प्रमुख अवलोय, थापे सर्व सामग्री सोय॥

- ४१. जेणेव हरिवासरम्मगवामाइ जेणेव हरि' हरिकंत-नरनारिकंताओ महाणईओ तेणेव उवागच्छति, उवा-गच्छित्ता सिललोदग गेण्हित गेण्हित्ता उमओकूल-मिट्टयं गेण्हिति । (राय० सू० २७६)
- ४२. जेणेव गंधावाति-मालवत-परियागा वट्टवेयट्ढपव्वया ....मब्बतूयरे सब्वपुष्फे .....गिण्हति

(राय० सू० २७६)

- ४४. जेणेय महाविदेहे वासे जेणेय मीता-मीनोदाओ महाण-दीओ "मलीलोदगं गेण्हति गेण्हित्ता उपयोक्त्न-मट्टिय गेण्हति (राय० सू० २७६)
- ४५ जेणेव मव्यचनकविट्ट-विजया जेणेव मव्यमागहवर-दाम-पभामाइ तित्याइ तेणेव उवागच्छति, उवा-गच्छिता तित्योदग गेण्हित गेण्हित्ता तित्यमिट्टियं गेण्हिति। (राय० सू० २७६)
- ४६ जेणेव सन्वतरणईको स्मिलोदग गेण्हति, गेण्हित्ता उभजोक् लमट्टिय गेण्हित र्जेणेव मञ्जवक्वारपन्त्रया रासन्वतूयरे सन्वपुष्फे य गेण्हिति

(राय० सू० २७६)

- ४७. जेणेव मदरे पव्वते जेणेव भद्गालवणे "सन्वतूपरे सन्वपुष्फे "मन्वपहले " गेण्हति
- (राय० सू० २७६) ४८. जेणेव णंदणवणे तेणेव उवागच्छतिः सव्वतूयरेः सरस गोमीसचंदण गिण्हति (राय० सू० २७६)
- ४६ जेणेव सोमणसवणे तेणेव उवागच्छित, उवागच्छिता सव्वतूयरे जाव (स० पा०) सव्वोगहिमिद्धत्यए य (राय० स० २७६)
- ५०. सरस गोमीमचदण च दिन्त्र च सुमणदाम गिण्हति (राय० सू० २७६)
- ५१. जेणेव पडगवणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता सञ्चतूयरे " दह्रमलयमुगधियगधे गिण्हति । (राय० सू० २७६)
- ५२ जेणेव अभिनेयसभा जेणेव सक्के देविदे देवरायां तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता सूरियाभं देव करयल-परिगाहिय सिरसावत्तं मत्यए (राय० सू० २७६)
- ५३. अर्जील कट्टु जएण विजएण वद्धावेति, वद्धावेत्ता त महत्य महत्य महत्व (राय० सू० २७६)
- ५४ विउल इदाभिसेय उवट्ठवेंति (राय० सू० २७६)
- १ जोड मे इसके स्थान पर हिरसिलला है। रायपसेण-इय मे हिरसिलला को पाठान्तर मे रखा गया है।

४४. हिवै इन्द्र तणां तिण वार, सामानिक चउरासी हजार। विल अग्रमहिषी अठ, परिवार सहित सुघट।। ४६ परिषद तीन सुजात, विल अणिय कटकािषप सात। जाव अन्य वहु सुधर्मवासी, वर अमर सुरी सुखरासी।।

५७. अप्ट सहस्र ने चउसठ उदार, कलश सुवर्णादिक नां सार। स्वभाविक वैक्रिय ना वारु, ते कलश किसायक चारु।।

## गोतक-छंद

प्रद वर कमल नू वैसणू जेहने, सुगंघ वर जल किर भर्या। विल चदने किर चिंचता, अतिही मनोहर उच्चर्या।। प्र आरोपिता जसु कलश कठे, रक्त सूत्र सुहामणा। प्रुन पद्म उत्पल कमल ना, तसु ढाकणा रिलयामणा।। ६० सुकुमाल कोमल कर तले किर, अमर कलशा संग्रह्मा। सह सुगंघ जल किर सर्व, तीरथ-मृत्तिका कर शोभिया।। ६१ सह तूवर रस किर जाव संघली, ओषधी सिरसव करी। सह ऋद्धि किरके जाव संघली, पवर वार्जित्रे वरी।। ६२ इह रीत अति मोटैज मोटै, इद्र अभिषेके करी। अभिषेक करता चित्त हरता, हरण घरता सुर सुरी।। ६३ तव शक्र ने सामानिकादिक, राज वैसाणे तदा। वर पूर्व कृत तप तसु प्रभावे, लही उत्तम संपदा।।

## दूहा

६४. अमर वहूं तिण अवसरे, सुधर्मावतस विमान । तेह विषे कोतुक करें, सुणो सुरत दे कान ॥ ६५. \*इन्द्राभिषेक उदारों रें, वर्त्तते छते सुर केइ सारों । रज रेणु मिटावण भावें रें, ए तो सुरिभ उदक वरसावे ॥

६६ केइ विशेष रज उपशमायो, उदक छाटी नै ताह्यो। जिम कचवर सोधन लीपेहो, मार्ग पवित्र करें तिम एहो।।

६७ केइ मच ऊँपर करैं मचो, केइ अनेक रगे रगी सचो।
एहवी घ्वजा पताका जानो, मिंडत ऊर्द्ध करैं असमानो।।
†पुरन्दर सुर प्यारे, शक्र सुर इन्द्र प्यारे।
ए तो सुकृत ना फल सारो, मधवन सुर प्यारे।। (ध्रुपद)

४४. तए णं चित्रासीइ सामाणियसाहिस्सओ अट्ठ अग्ग-महिसीओ सपरिवारातो, (राय० सू० २८०) ४६. तिण्णि परिसाओ सत्त अणियाहिवइणो जाव

(सं० पा०)अण्णेवि वहवे सोहम्मविमाणवासिणो देवा य देवीओ य (राय० सू० २८०)

५७-६२. तेहि साभाविएहि य वेजिव्वएहि य वरकमलपद्दुर्णोहि सुरिभवरवारिपिडिपुण्णेहि चंदणकयचच्चाएहि आविद्धकंठगुणेहि पउमुप्पलिपहाणेहि सुकुमालकरयलपिरग्गहिएहि अट्टसहस्सेण सोविण्ण्याण कलसाणं "जाव (स० पा०)" सव्वोदएहि सव्वमिट्टयाहि
सव्वतूयरेहि जाव (स० पा०) सव्वोसहिसिद्धत्थएहि य सिव्विड्ढीए (जाव सू० १३) 'नाइयरवेण'
महया-महया इदाभिसेएणं अभिस्चिति

(राय० सू० २८०)

६६ अप्पेगितया देवा ......पसत्तरय करेंति । अप्पेगितिया देवा ....असियसंमिष्णिओविलित्त सित्तसुइ ...... करेंति । (राय० सू० २८१) आसिकम्—उदकच्छटकेन सम्माणित—संभाव्यमान-कचवरशोधनेन उपलिप्तिमव गोमयादिना उपलिप्त तथा सिक्तानि जलेन अत एव शुचीनि—पवित्राणि (राय० वृ० प० २४७)

६७. अप्पेगितिया देवा ""मचाइमचकलिय करेंति अप्पे-गतिया देवा ""णाणाविहरागोसियझयपडागाइ-पडागमिडिय करेंति। (राय० सू० २८१)

<sup>&</sup>quot;लय: थे तो चतुर सीखो सुघ चरचा †लय: ज्यारे शोभे केसरिया साड़ी

- ६ केड लीपै घवल विमानं, गोसीस सरस मुविघान्। पुरन्दर। रक्त चन्दन करि सीघा, पचांगुनि हाथा दीघा।। गक्र०।
- ६६. केड द्वार ने देश भागेह, चदन' चिंत घट स्थापेह। वले शोभन तोरण सार, एहवा कीवा अधिक उदार॥
- ७०. केइ नीचली भूमि थी ताह्यो, ऊपर चदवा लग अधिकायो । वांचै वर्तुल वहु पुष्पमाला, वारू लवायमान विशाला ॥
- ७१. केड पच वर्ण नां सुगव, मूर्क पुष्प-प्ज सुखकद। नेहिज पूजा उपचार सहीत, एहवो करै विमाण सुरीतं॥
- ७२. केड मुवर्मावतंस विमाणं, वर कृष्णागर कुंदरुक्क जाणं। सेल्हा रस ना धूप करि जेह, मधमघायमान करेह।।
- ७३. केड मुगंच पवर गध युक्त, गंघ नी वातीभूत प्रयुक्तं। मुर एहवो विमाण करेह, अति उचरग हरप घरेह।।
- ७४ \*केड हिरण्य मुवर्ण वर्षायो, वले रत्न-वर्षा करै ताह्यो। वलि फूल नी वृष्टि करेह्रो, फल वृष्टि करै घर नेहो।।
- ७५. विल फूलमाल वर्पायो, आभरण नी वृष्टि सुहायो। करे गव कपूरादिक वृष्टि, चूर्ण वृष्टि अवीरादि इष्टि।।
- ७६ केड रूपा नी विव मगलभूतो, अन्य मृर भणी दे शुभ मूतो। इम मुवर्ण रत्न प्रकारो, मुर दिये फूनादिक सारो।।
- ७७. केडक सुर विल ताह्यो, चिउंविच वाजत्र वजायो। ततं किहता मृदग पडहादि, विततं किहतां वीणादि।। ७५. घन किहतां कंसादि, भुसिर गंख काहलादि। ए वार्जित्र च्यार प्रकारो, ए तो देव वजावे उदारो॥

# \*लय: थे तो चतुर सीखो सुध चरचा

- रायपसेणइयं सूत्र २८१ में वदण कलम और वंदणघड इन दो शब्दो का उल्लेख है। जोड में चन्दनचित घट लिखा हुआ है। यहा दो बिन्दु चिन्तनीय हैं—
- कुछ प्रतियो मे चदन कलम और चंदन घट दोनो पाठ हो और कुछ प्रतियो मे केवल चंदण घट पाठ ही हो ।
- कुछ प्रतियों में वंदणकलस और वदणघड पाठ है जहा वदणकलस पाठ है वहाँ पाठान्तर की कोई सूचना नहीं है। ऐसी स्थिति में यह अनुमान किया जा सकता है कि निषि दोष के कारण चंदण का वदण अथवा वन्दन का चदण हो गया हो। जोट में चंदण होने पर भी 'रायपसेणइय' में स्वीकृत पाठ वंदण को ही उसके सामने उद्धृत किया गया है। आगे की गाथाओं के सामने भी यही पाठ उद्धृत है।
- २. रायपसेणइयं में मल्लवासं के बाद गंधवास चुण्णवास पाठ है। उसके बाद आभरणवास है। जोड़ में कम का व्यत्यय है। सभव है कुछ आदर्जी में पाठ का कम यह रहा होगा।

- ६ द. अप्पेगितिया देवा सोहम्मवर्डेसयं विमाण लाउल्लोइय-महियं गोसीस-सरस-रत्तवदण-दह्र-दिण्ण-पचंगुलितल करेंति । (राय० सू० २८१)
- ६६, अप्पेगतिया देवा : उविचयः वदणघड-सुकय तोरण-पडिदुवार-देमभागं करेंति ।

(राय० सू० २८१)

- ७०. अप्णेगतिया देवा .... आसत्तोसत्त-विउल-वट्टवग्या्रिय-मल्ल-दाम-कलावं करेंति (राय० सू० २८१)
- ७१. अप्पेगतिया देवा "पंचवण्ण-मुरभि-मुक्कपुष्फपुंजोव-यारकलिय करेंति । (राय० सू० २८१)
- ७२. व्यपेगितिया देवा सोहम्मवर्डेसयं विमाणं कालागर-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-चूव-मघमघेत - गंद्युद्ध्याभिराम करेंति । (राय० सू० २८१)
- ७३. अप्पेगडया देवा '''सुगद्यगिघयं गद्यविष्ट भूतं करेंति । (राय० सू० २८१)
- ७५. मल्लवाम वासति, गद्यवास वासति चुण्णवासं वासति आभरणवास वासति । (राय० सू० २८१)
- ७६. अप्पेगतिया देवा हिरण्णविहि भाएंति एवं मुवण्ण-विहि रयणविहि पुष्फविहि भाएंति ।

(राय० सू० २८१)

हिरण्यविधिहिरण्यरूप मगलभूतं प्रकारं (राय० वृ० प० २४७)

७७. अप्पेगतिया देवा चरुव्विहं वाइत्तं वाएति--ततं विततं (राय॰ सू॰ २५१)

७८. घणं सुसिरं (राय० सू० २८१)

- ७६ केइ चछविघ गावै गीतं, छिवसत्त पायताय पुनीतं।
  तृतीय मदाय सुजानं, तूर्य रोइय ते अवसान।।
  चा०—कोइक देवता चिहुं प्रकारे गीत गावै, ते कहै छै—उक्खिताय—
  प्रथम गीत प्रारम्यो छै। पायत्ताय—चिहु चरणे वाघ्यो। मदाय—मध्य भागे
  मूच्छंनापूरय गुण करी। छेहडे रोइयावसाण—चोरिवा योग्य थया।
  द०. केइ शीघ्र नाटक विधि देखाडै, केइ नाटक विलवित पाड़ै।
  केइ द्रुत-विलवित विद्ध, एहवा नाटक देखाडै प्रसिद्ध।।
  - दश केइ अचित नाटक देखाडै, केड आरिभत नाटक पाडै। केड अचित-आरिभत विद्धि, नाटक उभय देखाड़ै समृद्धि।।
  - दर केइ आरभड नाटक देखाडै, केइ भसोल नाटक पाडै। केइ आरभड-भसोल पिछाणी, नाटक देखाडै उचरग आणी।।

### गीतक-छंद

द अचोज उत्पतवै करी फुन, अघो पडवु व्यापवु।
सकोचवू ज पसारवु, गमनागमन फुन थापवु।।
द विल भ्रत भाव सभ्रत भाव ज, नाम दिव्य प्रधान ही।
ए नृत्यविधि आरभड भसोलज, सुर दिखाडै जान ही।।
द उत्पात पूर्व निपात, जेह में ते उत्पात-निपात ही।
पहिलू पडी नै ते पछै, उत्पात अचो जात ही।।
द निपात पूर्व उत्पात जेह में, ते निपात-उत्पात ही।
उत्पत्य अचो जई पहिला, पछै नीचो आत ही।।
द७. सकुचित पूर्व प्रसारित जे, ते सकुचित-प्रसारित।
पहिला पसारी ने पछै सकोचिवू इम कारित।।
दद इम गमन ने आगमन आख्यू, अर्थ पूरववत वही।
इम भ्रत ने सभ्रत नामे दिव्य नाटक विघ कही।।

चा०—उत्पात ते ऊचो जायवू, पिण पूर्व निपात—नीचु पड़वू छै जेहने विषे, एतने पहिला नीचो जई पछे ऊचो जाय ते उत्पात-निपात कहियै। इम निपात ते नीचू पड़वू, पिण पूर्व उत्पात—ऊचो जायवू छै जेहने विषे एतने पहिला ऊचो ज़ई पछै नीचो पडें ते निपात-उत्पात कहियै। इम सकुचित-प्रसारित ना वे भेद। इम गमन ते जायवू अने आगमन ते आयवू, तेहना वे भेद। इम भ्रत सम्रत कहिवू। ए सर्व भेद 'आरभड-भसोल' नाटक ना छै। ते आरभड-भसोल एहवै नाने दिच्य नाटक विध देखाडें।

प्रकृति पट-भाषा च्यार प्रकारो, वोली देखाडै सुर घर प्यारो। ते दाष्टाँतादिक घारो, नाटक ग्रथ माहि अधिकारो।

- ७६. अप्पेगइया देवा चउन्विह गेयं गायंति, तं जहा— उक्खित्ताय पायंताय मदायं रोइयावसाणं । र्रं (राय० सू० २८१)
- ५०. अप्पेगतिया देवा विलविय दुय नट्टविहि उवदसेंति । अप्पेगतिया देवा विलविय णट्टविहि उवदसेंति । अप्पेगतिया देवा दुय-विलविय णट्टविहि उवदंसेंति । (राय० सू० २८१)
- दश्. अप्पेगितया देवा अचिय नट्टिविह उवदसेति । अप्पेगितया देवा रिभिय नट्टिविह उवदसेति । अप्पेगइया देवा अचिय-रिभिय नट्टिविह उवदसेति । (राय० सू० २८१)
- ५२ अप्पेगइया देवा आरभड नट्टविहि उवदसेंति । अप्पेगइया देवा भसोल नट्टविहि उवदंसेंति । अप्पेगइया देवा आरभड-भसोल नट्टविहि उवदसेंति (राय० सू० ३०१)
- दत्र. अप्पेगइया देवा उप्पायनिवायपसत्त संकुचिय-पसारियं रियारिय (राय० सू० २८१)
- प्त भत-सभत णाम दिव्व णट्टविहि उवदर्सेति । (राय० स० २८१)

बा० — उत्पातपूर्वो निपातो यस्मिन् स उत्पातनिपा-तस्त एव निपातोत्पातं संकुचितप्रसारितं भ्रान्त-सभ्रान्त नाम आरभटभमोल दिव्य नाट्यविधिमुपदर्श-यन्ति । (राय० वृ० प० २४६)

<sup>ैं</sup>ज्यारे शोभै केसरिया साड़ी †लय: थे तो चतुर सीखो सुध चरचा

१ पट्भाषा मूल पाठ मे नही है। जयाचार्य ने अपनी दृष्टि से व्याख्या दी है। शायद टब्वे आदि के आधार पर यह पद्य लिखा गया है।

- वा० केतलायक देवता च्यार प्रकारे पट भाषा बोली देखाडै, ते च्यार प्रकार कहै छै-१. दार्ग्टीतिक, २. प्रात्यितक, ३. सामतोपपातिक, ४. लोक-मध्यावसान—ए चिहु पद नी व्याख्या नाटक ग्रथ थकी जाणवी।
- ६०. केयक देव बुक्कारे, म्हासू युद्ध कर तू इहवारे। केइ प्रीणे घरी अहकारो, आतम स्थूल करें तिहवारो॥
- हश. केड लास्य रूप नाटक पाडै, केड ताण्डव नाटक देखाडै। केड च्यारू साथ सुवासो, इम कर रह्या देव तमासो।।
- १२ केइ देव आस्फोटन करता, मही प्रमुख कर स्यूं हणता। केइ देव विलगे माहोमाह्यो, केइ त्रिपदी छेद करे ताह्यो॥
- ६३. केइ आस्फोटन पिण ताह्यो, वले वल्गावु ते माहोमाह्यो । वित त्रिपदी छेद साकल तोडे, एह तीनूई विच प्रति जोडे ॥
- ६४. केड हय जिम करै होसारो, केइ गज जिम गुलगुलाटकारो। केइ रथ जिम करै घणघणाटो, केइ तीनू करै सुर थाटो।।
- ह्थ \*केइ सुर उछले स्वयमेवा, केइ विशेष ऊछले देवा। केइ पेला नी कूटि काढंता, केइ देव तीनूई करता॥
- ६६ केड उड जाय ऊचा आकाशो, केइ देव नीचा पडै तासो। केइ कूदी-कूदी तिरछा पडता, केइ देव तीनूई घरता॥
- ह७. केइ सुर सिंहनाद करता, केइ पग करि भूमि कूटता। केइ भूमि चपेटा देवें, केइ देव तीनूई करेवें॥
- ६८ केइक देव गाजता, केइ विजल जिम चमकता। केयक मेह वर्पाय, केड देव तीनू करैं ताय।।
- हु केड ज्वले छै देवा, केइ तपै ततखेवा। केइ तपै छै विशेख, केइ कार्य तीनू उवेख।।

६०. अप्पेगतिया देवा वुक्कारेंति, अप्पेगतिया देवा पीणेंति। (राय० सू० २५१) अप्येकका देवा बुक्काणब्द कुर्वेन्नि, पीनयन्ति—पीन-मात्मान कुर्वेन्ति—स्यूला भवन्तीत्यर्थः

(राय० वृ० प० २४८)

६१. अप्पेगतिया लासेंति । अप्पेगतिया तडवेंति । अप्पेगतिया बुवकारेंति, पीणेंति, लासेंति, तडवेंति । (राय० सू० २८१)

लासयन्ति लास्यरूप नृत्य कुर्वन्ति, ताण्डवयन्ति— ताण्डवरूप नृत्य कुर्वन्ति । (राय० वृ० प० २४८)

हर. अप्पेगतिया अप्फोर्डेति । अप्पेगतिया वग्गति । अप्पे-गतिया तिवइ छिदति । (राय० सू० २५१) आस्फोटयन्ति भूम्यादिकमिति गम्यते । (राय० वृ० प० २४६,२४६)

१३. अप्पेगतिया अप्फोर्डेति वग्गति, तिवइ छिदति । (राय० सू० २८१)

६४ अप्पेगतिया हयहेसिय करेंति । अप्पेगतिया हित्यगुलगुलाइयं करेंति । अप्पेगतिया रहघणघणाइय करेंति । अप्पेगतिया हयहेमियं करेंति, हित्यगुलगुलाइय करेंति, रहघणघणाइय करेंति । (राय० सू० २०१)

६५ अप्पेगतिया उच्छलेंति, अप्पेगतिया पोच्छलेंति, अप्पेगतिया उनिकट्ठिय करेंति । अप्पेगतिया उच्छलेंति, पोच्छलेंति, उक्किट्ठिय करेंति । (राय० सू० २८१)

६६. अप्पेगतिया ओवयति, अप्पेगतिया उप्पयति, अप्पे-गतिया परिवयति, अप्पेगइया तिण्णि वि । (राय० सू० २८१)

परिपतन्ति—तिर्यक् निपतन्तीत्यर्थः

(राय० वृ० प० २४६)

८७ अप्पेगइया सीहनायं नयित, अप्पेगितया पादवद्द्रय करेंति ।
 अप्पेगितया भूमिचवेड दलयित, अप्पेगितया तिण्णि
 वि । (राय० सू० २५१)

६८. अप्पेगितया गज्जंति, अप्पेगितया विज्जुयायित, अप्पेगद्दया वास वासित, अप्पेगितया तिण्णि वि करेंति। (राय० सू० २८१)

६६. अप्पेगतिया जलति, अप्पेगतिया तवति, अप्पेगतिया पतवेति, अप्पेगतिया तिण्णि वि ।

(राय० सू० २८१)

<sup>\*</sup>लय: ज्यारे शोम केसरिया साड़ी

- १०० केइ हवनारे नेइ पुननारे', केइक पर नै थुनकारे। केइ पोता नो नाम सभलावै, केइ च्यारूई कर हुलसावै।। वा०—हनकारेंति ते पर नै दिनय करि कला देखाडै, फुनकारेंति ते फुत्कार
- करै, थुक्कारेंति ते थू-थू करै।
- १०१ केइ सुर करै सुर-सन्निपातो, सुर एकठा मिले विख्यातो । सुर उद्योत करै केइ देवा, केड सुर उत्कलिका करेवा ।।
- १०२ केइ देव कहकह करता, प्रकृत देव हर्प अति धरता। स्वेच्छा वचन कर जेहो, कोलाहल वाल जेम करेहो।।
- १०३ केइ दुहदुहदक शब्द करता, केइ चेलुक्लेव विकरता। इम एक-एक आदरता, केइ कार्य छहु आचरता॥
- १०४. केड ऊभा उत्पल हस्त लेई, जाव लक्ष पाखिडया कहेई। विल कलश ग्रही ऊभा केई, जाव घूप-कडुच्छ कर लेई।।
- १०५ हृष्ट तुष्ट थका जाव जेहो, हृदय विकसायमान करेहो। चिहु दिशि सर्व थकी दोडता, फुन परिघावति आवंता।।
- १०६ \*हिवै इद्र तणा तिणवार, सामानिक चउरासी हजार। जाव आत्मरक्षक देवा, त्रिणलख सहस्र छतीस सुलेवा।।
- १०७. अन्य वहु सुर सुरी जाणो, एतो सुघर्मवासी पिछाणो।
  महाइद्राभिषेक करता, सिर आवर्त्तन करिने वदता।।
  †हो म्हारा दक्षिण अर्घ लोक ना स्वामी!

चिर जीव चिर नद ॥ (ध्रुपद)

- १०८ जय जय नदा । जय जय भद्दा । जय जय तू हे नद ।
  भुवन समृद्धिकारी आनन्द थावो, भद्रकल्याण थावो अमद ॥
  १०६ जय जय नद । भद्रतुक्त थावो, अणजीत्या शत्रु जीतीज्यो।
  - जीत्या पोता ना वर्ग पालीच्यो, जीत्या वर्ग मे वसीज्यो ।।
  - ११० सुर-गण महेन्द्र तणी पर, तारा-गण मे जिम चद। असुर-समूह विषे जिम चमरेद्र, जिम नाग विषे घरणेद्र॥
- १११ मनुष्य विषे जिम भरत चक्री फुन, वहु पल्योपम लगेह । वहु सागरोपम लग स्वामी, सुखे-सुखे विचरेह ॥

\*लय : सुण चिरताली थारा लक्षण

†लय : हो म्हारा राजा रा गुरुदेव वावाजी

- १ फुक्कारे और युक्कारे के स्थान पर रायपसेणइय मे क्रमण युक्कारेंति और थक्कारेंति पाठ है।
- २ यहा रायपसेणइय की वृत्ति मे 'बोलकोलाहल' पाठ है।

१००. अप्पेगितया हक्कारेंति, अप्पेगितिया थुक्कारेंति, अप्पेगितया थक्कारेंति, अप्पेगितया 'साइ साइ नामाइ साहेति' अप्पेगितया चत्तारि वि ।

(राय० सू० २८१)

१०१. अप्पेगइया देवसण्णिवाय करेंति, अप्पेगितिया देवु-ज्जोयं करेंति, अप्पेगइया देवुक्कलिय करेंति।

(राय० सू० २८१)

१०२ अप्पेगइया देवकहकहग करेंति । (राय० सू० २८१) प्राकृताना देवाना प्रमोदभरवशत. स्वेच्छावचनैवॉल-कोलाहलो देवकहकहस्त कुर्वन्ति ।

(राय० वृ० प० २४६)

१०३. अप्पेगतिया देवदुहदुहग करेति । अप्पेगतिया चेलु-क्खेव करेंति । अप्पेगइया देवसण्णिवाय, देवुज्जोय, देवुक्कलिय, देवकहकहग, देवदुहदुहग, चेलुक्खेव करेंति । (राय० सू० २८१)

१०४. अप्पेगितया उप्पलहत्थगया जाव सहस्सपत्तहत्थगया । अप्पेगितया वदणकलसहत्थगया जाव अप्पेगितया धूवकडुच्छुयहत्थगया । (राय० सू० २८१)

१०५ हट्टतुट्ट जाव (स॰ पा॰) हियया सञ्वओ समता बाहावति परिधावति । (राय॰ स्०२८१)

१०६,१०७ तए ण त " अण्णे य वहवे " " देवा य देवीओ य महया महया इदाभिसेगेण अभिस्चिति, अभिस्चित्ता पत्तेय-पत्तेय करयलपरिग्गहिय सिरसा-वत्त मत्थए अर्जील कट्टु एव वयासी—

(राय० सू० २८२)

१०८ जय जय नदा ! जय जय भद्ा !

(राय॰ सू॰ २८२)

१०६. जय जय नदा । भद्द ते अजिय जिणाहि, जिय च पालेहि जियमज्झे वसाहि— (राय० सू० २८२)

११० इदो इव देनाण, चदो इव ताराण, चमरो इव असुराण, धरणो इव नागाण, (राय० सू० २८२)

१११. भरहो इव मणुयाण—बहूइ पिलओवमाइ बहूइ सागरोवमाइ (राय० सू० २८२) ११२ सहंस चउरासी सामानिक सुरवर, जाव आत्मरक्ष जाणी। त्रि लख सहंस छतीस तुम्हारी, सेव करें सुखदाणी ॥ ११३ अन्य वहु सुघर्म कत्प ना वासी, देव देवी नों ताम। अधिपतिपणु मालिकपणु करता, आप विचरज्यो स्वाम।। ११४ जावत तुम्हे मोटे आडवर करता, पालता विचरज्यो ताह्यो। इम कही जय-जय शब्द प्रजुजे, देव देवी सुखदायो।।

११५ \*जक्र सुरिद्र तिवार,मोटे मोटे आडवरे सार । आछेलाल । इद्राभिषेक कीधे छते ॥

११६. अभिषेक सभा ने सोय, पूर्व ने बारणे होय। नीकेलाल। निकले निकली निज मते।।

११७ जिहा सभा अलकार, तिहा आवे आवी घर प्यार। सभा प्रदक्षिणा देतो छतो ॥

११८. अलकार सभा ने जोय, पूरव वारणे होय। जिहां सिहासण तिहा आवनो।।

११६. सीहासण ने विपेह, साहमों जेह। पूरव मुख करनें वेठो तिहा ॥

सामानीक, वलि परपद देव सधीक। १२०. इद्र तणा भड शृगार जोग स्थापे जिहा ॥

१२१ †शक्र देवेन्द्र तिवारो, लूहे वस्त्र करी तनु सारो। ते पसम सहित सुकमालो, रक्त वर्ण सुगंघ रसालो ॥ १२२. एहवे इक पट वस्त्रें उदारु, अग लूहै लूही ने वारु। सरस गोशीर्प चदन करीनें, गात्र प्रते लीपें लीपी नै।।

# दोहा

१२३ चदन तनु चरची करी, युगल देवदूष्य जाण। तेह वस्त्र पहिरे तदा, केहवो वस्त्र पिछाण?

१२४. †नासिका नी निःस्वासे कपायो, तिके देख्या नयन ठरायो। वर्ण फर्न युक्त सुखकारी, एहवो वस्त्र अधिक उदारी ।।

१२५ कोमल हय नी लाला, तेहथी अधिक घवल मृदु न्हाला। सुवर्ण तारे वारू, छेहडा खचित अधिक उदारू।।

१२६. निर्मल आकाश स्फटिक सरीखो, दिव्य देवदूष्य सुपरीखो। एहवो वस्त्र-युगल सुखकदो, ओ तो पहिरे पहिरी शक-इदो ॥ ११२. " "जाव (मं० पा०) आयरवय-देवमाहस्मीण " (राय० मृ० २८२)

११३,११४ अण्णेमि च बहुणं देवाण य देवीण य आहे-यच्य पोरेयच्य " कारेमाणे पानेमाणे विहराहि ति गट्टु महया मह्या मद्देणं जय-जय मद्द परजित । (राय० सू० २८२)

११५ तए ण से महया-महया उन्दाभिमेगेण अभिनित्ते (राय० मू० २८३) ममाणे

११६. अभिनेयसभाको पुरित्यमिल्नेण दारेण निग्गन्छिन, निग्गच्छिता (राय० मू० २८३)

११७ जेणेव अलंकारियमभा तेणेव खवागच्छित, खवा-अलकारियमभ अणुपयाहिणीकरेमाणे-गच्छिता अणुनमाहिणीकरेमाणे (राय० मू० २८३)

११८. अलकारियसभ पुरित्यमिल्लेण दारेण अणुपविनित, अणुपविमित्ता जेणेव सीहामणे तेणेव उवागच्छति (राय० सू० २८३)

११६. सीहासणवरगते पुरत्याभिमुहे मण्णिमण्णे ।

(राय० मू० २५३)

१२०. तए ण तस्म " "नामाणियपरिनोववण्णगा देवा अलकारियमढ उबहुर्वेति । (राय० मू० २६४)

१२१,१२२. तए ण ने .... तष्यदमयाए पम्हनसूमानाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइ लूहेति लूहेता, सरसेण गोसीमचदणेण गायाइ अणुनियति, अणुनियत्ता

(राय० सु० २८४)

पक्ष्मला च मा सुकुमारा च पक्ष्मलसुकुमारा तया सुरम्या गन्धकापायिनया — सुरिभगन्धन पायद्रव्यपरि-कमितया लघुशाटिकया गात्राणि रूक्षयति । (राय० वृ० प० २५१)

१२४. नासा-नीसास-वाय-वोज्झ चनयुहर वण्णफरिसजुत्त (राय० सू० २५४)

'नासिकानि:श्वासवाद्यम्' (राय० वृ० प० २५१)

१२५. हयलालापेलवातिरेगं घवल कणग-खिचयतकम्मं (राय० सू० २८४)

हयलाना-अध्वलाला तस्या अपि पेलवमतिरेकेण हयलालापेलवातिरेकम् — अतिविशिष्टमृदुत्वलघुत्व-गुणोपेतमिति भाव, धवल श्वेतं तथा कनकेन खिच-तानि-विच्छुरितानि अन्तकर्माणि-अचलयोर्वान-लक्षणानि यस्य तत् कनकखचितान्तकमं

(राय० वृ० प० २५१)

१२६,१२७. आगासफालियममप्पम दिव्व देवदूस-जुपलं नियसेति, नियंसेत्ता (राय० सू० २८४) आकाशस्फटिक नामातिस्वच्छ स्फटिकविशेपस्तत्सम-प्रभ दिव्यं देवदूष्ययुगल परिधत्ते परिधाय हारादीन्या-भरणानि पिनह्यति । (राय० वृ० प० २५१)

<sup>\*</sup>लय: आछेलाल

<sup>†</sup>लय: ज्यारे शोभ केसरिया साड़ी

१२७. देवदूष्य पहिरी करी, पेहरै गेहणा कहिये ते अधिकार हिव, साभलज्यो घर प्यार॥ १२८. \*पहिरै अप्टादशसर हारो, ए पूर्ण हार श्रीकारो। अर्द्ध हार पहिरत, ते नवसरियो द्युतिमत ॥

१२६ वली एकावली पहिरतो, विचित्र मणी मोती नो सोहतो। पछै पहिरै मुक्तावली हारो, वली रत्नावली सुविचारो ।।

१३० अगद वहिरखा एमो, केऊर कडग त्रुटित पिण तेमो। कटिसूत्र कणदोरो एहो, मुद्रिका दश अगुली विषेहो।।

१३१ वक्षसूत्र हिया नो वारू, ओ तो पहिरै अधिक उदारू। मुरिव मादल ने आकारो, गेहणो पहिरै अति घर प्यारो ॥ १३२. विल कठमुरवी पहिरंत, ते तो कंठ विषे भलकत। विल भूवणा अति लहकंत, पहिरे उद्योतकारी अत्यत ॥ १३३. कर्ण कुडल अति भलकै, चूडामणी ते सेहरो चलकै। ओ तो सर्व रत्न में सारो, शोभै इंद्र नै शिर श्रीकारो।। बा०-- चूडामणि नाम सकल पायिव रत्न सर्व सार, देवेंद्र ने मस्तके कीधो है निवास, सर्व अमगल ने शाति नो करणहार, रोग-प्रमुख दोप ने नाश नो करण-हार, अतिही श्रेष्ठ लक्षणे करी सहित परम मंगलभूत आभरण विशेष।

१३४. नाना प्रकार ना जेह, रत्ने करि युक्त स्लेह। एहवो मुकुट अनूप, इम गेहणा पहिरचा घर चूप।।

१३५ गथिम वेढिम पूरिम सघात, चउविघ माल्य करीने सुजात। सुरतरु जिम आत्म प्रतेह, अलकृत विभूषित करेह।।

१३६ कुडिका भाजन विपेह, गाल्यो श्रीखंड जेहवु एह। परम सुगध करेह, चारू उज्जल की घी १३७ प्रवर पुष्प नी माला, तिका पहिरै अधिक विशाला। हिन शक्र सुरेद्र तिवार, कीघा चउविघ अलकार।। १३८ केशालकार मल्लालकार, वलि वस्त्रालकार विचार। आभरणालकार' सुजोय, प्रतिपूर्ण अलकार कर सोय।।

<sup>\*</sup>लय: ज्यांरे शोभे केसरिया साड़ी

१२८. हार पिणिद्धेति " अद्धहारं पिणिद्धेइ (राय० सू० २८५)

हार:-अष्टादशसरिक, अर्द्धहारो-नवसरिक: (राय० वृ० प० २५१)

१२६. एगावलि पिणिद्धेति पिणिद्धेता मुत्तावलि पिणिद्धेति ········रयणाविं पिणिद्धेद (राय० सू० २८४) एकावली-विचित्रमणिका मुक्तावली-मुक्ताफलमयी (राय० वृ० प० २५१)

१३०. पिणिद्धेत्ता एव — अगयाइ केयूराइ कडगाइ तुडियाइ कडिसुत्तग दसमुद्दाणतग (राय० सू० १८५) अंगदानि—वाह्याभरणविशेषा । दशमुद्रिकानन्तक हस्तागुलिसम्बन्धिमुद्रिकादशकं।

(राय० वृ० प० २५२)

१३१. विकच्छसुत्तग मुरवि (राय० सू० २८५)

१३२. कठमुरवि पालव (राय० सू० २५५)

१३३ कुडलाइ चूडामणि (राय० सू० २८५) कुण्डले--कर्णाभरणे (राय० वृ० प० २५२) वा० - चूडामणिनीम सकलपाधिवरत्नसर्वसारो देवेन्द्र-मनुष्येन्द्रमूर्द्धकृतनिवासो नि शेपामगलाशान्तिरोग-प्रमुखदोषापहारकारी प्रवरलक्षणोपेत परममगलभूत-आभरणविशेप । (राय० वृ० प० २४२)

१३४. • • मजडं पिणिखेइ (राय० सू० २८४) चित्राणि--नानाप्रकाराणि यानि रत्नानि तै सकट-श्चित्ररत्नसकटः—प्रभूतरत्ननिचयोपेत.

(राय० वृ० प० २५२)

१३५ गथिम-वेढिम-पूरिम-सघाइमेण चउन्विहेण मल्लेण कप्परुवखग पिव अप्पाण अलिकयविभूसिय करेइ। (राय० सू० २५५)

१३६. दहर-मलय-सुगध-गधएहि गायाइ भुकुडेति (राय० सू० २८५)

१३७,१३८. दिव्वं च सुमणदाम पिणिद्धेइ।

(राय० सू० २८४)

तए ण से ""केसालकारेण मल्लालकारेण वत्थालकारेण —चउव्विहेण आभरणालकारेण अलकारेण अलिकयविभूसिए समाणे पिडपुण्णालकारे

(राय० सू० २८६)

१. 'रायपसेणइय' मे पहले आभरणलकार और उसके बाद वस्त्रालकार है।

- १३६. सिहासण थी ऊठी नै तिवार, अलंकार सभा नै पूर्व द्वार। नीसरी जिहा सभा व्यवसाय, तिहा आवै आवी नै ताय।।
- १४० व्यवसाय सभा न तेथ, प्रदक्षिणा करतो जेथ। पेठो पूर्व वारणे ताय, जिहा सिहासण तिहा आय।।
- १४१ मिहासण ने विपेह, पूर्व मुख कर बेठो जेह। गक्र तणा तिह वार, सुर सामानिक हितकार॥

१४२ विन त्रिण परपद सुर जाणी,
पुस्तक रत्न आपै तिहा आणी।
हिवै शक्र सुरिंद्र तिवार, ग्रहै पुस्तक रत्न उदार।।
१४३ विन पुस्तक रत्न मूकत, खोला विपे थापत।
पुस्तक रत्न प्रतै उघाटत, पछै पुस्तक रतन वाचत।।

## सोरठा

१४४. 'गक्र सुरेद्र प्रसीघ, पुस्तक रत्नज वांचता।
तिहा ते जयणा कीघ, एहवू न कह्यूं सूत्र में।।
१४५ तिण सू ए अवघार, मुख उघाडे पिण तिके।
सावज जोग व्यापार, कुल घर्म गास्त्रज ते भणी।।' [ज० स०]
१४६ ग्रहै धार्मिक व्यवसाय, पुस्तक रत्न निक्षेपे ताय।
पुस्तक रत्न प्रते स्थापी ठाम, सिहासण सू ऊठी ने ताम।।

१४७ व्यवसाय सभा थी सचरियो, पूर्व वारणे होय नीसरियो। पछै नदा पुष्करणी आय, पूर्व तोरण पावड़िये पेठो मांय।।

१४८. †एक मोटो कलश भिगारो, श्वेत रूपा नो अधिक उदारो।
ृ ते निर्मल जल भर लीघो, वली उत्पलादिक ग्रही सीघो।।
[सुरेद्र सघीको, ओ तो करें द्रव्य मगलीको।]
१४६ पछै नदा पोक्खरणी थी सारो, ओ तो नीसरियो तिहवारो।

१४६ पछ नदा पोक्खरणी थी सारो, ओ तो नीसरियो तिहवारो । जिहा सिद्धायतन जाणी, चाल्यो तिण दिश कानी पिछाणी ।।

१५० गक्र तणा तिहवारो, सामानिक चल्रासी हजारो। जाव आत्मरक्ष देवा, त्रि लख सहरा छतीस सुलेवा।। १५१ अन्य वहु सुघर्मवासी, ए तो देव देवी सुखरासी। केड देव उत्पन कर लेई, जाव लक्षपाखड़िया ग्रहेई।।

लय : ज्यारे शोम कैसरिया साड़ी †लय : सुण चिरताली थारा लक्षण १३६. मीहामणाओ अन्मुट्ठेति, अन्मुट्ठेता अनंकारिय-मभाओ पुरित्यमिल्नेण दारेणं पटिणिक्समइ, पटि-णिक्यमित्ता जेणेय वयमायमभा तेणेय उवागच्छित, (राय० सू० २८६)

१४०. वयमायमणं अणुपयाहिणीय रेमाणे-अणुपयाहिणी-गरेमाणे पुरित्यमिरतेण यारेण अणुपविमति, अणुपवि-मित्ता जेणेव मीहामणे तेणेव उवागन्छनि

(राय० मू० २८६)

१४१ सीहासणवरगते पुरत्याभिमुहे मण्णिमण्णे । (राय० सू० २८६)

तए ण नस्सः गामाणियपिमोववण्णना देवा

(राय० मू० २८७)

१४२. पोत्ययरयणं उवर्णेति । (राय० मू० २८७) तते ण मेः पोत्ययरयण गिण्हति,

(राय० सू० २८८)

१४३. पोत्ययरयण मुगर, मुरत्ता पोत्ययरयण विहाढेइ, विहारित्ता पोत्ययरयण वाएति, (राय० सू० २८८)

१४६. धम्मिय ववसाय ववसः, ववसङ्क्ता पोत्यवरयण पर्टिणिविखवः, पर्टिणिविखविक्ता सीहासणातो अब्सु-ट्ठेति, अब्सुट्ठेक्ता (राय० सू० २८८)

१४७ ववमायमभातो पुरित्यमिल्लेण दारेणं पर्डिणिक्ख-मइ, पर्डिणिक्यिमित्ता जेणेव नदा पुनसरिणी तेणेव जवागच्छति, जव।गच्छित्ता णदं पुनसरिणि पुरित्य-मिल्लेणं तोरणेण तिमोवाणपिडक्त्वएणं पच्चोरुहइ (राय० सू० २८८)

१४८. ....एग मह सेयं रययामयं विमल सलिलपुण्ण " ' "
भिगारं पगेण्हति ...उप्पलाइ ' गेण्हति
(राया० स्० २८८)

१४६ णंदातो पुक्यरिणीतो पच्चोतरिता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेत्य गमणाए । (राय० सू० २८०)

१५० तए णं जाव ··· आप्ररम्खदेवसाहस्सीओ (राय० सू० २८६)

१५१. अण्णे य वहवे • वेमाणिया देवा य देवीओ य अप्पे-गतिया उप्पलहत्यगया जावसहस्सपत्तहत्यगया (राय० सू० २८६)

३५८ भगवती-जोड़

- १५२ शक्र तणे सुविचारो, पूठे पूठे चालै घर प्यारो। हिनै आभियोगिक अधिकारो, ते साभलज्यो विस्तारो।। १५३ शक्र तणा निह्वारो, आभियोगिक सुर सुरी सारो। केइ कलश हाथ में लेइ, जाव धूप कडुच्छा ग्रहै केइ।।
- १५४ हर्प सतोप पामता, शक्र पूठै पूठै चालता। इम देव देवो परिवारो, बहु वाजत्र ने िक्सणकारो।।
- १५५ हिवै सिदायतन सुविशेषो, पूर्व वारणे कीय प्रवेशो। जिहा छ देवच्छद गूभारो, तिहा जिन-प्रतिमा अवधारो॥
- १५६ तिहा आवै आवे। नै तामो, देखी जिन प्रतिमा नै परणामो। पूजै लोम हस्त कर ताय, सुगध जल करिने न्हवराय।।
  - १५७ सरस गोशीर्प चदन करेह, गात्र लीपै लीपी नै जेह।
    पछ जिन-प्रतिमा नै ताय, देवदूष्य महामूल्य पहिराय।।
  - १५८. पछे फूल चडावै तिण कालो, चढावै फूला नी मालो।
    गय कपूरादि चढाय, विल वर्ण चढावै ताय।।
    १५६ चूर्ण चडावै चगो, विल वस्त्र चढावै सुरगो।
    आभरण गहणा अमद, ओ तो चढावै शक्र सुरिद।।
    १६०. नीचली भूम थी ताह्यो, ऊपर चदवा लग अधिकायो।
    वाधै वर्तुल वहु पुष्पमाला, वारू लवायमान विशाला।।
    १६१ पछै पच वर्ण श्रेकार, मूकै पुष्प-पुज उपचार।
    तिण ऊपर दियो दृष्टा, स्त्री नां शिर केश ग्रहो ने मूकत।।

# दूहा

१६२. नर स्त्री ना शिर केश ग्रह चुवन कामवसेण। मूक्या पसरं चिहु दिशे, तिम पुष्फवृद करेण।। १६३. \*जिन प्रतिमा ने आगै, निर्मल श्वेत रूपामय सागै। अच्छरस कहिता ताह्यो, काइ अतिही निर्मल करिवायो।।

- १५२. : पिट्ठतो-पिट्ठतो समणुगच्छेति । (नाय० सू० २८६)
- १५३. तए ण " आभिओगिया देवा य देवीओ य अप्पेगतिया कलसहत्यगया वदण जाव अप्पेगतिया धूवकडुच्छुयहत्यगया (रया० सू० २६०)
- १५४ हटुतुटुः पट्ठतो-पिट्ठतो समणुगच्छति ।

(राय० सू० २६०)

१४४. जेणेव सिद्धायतणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता सिद्धायतण पुरित्यिमिल्लेण दारेण अणुपिवमित अणु-पविसित्ता जेणेव देवच्छदए जेणेव जिणपिडमाओ

(राय० सू० २६१)

१५६ तेणेव उवागच्छित, उवागच्छित्ता जिणपिडमाण आलोए पणाम करेति, करेत्ता लोमहत्वम गिण्हिति, गिण्हित्ता जिणपिडमाण लोमहत्यएण पमज्जः, पमज्जित्ता जिणपिडमाओ मुरिभणा गधोदएण ण्हाएइ (राय० सू० २६१)

१५७. सरसेण गोसीसचदणेण गायाइ अणुर्लिपइ, अणु-लिपइत्ता जिणपिडमाण अहयाइ देवदूमजुयलाइ नियसेइ, नियसेत्ता (राय० सू० २६१)

१५८,१५६. पुष्फारुहण मल्लारुहण वण्णारुहण चुण्णा-रुहण गद्यारुहण आभरणारुहण' करेड

(राय० सू० २६१)

१६० आसत्तोसत्त-विउल-वट्ट- वग्वारिय-मल्ज-दाम-कलाव करेइ, (राय० सू० २६१)

१६१ कयग्गह-गिहय-करयल-पञ्गट्ठ-विष्पमुक्केण दमद्ध-वण्णेण कुसुमेण पुष्फपुजोवयारकलिय करेइ (राय० सू० २६१)

१६३,१६४ जिणपिडमाण पुरतो अच्छेहि मण्हेहि रयया-मएहि अच्छरसा-तदुलेहि अट्टरु मगले आलिहइ,

- १. रायपसेणइय (सू० २६१) मे पुष्प, माला, वर्ण, चूर्ण, गध और आभरण यह कम है। जोड की गाया १ १५८,१५६ में गंध को वर्ण से पहले लिया गया है। यह अन्तर पाठभेद के कारण हो सकता है।
- २. सेएिंह के स्थान पर सण्हेहि पाठ है। सेएिंह की पाठा-तर में लिया है।

<sup>\*</sup>लय: सुण चिरताली थारा लक्षण

१६४ एहवा तंदुल करेह, अष्ट अष्ट मंगल आलिखेह। स्वस्तिक साथियो जाणी, जाव दर्पण आरिसो पिछाणी।।

१६५ तदनतर तहतीक, रत्न चद्रप्रभ वज्रमय सधीक। वली वेडूर्य रत्न रैमाय, निर्मल दड कडुच्छा नो दीपाय।। १६६ सुवर्ण मणि रत्न तेह, भात चित्रित दड विषेह। हिवै धूप नी जाति सुजान, कृष्णागर अधिक प्रधान।। १६७ कुदुरुक्क ते गूद चीड कहाय,

तुरुक्क किहता सेल्हा रस ताय।
तेह तणो जे धूप, मघमघायमान अनूप।।
१६८ उत्तम गध करेह, तिको व्याप्त छै अधिकेह।
धूप नी वाटी सोहतो, गध प्रति विशेप मुकतो।।
१६९ रत्न वैडूर्य माय, कडुछो यत्न करी ग्रही ताय।
धूप दियो जिनवर ने जेह, किहये स्थापना जिनवर एह।।
१७० नवा काव्य एकसी अट्ठ, छद-दोप रहित सृषट्ट।
सार अर्थ करीने सहीत, तिके पुनरुक्त दोप रहीत।।
१७१ मोटा छद जे पद ना वध, देव लव्धि प्रभाव सुसध।
एहवा काव्य करीने स्तवेह, राज रीत लोकिक मग एह।।

- १७२. सात आठ पग पाछो उसरी नै,डावो ढीचण ऊचो करीने। गोडो जोमणो भूमितल घार,मही लगावे शिर त्रिण वार।।
- १७३ मस्तक कायक ऊचो करेह, कायक ऊचो करीनै जेह। शिर आवर्त्त करी विहु हाथ, अजली करी वदै सुरनाथ।।
- १७४. नमोत्थुण अरिहताण, जाव सपत्ताण लग जाण। वादै नमस्कार करि सोय, ए पिण द्रव्य मगलीक सुजोय।।
- १७५ जिहा सिद्धायतन नो जाणी, वहु मक्त देश भाग पिछाणी। तिहा आवै आवी ने, मोरपिच्छ नी पूजणी ग्रही ने।।
- १७६ सिद्धायतन नो जेह, वहु मध्य देश भाग प्रतेह। मयूरपिच्छ करी पूजेह, दिव्य उदक-धारा सीचेह'।।
- १७७ आला गोशीर्प चदन करेह, पचागुलि करि हाथा देह। मडल प्रति आलिखेह, ए पिण राज नी रीत करेह।।
- १७८ पछै केश ने दृष्टातेह, जाव पुष्प विखेरेह। फूल-फगर सहित करेह, धूप दिये देई ने तेह।।
- १७६ जिहा सिद्धायतन नो विचार, दक्षिण नो छे द्वार। तिहा आवै आवी ने, मयूर पिच्छ नी पूजणी ग्रही ने ।।

त जहा—सोत्थिय जाव (स॰ पा॰) दप्पणे। (राय॰ सू॰ २६१)

अच्छो रसो येपु ते\*\*\*'अतिनिर्मला इत्यर्थ. (राय० वृ० प० २५५)

१६५. तयाणतर च ण चदप्पभ-वइर-वेरुलिय-विमलदड (राय० सू० २६२)

१६६. कचणमणिरयणभत्तिचित्त कालागरुपवर (राय० सू० २६२)

१६७. कुदुरुक्क-तुरुक्क-धूवमघमघेत (राय० सू० २६२)

१६८. गधुत्तमाणुविद्धं च धूवविट्टं विणिम्मुयत (राय० सू० २६२)

१६६ वेरुलियमय कडुच्छुय पग्गहिय पयत्तेण घूव दाऊण जिणवराण (राय० सू० २६२)

१७०,१७१ ः अट्ठसय-विसुद्धगधजुत्तें हि अत्यजुत्ते हि अपुण-रुत्ते हि महावित्ते हि सथुण इ (राय० सू० २६२) विशुद्धो—निर्मेलो लक्षणदोपरहित ः ः अर्थयुक्तै.— अर्थसारैरपुनरुक्तैर्महावृत्ते , तथाविधदेवलव्धिप्रभाव (राय० वृ० प० २५५)

१७२. सत्तद्वपयाइ पच्चोमक्कइ, पच्चोसिक्कत्ता (पा॰ टि॰ १२) वाम जाणु अचेइ, अचित्ता दाहिण जाणु धरणीतलिस निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाण धरणितलिस निवाडेइ (राय॰ सू॰ २६२)

१७३. ईसि पच्चुण्णमइ पच्चुण्णिमत्ता करयलपिरग्गिह्य सिरसावत्त मत्थए अजिल कट्टु एव वयासी— (राय० सू० २६२)

१७४ नमोत्युण अरहताण सपत्ताण वदइ नमसइ (राय० सू० २६२)

१७५,१७६ जेणेव सिद्धायतणस्स वहुमज्झदेसभाए तेणेव जवागच्छइ, जवागच्छित्ता दिव्वाए दगधाराए अव्भु-क्खेइ (राय० सू० २६३)

१७७. सरसेण गोसीसचदणेण पचगुलितल दलयइ, मडलग आलिहइ (पा० टि० २) (राय० सू० २६३) १७८ कयग्गहगहिय जाव (स० पा०) पुजोवयारकलिय करेइ, करेत्ता धूव दलयइ (राय० सू० २६३)

१७६ जेणेव सिद्धायतणस्स दाहिणिल्ले तेणेव दारे उवा-गच्छति, उवागच्छित्ता लोमहत्थग परामुसइ, परामु-सित्ता (राय० सू० २६४)

२. प्रकर - समूह

३६० भगवती-जोड

१. इन गायाओं में पाठ की तुलना में जोड अधिक है। जिस पाठ के आधार पर यह अतिरिक्त जोड की गई है वह 'रायपसेणइय' में पाठान्तर के रूप में स्वीकृत है। जयाचार्य के प्राप्त आदर्श में यह पाठ मूल में रहा होगा।

- १८० वार शाखा जे अनूप, वली पूर्तालया नां रूप। वली रूप सर्प ना तेह, मयूर पिच्छ करी पूजेह।।
- १८१ दिव्य उदक धारा सीचेह, सरस गोशीर्ष चदन चर्चेह। फूल चढावै ताय, जाव आभरण गेहणा चढाय।।
- १८२ मांडी वार शाखा थी जेह, नीचली भूमि लगेह। वाधै लवायमान पुष्पमाला. जाव धूप दियै सुविशाला।।
- १८३. जिहा दक्षिण द्वार नो देख, मुख मडप छै सुविशेख। जिहा दक्षिण ना मुख मडप नो चग, वहु मक्त देश भाग सुरग।।
- १८४ तिहा आवै आवी नै, मोर पिच्छ नी पूजणी ग्रही नै। वहु मज्भ देश भाग प्रतेह, मयूर पिच्छ करी पूजेह।।
- १८५ दिव्य उदक घारा सीचेह, आले गोशीर्प चदन करेह ।। पचांगुलि तल हाथा देह, विल मडल प्रति आलिखेह ।
- १८६ केश ग्रही छोडै दृष्टत, फूल-फगर करै घर खत। जावत धृप उखेव, त्या लग पाठ कहेव।।
- १८७ जिहा दक्षिण ना मुख मडप नो विचार, पश्चिम नो छै द्वार। तिहा आवै आवी ने, मयूरपिच्छ नी पूजणी ग्रही ने।।
- १८८. वार शाखा जे अनूप, वली पुतालिया ना रूप। वली रूप सर्प ना तेह, मयूरिपच्छ करि पूजेह।।
- १८९ दिव्य उदक घारा सीचेह, सरस गोशीर्प चदन चर्चेह। फूल चढावै ताय, जाव आभरण गेहणा चढाय।।
- १६०. माडी वार-शाखा थी जेह, नीचली भूम लगेह। वाधै लवायमान पुष्पमाला, जाव धूप दियै सुविशाला।।

  \*ए स्वर्ग-स्थिति कोइ विरला ही जाणै।।
- १६१ जिहा दक्षिण ना मुख मडप ने, उत्तर ना थाभा नी पती । तिहा आवै आवी मयूरपिच्छ नी, पूजणी ग्रहै शोभती ।।
- १६२ थभ अने विल पूतिलया ने, सर्प ना रूप प्रतेह।

  सयूरिपच्छ नी पूजणी करने, पूजै पूजी ने तेह।।
- १६३. तिमहिज जिम कह्यु, पश्चिम दिशिना द्वार तणी पर जाणी। जावत धृप उखेर्व सुरपति, त्या लग पाठ पिछाणी।।
- १६४ जिहा दक्षिण ना मुख मडप ने, पूर्व दिशि ने द्वार। तिहा आवे आवी मयूर पिच्छ नी, पूजणी ग्रहै तिहवार।।

- १८१. दिव्वाए दगधाराए अव्भुक्खेइ, अव्भुक्खेत्ता सरसेण गोसीसचदणेण चन्चए दलयइ, दलइत्ता पुष्फारुहण जाव आभरणारुहण करेइ। (राय० मू० २९४)
- १८२ आसत्तोसत्तविजल-वट्ट-वग्घारिय-मल्ल-दाम-कलाव करेइ, जाव (स॰ पा॰) घूव दलयइ।

(राय० सू० २६४)

१५३ जेणेव दाहिणिल्ले दारे मुहमडवे जेणेव दाहिणि-ल्लस्स मुहमडवस्स बहुमज्झदेसभाए

(राय० सू० २६५)

- १८४. तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्यग परा-मुसइ, परामुसित्ता बहुमज्झदेसभाग लोमहत्येण पमज्जइ, (राय० सू० २६५)
- १८५ दिव्वाए दगद्याराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता मरमेण गोसीसचदणेण पचगुलितल मडनग आलिहइ

(राय० सू० २६५)

- १८६ कयग्गह-गहिय जाव (स० पा०) धूव दलयइ। (राय० सू० २६४)
- १८७. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमडवस्स पच्चित्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागिच्छत्ता लोमहत्थग परा-मुसइ, परामुसित्ता (राय० सू० २६६)
- १८८. दारचेडाओ य सालभजियाओ य वालह्वए य लोमहत्येण पमज्जइ, (राय० सू० २६६)
- १८६. दिव्वाए दगधाराए अव्मुक्खेइ, अव्मुक्खेता सरसेण गोसीसचदणेण चन्चए दलयइ, दलयित्ता पुष्फारुहण जाव आभरणारुहण करेइ। (राय० सू० २९६)
- १६०. आसत्तोसत्त जाव (स॰ पा॰) धूव दलयइ। (राय॰ सू॰ २६६)
- १६१ जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमडवस्स उत्तरिल्ला खभपती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्य परामुसइ, (राय० सु० २६७)
- १६२. खभे य सालभजियाओ य वालरूवए य लोमहत्य-एण पमज्जइ, पमज्जिता (राय॰ सू० २६७)
- १६३ जहा चेव पञ्चित्यिमिल्लस्स दारस्स जाव घूव दलयइ, (राय० सू० २६७)
- १६४. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमडवस्स पुरित्यमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्वग परामुस्ति, (राय० सू० २६८)

१८०. दारचेडाओ य सालभिजयाओ य वालरूविए घ लोमहत्यएण पमज्जइ (राय० वृ० प० २६०) दारचेडाओ—द्वारशाखे (राय० सू० २६४)

<sup>\*</sup>लय: पर नारी नो संग न कीजै

- १९५ वार-शाखा पूतलिया पन्नग, तिमहिज सर्व कहेह। पूजे जल सीचे चदन चर्चे, पूरववत सहु जेह।।
- १६६ जिहा दक्षिण ना मुख मडप ने, दक्षिण दिशि ने द्वार। तिहा अ।वे आवी द्वार-शाखा ने, तिमहिज सर्व विचार।।

वा॰—इहा दक्षिण दिणि ना मुख मडप नै तीन द्वारहीज छै, ते माटै तीन द्वारहीज पूजै। अनै उत्तर दिणि याभा नी पंक्ति पूजै। हिवै दक्षिण ना मुख मडप नै द्वारे करी नीकली प्रेक्षा गृह मडपे आवै, पूजै ते अधिकार कहे छै—

\*ओ तो इन्द्र अभिपेक सधीको रे, की धै सुरपित नीको। ओ तो करै द्रव्य मंगलीको रे, ते कारज लोकीको।। (ध्रुपद)

- १६७ जिहा दक्षिण नो प्रेक्षा घर मडप, प्रेक्षा घर मडप नो जेह। वह मज्भ देश भाग जिहा छै, तिहा अनखाड कहेह।।
- १६८. तेह अखाडो अछै वज्रमय, जिहा मणिपीठिका ताह्यो । जिहा सीहासण छै तिहा आवै, आवी नै सुररायो ॥
- १६६ मोरपिच्छ नी पूजणी ग्रही ने, वच्च अखाड प्रतेहो। मणिपीठिका सिहासन प्रति, मयूरपिच्छे पूजेहो।।
- २०० दिव्य उदक घारा कर सीचै, गोशीर्प चदन वर्चेहो। वली पुष्पादिक प्रतै चढ़ावै, ससारिक खाते हो।।
- २०१ ऊपर थी माडी महितल लग, माला प्रति वाघेहो। जावत धूप उखेवै सुरपित, पाठ इहा लग जेहो।
- २०२ जिहा दक्षिण ना प्रेक्षा घर मडप ने पश्चिम द्वारे। तिमहिज कहिवो पूरववत जे, द्वार-शाखादि प्रकारे।।
- २०३ उत्तर दिशि थाभा नी पक्ति, पूरववत पूजेहो। पूर्व द्वारे आवी तिमहिज, द्वार-शाखादि विपेहो॥
- २०४. दक्षिण नो ने द्वार तिहा पिण, तिमहिन कहिवू जेहो। द्वार-शाखा ने पूतिलया फुन, पन्नग रूप अर्चेहो।।

वा०—'दिक्षण ना प्रेक्षा-घर-मडप ने घणी परता मे पिश्चम पूर्व द्वार देख्या। किणही परत मे पिश्चम, पूर्व,दिक्षण द्वार देख्या, पिण उत्तर दिशे थमा नी पिक्त नो पाठ नथी देख्यू। पिण इहा तीन द्वार ने उत्तर दिशे थम-पिक्त जणाय छै। जे दिक्षण ना मुख मडप ने पिश्चम पूर्व दिक्षण द्वार कह्या। अने उत्तर थम नी पिक्त कही तिम इहा प्रेक्षा-घर मडप ने विषे तीन द्वार ने उत्तर दिशे थम-पिक्त समवै। विल आगल उत्तर ने प्रेक्षा-घर मडपे दिक्षण दिशे थम-पिक्त पाठ मे कही छै। तिम इहा दिक्षण ने प्रेक्षा-घर-मडपे उत्तर दिशे थम पिक्त समवै।

१६६. जेणेव दाहिणिरलस्स मुहमटवरस दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दारचेटाओ यः त चेव सच्व । (राय० मू० २६६)

१६७,१६८. जेणेव दाहिणित्ते पेच्छाघर-मंडवे जेणेव दाहि-णिल्लस्स-पेच्छाघर-मदयस्स बहुमज्जदेसभागे जेणेव वज्यामए अवसादए जेणेव गणिवेढिया जेणेव मीहागणे तेणेव जवागच्छइ, जवागच्छित्ता (राय० सू० ३००)

१६६. लोमहत्थगं परामुमइ, परामुसित्ता अक्याडम च मणिपेढिय च मीहासण च लोमहत्यएण पमज्जइ,

(राय० सू ३००)

(राय० सू० २६८)

२०० दिन्नाए दगधाराए अन्मुक्सेइ, अन्मुक्सेत्ता मरमेण गोसीमचदणेण चन्चए दलयइ, दलियत्ता पुष्फारुहण ""करेइ (राय० सू० ३००)

२०१ आसत्तोसत्त-विउल-वट्ट-त्रग्यारिय-मत्त-दाम- कताव करेइ जाव (स० पा०) धूव दलयइ।

(राय० सू० ३००)

२०२ जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघर-मडवस्स पच्चित्व-मिल्ले दारे जिल्लान

(राय० सू० ३०१)

२०३ [उत्तरित्ना सभवती ?] त चेव। जेणेव पुरित्यमित्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता त चेव (राय० सू० ३०२,३०३)

२०४ जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघर-मडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता त चेव। (राय॰ सू० ३०४)

१६५. दारचेडाओ य मालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेण पमज्जइ पमज्जित्ता न चेव सच्च ।

<sup>\*</sup>लयः ए तो जिन मार्ग ना राजा

वली वृत्तिकार पिण उत्तर ने प्रेक्षा-घर-मडपे दक्षिण दिशे यभ पंक्ति कही। अने पूर्व ने प्रेक्षा-घर-मंडप ने तीन दिशि द्वार ने पश्चिम दिशे यंभ पक्ति कही। ते मार्ट इहा दक्षिण ने प्रेक्षा-घर-मडपे पिण तीन दिश द्वार ने उत्तर दिश यभ-पित समवे। वली इहा सूत्रे हीज प्रथम अधिकार कह्यो, तिहा सुधर्मा सभा ना तीन द्वार कह्या। अने मुखमडप ने सभा नी भलावण दीधी। अने प्रेक्षा-घर मडप ने मुख-मडप नी भोलावण दीधी। इण न्याय पिण मुखमडप प्रेक्षा-घर-मडप ना पिण तीन दिशे तीन-तीन द्वार अने एक दिशे याभा नी पक्ति हुवै। (ज०स०)

हिबै दक्षिण नां प्रेक्षा-घर-मंडप नै दक्षिण द्वारे करि नीकली चैत्य थूभ

आवी पूजे तेहनो अधिकार कहै छै-

२०५ जिहां दक्षिण नां चैत्य थूंभ छै, त्या सुरपित आवेहो। थूभ अने फुन मणिपीठिका, पूजै जल सीचेहो।। वा०—इहां मणिपीठिका ऊपरै चैत्य थूभ छै ते माटै विद्वृ ने पूजै।

२०६. आने गोजीर्प चदन करि, दियै छाटणा तास।
फूल चढावै माला वांघे, जाव घूप दै जास।।

२०७ जिहा पश्चिम नी मणिपीठिका, जिहा पश्चिम नी तामो । जिन प्रतिमा त्या आवै आवी, देखी करै प्रणामो ।

२०८. जिम सिद्धायतने जिन प्रतिमा, पूजी कही तिवारो। तिमहिज इहा जिन प्रतिमा, पूजे जाव करी नमस्कारो।।

२०६. जिहा उत्तर नी जिन-प्रतिमा छै, तिमहिज सर्व कहोजै। जिम सिद्धायतने कहि पूजा, तेम इहा पभणीजै।

२१०. जिहा पूर्व दिश मणिपीठिका, ज्या पूर्व दिशि पेखो। जिन-प्रतिमा तिहा आवै आवी, तिमहिज पाठ अशेखो।।

२११ पर्छ दक्षिण नी मणिपीठिका, फुन दक्षिण नी जेहो। जिन प्रतिमा पूजे पूरववत, सगला पाठ कहेहो।।

२१२. जिहा दक्षिण नो चैत्य रूख छै, तिहा आवी मुररायो। तिमहिज पूर्ण जल सू सीचै, इत्यादिक कहिवायो।।

२१३. जिहा दक्षिण नी महेन्द्र व्वजा छै, तिहा आवी नै ताह्यो। तिमहिज पूजै जल सू सीचै, चदनादि विधि वायो॥

२१४ दक्षिण नी नंदा पुनखरणी, त्या आवे आवी ने। मोरपिच्छ नी जेह पूजणी, ते प्रतै ग्रहै ग्रही ने।।

२१५. तोरण पावडिया पूतिलया, सर्प रूप फुन नेहो। मयूरपिच्छ करि पूजै पूंजी, जलघारा सीचेहो।। २०५. जेणेव दाहिणिल्ले चेड्ययूभे तेणेव उवागच्छड :
थूभ च मणिपेढियं च लोमहत्यएणं पमज्जड,
पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अव्भुक्खेड ।

२०६ सरसेण गोसीमचदणेण चच्चए दलयइ, दलियत्ता— पुष्फारुहण जाव (स० पा०) धूव दलयइ।

(राय० सू० ३०५)

(राय० सू० ३०५)

उदक्धारयाऽभ्युक्ष्य (वृ० प० २६१)

२०७ जेणेव पच्चित्यिमल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चित्य-मिल्जा जिणपिडमा तेणेव उवाग्च्छइ, उवागिच्छता जिणपिडमाए आलोए पणाम करेइ।

(राय० सू० ३०६)

२०८ (जहा जिणपडिमाण तहेव जाव नमसित्ता सू० २६१,२६२)

२०६ चेगोव उत्तरिल्ला जिणपडिमाः ....त चेव सव्व। (राय० सू० ३०७)

२१० जेणेव पुरित्यिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरित्य-मिल्ला जिणपिडिमा तेणेव खवागच्छद, खवागिच्छता त चेव। (राय० सू० ३०८)

२११ जेणेव दाहिणिल्ला मणिपेढिया जेणेव दाहिणिल्ला जिणपेडिमा ' ... "त चेव सन्त्र ।

(राय० सू० ३०६)

२१२ जेणेव दाहिणिल्ले चेइय-एक्खे तेणेव उवागच्छइ ... लोमहत्यएण पमज्जइ, पमज्जिता त चेव

(राय० सू० ३१०)

२१३ जेणेव दाहिणिल्ले महिदण्झए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता ... 'लोमहत्यएण पमज्जङ, पमिज्जिता त चेव सन्व । (राय० सू० ३११)

२(४. जेणेव दाहिणिल्ला नदापुक्यिरणी तेणेव उवागच्छः उवागच्छिता लोमहत्यग परागुसति, परामुमित्ता

(राय० सू० ३१२)

२१५ तोरणे य तिसोवाणपडिस्वए य सालभजियाओ य वालस्वए य लोमहत्यएण पमञ्जइ, पमज्जिता दिन्वाए दगधाराए अन्मुबसेइ, (राय० सू० ३१२) २१६. आले गोशीर्प चंदन करि, तास छाटणा देही। फूल चढावे माला वाधे, वली धूप खेवेही।।

या॰—ए सिद्धायतन ने दक्षिण ने विषे दक्षिण द्वार मुख-मंडप, प्रेक्षागृह-मडप, चैत्य-पूम, जिन-प्रतिमा, चैत्य-रूख, महेंद्र-ध्वज, नदा-पुष्करणी—ए सर्व दक्षिण दिशे छै। तेहनी पूजा करीने हिवै प्रथम जे सिद्धायतन कह्यं छै, तिहा आवी तेहने प्रदक्षिणा देई उत्तर दिशे मुखमंडपादिक जे छै, तेहने पूजै। ते अधिकार कहै छै—

२१७ प्रदक्षिणा सिद्धायतन प्रति, करतो शक्र जिवारे। जिहां उत्तर नी नदा पुक्खरिणी, आवै तिहा तिवारे।

वा॰—सिद्धायतन ने प्रदक्षिणा करतो उत्तर दिशे जिहा छेहडे नदा पोक्खरणी छै, तिहा आयो ।

२१८. तिमहिज सर्व काय पूजा ने, मयूरिपच्छ पूजेहो । उदक सीचव चदन चर्चे, कार्य इत्यादि करेहो।।

२१६ जिहा उत्तर नी महेन्द्र ध्वजा छै, तिहा गक्र आवेह। तिमहिज पूजे जल सू सीचे, पूवरवत अर्चेह।। २२०. जिहा उत्तर नो चैत्य रूख छै, तिहा आवे आवी ने।

२२०. जिहा उत्तर नो चेत्य रूख छं, तिहा आवे आवी ने। तिमहिज पूर्ज जल सू सीचे, कार्य इत्यादि करीने।।

२२१. जिहा उत्तर नों चैत्य थूभ छै, तिहा आवै घर खंतो। तिमहिज पूजै जल सु सीचै, कार्य इत्यादि करतो॥

२२२ जिहा पिंचम नी मणिपीठिका, जिहा पिंचम नी जेहो। जिन प्रतिमा त्या आवै आवी पूजा तिमज करेहो।।

२२३ जिहा उत्तर नी जिन-प्रतिमा छै, त्या आवै आवी नै।

तिमहिज पूजा सगली जाणो, अर्चा सर्व करोने। २२४. ज्या पूरव नी जिन-प्रतिमा छै, तिमहिज अर्चा जाण। ज्या दक्षिण नी जिन-प्रतिमा छै, पूजा तिमज पिछाण।।

२२५ जिहा उत्तर नों प्रेक्षा घर मडप छै महासुखदायो। तिहा शक्र सुर इन्द्र सुराधिप, आवै आवी ताह्यो॥

२२६ वक्तव्यता जे कही दक्षिण नी, तेहिज सर्व विचार।
पूरव ने द्वारे पिण कहिवी, विल उत्तर ने द्वार।।
वा०—इहा घणी परता देखी। तिहा पश्चिम ना द्वार नो अधिकार नथी
कह्यो, पिण सभवियै छैं।—

२२७ दक्षिण खभ पक्ति फुन पूजै, उत्तर प्रेक्षा गेहो। जिम दक्षिण प्रेक्षा-गृह उत्तर खभ पक्ति तिम एहो।। २१६. सरसेणं गोमीसचदणेण चन्चए दलयइ, दलयित्ता पुष्काठहण जाव धूव दलयति ।

(राय० सू० ३१२)

२१७. सिद्धायतण अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिस्ता णदापुक्यरिणी तेणेव उवागच्छति

(राय० सू० ३१३)

२१८. त चेव।

(राय० सू० ३१३)

२१६ जेणेव उत्तरिल्ले महिंदज्झए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता। (राय० सू० ३१४)

२२० जेणेव उत्तरिल्ले चेइयरुवस्ते तेणेव उवागच्छः, उवागच्छिता। (राय० सू० ३१४)

२२१. जेणेव उत्तरिल्ले चेडययूमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता (राय० सू० ३१६)

२२२. जेणेव पञ्चित्यिमिल्ता मणिपेढिया जेणेव पञ्चित्य-मिल्ला जिणपिडमा तेणेव उद्यागच्छइ, उद्यागिच्छत्ता त चेव। (राय० सू० ३१७)

२२३ "जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता त चेव। (राय० सू० ३१८)

२२४ जेणेव पुरित्यमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छद्द, उवागच्छित्ता

जेणेव दाहिणिल्ना जिणपिटमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता त चेव। (राय० सू० ३१६,३२०)

२२५ जेणेव उत्तरिल्ले पेन्छाघर-मडवे (सू० ३००)

तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता (राय० सू० ३२१)

२२६ जा चेव दाहिणिल्ले वत्तव्वया सा चेव सव्वा। (राय० सू० ३२१)

२२७ जेणेव उत्तरित्लस्स पेन्छाघर-मडवस्स दाहिणित्ला खभपती तेणेव उवागन्छइ, उवागन्छिता— (राय० सू० ३२५)

१. जोड जिस प्रति के आधार पर की गई है उसमे पिश्चम द्वार का उल्लेख नहीं मिला। जयाचार्य ने यह सभावना प्रकट की है कि पिश्चम द्वार का वर्णन भी होना चाहिए। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित 'रायपसेणइय' मे ऐसा पाठ है। (देखें सू० ३२२)

वा॰—जिम दक्षिण प्रेक्षा गृह मडपे पश्चिम पूर्व दक्षिण हार पूज्या अने उत्तर दिशे खभ-पिन्त पूजी। तिम इहा उत्तर प्रेक्षा-गृह-मडपे पश्चिम उत्तर पूर्व हार पूज्या अने दिश्वण खभ-पिन्त पूजी। जे दक्षिण प्रेक्षा-गृह-मडप ने विषे तो उत्तर दिशे खभ-पिन्त छै अने वाकी तीन दिशे हार छै। अने उत्तर प्रेक्षा-गृह-मडप ने विषे दक्षिण दिशे खभ-पिन्त छै अने अनेशे दिशे हार छै, ते मार्ट। २२८ जिहा उत्तर नो मुखमडप छै, वली जिहा छै जेहो। उत्तर ना मुख-मडप ने वहु मध्य देश भागेहो।। २२६ जिम दक्षिण मुखमडप ना, वहु मध्य देश भागेहो।। पूजा नी विधि आखी तिमहिज, सगली इहा कहेहो।। २३०. जिहा पश्चिम ने हार तिहा आवी, फुन उत्तर ने हारो। पूर्व हार दक्षिण खंभ पत्ति, तिमहिज कहिवू सारो।।

२३१ आवी जिहा सिद्धायतन ना, उत्तर द्वार विमेहो।
पूरवली पर अर्चा करि, हिव पूर्व द्वार आवेहो।।
वा०—इहा सिद्धायतन थकी उत्तर दिशे छेहडै नदा-पुष्करणी छै, तेहनी
प्रथम पूजा करी। महेन्द्र-ध्वज, चैत्य-थूभ, जिन-प्रतिमा, प्रेक्षा-घर-मडपे, सिद्धायतन
ने उत्तर द्वारे इम पश्चानुपूर्वी पूजा करतो आयो। हिवै सिद्धायतन ना पूर्व द्वार
पूर्व मुख-मडप जाव पूर्व नदा-पुष्करणी इम पूर्वानुपूर्वी स्यू पूजै, तेहनो अधिकार
कहै छै—

२३२ जिहा सिद्धायतन नो पूरव-द्वार तिहा चल आवै। तिमहिज पूर्ज जल सू सीचै, दक्षिण द्वार तिम भावे।। २३३ जिहा पूर्व नो मुख-मडप छै, जिहा पूर्व नो जेहो। मुख मडप ना वहु मज्भ देशज भाग तिमज कहेहो।।

२३४ पूर्व दिशि ना मुखमडप नै, दक्षिण द्वार विचार। पश्चिम दिशि थाभा नी पक्ति, तिमहिज उत्तर द्वार॥

२३५. पूर्व द्वार विये पिण पूजा, तिमहिज करिने तामी। जिहा पूर्व प्रेक्षा घर मडप, आव सुरपित आमी॥

वा॰ — पूर्व प्रेक्षा घर मडप ने वहु मध्य देश भाग पूजी, पश्चिम यभ-पक्ति पूजी, उत्तर द्वारे पूर्व द्वारे पिण तिमज पूजा जाणवी। जिम दक्षिण मुख मडप नो वहु मध्य देश पूज्यो, पश्चिम द्वार पूज्यो, उत्तर थभ-पक्ति पूजी, पूर्व द्वार पूज्यो, उत्तर द्वार पूज्यो, तिम इहा पूजा जाणवी।

२३६. एव थूभ अने जिन-प्रतिमा, चैत्य रूख फुन जेहो। महिद्र घ्वजा ने नन्दा पुष्करणी, तिमज जाव धूपेहो॥

वा०—सिद्धायतन नै विषे जिन-प्रतिमा पूजी, नमोत्थुण गुणी नमस्कार कियो। तठा पछली वारता वृत्ति थकी लिखिये छै - अत ऊर्ध्वं सूत्र मुगम, केवल घणी विध विषय प्रते वाचना भेद, इति ययावस्थित वाचना देखांडिवा नै अर्थे विधि मात्र देखांविये छै—ितवारे पछै देवच्छदक प्रते पूजे, जल-धारा करी मीचै, तिवार पछै चदन करी पचागुली हाथा दिये, पछै फूल चढावांदिक, धूप दहन

२२८,२२६ जेणेव उत्तरिल्लस्स दारे मुहमडवे जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमडवस्स वहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता। (राय० सू० ३२६)

२३०. जेणेव" पच्चित्यिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागिच्छत्ता।
जेणेव" "उत्तरिल्ले दारे ।
जेणेव पुरित्यिमिल्ले दारे " ।
जेणेव 'दाहिणिल्ला खभपती तेणेव उवागच्छइ, उवागिच्छत्ता। (राय० सू० ३२७-३३०)
२३१ जेणेव सिद्धायतणस्म उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागिच्छत्ता त चेव।
(राय० सू० ३३१)

२३२. जेणेव सिद्धायतणस्स पुरित्यमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता। (राय० सू० ३३२) २३३ जेणेव पुरित्यमिल्ले दारे मुहमडवे जेणेव पुरित्य-मिल्लस्स मुहमडवस्स बहुमज्झदेसभागे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता। (राय० सू० ३३३) २३४ जेणेव पुरित्यमिल्लस्म मुहमडवस्स दाहिणिल्ले दारे पच्चित्यमिल्ला खंभपंती उत्तरिल्ले दारे त चेव। (पा० टि० ६ पृ १५४) २३४ पुरित्यमिल्जे दारे त चेव।(पा० टि० ६ पृ० १५४)

२३६ एव थूमे जिणपिडिमाओ चेइयह्मखा महिदज्झमा नदापुक्खरिणीत चेव जाव धूव दलइ। (पा० टि० १० पृ० १५४) करै सिद्धायतन ना बहु मध्य देश भाग नै विषे पूजणी करी पूजी, उदक-धारा मीचै, चदन करी पचागुली हाथा दिये, पुष्पपूज उपचार, धूप-दान करै।

तिवार पर्छ मिद्धायतन ना दक्षिण द्वार विषे आवी पूजणी ग्रही ने तिण पूजणी करिक द्वार-शाखा, पूतल्या अने सर्प ना रूप प्रते पूजी। तिवार पर्छ उदक-धारा मीचे, गोशीर्प चदन चर्चे, पुष्पादि चढावे, धूप देवे।

तिवार पछ दिक्षण द्वारे किर नीकली ने दिक्षण ना मुख-मडप ने बहु मध्य देण भाग विषे पूजणी करी पूजी ने उदक-धारा सीचे, चदन किर पचागुली हाथा दिये, पुष्प-पुज उपचार, धूप-दान करे, किरने पिश्चम द्वारे आवी ने पूर्ववत पूजा करें। उत्तर दिशे यभपित पूजी। पछ पूर्वे द्वारे आवी दिक्षण द्वार नीं परें पूजा करें। पछ दिक्षण द्वारे तिमहिज पूजा करें। तिण द्वार करी नीकली प्रेक्षा गृह मडप ने बहु मध्य देश भागे आवी ने आपाढक, मणिपीठिका अने सिहासन प्रते पूजणी करी पूजी, उदक-धारा मीचे, चदन-चर्चा, पुष्प-पूजा, धूप-दान करी तेहिज प्रक्षा-गृह-मडप ने अनुक्रमें किरके पिष्चम द्वार उत्तर यभ-पक्ति पूर्व दक्षिण द्वार नी अर्चा करी ने दिक्षण द्वार करि नीकली ने चेत्य यूभ अने मणिपीठिका प्रते पूजणी करी पूजी उदक-धारा मीचे, सरस गोशीर्ष चदने करी पचागुली हाथा देइने अने पूष्पादिक चढावी ने धूप देवें।

तिवार पछ जिहा पश्चिम दिशि नी मणिपीठिका तिहा आवै। तिहा आवी ने जिन-प्रतिमा देखी ने प्रणाम करें, करीने पूजणी करी पूजे, सुगध जले करी स्नान करावे, मरम गोशीपं चदन करी गात्र लीपें, देवदूष्य युगल पिहरावें, पुष्पादिक चढावें, प्रतिमा आगे पुष्प-पुज उपचार, धूप दियें, दिव्य तदुले करी आठ मगलीक आलेखें, एकसो आठ छद करिकें स्तुति करें, प्रणिपात दढक पाठ करिने वादें, नमस्कार करें, तेहिज अनुक्रम करिकें उत्तर पूर्व दक्षिण प्रतिमा नी पिण अर्चनिका करीने दक्षिण द्वारे करी नीकली ने दक्षिण दिशि ने विषे जिहा चैत्य वृक्ष छै, तिहा आवी ने चैत्य वृक्ष नी द्वार नी परें अर्चनिका करें।

तिवार पर्छ महेद्र ध्वजा नी, तिवार पर्छ जिहा दक्षिण दिशि नी नदा पुष्करणी, तिहा आवै । आवी ने तोरण पावडिया ने विषे रही शालभिजका अने मर्प ना यह रूप ने पूजणी करी पूजै, उदक-धारा सीचै, चदन-चर्चा पुष्पादि चढावै घूप दान करिने सिद्धायतन ने प्रदक्षिणा करीने उत्तर दिशे नदा पुष्करणी ने विषे आवी ने पूर्वेनी परै तेहनी अर्चा करें।

तिवार पर्छ उत्तर ना चैत्य वृक्ष विषे, तिवार पर्छ उत्तर ना चैत्य थूभ नै, तिवार पर्छ पिश्चम उत्तर पूर्व दिक्षण जिन प्रतिमा नी पूर्वली परै पूजा करीनै उत्तरा ना प्रेक्षा-गृह-मडप विषे आवै। तिहा दिक्षण ना प्रेक्षा-गृह-मडप नी परै सर्व वक्तव्यता कहिणी।

तिवार पर्छ दक्षिण स्तभ पिन करिक नीकली ने उत्तर ने मुख मंडपे आवं। तिहा पिण दक्षिण ना मुख मडप नी परें सर्व पिष्चम उत्तर पूर्व द्वार विषे अनुक्रम किंक पूजा करीने दक्षिण स्तभ-पिन किरक नीकली ने सिद्धायतन ने उत्तर द्वारे आवी ने पूर्ववत अर्चा करीने पूर्व द्वारे आवी। तिहा पिण अर्चा पूर्ववत करीने पूर्व ना मुख-मटप ने दक्षिण द्वार पिष्चम यभ-पिन उत्तर पूर्व द्वार ने विषे अनुक्रम करिक पूर्व कही तिम पूजा करीने पूर्व द्वारे करी विल अनुक्रम करिक नीकिनी ने प्रेक्षा-चर-मटप ने विषे आवै। पूर्ववत मध्य भाग दक्षिण द्वार पिष्चम यभ पिनत उत्तर पूर्व द्वारे पूर्ववत पूजा करें।

तिवार पर्छ पूर्व प्रकार करिक होज अनुकप करिक चैत्य-पूम, जिन-प्रतिमा,

चैत्य-वृक्ष, महेद्र-घ्वज, नदा-पुष्करणी नै पूजै, तिवार पछै सुधर्मा सभा ने विषे पूर्व द्वार किरकै प्रवेश करें। ए रायपश्रेणी नी वृत्ति मे कह्य तिम लिख्यु। \*शक्र सुरेन्द्र सधीको ओ तो करें द्रव्य मगलीको जी, कारज छै ए लोकीको जी।

अ। तो सर द्रव्य मंगलाका जा, कारज छ ए लाकाका जा।
ओ तो सुरनायक जश टीको जी, जक्र सुरेन्द्र सधीको जी।। (ध्रुपद)

- २३७ जिहा सभा सुघर्मा ताह्यो, तिहा आवै गक्र सुररायोजी। सुघर्मा सभा ने विशेषे, पूर्व द्वारे करि पेसे जी।।
- २३६ जिहा माणवक इह नामो, छै चैत्य थूभ अभिरामो। जिहा वज्र रत्न रै माह्यो, गोल वृत्त डावडा ताह्यो॥
- २३६. तिहा आवै आवी ने, मयूर पिच्छ पूजणी ग्रहीनै। गोल वृत्त डावा वज्र माह्यो, पूजणीड पूजै ताह्यो।।
- २४० गोल वृत्त डावा वज्र माह्यो, सुरराय उघाउँ ताह्यो। जिन नी दाढा प्रति, तेहो, पूजणी करी पूजेहो।।
- २४१. पूजी ने विल तिह काले, सुगध जल करीने पखाले। मुख्य प्रवर गध माल्य कर, दाढा प्रति पूजे सुरवर॥
- २४२. धूप खेवी दाढा ने ताह्यो, घालै ते डावा माह्यो। खभ चैत्य माणवक जासो, पूजणीइ पूजै तासो॥
- २४३. दिव्य जल घारा करि जेहो, आभोखै सीचै तेहो। आले गोशीर्प चदण कर, चर्चे छाटा दै सुरवर।।
- २४४. पुष्पादि चढावै इदो, जावत दै धूप सुरिदो। फुन जिहा सिंहासण जाणी, पूजा तिमहिज पहिछाणी।।
- २४५ सुर सेज्या आवी सुरवर, पूजा ते द्वार तणी पर। जिहा झुल्लक महिंद्र ध्वज आयो, ध्वज ज्यू पूजै सुररायो।।
- २४६ जिहा प्रहरण कोश चोप्फाल, तिहा आवं आयुधशाल। लोमहस्त पूजणी ग्रही ने, आयुधशाला पूजी ने।।
- २४७. दिव्य जल घारा करि जोइ, आभोते सीचै सोइ। गोशीर्प सरस चदन कर, दियै छाटणा सुरवर।।
- २४८. पुष्पादि चढावै सारो, जावत दै धूप उदारो। जिहा सभा सुघर्मा केरो, वहु मध्य देश भाग सुमेरो।।
- २४६ जिहा मणिपीठिका आछी, जिहा सुर सज्या अति जाची। तिहा आय पूजणी ग्रही नै, ते उभय प्रतै पूजी नै।।

\*लय: चरित्र निर्मल पालीजै जी

२३७ जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव खवागच्छति, खवाग-च्छित्ता सभ सुहम्म पुरित्यमित्लेण दारेण अणु-पविसइ। (राय० सू० ३५१) २३८ जेणेव माणवए चेइयखभे जेणेव वहरामया गोलवट्ट-समुग्गा। (राय० सू० ३५१)

२३६ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्यग परामुमइ। (राय० सू ३५१)

२४० वद्दरामए गोलवट्टसमुग्गए लोमहत्थेणं पमज्जद, पमज्जित्ता वद्दरामए गोलवट्टसमुग्गए विहाडेद, विहाडेत्ता जिणसकहाओ लोमहत्थेण पमज्जद । (राय० सू० ३४१)

२४१ पमिज्जित्ता सुरिभणा गद्योदएण पक्खालेइ, पक्खा-लेत्ता अगोहि वरेहि गद्योहि य मल्लेहि य अच्चेइ। (राय० सू० ३५१)

२४२ अच्चेत्ता घूव दलयइ, दलियत्ता जिणसकहाओं वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु " माणवग चेइय- खभ लोमहत्यएण पमज्जइ। (राय० सू० ३५१)

२४३. दिव्वाए दगधाराए अव्भुक्खेइ, अव्भुक्खेत्ता मरसेण गोसीमचदणेण चच्चए दलयइ। (राय० सू० ३५१)

२४४. पुष्फारुहण जाव घूव दलयइ। (राय० सू० ३५१) जेणेव सीहासणे ' (राय० सू० ३५२)

२४५ जेणेव देवसयणिज्जे ··· ।
- जेणेव खुडुागमहिंदज्झए 'त चेव ।

(राय० सू० ३४३,३४४)

२४६. जेणेव पहरणकोसे चोप्पालए तेणेव उवागच्छड, उवागच्छिता लोमहत्यग परामुसइ, परामुसिता.... (राय० सू० ३५५)

२४७ दिव्वाए दगधाराए अन्भुक्सेइ, अन्भुक्सेत्ता सररेण गोसीसचदणेण चन्चए दलयइ (राय० सू० ३५५)

२४८ पुष्फारुहण जाव (स॰ पा॰) धूव दलयड । (राय॰ सू॰ ३४४)

जेणेव सभाए सुहम्माए वहुमज्झदेसभाए। (राय० सू० ३५६)

१. गाथा २४६ की जोड़ जिस पाठ के आधार पर की गई है वह पाठ (वृ० प० २६५) मे मिलता है किन्तु यहा जीवाभिगम (प्रतिपत्ति ३) के विवरणानुसार पाठ स्वीकृत किया है। इसलिए 'मिणपेढिया' और 'देवसयणिज्ज' की जोड के सामने कोई पाठ उद्धृत नहीं किया गया है।

२५०. जावत छै घूप सुगघो, इम धूप उखेवी इदो। कही सभा सुवर्मा नी वातो, हिवै सुणो आगल अवदातो।।

वा॰— इहा वृत्तिकार कहा — सुधर्मा सभा ना वहु मध्य देश भाग नी पूर्ववत पूजा करी नै, सुधर्मा मभा नै दक्षिण द्वारे आवी ने, ते द्वार नी पूजा पूर्ववत करें, तिवारें पर्छ दक्षिण द्वार करिकें नीकलें, एह थकी आगल जिण प्रकार करिकेंहीज सिद्धायतन थकी नीकलतो छतो दक्षिण द्वारादिक दक्षिण नदा-पुष्करणी पर्यवसान वली प्रवेश यकी उत्तर वा-पुष्करण्यादिक थकी उत्तरद्वारात पूज्यो। तिवार पर्छ दितीय द्वार प्रते पूजी पूजी नीकलतो पूर्व द्वारादिक पूर्व नंदा-पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका नहीं, तिकाहीज सुधर्मा सभा ने विषे पिण कहिवी। पिण कणी अधिकी नहीं।

तिवार पर्छ पूर्व नदा-पोक्खरणी नी अर्चिनिका करीने उपपात सभा ने पूर्व द्वारे करी पेसे, पेसी ने मणिपीटका नी अर्च देव-सेज्या नी पूजा करी तदनतर वहु मध्य देश भाग नी पूर्ववत अर्चिनिका करी। तिवार पर्छ उपपात सभा ने दिक्षण द्वारे आयो।

ए अधिकार वृत्ति में कह्यों अने सूत्रे सुधर्मा सभा ने तीनू दिशे द्वार मुख-मडपादिक पुष्करणी ताइ पूर्जे— इम नथी कह्यु। अने उपपात सभा ने विषे पिण पूर्वं द्वारे पेमी मणिपीटिका देवसेज्या वहु मध्य देश भाग पूर्जे—ए पिण नथी कह्यो। पिण ए मर्वं पूज्या सभवें छै। सिद्धायतन ने तीनू द्वारादिक नदा पुष्करणी ताड पूर्जे कह्यूज छै, तिम डहा पिण जाणवू। इण सूत्रे हीज प्रथम विस्तार कह्यो, तिहा सिद्धायतन ने तीनू दिशे मुख मडपादिक कह्या। अने सुधर्मा सभा ने पिण तीनू दिशे मुख मंडपादिक नदा पोक्खरणी लगे छै, ते माटै ए पूजा सभवें वली आगल उपपान सभा ने तीनू दिशे मुख मडपादिक पूर्ज। तिहा नी भलावण दीधी, ते माटै सुधर्मा मभा ने तीनू दिशे द्वार अने मुखमडपादिक पूजा सभवें।

### अत्र चरचा लिखिये छै-

'कोई कहै—ए सिद्धायतन ने चैत्य यूभे जिन प्रतिमा पूजी नमोत्युण गुण्यो, ते धमं हेते छैं। तेहनो उत्तर—ए जिन प्रतिमा नी द्रव्य पूजा आरम्भ सहित छै। ए पूजा नी तीर्थंकर आज्ञा देवें नहीं। साधु दीक्षा लीधी तिवारें सावज जोग ना पचखाण किया। तिण में द्रव्य पूजा ना त्रिविधे-त्रिविधे पचखाण आया। ते द्रव्य पूजा करें नहीं, करावें नहीं, करता ने अनुमोदें पिण नहीं। जो ए धर्म नो कार्य छै तो साधु अनुमोदना किम न करें ? अने ए द्रव्य पूजा नी अनुमोदना किया साधु ने पाप लागें, वत भागें तो द्रव्य पूजा करण वाला ने धर्म किम हुवें ? जो द्रव्य पूजा में धर्म छैं तो धर्म अनुमोदना किया पाप किम ह्वें ? अने व्रत किम भागें ?

श्रावक सामायक पोसा करैं तिहा 'सावज्जं जोग पच्चक्खामि' पाठ कहै — तिण में ए द्रव्य पूजा ने मावज जाणने त्यागी छै। ते सावज कार्य सामायक पोसा विना खुलो करैं, तिणने पिण धर्म नथी। तिण ने पिण केवली नी आज्ञा नथी। अने आज्ञा वारै धर्म पुन्य रो अश नहीं। ते भणी ए द्रव्य पूजा सावज जाणवी। इद्रे कीधी ते लोकिक खाते, ससार नां द्रव्य मगलीक हेते, पिण धर्म हेते नहीं।

तुगिया नगरी प्रमुख नां श्रावक स्थिवर प्रमुख नै वदवा गया। तिहा दिध ससत, द्रोवादिक द्रव्य मंगलीक संमार हेते साचव्या, ते लोकिक खाते छै। तिम ए पिण द्रव्य पूजा लोकिक खाते जाणवी अने नमोत्युण गुण्यो ते पिण लोकिक

वा०—सभायाः सुधर्माया बहुमध्यदेशभागेऽचंनिका पूर्ववत् करोति, कृत्वा सुधर्माया सभाया दक्षिणद्वारे समागत्य तस्य अचंनिका पूर्ववत् कृष्ते, ततो दक्षिणद्वारेण विनिर्गच्छति, इत ऊध्वं यथैव सिद्धायतनान्निष्कामतो दक्षिणद्वारादिका दक्षिणनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना पुनरिष प्रविशत उत्तरनन्दापुष्करिण्यादिका उत्तरद्वारान्ता ततो द्वितीयद्वारान्निष्कामत. पुर्वद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणी-पर्यवसाना अचंनिकावक्तव्यता सैव सुधर्माया सभाया-मप्यन्यूनातिरिक्ता वक्तव्या।

तत पूर्वनन्दापुष्करिण्या अर्चनिकां कृत्वा उपपातसभा पूर्वद्वारेण प्रविश्वति प्रविश्य च मणिपीढिकाया देवशयनीय-स्य तदनन्तर वहुमध्येदेशभागे प्राग्वदर्चनिका विद्याति, ततो दक्षिणद्वारे समागत्य तस्यार्चनिका कुरुते।

(वृ० प० २६५,२६६)

(राय० सू० ३५६)

खाते छै, ते भणी उघाड मुखे गुण्यो पिण मुख आडो हरत वस्त्रादिक देइ गुण्यो— इम नथी कह्यो, ते माट ए नमोत्युण उघाड मुख गुण्यो सभव । अने ए उघाड मुख गुण्यो, ते माट ते ससार ना द्रव्य मगलीक ने अर्थे लोकिक खाते छै, पिण धर्म हेते नही।

जे भगवती शतक १६वे द्रजे उद्देश (सूत्र ३६) कह्यो—जिवार शक उघाड मुख भाषा वोलें, तिवार ते सावज भाषा, अने जिवार शक हस्तादिक तथा वस्त्रादिक मुख आड़ो देइ वोलें, तिवार निरवद्य भाषा हुवें। तिहा वृत्तिकार कह्यं जिवा सरक्षण थकी निरवद्य भाषा हुवें। पिण इम नयी कह्यं जे मुख आड़ो वस्त्रादिक देइ वोलें ते विनय छैं। इम विनय थीं निरवद्य भाषा नथीं कहीं। अने जे देवलोक ने विषे वेइद्रियादिक प्रज्याप्ता ना स्थान नथीं अने मनुष्य लोक ने विषे इद्रादिक, तेहना मुख ने विषे माखी माछरादिक प्रवेश नो उपद्रव न सभवें, ते भणी इद्र मुख आड़ो वस्त्रादिक देइ वोलें ते वायुकाय ना जीव नी रक्षा अने उघाड मुख वोलें तिहा वायुकाय ना जीव नी हिसा जाणवी। ए सूत्रे इद्र नी सावद्य निरवद्य भाषा कहीं, ते वचन देखता जिवार शक्त धर्म रूप वचन कहै तिवार उघाड मुख नयी वोलें। अने जिवार धर्म वार्ता विण अन्य वारता लोकिक सवधीं कहैं, तिवार उघाड मुख वोलें, एहवू दीसे छैं। अने छद, नमोत्युण गुण्यो तिहा मुख आड़ो हस्त वस्त्रादिक नो पाठ नथीं कह्यों। ते भणी उघाड मुख गुण्या माट ए सावज भाषा ससार ना मगलीक हेते जाणवी पिण धर्म हेते नथी।

विल कह्यु - जिन प्रतिमा ने लोम हस्त नी पूजणी करी पूजै, जले करी स्नान करावै, चदने किर गात्र लीपै, वस्त्र युगल पिहरावै, पुष्पादिक चढावै, मुख आगल मूकै जाव धूप खेवै — एतला वोल कह्या, पिण मुख आडी जयणा नथी कही। विल नमोत्थुण गुण्यो त्या पिण कह्यो — एक सौ आठ छद ना दोष रिहत ग्रथे करी युक्त वली पुनक्क्त दोप रिहत मोटा पदे करी युक्त एहवा छदे करी स्तवना करैं। विल सात-आठ पग पाछो ओसरी, डावो गोडो ऊचो राखी, जीमणो गोडो धरती ना तला विषे स्थापी तीन वार मस्तक धरणी तल ने विषे लगाडी ने कायक धरती सू ऊचो मस्तक राखी ने हाथ जोडी शिर आवर्ष्त करीने नमोत्थुण गुणै, एतली विधि आखी। पिण इम न कह्यो — मुख आडी जयणा करीने नमोत्थुण गुणै, ते माटै ए छद ने नमोत्थुण उघाडै मुख गुण्या सभवै। जिम पूजणी सूं प्रतिमा ने पूजै, स्नानादिक जाव धूप खेवै तिम ससार ना मगल हेते प्रतिमा ने नमोत्थुण गुण्यो ते पिण सावज जाणवो।

इहा प्रथम शक्र इद्राभिषेक करी अलकार सभा मे आवै, आवी वस्त्र-गहणा पहिरचा, व्यवसाय सभा मे आवै, आवी पुस्तक-रत्न वाची 'धिम्मय ववसाइय गिण्हइ' (सू० २८८) एहवो पाठ कह्यो। पछै सिद्धायतन आवै, आवी ने जिन-प्रतिमा पूजी, द्वार शाखा, पूतल्या, सर्प ना रूप, मुख-मडपादिक, तोरण, वावडी, दाढा, हिथयार प्रमुख पूज्या।

इहा कोइ कहै —प्रतिमा पूजी ते धर्म-व्यवसाय मध्ये कही छै, तेहनो उत्तर—ए धर्म-व्यवसायपद कह्यो, ते निकेवल प्रतिमा पूजवा आश्रयी ने नथी कह्यो। ए धर्म-व्यवसाय प्रह्यो तिवार पछै जिन प्रतिमा, द्वार शाखा, पूतल्या, सर्प ना रूप, मुख-मडपादिक जे-जे वस्तु पूजी, पोता ना जीन आचार नी विध करी, ते सर्व धर्म व्यवसाय मध्य आवी।

ठाणागे दशमे ठाणें दश धर्म कह्या, तिणमे कुलधर्म कह्यो ते मार्ट ए कुलधर्म जाणवो। विमाण रा धणी सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, भव्य, अभव्य ऊपजतां राज्य वेसे छै तिवारै सगलाइ प्रतिमादिक पूजे छै। ते वल्प-स्थिति मार्ट, पिण धर्म हेते नहीं। तिमिह्ज इद्र पिण कुल स्थिति राखवा मार्ट ए सर्व वाना पूज्या छै। जिम मनुष्य लोक नै विपे जैन, वैष्णव, मुसलमान ना देहरा, ठाकुर द्वारा, मस्जिद जूजुआ छै, तिम देवलोक मे मम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि नी श्रद्धा तो जूई-जुई छै, पिण पूजवा ना स्थानक जूआ-जूआ नथी कह्या। जूआ-जूआ किहाहि कह्या ह्वै तो देखायो। पाच सभा अने मिद्धायतन — ए छह वाना अने मुख-मदपादिक सर्व विमाण रा धणी रै हुवै, ते तिण विमाण नै विपे मम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि जे ऊपजता राज-अभिपेक करचे छते एहिज प्रतिमा, द्वार-णाखा, पूतल्या प्रमुख सगलाइ विमानाधिप पूजे छै। ते मार्ट ए समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि सर्व नो कल्प-स्थिति जीत व्यवहार एक हीज जाणवो।

आवश्यक नी वृत्ति वावीस हजारी हरिभद्र सूरि नी कीघी, ते मध्ये सामायिक नामा अध्ययन नी टीका, ते मध्ये अभव्य संगम देवता नो अधिकार छै। महावीर ने उपसर्ग ने अधिकारे जिवार शकेंद्र वोल्यो—'महावीर ने चलावी न सकै।' तिवार शकेंद्र नो सामानिक अभव्य सगम देवता वोल्यो, ते पाठ लिखियें छैं—

सगमो नाम सोहम्मकप्पवामी देवो सवकसामाणिओ अभवसिद्धिओ मो भणित—देवराया अहो रागेण उल्लवेड, को माणुमो देवेण न चालिज्जइ? अह चालेमि, ताहे मक्को त न वारेइ। मा जाणिहिइ—परणिस्साए भगव तवोकम्मं करेति, एव सो आगओ। '

इहा मगमी देवता शकेन्द्र नो सामानिक देवता कह्यो। विल सदेह दोलावली ग्रंथ छै, तेहनी वृत्ति मध्ये कह्यो छै ते लिखिये छै—नन्वेव तर्हि सगमकप्रायो महामिथ्यादृष्टि देवविमानस्था मिद्धायतनप्रतिमा अपि सनातनामिति चेत्, न नित्यचैत्येपु हि सगमवद् अभव्या अपि देवा मदीयमदीयमिति वहुमानात् कल्यस्थितिव्यवस्थानुरोधात् तद्भूतप्रभावाद् वा न कदाचित् असंयमित्रयां आरभन्ते ।

इहा ए सगम ने अभव्य कह्यो अने उन्द्र नो सामानिक आवश्यक नी वृत्ति मे पूर्वे कह्योज छै। सामानिक देवता उन्द्र सरीखा अने विमान ना घणी उपजती वेला सूरियाभ नी परे प्रतिमा दाढा पूर्जे पोता नी कल्प स्थिति माटे। इहा कह्यो मगम महामिथ्यादृष्टि देव विमान के विषे सिद्धायतन प्रतिमा ने ते अभव्य पिण देवता ए 'माहरी माहरी' इम वहु मान थकी कल्प स्थिति व्यवस्था नां वश थकी पूर्ज ते माटे।

जद कोई कहै —द्रोपदी सम्यक्त्व-धारणी प्रतिमा क्यू पूजी ? तेह्नो उत्तर— क्षोघनिर्युक्ति ग्रंथ ने अभिप्राये द्रोपदी प्रतिमा पूजी ते वेला सम्यक्त्वधारणी नही ते देखाई छैं —

'दब्बिम जिणहरा' इति ओवनिर्युक्ति व्याख्या—द्रव्यिनिगिपिरगृहीतानि चैत्यानि कि मम्यग्दृष्टिना न सभावितानि इति, कस्मात् ? यस्मात् द्रव्यिनिगि-मिथ्यादृष्टित्वात् । यद्येवं तर्िह दिगम्बरसंवंधिचैत्यानि कि सम्यग्दृष्टिना न सभावितानि ? एनत्मत्यम् । यद्येतत् मत्य तर्िह स्वगंलोकेषु शाश्वतानि चैत्यानि मूर्याभादिभि देवै मम्यग्दृष्टिभि प्रपूज्यन्ते, तत् चैत्यानि संगमकवत् अभव्यदेवा

१. आव. निर्युक्ति गाथा ५०१ की हारिभद्रीया व्याख्या

२ मदेहदोलावली की वृत्ति का जो अंश यहा उद्धृत किया गया है, वह सस्कृत की दृष्टि से कुछ स्थलो पर अशुद्ध प्रतीत होता है।

मदीयमदीयमिति बहुमानात् प्रपूजयन्ति, किमेतत् पूर्वापर विरुद्ध न स्यात् ? ननु सूर्याभादयो देवाः स्वर्गलोकेषु शाश्वतानि चैत्यानि प्रपूजयन्ति तत्कल्पस्थिति-व्यवस्थानुरोधात्, अत एव विरुद्ध न सभवति ।

यद्येवं, तर्हि द्रोपद्या सम्यक्त्वधारिण्या यानि चैत्यानि नमस्कृतानि कि द्रव्य-लिगिपरिगृहीतानि न सभवतीत्याह—द्रोपदी न सम्यक्त्वधारिणी स्यात्, ओघ-निर्युक्तौ इत्युक्तम्—

'इत्यिजणसघट्ट तिविहेण तिविह वज्जए साहू' इति वचनात् । स्त्रीजनस्पर्शस्त्रिविध-त्रिविधेन साधूनां वर्जनीय. । साधोष्य अकल्पनीयकर्माचरत सम्यक्त्वाभावात् । आगमेषु श्रूयते—द्रोपदी 'लोमहत्यय परामुसइ' लोमहस्तेन परामुशति परिमार्जयतीत्यर्थ । तत्परिमार्जनेन जिनस्पर्शो जात , जिनस्य स्त्रीजनस्पर्शेन आगातना स्यात् । आशातनात सम्यक्त्वाभाव , अत एव द्रौपदी न सम्यक्त्वधारिणी सभाव्यते । पुन ओघनिर्युक्तेष्ट्रिचरन्तनटीकायां गन्धहस्त्याचार्येण उक्तम् — द्रौपद्या नृपपुत्रिकया निदान कृत, भर्तृपचकस्येच्छन्ती निदानभोजितवती जातेकपुत्रा पुन पश्चात् साधो पार्थ्वे शका निवार्य प्रवरसम्यक्त्वमार्गं धरते स्मः । री

इहा कह्यो— द्रव्यालिंगी परिग्रहीत चैत्य स्यू सम्यग्दृष्टि सभावित नहीं, ते किण कारण थकी ? द्रव्यालिंगी मिथ्यादृष्टि छै, ते भणी । जो इम छै तो दिगम्बर सवधी चैत्य स्यू सम्यग्दृष्टि सभावित नहीं ? ए सत्य । जो ए सत्य तो स्वगं लोक ने विषे शाश्वता चैत्य सूर्याभादि देवता सम्यग्दृष्टि पूजै, ते चैत्य संगमवत् अभव्य देव 'माहरी मांहरी' इम बहुमान थकी पूजै, ए पूर्वापर विरुद्ध नहीं हुवै काइ ? सुर्याभादि देव स्वगंलोक ने विषे शाश्वता चैत्य पूजै ते कल्पस्थित वस अमुरोध थकी, इण कारण थकीज विरुद्ध नहीं हुवै।

जो इस छै तो द्रोपदी सम्यक्त्वधारणी जे चैत्य ने नमस्कार कियो, ते स्यू द्रव्यिनी परिगृहीत न हुवै काइ ? द्रोपदी सम्यक्त्वधारणी न हुवै बोधिनर्युक्ति ने विषे इम कह्यो—स्त्री जन नो स्पर्श साधु ने त्रिविधे त्रिविधे वर्जवु। साधु ने अकल्पनीय आगम ने विषे सामिलये छै— "लोमहत्य परामुसइ" लोमहस्त करिके फर्शे—पूजे इत्यर्थः। ते पूजवै करी जिन नो स्पर्श हुवै। जिन ने स्त्री जन स्पर्शवै करी आशातना हुवै, आशातना करवै करी सम्यक्त्व नो अभाव। इण कारण थकी द्रोपदी सम्यक्त्वधारणी न समिविये।

विल ओषनिर्युक्ति नी चिरतन टीका ने विषे गधहस्ति आचार्यं कह्यो— द्रोपदी नृपपुत्री नीयाणा नी करणहारी, तिणे भर्तार पच ने वरी सो नियाणो भोगवी, एक पुत्र थया पछे साधु समीपे सम्यक्तव पामी—एहवो ओष निर्युक्ति नी टीका ने विषे गधहस्ति आचार्यं कह्यो। ते मिथ्यात्व ना वश यकी पुष्पादिक करीके प्रतिमा पूजी। इहा ओष-निर्युक्ति नी टीका तेहने विषे द्रोपदी प्रतिमा पूजी, ते वेला सम्यक्तव धारणी नथी अने एक पुत्र थया पछै साधु समीपे सम्यक्तव पामी एहवु कह्यु।

वली सूर्याभादिक देवता देवलोक ने विषे शायवता चैत्य पूजी। ते कल्प देवलोक नी स्थिति राखवा माटै कह्यो, पिण धर्म हेते पूजी, इम नथी कह्यो। अने शक देवेंद्र नी अर्चनिका सूर्याभ ने भावाई। ते माटे शक देवेंद्र प्रतिमादिक पूजी, नमोत्थुण गुण्यो, ते पिण कल्प—देवलोक नी स्थिति राखवा माटै जाणवो। विल

१. ओघनिर्युक्ति की व्याख्या का यह अश कुछ स्थलो पर अशुद्ध प्रतीत होता है। सस्कृत की दृष्टि से कुछ शब्दो एव कियाओ मे परिवर्तन करने पर भी कुछ स्थल सिंदग्ध रह गए है। व्याख्या की प्रति उपलब्ध न होने के कारण इसे पूरी तरह से शुद्ध नहीं किया जा सका।

संगमादिक अभव्य ते पिण कल्प-स्थिति रायवा माटे सूर्याभ ृंनी पर प्रतिमादिक पूजी, नमोत्युणं गुणै छै, ते भणी शक देवेंद्र जिन प्रतिमा पूजी, जिन दाढा पूजी, जिनप्रतिमा आगै नमोत्युण गुण्यो, द्वार-णाया, पूतत्यां, सर्प नां रूप, मुखमडपादिक अनेक वस्तु पूजी, ते सर्व लोकिक खाते जाणवा पिण लोकोत्तर हेते नथी। कल्पस्थिति राखवा माटे पूज्या, ए सावज पूजा नी केवली नी आज्ञा नथी।

ए जिन प्रतिमा तो स्थापना निक्षेपो छै। पिण साक्षात भाव निक्षेपे महावीर आगे सूर्याभ सावज भितत करी, नाटक पाट्यो, भगवान नै कह्यो—गोतमादिक नै महारी भितत ना वण थकी वत्तीस विध नाटक देखालू । तिहा एहवो पाठ छै— 'तए ण समणे भगव महावीरे…'—सूरियाभस्स देवस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परियाणड तुमिणीए सिचट्टित (सू० ६४)।' एहनो अयं वृत्तिकार कियो ते लिखिये छै—तत श्रमणो भगवान् महावीर. सूर्याभेण देवेन एवमुक्त सन् मूर्याभस्य देवस्य एनम्—अनतरोदितम् अयं न आद्रियते—न तदर्यंकरणाय आदरपरो भवित, नापि परिजानाति अनुमन्यते स्वतो बीतरागत्वात् गौतमादीना च नाटयिष्ठेः स्वाध्यायादिविधातकारित्वात् केवल तूष्णीक. अवितष्ठते।

एहनो अर्थ—तिवारै श्रमण भगवान् महावीर सूर्याम देवताइ इम कहाँ छते सूर्याम देवता ना ए पूर्वोक्त अर्थ प्रतै नो आढाइ कहिता आदर न दियो ते नाटक ना कार्य माटे आदरपरायण न हुवै। नो परिजाणाइ कहिना अनुमोदै पिण नहो, पोतै वीतरागपणा थकी अनै गोतमादिक नै माटे नाटक स्वाध्यायादिक मे विघातकारी, ते विघ्नकारीपणा थकी 'तुसिणीए सचिट्ठति' कहिता निकेयल मीन करीने रहै।

इहा ए नाटक ने भगवान् आदर न दियो । अनुमोदना पिण न की घी । ते माटै ए सावज मिक्त छै, जिन आज्ञा बारे छै । जे कार्य ने माधु करै नहीं, कराव नहीं, करता प्रति अनुमोदै पिण नहीं, ते कार्य सावज पाप कर्म बद्य नो हेतु जाणवो ।

तिवार कोड कहै—ए सूर्याभ ने नाटक करणो माड्घो ते वेला वज्यों क्यू नथी ? तेहनो उत्तर—णतक ६ उद्देशे ३३ मे जमाली विहार करण री आज्ञा भगवत कने मागी तिहा पिण एहिज पाठ कह्यो—

तए ण समणे भगव महावीरे जमालिस्स अणगारस्म एयमट्टं नो आढाइ, नो परिजाणड, तुसिणीए सचिट्ठइ । (सू० २१७)

इहा पिण विहार करण री आज्ञा मागी। तिवार ते जमाली ना अर्थ ने आदर न दियो, अनुमोदना पिण न कीधी, मौन राखी। तिवार जमाली आज्ञा विना विहार कीधो। सावत्थी नगरी गयो। तिहा वचन उत्थापी भ्रष्ट थयो। ते भणी भगवान आज्ञा न दीधी, मौन राखी, तेहने पिण वर्ज्यो नथी। ते केवली त्रिलोकीनाथ ए निश्च विहार करसीज इम जाण्यो, ते भणी वर्ज्यों नही।

प्रभु निर्थंक भाषा बोल नही । तिम इहा पिण प्रभु जाण्यो — ए सूर्याभ निष्चै नाटक पाडसीज, ते भणी बज्यों नथी । अथवा ते नाटक पाडवा नो तेहनो तीव्र मन जाण्यो अनै वर्जे तो ते जबरदसती रो धर्म बीतराग रो नथी । अथवा हा कह्या हिंसा लागै, ना कह्या भोगी रा भोग भागै । ते हजारा लोका रै नाटक देखवा री वाछा ते वर्त्तमान काले वर्ज्या तेहने अन्तराय नो सभव इत्यादिक अनेक कारण जाणी ने वर्ज्यों नथी । पिण आज्ञा न दीधी, अनुमोदना न कीधी, ते मार्ट सावज्ज छै।

जे खंधकादिक' तपसा री आज्ञा मांगी, गोतमादिके गोचरी नी आज्ञा मांगी तिहा एहवुं पाठ—"अहासुह देवाणुष्पिया ! मा पिडवंध करेह" इहां ए तपस्या अथवा साधु री गोचरी निरवध कार्य छै, ते भणी कह्यो—जिम सुख हुवै तिम करो, हे देवानुप्रिय ! विलव करो मती । इम शीघ्र आज्ञा दीधी । अने सूर्याभ ना नाटक ने आदर न दियो, अनुमोदना पिण न करी, मून राखी, ते भणी ए सावज छै । आज्ञा वार छै । अने सूर्याभ नां आभियोग देवता अथवा सूर्याभ पोत वदणा कीधी तिहां भगवान् सूत्र मे छह पाठ कह्या, तिहा "अब्भणुणायमेयं" एहवु पाठ छै, ए वंदणा करवा री माहरी आज्ञा छै । ए वदणा रूप कार्य निरवध छै, ते भणी आज्ञा दीधी । अने नाटक नु कार्य सावज छै, ते भणी अनुमोदना न कीधी, मून राखी । ए प्रत्यक्ष भाव निक्षेपा आगे नाटक पाड्यो, ते पिण सावज आज्ञा वाहिर छै तो थापना निक्षेपा री पूजा, ते जिन आज्ञा मे किम हुवै ? ज्ञान नेत्रे करी निरपेक्षपणे विचारी जोइज्यो ।' (ज० स०)

हिन सुघर्मा सभा ने विषे पूजा करी तेहने त्रिहु दिशे द्वार मुख-मडपादिक पूजी, उपपात सभा तिहा आवी, उपपात सभा ने विषे मणिपीठिका, सिंहासन, वहु मध्य देश भाग पूजी, ते उपपात सभा ने विषे त्रिहु दिशे द्वार मुख-मडपा- दिक पूजे ते अधिकार कहै छैं —

२४६. \*जिहां उपपात सभा नों जाण, काइ दक्षिण द्वार पिछाण। तिमहिज सभा सरीस उच्चर्णी, जाव पूवनदा पोक्खरणी॥

वा॰—जिम सुधर्मा सभा ने तीनू दिशे द्वार मुख-मडपादिक पूज्या, तिम उपपात सभा ने दक्षिण द्वार मुख मडपादिक नदा पुष्करणी ताइ पूजी। विल उत्तर नी नदा पुष्करणी थी लेइ उत्तर द्वार लगे पूजी। पछै पूर्व द्वार थी लेइ पूर्व नदा पुष्करणी लगे पूजा करें, करीने द्वह ने विषे आवे ते कहै छै—

२५० पछं द्रह तिहा आवै आवी, द्रह नां तोरण पावडिया सुहावी । पूतलिया ने सर्पं ना रूप, तिमहिज पूजै घर चूप ॥

२५१ पछै सभा जिहा अभिषेक, तिहा आवै आवी नै सपेख। सिंहासण मणिपीठिका सार, तेहनी पूजा करै घर प्यार।।

वा॰—इहा वृत्तिकार कह्यो—पूर्व द्वार करी अभिषेक सभा मे प्रवेश करै, प्रवेश करीने मणिपीठिका नी अने सिंहासण नी वली अभिषेक-भाड नी अने वहु मध्य देश भाग नी पूर्ववत अर्चनिका अनुक्रम करिके करै।

२५२ शेप तिमहिज कहिवु उदत, आयतन सरीखो वृतत। जाव पूर्व नदा पुष्करणी, तिहा आवी पूजा विधि वरणी।।

वाo—अभिषेक सभा नो बहु मध्य देश भाग पूजी ने तिवार पछै इहा पिण सिद्धायतन नी परे दक्षिण द्वार दक्षिण मुखमडपादिक थकी दक्षिण नदा पुष्करणी लगे पूजी ने उत्तर नदा पुष्करणी लेइ उत्तर द्वारांत पूजी ने पूर्व द्वारादिक थकी लेइ पूर्व नदा पुष्करणी लगे पूजी, पूजी ने हिवे अलकार सभा मे आवै, ते कहै छै—

२५३. जिहां सभा अलकार, तिहां आवै आवी नै तिहवार। जिम अभिषेक सभा विस्तार, तिमज सर्व कहिवू अलकार।।

लय: म्हारी सासू रो नाम छै फूली १. भ० २।६१ २४६. जेणेव उववायसभाए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छद्द, उवागच्छित्ता— (जहा २६४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि)। (राय० सू० ४१६-४३४)

२५० जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता

तोरणे य तिसोवाण-पिड्हवए य सालभिजयाओ य
वालक्वए य लोमहत्थएण पमज्जइ, पमिज्जता।

(राय० सू० ४७३)
२५१ जेणेव अभिसेय सभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता

"मणिपेढिय च सीहासण च लोमहत्थएण पमज्जइ,
पमिज्जता।

(राय० सू० ४७४)
वा०—पूर्वद्वारेणाभिषेकसभा प्रविशति, प्रविश्य मिणपीठिकाया सिहासनस्याभिषेकभाण्डस्य बहुमध्यदेशभागस्य
च क्रमेण पूर्ववदर्चनिका करोति।
(वृ० प० २६६)
२५३ जेणेव अलकारियसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता"""

(राय० सू० ५३४)

वा० — अभिषेक सभा नी पूर्व नंदा पुष्करणी यकी नीकली, पूर्व द्वार करी अलकारिक सभा में पैसी ने मिणिपीठिका अने मिहासन नी विल अलकारिक भाग नी अनुक्रम फरिक पूर्ववत अर्चनिका करे, करीने तिहा पिण अनुक्रम करिक सिद्धायतन नी पर दक्षिण द्वार थी नेड पूर्व नंदा पुष्करणी पर्ववसान अर्चनिका कहिंवी। हिवै व्यवसाय सभा में आवै, ते कहै छै—

२५४. पछै जिहा सभा व्यवसाय, तिहा आवे आवी मुरराय। तिमहिज पूजणी हस्त ग्रही नें, पुस्तक रत्न प्रते पूजी ने।।

२५५ दिव्य उदक घारा कर सोय, आभोर्व सीर्च अवलोय। मुस्य पवर गंघ पुष्पमाल, तिण करि अर्चे तिण काल।।

२५६. मणिपीठिका प्रति पूजेह, वली मिहासण अर्चेह । जेप तिमहिज सर्व कहेव, पूर्व नंदा पोवखरणी त चेव ॥

या॰—तिवार पर्छ अलकार सभा नी पूर्व नदा पुष्करणी यभी पूर्व द्वार करिक व्यवसाय सभा मे पेठो, पैसी ने पुस्तक रत्न ने सपूरिषच्छ नी पूजणी करी पूजी ने उदक धारा करिक सीची ने वर गध माल्य करि अर्ची ने तदनतर मिणपीठिका नी अर्न सिंहासन नी वली बहु मध्य देश भाग नी अनुक्षम करिक पूर्ववत अर्चनिका करें। तदनतर तिहां पिण सिद्धायतन नी परे दक्षिण द्वार यी लेई पूर्व नदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका कहिंवी।

२५७ पूर्व नदा पुष्करणी थी ताय, जिहां विलिपीठ छै तिहा आय। विलि विसर्जन करें तिवार, उगर्या ते वाना मूके सार॥

वा॰-पूर्वोक्त बत्तीस वाना कह्या ते पूजता पूजतां जे कोई वस्तु चदण फूलादिक उगर्या हुवै, ते विलिपीठ ने विषे विसर्जन करं-मूकै।

२५८. पछे आभियोगिक देव, तसु तेड़ावी ततसेव। इह विव बोले सुरराय, हे देवानुप्रिय शिघ्र जाय॥ २५६ सुवर्मावतस विमान, तेह विमान विपे पहिछान। जे सिंघाडा ने आकार, त्रिकोण स्थान जे उदार॥

२६०. त्रिक ज्या तीन वाट मिलंत, चउक्क ते ज्या मिलै चिहु पंथ। वली चच्चर जे कहिवाय, वहु वाट मिलै जिहा आय।।

२६१. विल जिहां थकी अवलोय, चिहु दिश ने विषे पिण सोय। नीसरे चिहु पथ उदार, तसु कहिये चतुर्मुख सार॥

२६२, महापथ राजपथ विपेह, शेप सामान्य पथ कहेह। प्राकार तिको गढ जोय, अट्टालग बुरजा अवलोय।।

या—तयः पूर्वनस्यापुष्करिणीतः पूर्वद्वारेणानक्क्षारिक-गभा प्रविणातः, प्रविषय मणिपीठिताया निहासनस्य अल-गारभाण्डस्य यहुमधार्ययागागयः च अभेण पूर्वपदर्चनिका करोति, तत्रापि अभेण गिद्धायतन्त्रत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनस्यापुष्करिणीपर्यवसाना अर्चनिका यसाध्या ।

(वृ० प० २६६)

२५५. दिव्याए यगधाराए अस्मुन्धेद, अस्मुन्धेता ..... अमेरि यरेरि म मधेरि मन्देहि म अस्वेड, अस्वेता पुष्पापहण । (सम० मृ० ५६४)

२४६. \*\*\*\*\*\*मणिपेटिय च मीहामण च नोमहत्यएग पमञ्जद, पमञ्जिता।

(गय० मृ० ५६५)

या० — तत. पूर्वनन्दापुष्परिणीत. पूर्वद्वारेण व्यवसायसभा प्रविद्यति, प्रविष्य पुन्तकरन्त लोगह्न्त्रवेन प्रमृज्य
उदक्षारया अभ्युध्य चन्द्रनेन चर्चोदन्ता वरगन्द्यमार्त्वरचेयित्वा पुष्पाचारीपण दाधूपने च गरोति, तदनन्तर मणिपीढिकाया मिहामनम्य बहुमध्यदेशभागम्य च क्रमेण पूर्ववदचैनिका करोति, तदनन्तरमत्राणि मिद्धायतन्वत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्परिणीपयंवसाना अर्चेनिका
वसत्व्या। (वृ० प० २६७)

२५७. जेणेव बिलपीडे तेणेव खवागच्छा, खवागच्छिता यनिविगज्जण करेर। (राय० मू० ६५४)

२४८. आभिनोगिए देवे महावेद, महावेत्ता एव वयासी— रिप्पामेव भी देवाणुष्पया ! (राय० सू० ६४४) २४६. ..... विमाणे सिंघाटएस्

(राय० सू० ६४४)

म्यंगाटकः--- भ्रंगाटकाऽऽकृतिपययुक्तं त्रिकोण स्यानम् (राय० वृ० प० २६७)

२६०. तिएसु चउक्केसु चच्चरेसु (राय० सू० ६४४) त्रिक—यत्र रथ्यात्रय मिलाते चतुष्क—चतुष्पययुक्त चत्वर—बहुरथ्यापातम्थानं (राय० वृ० प० २६७)

२६१. चलम्मुहेसु (राय० सू० ६५४) चतुर्मुख-यस्मान्वतसृष्विधिक्षु पन्धानो निस्सरिन्त (राय० व० प० २६७)

२६२ महापहपहेसु पगारेसु अट्टानएसु (राय० सू० ६५४) महापद्यः—राजपद्य शेषः सामान्यः पन्या प्राकार प्रतीतः अट्टालकाः—प्राकारस्योपरिभृत्याश्रयविशेषाः (राय० वृ० प० २६७) २६३. चरिका ते अष्ट हस्त प्रमाण, गढ नगर विषे मग जाण। वली महल तणा जे द्वार, गोपुर गढ नी पोल उदार।।

२६४ तोरण द्वार सवधी जान, माधवी लतादि गृह-स्थान। जिहा आवी पुरुष स्त्री ताम, रमै कहियै तास आराम।।

२६५ उत्सवादिक विषे आरोग्य, वहु जन नै भोगविवा जोग्य। वारू उद्यान ते सुखकद, ढुकडु ते कानन तरु वृन्द।। २६६. वेगलु तिको वन कहिवाय, एक जाति तणा सुखदाय। उत्तम वृक्ष समूह सुचारू, वनराई कहियै वारू ।।

२६७ एक अनेक जात ना उदार, तरु-समूह वनखड विचार। ए सहु नी अर्च्च करि ताय, शीघ्र आज्ञा सूपो आय।।

२६८ आभियोगिया देवा तिवार, इद्र वचन कियो अगीकार। सहु नी अर्चा कर स्वयमेव, पाछी आज्ञा सूपी ततखेव।।

२६६ शक्र इन्द्र हिवै सुखदाय, जिहा नदा-पुष्करणी त्यां आय। नदा पोक्खरणी ने सुचग, प्रदक्षिणा करतो उमग॥ २७० पूर्व ने पावडिये कर ताहि, पेठो नदा-पोक्खरणी माहि। हस्त पाय पखाली सार, आयो नदा-पोक्खरणी वार॥

२७१ जिहा सभा सुधर्मा उदार, तिहा गमन भणी सुविचार। प्रवर्त्यो सुराधिप इद, साथै देव देव्या रा वृद।। २७२ सामानिक चउरासी हजार, जाव तीन लाख अवधार। उपर सहस छत्तीस सगीत, आत्मरक्षक देव सहीत।। २७३. बिल अन्य वहु सुधर्मवासी, वैमानिक देव देवी हुलासी। परवर्षो इन्द्र तेह सघात, सर्व ऋद्धि करि सुविख्यात।

२७४. जाव वाजित्र ना भिणकार, सुर दुदुभि घोष उदार। जिहा सभा सुधर्मा सुचग, तिहा आयो घर उचरग। २७५. हिवें सभा सुधर्मा तेह, विषे प्रवेश करें गुणगेह। जिहा सिहासण तिहा आय, वैठो पूर्व मुख सुरराय।

२६३. चरियासु दारेसु गोपुरेसु (राय० सू० ६५४)
चरिका—अष्टहस्तप्रमाणो नगरप्राकारान्तरानमार्ग
द्वाराणि—प्रासादादीना गोपुराणि—प्राकारद्वाराणि
(राय० वृ० प० २६८)

२६४. तोरणेसु आरामेसु (राय० सू० ६५४) तोरणानि—द्वारादिसम्बधीनि आरमते यत्र माधवी-लतागृहादिषु दम्पत्यादीनि इत्यसावाराम.

(राय० वृ० प० २६८)

२६४,२६६. उञ्जाणेसु वणेसु वणराईसु काणणेसु (राय० सू० ६४४) पुष्पादिमयवृक्षसकुलमुत्सवादी वहुजनोपभोग्यमुद्यान, एकजातीयोत्तमवृक्षसमूहो वनराजी ।

(राय० वृ० प० २६७)

२६७. वणसडेसु अञ्चणिय करेह करेला एयमाणित्यं खिप्पामेन पञ्चिप्पणह । (राय० सू० ६४४) एकाऽनेकजातीयोत्तमनृक्षसमूहो ननखण्डः

(राय० वृ० प० २६८)

२६८. तए ण ते आभिओगिया देवा " ' एव वृत्ता समाणा""तमाणत्तियं पच्चिप्पित ।

(राय० सू० ६५५)

२६६. तए ण से........जेणेव णदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता (राय० सू० ६५६)

२७०. नद पुक्खरिणि पुरित्यमिल्लेण निसोमाणपिडिरूव-एण पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता हत्यपाए पक्खालेइ, पक्खालेत्ता णदाओ पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरेइ,

(राय० सू० ६५६)

२७१. जेणेव .....तेणेव पहारेत्य गमणाए । (राय० सू० ६५६)

२७२. तए ण से … आयारक्लदेवसाहस्सीहि

(राय० सू० ६५७)

२७३. अण्णेहि य बहूहि ......विमाणवासीहि वेमाणिएहि देवेहि य देवीहि य सिंद्ध सपरिवुडे सिव्विड्ढीए (राय० सू० ६५७)

२७४. जाव (स॰ पा॰) नाइयरवेण जेणेव · · तेणेव जवागच्छइ

२७५ · · · · · · पुरित्थिमिल्लेण दारेणं अणुपिवसिति अणुपिविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छद्द उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सिण्ण-सण्णे। (राय० सू० ६५७)

१. रायपसेणइयं मे उज्जाणेसु के वाद पाठ का कम इस प्रकार है—वणेसु वणराईसु काणणेसु \*\*\*\*\* । जोड मे उद्यान के वाद कानन की व्याख्या है । उसके वाद वन और वनराजि की । वृत्ति मे उद्यान के वाद कानन है । उसके वाद वन, वनखण्ड और वनराजि है ।

२७६. \*हिवै शक्र तणां मृत्रिचार, सामानिक सुपकारी।
सुर महंस चउरासी सार, वटा है जगवारी।
जशवारी जी, अति हितकारी, वायव्य ईशाण वैठा सारी।
ओ तो सखर सुराधिप शक्र, परम मुद्रा प्यारी॥

सोरठा

२७७. सहस च उरामी जाण, भद्रासण अति ओपता। वायव्य ने ईशाण, वैठा तिहा सामानिका।।

२७= \*हिवै पूर्व दिश रे माय, भट्रासण अन्ट भला। तिहा अग्रमहेंगी आठ, रूप करि अधिक भिला॥ अधिक भिलाजी, आभरण उजना,

अतिही द्युति कातिकरी अमला। अरो तो सवल शक्क सहस्राक्ष, मुजश करता मगला॥

सोरठा

२७६. सील सील सहस सार, रूप वैक्रिय करण नी। वक्ति ताम परिवार, अग्रमहेषी नी असी।।

२६०. \*हिवै आग्नेयी कूण मुजाण, सहस्र फुन द्वादशही।
ए तो पवर भद्रामण जाण, तिहा वैठा उमही।
वैठा उमही जी, प्रकृति गुभही, बार सहस्र अम्यतर परिपद ही।
ओ तो प्रयल पुरदर पेख, ताम अति कीन्ति कही॥
२६१. दक्षिण चवद हजार, मिम्म ही परिपद ना।
नैरुत कूण मम्मार, परिपदा बाहिर ना।
वाहिर नां जी, देवाबिप नां, मुर पट दश सहस्र अधिक सुमना।

# सोरठा

क्षो तो मणिवारी मधवान, अमर पान अपना।।

२६२. दक्षिण दिशि में देख, चउद सहस्र भद्रासणे।
त्या वैठा मुविशेख, मिष्भम परिपद ना मुरा॥
२५३. नेम्त कूण मभार, सोल सहस्र भद्रासणे।
त्या वैठा मुविचार, वाहिर परिपद नां मुरा॥

२८४ \*पश्चिम दिशि मे पेख, मप्त योभैज अति । तिहां मुविशेख, भद्रासण अनिकायिपति । अनिकाविपति जो, तसु सन्वर द्युति, वर परम पीत देवाधिप थी। ओ तो वज्रपाणि विवृधेश, तास सिर अधिक रती।। २५५. फुन चिहुं दिय रैं माय, आत्मरक्षक मिणिया। दिश में महंस चोरासी मुर गिणिया। मुर गिणिया जी, सूत्रे भिणया, कर विविच आयुच जीघा विणया। क्षो तो अपछरपति अमरेश, पुन्व जिन वच सुणिया।।

२७७. "" "भ्रहामणगाहम्मीम् निर्मायति (राय० मृ० ६४८)

२७८. तए ण तस्म ..... पुर्गत्यमेण ..... अगमहिमीयी .... (राय० मू० ६४६)

२=०. तए णं तम्म """दाहिणपुरस्यिमेणं अन्मितरियाए परिसाए ""देवनाहम्मीको "" भद्दानणमाहस्मीनु निमीयनि । (राय० सू० ६६०)

२=१. तए ण तस्म ' ' ' दाहिणेण मिन्समाए पिन्माए '
देवमाहम्मीओ भद्दासणमाहम्मीहि निमीयति
(राय० सू० ६६१)
तए ण तस्स ' ' ' ' दाहिणपच्चित्यमेणं बाहिरियाए
परिमाए ' ' देवमाहस्मीतो ' ' ' भद्दामणमाहस्मीहि
निसीयति । (राय० सू० ६६२)

२६४. तए ण तस्त .....पच्चित्यमेणं मत्त अणिवाह्बियणो सत्तिहिं भद्दासणेहि णिसीयंति (राय० सू० ६६३)

२८५. तए ण तस्म ·····चर्चाहिस ·····कायरक्ख-देव-साहस्मीको भद्दामणसाहस्सीहि णिसीयति (राय० सू० ६६४)

२७६. तए णं तस्म · · · · ः उत्तरपुरियमित्रेण · · · · मामाणिय-माहस्मीत्रो (राय० सू० ६५०)

र् लय: महै तो जास्यां जास्यां चंदन वीर

[[सोरठी

२८६ पूरव दिश रै माय, भद्रासण शोभै भला । सहस चलरासी ताय, इम दक्षिण पश्चिम उत्तर।।

२८७ आत्मरक्षक अभिराम, ते भद्रासण ने विपे चिह्नं दिश माहे ताम, वैठा शोभ रहा तदा।

सन्नद्ध वद्ध कवच भला। स्र आतमरक्ष, भलकता अधिक भिला।। वगतर पहिरचा सार, अधिक भिला जी, दीसै उजला, अगरक्षक काज अमर अमला। ओ तो जशधारी सुरनाथ, तास वस है कमला।। करी, शरासण तीर २८६. वाध्या गाढा पट्टिका तेण, तिहा शर अतिहि तरकश

अतिहि घणा जी, सुरवर सुमणा, पहिरचा फुन ग्रीवा आभरणा । ए तो आतमरक्षक देव, शक्र किंकर नमणां ।।

२६०. आरोप्या शिर विषे, विमल चिह्न-पट्ट वारू। छोगा विशेप एह, चमकता अति चारू। अति चारू जी, सुरहित कारू आयुध प्रहरण ग्रह्मा सारू। ए तो आतमरक्षक देव, अधिप आज्ञाकारू॥

२६१. आदि मध्य अवसान, विपे सुरवर नमता।
एहिज तीनू स्थान, सिंघ छै अति जमता।
अति जमता जी, मन मे गमता, देवाधिप ना अरि ने दमता।
ए तो आतम रक्षक देव, शक्र आणा रमता।।

२६२ वज्र रत्न रै माय, कोटि ते अग्र अणी।
एहवा घनुप उदार, ग्रही तसु शक्ति घणी।
शक्ति घणी जी, सूत्रे पभणी, शर-वृद तिहा सम्पूर्ण थुणी।
ए तो आतम रक्षक देव, सेव सहस्राक्ष तणी।।

२६३. केयक सुर ने हाथ, नील वर्णेज ग्रह्मा। शर नां वृद कलाप, नील-पाणीज कह्मा। पाणीज कह्मा जी, अतिही उमह्मा, इम पीत रक्त पाणीज लह्मा। ए तो आतम रक्षक देव, सुराधिप आण रह्मा।।

२६४. घनुष हाथ छै जास, चाप-पाणी कहियै। चारू-पाणी केय, चारू प्रहरण लहियै। प्राप्त लहियै। प्राप्त लहियै जी, अति हर्ष हियै, के चर्मपाणीज चर्म गहियै। ए तो आतम रक्षक देव, अधिप आणा रहियै।

# सोरठा

२६५. अंगुष्ठ अगुली सीय, तसु आच्छादन चर्म ते। जेह तणे कर जोय, चर्म-पाणी कहियै तसु।।

२८६. पुरित्यमिल्लेणं साहस्मीओ, दाहिणेण ......ं साहस्सीओ, पच्चित्यमेण साहस्सीओ, उत्तरेण .. .. साहस्सीओ,

(राय० सू० ६६४)

२८७. ते ण आयरक्खा सण्णद्ध-त्रद्ध-विम्मय-कवया (राय० सू० ६६४)

२८६. उप्पीलियसरामणपट्टिया पिणद्ध-गेविज्जा

(राय० सू० ६६४) उत्पीडितशरासनपट्टिका पिनद्धग्रैवेया —पिनद्ध-ग्रैवेयकाभरणाः (राय० वृ० प० २७०)

२६०. आविद्ध-विमल-त्रराचिधपट्टा गहियाचहपहरणा (राय० सू० ६६४)

२६१ ति-णयाणि ति-सधीणि (राय० सू० ६६४) त्रिनतानि आदिमध्यावसानेपु नमनभावात् त्रिसन्धीनि आदिमध्यावसानेपु सिधभावात्

(राय० वृ० प० २७०)

२६२. वयरामयकोडीणि धणूइ पगिज्झ परियाइय-कडकलावा (राय० सू० ६६४)

२६३. णीलपाणिणो पीतपाणिणो रत्तपाणिणो (राय० मू० ६६४)

२६४ चावपाणिणो चारपाणिणो चम्मपाणिणो (राय० सू० ६६४) चार —प्रहरणिवशेष. पाणौ येषा ते चारुपाणय (राय० वृ० प० २७०)

२९५. चर्म अगुष्ठागुल्योराच्छादनरूप येपा ते चर्मपाणय (राय० वृ० प० २७०)

<sup>\*</sup> लयः महै तो जास्या जास्या वंदन वीर

खड्ग-पाणी देवा । २१६ \*दंड-पाणि देस, इम रज्जु नी ए पिण केवा । पाथ-पाणि एम, अधिकेवा, सुर सामधींम मेवग जेवा। एकेवा जी काइ सुराधिप सेवा ॥ रक्षक देव, आतम २६७. नील जाणी। पीत फुन चाप चारः रक्त, ने माणी ॥ खड्ग, चमं पाग धारक घारक माणी जी, इक चित आणी, आतमरख भाव प्रतं ठाणी। पहिछाणी ॥ ए तो आतमरक्षक देव, शक्र ना गोपवी २६८ निज जेह, ने रहिया। स्वामी प्रति कहिया। तेह, वीटी वंठा गुप्त पालक पालक कहिया जी, चित गहगहिया,

जिम पालि तेम चिद्व दिश रहिया। वहिया ॥ ए तो आतमरक्षक देव, सेव तत्पर कहियै। २६६ सेवग करि जुक्त जुत्ता नां रहित, पालि नहियै। जेहनी विचे आतरा जेहनी लहिये जी, अति हरप हिये,

तम् युक्तपालिका उच्चरियै। देव, शक्र आणा वहिये ॥ ए तो आतमरक्षक ३००. प्रत्येक-प्रत्येक पेख, आचार भणी। समय कर लेख, करवेज विनय आचरवे करवैज थुणी जी, तसु कीर्त्त घणी, किंकर नी पर तिप्ठेज गुणो । ए तो आतमरक्षक देव, सवल तस गग्न घणी।।

सुघर्मा सभा ने विषे पूर्व द्वारे प्रवेश करीने जिहा मणिपीठिका छै तिहा आवे अने देखे छत जिन दाढा ने प्रणाम कर करीने जिहा माणप्रक चैत्य स्तम, जिहा वज्यमय गील वृत्त हावडा, तिहां आवी ने हावडा प्रत ग्रहे, ग्रही ने उघाडे, उघाडी ने लोमहस्त पूजणी करिक पूजी ने, उदक घारा करिक सीची ने, गोगीप चदने करी लीप, तिवार पछ प्रधान गध माल्य करिक अर्चे, धूप देवें, तदनतर वली वज्यमय गोल हावडा ने विषे प्रक्षेप, निक्षेपी ने तेहने विषे पुष्प, गध, माल्य, वस्य, आभरण आरोप । तिवार पछ लोमहस्त करिक माणवक चैत्य स्तम पूजी ने, उदक घारा करिक सीची ने, चंदन-चर्चा पुष्पादि आरोप —चढावें अने धूपदान करें, करीने जिहा देव-गिहासन प्रदेश छै तिहा आवी ने मणिपीठिका अने सिहासन ने लोमहस्त करिक प्रमार्जनादि रूप पूर्ववत् अर्चनिका करें, करीने जिहा मणिपीठिका अने जिहा देव-सेज्या तिहा आवी ने मणिपीठिका अने देवसेज्या नी द्वारवत अर्चनिका करें । तिवार पछ पूर्वे कही तिण प्रकार करिक होज स्वल्क इद्रव्य विषे पूजा करें । तिवार पछ जे जिहा चोप्पालक नाम प्रहरण कोश तिहा आवी ने लोमहस्त करिक परिव परिघ रत्न प्रमुख प्रहरण रत्न प्रते पूर्ण, पूजी ने उदक धारा करिक सीचें, चदन-चर्चा पुष्पादि-आरोपण धूप-दान करें ।

तिवार पर्छ सुधर्मा सभा ने बहु मध्य देश भागे अचंनिका पूर्ववत् करै, करीने सुधर्मा सभा ने दक्षिण द्वारे करी आवी ने तेहनी अचंनिका पूर्ववत् करै। तिवार पर्छ दक्षिण द्वार करिकै नीकलें। इहा थकी आगै जिमहिज सिद्धायतन थकी नीकलतो दक्षिण द्वारादिक दक्षिण नदा पुष्करणी पर्यवसान पुनरिप प्रवेश

२६६. दंरपाणिको प्रमापाणिको पानपाणिको (राय० सू० ६६४)

२६७. नीलवीय-रत्त-चाय-चाय-चम्म-दह-ग्रगग-गामघरा आयरवया (राय० सू० ६६४)

२६८. रगयोवमा गुत्ता गुत्तगालिया (राय० मू० ६६४)

२६६. जुत्ता जुत्तपानिया (राय० मू० ६६४)

गुक्ता.—भेवनगुणोपेतनया जीननास्तया गुक्ता.

परम्परामबद्धा न तु वृहदन्तरा पानिर्येषा ते पुक्तपानिका (राय० वृ० प० २७०)

३००. पत्तेय-पत्तेय गमयओ विणयओ किंगरमूया इव चिट्ठित (राय० मू० ६६४)

मभाषा नुधर्माया पूर्वहारेण प्रविधति, प्रविषय यभैव मणिपीठिका तत्राऽऽगच्छति आनोके च जिनमवया प्रणामं करोति, कृत्वा यत्र माणवकचैत्वस्तम्भो यत्र वच्यमया. गोलवृत्ता समुद्गमा तथागत्य समुद्गकान् गृह्मित, गृहीत्या विघाटयति विघाटय च लोमहस्तक परामृश्य तेन प्रमाज्यं जदकधारया अभ्युक्य गोशीप-चन्दनेनानुलिम्पति, तत. प्रधानैगंन्धमाल्यैरचंयति धूप दहति, तदनन्तर भूयोऽपि वच्चमयेषु गोलवृत्त-समुद्गेषु प्रतिनिधिपति, प्रतिनिधिप्य तेषु पुष्पगन्ध-माल्यवस्त्राभरणानि चारोपयति, ततो लोमहस्तकेन माणवकचैत्यस्तम्भ प्रमाज्यं उदक्धार्याऽन्युक्षणचन्दन-चर्चापुष्पाद्यारीपण धूपदानं च करोति, कृत्वा च सिहासनप्रदेशमागत्य मणिपीठिकाया सिहासनस्य च लोमहस्तकेन प्रमाजनादिरूपा पूर्ववदचंनिकां करोति, कृत्वा यत्र मणिपीठिका यत्र च देवशयनीय तत्रीपा-गत्य मणिपीठिकाया देवणयनीयस्य च द्वारवदर्चनिका मरोति, तत उम्तप्रकारेणैव क्षुल्लकेन्द्रध्यजे पूजा करोति, ततो यत्र चोप्पालको नाम प्रहरणकोशस्तत्र समागत्य लोमहस्तकेन परिघरत्नप्रमुखाणि प्रहरण-रत्नानि प्रमार्जयित प्रमार्ज्यं उदक्धारयाऽभ्युक्षण चन्दनचर्चाम् पुष्पाद्यारोपण घूपदान च करोति ।

न लय: महै तो जास्या जास्या वंदन वीर

थको उत्तर नंदा पुष्करणोआदिक उत्तर द्वारात। तिवार पर्छ द्वितीय वार नीकलतो छतो पूर्व द्वारादिक पूर्व नदा-पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका नी वक्तव्यता तिकाहीज वक्तव्यता सुप्तमां सभा ने विषे, पिण ऊणी अधिकी न कहिवी। तिवार पर्छ पूर्व नदा पुष्करणी नी अर्चनिका करीने उपपात सभा ने विषे पूर्व द्वार करिके प्रवेश करें। प्रवेश करीने मणिपीठिका अने देव-सेज्या नी तदनतर वहु मध्य देश भागे पूर्ववत अर्चनिका करें। तिवार पर्छ दक्षिण द्वारे आवी ने तहनी अर्चनिका करें। तिवार पर्छ कहे छै—

अठा थी आगे इहां पिण सिद्धायतनवत दक्षिण द्वारादिक पूर्व नदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका कहिवी। तिवार पछ पूर्व नदा पुष्करणी थकी नीकली ने द्रह ने विषे आवी ने पूर्ववत तोरणादिक नी अर्चनिका करें, करीने पूर्व द्वारे करि अभिषेक सभा ने विषे प्रवेश करें। प्रवेश करीने मणिपीठिका अने सिहासन नी वली अभिषेक भाड नी अने वहु मध्य देश भाग नी पूर्ववत अर्चनिका अनुक्रम करिके करें। तिवारे पछ इहा पिण सिद्धायतनवत दक्षिण द्वारादिक पूर्व नदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका कहिवी। तिवार पछ पूर्व नदा पुष्करणी यकी पूर्व द्वार करीने अलकारिक सभा प्रति प्रवेश करीने मणिपीठिका अने सिहासन नी वली अलंकारिक भण्ड नी अने वहु मध्य देश भाग नी अनुक्रम करिके पूर्ववत् अर्चनिका करें। तिवार पछ इहा पिण अनुक्रम करी सिद्धायतनवत दक्षिण द्वारादिक पूर्व नदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका कहिवी।

तिवार पर्छ पूर्व नदा पुष्करणी यकी पूर्व द्वार करी व्यवसाय सभा प्रति प्रवेश करें। प्रवेश करीने पुस्तक रत्न प्रते लोमहस्त करिक पूजीने उदक धारा करिक सीची ने चदने करी चर्ची ने वर गध माल्य करी अर्ची ने पुष्पादि-आरोपण अने धूप-दान करें। तदनतर मणिपीठिका नी अने सिहासन नी अने वहु मध्य देश भाग नी अनुक्रम करिक अर्चनिका करें। तदनतर तिहा पिण सिद्धाय-तनवत दक्षिण द्वारादिक पूर्व नंदा पुष्करणी पर्यवसान अर्चनिका कहिंवी।

तिवार पछी पूर्व नदा पुष्करणी थकी विलपीठ विषे आवी ने बहु मध्य देश-भागवत अर्चेनिका करैं, करीने आभियोगिक देवता प्रति वोलावी ने कहै— खिप्पामेव इत्यादिक सुगम। जिहा लगे आभियोगिक देवता शक सुरेद्र कह्यो तिम सुधर्मावतसक विमान के विषे सर्व स्थानक पूजी ने आज्ञा पाछी सूपै। णवर इहा श्रृष्ठाटकादिक शब्द नो वृत्तिकार जूओ-जूओ अर्थ कियो छै।

तिवार पछ शक्त विल-पीठे विल-विसर्जन करें, पूजता जे वाना ऊगरचा, ते विल-पीठ ने विषे स्थापे । तिवार पछ ईशाण कूणे नदा पुष्करणी प्रति प्रदक्षिणा देइ पूर्व तोरणे करी नदा पोखरणी मे पैसी हाथ पग पखाली नदा पुष्करणी थी नीकली सामानिकादि परिवार सहित सर्व ऋद्धि करिक यावत दुर्दुभि ना निर्घोष नाद शब्दे करी सुधर्मावतसक विमान ने मध्योमध्य थइ सुधर्मा सभा तिहा आवी ते सभा ने पूर्व द्वारे करी प्रवेश करें । मणिपीठिका ने ऊपर सिहासन ने विषे पूर्व साम्हो मुख करी वेसें । तिवार पछ पूर्व कह्यो तिण प्रकार करि सिहासन ने विदिस पूर्वीद दिशे सामानिकादिक वेसें ।

'ए वृत्ति थी वारता लिखी तिणमे सुधर्मा सभा ने तीन दिशे द्वार मुख मडपादिक पूज्या कह्या अने घणी परता मे सुधर्मा सभा ने त्रिहु दिशे द्वार मुख मडपादिक पूजवा नो पाठ नथी कह्यो। ते ए वाचना भेद दीसे छैं। विल सुधर्मा सभा थी उपपात सभा ने विषे आवी मणिपीठिका, देवसेज्या, बहु मध्य देश भाग नी पूजा वृत्ति मे तो कही अने घणी परता मे ए पाठ दीसतो नथी। ए पिण ततः सभाया सुधमीया बहुमध्यदेशभागेऽचिनिको पूर्ववत् करोति, कृत्वा सुधमीया सभाया दक्षिणद्वारे समागत्य तस्य अचिनिका पूर्ववत् कुरुते, ततो दक्षिणद्वारेण विनिगंच्छिति, इत ऊद्ध्वं यथैव सिद्धायतनान्विकामतो दक्षिणद्वारादिका दक्षिणनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना पुनरिप प्रविशत. उत्तरनन्दापुष्करिण्यादिका उत्तरद्वारान्ता ततो द्वितीयद्वारान्निष्कामत
पूर्वद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना अचिनिकावक्तव्यता सैव सुधमीयां सभायामप्यन्यूनातिरिक्ता
वक्तव्यता तत. पूर्वनन्दापुष्करिण्या अचिनिका कृत्वा
उपपातसभां पूर्वद्वारेण प्रविशति, प्रविशय च मणिपीठिकाया देवशयनीयस्य तदनन्तर बहुमध्यदेशभागे
प्राग्वदर्चनिका विद्याति, ततो दक्षिणद्वारे समागत्य
तस्यार्चनिका कृत्ते।

अत अध्वंमत्रापि सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसानाऽर्चनिका वक्तव्या, तत पूर्वनन्दापुष्करिणीतोऽपऋम्य ह्रदे समागत्य पूर्ववत् तोरणार्चेनिका करोति, कृत्वा पूर्वद्वारेणाभिषेकसभा प्रविशति, प्रविश्य मणिपीठिकाया सिंहासनस्या-भिषेकभाण्डस्य वहुमध्यदेशभागस्य च क्रमेण पूर्ववदर्च-निका करोति, ततोऽत्रापि सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारा-दिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना अर्चनिका वक्तव्या तत. पूर्वनन्दापुष्करिणीत पूर्वद्वारेणालङ्कारिकसभा प्रविषय मणिपीठिकाया. सिंहासनस्य प्रविशति, अलकारभाण्डस्य बहुमध्यदेशभागस्य च क्रमेण पूर्व-वदचंनिका करोति, तत्रापि क्रमेण सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापूष्करिणीपर्यवसाना अर्चनिका वक्तव्या।

तत पूर्वनन्दापुष्करिणीत पूर्वद्वारेण व्यवसायसभा
प्रविश्वति, प्रविश्य पुस्तकरत्न लोमहस्तकेन प्रमृज्य
उदक्ष्वारया अभ्गुक्ष्य चन्दनेन चर्चियत्वा वरगन्धमाल्येरचंयित्वा पुष्पाद्यारोपण धूपदान च करोति,
तदनन्तर मणिपीठिकाया सिहासनस्य बहुमध्यदेशभागस्य च क्रमेण पूर्ववदर्चनिका करोति, तदनन्तरमन्नापि सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना अर्चनिका वक्तव्या, तत पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना अर्चनिका वक्तव्या, तत पूर्वनन्दापुष्करिणीतो बलिपीठे समागत्य तस्य बहुमध्यदेशभागवत् अर्चनिका करोति, कृत्वा च आभियोगिकदेवान् शब्दापयति, शब्दापयित्वा एवमवादीत्
'खिप्पामेव' इत्यादि सुगमं यावत् 'तमाणित्य
पच्चिप्पाति'।

तत शकेन्द्र बलिपीठे विलिविसर्जन करोति, कृत्वा चोत्तरपूर्वा नन्दापुष्करिणीमनुप्रदक्षिणीकुर्वन् पूर्वतोरणे -नानुप्रविशति, अनुप्रविश्य च हस्तौ पादौ प्रझालयति वार्चना भेद दीसे छै। अने वृत्तिकार सुधमां मभा नै त्रिहुं दिये द्वार मुख मटपा-दिक नी पूजा कही अने जपपात समा नै विषे पिण मणिपीठिका, देव सेज्या ने वहु मध्य देश भाग नी पूजा इत्यादिक वारता कही ते किणही वाचना में देखी दीसे छै। तिण अनुसारे कही जणाय छै। ते वात मिलती मभवै। वली शके पूजा करी विलिपीठिका ने विषे विल विसर्जन कियो, घणी परता में तो एहवु कह्यु अने वृत्तिकार आभियोगिक देवता सुधर्मावत्तक विमान नी पूजा करी तठा पछ बिल पीठिका ने विषे विल विसर्जन कियो कह्यो, ए पिण वाचना भेद हुवै तो ते पिण केवली जाणे। ' [ज० स०]

३०१. \*एहवो शक्र तणो परिवार, तिणरा पुन्य तणो नहि पार। स्थित दोय सागर नी हुत, विल गोयम प्रश्न करत।।

३०२. प्रभु । शक्र सुर्रिद्र मुरराय, केहवो महाऋद्विवान कहाय। जाव केहवो महा ईश्वर मुखवत ? हिवै बीर कहै मुण सत।। ३०३. शक्र सुर्रिद्र महाऋद्विवान, जाव महाईस्वर मुविधान। तिणरै वतीस लाख विमाण, सहस चउरासी सामानिक जान।। ३०४ तावत्तीसग तेतीस, आठ अग्रमहिषी जगीस। जाव अन्य वहु मुर सुरी जेह, तसु अधिपतिषणे विचरेह।।

३०५. एहवो शक्र महाऋद्धिवान, जाव महाईस्वरवत जान। मेवं भते । सेव भत<sup>ा</sup> प्रभु तहत्ति वचन तुम तत।।

३०६. शतक दशमा नो सोय, ओ तो छट्टो उद्देशो जोय। अर्थ थकी आख्यात, वहु अन्तर ढाल साह्यात।। ३०७ ढाल वेसी चउवीसमी ताह्यो, भिक्षु भारीमाल ऋपिरायो। सुख सपित तास पमायो, हद 'जय-जश' हरप सवायो।।

दशमगते पष्ठोद्देशकार्थः ॥१०।६॥

### दूहा

३०८ पष्टमुदेशे सुवर्मा सभा कही सुखकार।
ते आश्रय तिण कारणे, हिव आश्रय अविकार।।
३०६ अन्तरद्वीपा मेरु थी, उत्तर दिशि वृत्ति माय।
सिखरी गिरि दाढा लवण-दिव अतर कहिवाय।।
३१० कह्यो धर्मसी इहिवधे, लवणोदिव जल मांय।
ग्रंतर छै तिण कारणे, ग्रंतरद्वीप कहाय।।
३११. प्रभु । उत्तर ना मनुष्य नो, एकोरुक अभिधान।
तास द्वीप पिण एगुरुक, किहा कह्यो भगवान?
३१२ इम जिम जीवाभिगम मे, तिमज सर्व सुविशेप।
जाव शुद्धदत द्वीप लग, ए अठवीस उद्देश।।

प्रधारंय नन्दापुरकरिण्या. प्रत्यवतीयं मामानिकादि-परिवारमहितः सर्वेद्धंचा यावद् दुन्दुमिनिषीपनादित-रवेण सूर्यामविमाने मध्यमध्येन समागच्छन् यत्र सुधर्मा समा तत्रागत्य तां पूर्वेद्वारेण प्रविगति, प्रविषय मणिपीठिकाया उपरि सिहामने पूर्वाभिमुसो निपीदति।

[१४०] तत. (पृ० १०२ प० ३) प्रागुपदमितिमहा-सनक्षेण १ मामानिकादय उपविष्ठान्ति ।

(वृ० प० २६४-२६६)

३०१. · · · · गण भंते ! · · · केवइयं कालं ठिई पण्यता ? गोयमा ! · · · · · · िठई पण्यता ।

(राय० मू० ६६४)

३०२,३०३. मनके णं भंते ! देविदे देवराया केमहिब्ब्छि जाव केमहामोत्त्ये ? गोयमा ! महिब्द्छिए जाव महासोउचे । से णं तत्य बत्तीमाए विमाणावाममय-सहस्साणं जाव

३०४. तायत्तीसाए तायत्तीनगाणं अट्टण्ह अगमहिमीण जाव अन्नेसि च वहणं जाव देवाण देवीण य आहेवच्चं जाव कारेमाणे पालेमाणे ति ।

(बु० प० ५०७)

२०५ एमहिट्डिए जाव एमहासोक्ये सक्के देविदे देवराया। सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति

(य० १०।१००,१०१)

३०६. दशमशते पष्ठोद्देशक. (वृ० प० ५०७)

३०८,३०६. पष्ठोद्देशके सुष्ठम्मंसभोक्ता, सा चाश्रय इत्याश्रयाधिकारादाश्रयविशेषानन्तरद्वोपाभिधानान् भेरोक्तरदिग्वत्तिशिखरिपवंतदंष्ट्रागतान् सगुद्रान्तवंत्तिन.। (वृ० प० ५०७)

३११. किह ण भंते । उत्तरिस्ताणं एगूरुयमणुस्साणं एगूरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ?

३१२. एव जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव सुद्धदंत-दीवो त्ति एए अट्टावीस उद्देसगा भाणियव्वा। (श्व० १०।१०२)

<sup>\*</sup>लय: सुण चरिताली यारा लक्षण

३१३. दक्षिण दिशि ना दाखिया, पूरव ग्रतरद्वीप । तिण अनुसारे जाणवा, सेव भत । समीप।। ३१४. दशमा शतक नणां कह्या, च्यार तीस उद्देश। दशमो शतक कह्यो हिवै, एकादशम कहेस।।

दशमशते सप्तमोद्देशकादारम्य चतुरित्रशत्तमोद्देशकार्थ ।।१०।७-३४।।

#### गीतक छंद

 इह रीत गुरु जन सीख अरु प्रभु पार्श्वनाथ प्रसादमय, सुविस्तृत द्वय पख नो सामर्थ्य पा थइ नै अभय।
 शतक दशम विचाररूपज भूघराग्र चढ्यो सही। शकुनि-शिशु निभ तुच्छ ज्ञानज तनु छतो पिण हू वही।।

- ३१३. पूर्वोक्तदाक्षिणास्यान्तं रद्वीप-वंक्तव्यताऽनु-सारेणांवग-न्तव्यः । (वृ० प० ५०८) ३१४. दशमशते चतुस्त्रिशत्तम उद्देशक. समाप्त. (वृ० प० ५०८)
- १,२. इति गुरुजनिशक्षापार्वनाथप्रसादप्रसृततरपतत्रद्वन्द्वसामर्थ्यमाप्य ।
  दशमशतिवचारक्षमाघराष्र्येऽधिरूढः,
  शकुनिशिशुरिवाह तुच्छवोघागकोऽपि ॥
  (वृ० प० ५०८)

,	,	

# एकादश शतक

ढाल: २२५

### दूहा

- १ छेहडै दशमा शतक रै, अतरद्वीपा ख्यात। वनस्पति वहु छै तिहा, तेहथी हिव अवदात।। २. इहां वनस्पति प्रमुख जे, घणा पदार्थ कहिवाय। द्वादश उद्देशा तसु, एकादशमा माय।। ३. उत्पल अर्थ प्रथम कह्यो, द्वितीय उत्पल-कद। पलास-केसु नो तृतीय, कुभी वणस्सइ मद।।
- ४. नाडी सदृश फल तसु, वनस्पति नाडीक। पद्म करणिका नै नलिण, तसु अधिकार सघीक।।
- ५ यद्यपि पद्मोत्पल निलण, नाम कोश एकार्थ। तो पिण रूढि यकी ेडहा, जुदा-जुदा तत्त्वार्थ।। ६. शिव नामा ते राजऋिप, दशम लोक अधिकार। एकादशमुद्देशके, कह्यो काल विस्तार।।
- ७. आलभिका नगरी विषे, अर्थ परूप्या स्वाम। ते उद्देशो वारमो, आलभिका तसु नाम।।
- प्पप्रयम उद्देशक द्वार नी, सग्रह गाथा जेह। वाचनांतर' देखने, आगल लिखियै एह।।
- ह. तिण काले ने तिण समय, नगर राजगृह नाम।
   यावत गोतम वीर ने, प्रक्न करै गुणवाम।।
- १०. \*हे प्रभु ! उत्पल पेख, एक पत्रे जीव स्यू एक। अथवा है जीव अनेक? जिन कहै जीव इक लेख।।
- \* लय । विना रा भाव सुण-सुण गूंजी

- १,२. अनन्तरशतस्यान्तेऽन्तरद्वीपा उक्तास्ते च वनस्पति-बहुला इति वनस्पतिविशेपप्रभृतिपदार्थस्वरूपप्रतिपाद-नायैकादश शत भवि । (वृ०प० ५०८)
- ३. उप्पल सालु पलासे कुभी
  'उप्पले' त्यादि उत्पलार्थं प्रथमोद्देशक 'सालु' ति
  शालूक—उत्पलकन्दस्तदर्थों द्वितीय 'पलासे' ति
  पलाश:—किंशुकस्तदर्थंस्तृतीय. 'कुभी' ति वनस्पतिविशेषस्तदर्थंश्चतुर्थं.।
- (वृ० प० ५११) ४. नालि य पउम कण्णी य निलण नाडीवद्यस्य फलानि स नाडीको—वनस्पतिविशेप एव तदर्थ पञ्चम.। (वृ०प० ५११)
- प्र यद्यपि चोत्पलपद्मनिलनाना नामकोशे एकार्यतोच्यते तथाऽपीह रूढेविशेपोऽवसेय.। (वृ०प० ५११)
- ६. सिव लोग काल 'सिव' ति शिवराजीं वक्तव्यतार्थो नवमः । 'लोग' ति लोकार्थो दशम., ••• कालार्थ एकादश । (वृ०प० ५११)
- अालिभय दस दो य एक्कारे ।।
   आलिभकाया नगर्या यत्प्ररूपित तत्प्रतिपादक उद्देशको
   प्रयालिभक इत्युच्यते ततोऽसौ द्वादशः ।

(वृ० प० ५११)

- म् तत्र प्रथमोद्देशकद्वारसग्रहगाया वाचनान्तरे दृष्टास्ता-श्चेमाः। (वृ०प० ५११)
- ह. तेण कालेण तेणं समएण रायिगहे जाव पञ्जुवासमाणे एव वयासी—
- १०. उप्पले ण भते <sup>।</sup> एगपत्तए कि एगजीवे ? अणग जीवे ? गोयमा ! एगजीवे

1 to 1 1 1

- ११. ए किसलय नव अकूर, ते अवस्था थी ऊपर भूर। किसलय सूओ' तो छै अनतकाय, सूआ पछै एक पत्र थाय।।
- १२ एक पत्रपणा थी विशेष, एक जीव पिण नहिं छै अनेक। उत्पल शब्दे ताय, नीलोत्पलादि कहाय।।
- १३ एक पत्र थकी उपरत, शेप पत्रादि विषे कहत।। तिणमे एक जीव नहिं हुत, तिहा जीव घणां उपजत।।

वा॰ — 'तेण पर' ते प्रथम पत्र थकी पछ 'जे अन्ने जीवा उववज्जंति' जे अनेरा घणा जीव ऊपजै, अनेक जीव नां आश्रयपणां थकी पत्रादि अवयव कहियें। ते एक जीव नहीं, एक जीव नै आश्रयी नहीं, किंतु अनेक जीव छैं। अथवा 'तेण इत्यादि' ते एक पत्र थी पछैं थेप पत्रादिक ने विषे जे अनेरा जीव ऊपजैं ते एक जीव नहीं, अने एक ने विषे ऊपजैं पिण नहीं, किंतु अनेक जीव छैं, अनैक ने विषे ऊपजैं छैं। इहा ए मावार्य — एक पान थकी शेप पत्र आदि नै विषे अनेक जीव छैं तहने विषे अनेक जीव ऊपजैं छैं।

### उपपात द्वार (१)

- १४. हे भगवत । ते जीवा, किहा थकी ऊपजै अतीवा। स्यू नरक थकी उपजत, तिरि मनुष्य देव थी हुत ?
- १५ जिन भाषे उत्पल माय, नरक थकी ऊपजै नाय। तिरि मनुष्य देव थी जाण, उत्पल मे ऊपजै आण।।
- १६. पद छठै पनवणा मांय, ऊपजवो तिम कहिवाय। जाव ईशान नां देव, उत्पल मे ऊपजै भेव।।

### परिमाण द्वार (२)

- १७. जीव तिके भगवंत ! एक समय किता उपजंत ? जिन कहै जघन्य एक दोय, तीन ऊपजे छै अवलोय ॥
- १८. उत्कृष्टा संख्याता हुत, तथा असंख्याता उपजत। ए परिमाण द्वार कह्यो बीजो, अपहरण द्वार हिव तीजो।।

# अपहरण द्वार (३)

- १६. प्रभु ! समय-समय प्रति जेह, अपहरतां काढतां तेह । अपहरियं केतले काल ? इम गोयम प्रश्न विशाल ॥
- २०. जिन कहै असख्याता जत, ते समय-समय अपहरत । असख अव-उत्सर्पिणी ताय, निज्नै अपहरिया नहि जाय ॥

# उच्चत्व द्वार (४)

२१ तनु अवगाहना प्रभु <sup>1</sup>केती ? जघन्य आंगुल असंख भाग एती । उत्कृष्टी हुनै घणेरी, इक सहस्र योजन जामेरी ।।

१. जगता हुमा अंकुर

- ११. एकपत्रकं चेह किंगलयावस्थाया उपरि द्रष्टव्यम् । (वृ०प० ५११)
- १२. नो अणेगजीवे । 'उत्पल' नीलोत्पलादि । (वृ०प० ५११)
- १३. तेण पर जे अण्णे जीवा खववज्जंति ते ण नो एग-जीवा। अणेगजीवा (श० ११।१) यदा तु द्वितीयादि पत्र तेन समारब्ध भवति तदा नैक पत्रावस्या तस्येति वहवो जीवास्तश्रोत्पद्यन्त इति (वृ० प० ५१२)
- वा०—'तेण पर' ति ततः—प्रथमपत्रात् परत. 'जे अन्ने जीवा जववज्जंति' त्ति येऽन्ये—प्रथमपत्रव्यतिरिक्ता जीवा जीवाश्रयत्वात् पत्रादयोऽत्रयवा उत्पद्यन्ते ते 'नैकजीवा.' नैकजीवाश्रया. किन्त्वनेकजीवाश्रया इति ।

अथवा 'तेणे' त्यादि, ततः—एकपत्रात्परतः शेपपत्रा-दिष्वित्ययं. येऽन्ये जीवा उत्पद्यन्ते ते 'नैकजीवा' नैकका किन्त्वनेकजीवा अनेके इत्ययं:। (वृ०प० ५१२)

- १४. ते ण भते । जीवा कतोहितो उववज्जित—िक नेर-इएहिंतो उववज्जित ? तिरिवखजोणिएहिंतो उवव-ज्जित ? मणुस्सेहितो उववज्जित ? देवेहितो उवव-ज्जित ?
- १५. गोयमा<sup>।</sup> नो नेरइएहिंतो उववज्जिति, तिरिक्खजोणिए-हिंतो उववज्जिति, मणुस्सेहिंतो उववज्जिति, देवेहिंतो वि उववज्जिति ।
- १६. एव खववाओ भाणियव्वो जहा वक्कतीए (प० ६१८) वणस्सद्दकाद्दयाण जाव ईसाणेति। (म० १११२) जहा वक्कंतीए' त्ति प्रज्ञापनाया. पष्ठपदे। (वृ०प० ५१२)
- १७. ते ण भते ! जीवा एगसमए ण केवइया उववज्जित? गोयमा । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा,
- १८ उक्कोसेणं सखेजजा वा असखेजजा वा उववज्जति । (श० ११।३)
- १६. ते ण भते ! जीवा समए-समए अवहीरमाणा-अवहीर-माणा केवतिकालेण अवहीरति ?
- २०. गीयमा । ते णं असंखेज्जा समए-समए 'अवहीरमाणा-अवहीरमाणा' असखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहीर्रति, नो चेव ण अवहिया सिया।

(ঘ০ १११४)

२१. तेसि ण भंते । जीवाण केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णता ? गोयमा ! जहण्णेणं अगुलस्स असखेज्जइ- भाग, उनकोसेण सातिरेग जोयणसहस्स । (॥० ११।४)

#### सोरठा

२२. तथाविघ सुविचार, दिघ' गोतीर्थादिक विषे। उच्चपणे अवघार, साधिक योजन सहस्र जे।।

### वध द्वार (४)

२३. \*ज्ञानावरणी कर्म नां भदंत । वधगा के अबधगा हुत ? जिन कहै अवधगा नांय, वधगे वा वधगा वा थाय।।

#### सोरठा

- २४ एक पत्र अवस्थाय, वंघग इक वचने कह्यो। द्वचादिक पत्रे पाय, वहु वचने छै वघगा।।
- २५ \*एव जाव स्रतराय सग, णवरं आयु कर्म अठ भग। इकसयोगिक भग च्यार, द्विकयोगिक चिहु घार॥

#### इकसयोगिक भागा च्यार

२६ एक पत्र अवस्थाए न्हाल, आखखो वाघै तिण काल । वघए इक वचने किह्यै, ए प्रथम भग इम लिह्यै ।।
२७ इक पत्र तणै अवस्थाय, आयु वघ काल विण ताय । अवघए इक वचनेह, भग दूजो कह्यो छै एह ।।
२८ दोय आदि पत्र अवस्थाय, आउखा नै वघ-काल ताय । वघगा वहु वचने कहाय, ए तीजो भागो इण न्याय ।।
२६ दोय आदि पत्र अवस्थाय, आयु वघ-काल विण ताय । अवघगा वहु वचनेह, भग चउथो कह्यो छै एह ।।

#### द्विकसयोगिक भागाच्यार

३०. वधक इक वचनेह, अवधक इक वच तेह। वधक इक वच जेह, अवधगा वहु वचनेह।। ३१ वधगा वहु वच जेह, अवंधग इक वच एह। वधगा वहु वचनेह, अवंधगा वहु वच तेह।।

# वेद द्वार (३)

- ३२. हे भगवत । ते जीवा, ज्ञानावरणी कर्म ना अतीवा। वेदक ने वेदन्त, अथवा अवेदक हुत ? वा०—वेदवो ते अनुक्रम उदै आया नै तथा उदीरणा करिकै उदय आण्या कर्म नो अनुभव—भोगविव ।
- ३३. जिन कहै अवेदका नाय, वेदक प्रथम पत्र अपेक्षाय। तथा वेदगा वहु वचनेह, दोय आदि पत्र आश्री एह।।

- २२. 'साइरेगं जोयणसहस्सं' ति तथाविधसमुद्रगोतीर्थंकादा-विदमुच्चत्वमुत्पलस्यावसेयम् । (वृ०प० ५१२)
- २३. ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वंद्यगा ? अवद्यगा ? गोयमा ! नो अवद्यगा, वद्यए वा, वद्यगा वा । (श० १११६)
- २४ एकपत्रावस्थाया वन्धक एकत्वात् द्वचादिपत्रावस्थाया च वन्धका बहुत्वादिति । (वृ०प० ५१२)
- २५. एव जाव अतराइयस्स, नवर—आउयस्स—पुच्छा।
  'नवर' मित्यादि, इह वन्धकावन्धकपदयोरेकत्वयोगे एक
  वचनेन द्वौ विकल्पौ वहुवचनेन च द्वौ द्विकयोगे तु
  यथायोगमेकत्वबहुत्वाभ्या चत्वारः इत्येवमष्टौ
  विकल्पा। (वृ०प० ५१२)
- २६. वधए वा,
- २७. अवधए वा,
- २८. वधगा वा,
- २६. अवधगा वा
- ३०. अहवा बंधए य अवधए य अहवा वधए य अवधगा
- ३१. अहवा वंघगा य अवधए य अहवा वधगा य अवधगा य। (श० ११।७)
- ३२ ते ण मंते । जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वेदगा ? अवेदगा ?
- वा०-वेदन अनुक्रमोदितस्योदीरणोदीरितस्य वा कर्मणोऽनु-भव.। (वृ०प० ५१२)
- ३३. गोयमा ! नो अवेदगा, वेदए वा, वेदगा वा । अत्रापि एक पत्रतायामेकवचनान्तता अन्यत्र तु बहुवचनान्तता । (वृ० प० ५१२)

१. समुद्र

<sup>\*</sup>विना रा भाव सुण-सुण गूंजै

२४ एवं जाव कर्म अतराय, विल गोतम पूछे वाय। सातावेदगा ते प्रभु! जीवा, के असातावेदगा कहीवा? ३५ जिन कहै साता ने असात, वेदग वेदगा नो अवदात। आठ भागा पूर्ववत जाणी, साता असाता ना सुिपछाणी।।

# उदय द्वार (७)

३६ हे भगवत ! ते जीवा, ज्ञानावरणी कर्म ना सदीवा ।
 उदयवन के अणडदयवत ? जिन कहै अणडदय न हुत ।।
 वा०—उदय ते अनुक्रम उदय आया नी ईज । इण हेतु थकी वेदकपणां नी
पक्ष्पणा कीधे छते पिण भेद किरके उदयपणां नो पक्ष्पवो ।
 ३७ उदर्ड इक वच घुर पत्र एह, तथा उदडणो वहु वच जेह ।
 दोय आदि पत्र अपेक्षाय, एव जाव कर्म अतराय ।।

### उदीरणा द्वार (८)

३६. हे भगवत । ते जीवा, ज्ञानावरणी नां अतीवा। उदीरणावत कहाय, के उदीरणावत छे नाय? ३६. जिन कहै अनुदीरक नाय, एतले ते उदीरक थाय। उदीरक इक वच घुर पत्र, बहु वच उदीरगा बहु पत्र।। ४०. एव जाव अतराय पेख, णवरं एतलो छे विशेख। वेदनी आयु विषे विच्यात, आठ भांगा पूर्ववत थात।। ४१. वेदनी कर्म साता असात, नेह अपेक्षाय अवदात। आयु विषे विल कहिवाय, उदीरक अनुदीरक पेक्षाय।।

#### इकसजोगिया ४ भांगा

१. साता उदीरए

३. साताचदीरगा

२. वसाता उदीरए

४. असाता उदीरगा

# हिवै द्विकसजीगिक ४ भांगा

५. साता उदीरए अमाता उदीरए ७. माता उदीरगा अमाता उदीरए ६. साता उदीरए असाता उदीरगा ५. साता उदीरगा असाता उदीरगा एतर्ल सर्व मिली ५ भांगा वेदनी कमं ना हुआ।

# हिवे बाउला बाबी कहै छै-

इक्सजोगिया ४ भांगा

१. बाट उदीरए वा

३. थाड उदीरगा वा

२. बाउ बणुदीरए वा

४. आउ अणुदीरगा वा

द्विकसंजीगिक ४ भांगा

५ बार रदीरए बार बणुदीरए ७. बार रदीरगा बार बणुदीरए ६. बार रदीरए बार बणुदीरगा ६. बार रदीरगा बार बणुदीरगा

ए ४ भांगा एक वचन, ए ४ भागा वह वचन, एव = ।

वा॰-ए आउखा नो अनुदीरकपणो किम हुवै ? आउखा ने उदीरणा करिकै उदीरनो कदाचितपणा थकी।

लेक्या द्वार (६)

४२. उत्पत्न जीवा भदन्त । स्यूं किह्यै कृष्ण लेक्यावंत । अथवा नील तथा कापोत, तथा तेजु लेक्यावत होत ? ३४ एवं जाव अंतराइयस्स । (ज० ११।८) ते ण भते । जीवा कि मायावेदगा ? असायावेदगा ३५. गोयमा ! सायावेदए वा असायावेदगा वा—अट्ट भगा। (ज० ११।६)

३६. तेण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्म कम्मस्स किं उदई ? लणुदई ? गोयमा । नो लणुदई । वा०—उदयण्चानुक्रमोदितस्यैवेति वेदकत्वप्ररूपणेऽपि भेदेनोद- वित्वप्ररूपणमिति । (वृ० प० ५१२) ३७. उदई वा, उदइणो वा । एव जाव अतराइयस्म । (य० ११।१०)

इद्र. ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्म कम्मस्स किं उदीरगा ? अणुदीरगा ?

३६. गोयमा ! नो अणुदीरगा, उदीरए वा, उदीरगा वा।

४०. एव जाव अतराइयस्स, नवर—वेदणिज्जाउएसु अट्ट भगा। (श० ११।११)

४१. वेदनीये — सातामातापेक्षया आयुिव पुनक्दीरकत्वानु-दीरकत्वापेक्षयाप्टी भगा.। (वृ०प० ५१२)

वा०--अनुदीरकत्व चायुप उदीरणायाः कादाचित त्वा-दिति (वृ० ५० ५१२)

४२. ते ण भते ! जीवा कि कण्हलेसा ? नीललेसा ? काउलेसा ? तेउलेसा ?

३८८ मगवती-जोड् 🗸

- ४३. जिन कहै इकयोगिक अठ, कृष्ण लेस्मे इक वच प्रगट ॥
  तथा नील तथा काउ घार, तथा तेजु ए इक वच च्यार ॥
- ४४. तथा कृष्ण लेस्सा सुविशेपा, अथवा जाव तेजु लेस्सा। ए वहु वच भग चिहु दीस, हिवै द्विकयोगिक चउवीस।।
- ४५ त्रिकयोगिक भग बत्तीस, चउक्कयोगिक सोल कहीस। इम असी भागा अवलोय, तिके कहिवा विचारी जोय।

भाग	इकसजोगिया भागा ⊏ ए च्यार भागा एक वचन						
१	कु	१					
२	नी	१					
Ð	का	१					
٧	ते.	१					
	त्यार भ बहुबचन						
¥	কু.	βY					
Ę	नी	n					
ي	७ का.						
5	ते.	nv.					
	द्विकसजीगिया भागा २४						
	कृ	नी					
۶	१	१					
२	१	3					
ą	3	१					
8	3	3					

	कु	का.
ሂ	१	१
Ę	१	ą
૭	3	1
4	n a	₹
	कृ	ते.
3	१	१
१०	१	737
११	ηγ	१
१२	Ħ	Ą
	नी	का.
१३	१	१
१४	१	₹
१५	ą	१
१६	ą	₹

- ४३ गोयमा ! कण्हलेसे वा नीललेसे वा काउलेसे वा तेउ-लेसे वा।
  - एककयोगे एकवचनेन चत्वार.। (वृ० प० ५१२)
- ४४. कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा अहवा कण्हलेसे य नीललेसे य। एव एए दुयासंजोगितयासजोगच उक्कसजोगेण असीति भगा भवंति। (श० ११।१२)
- ४५. बहुवचनेनापि चत्वार एव, द्विकयोगे तु यथायोगमेक-वचनबहुवचनाभ्या चतुर्भंगी, चतुर्णा च पदानां पड् द्विकयोगास्ते च चतुर्गुणाश्चतुर्विशतिः त्रिकयोगे तु त्रयाणा पदानामप्टो भगाः चतुर्णां च पदाना चत्वारस्त्रिकसयोगास्ते चाष्टाभिर्गुणिता द्वातिशत्, चतुष्कसयोगे तु पोडश भगा, सर्वमीलने चाशीतिरिति (वृ०प० ५१२)

-	1	
	नीं.	ते.
१७	१	१
१८	१	ą
38	R	१
२०	3	ź
	का.	ते.
२१	१	8
२२	१	₹
२३	₹	8
28	₹	ą

त्रिकसजोगिया भागा ३२ ह. नी. का. १ १ १ १ २ १ १ ३ २ १ ३ ३ ३ १ ३ १ ४ ३ ३ १ ५ ३ १ ३				
१     १     १     १       २     १     ३     १     ३       ४     १     ३     ३     १       ४     ३     ३     १     ३       ४     ३     ३     ३     १       ४     ३     ३     १     ३       ४     ३     ३     १     ३       ४     ३     ३     १     ३       ४     ३     ३     ३     ३       ४     ३     ३     ३     ३       ४     ३     ३     ३     ३       ४     ३     ३     ३     ३       ४     ३     ३     ३     ३       ४     ३     ३     ३     ३       ४     ३     ३     ३     ३       ४     ३     ३     ३     ३       ४     ३     ३     ३     ३       ४     ३     ३     ३     ३     ३       ४     ३     ३     ३     ३     ३       ४     ३     ३     ३     ३     ३     ३       ४     ३     ३     ३     ३     ३     ३     ३       ४     ३     ३     ३ <td>त्रिक</td> <td>सजोगि</td> <td>या भाग</td> <td>ा ३२</td>	त्रिक	सजोगि	या भाग	ा ३२
2     8     8     3       3     8     3     3       4     8     3     3       5     3     3     3       5     3     3     3       6     3     8     3       7     3     4     3       8     3     3     4       8     3     3     4       9     3     4     3       9     3     4     3       9     3     4     3       10     3     4     3       10     4     4     3       10     4     4     3       10     4     4     3       10     4     4     3       10     4     4     3       10     4     4     3       10     4     4     4       10     4     4     4       10     4     4     4       10     4     4     4       10     4     4     4       10     4     4     4       10     4     4     4       10     4     4     4 <t< td=""><td></td><td>ह.</td><td>नी.</td><td>का.</td></t<>		ह.	नी.	का.
3     8     3     3       4     8     3     3       8     3     3     3       8     3     3     3       8     3     3     3       8     3     3     3       8     3     3     3       9     3     3     3       10     3     3     3       10     3     3     3       10     3     3     3       10     3     3     3       10     4     3     3       10     4     3     3       10     4     3     3       10     4     3     3       10     4     3     3       10     4     3     3       10     4     3     3       10     4     3     3       10     4     3     3       10     4     3     3       10     4     3     3       10     4     3     4       10     4     3     4       10     4     4     4       10     4     4     4	१	१	१	१
X     3     3       X     3     4     3       X     3     4     3	₹	१	१	ą
X     3     8     3       E     3     8     8	₹	१	ą	१
E 3 8 3	X	8	Ŋ	¥
	્ર ——	₹	१	१
७ ३ ३ १	Ę	₹	१	Ą
	৬	₹	₹	१
म ३ ३ ३	5	Ą	Ą	ą

	कु	नी	ते.
3	*	१	१
१०	१	१	<b>a</b> ?
११	8	ą	१
१२	१	3	₹
१३	R	१	१
१४	134	१	₹
१४	ħ	ą	१
<b>१</b> ६	74	ą	737
	कु. '	कार्	ì.
१७	१	<b>१</b>	8
१५	१	<b>१</b>	₹
१६	१	ą	१
२०	१	3	3
२१	3	१	१
२२	₹	१	3
२३	ą	3	1
28	3	3	2

	नी.	का.	ते.	
२५	ţ	१	१	
२६	१	१	3	
२७	१	ą	१	
२८	१	ą	₹	
२६	ą	*	१	
ąο	ą	१	m	
<b>?</b> ₹	₹	gy.	१	
३२	₹	æ	₹	
एव त्रिक सजोगिया ३२ भग्गा कह्या				

*							
ι	चजन्कस्जीगिया १६ भागा कहैं छै—						
,	कु.	नी	काः	ते.			
8	1	1	8	१			
२	1	1	1	₹			
₹	1	?	ą	1			
Y	8	1	ą	₹			
. પ્ર	1	₹	?	1			
Ę	१	٦,	. 8	₹			
9	१	R	3	1			
۲ د	१	ą	₹	3			
~ E	₹	₹'	₹	?			
ं१०	ą	<b>१</b>	१	₹			
११	n	१	37	2			
<b>१</b> २	ą	<b>१</b>	3	34			
१३	Ą	₹	१	१			
१४	3	es.	<b>१</b>	na na			
* <b>१</b> ५′	ą	<b>ą</b> '	ą	१			
१६	Ą	3	સ	३			
	वंउक्कस रेसर्वे प			भागा ।			

दृष्टि द्वार (१०)

४६. उत्पल जीव सुजोय, प्रभु । स्यू समदृष्टि होय। के मिथ्यादृष्टि कहिवाय, के समामिथ्यादृष्ट थाय?

४७ जिन कहै समदृष्टि न पाय, समामिथ्यादृष्टि पिण नाय। इक वच मिथ्यादृष्टि उदिष्ट, तथा वहु वच मिथ्यादृष्ट।। नाणी-अनाणी द्वार (११)

नाणी-अनाणी द्वार (११) ४८ ते प्रभु । जीव पिछानी, स्यूजानी के कहिये अज्ञानी ? जिन कहै ज्ञानी नहि होय, अज्ञानी इक वहु वच जोय ॥ ४६ ते ण भते । जीवा कि सम्मिह्डि ? मिच्छादिही ? सम्मामिच्छादिही ?

४७ गोयमा । नो सम्मिद्दिही, नो सम्मामिन्छादिही, मिन्छादिद्वी वा मिन्छादिद्विणो वा । (श० ११।१३)

४८. ते ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ? गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी वा, अण्णाणिणी वा । (श० ११।१४)

श॰ ११; ७० १, ढाल २२५ ३६१

जोग द्वार (१२)

४६. स्यू प्रभु । ते मन जोगी, के वच जोगी काय प्रयोगी ? जिन कहै मन वच नाय, काय जोग इक वहु वच पाय।।

उपयोग द्वार (१३)

प्र प्रभु ! स्यू ते सागारोवउत्ता, कै अणागारोवउत्ता उक्ता ? जिन कहै सागारोवउत्ते, इक वचन करीने प्रयुक्ते ॥

५१ अथवा अणागारोवउत्ते, ए पिण एक वचन करि उक्ते। इम अठ भंगा अवघार, इक द्विक योगिक च्यार-च्यार'॥ वर्णाद द्वार (१४)

५२. प्रभु ! उत्पल शरीर मे तास, केता वर्ण गध रस फास ? उत्तर—वर्ण पच गघ दोय, रस पच फर्श अठ होय ॥

५३. ते पिण आत्म स्वरूपे जाण, अवर्ण अगघ पिछाण। विल फर्श अने रस नाय, जीव ते अरूपी कहिवाय।।

उस्सास द्वार (१५)

१४. प्रभु । उस्सासगा ते जीवा, के निस्सासगाज कहीवा। के उस्सास-निस्सास नाय ? ए छै अपर्याप्त अवस्थाय।।

५५. जिन उत्तर दिये सुचग, इकसयोगिक पट भग।
एक वचन उस्सासए तास, अथवा एक वचन ए निस्सास।।
५६. अथवा नो उस्सास-निस्सास, ए पिण एक वचन सुविमास।
एव वहु वचने त्रिहुं जाण, इकयोगिक पट ए पिछाण।।
५७. द्विकयोगिक भांगा वार, त्रिकयोगिक आठ विचार।
एव सर्व भांगा छुव्वीस, तिके यत्र थकी सुजगीस।।

५० ते ण मते <sup>।</sup> जीवा कि सागारोवउत्ता ? अणागारोव-उत्ता ?

गोयमा ! सागारोवउत्ते वा।

५१ अणागारोवउत्ते वा-अट्ट भगा। (श० ११।१६)

५२. तेसि ण भते । जीवाणं सरीरगा कितवण्णा, कितग्रधा, कितरसा, कित्रमा पण्णता ? गोयमा ! पचवण्णा दुगद्या पचरसा अट्ठकासा पण्णत्ता ।

५३. ते पुण अप्पणा अवण्णा, अगद्या 'अरसा, अफासा''
पण्णत्ता ! (श० ११।१७)
'अप्पण' त्ति स्वरूपेण 'अवर्णा' वर्णादिवर्जिता. अमूर्त्तत्वात्तेपामिति । (वृ० प० ५१२)

५४. ते ण भते । जीवा कि उस्सासगा ? निस्सासगा ? नो उस्सासनिस्सासगा ? 'नो उस्सासनिस्सामए' ति अपर्याप्तावस्थायाम् । (वृ० प० ५१२)

५५. गोयमा ! उस्मासए वा, निस्सासए वा

५६. नो उस्सासनिस्सासए वा, उस्सासगा वा, निस्सासगा वा, नो उस्सासनिस्सासगा वा,

५७. अहवा उस्मासए य, निस्सासए य " " एते छ्व्वीसं भगा भवंति । (श० ११।१८) द्विकयोगे तु यथायोगमेकत्वबहुत्वाभ्या तिस्रश्चतुर्भीगका इति द्वादग, त्रिकयोगे त्वष्टाविति अत एवाह—"एए छ्व्वीस भंगा भवंति' ति । (वृ० प० ५१२)

१. सागारोवडते १

३. सागारोवउत्ता ३

२ अणागारोवउत्ते २

४ वणागारोवउत्ता ३

द्विकमंजीगिक ४ भागा--

५ मागारोवडते १ अणागारोवडते १ ७ सागारोवडता ३, अणागारोवडते १

६ सागारोवउत्ते १ अणागारोवउत्ता ३ ८. मागारोवउत्ता ३, अणागारोवउत्ता ३ एव सर्वे ८ भागा ।

४६. ते ण भते ! जीवा कि मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ? गीयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी वा, कायजोगिणो वा । (श० ११।९४)

१ इकमजोगिक ४ भांगा—

जयाचार्य ने पहले अफासा और उसके बाद अरम।
 की जोड़ की है।

		ायोगि गा ६	क	•		उ
उ		_	नो		११	१
<del></del> ۶		१	१		१२	१
	1	ą	ą		१३	ą
		सजोि गा १			१४	₹
		उ	नो			नि
-	9	१	1		१५	\ 8
ackslash	5	१	३		१६	1
	3	३	8		१७	=
1 8	0	३	3		१८	;
		<u>'                                    </u>		_	1	

	उ	नो.
११	१	१
१२	१	34
१३	ą	१
१४	₹	nv.
	नि	नो
१५	\	१
१६	१	₹
१७	३	१
१८	ą	34

त्रिक	त्रिकसजोगिक भागा ८					
***************************************	उ नि नो					
१६	१	१	१			
२०	१	१	₹			
२१	१	134	१			
२२	१	3	ą			
२३	३	१	१			
२४	३	१	३			
२५	3	₹	१			
२६	ą	₹	3			
	एव सर्व २६					

# आहारक द्वार (१६)

- प्रद. आहारक अनाहारक' प्रभु । तेह ? उत्तर आहारक इक वच लेह । तथा अनाहारक वच एक, एहना भागा आठ उवेख।। विरती द्वार (१७)
- ५६. प्रभु । विरती अविरती ते जीवा, अथवा विरताविरती कहीवा? उत्तर-विरती विरताविरती नांय, अविरती इक वहु वच ताय।। क्रिया द्वार (१८)
- ६०. प्रभु । सिक्रया अक्रिया तेह ? उत्तर—िक्रया रहित न कहेह। क्रिया सहित वच एक, तथा सक्रिया वहु वच पेख।। वध द्वार (१६)
- ६१. प्रभु ! सप्त वधगा ते जीवा, के अष्ट वधगा अतीवा ? उत्तर—सप्त तथा अठ एक, इहा आठ भागा सुविशेख।। संज्ञा द्वार (२०)
- ६२. आहारसज्ञोपयुक्त ने जीवा, भय मिथुन परिग्रह कहीवा? जिन कहै असी भग होय, पूर्व लेश्या कही तिम जोय।।

# कपाय द्वार (२१)

६३. प्रभु । उत्पल क्रोध-कपाई, जाव लोभ-कपाई कहाई? जिन कहै पूर्ववत जाण, लेश्या ज्यू असी भगा पिछाण।।

१. विग्रहगतिका. ।

- ५८ ते ण भते । जीवा कि आहारगा ? अणाहारगा ? गोयमा । आहारए वा अणाहारए वा --अट्ट भगा। (श० ११।१६)
- ५६ ते ण भते । जीवा कि विरया ? अविरया ? गोयमा ! नो विरया, नो विरयाविरया, अविरए वा अविरया वा। (হা০ **१**१।२०)
- ६०. ते ण मते । जीवा कि सिकरिया? अकिरिया? गोयमा ! नो अकिरिया, सिकरिए वा सिकरिया वा। (য়০ ११।२१)
- ६१ ते णं भते । जीवा कि सत्तविहयधगा ? गोयमा । सत्तविहवधए वा, अटुविहवधए वा - अटु (श० ११।२२)
- ६२. ते ण भते । जीवा कि आहारसण्णोवउत्ता ? भय-सण्णोव उत्ता ? मेहुणसण्णोव उत्ता ? परिग्गहमण्णो-वउत्ता ?

गीयमा । आहारसण्णोवनत्ता-असीति भगा। (গ্ৰ০ ११।२३)

- ६३. ते ण भते । जीवा कि कोहकसाई ? माणकमाई? मायाकसाई? लोभकसाई? अमीति भगा। (श० ११।२४)
  - (वृ० प० ५१३) ·· लेश्याद्वारवद्व्यास्येयाः

### वेद द्वार (२२)

६४. हे प्रभु ! उत्पल जीवा, इत्थी पुरुप नपुसक कहीवा ? जिन कहै इत्थी पुरुष न होय, नपुसक इक वहु वच जोय।।

# वेद वध द्वार (२३)

- ६५ प्रभु । स्त्री-वेद वघग जीवा, पु नपुस वघगा कहीवा ? जिन कहै भागा छन्वीस, सास-उस्सास जेम जगीस ।। सन्ती असन्ती द्वार (२४)
- ६६ प्रभु । सन्नी असन्नी ते जीवा ? जिन कहै सन्नी न कहीवा। एक वचन असन्नी कहिवाय, बहु वच असन्नी पिण थाय।। इन्द्रिय द्वार (२५)
- ६७. प्रभृ । उत्पल जीव स्यू किह्या, सइन्द्रिया कै अणिदिया ? जिन कहै अणिदिया न तेह, सइदिय इक वहु वचनेह ॥ अनुवध द्वार (२६)
- ६८. प्रभु । उत्पल जीव निहाल, रहै काल थी केतलो काल ? उत्तर—जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त थात, उत्कृष्ट काल असख्यात।। सबेध द्वार (२७)
- ६६ प्रभु । उत्पल जीव मरीने, पृथ्वी जीवपणे उपजी ने । विल उत्पलपणे उपजंत, कितो काल गतागत हुत ?
- ७०. जिन कहै भव आश्री सोय, जघन्य थकी करें भव दोय।
  एक पृथ्वी उत्पल भव वीजो, उत्कृष्ट असख भव लीजो।।
  ७१. हिवै काल थकी अवलोय, जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त दोय।
- बा०-भव आश्रयी जघन्य वे भव, उत्पंत जीव मरी प्रथम भव पृथ्वीपणै, द्वितीय भव उत्पलपणे । तिवारै पछै मनुष्यादि गति प्रति गमन करै ।

उत्कृष्ट काल असल्यात, इतो काल गतागत थात।।

काल आश्रयी जघन्य वे अन्तर्मुहूर्त्तं, ते किम ? उत्पल को जीव मरी एक पृथ्वीपणे अन्तर्मुहूर्त्तं वली उत्पलपणे वीजो अन्तर्मुहूर्त्तं, इम काल आश्रयी जघन्य थी दोय अन्तर्मुहूर्त्तं ।

- ७२. प्रभु । उत्पल जीव मरीने, अपकायपणे उपजी ने। एव चेव पृथ्वीवत भणवा, जाव वाउकाय लग गुणवा।।
- ७३. प्रभु ! उत्पल जीव मरीने, वनस्पतिपणे उपजी ने। विल उत्पलपणे उपजत, कितो काल गतागत हुत ?
- ७४ जिन कहै भव आश्री सोय, जघन्य थकी करै भव दीय। एवं वणस्सइ उत्पल वीजो, उत्कृष्ट अनत भव लीजो।। ७५. हिवै काल थकी अवलोय, जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त दोय। उत्कृष्टो अनतो काल, इतो काल गतागति न्हाल।।

- ६४. ते ण भते । जीवा कि इत्थिवेदगा ? पुरिसवेदगा ? नपुसगवेदगा ? गोयमा । नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुमग-वेदए वा नपुसगवेदगा वा । (श० ११।२४)
- ६५. तेण भते! जीवा कि इत्थिवेदवद्यगा? पुरिसवेद-वद्यगा? नपुसगवेदवद्यगा? गोयमा!: .... छन्वीस भगा। (श० ११।२६)
- ६६. ते ण भते । जीवा कि सण्णी ? असण्णी ? गोयमा । नो सण्णी, असण्णी वा असण्णिणो वा । (श० ११।२७)
- ६७. ते ण भते । जीवा कि सइदिया ? व्यणिदिया ? गोयमां ! णो व्यणिदिया, सइदिए वा सइदिया वा । (श० ११।२८)
- ६ द्र. से ण भते । उप्पलजीवेत्ति कालओ केविच्चर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण असखेज्ज काल । (श० ११।२६)
- ६६. से ण भते ! उप्पलजीवे 'पुढविजीवे पुणरिव उप्पल-जीवेत्ति केवितय काल सेवेज्जा ? केवितय काल गतिरागित करेज्जा ?
- ७०. गीयमा । भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण असखेज्जाइ भवग्गहणाइ।
- ७१ कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण असखेज्ज काल, एर्वात्तय काल सेवेज्जा, एर्वातय काल गतिरागींत करेज्जा। (श० ११।३०)
- वा०—'भवादेसेण' ति भवप्रकारेण भवमाश्रित्यत्यर्थ. 'जहन्नेण दो भवग्गहणाइ ति एक पृथिवीकायित्वे ततो द्वितीय- मृत्पलत्वे तत पर मनुष्यादिगाँत गच्छेदिति । काला- देसेण जहन्नेण दो अतोमुहुत्त' त्ति पृथ्वीत्वेनान्तर्मूहुर्त्तं पुनरुत्पलत्वेनान्तर्मूहुर्त्तं मित्येव कालादेशेन जघन्यतो द्वे अन्तर्मुहुर्त्ते इति । (वृ० प० ५१३)
- ७२. से ण भते । उप्पलजीवे, आउजीवे : ... एव चेव। एव जहा पुढविजीवे भणिए तहा जाव वाउजीवे भाणियन्वे। (श० ११।३१)
- ७३. से ण भते । उप्पलजीवे सेसवणस्सइजीवे से पुणरिव उप्पलजीवेत्ति केवितय काल सेवेज्जा ? केवितय काल गितरागित करेज्जा ?
- ७४. गोयमा । भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ जनकोसेण अणताइ भवग्गहणाइ,
- ७५. कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहत्ता, उक्कोसेण अणत काल तरुकाल, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागित करेज्जा। (श० ११।३२)

- ७६. प्रभु । उत्पल जीव मरी नै, बेइन्द्रिपण उपजी नै। विल 'उत्पलपण उपजत, कितो काल गतागति हुत ?
- ७७. जिन कहै भव आश्री सीय, जघन्य थकी करै भव दोय। इक वेइन्द्रि उत्पल वीजो, उत्कृष्ट सख भव लीजो।।
- ७८. हिवै काल थकी अवलोय, जघन्य अन्तर्मुहर्त्त दोय। उत्कृष्टो सख्यातो काल. इतो काल गतागति न्हाल।।
- ७६. इमहिज जीव तेइन्द्री कह्यु, इमहिज जीव चउरिद्री। तियंच पचेद्री नी पृच्छा, हिव साभलजो घर इच्छा।। द०. प्रभु । उत्पल जीव मरी ने, पचेद्री-तिर्यच थई ने।
- वर्लि उत्पलपणे उपजत, कितो काल गतागति हुत ?
- ८१. जिन कहै भव आश्री सोय, जघन्य थकी करै भव दाय। उत्कृष्ट आठ भव जाण, बिह ना चिह-चिह पहिछाण।।
- ६२ हिवै काल थकी अवलोय, जघन्य अन्तर्म्हूर्त्त दोय। उत्कृष्ट पृथक पूर्व कोड, उत्पल भव अद्धा अघिको जोड़।।
- इस मनुष्य सघाने पिण किह्न्, इतो काल तेववू लिह्न्। इतो काल गतागति तास, करै मनुष्य उत्पल सुविमास।। आहार द्वार (२८)
- **८४. हे भगवंत !** ने जीवा, स्यू आहार करें छै अतीवा ? जिन कहै द्रव्य थकी जाण, अनतप्रदेशि द्रव्य पिछाण।।
- ६५. इम पन्नवण पद अठवीस, कह्यो आहार उद्देश जगीस। आहार कह्यो वणस्सइ नो ताय, जाव सर्वात्म लग कहिवाय ॥
- द्द. णवर लोक तणे अन्त ताय, ते उत्पल कहियै नाय। तिणस् निश्चै छ दिशि नो ले आहार, शेप त चेव सर्व विचार ॥

# स्थिति द्वार (२६)

- प्त. उत्पल जीव तणी स्थिति केती ? हिवै वीर कहै हुवै जेती। जघन्य अन्तर्मुहर्त्त दृष्ट, दश सहस्र वर्ष उत्कृष्ट ॥ समुद्घात द्वार (३०)
- प्ट तिणमे किती प्रभु । समुद्घात ? जिन भाखे तीन विख्यात । वेदनी ने कषाय है बीजी, मारणातिक कहियै तीजी।।
- मारणातिक करि भगवत । ते समोहया मरण मरन्त। के असमोहया मरण होई? जिन कहै मरण ह्वं दोई॥

- ७६. से णं भते ! उप्पलजीवे वेइदियजीवे, पुणरवि उप्पल-जीवेत्ति केवतिय काल सेवेज्जा ? केवितय काल गतिरागति करेज्जा ?
- ७७ गोयमा । भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण सखेज्जाइ भवग्गहणाइ,
- ७८ कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण सखेज्ज काल, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा।
- ७६. एव तेइदियजीवे, एवं चउरिदियजीवे वि । (श० ११।३३)
- ५० से ण भते । उप्पलजीवे पर्चिदयतिरिक्खजोणिय-जीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति -पुच्छा।
- गीयमा । भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ट भवग्गहणाइ चत्वारि पचेन्द्रियतिरश्चश्चत्वारि चोत्पलस्येत्येवमष्टी भवग्रहणान्युत्कर्षेत इति । (वृ० प० ५१३)
- ५२ कालादेमेण जहण्णेण दो अतोमुहत्ता उक्कोसेण पुव्वकोडिपुहत्त, उत्पलजीवित त्वेतास्वाधिकमित्येवमुत्कृष्टत पूर्वकोटी-पृथक्तव भवतीति । (बृ० प० ५१३)
- ८३ एव मणुस्सेण वि सम जाव एवतिय काल गतिरा-गति करेज्जा। (शर्व ११।३४)
- ८४ ते ण भते । जीवा किमाहारमाहारेंति ? गोयमा । दञ्चओ अणतपदेसियाइ दञ्चाइ,
- ५५ एव जहा आहारुद्देसए (प० २८।२८-३६) वणस्स-इकाइयाण आहारो तहेव जाव सन्वप्पणयाए आहार-माहारेति।
- ८६ नवर-नियमा छिद्दिसि, मेस त चेव। (श० ११।३५) उत्पलजीवास्तु बादरत्वेन तथाविधनिष्कुटेष्वभावा-न्नियमात् पट्सु दिक्ष्वाहारयन्तीति ।

(वृ० प० ५१३)

- द७ तेसि ण भते । जीवाण केवतिय काल ठिई पण्णता? गोयमा । जहंण्णेण अतोमुहत्त, उक्कोसेण दस वास-(श० ११।३६)
- दद तेसि ण भते । जीवाण कति समुखाया पण्णता ? गोयमा । तओ समुग्घाया पण्णत्ता त जहा---वेदणासमुगए कसायसमुग्घाए, मारणतियसमुग्घाए । (ঘ০ ११।३७)
- दह ते ण भते । जीवा मारणतियसमुग्घाएण कि समोहता मरति ? असमोहता मरति ? गोयमा। समोहता वि मरति, असमोहता वि मरति। (श० ११।३८)

# चयण द्वार (३१)

ह०. प्रभु । अन्तर-रिहत ते जंत, नीकली किण गित उपजंत ? जिन कहै पन्नवणा मांहि, पद छठै कह्यो छै ताहि ॥ ह१. वनस्पितकाय नो विचार, उद्वर्त्तन कह्यो तिवार । तिमहिज सर्व ए भणवो, उत्पन्न नो नीकलवो थुणवो ॥

मूलादिक ने विषे सर्व जीव नो उपपात द्वार (३२)

- ६२. अथ सर्वे प्राण भगवान । सर्व भूत जीव सत्व जान । उत्पल मूल-जीवपणे जोय, पूर्वे ऊपना ते सोय ।। हु उत्पल कदपणेज उपना । उत्पल नालपणेज प्रमना ।
- ६३. उत्पल कदपणेज उपना, उत्पल नालपणेज प्रमना। उत्पल पत्रपणे सहु जीवा, पूर्वे अपना छै अतीवा।।
- हथ. उत्पल ना केंसरपणे, कणिका पासै अवयव जेह। उत्पल कणिकापणे कहाय, मध्य भाग वीज कोस ताय।।
- ६५. उत्पल थिबुकपणे करि जेह, जिहां पत्र ऊपजै तेह। पूर्व काल विषे सर्व जीवा, ऊपना छै प्रभुजी। अतीवा?
- ६६. तव हता कहै जगतार, सहू ऊपनां बारवार। अथवा ते वार अनत, सेव भते सेव भता
- ६७. कह्यो उत्पल उद्देशो एह, एकादशमा शतक नो कहेह। प्रथम उद्देशे जगीस, उगणीसै वर्ष इकवीस।।
- ६८. दोयसौ ने पच्चीसमी ढाल, भिक्षु भारीमाल गुणमाल। ऋिपराय तणे सुपसाय, सुख सपित 'जय-जश' पाय।।

एकावशशते प्रथमोद्देशकार्थः ॥११।१॥

ढाल: २२६

### दूहा

- अष्ट उद्देशा नें विपे, नानापणुज भेद।
   संग्रह अर्थे छै इहा, गाथा तीन उमेद।।
- २. \*पृथक घनुप सालु नी तास, पृथक गाउ कहियै पलास । शेप छहूं नी इम अवगान, योजन सहस्र अधिक पहिछान ॥
- ३. कुभी नालिका पलास माय, तीन लेक्या सुर उपजै नाय। शेष पच मे लेक्या च्यार, उपजै देव वणस्सक सार।।
- ४. कुभी नालिका नी सुविमास, पृथक वर्ष कही स्थिति तास। जेप छहु वर्ष दश हजार, अर्थ त्रिहू गाथा नो सार॥
- \*लय : इण पुर कंबल कोइय न लेसी

- ह०, ह१ ते ण भते । जीवा अणतर उन्बद्धित्ता किंह्
  गच्छिति ? किंह् उववज्जिति....एव जहा वक्कतीए
  (प० ६।१०३,१०४) उन्बद्धणाए वणस्सङकाइयाण
  तहा भाणियव्वं।
  (श० ११।३६)
  'वक्कतीए' ति प्रज्ञापनाया. पष्ठपदे।
- ६२ अह भते । सञ्चपाणा, सञ्चभूता, सञ्चजीवा, सञ्चसत्ता उप्पलभूतत्ताए,

(वृ० प० ५१३)

- ६३ उप्पलकदत्ताए, उप्पलनालत्ताए, उप्पलपत्तताए,
- ६४ उप्पलकेसरत्ताए, उप्पलकण्णियत्ताए, 'उप्पलकेसरत्ताए' ति इह केसराणि—कर्णिकाया परितोऽवयवा 'उप्पलकन्नियत्ताए' ति इह तु कर्णिका —बीजकोश (वृ० प० ५१३)
- ६५ उप्पलिथभगत्ताए उववन्तपुब्बा ? 'उप्पलिथभुगत्ताए' ति थिभुगा च यतः पत्राणि प्रभवन्ति। (वृ० प० ५१३)
- ६६ हता गोयमा । असित अदुवा अणतखुत्तो । (श० १११४०) सेव भते ! सेव भते । त्ति । (श० १११४१)

- १ एतेपु चोद्देशकेपु नानात्वसग्रहार्थास्तिस्रो गाथा (वृ० प० ५१४)
- २ सालिम धणुपुहत्त होइ पलासे च गाउयपुहत्त । जोयणसहस्समहिय अवसेसाण तु छण्हिप ।। (वृ० प० ५१४)
- ३ कुभीए नालियाए होति पलासे य तिन्नि लेसाओ। चतारि उ लेसाओ अवसेसाण तु पचण्ह॥ (वृ० प० ५१४)
- ४ कुभीए नालियाए वासपुहत्त ठिई उ बोद्धव्वा । दसवाससहस्साइ अवसेसाण तु छण्हिप ॥ (वृ० प० ५१४)

- प्र. हे भदत । सालु इक पत्र, एक जीव के अनेक तत्र ? जिन कहै एक जीव छै एम, कहिये उत्पल उद्देश जेम।।
- ६. जाव अनतखुत्तो पहिछाण, णवरं विशेष तनु अवगाण। जघन्य अगुल ने भाग असख, उत्कृष्ट घनुष पृथक नो अक।।
- ७. गेप तिमहिज सेव भंत । सेव भत । गोयम वच तत । एकादशम गतक गुणगेह, द्वितीय उद्देश अर्थ वर एह ॥

# एकादशक्तते द्वितीयोद्देशकार्थः ॥११।२॥

- द. हे भदत । इक पत्र पलास, एक जीव के अनेक तास ? एव उत्पल उद्देश जेम, वक्तव्यता कहिये सहु तेम ॥
- ह. णवर तनु अवगाहन माग, जघन्य आगुल नो असख भाग। उत्कृष्ट पृथक गाउ कहिवाय, पलास मे सुर उपजे नांय।।
- १०. पलाश मे प्रभु । केती लेश ? जिन कहै घुर त्रिहु लेश कहेस ।
  भग छव्वीस शेप तिम हुंत, सेव भते । सेव भत !
  एकादशशते तृतीयोद्देशकार्थः ॥११।३॥
- ११ वनस्पित प्रभु । कुभी विशेख, एक पत्र जीव इक के अनेक ? कह्यो पलास उद्देशक जेह, तिम कहिवू पिण णवर एह ॥
- १२. स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त जघन्य, उत्कृष्ट पृथक वर्षज मन्य। शेप तिमज प्रभु । सेव भत । तुर्य उद्देशक एह कहत॥ एकादशशते चतुर्थोद्देशकार्यः॥११।४॥
- १३. वनस्पति प्रभु! नालिका देख, एक पत्रजीव इक के अनेक ? कुभी उद्देश विपेज वृतत, तिम सहु कहिवू सेव भत । एकादशकाते पंचमोद्देशकार्यः ॥११।४॥
- १४. पद्म तिको प्रभु । कमल विशेख, एक पत्र जीव इक कै अनेक ? जत्पल प्रथम उद्देश वृतत, तिम सहु कहिवू सेव भत । एकादशक्षते पष्ठोहेशकार्थः ॥११।६॥
- १५ कणिका जाति कमल नी पेख, एक पत्र जीव इक के अनेक ? उत्पल प्रथम उद्देश वृतत, तिम सहु कहिवू सेव भत । एकादशक्षते सप्तमोद्देशकार्थः ॥११।७॥
- १६. निलण—कमल नी जाति विशेख, एक पत्र जीव इक के अनेक ? उत्पन प्रथम उद्देश वृतंत, तिम सहु कहिवू सेव भत ! एकादशशते अष्टमोद्देशकार्थः ॥११।८॥

- प्र. सालुए ण भंते । एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ? गोयमा । एगजीवे । एवं उप्पलुद्देमगवत्तव्वया अपरिमेमा भाणियव्वा ।
- ६ जाव अणतन्त्रुत्तो, नवर—मरीरोगाहणा जहण्णेणे अगुलम्म अमंसेज्जइभाग उन्होंमेण धणुपृहत्त,
- ७ मेम त चेव। (ण० ११।४२) मेव भते ! ति। (ण० ११।४३)
- पलामे ण भते । एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
   एव उप्पनुदेमगवत्तव्वया अपरिमेमा भाणियव्वा,
- ह नवर—मरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलम्म अससेज्जड-भाग, उक्कोमेण गाउयपुहत्ता । देवेहितो न उक्कजित । (म० ११।४४)
- १० लेसासु—ते ण भते । जीवा फिंकण्हलेम्सा ? नीललेग्सा ? काउलेग्सा ? गोयमा । कण्हलेस्से वा, नीललेम्से वा, काउलेम्से वा —छन्वीस भगा, सेस त चेव। (श० ११।४६) सेव भते । सेव भते । ति (श० ११।४६)
- ११ कुभिए ण भते । एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
  - एव जहा पलामुद्देसए तहा भाणियव्वे, नवर-
- १२ ठिती जहण्णेण अतोमुहृत्त उक्कोसेण वामपुहत्त, मेम त चेव। (श० ११।४७) सेव भते ! मेवं भते ! ति। (श० ११।४८)
- १३ नालिए ण भते । एगपत्तए कि एकजीवे ? अणेगजीवे ? एव कुभिउद्देमगवत्तन्वया निरवसेस भाणियच्वा । (श० ११।४६)
  - सेव मते । मेव भते ति । (श० ११।४०)
- १४ पडमे ण भते । एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे? एव उप्पतुद्देगगवत्तव्यया निरवमेमा भाणियव्या । (भ० ११।५१)
- मेव भते । तेव भते । ति । (श० ११।५२) १५ कण्णिए ण भते । एगपत्तए कि एगजीवे ?
- र पारते प्राप्त के एंग्याय : अणेगजीये ? एव चेव निरवसेस माणियव्वं । (श०११।४३) सेव मते <sup>।</sup> सेव मते नि । (श०११।४४)
- १६ निलणे ण भते । एगपत्तए कि एगजीवे ? अजेगजीवे ?
  एय चेय निरयसेस जाय अणतगृत्तो। (श्रुट ११।४५)
  सेन भते ! सेन भते ! ति । (श्रुट ११।४६)

- १७. सालु उत्पल कद ते, आदि देइने सात। वहुलपणें उत्पल तणा, उद्देशक सम ज्ञात।। १८. विल विशेष जे जिण विषे, आख्या आगम माहि। णवरं पलास नै तिपे, देव ऊपजें नाहि।।
- उद्देशक विषे, सुर उत्पल उपजंत । १६. उत्पल नहि इहा पलासे देवता, उपजै ए मत।। प्रमुख वनस्पति, प्रशस्त में सुर आय। २०. उत्पल देव ऊपजै अप्रगस्त ते भणी, नांय ॥ पलास उत्पत्ति भणी, तेज्लेश्या सूर पाय। २१. उत्पल नहिं ऊपजै, तेजूलेश्या नाय ॥ सूर पलास
- २२ं. तेजू तणा अभाव थी. पलास मे त्रिहु लेश । पद त्रिहुं नां पटवीस भग, सभव तास विशेप ।। २३ \*ग्यारमा शत नो अप्टम न्हाल, दोयसी ने छवीसमी ढाल । भिक्षु भारीमाल ऋपिराय पसाय, 'जय-जश' संपति हरप सवाय ।।

ढांल : २२७

#### दूहा

१ कह्या अर्थ उत्पल प्रमुख, एहवा अर्थ प्रतेह। यथातथ्य जे जाणवा, समर्थ सर्वज्ञ २. पिण अन्य समर्थ छै नही, द्वीप समुद्र प्रतेह। शिव ऋपिराज तणी परें, हिव कहिये छै जेह।। ३. तिण काले ने तिण समय, हित्यणापुर वर नाम। नगर हुंतो रलियामणो, वर्णक अति अभिराम ।। ४. तिण हित्यणापुर नगर रै, वाहिर कूण ईशान। सहस्रंव वन नाम जे, हतो वर उद्यान।। ५ ते वन सव ऋतु ने विषे, फूर्ल फर्ल समृद्ध। मन रमणीक सुऋद्ध ॥ नंदन वन सम अति सुखद, ६ मुखदायक शीतल घणी, छाया तरु नी इष्ट। मन रमणीक इसा अर्छ, स्वादू फल अति मिण्ट।। ७ कटाला तरु करि रहित, पासादिए पिछान। प्रतिरूप छै, जाव तिको एहवो वर उद्यान।।

- १७ शालूकोहेशकादय सन्तोहेशका प्राय. उत्पलोहेशक-समानगमा । (वृ० प० ५१४)
- १८ विशेष: पुनर्यो यत्र स तत्र सूत्रसिद्ध एव, नवर पलाणोद्देणके यदुक्त 'देवेसु न उववज्जति' ति । (वृ० प० ५१४)
- १६,२० उत्पलोद्देशके हि देवेभ्य उद्वृत्ता उत्पले उत्पद्यन्त इत्युक्तिमह तु पलाशे नोत्पद्यन्त इति वाच्यम्, अप्रशस्तत्वात्तस्य, यतस्ते प्रशस्तेष्वेवोत्पलादिवनस्पति-पूत्पद्यन्त इति । (वृ० प० ५१४)
- २१ यदा किल तेजोलेश्यायुतो देवो देवभवादुद्वृत्त्य वनस्पतिपूत्पद्यते तदा तेषु तेजोलेश्या लभ्यते, न च पलाशे देवत्वोद्वृत्त उत्पद्यते पूर्वोक्तयुक्ते, एव चेह तेजोलेश्या न सभवति । (वृ० पं० ५१४४)
- २२ तदभावादाद्या एव तिस्रो लेश्या इह भवन्ति, एतासु च पड्विंशतिभगका, त्रयाणा पदानामेतावतामेव भावादिति। (वृ० प० ५१४)

- १,२ अनन्तरमुत्पलादयोऽर्था निरूपिता, एवभूताग्र्चा-र्थान् मर्वज्ञ एव यथावज्ज्ञातु समर्थो न पुनरन्यो, द्वीप-ममुद्रानिव शिवराजिप, इति सम्बन्धेन शिवराजिप-मविधानक नवमोद्देशक प्राह — (वृ० प० ५१४)
- ३ तेण कालेण तेण समएण हित्यणापुरे नाम नगरे होत्या—वण्णको ।
- ४. तस्स ण हित्यणापुरस्स नगरस्स वहिया उत्तरपुरित्यमे दिसीभागे, एत्य ण सहसववणे नाम उज्जाणं होत्या—
- ५ सन्वोजय-पुष्फ-फलसिमद्धे रम्मे णदणवणसिन्नभप्प-गासे
- ६ सुहसीतलच्छाए मणोरमे सादुष्फले
- ७ अकटए पासादीए जाव (स॰ पा॰) पडिरूवे । (মৃ॰ ११।५७)

<sup>\*</sup>लय: इण पुर फंवल कोइय न लेसी

\*सरस वृतका सुणो, शिवराज ऋषि नीं रे ॥ (घ्रुपदं)

द. तिण हित्थणापुर नगरी तणो, हुंतो शिव नार्मे राजान। मोटो हेमवंत नी परे जी, वर्णक अति सुविधान॥

### सोरठा

- १. राज-वर्णक इम दीस, महाहिमवत तणी परै।
   मोटो शिव अवनीस, शेप घराधिप पेक्षया।
- १०. पर्वत मलय संवादि, मदर ते मेरू गिरि। महेंद्र ते शकादि, तदवत सार प्रधान जे।।
- ११. \*शिव वसुघाघिप ने हुंती ज़ी, राणी घारणी नाम। अति सुकुमाल सुहामणी जी, वर्णक अति अभिराम।।

#### सोरठा

- १२. वर कर पग सुकुमाल, इत्यादिक राणी तणो।वर्णक अघिक विशाल, अन्य स्थान थी जाणवू।।
- १३. \*पवर पुत्र शिवराय नो जी, घारणी नो अगजात। शिवभद्र नाम कुमार थो जी, अति सुकुमाल आख्यात।।
- १४. जिम सूर्यंकत कुमार नो जी, आख्यो छै अधिकार। जाव चिंता करतो राज नी जी, विचरै एह कुमार॥

### सोरठा

- १५. कर पग तसु सुकुमाल, लक्षण व्यजन गुण सहित। इत्यादिक सुविशाल, रायपसेणी' थी इहा॥
- १६. विचरे करतो चिंत, सूर्यकत तणी परे। इण वेचने इम तत, इहां कहिवो शिवभद्र ने।।
- १७. ते शिवभद्र कुमार, हुंतो वर युवराज पद। शिव राजा ने सार, राज-चित करतो थको।।
- १८. राष्ट्र देश नी जाण, वल वाहन भडार नी। कोठागार पिछाण, पुर अतेउर नी वली।।
- १६. जनपद नी स्वयमेव, चितवना करतो छतो। विचरे अहनिशिहेव, शिवभद्र नाम कुमार ते॥
- २०. \*तिण अवसर शिवराय नै जी, अन्य दिवस किणवार। मध्य निशि काल सुमुय विषे, राज धुरा चितवता घार।।
- २१. एहवे रूपे आतम ने विषे, जाव उपनो मन मे विचार। छै मुक्त जूना तप तणां जी, दान ना फल विल सार।।

- तत्थ ण हित्थणापुरे नगरे सिवे नाम राया होत्या—महयाहिमवत '' वण्णओ।
- राजवर्णको वाच्य इति सूचित, तत्र महाह्मिवानिव
   महान् शेपराजापेक्षया (वृ० प० ५१६)
- १० मलय पर्वतिविशेषो मन्दरो—मेरु महेन्द्र शकादिर्देवराजस्तद्वत्सार प्रधानो य. स तथा, (वृ० प० ५१६)
- ११, तस्स ण सिवस्स रण्णो धारिणी नाम देवी होत्या— मुकुमालपाणिपाया वण्णको ।
- १२ 'सुकुमाल० वन्तओ' ति अनेन च 'सुकुमालपाणिपाए' त्यादी राज्ञीवर्णको वाच्य इति सूचित ।

(वृ० प० ५१६) १३ तस्स ण मिवस्स रण्णो पुत्ते घारिणीए अत्तए सिवभद्दे

- १३ तस्स ण मिवस्स रण्णा पुत्त धारिणाए अत्तए सिवमद्द नाम कुमारे होत्था—मुकुमानपाणिपाए
- १४ जहा सूरियकते जाव
- १५ 'मुकुमालपाणिपाए लक्ष्यणवजणगुणोववेए' इत्यादिना यथा राजप्रश्नकृतामिद्याने ग्रन्थे सूर्यकान्तो राज-कुमार (वृ० प० ५१६)
- १६ 'पच्चुवेक्यमाणे पच्चुवेक्यमाणे विहरइ' इत्येतदन्तेन वर्णकेन वर्णितस्तथाऽय वर्णीयतच्य.।

्(वृ० प० ५१६)

- १७, से ण सिवभट्दे कुमारे जुवराया यावि होत्या सिवस्स रन्तो ... (वृ० प० ५१६)
- १८,१६ रज्ज च रट्ठ च वल च वाहण च कोम च कोट्ठार च पुर च अतेजर च सयमेव पच्चुवेक्समाणे-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ। (ग० ११।५८)
- २० तए ण तस्स सिवस्स रण्णो अण्णया कयाइ पुन्वरत्ता-वरत्तकालसमयसि रज्जधुर चितेमाणस्म
- २१ अयमेयारचे अज्ज्ञित्यए जाव (स॰ पा॰) ममुष्प-ज्जित्या—अत्यि ता मे पुरा पोराणाण कत्लाणफल-वित्तिविसेसे

<sup>\*</sup>लप: अमड़ भड़ रावणा

१. सू. ६७३,६७४

२ अगसुत्ताणि मे 'जनपद' मब्द नहीं है।

२२. जेम तामली चिंतव्युं जी, तिम चितव्यूं शिवराज। जाव पुत्रे करि हूं वच्यो, पशु करि वाघ्यो समाज।। २३. राज करि वाध्यो वली जी, रथ करकै पिण एम। वल-कटके करिवाधियो जी, वाहन करकै तेम।। २४ कोप भडार करी वध्यो जी, कोट्टागार करेह। पुर अतेजर करि वली जी, हू वाध्यो अधिकेह।। २५ विस्तीर्ण घन कनके करीजी, रत्न करीने जाव। छता सार द्रव्ये करी जी, घणु घणु वाध्यो साव।! २६. ते भणी हं स्यू पूर्व भवे जी, तप दानादिक कीघ। जाव एकंत ते पुन्य ने, क्षय करतो विचरू प्रसीघ। २७. ते माटे हूं ज्या लगे जी, प्रथम वाध्यो हिरण्येण। त चेव जाव घणु-घणु जी, वाध्यो सार द्रव्येण।। २८. ज्या लगे सामत राजवी जी, मुभ वश वर्त्ते विशेख। त्या लग मुभनें श्रेय भलो जी, काल प्रभात सपेख।। २६. पवर प्रभा प्रगट्ये छते जी, जाव जलते जान। जाज्वलमान सूरज जिको जी, उदय थयो असमान।। ३०. अति वहु लोही लोह नां जी, कडाहा कुडछी जेह। रोटी पचावा ना वली जी, अन्न हलावा नां एह।। ३१. ते पिण योग्य तापस तणे जी, भंड घडावी तेह ।। शिवभद्र नार्में कुमार ने जी, स्थापी राज्य प्रतेह।। ३२. ते अति वहु लोही लोह ना जी, कडाहा कुडछी जोय। ते पिण योग्य तापस तणे जी, भड ग्रही ने सोय।। ३३. जे ए गगा तट ने विषे जी, वानप्रस्थ विख्यात ।। तापस छै तप मे रता जी, होत्तियादिक आख्यात।।

### सोरठा

३४. वन ने विषे वसंत, वानप्रस्थ कहियै तसु । च्यारू आश्रम नै विपे॥ मत, अथवा तीजो ३५. ब्रह्मचारी ने गृहस्थ, वानप्रस्थ चउथो जती । होत्तियादि तीजो ए वानप्रस्थ, गगा तटे ॥

### गीतक-छंद

- ३६. नित्य अग्निहोमज जे करें, ते कह्या तापस होत्तिया।
  फुन वस्त्र ना घारक जिके छैं, तेह तापस पोत्तिया।।
  ३७. फुन क्वचित पाठज सोत्तिया, ते सूत्र वार लहीजियै।
  भगवती पाठ विषे कह्या, तिणहीज रीत कहीजियै॥
- वा॰—इहा भगवती नी वृत्ति विषे इम कह्यु,—होत्तिया पोत्तिया... सोत्तियत्ति क्विचत् पाठ.। जहा उववाइए (सू ६४) इति इण अतिदेश यकी इम जाणवो—कोत्तिया जन्नई सङ्द्र हुवउट्टा दतुक्खिलया उम्मज्जगा समज्जगा निमज्जगा इत्यादि उववाई मे पाठ कह्या, ने जाणवा।
- १ भगवती सूत्र के कुछ आदर्शों में विस्तृत पाठ देने के वाद औपपातिक सूत्र का समर्पण किया गया है। सिक्षप्त और विस्तृत दो वाचनाओं के मिश्रण में ऐसा होना सभव प्रतीत होता है। 'व' संकेतित आदर्श में केवल एक विस्तृत वाचना

- २२ जहा तामिलस्स जाव (सं॰ पा॰) पुत्तेहि वड्ढामि पसूहि वड्ढामि
- २३. रज्जेणं वड्ढामि एव रट्ठेण चलेण वाहणेण
- २४. कोसेण कोट्टागारेण पुरेण अते उरेण वड्ढामि
- २५ विपुलघण-कणग-रयण जाव (स० पा०) सतसार-सावएज्जेण अतीव-अतीव अभिवड्ढामि
- २६ ण कि ण अह पुरा पोराणाण सुचिण्णाण सुपरकक-ताण 'एगतसो खय उवेहमाणे विहरामि ?
- २७. त जावताव अह हिरण्णेण वड्ढामि जाव अतीव-अतीव अभिवड्ढामि ।
- २८ जाव में सामतरायाणों वि वसे वट्टति, तावता में सेय कल्ल
- २६ पाउप्पभायाए रयणीए जाव उद्वियम्मि सूरे सहस्सर-स्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते
- ३०,३१. सुवहु लोही-लोहकडाह-कडच्छुय तिवय ताव सभडग घडावेत्ता सिवभद्द कुमार रज्जे ठावेत्ता
- ३२ त सुबहु लोही-लोहकडाह-कडच्छुय तिबय ताव सभडग गहाय
- ३३ जे इमे गगाकुले वाणपत्था तावसा भवति त जहा---होत्तिया
- ३४ 'वाणपत्य' त्ति वने भवा \*\*\*\*\* (वृ० प० ५१६)
- ३५ 'ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थो यतिस्तथा' · · · · एतेपा च तृतीयाश्रमवित्तनो वानप्रस्था.। (वृ० प० ५१६)
- ३६. 'होत्तिय' ति अग्निहोत्रिका 'पोत्तिय' ति वस्त्र-धारिण
- ३७ 'सोत्तिय' ति क्वचित्पाठस्तत्राप्ययमेवार्थ.। (वृ० प० ५१६) बा०—'जहा जववाइए' इंत्येतस्मादितदेशादिद

(वृ० प० ५१६)

दृश्य---

- ३८. कोत्तिया सूर्व मिह विषे, फुन यज्ञकारक जण्णई। फुन जेह श्रद्धावत तेहने, कह्या प्रभुजी सद्धई।। ३६ उपगरण लीधे जे रहे, ते थालड पहिछाणिये। जे श्रमण कूंडी प्रति ग्रहे, ते हुवउट्टा जाणिये।। ४०. फल भोगवे ते दंतुखिलया, फुन उम्मजग इह परे। इक वार जल मे पेसने, तत्काल ही जे नीसरे।। ४१. वहु वार जल मे पेस निकले, कह्या तेह समज्जगा। फुन स्नान अर्थे जल विषे, खिण रहे तेह निमज्जगा।।
- पुन स्नान अथ जल विष, खिण रह तह निमज्जा।।

  ४२. फुन प्रथम मट्टी प्रमुख घस, तनु-क्षग क्षालण जे करें।

  इह रीत स्नान करेंज तेहने सपखालणगा वरें।।

  ४३. गगा तणे दक्षिण तटे, वसनार दक्षिणकूलगा।

  वास्तव्य जे उत्तर तटे, किह्वाय उत्तरकूलगा।।

  ४४. फुन सखघमगा करें भोजन, आय तमु जीमाय ने।

  निह आय तो फुन तेह जीमें, सख प्रति सुवजाय ने।।

  ४५ जे नदी तट ऊभा रही ने, शब्द कर जीमें सही।

  ते कूलघमगा कह्या फुन मृगलुव्धगा जु प्रसिद्ध ही।।

  ४६. जे गज हणी तिणहीज करि, वहु काल भोजन आचरं।

  ते हस्तितापस' आखिया, पाखंड वृत्ति समाचरं॥

  ४७ फुन स्नान अणकीधे न जीमे, कठिन गात्रज जेहनां।

  वृद्धा कहैं स्नाने करी, पाडुरा गात्रज तेहना।।

वा०-- किण हि प्रते 'जलाभिसेयकढिणगायभूय' ति पाठ है। तिहा जल ना अभिषेके करी ने कठिन गात्र थयो है जेहनो, एहवू कछ ।

४८. जल हि स्थानक वास जेहनु, अम्बुवासिज दाखिया।
फुन पवन छैं जेह स्थान रहिवै, वायुवासी भाखिया।।
४६. जल विषे वूडा रहै, जलवासिणो तापस कह्या।
फुन वेलनेज समीप वसवै, वेलवासी जे लह्या।।

- ३८ 'कोत्तिय' ति भूमिणायिन 'जन्नउ' ति यज्ञयाजिनः 'सड्ढड' ति श्राद्धा (वृ० प० ५१६)
- ·३६ 'थालइ' ति गृहीतभाण्डा 'हुवउट्ठ' ति कृण्टिका-श्रमणा (वृ० प० ५१६)
- ४० 'दतुक्खिलय' ति फलभोजिन 'उम्मज्जम' ति उन्मज्जनमात्रेण ये स्नान्ति (वृ० प० ५१६)
- ४१ 'ममज्जग' ति उन्मज्जनस्यैवामकृत्करणेन ये न्नान्ति 'निमज्जग' ति स्नानार्यं निमग्ना एव ये क्षण तिष्ठन्ति । (यृ० प० ५१६)
- ४२. 'सपक्याल' ति मृत्तिकादिघर्षणपूर्वक येऽङ्ग क्षाल-यन्ति । (यु० प० ५१६)
- ४३ 'दक्षिणकूलग' ति यैगंगाया दक्षिणकूल एव वास्तव्यम् 'उत्तरकूलग' ति उक्तविपरीता । (वृ० प० ५१६)
- ४४ 'सदाधमग' ति णख ध्मान्वा ये जेमन्ति यसन्य. कोऽपि नागच्छतीति (वृ० प० ५१६)
- ४५ 'कूलधमग' ति ये कूर्ले म्थित्वा शब्द कृत्वा भुञ्जते 'मियलुद्रय' ति प्रतीता एव (वृ० प० ५१६)
- ४६ 'हित्यतावस' ति ये हिन्तिन मारियत्वा तेनैव यहुकाल भोजनतो यापयन्ति । (वृ० प० ५१६)
- ४७ 'जलाभिमेयिकिहिणगाय' त्ति येऽम्नात्वा न भुजते म्नानाद् वा पाण्डुरीभूतगात्रा इति वृद्धाः,

(वृ० प० ५१६)

वाः — मविचत् 'जलाभिमेयकटिणगायभूय' ति दृश्यते तत्र जलाभिषेककठिन गात्र भूता — प्राप्ता ये ते तथा (वृ० प० ५१६)

४८. अवुवासिणो वाउवासिणो

४६. 'वेलवामिणो' ति ममुद्रवेलामनिधिवामिन 'जल-वामिणो' ति ये जननिमग्ना एवासते । (वृ० प० ५१६)

है, उसे अंगमुत्ताणि पृ. ४६४ के पाद टिप्पण (१२) मे ज्यों का त्यों ले लिया गया है। उसके बाद औपपातिक सूत्र (६४) का पाठ भी दिया गया है। १ 'होत्तिया' से लेकर हित्यतावसा' तक अगमुत्ताणि के पाद-टिप्पण और भगवती की वृत्ति का पाठ समान है। इसलिए जोड के सामने वृत्ति का पाठ उद्धृत किया गया है। 'हित्यतावसा' के बाद वृत्ति मे कुछ णव्द अधिक है, और कुछ आगे पिछे हैं। इसका कारण यह है कि वृत्ति मे औपपातिक सूत्र याला पाठ लिया गया है। जब कि जयाचार्य ने भगवती के मूल आदर्य मे प्राप्त पाठ के अनुसार जोड की है। व्यवस्थित पाठ उपलब्ध न होने के कारण तथा यत्र तत्र वृत्तिगत व्याख्या के आधार पर जोड होने के कारण जोड के गामने कही वृत्ति को, कही अगमुत्ताणि और कही दोनों को उद्धृत किया गया है।

२ वेलवासिणो और जलवामिणो पाठ वृत्ति में है, अगसुत्ताणि' में नहीं है। जोड़ में पाठ का व्यत्यय है।

- ५०. जलहीज पीवी नें रहे, ने अंगुमधी जाणवा।
  फुन पवनहीज भरी जु तापस, पवनभक्षी माणवा।।
- ५१. फुन भरी जे मेवाल प्रति, येवालभक्षी आगियै। तह मूल नों हिज आ'र गरिवै, मूलाऽऽतारा वासियै॥
- ५२. फुन गंदाऽऽहारा पत्राऽऽहारा, त्वचाऽऽहारा जाणियै। विन पुष्पाऽऽहारा फलाहारा, बीजाऽऽहारा आणियै॥
- ५३. अतिही सङ्या जे कद मूनज, त्वना पत्रज आहारियं। फल फूल जे पंडुर थया, नेहनोज आ'र विनारियं॥
- ४४. फुन देंड कंची करी ही है, यहा तास उद्गा। तस्मुलिया तरु-मूल वसिवै, कहा ए पागंग्या।
- ४४. मडलाकारे एकठा रहे, तास मटलिया कागा। विल रूप विल ने विषे जेहन्, वाम विलवासी नागा।। बा॰—वृक्ष नी छाति रूप वस्त्र धरै ते 'वक्तपानियो' ए पाठ विष्कृति परत मे छै, किणहि परत मे नहीं।
- ५६. दिशि जले छाटी नै फलादिक, दिधापोगी' छं जिके। आतापना पचानिन तापे करीनै तापस तिके॥
- ५७. कोयला सदृश पच्यो तनु, फुन कंदुभाजन जिम पच्यु। फुन जल्या काष्ठ सरीरा तन, तसु श्याम वर्णे कर रच्यु।।
- ५८. इम आत्म प्रति करता थका, विचरेज तापस ए कहा। । शिवराज ने मक्त रात्रि समये, अध्यवसाय इसा थया।।
- ५६. \*तिहा दिशापोची तापस जेह छै जी, तसुपान मुट हाँग । दिशापोसी तापसपणेजी, लेसू प्रयुज्या सोय ॥
- ६०. प्रव्रज्या लीधे छते जी, एहर्वु अभिग्रह सार। आदरवु श्रेय मां भणी जी, कहिये ते अधिकार॥
- ६१. कल्पै मुक्त जीवू ज्या लगै जी, छठ-छठ अतर रहीत। दिशाचक्रवाले करी जी, तप करिवै विधि रीत।

- ६२. घुर छठ पारण पेख, पूर्व विषे जल छाटतो। फलादि ग्रही विशेख, आ'र करें इह रोत सू॥
- ६३. इम वीजे दिन जाण, दक्षिण दिशा छाटी उदक। इम फिरती दिशा माण, कही दिशा-चक्रवाल ते।।
- ६४. \*ऊची वे वाहू करी जी, जाव विचरषु श्रेय। इम निशि करि विचारणा जी, शिवराजा चित देय।।
- ६५. शत ग्यारम देश नवम नुं जी, ढाल वेसी सतावीस। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी जी, 'जय-जश' हरप जगीस।।

- ४० समुमनियको बाम्मनियको
- **५६ मेलासभिकामा मूलाताम**
- ५२ वजाहारा वनामुखा वयाष्ट्रायः पुष्पाहारा पजारायः भीवारायः
- ४३. परिमारिय-पद्यसपुपरस्यासम्
- ४४. उर्देश राज्यमूनिया 'उद्देश' ति उद्गरितरण्डा ये मंतरील (युव्यव ४१६)
- ४५. महतिया विजवासियां
- या॰—'वनाजवामिनी' ति गाननवामम (युन प० ४१६)
- ५६. दिमाधेतियया ज्ञानावजैति पत्तिमनाविति । पदिगापेतिययों नि वदीन दिश श्रीस्य य पत्त-गुण्यदि समुगिनपन्ति । (युक्ष ४१६)
- ४० इगापनोन्तिय कपुनोन्तिय पहुनोन्तिय 'इगापनोन्तिय' ति अंगारीय पता 'रपुनोन्तिय' ति कपुणरामिथेति । (यु० प० ४१६)
- ४= पित्र अप्यान करेमाणा विहरति। (अल्मुल पृत्य ४६४ पात् दित् १२)
- प्रह. तथा पाणे जि. दिमापोत्रयो सायमा ने।म अजियं मुजे भविता दिमापोत्तिप्रमजात्रमत्ताए पथ्यजनए
- ६० परमदत्ते वि य ण ममाने अयमेयान्य अभिग्नात् अभिगिष्ट्रम्मामि—
- ६१ कपाइ में जायज्जीवाए छट्ठंछट्ठेण अधिक्यितीण दिमानकायांनेण तयोगस्मेण
- ६२,६३ दिमानकावानएण 'तवोक्तम्मेण' ति एकत पारणके पूर्वम्या दिशि यानि फाविनि तान्याहृत्य भुक्ते दितीये तु दक्षिणस्यामित्येय दिक्नश्रयालेन यश्र तप.कर्मण पारणककरण तत्तप वम्मे दिक्चश्रयाल- मुख्यते तेन तप.कर्मणेति । (यु० प० ५१६,५२०)
- ६४ उद्द वाहाओ पिगिज्यिय-पिगिज्यिय जाव (सं०पा०) विहिन्तिए, ति फट्टु एव सपेहेड ।

<sup>\*</sup>लय: अमड् भड़ रावणा

१ उनवाई मे 'दिसापोक्खी' के स्थान पर 'दिसापोक्खिणो' पाठ है।

#### दूहा

- १ निशि इम करी विचारणा, कल्ले जाव जलत।
  अति वहु लोही लोहमय, जाव घडावी तत।।
  २. आज्ञाकारी नर प्रते, तेडावी कहे राय।
  शीघ्र अहो देवानुप्रिये काम करो ए जाय।।
  ३ हित्यणापुर ए नगर ने, भ्यतर सहितज वार।
  आसित्त कहिता अल्प जे, उदके छिडको सार।।
  ४ जावत सेवग काम करि, आज्ञा सूपी आय।
  दितिय वार शिव नृप विल, सेवग ने कहै वाय।।
- ५ शीघ्र देवानुप्रिय । तुम्हे, शिवभद्र नाम कुमार ।
  महाअर्थ महामूल्य जे, मोटा योग्य उदार ।।
  ६ निस्तीरण जे राज ने, अभिषेक नी सार ।
  सामग्री ने सफ करो, म करो ढील लिगार ।।
  ७ सेवग सुण तिमहीज ते, जाव उवस्थापत ।
  राज वेसाणे किणविधे, ते सुणजो घर खत ।।

# \*चतुर नर पुन्य तणा फल देख।। (ध्रुपद)

- प्रजी हो शिवराजा तिण अवसरे काई, वहु गणनायक साथ। जी हो दडनायक जावत विल, परिवरचो सिंघपाल संघात।। १ जी हो वर सिंघासण ऊपरै काइ, शिवभद्र नाम कुमार। जी हो पूर्व मुख वैसाण नै काइ, स्नान करावै सार।।
- १० जी हो एक सौ आठ सोना तणा काइ, जाव एकसौ आठ। जी हो माटी नै कलशे करी, सर्व ऋद्धि करी गहघाट।।
- ११ जी हो जावत वाजित्र वाजते काइ, शब्द मोटा मगलीक। जी हो महाराज्य अभिषेके करी, अभिषेक करावे सधीक।
- १२ जी हो पसम सिहत कोमल घणो, काइ सुरिभ ग्रंघ सहीत। जी हो एहवै रक्त वस्त्रे करी, काइ अग लूहे रूडी रीत।।
- १३ जी हो चदन सरस गोसीस थी काइ, गात्र लेपन करै सार। जी हो जेम जमाली नी परै काइ, कीघा सर्व अलकार॥
- १४ जी हो जाव कल्पतरु नी पर, अलकृत विभूषित अग। जी हो कर जोडी जावत करी काई, वोलै वचन सुचग।।
- १५ जी हो शिवभद्र नाम कुमार ने, जय-विजय करीने वंघाय। जी हो इष्ट मनोज्ञ वचने करी, प्रीतिकार वचन करि ताय।।
- १६ जी हो जेम उववाइ ने विपे, कह्यु कोणिक नो अधिकार। जी हो जाव परम आयु पालज्यो काइ, होज्यो चिरजीव सुखकार॥

- सपेहेत्ता कल्ल 'जाव ''जलते सुवहुं लोहीलोह जाव (सं०पा०) घडावेत्ता
- २ कोडुवियपुरिसे सद्दावेद, सद्दावेत्ता एव वयासी---खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया !
- ३ हित्यणापुरं नगर सिंग्भितरवाहिरिय आसिय "
- ४ जाव'''ते वि तमाणत्तिय पच्चिष्पणित । (श० ११।५६) तए ण से सिवे राया दोच्च पि कोडवियपुरिसे सद्दावेद्द, सद्दावेत्ता एव वयासी—
- ४ खिप्पामेव भो <sup>1</sup> देवाणुष्पिया <sup>1</sup> सिवभइस्स कुमारस्स महत्य महत्य महरिह
- ६ विउल रायाभिसेय उवट्ठवेह।
- ७ तए ण ते कोडवियपुरिसा तहेव उवट्ठवेति । (श० ११।६०)
- न तए ण से सिवे राय अणेगगणनायग दडनायग जाव (स॰पा॰) सिधपालसिंद्ध सपरिवृडे
- स्वभद् कुमार सीहासणवरिस पुरत्याभिमुह निसियावेद, निसियावेत्ता
- १० अट्ठसएण सोवण्णियाण कलसाण जाव अट्ठसएण भोमेज्जाण कलसाण सिव्विड्ढीए
- ११ जाव दुर्दुहि-णिग्घोसणाइयरवेण महया महया रायाभि-सेगेण अभिस्चिद्द,
- १२ पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गधकासाईए गायाइ लूहेति,
- १३ सरसेण गोसीसचदणेण गायाइ अणुलिपति एव जहेव जमालिस्स (भ० ६।१६०) अलकारो तहेव
- १४ जाव कप्परुक्खग पिव अलिकय-विभूसिय करेइ, करेत्ता करयल जाव (स॰पा॰) कट्टु
- १५ सिवभद्द कुमार जएण विजएण वद्धावेद, वद्धावेत्ता ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि
- १६ जाव (स॰ पा॰) जहा ओववाइए (स०६८) कूणियस्स जाव परमाउ पालयाहि

<sup>\*</sup>लय: चतुर नर पोषो पात्र विशेष]

- १७ जी हो जाव शब्द माहे कह्या कांड, उववाड' मे पाठ अनेक। जी हो मनगमती वाणी करी, बोलै स्तवन करता विशेग ॥ १ जी हो जय-जय नदा आपरे काड, जय जय भद्दा जाण। जी हो जय जय नदा भद्र वली, गगलीक वदै इम वाण ॥ १६ जी हो अणजीता नै जीतज्यो कांड, जीता नी प्रतिपाल । जी हो जीता मज्भ वगज्यां तुम्हे, हिवै एहनो अर्थ निहाल ॥ २० जो हो बन्न पक्ष अणजीतिया काइ त्याने जीतेज्यो गुणमाल। जी हो मित्र पक्ष जीता प्रते, त्यांरी कीज्यो घणी प्रतिपाल'।। २१. जी हो विघन सर्व जीती करी, वसो स्वजन मध्य है देव ! जी हो सुरवृद मे इद्र नी परै, तुम्है राज की व्या स्वयमेव ॥ २२. जी हो तारा मे जिम चद्रमा काइ, घरण नाग रै माय। जी हो नरा मे भरत तणी परे, आप राज करो सुखदाय ॥ २३. जी हो आप घणा वर्षी लगै, विल घणा सैकटा वास। जी हो वह लाखा वर्षा नगै, पालो नृप-पद सुख नी राग ॥ २४ जी हो पाप रहित सपूर्ण छतो, काइ हरप गतोप सहीत। जी हो परम आउखो पालज्यो, जाव शब्द मे अर्थ संगीत ॥ २५ जी हो इच्ट वल्लभजन आपरा काइ, परिवार तेह सघात। जी हा राज हित्थणपुर नगर नो, पालज्यो रुडी रीत विख्यात।। २६. जी हो अन्य वह ग्रामागर नगर नो काइ, जावत ही ए राज। जी हो करता विचरा इम कही, उच्चरे जय शब्द आवाज ॥ २७ जी हो शिवभद्र कुमर राजा थयो, मोटो हेमवंत जिम जाण। जी हो वर्णन तिणरो अति घणो, जाव विचरै पुन्य प्रमाण ॥ २८ जी हो दोयसी ने अठावीसमी, आखी ढाल रसाल अपार। भिक्तु भारीमाल ऋपिराय थी काइ, 'जय-जश' मंपति सार ॥
- १७. मणुण्णाहि मणामाहि "अभित्युणतो य एव वयामी-
- १८. जय-जय नदा । जय-जय भदा । भद्दे ते
- १६ अजिय जिणाहि, जियं पालयाहि, जियमञ्जे बमाहि
- २०. अजियं च जिणाहि मत्तुपक्य जिय च पानेहि मिन-पक्य (यु० प० ५२०)
- २१. जियविग्योऽविष वगाहि त देव । मयणमज्झे उँदो इय देवाण (वृ० ५० ५२०)
- २२. चदो ह्य ताराण धरणो ह्य नागाण मरहो ह्व मणुयाणं (वृ० प० ४२०)
- २३ बहुई वासाध बहुइ वाममयाड बहुइ वामनह्म्माड बहुई वामसयमह्म्माई
- २४. अणहसमग्गो हृद्वतुद्वो परमाउ पानयाहि
- २४. इट्ठजणनंपरिवृष्टे हित्यणापुरम्म नगरस्म
- २६ अण्णेसि च यहण गामागर-नगर जाव (म॰पा॰) विहराहि ति मद्दु जयजयमह पर्डजति (ज ११।६१)
- २७. तए ण से निवभट्टे गुमारे राया जाते मह्या हिमवत \*\*\*वण्णको जाव रज्ज पनासेमाणे विहरह ।

(भ ११।६२)

ढाल: २२६

#### दूहा

- तिण अवसर ते शिव नृपति, कदा अन्यदा पेख ।
   गोभनीक तिथि करण दिन, नक्षत्र मुहूर्त्त देख ॥
- २. विस्तीर्ण असणादि चिहु, रंघावी नें सार। मित्र ज्ञाति वलि निजग प्रति, परिजन ने परिवार।।
- ३ राजा क्षत्रिय प्रति विल, न्हैत—आमत्र स्वजन्न । तदनंतर मज्जन कियो, जाव विभूषित तन्न ।।

- १ तए ण मे सिवे राया अण्णया कयाइ सोभणिस तिहि-करण-दिवस-मुहुत्त-नक्यत्तिस
- २. विपुलं अमण-पाण-खाइम-साइमं उवक्यडावेति. उवक्यडावेत्ता मित-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परिजण
- ३. रायाणो य पत्तिए य आमतेति, आमतेत्ता तओ पच्छा न्हाए जाव (सं० पा०) सरीरे

१ सू० ६८

२ अगसुत्ताणि ११।६१ में ऐसा पाठ नहीं है। वृत्ति में यह पाठ है। जयाचार्य को प्राप्त आदर्श में यह पाठ रहा होगा, पर अगसुत्ताणि में यह पाठ न होने के कारण यहा वृत्ति का पाठ उद्धृत किया गया है।

- ४. भोजन मंडप ने विषे, बैठी सुख आसन्त। ते मित्री ज्ञाती निजग, सयण जाव परिजन्त।।
- प्र राजा क्षत्रिय साथ फुन, विस्तीर्ण असणादि। एव जिम ने तामली, तेहनी पर सवादि॥
- इ. भोजन जीम्या जाव ही, वस्त्रादि सत्कार।सन्माने आदर दियो, सन्मानी ने सार॥
- ते मित्र न्याति निजग प्रति, जाव नफर राजान ।
   क्षत्रिय शिवभद्र नृपित प्रति, पूर्छ पूछी जान ।।
- द अति बहुलोही लोह ना, कडाहा कुडछा जेह।
- जावत तापस योग्य जे, भड पात्र ग्रही तेह ॥ ६ जे तापस गगा तटे, वानप्रस्थ वनवास।
- ह ज तापस गुगा तट, वानप्रस्य पुग्यात । तिमहिज होत्तिया प्रमुख जे, जाव पूर्ववत<sup>ा</sup> तास ॥
- १० तास समीपे मुड थई, दिसापोखी कहिवाय। तापसपणुज आदरे, लिये प्रव्रज्या नाय॥
- ११ प्रव्रज्या लीघे छते, अभिग्रह इसो ग्रहत। जावजीय कर्प मुभे, छठ-छठ तप घर खत।।
- १२ तिमज जाव अभिग्रहे प्रते, गहै ग्रही ने ताय। प्रथम छट्ठ अगीकरी, विचरे हरप सवाय॥

\*रायऋषी शिव करें रे पारणो ।। (ध्रुपद)

- १३ तिण अवसर शिवराज ऋषीश्वर, धुर छठ पारण घाम जी । आतापना लेवा नी भूमि थी, पाछो विलयो ताम जी ॥
- १४ वल्कल वस्त्र पहिर निज ओरै, आयो छै निज स्थान जी। किढिण-वशमय तापस भाजन, विल कावड ग्रही जान जी।।
- १५ पूरव दिशि पोली जल छाटै, पूरव दिशि में पेल जी। सोम नामे महाराय इद्र नो, लोकपाल ए देख जी।।
- १६ पत्थाणे परलोग साधन मग, तेह विषे प्रस्थित जी। तथा फलादिक ग्रहिवा अर्थे, गमन विषे प्रवृत्त जी।।
- १७ रक्षा करो शिवराज ऋिप प्रति, जे तिहा कद ने मूल जी। छाल पत्र फल-पुष्प वीज हरि, तसु आज्ञा अनुकूल जी।।
- १८. इम कही पूरव दिशि प्रति पसरै, कद जाव हिर लेय जी। वश भाजन कावड़ प्रति भरि ने, विल ग्रहि डाभ कुशेय जी।।

- ४. भोयणमंडवसि सुहासणवरगए तेण मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि परिजणेण
- ४,६. राएहि य खत्तिएहि सिंह विपुल असण-पाण-खाइम साइम एव जहा तामली (भ० २।३३) जाव (स० पा०) सक्कारेड, सम्माणेइ।
- ७ त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजण रायाणो य खत्तिए य सिवभइ च रायाण अपुच्छः, आपुच्छित्ता
- द्म. सुवहुं लोही-लोहकटाह-कडच्छुय तिवय तावसभडग गहाय
- ह जे इमे गगाकूलगा वाणपत्या तावसा भवति, त चेव जाव
- १० तेसि अतिय मुडे भवित्ता दिमापोनिश्वयतावसत्ताए पन्वइए,
- ११. पन्वइए वि य ण समाणे अयमेयात्त्व अभिगाह अभिगिण्हति—कप्पड मे जावज्जीवाए छट्ठ छट्ठेण
- १२ त चेव जाव अभिग्गह अभिगिण्हित्ता पढम छट्ठ-क्खमण अवसपिज्जित्ताण विहरइ। (श० ११।६३)
- १३. तए ण से सिवे रायरिसी पढमछट्ठवखमणपारणगसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ,
- १४ वागलवत्यिनयत्ये जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छड, उवागच्छित्ता किढिण-सकाइयग गिण्हड 'किढिण' ति वशमयस्तापसभाजनविशेपस्ततश्च तयो साकायिक—भारोद्वहनयत्र किढिणमाकायिक

(बृ० प० ५२०)

१५ पुरित्यम दिस पोक्सेड, पुरित्यमाए दिसाए सोमें महाराया 'महाराय' ति लोकपाल.। (वृ० प० ५२०)

१६ पत्याणे पित्यय 'पत्याणे पित्यय' ति 'प्रस्थाने' परलोकमाधनमार्गे 'प्रस्थित' प्रवृत्त फलाद्याहरणार्थं गमने वा प्रवृत्त (वृ० प० ५२०)

- १७ अभिरक्ख सिव रायरिसि अभिरक्य निव राय-रिसि, जाणि य तत्थ कदाणि य मूलाणि य तथाणि य पत्ताणि य पुष्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाण उ
- १६ ति कट्टू पुरित्यम दिसं पमरङ, पमित्ता जाणि य तत्य कदाणि य जाव हरियाणि य ताङ गेण्ट्र, गेण्हिता किढिण-सकाइयमं भरेङ, भरेता दब्भे य मुने य

<sup>\*</sup>सय: पूज भीखणजी रो समरण

१ श० ११।५६

२. पाठ मे पुष्फ पहले है और फल बाद में है।

- १६. मूल सहित ते दर्भ कहीजै, मूल रहित कुश जान जी। संमिध इघन विल शाखा मोड़ी, ग्रहण करै छै पान जी।।
- २० जिहा निज ओरे तिहां आयने, भाजन कावड थाप जी। स्थान देवार्चन प्रति पूजी नैं, लीपै शुद्ध करि आप जी ।।
- २१ दर्भ अने विल कलश ग्रही कर, गगा महानदी आय जी। जल मज्जन ते जल करिने तन्, शुद्ध मात्र कर ताय जी।।
- २२ जलकीड तनु शुद्ध की घे पिण, जल करि अभिरत प्रीत जी। जल अभिषेक पाणी नो भरवो. साचवतो वर रीत जी।।
- २३ आयंते जल फर्श करण थी, चोखे असुनि करि दूर जी। परम सुचि थइ देव पितर नै, जलाजली कृत भूर जी।।
- २४ कलश माहै जे दर्भ गिभत छै, तेह ग्रही निज हाथ जी। पाठातर नों अर्थ कह्यो ए, दर्भ कलग किहा आत जी।।
- २५. महानदी गगा थी उतरै, निज ओरे आवेह जी। दर्भ कुने वालु करि वेदी, देवार्चन स्थान रचेह जी।।
- २६ सरए निमंथन काष्ठे करि, अरणि काष्ठ घसेय जी। अग्नि पाड़ विल अग्नि सघुकी, ईंघन काष्ठ घालेय जी।।
- २७. अग्नि उजाली विल अग्नि ने, दक्षिण पासे देख जी। सप्त अंग स्थापै ते आगल, कहियै नाम विशेख जी।। २८. सकथा वानप्रस्थ ने आगम उपि प्रसिद्ध ए जान जी। वल्कल स्थानक ज्योति-स्थान ए, अथवा पात्र नो स्थान जी ॥ २६ सय्या भड ने सय्या उपकरण, विल कमडल जेह जी। दड दारु ते दड कहीजै, जीव सहित निज देह जी।।
- ३० मधु घृत तदूल करीने, अग्नि प्रतै होमत जी। चरू चढावे विल द्रव्य रांघी, ए निज मत नो पंथ जी।।

- १६ समिहाओं य पत्तामीट च गिण्हइ 'दर्भ य' ति समूलान् 'कुमे य' ति दर्भानेव निर्मूलान् 'सिमहाओ य' ति सिमध --काष्ठिकाः 'पत्तामोड च' तरुशाखामोटितपत्राणि । (बु० प० ५२०)
- २० जेणेव मए उडए तेणेव उवागच्छड, उवागच्छिता किढिण-सकाइयग ठवेड, ठवेत्ता वेदि वड्ढेई वड्ढेता उवलेवणसमज्जण करेड 'वेदिवड्ढेइ' त्ति वेदिका-देवार्चनस्थानं वर्द्धनी-वहुकरिका ता प्रयुक्त इति वर्द्धयति-प्रमार्जयतीत्यर्य (वृ० प० ५२०)
- २१ दब्भकलसाहत्यगए जेणेव गगा महानदी तेणेव उवागच्छड, उवागच्छिता गग महानदि ओगाहेड, ओगाहेता जलमज्जण करेइ

'जलमज्जण' ति जलेन देहशुद्धिमात्र (वृ० प० ५२०) २२ जलकीड करेड, करेता जलाभिमेयं करेड

'जलकीड' ति देहगुद्वाविप जलेनाभिरत 'जलाभिमेय' ति जनक्षरणम् (वृ० प० ५२०)

- २३. आयते चोक्से परममुडभूए देवय-पिति-कयकज्जे 'बायते' ति जलस्पर्शात् 'चोउखे' ति अशुचिद्रव्यापग-मात्, किमुक्त भवति ? — 'परमसूडभूए' ति 'देवयपिइ-कयकजे ति देवताना पितृणा च कृत कार्य-जलाजितदानादिक येन म तथा (वृ० प० ५२०)
- २४ दव्मकलसाहत्यगए 'दब्भसगब्भकलसगहत्थगए' ति ववचित् (वृ० प० ५२०)
- २५ गगाओ महानदीओ पच्चुत्तरङ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाएहि य वेदि रएति,
- २६. सरएण अर्णि महेइ, महेत्ता अग्गि पांडेइ, पांडेता अग्गि संघुक्केइ, सधुक्केता सिमहाकट्टाइ पविखवइ 'सरएण अरणि महेइ' ति 'शरकेन' निर्मन्यनकाष्ठेन 'अर्णि' निर्मन्यनीयकाष्ठ 'मय्नाति' घर्षयति (बृ० प० ५२०)
- २७ ऑग्ग उज्जालेइ, उज्जालेतां अग्गिस्स दाहिणे पासे सत्तगाइ समादहे, त जहा---
- २८,२६. सकह वक्कल ठाण, सिज्जाभड कमडलु । दंडदारु तहप्पाण, अहे ताइ समादहे ॥ तत्र सक्या-तत्समयप्रसिद्ध उपकरणविशेष स्थान-ज्योतिः स्थानं पात्रस्थान वा शय्याभाण्ड--शय्योप-करण दण्डदारु—दण्डक. आत्मा—प्रतीत इति

(वृ० ५० ५२०)

३० महुणा य घएण य तदुलेहि य अग्गि हुणइ, हुणित्ता चरु साहेइ साहेति' ति चर--भाजनविशेषस्तत्र पच्यमानद्रव्यमपि चरुरेव त चरु वलि मित्यर्थ. 'साधयति' रन्धयति (वृ० प० ५२०)

- ३१ वलि करिने विश्वानर पूजै, पूजी अग्नि उदार जी। आया अतिथि तणी कर पूजा, पछै करै निज आहार जी।
- ३२ तिण अवसर शिवराज ऋपी ते, दूजो छठ सुविचार जी। अगीकार करीने विचरै, द्वितीय पारण अधिकार जी।।
- ३३ भूमि आतापन थकी वली ने, वल्कल पहिरी तेह जी। इम जिम प्रथम पारणे भाल्यो, तिम इहा सर्व कहेह जी।।
- ३४ णवर दक्षिण दिशि जल छाटै, जम नामे महाराय जी। गेप तिमज जाव अतिथि पूजने, करे पारणो ताय जी।।
- ३५ तिण अवसर शिवराज ऋपी ते, तृतीय छठ सुविचार जी। अगीकार करीने विचरै, हिव पारण अधिकार जी।।
- ३६ भूमि आतापन थकी वली ने, वल्कल पहिरी तेह जी। इम जिम प्रथम पारणे भारूयो, तिम इहा सर्व कहेह जी।।
- ३७ णवर पश्चिम दिशि जल छाटै, वरुण नामे महाराय जी। शेष तिमज जाव अतिथि पूजने, करै पारणो ताय जी।।
- ३८ 'तिण अवसर शिवराज ऋषी तें, तुर्य छठ धर प्यार जी। अगीकार करीने विचरै. हिव पारण अधिकार जी।।
- ३६ भूमि आतापन थकी वली ने, वल्कल पहिरी तेह जी। इम जिम प्रथम पारणे भाख्यो, तिम इहा सर्व कहेह जी ॥
- ४० णवर उत्तर दिशि जल छाटै, वेसमण महाराय जी। ्ञेप तिमज जाव अतिथि पूजने, करै पारणो ताय जी ।।
- ४१ ढाल भली दोयसौ गुणतीसमी, भिक्षु भारीमाल ऋपिराय जी। सपित दोय सौ वीस अज्जा मूनि, 'जय-जश' हरष सवाय जी ।।

- ३१ वलिवइस्सदेवं करेइ, करेता अतिहिपूयं करेइ, करेता तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेति ।
  - (श० ११।६४)
  - 'वलिवइस्सदेव करेइ' ति वलिना वैश्वानरं पूजयती-, त्यर्थ. 'अतिहिपूय करेइ' त्ति अतिथे. — आगन्तुकस्य पूजा करोतीति । (बृ० प० ५२०)
- ३२ तए ण से सिवे रायरिसी दोच्च छट्ठक्खमण उव-सपज्जित्ताण विहरइ। (श० ११।६५) तए ण से सिवे रायरिसी दोच्चे छट्टक्खमणपारणगिस
- ३३ आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता एव जहा पढमपारणग
- ३४ नवर (स॰ पा॰) दाहिणग दिस पोक्खेइ, दाहिणाए दिसाए जमे महाराया ' 'सेस त चेव जाव तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेड । (श० ११।६६)
- ३५ तए ण से सिवे रायरिसी तच्चे छट्टक्खमण उव-सपज्जित्ताण विहरइ। (श० ११।६७) तए ण से सिवे रायरिसी तच्च छट्ठक्खमणपारणगसि
- ३६,३७ आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वाग-लवत्यनियत्थे '--सेस त चेव नवर (स० पा०) पच्चित्थम दिस पोक्खेइ, पच्चित्थमाए दिसाए वरुणे महाराया पत्थाणे पत्थिय अभिरक्ख सिव रायरिसि सेस त चेव जाव तओ पच्छा अप्पणा आहार-माहारेइ। (श० ११।६८)
- ३८ तए ण से सिवे रायरिसी चउत्थ छट्ठक्खमण उव-सपज्जित्ताणं विहरइ। (श० ११।६६) तए ण से सिवे रायरिसी चउत्थे छट्टक्खमणपारण-गसि
- ३६,४० आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागल-वत्यनियत्थे एव त चेव नवर (स॰ पा॰) उत्तरदिस पोक्खेइ, उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्थाणे पत्थिय अभिरक्खं सिव रायरिसि, सेस त चेव जाव तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ।

(भ० ११।७०)

#### दूहा

- १. तिण अवसर गिवराज ऋषि, छठ-छठ अतर रहित । दिशा चक्रवाले करी, जाव आतापन सहित ॥
- २ इम तपसा करता छता, प्रकृति भद्र करि ताय। प्रकृत स्वभावे विनय करि, पतली च्यार कपाय।।
- उ विल मृदु मार्दव गुण करि, विनय करीने जान। प्रतिपत्व वचन अर्छ इहा, तज्या मच्छर ने मान।।
- ४ कदाचित ते अन्यदा, तदावरणी कर्म। तेहने क्षय उपशम करी, थई आतमा नर्म॥
- प्रभला अर्थ ने जाणवा, विचारवाज तदर्थ। सन्मृत्व चेप्टावत ने, ए ईहा नो अर्थ।।
- ६. अर्थे अपोह तणो इसो, वर्म घ्यान चितवत। वीजा पक्ष रहित ते, निर्णय करिवो तत॥
- ७ मग्गण समुच्चय घर्म नी, आलोचना करंत। अधिक घर्म आलोचना, तेह गवेपण हुत॥
- द. इम करता नै ऊपनो, विभग नाम अज्ञान'। ते विभंग उपना छता, देखे इह विघ जान॥
- ह. सप्त द्वीप इहलोक में, सप्त समुद्र सुतंत।
   जाणे नहिं देखें नहिं, सात समुद्र उपरत।।
  - \*जिव-अभिलापी राजऋपी जिव ॥ (श्रुपद)
- १०. तिण अवसर जिवराजऋपी ने, उपनां एहवा अध्यवसाय। अतिशेप ज्ञान दर्शन मुभ उपनो, अतिशेप समस्त कहाय॥
- ११ इम निञ्चै इण लोक विषे छै, द्वीप समुद्र सात-सात। इण उपरत विच्छेद गया छै, अधिक नही आख्यात॥
- १२ इम चितव आताप भूमि थी, पाछो वली नै ताह्यो। वल्कल छाल ना वस्त्र पहिरी नै, पोता नै ओरै आयो।।
- १३. वहु लोह पात्र कडाही ने कुडछा, यावत भंड कहायो। वंशमय भाजन कावड ग्रही ने,
  - आयो नगर हत्यिणापुर माह्यो ॥
- १४ तापस नो मठ छै तिहा, आवै भड स्थापन कर ताय। नगर हित्थणापुर त्रिक सिंघाडक, जाव महापथ माय।।

- तए ण तम्म निवम्म रायरिनिस्म छ्ट्ठछ्ट्ठेण अणिक्यित्तंणं दिमाचक्कवानेण जाव (म० पा०) अ।यावेमाणस्म
- २ पगद्रभद्दयाए'''पगद्रपयणुकोहमाणमायान्तोभयाए
- ३ मिउमद्वसपन्नयाए'''विणीययाए
- ४ अण्णया कयाड तयावरणिज्जाण कम्माण ग्रंकोवसमेण
- ५- ईहापूहमग्गणगवेमण करेमाणम्म विव्मगे नाम नाणे समुप्पन्ने । मे ण तेण विव्मगनाणेण ममुप्पन्नेण पार्मात ।

- ह अस्सि लोए मत्त दीवे सत्त ममुद्दं, तेण पर न जाणइ न पासइ। (ग ११।७१)
- १०. तए ण तस्म सिवस्म रायरिमिस्स अयमेयारूवे अज्मतियए "समुप्पिज्जित्वा—अत्वि ण ममं अतिमेसे नाणदंगणे ममुप्पन्ने
- ११ एव खलु अस्मि लोए मत्त दीवा मत्त समुद्दा, तेण पर वोच्छिन्ता दीवा य समुद्दा य—
- १२ एव सपेहेइ, सपेहेता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्यिनयत्ये जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ।
- १३ सुबहु लोही-लोहकडाह-कडच्छुय जाव (स० पा०) भडग किढिण सकाइयग च गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव हत्यिणापुरे नगरे
- १४ जेणेव तावसावसहे तेणेव जवागच्छइ, जवागच्छिता भंडनिक्सेव करेइ, करेत्ता हित्यणापुरे नगरे सिंघाडग तिग जाव (स॰पा॰) पहेसु

<sup>\*</sup>लय: मंदोदरी मांदो पति पेखी

१ अंगसुत्ताणि भाग २ ण० ११।७१ मे मूल पाठ 'नाणे' है। 'अण्णाणे' पाठान्तर मे रखा गया है।

- १५. वहु जन आगल एम परूपै, अहो देवानुप्रिया । जी। अतिशेष ज्ञान दर्शन मुक्त उपनो, लिह पूर्ण संपति ताजी।। १६. इम निश्चै इण लोक विषे छै, द्वीपोदिघ सात-सात। इण उपरत विच्छेद गया छ, अधिक नही आख्यात।। १७. शिव राजऋषि पे वचन ए सुणने, नगर हत्थिणापुर माहि। सिघाडक यावत महा पथे, वहु लोक वदै माहोमाहि।।
- १८. इम निश्चै हे देवानुप्रिया ! शिव राजऋपि इम भाखै। पूर्ण ज्ञान दर्शन मुक्त उपनो, सात-सात द्वीपोदिघ दाखै॥
- १६ सात द्वीप ने सात समुद्र थी, अधिक नहीं लोक माहि। किण रीते इम एह वारता, मन्ये वितर्के ताहि।।
- २० तिण काले तिण समय विषे, हिवे समवसरचा वर्द्धमान । परषद वीर वदी सुण वाणी, पहुती निज-निज स्थान ।।
- २१. तिण काले तिण समय विषे, जे भगवत श्री महावीर ! तास जेष्ठ शिष्य अंतेवासी, इद्रभूती गुण-हीर !! २२ दूजा शतक ने पचमुदेशे, जेम कह्यो तिम के'णो ! आज्ञा ले गोचरी फिरता नगर मे, साभलिया जन वेणो !!
- २३. वहु जन इम कहै जाव परूप, शिवराजऋषी इम भाख । अपनो पूर्ण ज्ञान दर्शण मुक्त, त चेव पूर्ववत दाखें ॥ २४. जाव सप्त-सप्त द्वीप समुद्र थी, अधिका नही लोक मांय । किण रीते ए बात वितर्के, ए लोक तणी सुण वाय ॥
- २५ गोतम ने मन श्रद्धा प्रवर्त्ती, जेम निर्ग्रथ उद्देश। द्वितीय शतक ने पचमुद्देशे, आख्यो तेम कहेस।। २६. वीर कने आय प्रक्न पूछे, इम, जन करे पुर में वात। शिव राजऋषि कहै पूर्ण ज्ञान मुक्त, लोक में द्वीपोदिष्य सात-सात।।

२७. ते किम हे भगवत । बात ए ? दोय सौ नै तीसमी ढाल। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, 'जय-जश' मगलमाल।

- १५ बहुजणस्स एवमाइनखइ जाव एवं परूवेइ—अत्थि ण देवाणुष्पिया । मम अतिसेस नाणदंसणे समुप्पन्ने
- १६ एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य । (११।७२)
- १७ तए ण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हित्यणापुरे नगरे सिघाडगितग जाव (स० पा०) पहेसु वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खड जाव परूवेइ—
- १८ एव खलु देवाणुप्पिया । सिवे रायरिसी एवमाडक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया । मम अतिसेमे नाणदसणे समुप्पन्ने एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा
- १६ तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य । से कहमेय मन्ने एव<sup>?</sup> (श० ११।७३) अत्र मन्येशव्दो वितर्कार्थ (वृ० प० ५२०)
- २० तेण कालेण तेण समएण सामी समोसढं परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ परिसा पडिगया।

(श० ११।७४)

- २१ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूई नाम अणगारे
- २२ जहा वितियसए नियठुद्देसए (भ० २।१०६-१०६) जाव घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजण सद्द निसामेइ 'वितियसए नियठुद्देसए' त्ति -द्वितीयशते पञ्चमोद्देशक

'वितियसए नियठुद्दसए क्ति बिह्नतियशत पञ्चमाद्दशक इत्यर्थ (वृ० प० ५२०)

- २३,२४ बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—अत्थि ण देवाणु-प्पिया । त चेव जाव (स० पा०) वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य । में कहमेय मन्ने एव ? (श० ११।७५)
- २५,२६ तए ण भगव गोयमे वहुजणस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म जायसङ्ढे जहा नियठुद्देसए (भ० २।११०) जाव (स० पा०) समण भगव महावीर एव वदासी वहुजणमद्द निसामेमि—एव खलु देवाणुष्पया । सिवे रायिरसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुष्पया । मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने एव खलु अस्सि लोए सत्तदीवा सत्त समुद्दा, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। (श० ११।७६)

२७ से कहमेय भते । एव ?

## दूहा

- १. इंद्रभूति इम पूछिया, तव वोले जगनाथ। वहु जन मांहोमाही कहै, तिमज सर्व अवदात।।
- २. छठ-छठ आतापन छना, उपनी विभंग अज्ञान। सप्त द्वीप देखें अछै, सप्त उदिव पिण जान॥
- ३. तिणस् ते जाणै अछै, मुभ सपूरण ज्ञान । द्वीप समुद्र अधिका नहीं, लोक इतोज पिछान ॥
- ४ जाव भट निक्षेप करि, हथिणापुरे सिघाट। तिमज द्विपोदिंघ सप्त थी, उपरत विच्छेद घार॥
- तिण अवसर वहु जन तदा, शिव राजऋिप रै पास।
   ए अर्थ निसुणी करी, दिल मे वारी तास।
- ६ तिमज सप्त-सप्त उपरत जे, द्वीपोदिघ विच्छेद। इम जन भाखें ते मिथ्या, ए जिन वचन सवेद।।
- ७. हू पिण गोयम । इम कहू, इम निब्र्च करिताय। जंबूद्वीपज आदि दे, द्वीप असम्ब कहाय।।
- लवण आदि दे समुद्र छै, ते सहु ना सस्थान ।
   एक सरीखा बाटला, सर्व वृत्त पहिछान ।
- ६. विधि अनेक विस्तार थी, दुगुण-दुगुण विस्तार। इम जिम जीवाभिगम मे, आख्यो ए अधिकार।।
- १०. जाव स्वयभूरमण दिघ, तिरिछे लोके जान। असस्यात द्वीपोदिघ, हे श्रमण आयुष्मान!

वा०—एव जहा जीवाभिगमे उम एणे वचने करी जे कह्यु ते इम—
दुगुणादुगुणं पड्ष्पाएमाणा पिवत्यरमाणा श्रीभाममाण-वीड्या कहिता अवभारामान वीची ते शोभायमान तरगा, समुद्र अपेक्षाय ए विशेषण । ब्रहुउष्पलकुमुद
निल्णमुभगमोगिधयपुटरीयमहापुटरीयमयपत्तसहस्सपत्तमयसहस्मपत्तपफुल्लकेसरोववेया—घणा निकमित उत्पलादिक ना जे केशरा तिण करिके मयुक्त । जे
तिहा उत्पल ते नीलोत्पलादिक, कुमुद ते चंद्रविकाशी, पुटरीक ते धवला, बली
शेष पद ते लोक रहि थी जाणवा । पत्तिय-पत्तेय पडमवरवेड्या परिविधत्ता पत्तेयपत्तेयं वणसटपरिविखत्तत्ति ।

११. छै प्रभु ! जंबूद्वीप में, द्रव्य तिके पहिछाण। वर्णे करी सहीत पिण, वर्ण रहित पिण जाण?

- १-3 गोयमादि । समणे भगव महाबोरे भगव गोयम

  गव वयागी—जण्ण गोयमा ! गव यनु ग्यम्म

  गिवस्म रायरिमिम्म छट्ठछट्ठेणं अणिनियत्तेण...

  आयावेमाणम्म...विष्णो नाम नाणे समुष्यन्ते, त

  नेव सब्ब भाणियव्य ।
- ४ जाव भंडनिक्सेव करेड, करेत्ता हत्विणापुरे नगरे मिषाटग एव खलु अस्मि नोए मत्त दीवा मत्त ममुद्दा तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य।
- ५ तए णं तस्य निवन्स रायरिनिस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्मः
- ६ एव खलु अन्मि लोए मत्त दीवा मत्त ममुद्दा तेण पर बोच्छिन्ना दीवा य नमुद्दा य तण्ण मिच्छा ।
- ७ अह पुण गोयमा ! एवमाङक्यामि जाव पत्त्वेमि— एव छलु जंबुहोवादीया दीवा ।
- प्तवणादीया समुद्दा मठाणओ एगविहिविहाणा 'ग्गविहिविहाण' त्ति एकेन विधिना—प्रकारेण विधान व्यवस्थान येथा ते तथा नर्वेषां वृत्तत्वात्

(वृ० प० ५२०)

- ह. वित्यारओ अणेगविहिविहाणा एव जहा जीवाभिगमे
   (३।२५६)
   'वित्यारओ अणेगविहिविहाण' ति द्विगुर्णद्विगुण
   विन्तारत्वात्तेपामिति। (वृ० प० ५२०)
- १० जाव सयभूरमणपञ्जवमाणा अस्सि तिरियलोए असग्पेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो ! (श० ११।७७)
- वा॰—एव जहा जीवाभिगमे उत्यनेन यदिह सूचित तदिद—
  'दुगुणादुगुण पडुप्पाएमाणा पितत्यरमाणा कोभासमाणवीडया' अवमाममानविचय घोभमानतरगा,
  ममुद्रापेक्षमिद विदेषण, वहुप्पलकुमुदनिलणमुभगसोगिधयपुडरीयमहापुडरीयसयपत्तमहस्सपत्तसयसहस्सपत्तपफुलकेमरोववेया' वहूनामुत्पलादीना प्रफुल्लाना—
  विकमिताना यानि केणराणि तैष्पचिता.— मयुक्ता
  ये ते तथा, तत्रोत्पलानि— नीलोत्पलादीनि कुमुदानि—
  चन्द्रवोध्यानि पुण्डरीकाणि— सितानि वेषपदानि तु
  रुद्धिगम्यानि 'पत्तेय पत्तेय पर्वय वष्ठमवरवेइयापरिविद्यत्ता।
  पत्तेय पत्तेय वणसडपरिविद्यत्त' ति।

(वृ० प० ५२०,५२१)

११. अत्य ण भते । जबुद्दीवे दीवे दव्वाइ—सवण्णाइ पि अवण्णाइ पि

४१० भगवती-जोड

- १२ गंचे करी सहीत पिण, गंच रहित पिण ताय। फुन रस करी सहीत पिण, विल रस रहित कहाय? १३ फर्कों करी सहीत पिण, फर्का रहित पिण होय। अन्नमन्न माहो माहि ते, गाढा वध्या सोय?
- १४. फश्या माहोमाहि ते, जावत माहोमाहि। रहै जुसमभर घटपणे, प्रश्न गोयम ए ताहि?
- १५ हंता अत्थि जिन कहै, पुद्गल वर्ण सहीत। घर्म अधर्मास्ति प्रमुख, वर्णादिके रहीत।।
- १६ छै प्रभु ! लवण समुद्र मे, द्रव्य वर्णादि सहीत ? एव पुरवली परे, इमज घातकी रीत ॥
- १७. इम यावत सयभूरमण, समुद्र लग कहिवाय। हता अत्थि जिन कहै, पूरवली पर न्याय॥

\*वाणी प्रभु नी वारू हो ॥ (घ्रुपद)

- १८ तिण अवसर महा परपदा, साभल जिन वाणी हो। हिये घार हरखी घणी, विल सतोपाणी हो।।
- १६ वीर प्रभुप्रति वदनै, करिनमण सुखोती हो। जे दिशि थी आवी हुती, तेहिज दिशि प्होती हो।।
- २० तिण अवसर हित्थणापुरे, सिघाडग आखे हो। यावत मोटा पथ में, वहु जन इम भावै हो।।
- २१ जे भणी अहो देवानुप्रिया ! शिव राजऋषि इम वोले हो। पूरण दरगण ज्ञान ते, मुभ थयो अतोले हो।।
- २२. सप्त द्वीप इह लोक मे, दिघ सातज होई हो। एहथी अधिका की नही, ए अर्थ समर्थ न कोई हो।।
- २३ भगवत श्री महावीर जी, इम भाखे वाणी हो। छठ-छठ तप शिवराजऋषि, करता पहिछाणी हो।।
- २४. आतापन लेता छता, भद्र विनीत स्वभावे हो। पतला क्रोधादिक चिछ, मृद्र मार्दव भावे हो॥
- २५ कदा अन्यदा तेहनै, तदावरणी कर्मो हो। तेहनै क्षयोपशम करी, आतम थई नर्मो हो॥
- २६ ईहापोह मग्गणा, गवेपणा करतो हो। विभंग अज्ञान समुप्पनो, द्वीप सप्त देखतो हो।।
- २७ देखें सप्तोदिध वली, नहि अधिक विनाणो हो।
- तिण मन माहै जाणियो, मुभ पूरण नाणो हो।।
  २८ इम चितव आतापना भूमि थकी विल ताहि हो।
  वल्कल वस्त्र पहीर नै, निज ओरें आई हो।।

- १२ सगंधाड पि लगधाउँ पि, मरनाड पि लरसाइ पि,
- १३ मफासाइं पि अफासाइ पि, अण्णमण्णवद्धाइं 'अन्नमन्नवद्धाः' ति परम्परेण गाटाण्लेपाणि

(वृ० प० ५२१)

- १४ अण्णमण्णपुट्टाङ जाव (मं॰ पा॰) घडताए चिट्ठति ?
- १५ हता अस्य । (ण० ११।७८) 'सवन्नाइपि' त्ति पुद्गलद्रव्याणि 'अवन्नाइपि' त्ति धर्मास्तिकायादीनि (वृ० प० ५२१)
- १६,१७ अत्यि ण भते । लवणसमुद्दे द्व्वाइ—मवण्णाउ पि ( ११।७६) अत्य ण भते । धायडमडे दीवे द्व्वाइ—सवण्णाइ पि ( ११।८०) अत्य ण भते । सयभूरमणसमुद्दे द्व्वाड : :ह्ता अत्य । ( ११।८१)
- १८ तए ण मा महितमहाितया महच्चपिरमा समणस्स भगवओ महावीरम्म अतिए एयमट्ठ मोच्चा निसम्म हट्टतुट्टा
- १६. समण भगव महावीर वदड नमसङ, वदित्ता नम-सित्ता जामेव दिम पाउच्भूया तामेव दिम पटिगया। (श. ११।८२)
- २०. तए ण हिंदयणापुरे नगरे मिघाटग-तिग जाव (म० पा०) पहेमु बहुजणो अण्णमण्णम्म एवमाटास्यङ ।
- २१ जण्ण देवाणुष्पिया ! सिवे रायरिमी एवमाङाग्यङ जाव परूवेइ—अस्यि ण देवाणुष्पिया ! ममं अतिमेमे नाणदसणे समुष्पन्ते ।
- २२. एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा गत्त ममुद्दा तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य । त नो प्रणट्ठे समट्ठे ।
- २३-२६ समणे भगव महावीरे एवमाङक्यः जाव परवेद-एव छलु एयम्स सिवस्म रायरिनिस्म छट्ठछट्ठेण त चेव जाव भडनिक्सेवं करेइ।

- २६ लोह पात्रादिक भंड प्रति, कावड़ नैं लेई हो। हित्थणापुर तापस मठे, भंड निक्षेप करेई हो।।
- ३० हित्थणापुर शृगाटके, यावत महापथो हो। पूर्ण दर्शण ज्ञान मुफ्त, उपनो है ततो हो।।
- ३१. सप्त-सप्त द्वीपोदिंघ, अधिका निहं कोई हो। शिव वच सुण जन पिण कहै, ते मिथ्या जोई हो।।
- ३२ भगवत श्री महावीर जी, भाग्वै डम वाणी हो। जंवृद्वीप नवणोदिंघ, आदि देई पहिछाणी हो।।
- ३३. तिमज जाव पूरव परे, द्वीप असंख कहतो हो। विल असल्याता उदिष, हे श्रमण आउखावतो हो।।
- ३४. तिण अवसर शिव राजऋषि, वहु जन पे ताह्यो हो। एह अर्थ निसुणी करी, घारी हिय माह्यो हो॥
- ३५ एहनों उत्तर स्यू हुई ? ए उपनी शका हो। कोई पे उत्तर मिले, ए वांछा कखा हो।।
- ३६. उत्तर एदीघां थका, पर अन्य पिछाणी हो । मानै कै मानै नही, ए वितिगिच्छा जाणी हो ॥
- ३७ मित भेद पाम्यो वलि, ते विश्रम कहिये हो। हं क्यू ही जाणू नहीं, कलुप भाव इम लहिये हो।।
- ३८. राजऋिप शिव नो तदा, सिकत काक्षित किण हो। जाव कलुप पाम्यां तणो, गयो विभंग ततिखण हो।।
- ३६ शिव राजऋपि ने ऊपनां, एहवा अध्यवसायो हो। भगवत श्री महावीर जी, तपधारी ताह्यो हो॥
- ४० आदि करण जिन घर्म नी, तीरथ तेह करता हो। जाव सर्व जानी प्रभु, सर्व वस्तु देखता हो।।
- ४१. धर्म चक्र आकाश गत, जाव महस्राव मांही हो। नियम अभिग्रह सहित जिन, यावत विचरे त्याही हो।।
- ४२ महाफल निश्चे ते भणी, तथा नाम अरिहतो हो। नाम गोत्र भगवत नो, सुणिया लाभ अत्यतो हो।।
- ४३ जिम उववाड में कह्यं, तेम इहा पिण कहिये हो। जाव अर्थ ग्रहिवा तणो, फल अधिकेरो लहिये हो।।
- ४४. हू जावू तिण कारणे, वीर प्रभु ने वदुहो। जावत हू सेवा करू, भाव पाप निकदु हो।।
- ४५ ए सेवा मुफ इह भवे, परभव हित सुख नै हो। क्षम शिव ने अनुगामिका, होस्यै प्रत्यख नै हो।।
- ४६ एम विचारी आवियो, तापस मठ तामो हो। घणा लोह पात्रादिके, जाव कावड ग्रही आमो हो।।
- ४७. तापस नां स्थानक थकी, वाहिर नीकरियो हो। विभग अज्ञाने रहित ते, पुर मध्य थइसचरियो हो।।

- ३०. हित्यणापुरे नगरे निघाटम जाव (म० पा०)पहेमु ... मम अतिसेमे नाणदमणे ममुष्यन्ते
- ३१. एव खलु अस्ति लोए मत्त दीवा मन ममुहा, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य ममुहा य । तए ण तस्म मिवन्म रायरिमिम्म अतिय एयमट्ठ मोच्चा निमम्म जाव तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुहा य तण्ण मिच्छा,
- ३२. समणे भगव महावीरे एवमाउक्यङ—एव खलु जंबुदीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा
- ३३. त चेव जाय अमलेज्जा दीयममुद्दा पण्णत्ता ममणा-उसी । (ण ११।८३)
- ३४ तए ण में सिवे रायिंग्मी बहुजणम्म अतियं एयमट्ठ मोच्चा निसम्म
- ३५. सकिए कियए
- ३६. वितिगिच्छिए
- ३७. भेदसमावन्ने कलुमसमावन्ने जाए यावि होत्या
- ३८. तए ण तस्स सिवस्स रायरिसिस्म सिकयस्स किय-यस्स जाव (स॰ पा॰) कलुमसमावन्नम्म से विद्भगे नाणे खिप्पामेव परिवटिए। (ण ११।८४)
- ३६ तए णं तस्स सिवम्म रायरिनिम्म अयभेयास्वे अज्झित्यए .......समुष्पिज्जित्या—एव खलु ममणे भगव महावीरे
- ४०. तित्यगरे आदिगरे जाव मन्वण्णू मन्वदरिसी
- ४१. अ।गासगएण चक्केण जाव सहसववणे उज्जाणे अहापडिस्व जाव (म. पा) विहरइ।
- ४२ त महप्फल खलु तहारूवाण अरहंताण भगवताण नामगीयस्स वि सवणयाए
- ४३ जहा ओववाइए (सू॰ ५२) जाव गहणयाए (पा॰ टि॰)
- ४४ तं गच्छामि ण समण भगव महावीर वदामि जाव पज्जुवासामि
- ४५ एय णे इहभवे य परभवे य हियाए मुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ
- ४६. ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेता जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छड 'सुवहु लोही-लोहकडाह जाव (स॰ पा॰) किडिण-सकाइयग च गेण्हड ।
- ४७ तावसावसहाओ पिडनिक्खमइ, पिडनिक्खिमत्ता पिड-विडयिविक्भगे हित्यणापुर नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ।

- ४८ जिहां सहस्रांय वन अछै, जिहां प्रभु तिहां आवे हो। तीन वार वंदना करै, विल शीस नमाये हो।।
- ४६ निहं अति नेडो हूकडो, यावत वे कर जोड़ी हो। सेव कर स्वामी तणी, निज मान मरोडी हो॥
- ५०. वीर प्रभू तिण अवसरे, शिव नामा नृप ऋप ने हो। धर्म देशना धुन करी, दाखै नहा परपद ने हो।।
- ५१. दोय घर्म देखाविया, शिवपुर ना सावक हो। यावत बेहु आराधिया, आज्ञा तणो आराघक हो।।
- ५२ रायऋपि जिव तिण समे, वीर प्रभु नी वाणी हो। धर्म मुणी हरस्यो घणो, खधक जिम जाणी हो।।
- ५३. जाव ईकाणे आयने, नोह पात्र प्रमुख ने हो।
  एकाते न्हाखै सह, यावत विल कावड ने हो।।
- ५४. पच मुप्टि लोचन कियो, पोतैहीज पिछाणी हो। वीर प्रभु प्रति वंदनै, वोलै वर वाणी हो॥
- ४५ ऋपभदत्तं सजम लियो, तिमहिज चारित्र नीघो हो। अग इग्यार भणे मुनि, तिमहिज प्रसीघो हो।।
- प्रदः तिणहिज विध कहिवो सहु, जाव सर्व दुख अतो हो। महामुनी मुक्ते गया, जिव ऋपिराय महंतो हो।।

## द्रह

- ५७ राजऋषी शिव ने इहा, सिद्धि परूपी सोय। ते सघयणादिक करी, आगल हिव अवलोय।।
- प्र= \*हे भगवत ! इसो कही, गोतम भगवतो हो। वीर प्रत वदन करी, शिर नाम वदतो हो।।
- ५६ प्रभृ । जीव वहु सीभता, किसे सघयण सीभै हो ? वच्चऋपभ नाराच ते, जिन कहै मुक्ति लहीजें हो।।
- ६० इम जिम उववाइ विषे, आख्यो जिम कहिये हो। धुर सघयण संठाण पट, ज्ञिव पद ते लहिये हो।।
- ६१ जघन्य सात कर ऊचपणे, धनुष्य पाचसै जाणी हो। उत्कृष्टी अवगाहना, सीभै भव्य प्राणी हो।।
- ६२. अष्ट वर्ष जाभो सही, जघन्य आयु सिद्ध थावे हो। गोड पूर्व उत्कृष्ट ही, शिव सुख विलसावे हो।।
- ६३. रत्नप्रभा प्रमुख प्रथ्वी, सींघर्मादि विमान हो। सिद्धशिला हेठे वलि, न वर्म निद्र सुज्ञान हो।।

- ४८. जेणेव महमवयणे उज्जाणे जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छः, उवागच्छिता समण भगव महावीर तिक्युत्तो वदः नमंगः
- ४६. नच्चासन्ने नातिदूरे जाव (स० पा०) पजलिकडे पज्जुवासङ। (श० ११।८५)
- ५० तए ण समणे भगव महावीरे निवस्स रायरिनिन्स तीमे य महतिमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेट
- ५१ जाव आणाए बाराहए भवड । (ण० ११।८६)
- ५२ तए ण में मिवे रायरिगी समणस्य भगवओ महावीर-स्म अतिय धम्म मोच्चा निसम्म जहा खदओ (भ० २।५२)
- ५३ जाव उत्तरपुरित्यम दिमीभाग अवक्कमङ, अवक्कम-मित्ता सुबहु लोही लोहकटाह जाव (स० पा०) किढिण-सकाइयगं च एगते एडड
- ५४ सयमेव पचमुद्विय लोय करेड, करेता नमण भगव महावीर वद्य नममइ ः
- ५५,५६ एव जहेव उसभदत्तो (भ० ६।१५१) तहेव पव्यडओ तहेव एक्कारम अगाड अहिज्जड तहेव सव्य जाव सव्यदुक्खप्पहीणे। (ग० ११।८७)
- ५७. अनन्तर शिवराजर्षे मिद्धिम्काः ता न महनना-दिभिनिरूपयन्निदमाह— (वृ० प० ५२१)
- ५८ भतेति । भगव गोयमे ममण भगव महावीर वदः नमंमइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयामी—
- ५६ जीवा ण भते । निज्झमाणा क्यरिम्म समयणे सिज्झति ? गोयमा ! वज्रोमभणारायसम्यणे सिज्झति ।
- ६० एव जहेव भोववाइए (सू० १८४-१६४) तहेव । सघयणं संठाण तत्र सस्याने पण्णा सस्थानानामन्यतरस्मिन् निद्-यन्ति । (वृ० प० ५२१)
- ६१. उच्चत उच्चत्वे तु जघन्यतः सप्तरिनप्रमाणे उत्कृप्टतम्तु पंचधनु शतके (वृ० प० ५२१)
- ६२. ष्ट्राज्य च आयुगि पुनर्जंपन्यतः मातिरेकाण्टवपंप्रमाणे उत्रुष्ट-न्तु पूर्वंकोटोमाने (यु० प० ५२१)
- ६३. परिवमणा
  परिवमना पुनरेवं—रत्नप्रमादिपृथिवीना मौधर्मादीना
  नेपत्प्राग्भारान्ताना क्षेत्रविदेशाणामधो न परिव-सन्ति सिद्धाः (यु० प० ४२१)

<sup>&</sup>lt;sup>4</sup>लम् : सीता रामे राची हो

- ६४ सर्वार्थसिद्ध ऊपरे, शिखर अग्र थी जाणी हो। वार योजन ऊची अछै, सिद्धिशला पहिछाणी हो।।
- ६५ लाख पैताली योजनु, लावी चौडी कहियै हो। ऊपर इक योजन तिहा, लोकातज लहिये हो।।
- ६६ ते योजन नो ऊर्ध्व जे, गाऊ एक कहै छै हो। तेहना छठा भाग मे, सह सिद्ध रहै छै हो।।
- ६७. इम पूर्व जे आखिया, संघयणादिक द्वार हो। सिद्धिगडिया अनुक्रमे, सिद्ध तणो अधिकार हो।।
- ६८. सिद्ध वसै त्या लग इहां, कह्यो लेश थी सागै हो। पिहहया सिद्धा किंह, इत्यादिक आगै हो।।
- ६६ जावत वाधा रहित ते, सिद्धा सुख अनुभवै हो। सेव भते । इह विधे, गोतमजी कहवै हो।।
- ७०. वेसी ने इकतीसमी, आखी ढाल अमदा हो। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी,

'जय-जश' सुख आनंदा हो ॥ एकादशयते नवमोद्देशकार्थः ॥११॥६॥

ढाल: २३२

# दूहा

१ नवम उद्देशक श्रत में, लोकांते सिद्धवास ।
ते माटै दगमें हिवे, लोक स्वरूप अभ्यास ।।
२ नगर राजगृह ने विपे, यावत गोतम स्वाम ।
वीर प्रते वंदी करी, इम वोले जिर नाम ॥

\*हिये घर रे, श्री प्रभुजी ना वचन अगीकर रे । (श्रुपट)
३ कतिविध लोक कह्यो भगवते । जिन कहै च्यार प्रकार ।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव ए, विल शिष्य पूछे सार ॥

वा०—'दव्वओ लोए' ति द्रव्य थकी लोक वे प्रकारे—आगम थकी अने नीआगम थकी । तिहा आगम थकी द्रव्य लोक ते लोक शब्द ना अर्थ नों जाण, ते लोक शब्द ना अर्थ ने विषे उपयोग रहित हुवै इत्यर्थ । अनुपयोगो द्रव्य इति वचनात्। उपयोग-रहित द्रव्य, एहवु कह्यु छै। ते वचन थकी लोक शब्द ना अर्थ नो जाण छै, पिण तेहने विषे उपयोग नहीं, ते माटै तेहने द्रव्य लोक

- ६४ किन्तु सर्वार्थसिद्धमहाविमानग्योपरितनारस्तूपिकाग्रा-दूर्ध्व द्वादश योजनानि व्यतिक्रम्येपस्त्राग्भारा नाम पृथिवी। (वृ० प० ५२१)
- ६५ पचचत्वारिंशद्योजनलक्षप्रमाणाऽऽयामविष्कम्भाभ्या
  .... योजने लोकान्तो भवति (वृ० प० ५२१)
- ६६ तस्य च योजनस्योपरितनगव्यूतोपरितनपड्भागे सिद्धा परिवसन्तीति (वृ० प० ५२१)
- ६७ एव सिद्धिगडिया निरवसेसा भाणियव्वा एवमिति— पूर्वोक्तमहननादिद्वारनिरूपणक्रमेण 'सिद्धि-गण्डिका' सिद्धिस्वरूपप्रतिपादनपरा ।

(वृ०प० ५२१)

- ६८ इयं च परिवसनद्वार यावदर्थलेशतो दिशिता, तत्पर-तस्त्वेच 'किह् पिंडह्या सिद्धाः : इत्यादिका ...... (व० प० ५२१)
- ६६ जाव— अव्वावाह सोवख अणुहोति मामय सिद्धा । (श० ११।५५) ७०. मेव भते <sup>|</sup> सेव भते <sup>|</sup> ति । (श० ११।५६)

- १ नवमोद्देशकस्यान्ते लोकान्ते सिद्धपरिवसनोक्तेत्यतो लोकस्वरूपमेव दशमे प्राह— (वृ० प० ५२१)
- २ रायगिहे जाव एव वयासी---
- ३ कितिबिहे ण भते । लोए पण्णत्ते ? गोयमा । चडिव्बहे लोए पण्णत्ते, त जहा—दव्बलोए खेत्तलोए काललोए भावलोए । (श० ११।६०) बा०—'दव्बलोए' ति द्रव्यलोक आगमतो नोआगमतश्च तत्रागमतो द्रव्यलोको लोकशब्दार्थज्ञरतत्रानुपयुक्त 'अनुपयोगो द्रव्य' मिति वचनात्

<sup>\*</sup>लय: तु चामड़ा री पुतली! मजन कर हे

मगल गव्द आश्रयी द्रव्य नु लक्षण भाष्यकार कहै छै-

अनुपयुक्त कहिता मगल शब्द ना अर्थ ने विषे उपयोग रहित । मगल शब्द नो अनुवासित—भावित एहवो वक्ता आगम थकी द्रव्य मगल कहिये। ज्ञान लब्धि युक्त मगल शब्द ने विषे अनुपयुक्त, इण हेतु थकी आगम थकी द्रव्य मगल कह्यो।

अने नोआगम थकी द्रव्य तीन प्रकारे—जाणक शरीर, भव्य गरीर, जाणक शरीर भव्य शरीर थकी व्यतिरक्त—एव त्रिविध। तिहा लोक शव्द ना अर्थ नो जाण, तेहनो शरीर मृत अवस्था मे ज्ञान अपेक्षा करिक भूत—अतीत काले लोक शव्द ना अर्थ नो जाण हुतो तेणे करी। जिम ए घृत नो घडो हुतो ते घृत काढ्या पर्छ पिण घृत नो घडो कहै। तिम लोक शब्द ना अर्थ नो जाण हुतो, तेहनो ए शरीर छै, ते जाणवावाला नो शरीर द्रव्य रूप। ते भणी जाणक शरीर द्रव्य लोक कहियै। नोआगम थकी द्रव्य लोक नो ए प्रथम भेद। इहा नो शब्द सर्व निपेध ने विषे।

तथा लोक शब्द नो अर्थ जाणस्यै जे जीव, ते जीव नो शरीर चेतन सहित भावि लोकपर्यायपणे करी, मबु घटवत । ए मधु घडो थास्यै । तेहनी परै ए लोक शब्द ना अर्थ नो जाणणहार थास्यै ए भव्यशरीर द्रव्य लोक । नो शब्द इहा पिण सर्व निपेधहीज ।

हिनै जाणक शरीर भिवक शरीर थी व्यतिरिक्त द्रव्य लोक किह्यै छै— जीव-अजीव, रूपी-अरूपी, सप्रदेश-अप्रदेश वली नित्य-अनित्य जे द्रव्य छै, ए द्रव्य प्रतै हे शिष्य । तू जाण । इहा पिण नो शव्द सर्व निपेध ने विषे आगम शब्दवाची ज्ञान ने सर्वथा निपेध थकी । इति द्रव्य लोक ।

'खेत्तलोए' त्ति क्षेत्र रूप लोक क्षेत्र लोक । आकाश ना प्रदेश ऊर्द्ध अध अने तिरछा लोक ने विषे अने ज्ञानी जिन सम्यक प्रकारे देखाड्चो ते क्षेत्र प्रते हे शिष्य । तु जाण । इति क्षेत्र लोक ।

'काललोए' ति काल समयादि ते रूप लोक—काल लोक। समय, आव-लिका, मुहूर्त्त, दिवस, अहोरात्र, पख, मास, सवत्सर, जुग, पल्य, सागर, उत्सर्पिणी, पुद्गल परावर्त्तन ए काल लोक।

'भाव लोए' ति भाव लोक वे प्रकार—आगम थकी अने नोआगम थकी। तिहा आगम थकी लोक भव्द ना अर्थ नो जाण ते लोक भव्द ना अर्थ ने विषे उपयोग सिहत। भाव रूप लोक भाव लोक इति। अने नोआगम थकी भाव औदयिकादि, ते रूप लोक भाव लोक।

इहा नो शब्द सर्व निपेध ने विषे अथवा मिश्र वचन । आगम ने ज्ञानपणा थकी क्षायिक क्षायोपश्रमिक ज्ञान स्वरूप भाव विशेष करिके वली मिश्रपणा थकी औदियकादि भाव लोक ने इति ।

४ क्षेत्रलोक प्रभु । किते प्रकारे ? जिन कहै तीन प्रकार। नीचो तिरछो ने विल ऊची, क्षेत्रलोक त्रिहु घार॥ आह च मगल प्रतीत्य द्रव्यलक्षणम् -आगमओऽणुवउत्तो मगलसद्दाणुवासिओ वत्ता ।
तन्नाणलद्धिजुत्तो उ नोवउनोत्ति दव्व ।।
ते नोआगमतस्तु ज्ञश्ररीर-भव्यशरीर-तद्व्यतिरिक्तभेदात् त्रिविध , तत्र लोकशव्दार्थज्ञस्य शरीर मृतावस्य ज्ञानापेक्षया भूतलोकपर्यायतया घृतकुम्भवल्लोक
स च ज्ञशरीररूपो द्रव्यभूतो लोको ज्ञशरीरद्रव्यलोक ,
नोशव्दश्चेह सर्वनिषेधे

तथा लोकशब्दार्थ ज्ञास्यित यस्तस्य शरीर मचेतन भाविलोकभावत्वेन मधुघटवद् भव्यशरीरद्रव्यलोक नोशब्द इहापि सर्वेनिपेध एव

- ज्ञारीरभव्यशरीरव्यतिरिक्तश्च द्रव्यलोको द्रव्याण्येव धर्मास्तिकायादीनि, आह च—
   जीवमजीवे रूविमरूवि सपएसअप्पएसे य ।
   जाणाहि दव्वलोय निच्चमणिच्च च ज दव्व ।।
   इहापि नोशब्द सर्वनिपेधे आगमशब्दवाच्यस्य ज्ञानस्य सर्वथा निपेधात्
- 'खेत्तलोए' ति क्षेत्ररूपो लोक' स च क्षेत्रलोक आह च—
   आगासस्स पएसा उड्ढ च अहे य तिरियलोए य । जाणाहि खेत्तलोय अगतजिणदेसिय सम्म ।।
   'काललोए' ति काल समयादि तद्रूपो लोक काललोक आह च—
   समयावली मुहुत्ता दिवसअहोरत्तपक्खमासा य । सवच्छर जुगपिलया सागरउस्सिप्पिपिरयट्टा ।।
   'भावलोए' ति भावलोको द्वेद्या —आगमतो नोआगमतक्च तत्रागमतो लोकशब्दार्थज्ञस्तत्र चोपयुक्त भावरूपो लोको भावलोक इति नोआगमतस्तु भावा—
   औदियकादयस्तद्रूपो लोको भावलोक ,
   इह नोशब्द सर्वनिपेधे मिश्रवचनो वा आगमस्य ज्ञानत्वात् क्षायिकक्षायोपशमिक ज्ञानस्वरूपभाविव

(वृ० प० ५२३)
४ खेत्तलोए ण भते । कितिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा । तिविहे पण्णत्ते, त जहा —अहेलोयखेत्तलोए तिरियलोयखेत्तलोए, उड्ढलोयखेत्तलोए।
(श० ११।६१)

शेषेण च मिश्रत्वादौदयिकादिभावलोकस्येति ।

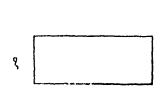
'या॰—इहा अप्ट प्रदेश म्चक, तेहनो हेठलो प्रतर, तेह नीचे नवसी योजन लगे तिर्थंग लोक छ । तिवार पछी नीचे रह्या माटे नीचलो क्षेत्र लोक कहिये, ते साधिक मात राज प्रमाण छ ।

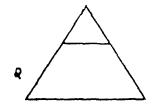
तथा 'तिरिय' ति—हचक नी अपेक्षाए नवसी योजन ऊंची तेह्यी नीचै पिण नवसी योजन—ए अठारैमी योजन मान तिर्यगरूपपणा थकी तिर्यग लोक क्षेत्र लोक कहियै।

तथा 'उद्ढत्ति'—ितियंग लोक ने ऊपर देमोन सात राज प्रमाण ऊर्द्ध भागे वर्ते ते माटे ऊर्द्धलोक क्षेत्रलोक कहिये।

अथवा जिण लोक ने विषे क्षेत्र नां स्वभाव थकीज द्रव्या नो अगुभ परिणाम छै तेहथी—अधोलोक क्षेत्र लोक । तथा मध्यम अनुभाव क्षेत्र अति ग्रुभ नहीं, अति अगुभ नहीं, तदूप लोक ते तिर्यंक् लोक क्षेत्र लोक । तथा द्रव्य नो ग्रुभ परिणाम घणो जिहा ते ऊर्द्ध लोक क्षेत्र लोक कहियें।

- ४. प्रभु । अयोलोक खित्तलोक कतिविच ? जिन कहै सप्त प्रकार । रत्नप्रभा पृथ्वी यावत तल, सप्तम पृथ्वी घार ॥
- ६.प्रभु ! तिरियलोक खित्तलोक कितविव ? जिन कहे असम्ब प्रकार । जिंवू द्वीप ने जाव, स्वयंभूरमण समुद्र विचार ॥
- ७. प्रभु । ऊर्द्वलोक नित्तलोक कितविघ ? जिन कहै पनर प्रकार । वार कल्प ग्रैवेयक अनुत्तर, सिद्ध जिला मुविचार ॥
- द. अघोलोक प्रभृ । किण संठाणे ? जिन कहै तप्राकार'। अघोमुख जे सरावला ने, सठाणे सुविचार।।
- ह. तिरियलोक प्रभु । किण सठाणे ? जिन कहै भल्लिरि आकार।
   ऊंचपणा थी अल्प कहीजै, तिरछो महाविस्तार।।





वा॰ — उह किलाप्टप्रदेशो रुचकम्तस्य । वाधस्तनप्रत-रम्याधो नवयोजनशतानि यावत्तिर्यग्लोकम्ततः परे-णाधः ग्यितत्वादधोलोक साधिकमप्तरज्जुप्रमाणः 'तिरियलोयसेन्नलोए' ति रुचकापेक्षयाऽत्र उपरि च नव नव योजनशतमानम्तिर्यग्रूपत्वात्तिर्यग्लोक स्तद्रूपः क्षेत्रलोकम्तिर्यग्लोकक्षेत्रलोकः,

'उट्ढलोयमेत्तलोए' नि तिर्यग्लोकस्योपरि देणोनमप्त-रज्जुप्रमाण ऊद्ध्र्यभागवित्तत्वाद्द्ध्वं लोकस्तदूप क्षेत्र-लोक ऊद्ध्वंलोकक्षेत्रलोकः,

अथवाऽध —अशुभ परिणामो बाहुत्येन क्षेत्रानुभावाद् यत्र लोके द्रव्याणामगावधोलोकः, तथा तिर्यङ्— मध्यमानुभाव क्षेत्र नातिशुभ नाप्यत्यशुभ तद्रूपो लोक-स्तियंग्लोक तथा ऊद्ध्यं—शुभ परिणामो बाहुत्येन द्रव्याणा यत्रामावूद्ध्यंलोकः,

(बृ॰ प॰ ५२३, ५२४)

५ अहेलोयसेत्तलोए ण भते । कितिबिहे पण्णते ? गोयमा । सत्तिबिहे पण्णत्ते, त जहा—रयणप्पभापुड-विअहेलोयसेत्तलोए जाव अहेयत्तमापुडविअहेलोय-ग्रेत्तलोए। (ण० ११।६२)

६ तिरियलायक्षेत्तलाए ण भते । कितिविहे पण्णत्ते ? गोयमा । अमस्रेज्जिविहे पण्णत्ते, त जहा—जबुद्दीवे दीवे तिरियलायक्षेत्तलाए जाव मयभूरमणसमुद्दे तिरि-यलायस्रेत्तलाए । (श० ११।६३)

७. उड्दलोयखेत्तलोए ण भते । कितिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पन्नरमिविहे पण्णत्ते, त जहा –मोहम्म-कप्पउड्दलोयमेत्तलोए जाव (म० पा०) अच्चुय-कप्पउड्दलोयमेत्तलोए गेवेज्जविमाणउड्दलोयखेत्त-लोए अणुत्तरिवमाणउड्दलोयमेत्तलोए इमिपठमार-पुद्धविउड्दलोयसेत्तलोए । (श० १११६४)

अहेलोयखेतलोए ण भने ' किंसठिए पण्णत्ते ?
गोयमा! तप्पागारमठिए पण्णत्ते । (श० ११।६५)
'तप्पागारसिंठए' ति तप्र — उडुपक अद्योलोकक्षेत्रलोकोऽघोमुखशरावाकारसस्थान इत्यर्थ.

(वृ० प० ५२४)

ित्रयलोयखेत्तलोए ण भते । किसठिए पण्णते ?
 गोयमा <sup>1</sup> झल्लिरिसठिए पण्णते ।

(म० ११।६६)

'झरलिरसिंठए' त्ति अल्पोच्छ्रायत्वान्महाविस्तारत्वाच्च तिर्यग्लोकक्षेत्रलोको झल्लरीसस्थित.

(वृ० प० ५२४)

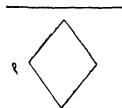
- १०. ऊर्द्धलोक प्रभु । किण सठाणे ? तव भाखें जगतार। ऊर्द्ध मुखे जे मृदग होवै, कहिये ते आकार।।
- ११ हे प्रभु । लोक<sup>3</sup> किसे सठाणे <sup>२</sup> हिव जिन उत्तर एह। सुप्रतिष्ठक सठाणे है, न्याय विचारी लेह।।

बा०—सुप्रतिष्ठित स्थापनक, ते इहा आरोपित वारकादि ग्रहण करियै तथा विध करिकै हीज लोक सरीखापणा नी उपपत्ति थकी इति वृत्तौ। ऊधा सरावला ऊपर कलशादिक स्थापन करैं, ते आकारे जाणवू। अने टवा मे कहाो आखला ने आकारे।

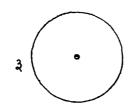
१२ हेठै तो विस्तारवत छै, मध्य साकडो जाण। जिम सप्तम जत प्रथम उद्देशक, जाव अत कर आण।।

बाo—जहा सत्तमसए इत्यादि जाव शब्द थकी इम जाणवु—उप्पि विसाले अहे पिलयकसिंठए, मज्झे वरवइरिवग्गिहिय उप्पि उद्धमुइगाकारसिंठए तिस च ण सासयिस लोगिस हेट्टा विच्छिण्णिस जाव उप्पि उद्धमुइगाकारसिंठियसि उप्पण्ण-नाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ वृज्झइ इत्यादीति ।

- १३ हे भगवत । अलोक छैते, कह्यो किसे सठाण ? जिन कहै पोलागोला ने, आकारे तेह पिछाण।।
- १४. अघोलोक नै विषे प्रभुजी ! स्यू जीवा सुविशेप ? तथा जीव ना देश कहीजै, जीवा तणा प्रदेश ?
- १५. इम जिम दशमा शतक तणें जे, प्रथम उद्देशे न्हाल। जिम पूर्व दिशि कही तिम कहिवू, यावत अद्धाकाल।।
- १६ तिरछे लोक प्रभु । स्यू जीवा ? एव चेव अशेप। इमज उर्द्ध लोक क्षेत्र लोके पिण, णवर इतो विशेप।। १७ अरूपी ना भेद छै षट, अद्धा समयो नाहि। रिव प्रकाश थकी उपनो ते, काल नहीं छै ताहि।।







४. भ० १०।५

- ११ लोए ण भते । किंसठिए पण्णत्ते ? गोयमा । सुपइट्ठगसठिए पण्णत्ते ।
- १२ हेट्ठा विच्छिण्णे मज्झे सखित्त (स० पा०) जहा सत्तमसए (७।३) पढमुद्देसए जाव अत करेड । (श० ११।६८)
- १३ अलोए ण भते । किसिंठिए पण्णत्ते ?
  गोयमा ! झुसिरगोलसिंठिए पण्णत्ते ।
  (श० ११।६६)
  'झुसिरगोलसिंठिए' ति अन्त शुपिरगोलकाकारो
  (वृ० प० ५२४)

१४. अहेलोयखेत्तलोए ण भते ! कि जीवा जीवदेसा जीवपदेसा

१५ एव जहा इदा दिसा तहेव निरवसेस भाणियव्व जाव अद्धासमए। (श० ११।१००) दशमशतेप्रथमोद्देशके यथा ऐन्द्री दिगुक्ता तयैव निरवशेषमधोलोकस्वरूप भणितव्य (वृ० प० ५२४)

१६ तिरियलोयखेत्तलोए ण भते <sup>।</sup> कि जीवा एव चेव । उड्ढलोयखेत्तलोए वि, नवर

- १८. लोक विषे स्यू जीव प्रभुजी ! वीजे शतक तास। जहेशे दशमें तिण ठामे, पूछ्यो लोकाकाश ।।
- १६. णवर सात प्रकार अरूपी, राघ धर्मास्तिकाय। धर्मास्ती नो देश नहीं छै, लोक पूर्ण पूछाय।। २० धर्मास्ती ना विल प्रदेशक, अधर्मास्तिकाय। तेहनो देश नहीं छे तेहना प्रदेश वहु कहिवाय।। २१. आगासित्थ नो खघ नहीं छै, आगासित्थ नो देश। तास प्रदेश काल ए सातूं, शेप तिमज मुविशेप।।

२२ द्वितीय जतके तास, दगमा उद्देशा मभे।
पूछ्घो लोकाकाग, तिहा अरूपी पर्चावध।।
२३ लोकाकाग आधार, तिण ठामे वाछ्घो निहा।
अपर भेद सुविचार, पच कह्या उण कारणे।।
२४ पूर्ण लोक मभार, इहा आकाग आधेय छ।
सप्त भेद सुविचार, वे भेद आकाग तणा गिण्या।।

वा०—तिहा दूजा शतक ना १० उद्देशा मे आकाश रूप लोक मे धर्मास्ति-कायादिक नी पूछा करी। तिण कारणे आकाशास्ति ना वे भेद नहीं लिया। अने इहा पचास्तिकाय समुदाय रूप लोक ने विवे पूछा करी तिणम् आकाशास्ति ना पिण वे भेद लिया। इण हेते वीजे शतक ५ भेद अने इहा सात भेद लिया।

२५ <sup>१</sup>हे भगवत । अलोक विषे स्यू जीवा इम जिम जाण। दुजे जतक उद्देश दशमे, कह्यो तेम पहिछाण।। २६. नो जीवा नो देश जीव ना, तिमहिज जावत उक्त। अगुरुलघुते अनत अगुरुलघु, गुण करने सयुक्त ॥ २७ सर्वाकाश नो भाग अनतम्, कहियै लोक आकाश। तेह लोकाकाश करिने ऊणो, ए जिन वचन प्रकाश ।। २८ अघोलोक ना एक आकाश, प्रदेश विपे भगवान। स्यू जीवा कै देश जीव ना, जीव प्रदेश पिछान ॥ २६ तिहां अजीव कहीजै कै विल, अजीव देश प्रदेश ? गोतम ए पट प्रश्न पूछ्चा, उत्तर दियै जिनेश।। ३० नो जीवा ते खघ आश्रयी, आखो जीव न पाय। वह जीव तणा वह देश अने वलि, वह प्रदेश पिण थाय।। ३१ वह अजीव पिण ह्वं तिण ठामें, अजीव ना वह देश। अजीव ना वहु प्रदेश ह्वै, ए पाचूइ लहेस।। बा०--एक प्रदेश ने निपे जीव नी अवगाहना नथी ते माटै खध आश्री जीव न कह्या। अने जीव-देश ते घणा जीव ना एकेक देश ने अवगाहन थकी

- १६,२० नवर—अरूबि अजीवा गत्तिवहा पण्णत्ता, त जहा--धम्मित्वकाण् नीधम्मित्वकायस्यदेगे, धम्मित्व-कायस्य पदेसा, अधम्मित्वकाण् नीअधम्मित्वकायस्य देगे, अधम्मित्वकायस्य पटेसा
- २१ नोआगामित्यकाए आगामित्यकायस्य देसे, आगाम-त्यिकायस्य पदेसा अद्वान्समण् सेस त चेय । (श० ११।१०२)
- २२-२४ यथा द्वितीयणते दणमोहेणक उत्यर्थ. 'लोयागामे' ति लोकाकांगे विषयभूते जीवादय उक्ता एविमहा-पीत्यर्थ, 'नवर' मिति केव लमय विशेष तत्रारूपिण पचित्रधा उत्ता उह तु मप्तविद्या वाच्या तत्र हि लोकाकाणमाधारतया विविधितमत आकाण-भेदास्तत्र नोच्यन्ते इह तु लोकाऽस्तिकायममुदायम्प आधारतया विविधितोऽत आकाणभेदा अप्याधेया भवन्तीति सप्त । (वृ० प० ५२४)
- २५-२७ अलीए ण भते <sup>1</sup> कि जीवा .... प् एव जहा अत्यिकायउद्देमए (भ० २।१४०) अलीया-गामे, तहेव निरवमेम जाव मन्वागासे अणतभागूणे । (भ० ण० ११।१०३)
- २८ अहेलोगसेत्तलोगस्स ण भते । एगम्मि आगासपदेसे कि जीवा जीवदेसा जीवपदेसा ?
- २६. अजीवा अजीवदेसा अजीवपदेसा ?
- ३० गोयमा । नो जीवा जीवदेसा वि जीवपदेसा वि
- ३१. अजीवा वि अजीवदेसा वि अजीवपदेसा वि

वा॰ —नो जीवा एकप्रदेशे तेपामनवगाहनात्, वहूना पुनर्जीवाना देशस्य प्रदेशस्य चावगाहनात् उच्यते,

१८ लीए ण भते । कि जीवा ... . जहा वितियसए अन्यिउद्देसए (भ० २।१३८), लीयागामे यथा द्वितीयणते दणमोद्देणक उत्यर्थ.। (यु० प० ५२४)

<sup>\*</sup> लय: तू चामड़ा नी पूतली । भजन कर है

१ भ० २।१३६

जीव ना घणा देश पिण कहियै।

अने एक आकाश प्रदेश मे अजीवावि कहिये ते मपूर्ण धर्मास्तिकायादि अजीव द्रव्य एक आकाश प्रदेश में न अवगाहै तो पिण परमाणु द्विप्रदेशिकादि घणा सपूर्ण द्रव्य नो अवगाहक एक आकाण प्रदेश छै ते माटै अजीवावि कहियै।

अनै अजीवदेसावि ते घणा द्विप्रदेशादि खद्य आप आपरा देशना अव-गाहन थकी अजीव ना घणा देश कह्या।

अजीवप्पदेसावि कह्या ते धर्मास्ति अने अधर्मास्ति ए विहु नो एकेक प्रदेश अवगाहै। अनै पुद्गल द्रव्य नै घणा प्रदेश अवगाहन थकी एक आकाश प्रदेश मे अजीव ना घणा प्रदेश पिण कहियै।

३२. जीव देश ते निश्चे करि वह, एकेद्रिय वह देश। इक सयोगिक ए इक भागो, हिव द्विकयोग कहेस ॥ ३३. अथवा वहु एकेद्रिय केरा, वहु देश कहिवाय। एकवेइद्री जीव केरो, एक देश तिहा पाय।!

वा०-इहा प्रश्नोत्तर इम कहिवू-अलोके हे भगवन् । स्यू जीव इत्यादि एवं जहा-उत्यादि अतिदेश थी इम कहिवू-

अलोयागासे ण भते । कि जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेमा ? अजीवा ? अजीवदेसा ? अजीवप्पदेसा ?

गोयमा । नो जीवा, नो जीवदेसा, नो जीवप्पदेसा, नो अजीवा, नो अजीवदेसा, नो अजीवप्पदेसा, एगे अजीवदन्वदेसे अगस्यलहुए अणते हि अगस्यल-हुयगुणेहि सजुत्ते सन्वागासे अणतभागूणे ति ।

तिहा सर्व आकाश अनत भाग ऊणो । एहनो ए अर्य-जोक लक्षण समस्त आकाश ने अनतवे भागे करी न्यून सर्व आकाश अलोक इति ।

३४ अथवा घणां एकेद्रिय केरा, घणा देश तिम ठाम। घणा वेइद्री जीव केरा, घणा देश छै ताम।। ३५ इम जिम दशमे शतक' देखाल्या, तीन भागा रे माहि । विचलो भागो जे नहिं पावै, तेह सभवै नाहि।।

## सोरठा

३६. वहु एकेद्री वहु देश, एक वेइद्री जीवना। घणा देश सुविशेष, ए मध्यम भागो नथी।।

३७ एक आकाश प्रदेश, एक वेइद्री जीव ना। देश वहु न कहेस, ते माटै नवि सभवै।। ३६. एक प्रदेश जोय, एक वेइंद्री जीव ना,

इक देशज अवलोय, तिण सू ए भागो नथी।। बा॰—एक आकाश प्रदेश ने विषे एक वेइद्री ना घणा प्रदेश छै। पिण एक आकाश एक प्रदेश अवगाह्या मार्ट तेहने वेइद्रिय नो एक देशहीज कहियै ।

३६. भजावत अथवा घणा एकंद्रिय घणा देश छै तास । घणा अणिदिया ना वहु देशज, इहा लग सर्व अम्यास ॥ जीवदेसावि जीवपएसावि' ति ।

- यद्यपि धर्मास्तिकायाद्यजीवद्रव्य नैकत्राकाशप्रदेवेऽव-गाहते तथापि परमाणुकादिद्रव्याणा कालद्रव्यस्य चावगाहनादुच्यते—'अजीवावि' ति
- ० द्वय्णुकादिस्कन्धदेशाना त्ववगाहनादुक्तम् —'अजीव-देसावि' त्ति
- ० धर्माधर्मास्तिकायप्रदेशयो पुद्गलद्रव्यप्रदेशाना चाव-गाहनाद्च्यते--'अजीवपएसावि' ति ।
- ३२. जे जीवदेसा ते नियमं एगिदियदेसा
- ३३ अहवा एगिदियदेसा य वेइदियस्स देसे

- ३४. अहवा एगिदियदेमा य वेडदियाण य देसा
- ३५ एव मज्ज्ञिल्लविरहिओ 'एव मज्जिरलविरहिओ' ति दशमशतप्रदशितत्रिक-भगे। (वृ० प० ५२५)
- ३६ 'अहवा एगिदियदेसा य वेडदियदेसा य' इत्येवरपो यो मध्यमभगस्तद्विरहितोऽसौ त्रिकभग ।

(वृ० प० ४२४)

३७,३८ हीन्द्रियस्यैकस्यैकत्राकाशप्रदेशे वहवो देशा न सन्ति, देशस्यैव भावात् (वृ० प० ५२५)

३६ जाव अहवा एगिदियदेमा य अणिदियाण य देमा

<sup>\*</sup>लय: तू चामड़ा नी पूतली ! भजन कर हे १. भ० १०।६

- ४० जे जीव प्रदेशा ते निञ्चै करि, घणां एकेंद्रिय तास । वह प्रदेश ए इकसयोगिक, हिवै द्विकयोग अम्यास ॥
- ४१. अथवा घणा एकेंद्रिय केरा, घणां प्रदेश तहंत।
  एक वेडद्रिय जीव केरा, घणा प्रदेश कहंत।।
- ४२. अयवा घणां एकंद्रिय केरा, घणा प्रदेशन पाय। धणा वेडद्रिय जीव केरा, घणा प्रदेश कहाय॥
- ४३. दशम शतक' नै प्रथम उद्देश, तीन भागा अस्यात । तेह माहिलो पहिलो भागो, पावै निर्ह विरयात ॥
- ४४ घणा एकेंद्रिय जीव केरा, घणा प्रदेश कहत। इक प्रदेश इक वेडद्री नो, ए घुर भंग न हुत।।

- ४५ एक आकाश प्रदेश, समुद्घात केवल विना। इक जतु नो विशेष. एक प्रदेश न सभवे॥
- ४६ एक प्रदेश मकार, केवल विण अन्य जीव नों। असंख्यात अववार, तिण सू ए धुर भग नहीं॥
- ८७. <sup>‡</sup>जाव पचेद्रां लग इम कहिवो, इक्योगिक भंग एक । द्विक्ययोगिक वे भागा पिण, घुर भागो नाह पेख ॥
- ४८. अणिदिया में उक्तयोगिक इक, द्विकयोगिक भग तीन। तीन्ई भागा नी सभव, केवलि इहा मुचीन।
- ४२. जेह अजोवा ते द्विविव छै, रूपी अजीव हेव। अरूपी अजीव छै वली, रूपी ना चिहु भेव॥
- ५० अरुपी अजीव केरा, पच भेद कहिवाय। नो धमित्यकाए भान्यो, ते खंघ आश्री नाय॥ ५१ धर्मास्ति नो देश पार्व, ताम प्रदेश निहाल। अवर्मास्ति नां पिण वेह, पंचम अद्धा काल॥

वाo—'नो वमत्यिकाए' ति एक आकाण प्रदेण नै विषे संपूर्ण धर्मास्तिकाय न संग्रवे । ते धर्मास्ति ने असङ्यात प्रदेण अवगाहीपणा थकी ।

'धम्मित्यिकायम्म देने' ति यद्यपि एक आकाण प्रदेण में धर्मास्ति नो प्रदेण हीज हुवै तो पिण देण नाम अवयव नो छै—'देशोवयव इति वचनात्' इण कारणे देण प्रदेण ना अभेदोपचार अकी अवयवमात्र नी विवक्षा करी नै अने निरणता तहमें छै तो पिण तेहनी अविवक्षा करी नै धर्मास्ति नो देण इम कह्यों। एतले खंध ना अवयव ने देण कहिंदै अने जेहनी बीजो अग नहीं ने निरण नै प्रदेण कहिंदै। इहा अवयव नी अपेक्षाये देण कह्यू अने निरणपणु पिण तहने विषे छै, पिण तहने वंछ्यो नयी। इण कारण धर्मास्ति नृ देण कह्यूं।

- ४१. अहवा एगिटियपदेना य वेटदियम्सपदेना
- ४२. अहवा एगिदियपदेसा य वेउदियाण य पदेसा
- ४३. एव आइल्निवरहिआं।
- ४४ 'अहवा एगिदियस्म पएमा य वेदियस्म पएमा य' उत्येवरूपाद्यभगकविरहितस्त्रिमगः।

(वृ० प० ५२५)

४५,४६ नाम्त्येवैकत्राकाणप्रदेशे केवलिसमुद्घातं विनैकस्य जीवस्यैकप्रदेशसभवोऽसख्यानासम्ब भावादिति ।

४७ जाव पनिदिएमु

४८. अगिदिएमु तियमगी 'अणिदिएमु तियमगी' ति अनिन्द्रियेपूक्तमगकत्रयमि सभवनीतिष्टत्वा तेपु तद्वाच्यमिति ।

(वृ० प० ४२४)

- ४६. जे अजीवा ते दुविहा पण्णता, त जहां—स्पी अजीवा य अस्वी अजीवा य स्वी तहेव। 'स्वी तहेव' ति स्कन्धा. देणा. प्रदेणा अणवण्ये-त्यर्थं। (वृ० प० ५२५)
- ५० जे अरुवी अजीवा ते पचिवहा पण्यत्ता त जहा नोधम्मित्यकाए
- ५१ धम्मत्यिकायस्म देने धम्मत्यिकायस्स पदेसे एव अधम्मत्यिकायस्म वि (म० पा०) अद्धासमए। (ग० ११।१०४)

वा॰—'नी धम्मत्यिकाये' ति नो धर्मान्तिकाय एकत्राकाशप्रदेशे मभवत्यमस्यातप्रदेशावगाहित्वात्त-स्यति।

'धम्मत्यिकायस्म' देने ति यद्यपि धर्मास्तिकायस्यै-कत्राकाणप्रदेगे प्रदेण एवास्ति तयापि देणोऽत्रयव इत्यनर्यान्तरव्येनावयवमात्रस्यैव विवक्षितत्वात् निरणतायाण्च तत्र मत्या अपि अविवक्षितत्वा-द्वर्मास्तिकायस्य देश इत्युक्त

<sup>\*</sup>लय: तू चामड़ा नी पूतली ! भजन कर हे १. भ० १०।६

४०. जे जीवपदेसा ने नियम एगिडियपदेसा

'धम्मित्यकायस्स पदेस' ति धर्मास्तिकाय नो प्रदेश छै। इहां खध नां अवयव ने नथी वर्ष्यो, अश रहितपणु ते प्रदेश, ते निरशपणु वर्ष्यवे करी प्रदेश कहा ।

५२. तिरछा लोक तणे हे प्रभुजी । एक आकाश प्रदेश। स्यू जीवा ? जिम अघोलोक मे, आख्यो तेम कहेस।।

५३ इमहिज ऊचा लोक विषे पिण, णवर निह छै काल। सूर्य चार प्रतिविव नही त्या, अन्य चिउ भेद निहाल।।

५४ लोक तणा इक गगन-प्रदेश विषे स्यू जीवा स्वाम । अधोलोक नै एक आकाश-प्रदेश विषे तिम ताम ॥

५५. अलोक नै प्रभु । एक आकाश, प्रदेश जीवा आदि।
श्री जिन भाखै नो जीवा विल, जीव देश निह लाघि।।
५६ तिमहिज जाव अनंत अगुरुलघु गुण करि सयुक्त तास।
सर्व आकाश तणेज अनतम भाग ऊण आकाश।।

वा०-अलोक ना एक आकाश-प्रदेश ने विषे स्यू जीवा इत्यादि पूछा-हे गोतम । नो जीवा नो जीवदेसा त चेव जाव-जिम लोक ना प्रश्न नो उत्तर तिमहिज उत्तर। किहा लगै कहिवू ? नो जीवप्पदेसा नो अजीवा नो अजीवदेसा नो अजीवप्पदेसा एगे अजीवदव्वदेसे इहा लगै उत्तर जाव शब्द मे जाणवो । जाव शब्द आगै एहवो पाठ -अगुरुयलहुए अणतेहि अगुरुयलहुयगुणेहि सजुत्ते सन्वागासे अणतभागूणं —अगुरुयलहुए ति प्रदेश अगुरुलघु छै अनत अगुरुलघु गुणे करी सयुक्त एहवू एक आकाश प्रदेश छै। वले ते सर्व आकाश अनत भाग-रूपपणे ऊण एक प्रदेश छै। इहा सन्त्रागामःस छडी विमित्ति कही, ते भणी सर्व आकाश ने अनत भागरूपपणे ऊण ते एक प्रदेश कह्यु। अनै इण उद्देशेहीज पूर्वे अलोकाकाश नो प्रश्न इम पूछचो -अलोकाकाश ने विषे हे भगवत । स्यू जीवा ? इम जिम अस्तिकाय उद्देशो वीजा शतक नु दशमा नै भलायो तिहा नो जीवा इत्यादि छह बोल नु निपेध कह्य ,--एगे अजीवद व्वदेमे अगुरुयलहए अणतेहि अगुरुयलहुयगुणेहि सजुत्तं सन्वागासे अणतभागूणे। एहन् अर्थ--ते अलोकाकाश केहवु ? एक आगासित्यकाय अजीव द्रव्य नु देश छै । विल अलोका-काण केहवु छै ? अगुरुलघु छै पिण गुरुलवु नयी। अने अनता स्वपर्याय पर-पर्याय रूप गुण अगुरुलघु स्वभाव करिकै सयुक्त । सन्वागासे अणतभागूणे अणत भाग ऊण सर्व आकाश छै एतलै सर्व आकाश नै अणतवे भाग लोक छै ते माटै अणतवे भाग ऊण सर्व आकाश अलोकाकाश ने कह्यु। इहा सव्वागासे प्रथम विभक्ति कही ते भणी ए अलोकाकाश लोक जितरो ऊण सर्व आकाश छै अने एक प्रदेश री पूछा मे सव्वागासस्स इहा छठी विभक्ति कही ते सर्वाकाश नै अणतभागरूपपणे ऊण ते एक प्रदेश छै इति तत्व ।

५७. द्रव्य थकी जे अघोलोक मे, अनत जीव द्रव्य हुत। विल अनंत अजीव द्रव्य छै, जीवाजीव अनत।। ५८. इमहिज तिरछा क्षेत्र लोक मे, ऊर्द्ध लोक इम हुत। जीव अनत अजीव अनता, जीवाजीव अनत।।

५६. द्रव्य थकीज अलोक विषे जे, जीव द्रव्य छै नाय। विल अजीव द्रव्य पिण निह छै, जीवाजीव न पाय।। प्रदेशस्तु निरूपचरित एवास्तीत्यत उच्यते — 'धम्मित्यकायस्स पएसे' ति । (वृ० प० ५२५)

५२ तिरियलोगखेत्तलोगस्स ण भते । एगम्मि आगास-पदेसे कि जीवा ? एव जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स तहेव

५३ एव उड्ढलोगक्षेत्तलोगस्स वि नवर—अद्धासमयो नस्यि ।

अरुवि चउन्विहा। (श० ११।१०५)

५४ लोगस्स ण भते । एगम्मि आगासपदेसे कि जीवा ? जहा अहेलोगसेत्तलोगस्स एगम्मि आगासपदेसे। (श० ११।१०६)

४५ अलोगस्स ण भते । एगम्मि आगासपदेसे--पुच्छा। गोयमा । नो जीवा नो जीवदेसा

५६ त चेव जाव (स॰ पा॰) अणतेहि अगस्यलहुयगुणेहि सजुत्ते सव्वागासस्स अणतभागूणे

(श० ११।१०७)

- ५७ दन्त्रको ण अहेलोगखेत्तलोए अर्णता जीवदन्त्रा अणता अजीवदन्त्रा अणता जीवाजीवदन्त्रा
- ५८ एव तिरियलोयखेत्तलोए वि एव उड्ढलोयखेत्तलोए वि
- ४६ दव्त्रओ ण अलोए नेवत्यि जीवदव्वा नेवत्यि अजीवदव्वा नेवत्यि जीवाजीवदव्वा

- ६० एक आकाश अजीव द्रव्य नुं, देश तिहा जिन ब्रूण । जाव सर्व आकाश नु ए, भाग अनंतमे ऊण ।।
- ६१ काल थकी जे अघोलोक ते, जाव न हवो किवार। न हवे न हरये ए नहिं तीनू, जाव नित्य गुविचार।।
- ६२ एवं जाव अलोक लगै जे, जाव यद्द रे माय। तिरिय लोक ने ऊर्द्ध लोक ए, काल थकी कहिवाय।।
- ६३ भाव थकी जे अघोलोक मे, अनत वर्ण पर्याय। जिम खधक अधिकारे आस्यो, तेम इहा कहिवाय।।
- ६४ जाव अनत अगुरुलघु पजवा, एव जावत लोय। जाव शब्द में तिरिय ऊर्द्ध है, भाव थकी ए जोय।।
- ६५ भाव थकीज अलोक विषे जे, नही वर्ण पर्याय। जावत नही अगुरुलघु पजवा, पुद्गलादिक ए नाय।।
- ६६. एक आकाम अजीव इन्य नु, देश तिहा जिन सूण। जाव सर्व आकाश अर्छ ए, भाग अनतमें ऊण।।
- ६७ शत इंग्यारम वशम दोयसी, वत्तीसमी ए ढाल। भिवल भारीमाल ऋपिराय प्रसादे,

'जय-जश' मंगलमाल ॥

ढाल: २३३

#### दूहा

१ मोटो लोक कितो प्रभु । जिन कहै जवू एह । भ्यतर सगला द्वीप ने, यावत परिवि कहेह ॥

इहा जावत शब्द थकी उम जाणवी-

समुद्दाण सन्वन्भतराइए मन्त्रखुड्डाए, बट्टे—तेल्लापूयमठाणसिठए, बट्टे—रह्चक्कवालसठाणसिठए, बट्टे—पुन्धरकण्णियासठाणसिठए, बट्टे—पिटपुण्णचदसठाणसिठए, एग जोयणसयसहस्स आयाम-विनखभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साड सोलससहस्साड दोण्णि य सत्तावीमे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्टाबीम च धणुस्य तेरस अयुलाइ अद्धगुल च किचि विमेसाहियति।

\*गोयमजी । साभलजै चित त्याय ॥ (ध्रुपद)

तिण काले नै तिण सम जी, पट सुर महाऋद्विवत ।
 यावत महासुख ना घणी जी, विल महाईश्वरवत'।

- \*लय: बधविया ! ए कुण आया रे आज
  - १ 'महामोक्पे' के बाद मूलपाठ में कोई शब्द नहीं है। किन्तु इसमें पहलें 'जाव' शब्द है। 'जाव' की पूर्ति इसी ग्रथ के ३।४ से की गई है। वहां महामोक्षे के बाद 'महाणुभागे' पाठ है। यह जोड उसी के आधार पर होनी चाहिए।

- ६० एगे अजीवदन्त्रदेमे जाव (स० पा०) मन्त्रागासम्स अणसमागुणे।
- ६१ कालको ण अहेतीयगेसलोग् न कयाउ नासि, न कयाउन भवड, न कयाइन भविस्मड
- ६२ एव तिरियलोयपेत्तलोए, एव उड्ढलोयपेत्तलोए एव अलोए ।
- ६३ भावयां ण अहेलोयसेत्तलाए अणता वण्णपज्जवा (म० पा०) जहा सदए (भ० २१४५)
- ६४ जाव (ग॰ पा॰) अणता अगरयलहुयपण्जवा एव तिरियलोयसेत्तलोए, एव उट्हलोयसेत्तलोए एव लोए।
- ६५ भावओ ण अलीए नेवित्य वण्णपञ्जवा जाव (म॰ पा॰) नेवित्य गरुयलद्वयपञ्जवा
- ६६. एगे अजीवदन्वदेगे जाय (म० पा०) अणतभागूणे । (म० ११।१०८)

१ लोए ण भते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा । अयण्ण जबुद्दीवे दीवे सन्वदीवसमुद्दाण
सन्वद्भतराए जाव : 'परिक्सेवेण ।

- २ तेण कालेण तेण समएण छ देवा महिड्ढीया जाव महासोक्या
- १ अलोक मे वर्णपर्यंव यावत् गुरुलघुपर्यंव नहीं होते,
  किन्तु अगुरुलघु पर्यंव होते हैं। इसलिए 'नेवित्य
  गरुयलहुयपज्जवा' यही तक पाठ होना चाहिए।
  किन्तु अगसुत्ताणि भाग २ पृ० ५०० पा० टि० ० के
  अनुसार वृत्तिकार को 'नेवित्य अगरुयलहुयपज्जवा'
  पाठ उपलब्ध हुआ। उसके अर्थ की मंगीत विठाने
  के लिए वृत्तिकार ने उसकी व्याख्या इस प्रकार की
  है—'अलोक मे अगुरुलघु पर्यंवो से युक्त द्रव्य पुद्गलो
  का अभाव है।' यदि वृत्तिकार को शुद्ध पाठ उपलब्ध
  होता तो इस व्याख्या की आवश्यकता ही नहीं होती।

- ३ जंबूद्वीप मेरू तणी जी, प्रवर चूलिका एह। सर्व थकी वीटी रह्या जी, सर्व प्रकारे जेह।।
- ४ हिव चिहु दिशाकुमारिका जी, महत्तरिका महाऋदि। धरणहार नेहनी तिके जी, चिहु विलिपड कर लिद्ध।।
- ५ जवूद्रीप चिहु दिशि विपे जी, वाहिर मुख कर तेह। ते च्यारू ऊभी रही जी, चिहु विल पिंडी लेह।।
- ६ सम काले विलिपिडिका जी, वाहिरली दिशि माय। न्हाखे दिशाकुमारिका जी, विलिप्रभु भाखे वाय।।
- ७. एक एक ते देवता जी, चिहु वर्लि-पिड तदर्थ। धरणि पड्चा पहिला तिके जी, शीझ ग्रहण समर्थ।।
- द. हे गोतम ने देवताजी, पूर्वे भाखी जेह। तिण उत्कृष्ट जावत विल जी, सुर गित करने तेह।।

वा॰—इहा जाव शब्द कहिवा थी इम जाणवो—तुरियाए आकुलपणे करी, चवलाए—काया ने चापलपणे करि, चडाए—गित ना उत्कर्प योग थकी चड ते रोद्र गित करी, सीहाए— दृढ रिथरपणे करी, उद्धयाए— उद्धत ते अतिही दर्प्प गित करी, जडणाए—विपक्ष गित ने जीतवै करी, छेयाए—छेक ते निपुण गित करी, दिव्वाए—स्वर्ग ने विषे थइ एतलै प्रधान गित करी।

- ह जबू ना मेरू थकी जी, पूरव स्हामो पेख। एक देवता चालियो जी, तिण गित करिने देख।।
- १० इमहिज दक्षिण सामुहो जी, इक सुर चाल्यो तेम। इक सुर पश्चिम सामुहो जी, उत्तर साहमो एम।।
- ११. अची दिशि इक देवता जी, तिण गति चाल्यो ताम। इक सुर नीचो चालियो जी, तिणहिज गति कर आम।।
- १२ तिण काले ने तिण समे जी, किणहिक जायो वाल। सहस्र वर्ष तस आउखो जी, सुर चाल्यो तिण काल।।
- १३ वालक ना माता-पिता जी, पाम्या मरण तिवार। तो पिण ते सुर ना लहै जी, लोक तणो अत पार।।
- १४ ते वालक नो आउखो जी, क्षीण थयो तिणवार। नो पिण सुर पामें नहीं जी, लोक तणो अत पार।।
- १५ क्षीण हुवै बालक तणी जी, हाड हाड नी मीज। तो पिण ते सुर चालतो जी, लोक अत न लहीज।।
- १६ तिम क्षीण हुवा ते वाल ना जी, आसप्तम कुल वश । तो पिण ते सुर ना लहै जी, लोक अत नुअश।।
- १७ नाम गोत ते वाल ना जी, हुवा विछेद तिवार। तो पिण ते सुर ना लहै जी, लोक तणो अत पार।।
- १८ विल गोतम पूछ तदा जी, ते सुर हे भगवान।
  स्यू जे क्षेत्र गयो घणो जी, कै वहु रह्यो सुजान?
  [प्रभुजी किपा करो जिनराज]

- ४ अहे ण चतारि दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ चतारि विलिपिडे गहाय
- प्रजबुद्दीवस्स दीवस्म चउसु वि दिसासु विह्याभिमु-हीओ ठिच्चा ।
- ६ ते चत्तारि वलिपिडे जमगसमग वहियाभिमुहे पक्षिववेज्जा
- ७ पभू ण गोयमा । तओ एगमेगे देवे ते चत्तारि विल-पिडे धरणितलमसपत्ते खिप्पामेव पिडसाहरित्तए।
- न्त ते ण गोयमा । देवा ताए उक्किट्ठाए जाव (स॰ पा॰) देवगईए
- बा०—तत्र 'त्विरितया' आकुलया 'चपलया कायचापल्येन 'चण्डया' रौद्रया गत्युत्कर्पयोगात् 'सिहया' दार्ढ्य- स्थिरतया 'उद्धुतया' दर्पातिणयेन 'जियन्या' विपक्ष- जेतृत्वेन 'छेकया' निपुणया 'दिव्यया' दिवि भवयेति । (वृ० प० ५२७)
  - एगे देवे पुरत्याभिमुहे पयाते
     'पुरत्याभिमुहे' ति मेर्वपेक्षया। (वृ० प० ५२७)
- १० एगे देवे दाहिणाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्याभि-मुहे पयाते, एगे देवे उत्तराभिमुहे पयाते,
- ११ एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते, एगे देवे अहोभिमुहे पयाते।
- १२ तेण कालेण तेण समएण वाससहस्साउए दारए पयाते।
- १३ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवति, नो चेव ण ते देवा लोगत सपाउणित ।
- १४ तए ण तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, नो चेव ण ते देवा लोगत सपाउणित ।
- १५ तए ण तस्स दारगस्स अद्विमिजा पहीणा भवति, नो चेव ण ते देवा लोगत सपाउणति ।
- १६ तए ण तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवसे पहीणे भवति, नो चेव ण ते देवा लोगत सपाउणित ।
- १७ तए ण तस्स दारगम्स नामगोए वि पहीणे भवति नो चेव ण ते देवा लोगत सपाउणति ।
- १ द तेसि ण भते । देवाण कि गए बहुए  $^{?}$  अगए बहुए  $^{?}$

३ जबुद्दीवे दीवे मदरे पव्वए मंदरचूलिय सव्यओ समता सपरिक्खिताण चिट्ठेज्जा

१ यह वार्तिका वृत्त्यनुसारी पाठ के आधार पर की गई है। अगसुत्ताणि भाग २ श० ११।११० में चडाए के वाद 'जइणाए छेवाए सीहाए सिग्घाए उद्धुयाए' पाठ है।

- १६. वीर कहै मुण गोयमा जी ! गयो क्षेत्र यहु होय ।
  रह्यो क्षेत्र वहुलो नही जी, ताम मान तू जोय ।।
  २०. गयो क्षेत्र की तेहथी जी, रह्यो क्षेत्र जी एय ।
  असंस्थातमो भाग की जी, न गयो इतरो वित ।।
  २१. रह्यो क्षेत्र की तेहथी जी, गयो क्षेत्र सुविचार ।
  असङ्यातगुणो आखियो जी, अदल न्याय अवचार ।।
  - सोरठा
- २२. पूर्व आदि दिशि च्यार, अर्द्ध रज्जु गिरि मेरु थी। ऊर्द्ध अयो अवघार, सप्त रज्जु न्यूनाधिके॥
- २३. पट दिशि मे सुर माग, अगत क्षेत्र गत क्षेत्र थी। असस्यातमे भाग, न्याय तास किम एहनो।।
- २४ तथा अगत थी जाण, असरयात गुण क्षेत्र गत। एहनो पिण पहिछाण, किण विघ न्याय कहीजियै।।
- २५ घन कृत किल्पित लोग, लावो चोटो मप्त रज्जु। इतरो जाहो जोग, विच मदर मूर अवतरण।।
- २६ इण गति करि लोकत, बहु काले पार्व न सुर। तो भट किम आवत, अच्युत जिन जन्मादिक?
- २७ बहुत क्षेत्र ए जोय, अल्प काल अवतरण को। तम् उत्तर अवलोय, वृत्तिकार इम आखियो॥
- २८ आँखी मट गिन एह, जिन जनमादिक अवसरे।
  मुर अवतरण करेह, अति गित शीव्र करी इहा।।

बा॰—इहा जिप्य प्रश्न करें जो पूर्वे कही तिण गति करिकै जाता यका पिण देवता वह काल करिकै पिण लोक नो अत न पामै तो वारमा देवलोक ना इद्रादि जिन जन्मादि नै विषे जीझ किम अवतरे, क्षेत्र नां बहुपणा यकी अने अवतरण काल ना अल्पपणा धकी। इम जिप्य पूछ्ये थके गुरु कहै—ए मत्य, पिण पूर्वे ए मुर नी गति कही ते मद छै। अनै जिन जन्मादि काले मुर आबै ते गति अतिही जीझ छैं।

भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी जी, 'जय-जग' हरप अपार ॥

२६. लोक इतो मोटो कह्यो जी, कहै गोतम नै जिनेश।

एकादयमा शतक नो जी, दशम उद्देशक देश।।
३० दोयसी नैं तेतीसमीजी, आसी दाल उदार।

- १६. गीयमा ! गए बहुए, नी अगए बहुए,
- २० गयाओं से अगए अससेज्जाजांग
- २१ अगवाओं में गए असमेज्जगुण
- २२ ननु पूर्वादिषु प्रत्येकमद्भैरज्जुप्रमाणन्वारलोकस्योद्धी-धण्य किञ्चिन्स्यनाधिकसप्परज्जुप्रमाणन्वात्तुत्यया गत्या गन्छना देवाना (यु० प० ४२७)
- २३ कथ पट्स्यपि दिक्षु गतादगत क्षेत्रमसस्यानभागमात्र (वृ० प० ४२७)
- २४ अगनाच्च गनममन्यातगुणिमति (वृ० प० ४२७)
- २५ घनचनुरस्रीवृतस्य लोगस्यैव रन्पितत्वान्न दोप । (वृ० प० ४२७)
- २६ ननु यद्कस्यमपयाऽपि गत्या गच्छन्तो देवा लोतान्त बहुनापि वालेन न लभन्ते तदा यथमच्युताज्जिन-जन्मादिषु द्रागवतरन्ति (बृ० प० ५२७)
- २७ बहुत्वान्सेत्रम्याल्यन्वादवतरणगानम्बेति । (वृ० प० ५२७)
- २६ सत्य, किन्तु मन्देय गति. जिनजन्माद्यवतरणगति-न्तु शीन्नतमिति । (वृ० प० ५२७)

२६ लोए ण गोयमा ! एमहालए पण्णत्ते । (११०१)

१ इस वानिका का निर्माण जिस वृत्ति के आधार पर किया गया है, वह पूर्ववर्ती गाया २६-२८ के सामने उद्धृत है। इसलिए यहां वार्तिका के सामने उसे नहीं रखा गया है।

#### दूहा

- १ अलोक प्रभु<sup>।</sup> मोटो कितो <sup>२</sup> दाखै ताम दयाल । समयक्षेत्र मनुक्षेत्र ए, जोजन लख पैताल ॥
- २. खंघक ने अधिकार जिम, जाव परिघि लग जोय। आख्यो तिम कहिवूं इहा, सगलोई अवलोय।। \*प्रभु इम भाखै रे।। (ध्रुपद)
- ३ तिण काले ने तिण समे हो, दश सुर महाऋद्धवत । तिमज जाव मदर-चूलिका हो, वीट रह्या घर खत ॥
- ४ अथ अठ दिशाकुमारिका हो, महत्तरिका महाऋद । घरणहार तेहनी सही हो, अठ विल-पिंड कर लिद्ध ॥
- ४ मानुसुत्तर गिरि विषे हो, च्यारूई दिशि माहि। च्यारूई विदिशि विषे वली हो,

र्राह वाहिर मुख कर ताहि॥

- ६ तेह अष्ट विल-पिंड ने हो, जमगसमग समकाल। न्हाखे वाहिर सनमुखी हो, विन कहै दीनदयाल।।
- ७ इकइक सुर अठ पिंड प्रतै हो, घरण पड्चा पहिलाह। ग्रहिवा ने समर्थ होवै हो, शीघ्रपणे जे ओछाह।।
- द हे गोतम । ते देवता हो, रिह लोकाते ताय। तिण उत्कृष्टी गित करी हो, चाल्यो अलोक रै माय॥
- १ असन्भावपट्टवणा करी हो, अलोक मे सुर गित नाय।
  तिणस् अणहुंती कल्पना हो, तिण किर ए किह्नाय।
- १० इक सुर पूरव सामुहो हो, अग्निकूण इक पेख। यावत एक ईशाण में हो, एक ऊर्द्ध अघो एक।
- ११. तिण काले ने तिण समे हो, जायो किणहि रै पूत ।। लक्ष वर्ष रो आउखो हो, निज घर राखण सूत ।।
- १२ ए वालक ना माता पिता हो, काल कियो तिणवार ॥ तो पिण सुर ने अलोक ना हो, निश्चैन पामै पार।
- १३. लोक तणों जिम आखियो हो, तिणहिज रीते ताम। अलोक नो कहिवू इहा हो, सव पाठ अभिराम।।
- १४ जावत ते सुरवर तणे हो, स्यू गयो क्षेत्र वहु होय ? के अणगयो क्षेत्र रह्यो तिको हो, वहुलो कहिये सोय ?
- १५. जिन भाखै सुण गोयमा । हो, गयो क्षेत्र वहु नांय। अणगयो क्षेत्र रह्यो घणु हो, विन कहै आगल न्याय॥

- १ अलोए ण भते । केमहालए पण्णत्ते ? गोयमा । अयण्ण समयखेत्ते पणयालीस जोयणसय-सहस्साइ
- २. जहा खदए (भ० २।४७) जाव परिक्लेवेण ।
- ३ तेण कालेण तेण समएण दस देवा महिड्ढिया जाव महासोक्खा जबुद्दीवे दीवे मदरे पव्वए मदरचूलिय सव्वओ समता मपरिक्खिताण सचिट्ठेज्जा
- ४ अहे ण अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ अट्ठ विल-पिंडे गहाय
- ५. माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स चउसु वि दिसासु चउसु वि विदिसासु वहियाभिमुहीओ ठिच्चा
- ६. ते अट्ठ विलिपिंडे जमगसमग विह्याभिमुहे पिक्ख-वेज्जा।
- ७ पभू ण गोयमा । तओ एगमेगे देवे ते अहु विलिपिडे धरणितलमसपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए।
- न ते ण गोयमा । देवा ताए उनिकट्ठाए जाव (स॰ पा॰) देवगईए लोगते ठिच्चा
- ६ असन्भावपट्टवणाएं 'असन्भावपट्टवणाएं त्ति असद्भूतार्थकल्पनयेत्यर्थ (वृ० प० ५२७)
- १० एगे देवे पुरत्याभिमुहे पयाते, एगे देवे दाहिणपुरत्या-भिमुहे पयाते जाव (स० पा०) उत्तरपुरत्याभिमुहे पयाते, एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते, एगे देवे अहोभि-मुहे पयाते।
- ११ तेण कालेण तेण समएण वाससयसहस्साउए दारए पयाते।
- १२ तए ण तस्स दारगम्स अम्मापियरो पहीणा भवति, नो चेव ण ते देवा अलोयत सपाउणति ।
- १३. त चेव जाव (सं० पा०)
- १४ तेसि ण भते ! देवाण कि गए बहुए ? अगए बहुए ?
- १५ गोयमा । नो गए बहुए, अगए बहुए

<sup>\*</sup>लय: राम को सुजश घणो

- १६, गयो क्षेत्र थी अनंतगुणो हो, अणगयो क्षेत्र पिछाण।
  अणगया क्षेत्र थकी गगो हो, भाग अनतमें जाण।।
  १७ इतरो मोटो अलोक छ हा, कहै गोतम ने जिनेश।
  एकादशमा शतक नों हो, दशम उद्देशम देश।।
  १८ हाल दोयसी चोतीसमी हो, भिक्षु ने भारीमाल।
  ऋषिराय तणा प्रसाद थी हो, 'जय-जश' मगलमाल।।
- १६. गयाओं से अगए अणतगुणे, अगयाओं से गए अणत-भागे।
- १७. अलोए ण गोयमा । एमहालए पण्णत्ते । (भ० ११।११०)

ढाल: २३४

#### दूहा

- १ पूर्वे लोकालोक नी, वक्तव्यता पहिछाण।
  लोक एक प्रदेश गत, एकेद्रियादिक जाण।।
  \* प्रभूजी । आप तणी विलहारी (श्रुपद)
  २ लोक तणा मुविशेषे, काउ एक आकाश प्रदेशे हो, प्र।
  जे एकद्री ना प्रदेशा, जाव पिचिंद ऑणिंद नां कहेमा हो, प्र।।
- वध्या ते माहोमाय, विल माहोमाहि फर्याय हो, प्र ।
   जाव अन्योअन्य जेह, घटपणे करी रहै तेह हा, प्र. ।।
- ४ प्रभृ ते जोवा रा प्रदेश, त्यारै माहोमाहि मुविशेष हो, प्र.। किचित पीडा कहिये, अथवा वहु वावा लहिये हो, प्र.॥
- ५ छेद त्वचा नो करेह ? जिन कहै अर्थ समर्थ न एह हो, प्र.। विल गोतम पूछत, किण अर्थे पीड न हुंत ? हो, प्र.॥
- ६ जिन भार्व जिनराय, दृष्टान देइ कहै वाय हो, गोयमजी। नाटकणी इक होय, श्रुगार तणो घर मोय हो।। (गोयमजी! साभल तू चिन त्याय।।
- ७. मनोहर वेश सुरीत, जावत ते युक्त सगीत हो, गो । जाव शब्द में जाण, रायप्रश्रेणी' रा पाठपिछाण हो, गो ॥
- द ते कहिवा इह रीत, सगत प्राप्ति करि सहीत हो, गो। तास गमन गति ऋडी, मुख हास करोने सनूरी हो, गो।।।
- मृदु मजुल वर वाणी, तनु चेष्टा तास वखाणी हो, गो.।
   वारू वात विलास, लीला सहित वोलणो तास हो, गो.।।
- १०. निपुणपणें करि जुक्त, उपचार करिने सयुक्त हो, गो.। एहवी नाटकणी ताहि, ते रग स्थानक रै मांहि हो, गो.॥

- १ पूर्व लोकालोक्तवक्तव्यतोक्ता, अत्र लोकैकप्रदेशगत वक्तव्यविशेष दर्शयन्ताह— (वृ० प० ५२७)
- २. लोगम्स ण मने । एगम्मि आगासपदेमे जे एगिटिय-पदेसा जाव पचिदियपदेसा अणिदियपदेसा
- ३ अण्णमण्यवद्वा अण्णमण्णपुट्टा जाव (स० पा०) अण्णमण्यवद्वाए चिट्ठति ?
- ४ अस्यिण भते । अण्णमण्णस्म किचि आबाह वा वाबाह वा उप्पायति ?
- प्री उणट्ठे समट्ठे । (ण० ११।१११)
   मे केणट्ठेण भते । एव वुच्चङः '' आवाह वा ' करेंति
- ६,७ गोयमा । मे जहानामए नट्टिया सिया—सिंगारा-गारचारुवेमा जाव (म० पा०) कलिया । 'जाव कलिय' ति इह यावत्करणादेव दृश्य (वृ० प० ६२७)
- ८,६ सगय-गय-हमिय भणिय-चेट्टिय विलास-सललिय-सलाव
- १०. निडणजुत्तोवयारकुमला ....रगट्टाणिस

१. सू० ७०

<sup>\*</sup>लय: स्वामीजी! थांरा दर्शन

- ११. जन सय वा सहंस सहीत, जन लक्ष सहित वर रीत हो, गो.।
  एहवो मउप रमणीक, तिहा नाटकणी तहतीक हो, गो.॥
  १२. नाटक बतीस प्रकारे, नेह विषे इक नाटक देखाडे हो, गो.।
- ते निर्द्ध गोतम ! जाणी, इम पूछ जिन गुणखाणी हो, गो ॥

  बाठ—'बत्तीसइबिहरम महुरम' ति ३२ भेद हे जे नाटक ना, ते हात्रिणत्विद्य नाटक कहियै। ईहा-मृग-ऋषभ-नुरग-नर-महर-विहग-व्यान-रिन्नरादिभक्तिचियो नाम एको नाट्यविधि एवरचिरनाभिनयनमिति चेप्टा मूचक
  मभावियै छै। इम अनेरा पिण एकतीन निध रायप्रश्रेणि सूप (७६-११३) में
  कह्मा, तिम कहिया।
  - १३ ए नटणी ना देराणहारा, अणिमिस नेत्रे करि सारा हो, गा । नटणी प्रति देराता, सह दिशि थी पास पेराता हो, गो. ॥
  - १४. गोतम कहै जिबारे, हा भगवत । देखें निवारे हो, गो । वनि गोतम नै स्वाम, पूछे उहविध गुण, धाम हो, गो. ॥
  - १५ सह जन नी दृष्टि तियारे, पड नटणी विषे जिवारे हो, गो ? हा प्रभ् ! दृष्टि पडत, चिन पूछै श्री भगवत हो, गो. ॥
  - १६. ते सहु दृष्टी ताय, नटणी ने पोड उपाय हो, गो.। त्वना छेद ह्यै सोय, गोतम यह पीड न होय हो, गो.॥
  - १७. अथवा नाटकणी ताय, दृष्टि प्रते पीछ उपजाय हो, गो. । त्वचा छेद पिण थाय ? गोतम कहै ए पिण नांय हो, गो. ॥
  - १८. अथवा ते वहु दृष्टि, माहोमाहि दृष्टि करि स्पृष्टि हो, गो । छिविछेद वाघा उपजावें? गोतम कहै दुरा न पमावें हो, प्र. ॥
  - १६. तिण अर्थे इम आख्यो, हे गोतम । पूर्वे भाग्यो हो, गो । रह्या एकेद्रियादिक नां प्रदेश, बाधा छविछेद न तेया हो, गो. ॥

- २० गोके एक प्रदेश, नेह तणा अधिकार थी। यनि तेहीज विशेष, कहिये छै ते माभनो॥
- २१. \*जे लोक नाभगवंत ! एक, आकार नाजु प्रदेश में।
  पद जघन्य करिकै जीव ना जु, प्रदेश छै ने नेप में।।
- २२ जराम्द पद करि एक प्रवेशे, जीव ना जुप्रदेश ही। सहुजीय द्राम फुन एहनो, कुण अल्प बहु तुल्य अधिक ही?
- रहे. जिन कहें थोटा इक आकाश-प्रदेश में जु पिछाणियें। पद जपन्य करिके जीय नां जु, प्रदेश छुँ ने जाणिये।।

- ११ तणसभारतमि रागसमहस्मादर्शन
- १२. बनीमऽविहस्स नहस्स अस्त्यत्र सद्दर्वित उपभित्रतः मे नृष गोपमा ।
  - या॰ 'यनीमट्याह्म नष्ट्रम्म' नि द्वारिष्ठद् रिधा
     भेरा यस्य तनना नम्य नाट्यम्य, नप इटामूय-भूषभगुरमनरमार विद्याच्या प्रशिक्तनाटिशांचि एयः नामैका नाट्यविधिः, एनण्यांच्याभिनयनीमिन मनान्यने, एवमन्येऽयेरिकाद्विध्या स्थापनाच्यान् मारनोताच्याः। (पृ० प० ४२०)
- १३ ते पेच्छमा । संदियः अणिमियाम् दिद्रीण सन्दर्भाः समना समस्तितोणीत् ?
- १४ हता समित्रीएति ।
- १५ नाओ ण गोगमा । दिहीओ तिम निर्देशित सम्माने समता सन्तिपदियाओं ? हवा सन्तिपदियाओं ।
- १६ अतिय ण गोयमा । ताओ दिद्वीतो तीने निर्धाण किचि वि आवाह या गायाह या उप्पायितिकारिक वा करेति ? नो उणद्धे गमद्धे।
- १७ मा या निष्टिया नामि दिहीण रिनि सपारणा याबाह् वा उपामिति है छविष्केद या गरेद है नो इणद्ठे समद्दे ।
- १८ नाजो वा दिष्टीजो अणामणाए दिहीण् हिता आपत या वाबार वा उपाएति ? छतिरतेः वा परेति मो इषट्ठे समट्ठे ।
- १६ में तेणट्ठेण गोयमा ! एवं यहाद ताच (ग० पा०) अविन्धेद या नरीति । (अ० ११।११२)
- २०. लोकिप्रदेशिधास्त्रीयसार— (व् प० ४२३)
- २१ भोगस्य प भने <sup>।</sup> गयस्य असारणदेवे जल्लाल जीवपदेवाण
- इन्हें निकार की सम्बोधान महाकी पान से कहते कहते.
  ितो सम्माना के प्रकृता का कि कुल्य का कि किलेन मालिया का कि
- २३-२५ मोतमा रे मन्द्राभेषा जोगम्य गुणीन्न ग्राप्तः बहेम बहुत्वारा जीवारेमा माहारीमा भारतिस्त

<sup>&</sup>lt;sup>4</sup>तम : पूत्र मोटा भांत्र सोटा

२४. पद जघन्य करिकै जीव ना जु, प्रदेश थी सुविचारियै। जे लोक में सह जीव द्रव्य, असंग गुण अवघारियै।। २५ फुन तेह्थी जे इक आकाय-प्रदेश में जुकहीज ही। उत्कृष्ट पद करि जीव ना जु, प्रदेश तेह विशेष ही।।

## सोरठा

२६. तिहा जघन्यपदे उम हुत, लोक अत गोला प्रते। त्रिहु दिशि ना फर्सत, निगोद ना गोला भणी।। २७. शेप दिशा जे तीन, तेह अलोके आवरी। खंड गोल ए चीन, इम थोटा ए मर्व थी।।

२८. मध्य लोक सुविशेष, जे गोला पट दिशि तणां।

तिगोद नाज प्रदेश, फर्शे छं इण कारणे।।

२६. उत्हृष्ट पदे विचार, जीव प्रदेश कह्या घणा।

लोकात विण अववार, खंडगोलका न हुवै।

३०. संपूरण जे गाल, लोक मध्य निश्नेज ह्वै।

खड गोल दिल तोल, ने तो लोकातेज ह्वै।।

३१. सर्व लोक रै माय, गोला अर्छ निगोद ना।

कह्यो वृत्ति थी न्याय, सेव भने! सत्य वच।।

३२. \*एकादशमा नो दशमो न्हाल, दो सी पैतीसमी ढाल हो, प्र०। भिक्लु भारोमाल ऋपिराय, 'जय-जश' सुप्त सपति पाय हो, प्र०॥

।।इति एकादशयने दशमोहेशकार्थः ।।११।१०।।

चन्नोसपम् जीवपटेसा विसेसाहिया। (म० ११।११३)

२६,२७ तत्र नयोशंपायेनरपदयोजंबायपदं नोतालं भवति 'जत्य' नि यत्र गोलके स्पर्भना निगोदंदगैन्नि-मृत्येत दिशु भवति, धेपदिणामलोतेनायृनत्वान्, ना च पण्टगोत एव भवतीनि भात्र ।

(वृ० प० ४२८)

२८,२६ 'छर्हिमि' ति यत्र गुनगीतके पट्स्विप दिशु निगोदरेगैः रगर्गना भवति नन्नोत्रुष्टपर भवति, तत्त्व समस्तगीलै परिपूर्णगोतके भवति, नान्यत्र, ग्रण्डगोलके न भवतीत्वर्थः (वृ० ५० ४२८)

२० मम्पूर्णगोलगण्य लोगमध्य एव म्यादिति । (वृ० प० ५२=)

३१. सेव भने <sup>।</sup> सेव भने <sup>।</sup> लि । (प्र०११।११४)

ढाल: २३६

## दूहा

- १. दशमां उद्देशक विषे, कह्यो लोक विस्तार। लोक विषे हिव काल द्रव्य, किह्ये ते अधिकार।। २ तिण काले ने तिण समय, वाणियग्राम सुजान। नामें नगर हुतो वर्णन, दूतिपलास उद्यान।।
- ३. जावत-पुढवीशिलापट, वाणिय ग्रामे जान । सेठ मुदर्शन नाम तसु, वसै अधिक ऋदिवान ॥ ४. जावत गज न को सकै, श्रमणोपासक नेह । जाण्या जीव अजीव नै, जावत विचरै जेह ॥ ५ समवसरचा स्वामी तिहा, यावत परपद आय । सेव करै त्रिह जोग करि, निरख निरख हरपाय ॥

- १ अनन्तरोद्देशके लोकयक्तव्यतोक्ता, उह तु लोकवर्तिकाल-द्रव्ययक्तव्यतोच्यते (वृ० प० ५३२)
- २ तेण कालेण तेण समएणं वाणियग्गामे नाम नगरे होत्या—चण्णओ । दूतिपलासे चेडए—चण्णओ ।
- ३ जाव पुढविमिलापट्टओ । तत्य ण वाणियग्गामे नगरे सुदसणे नाम सेट्टी परिवसइ—अड्ढे
- ४. जाण बहुजणम्स अपरिभूए समणोवानए अभिगय-जीवाजीवे जावः " 'विहरइ।
- प्र मामी समोसढे जाव परिमा पञ्जुवासङ।
  (ण० ११।११५)

<sup>&</sup>lt;sup>†</sup>लय : स्वामीजी ! थारा दर्शन

# \*मुणो भन्य प्राणी रे, वीर दयान प्रयान नणी वर वाणी रे॥ (श्रुपद)

- ६. मेठ सुदर्गण तिण गर्म रे, स्त्राम आया नी नार। कया मुणी हरस्यो घणो रे, आनंद धरो अपार।।
- ७ रनान जाव भगल करी रे, किया सर्व अलकार।
  प्रवर विभूषित तनु भयो रे, निकल्यो घर थी बार।।
- द. कोरंट वृक्ष ना पूरंप नी रे, माना महित ने छत। मस्तक नेह धरीजतो रे, पम नानता पवित्र।।
- ह. मोटा पुरुष के तहनी रे, बागुरा कहिये श्रेण। तिण करि परवरियो छतो रे, चाल्यों है नगर मभेण।।
- १०. दूतिपनास अर्छ तिहा रे, आयो प्रभु रे पाम । पनाभिगम ऋषभदत ज्यू रे, जाव विविध पज्वाम ॥
- ११. चीर मुदर्शन मेठ ने रे, मोटी परपद माय। उभय धमें आएया तिहा रे, जाव आराधक थाय॥
- १२. सेठ मुदर्शन तिण समें रे, धर्म मुणी जिन पास ।

  हरप मनोप पायो धर्णा रे, बाह्य अम्यनर नास ॥
- १३. कठी श्री महावीर ने रे, वेड प्रदक्षिण तीन। जाय स्तुति शिर नामने रे, इम बोले चित लीन॥
- १४. काल प्रभु <sup>1</sup>कतिविध कहा। रे ? जिन कहै चउविध जाण । प्रमाण-काल निर्णाजिये रे, वर्ष वतादि प्रमाण ॥

बा॰-ए अद्यात्तम नो ईन विधेप नाणयां।

१५. यथायुनिवृत्ति दूसरो रे, आउमा जेण पकार। यांच्य तिमहिज भोगवै रे, नरकादि गति नो विचार।।

बार—ए अतापायर्ज आयु गर्भ नो अनुभय विभिन्न जानायो । मर्ग मसायो जोग भे ईश एर्न मधा—जिल जीवे नरफ, शिर्म, सनुष्य, देव नो ने लिन प्रकार परिषे दह भव में विषे आज्यो याच्यो ने आज्या शिल प्रकार परिषे लग भव ने निषे पाने ने प्रधानुनिर्वालनाच परिषे ।

१६. त्रं मरण वरिने विशिष्ट छै रे, ने मरण-नाल परिपाय । तथा मरण हिल वाल है रे, महिसे मरण है जालपर्याय ॥

- ६ तए म से सुदंसमें मेट्टी दमीने बहाए एउट्टें समाने इट्टाहरू
- प्राण्णय तात्र (सल्याल) पार्यान्यने मन्त्रात्रतानः विभूतिण्याओ गितासे परिनिध्यमः
- सर्वेदिमानक्रमेण छत्ति धनिक्रमाणैण पार्वाकान-गारेण
- सहवापुरिस्तरस्मुनापरिस्तिते पाल्यिकामं स्तर स्वयस्थ्यतेष् निग्नस्थः
- १० लेकेन दूरियानामें चेदण लेकेन समसे समन महाशीर नेकेन जनानन्छन, जनानन्छिन समस भगत महाशीर पन्नित्रेण अभिगमेण अभिगन्छन, जहा जनभारती (भ० ६११४४) जान निविद्याण प्रमुखासान्नार प्रज्यान्त्रात ।
  (८० ११११६०)
- ११ नग ग नगणे भनय महावीरे गुरमणस्य महिन्स मेर्नेत य महिनमहातियाग परिमाग धरम परिकाद दार आणाग् आसहम् भवर । (१० ११।११)
- १२ तम पासे सुदसमें नेही समाप्त समयक्त महादीकर प्रतिय धरम सोनवा निसम्म महापुट्टे
- १३ उद्वाप् उद्वेष्ट, उद्रवेना समय भगत महार्शन निक्तन्त्रे जात (म॰ पा०) नर्मासन्त एउ प्यामी (पा० ११४१०)
- १८ गतिकित पा भते । रानि पापनी १ मुक्तमा । पत्रिकित पानि पापनी म जत्र-पासल-गति पमाणनार्व (त. पसीयते-परिष्ठियो केर पर्य-गति नत प्रमाण म. पासी मात्रकृति प्रमात्मा १ (गृह पह ४२३)

बार-अद्धाराज्यम विशेषी (इस्मादि प्रश्नः (प्राप्तः 123)

१४ शत् उनियानियाने ।
'जहा उनियानियाने । जि. यथा—देन प्रवारेणातूयः 
निर्मृति —यगा अथा य नाप — 'प्रतियं प्रवारे 
प्रयासुनिर्मृतियानो —सार्वादापूर्वप्रभाः 
(१० प्रवारे ३३)

मार-जय पाद्यानगर गणामुन्तानिकृत्यादिताल सर्वेषकेष समानिकीषण्य स्थान पर्यु च--रेराव्यविक्रियमण्या देशाण प्रस्ताव कुल रेल्क ह रेराव्यविक्रमण्यादे गार्थिक प्रमाण्यस्य स्टेस्स

# ## [m. 12, mr 1 25] 2.2

<sup>&</sup>quot;लय: राजा राजी गंग भी रे

- १७ अद्धा समयादि विशेष छै रे, ने रूप काल अद्धा-काल। चद्र सूर्य नी चाल थी नीपजै रे, द्वीप अढाइ मे न्हाल।।
- १८ प्रमाण काल प्रभु ! किसो रे ? जिन कहै द्विविघ न्हाल । दिवसप्रमाणज-काल छै रे, रात्रिप्रमाणज-काल ॥
- १६. च्यार पोहर नों दिन हुवै रे, च्यार पोहर नी रात। पोहर तणाज प्रमाण ने रे, हिव कहिये अवदात।। २०. उत्कृष्टी हुवै पोरसी रे, मृहूर्त्तं साढा च्यार। दिवस तणी तथा रात्रि नी रे, अह निशि मुहूर्त्तं अठार।।
- २१ जघन्य पोरसी एतली रे, तीन मुहूर्त्त नी विचार। दिवस तणी तथा रात्रि नी रे, अह निश्चि मुहूत्त वार॥
- २२ हे भगवत । हुवै यदा रे, उत्कृष्ट पोरसी माग। दिवस तणी तथा रात्रि नी रे, अह निशि चोथो भाग।। २३ तदा हुवै भाग केतला रे, मुहूर्त्त भागे करि हान। थाता जघन्य तीन मुहूर्त्त नो रे, दिवस तथा निशि जान।

- २४. मुहूर्त्त केतले भाग, घटावताज घटावता। तीन मुहूर्त्त नी माग, हुवै पोरसी जघन्य ए॥
- २५. <sup>1</sup>यदा जघन्य थी पोरसी रे, तीन मुहूर्त्त नी होय। दिवस तणी तथा रात्रि नी रे, तेह थकी वृद्ध जोय।।
- २६ तिण काले भाग केतला रे, मुहूर्त भागे करि वृद्ध। पोहर साढा चिहु मुहूर्त्त नो रे, दिन तथा निशि नो प्रसिद्ध।।
- २७ श्री जिन भार्स सुदर्शणा । रे, उत्कृष्ट पोहर जिनार। दिवस तणो तथा रात्रिनो रे, मुहर्त्त साढा च्यार॥
- २८ भाग एक मुहूर्त्त तणा रे, एक सौ वावीस होय। इक-इक भाग घटावता रे, जघन्य तीन मुहूर्त्त जोय।।
- २६ दिवस तणी तथा रात्रि नी रे, कही पोरसी एह।
- उत्कृष्ट पोहर थी इह विघे रे, जघन्य पोहर इम लेह ॥ ३०. जघन्य पोरसी ह्वं जदा रे, मुहूर्स तीन प्रमाण।
- दिवस तणी तथा रात्रि नी रं, ते दिन थी वृद्धि जाण।।
- ३१ भाग एक मुहूर्त्त तणा रे, एकसौ वावीस घार। इक-इक भाग वघारता रे, मुहूर्त्त साढ़ा च्यारा।
- \*लय: राजा राणी रंग थी रे

- १७ अद्धाकाले। (ण० ११।११६) 'अद्धाकाले' त्ति समयादयो विशेपास्तद्वूपः कालोऽद्धा-काल'—चन्द्रसूर्यादित्रियाविशिष्टोऽद्धंतृतीयद्वीपसमुद्रा-न्तर्वर्त्ती समयादि । (वृ० प० ५३३)
- १८. से कि त पमाणकाले ?
  पमाणकाले दुविहे पण्णत्ते, त जहा—दिवमप्पमाणकाले, राडप्पमाणकाले य ।
- १६ चउपोरिसिए दिवसे चउपोरिसिया राई भवड । अथ पौरुपोमेव प्ररूपयन्नाह— (वृ० प० ५३३)
- २०. उनकोसिया अद्वपचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवर्ड 'अद्वपचमुहुत्त' ति अप्टादणमुहुर्त्तम्य दिवसस्य रात्रेवी चतुर्थो भागो यस्मादर्द्वपञ्चममुहूर्त्ता नव घटिका दृश्यर्थः ततोऽर्द्वपञ्चमा मुहूर्त्ता यस्या सा तथा
- २१ जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्म वा राईए वा पोरिमी भवइ। (ण॰ ११।१२०) 'तिमुहुत्त' त्ति द्वादणमुह्त्तंस्य दिवसादेश्चतुर्थो भाग-स्त्रिमुह्त्तों भवति अतस्त्रयो मुह्त्तों —पट् घटिका यस्या सा। (वृ० प० ५३४)

(वृ० प० ५३४)

- २२ जदा ण भते । उक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवड
- २३,२४ तदा ण कितभागमुहुत्तभागेण परिहायमाणी-परिहायमणी जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवई ?
- २५,२६ जदा ण जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा ण कतिभागमुहुत्तभागेण परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपचम-मुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?
- २७ सुदसणा । जदा ण उक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता दिव-सस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ।
- २८,२६ तदा ण वावीससयभागमुहुत्तभागेण परिहायमाणी-परिहायमाणी जहिण्या तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ।
- ३०-३२ जदा वा जहिण्णया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ तदा ण वावीससयभागमुहुत्त-भागेण परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ। (श०११।१२१)

३२ दिवस तणी तथा रात्रि नी रे, उत्कृष्ट पोरसी एह। जघन्य पोहर थी इह विधे रे, उत्कृष्ट पोहर इम लेह।।

वा॰—जिवारै साढा च्यार मुहूर्त्त नी पोरसी थावै ते दिवस थकी एक मुहूर्त्त नो एक सौ वावीसमो भाग दिवस-दिवस प्रतै घटावता-घटावता ज्या लगै जघन्य तीन मुहर्त्त नी पोरसी हुवै तिहा थकी प्रारभी दिवस दिवस प्रते मुहूर्त्त नो एकसी वावीसमो भाग पोहरसी माहि वधावता-बधावता ज्या नगै साढा च्यार मुहूर्त्त नी पोहरसी। पोहरसी प्रति हानि वृद्धि कही।

इहा साढा च्यार मुह्तं ने अने तीन मुह्तं ने विशेष दोढ मुह्तं ते एक मी तयासी दिने करी वर्ध तथा घटै ते दोढ मुह्तं १८३ भागपणे व्यवस्थापिये। तिहा एक मुहूत्तं ना १२२ भाग कीजै। तिवारे दोढ मुह्तं ना १८३ भाग हुवै। इण न्याय पोहरसी मे मुहूत्तं नो एक सौ वावीसमो नित्य वधावणो तथा घटावणो।

३३ उत्कृष्ट पोरमी ह्वं कदा जी, मुहर्त्त साढा च्यार। दिवस तणी तथा रात्रि नी जी ? ते भाखो जगतार।

३४. जघन्य पोरसी ह्रै कदा जी, तीन मुहूर्त्त नी ताम। दिवस तणी तथा रात्रि नी जो ? प्रश्न दाय अभिराम।।

३५ श्री जिन कहै सुदसणा । रे, उत्कृष्ट दिवस जिवार । अठारे मुहुर्त्त नो हुवै रे, जघन्य निगा मुहूर्त्त वार ॥

३६ तदा उत्कृष्ट पोहर दिन तणी रे, मुहूर्त्त साढा च्यार। जघन्य तीन मुहूर्त्त तणी रे, रात्रि पोरसी विचार॥

३७. अथवा जदा उत्कृष्ट थी रे, निशि हुवं मुहूर्त्त अठार। जघन्य वार मुहूर्त्त तणो रे, दिवस हुवं तिण वार।।

३८. तदा उत्कृष्ट निशि पोरसी रे, मुहर्त्त साढा च्यार। जघन्य थी तीन मुहर्त्त तणी रे, दिवस नी पोरसी घार।।

३६ प्रभु <sup>।</sup> उत्कृष्ट दिवस हुनै कदा जी, अठारै मुहूर्त्त प्रमाण । द्वादय मुहूर्त्त नी हुनै रे, रात्रि तदा पहिछाण ॥

४०. अथवा उत्कृष्ट थकी हुवे जी, अठारे मुहूर्त्त रात। हादश मुहूर्त्त नो तदा जी, दिवस जघन्य विख्यात।

४१ श्री जिन भाखे सुदसणा रे, आसाढि पूनम दिन्न। जल्कुण्ट मुहुत्तं अठार नो रे, बारे मुहूर्त निशि जघनन।।

# सोरठा

- ४२. पंच वर्ष जुग तास, पचम वप अपेक्षया। आसाहि पूनम् जास, दिवस अठारे मुहूर्त्त नो।।
- ४३ तेह दिवस नो जाण, साढा च्यार मुहूर्त तणो। पोहर तणोज प्रमाण, पिण सहु नहि आसाढि पूर्णिमा।।
- ४४. अन्य वर्ष रे माय, जे दिन कर्क सक्राति ह्वे। तेहिज दिवस कहाय, अठ दश मुहत्तं दिन वृत्ती ॥

- वार 'वावीससय नाग मुहत्त भागेण' ति इहा द्वंप ञ्चमाना त्रयाणा च मुहत्तीना विद्येष साद्धी मुहत्ती, स च व्यशीत्यधिकेन दिवसणतेन वर्षते हीयते च, स च मार्ची मुहत्तीस्थ्यणीत्यधिक णतभागतया व्यवस्थाप्यते, तत्र च मुहत्तीं होविणात्यधिक भागणत भवत्यतोऽनिधीयते— 'वावीमे' त्यादि दाविणात्यधिक णततमभागरपेण मुहत्तीभागेनेत्यर्थः। (वृष्ण ५३४)
- ३३ कदा ण भते ! उक्कोनिया अद्यप्तममुहुना दिवसम्म वा राईए वा पोरिमी भवई ?
- ३४ फदा वा जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसम्म वा रार्ट्ण वा पोरिमी भवड ?
- ३५ सुदमणा । जदा ण उनकोमए अट्टारमगृहने दिवसे भवड, जहण्मिया दुवानसमृहुना राई भवट ।
- ३६ तदा ण उक्कोसिया अद्भवसममुहुना दिवसम्य पोरिमी भवड, जहण्यिया तिमुहुन्ता राईए पोरिमी भवड ।
- ३७ जदा ण उक्कोिसया अट्ठारममुहित्तिया रार्ट भन्नड, जहण्णिए दुवालममुहुत्ते दिवसे भवड ।
- ३८ तदा ण जाकोसिया अद्वयनममुहुत्ता रार्रण् पोरिमी भवड, जहण्णिया तिमुहुना दिवसस्य पोरिमी अवड । (ण० ११।१२२)
- ३६ कदा ण भते । उनकोसए अट्ठारममुहुने दिवमे भजर, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता रार्ड भवउ ?
- ४० कदा वा उन्नजेमिया अट्टारममुहत्ता रार्ट भवड, जहण्णए दुवालममुहुत्ते दिवसे भवड ?
- ४१ सुदमणा ! आमाङपुण्णिमाए उरागेसए अट्ठारम-मुहुत्ते दिवमे भवद, जहण्णिया दुवानममुरुता राई भवई ।
- ४२,४३ 'आमाडपुन्निमाए' इत्यादि इत् 'आराङगेण-मान्या' मिति यदुवत तत् पन्नवत्तरिक्त्युन पान्तिम-वर्गपितयाऽत्रसेय, यतन्तर्भवापाटपीर्णमान्यामण्डादश-मुहत्ती दिवमो भवति, अद्धेपनममुहर्गा च नत्यारपी भवति । (यु० प० ४३४)
- ४४ वर्णान्तरे तु यमदिवमे कार्यगणानिजीयो पत्रैयामी भवतीति नमयमेयमिति । (पृ० प० ५३४)

- ४५ \*पोसी पूनम उत्कृष्ट थी रे, मुह्तं अठारे रात। द्वादश मुह्तं नो कहै रे, जघन्य दिवस जगनाथ।।
- ४६. छै भगवत । दिवस निशा जी, सरिखा निश्चे होय ? हता अत्थि जिन कहै रे, अछै सरीखा जोय।।
- ४७. सरिखा दिवस अने निशा जी, किण काल जगनाथ । जिन कहै चैत्र आसोज नी र, पूनम सम दिन रात ॥

- ४८ पूनम चैत्य आसोज, नय वयहार अपक्षया।
   स्याय दृष्टि करि सोभ, वृत्तिकार आस्यो इसो।।
- ४६ निय्चय थकी निहाल, कर्क मकर सक्राति ना। दिवस थकी इम भाल, आरभीजे आगले॥
- ५० अहो रात्रि अवलोय, साढा एकाणु विषे। दिवस रात्रि सम होय, पनर मृहनं दिन फुन निया।।
- ५१. महूर्त पूणा च्यार, दिवस तणी डक पोरसी। निधि नी पिण अवधार, मृहुर्त्त पूणां च्यार नी।।

वा०—ए मफ़ाति नु न्याय वृत्ति मे लिर्यु तिम कह्यु अने सूयं मवच्छर इद्द दिन नो हुवै। तेहना वारै भाग ते १२ माम। तिहा वारमो भाग साटा तीम दिन नो ते एक माम हुवै। सर्वाभ्यतर मड़ले सूयं आवै तिवारे अठारै मुहनं नो दिवम वारे मुहत्तं नी रात्रि हुवै। तिका तिथि ए सूर्यं संवच्छर नी आसादी पूर्णिमा जाणवी। तेहशी साढा एकाणुमे अहोरात्रे सूर्यं मवच्छर नी आमोजी पूर्णिमा जाणवी। तिवारे दिन रात्रि सम हुवै अने सर्व वाह्य मडले सूर्यं आवै तिवारे १२ मुहत्तं नो दिवस १८ मुहत्तं नी रात्रि हुवै। तिका तिथि सूर्यं मवच्छर नी पोसी पूर्णिमा जाणवी। तेहथी साढा एकाणुमे अहोरात्रे तिका तिथि ते सूर्यं मवच्छर नी चैत्री पूर्णिमा जाणवी। तिवारे दिन रात्रि सम हुवै, ए निश्चय नय नु मत कह्यु।

- ५२. \*काल-प्रमाण ए आखियों रे, पूछे सुदर्शण फेर।
  यथायुनिर्वृत्ति-काल स्यूं जी रे जिन कहै सुण चित घेर।।
  ५३. नारक तिरि मनु देवता रे, जितो बाद्यो आयु न्हाल।
  अतमुहूर्त्त आदि दे रे, यथायुनिर्वृति काल।।
- ५४ मरण-काल प्रभु ! स्यू कह्यो जी, जुदो गरीर थी जीव। तथा जीव थकी तनु ह्वं जुदो रे, मरण-काल ते कहीव।।

चा॰ —अनै मूत्र में दोय बार वा णब्द ते णरीर जीव नै विषे अविध भाव नी इच्छा अनुसारीपणो जणायवा ने अर्थे।

५५. अद्धा-काल प्रभु । स्यू कह्यो जी, जिन कहै अनेक प्रकार । समयद्वयाए पाठ नो जी, आगल अर्थ उदार ।।

- ४४. पोसपुण्णिमाए ण उपकोसिया अट्टारममुहत्ता राई भवड, जहण्णाए द्वालसमृहत्ते दिवसे भवड ।
  - (ण० ११।१२३)
- ८६. अस्यि णंभने । दिवसा य राईको यसमाचेव भवति ? हता अस्यि ।
  - (भ० ११।१२४)
- ४७ कदा ण भने । दिवसा य रार्ज्यो य समा चेव भवति ? सुदसणा । चित्तासीयपुण्णिमासु एत्थ ण दिवसा य रार्ज्यो य समा चेव भवति ।
- ८६ नत्तागोयपुन्निमाएगु ण' मित्यादि यदुच्यते तद् व्यव-हारनयापेक्ष । (वृ० प० ५३४)
- ४६ निण्ययतस्तु कार्कमकरमकान्तिदिनादारस्य (वृ० प० ५३४)
- ५० पण्णरसमुद्वृत्ते रार्ड भवड । चढभागमुद्दुत्तभागूणा चडमुद्धृता दिवसस्य वा रार्डए वा पोरिसी भवड । यर् द्विनवितितममहोरात्र तस्याद्धे समा दिवरात्रि-प्रमाणतेनि, तत्र च पञ्चदणमुद्द्ते दिने रात्रौ वा पौरपीप्रमाण त्रयो मुद्धत्तिस्यण्य मुद्दत्तेचतुर्भागा भवन्ति, दिनचतुर्भागरूपत्वात्तस्याः ।

(यु० प० ५३४)

- ४२ सेत्त पमाणकाते । (श० ११।१२४) में किंत अहाउनिव्यक्तिकाले ?
- ५३ अहाउनिव्यक्तिकाले—जण्णं जेण नेरइएण वा तिरिक्यजोणिएण वा मणुम्सेण वा देवेण वा अहाउयं-निव्यक्तिय । सेत्त अहाउनिव्यक्तिकाले ।

(श० ११।१२६)

- ५४ में कि त मरणकाल ? मरणकाल—जीवो वा सरीराओ सरीर वा जीवाओ । मेत्र मरणकाले । (श० ११।१२७)
- बा०-या गव्दी शरीरजीवयोरविधभावस्येच्छानुसारिता-प्रतिपादनार्थाविति । (वृ० प० ५३५)
- ४५ से किंत अद्धाकाले ? अद्धाकाले अणेगविहे पण्णत्ते । (पा०टि०७)

<sup>\*</sup>लय: राजा राणी रंग थी रे

- ५६. समय रूप जे अर्थ छै रे, तेह तणो भाव जोय। तेणे करी अद्धाकाल छैरे, समय भावे करि सोय।।
- ५७. इमज आवलिका भावे करी रे, मुहूर्त दिवस पिण एम। जाव उत्सर्पिणी भाव थी रे, अद्धाकाल कह्यो तेम।।

- ५८. समय आदि दो काल, पूर्वे जे आख्यो अछै। तेहनोईज निहाल, स्वरूप कहियै ५६. \*वे भाग छै जिहा छेदन विषे रे, अथवा छेदता दोय। वे खड शीघ्र हवै नही रे, तेह समय अवलोय।।
- ६० वृद असखेज्ज समय नो रे, तास मेलवो पेख। तास सयोग तेणे करी रे, कहियै आवलिका एक।। ६१ सल्याती आवलिका करी रे, छठा शतक में जाण। सप्त उद्देशे जिम कहच् रे, जाव सागर इक माण।।
- ६२. हे भगवंत । पत्योपमे रे, सागरोपम करि सोय। स्यू प्रयोजन एहनो रे ? हिव जिन उत्तर जोय।। ६३. पल्योपम सागरोपमे रे, चिउ गति आयु माप। नेरिया नी किता काल नी रे, स्थिती कही प्रभु ! आप ?
- ६४. एव स्थितिपद चतुर्थो रे, भणवो समस्तपणेह। जावत अजघन्योत्कृष्ट स्थिति रे, तेतीस उदिघ कहेह ॥

#### सोरठा

- ६५. पल्य सागर नु सोय, अति प्रचुर अद्धा करि। तेहनो क्षय अवलोय, किम सभवै तसु प्रश्न हिव?
- ६६ \* छै प्रभु ! पत्य सागर तणो रे, क्षय ते सर्वथा नाश ? अपचय ते क्षय देश थी रे, जिन कहै हता तास ॥
- ६७. किण अर्थे प्रभु । इम कह्य ुरे. पत्य सागर नो विणास । क्षागल उत्तर एहनो रे, श्री जिन देस्य प्रकाश ।। ६८. दोय सी ने छत्तीसमी रे, आखी ढाल उदार। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी रे, 'जय-जश' हरष अपार ॥

- ५६ समयद्वयाए 'समयद्वयाए' त्ति समयरूपोऽर्थः समयार्थस्तद्भावस्तत्ता तया समयभावेनेत्यर्थं (वृ० प० ५३५) ५७ आवलियट्टयाए जाव उस्सप्पिणीट्टयाए
- ५८ अथानन्तरोक्तस्य समयादिकालस्य स्वरूपमभिधातु-(वृ० प० ५३५)
- ५६ एस ण सुदसण। ! अद्धा दोहाराछेदेण छिज्जमाणी जाहे विभाग नो हन्वमागच्छइ, सेत्त समए समयद्र-दी हारी-भागी यत्र छेदने दिधा वा कार --करण यत्र तद् द्विहार द्विधाकार वा तेन (वृ० प० ५३५)
- ६० असखेज्जाण समयाण समुदयसिमइसभागमेण सा एगा आवलियत्ति पवुच्चइ।
- ६१ संबेज्जाओ आविलयाओ उस्सासी जहा मालिउ सेए (भ० ६।१३२-१३४) जाव---

(श० ११।१२८)

सालिउद्देसए ति पष्ठशतस्य सप्तमोद्देशके (वृ० प० ५३५)

- ६२ एएहि ण भते । पिलओवम-सागरीवमेहि कि पयोयण ?
- ६३ सुदसणा । एएहि पलिओवम-सागरोवमेहि नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवाण आउयाइ मविज्जति । (श० ११।१२६)

नेरइयाण भते । केवइय काल ठिई पण्णता ?

- ६४ एव ठिइपद निरवसेस भाणियन्व जाव अजहण्ण-मणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णता । (श० ११।१३०)
- ६५ अथ पल्योपमसागरोपमयोरितप्रचुरकालत्वेन क्षयम-सभावयन् प्रश्नयन्नाह---(बृ० प० ५३६)
- ६६ अत्थि ण भते । एएसि पलिओवन-सागरोवमाण खएति वा अवचएति वा ? हता अत्थि।

(श० ११।१३१) 'खये' ति सर्वविनाश 'अवचए' ति देशतोऽपगम (वृ० प० ५३६,५४०)

६७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थि ण एएसि पिल बोवमसागरोवमाण खएति वा अवचएति वा ?

<sup>\*</sup>लय: राजा रानी रग थी रे

#### दूहा

- १. क्षय पत्योपम प्रमुख नों, उत्तर द्वारं स्वाम । तेहिज सुदर्शण चरित्त करि, आखे छै अभिराम ॥ \*वीर सुदर्शन ने कहै ॥ (घ्रुपद)
- २ तिण काले ने तिण समय, नगर हित्थणापुर नीको जी काड । सहस्राव वन उद्यान थो, तसु वर्णन तहतीको जी काइ ॥
- उ तिण हित्थणापुर नगर मे, वल नामे थो राजा जी काइ। वर्णन कोणिक नी परे, राज्य लक्षण गुण ताजा जी काइ।।
- ४. तिण वल नामा राय नै, प्रभावती पटराणी जी काइ। कोमल कर पग जेहना, यावत विचरे जाणी जी काइ॥
- प्रभावती देवी तदा, अन्य दिवस किणवारे जी काइ। तेहवै पुन्यवत योग्य ने, एहवै वास अगारे जी काइ।।
- ६. नेह महत घर केहवो, भ्यतर चित्र सहीतो जी काइ। वाहिर घवल्यो ऊजलो, पेखत पामै प्रीतो जी काइ॥
- ७ कोमल पापाणादिके, घृष्ट घस्योज घठार्चो जी काइ।। मुहरो फेर मृदु कियो, मृष्ट सचिक्कण मठार्यो जी काइ।।
- द चित्र विचित्र चित्राम सू, भाग ऊपरलो आछो जी काइ। देदीप्यमान सुदीपतो, अघोभाग तल जाचो जी काइ॥
- ६ चद्रकातादिक मणि करी, कर्केतनादिक सारो जी काड।
  तिण रत्ने करि महिल नो, न्हास गयो अधकारो जी काड।
- १० घणो सरीको भली परे, वहिच्यो कीघो सारो जी काइ।
  भूमिभाग मनहर अछै, अति रमणीक उदारो जी काइ॥
- ११. सरस सुगघ पच वर्ण ना, मूक्या पुष्प सुवृंदो जी काइ।
  पूजा उपचारे करी, निरखत नयनानदो जी काइ॥
- १२ कृष्णागर वर चीड नी, मेल्हक धूप नी गधो जी कांइ। मघमघत अद्भूत छै, घ्राण मने सुखकदो जी काइ।।
- १३. सुगव वरगिंध—वास छै, सोरभ ना अतिशय कर जी काइ।
  गुटिका जे गव द्रव्य नी, तेह सरीख गवागर जी काइ।।

- १ अथ पल्योपमादिक्षय तस्यैव सुदर्शनस्य चरितेन दर्शयन्निदमाह— (वृ०प० ५४०)
- २ तेण कालेण तेण समएण हित्यणापुरे नाम नगरे होत्था—वण्णओ। सहसववणे उज्जाणे—वण्णओ।
- ३ तत्थ ण हित्थणापुरे नगरे वले नाम राया होत्या— वण्णसो।
- ४ तस्स ण वलस्स रण्णो पभावई नाम देवी होत्था— सुकुमालपाणिपाया वण्णको जाव 'विहरइ (ण० ११।१३२)
- ५ तए ण सा पभावई देवी अण्णया कयाइ तसितारिसगिस वासघरिस 'तिस तारिसगिस' ति तिस्मस्तादृशके—वक्तुम-शक्यस्वरूपे पुण्यवता योग्य इत्यर्थ: । (वृ० प० ५४०)
- - म विचित्तउल्लोग-चिल्लियतले विचित्तउल्लोयचिल्लियतले' ति विचित्रो—विविध-चित्रयुक्त. उल्लोक: उपरिभागो यत्र 'चिल्लिय' ति दीव्यमानं तल च अधोभागो यत्र तत्तथा ((वृ० प० ५४०)
- ६ मणिरयणपणासियधयारे
- १० वहुसमसुविभत्तदेसभाए
- ११. पचवण्णसरससुरभिमुक्कपुष्फपुजोवयारकलिए पुष्प-पुञ्जलक्षणेनोपचारेण—पूजया कलित यत्तत्तथा (वृ० प० ५४०)
- १२, कालागरु-पवर-कुदुरुक्कतुरुक्क-धूव-मधमघेत गद्युद्धया-भिरामे कुन्दुरुक्का—चीडा तुरुक्क—सिल्हक (वृ० प० ५४०)
- १३ सुगधवरगिधए गद्यबिट्टभूए
  'सुगिधवरगिधए' ति सुगन्धय सद्गन्धा वरगन्धाः—
  वरवासा सन्ति यत्र तत्तथा तत्र 'गधविट्टभूए' ति
  सीरभ्यातिशयाद्गन्धद्रव्यगुटिकाकल्पे (वृ० प० ५४०)

<sup>\*</sup>लय: कुशल देश सुहामणो

- १४ एहवा महल विषे अछै, पुन्यवत सूवा जोगो जी कोइ। सेज्या महारिलयामणी, सयन थकी आरोगो जी काइ।।
- १५. तेह पत्यक विषे अछै, आलिगन करी सहीतो जी काइ। तनु प्रमाण तिकया अछै, विहु पसवाड सुरीतो जी काइ।।
- १६ मस्तक नै विल पग विषे, ओसीसा सुख सीरो जी काइ। बिहु पासे ऊचो अछै, विचमे नम्यो गभीरो जी काइ।।
- १७. किहाइक गडविब्बोयणे, पाठ इसो दीसतो जी काइ। हडी पर रिचया अछै, गाल मसूरिया ततो जी काइ।।
- १८. गगा तट नी वालुका, पग मेल्या थी न्हाली जी काइ। पग नीचो जाव तदा, एसम सेज सुहाली जी काइ।।
- १६. रूडी परि निपजावियो', अतसी वस्त्र कपासो जी काइ। तेह युगल छै इकपटो, पट आच्छादन तासो जी काइ।।
- २०. रूडी परि रचियो अछै, रजस्त्राण सुरीतो जी काइ। आच्छादन नो विशेष ए, रज रक्षाय पुनीतो जी काइ॥

- २१. भोग अवस्था नाय, ते वेला वस्त्रे करी। मेज्या ढाकै ताय, आच्छादन कहियै तसु ॥
- २२ \*षट छप्पर ढाक्यो अछ, राते वस्त्रे परितो जी काइ। मशकगृह अभिघान ते, वस्त्र विशेपावरितो जी काइ॥
- २३. वस्त्र विशेषज चरम नो, तेह स्वभाव थी न्हाली जी काइ। अति कोमल होवै अछ, ते सम सेज सूहाली जी काइ॥
- २४ रू विल बूर वनस्पति, माखण ने अकतूलो जी काड। सेज स्हाली एहवी, मनहर चित अनुकूलो जी काइ।।
- २४. प्रवर सुगंघ प्रधान जे, पुष्प अने फुन चूर्णो जी काइ। तिण करिने सञ्या तणी, पूजा युक्त सुपूर्णो जी काइ।।
- २६ महल सेज वर्णन तणी, वे सौ सैतीसमी ढोलो जी काइ। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी,

'जय-जश' हरष विशालो जी काइ।।

## १४. तंसि तारिसगंसि सयणिज्जसि

- १५. सालिगणवट्टिए

  'सालिगणवट्टिए' त्ति सहालिंगनवर्त्या—भरीर
  प्रमाणोपद्यानेन यत्तत्तथा (वृ० प० ५४०)
- १६. उभओ विव्वोयणे दुहुओ उण्णए मज्झेणयगभीरे 'उभओ विव्वोयणे' उभयत —शिरोऽन्तपादान्तावा-श्रित्य विव्योयणे—उपधानके यत्र तत्तथा

(वृ० प० ५४०)

- १७ 'गडिवञ्बोयणे' ति क्वचिद् दृश्यते तत्र च सुपरिक-मितगण्डोपधाने इत्यर्थः। (वृ० प० ५४०)
- १८ गगापुलिणवालुय-उद्दालसालिसए
  गगापुलिनवालुकाया योऽवदाल —अवदलनपादादिन्या
  सेऽधोगमनिमत्यर्थः तेन सदृशकमितमृदुत्वाद्यत्तत्तथा
  (वृ० प० ५४०)
- १६ ओयवियखोमियदुगुल्लपट्टपिङच्छयणे जविचय' ति परिकामित यत् क्षौमिक दुकूल— कार्पासिकमतसीमय वा वस्त्र युगलापेक्षया यः पट्ट शाटक. स प्रतिच्छादन—आच्छादन यस्य तत्तथा (वृ० प० ५४०)
- २० सुविरइयरयत्ताणे सुष्ठु विरचित—रचित रजस्त्राण आच्छादनविशेपः (वृ० प० ५४०)
- २१,२२ अपरिभोगावस्थाया यस्मिस्तत्तया (वृ० प० ५४०) रत्तसुयसवुए रक्ताशुकसवृते—मशकगृहाभिधानवस्त्रविशेषावृते (वृ० प० ५४०)
- २३,२४ सुरम्मे आइणग-रूय-वूर-नवणीय-तूलफासे आजिनक—चर्ममयो वस्त्रविशेष स च स्वभावा- दितकोमलो भवति रूत च—कप्पीसपक्ष्म वूर च— वनस्पतिविशेषः नवनीत च—म्प्रक्षण तूलण्च—अर्कतूल. इति द्वन्द्वस्तत एपामिव स्पर्णो यस्य तत्त्रथा (वृ० प० ५४०)
- २५ सुगघवरकुसुम-चुण्ण-सयणोवयारकलिए सुगन्धीनि यानि वरकुसुमानि चूर्णा एतद्व्यतिरिक्त-तथाविधशयनोपचाराश्च तै कलितं यत्तत्तथा। (वृ० प० ५४०)

१ अगसुत्ताणि मे ओयविय पाठ है। वृत्ति मे उविचय पाठ लिया गया है। जोड इसी पाठ के आधार पर की गई है।

दूहा

१. एहवो सिज्या ने विपे, प्रभावती मुविधान। अर्द्ध रात्रि अद्धा समय, सुप्त जागरा जान।। २. न अति सूती नीद मे, न अति जाग्रत न्हाल।

प्रचलायमान थकी तदा, अल्प नीद कर भाल।।

३. एहवे रूपे पेखियो, मोटो स्वप्न उदार। कारक ने कल्याण नों, उपद्रव रहित विचार॥

४. कारक धन्य तणो तिको, मगलीक सिरताज। शोभा लक्ष्मी सहित ते, महा स्वप्न मृगराज।।

प्र सिघ स्वप्न देखी करी, जागी राणी आप। वर्णन स्वप्न तणो कहू, साभलज्यो चुपचाप॥

\*प्रवल अति सवल हरि अचल देख्वो स्वपन (ध्रुपदं)

६. हार मोत्या तणो रजत रूपो घणो, क्षीर समुद्र नों नीर आछो। चद्र नी किरण बिल किणया पाणी तणा,

रजत महासेल वेताढच जाचो ॥

७. एहथी ऊजलो अधिक महिमानिलो, वर्ण वर स्वेत विस्तीर्ण वारू। नेत्र देख्या ठर् अधिक मन ने हरै, देखवा योग्य आरोग्य चारू॥

८. पवर कलाइ स्थिर लष्ट मनोज्ञ छै,

वाटुली अति भली मृदु सुहाली। स्थूल अति मृल जे तीक्ष्ण दाढा करी,

विडम्बित विकृत जिम मुख निहाली।।

सखर समारिया पवर सस्कारिया, जात्य जे कमल तदवत सुहाला।
 मान उपपेत शुभ चेत सोभन मभे,

लष्ट वे ओष्ठ अति श्रेष्ठ आला ॥

१०. रक्त जे कमल ना पत्र तेहनी परै, तालुओ जीभ सुखमाल जेहनी। कोमल मध्य ए अधिक मृदु गुण करी,

ते भणी ओपम दीघ एहनी।।

११ मूस मे आवियो कनक तपावियो, आवर्त्त करत तदवत वतुल्ला। तडितवत विमल अति निमल ते सारिखा,

प्रवर शुभ नयन शोभन प्रफुल्ला ॥

#### सोरठा

१२. वाचनातरे वृत्त', रक्त कमल मृदु सारिखा। कोमल तालु उचित्त, निर्लालिताग्र-जीभ' विल ॥

<sup>\*</sup>सय: कडखा री

१ वृत्ति।

२ निस्सारित अग्रजिह्वा।

१,२ अद्वरत्तकालसमर्याम सुत्तजागरा थोहोरमाणी-ओही-रमाणी मुत्तजागर' त्ति नातिमुष्ता नातिजागरेति भाव. किमुग्त भवति ? 'ओहीरमाणी' ति प्रचलायमाना, (यु० प० ५४०)

३ अयमयाच्य ओराल कल्लाण सिव

४ धण्ण मगल्ल सस्मिरीय महासुविण

५. पासित्ता ण पटिबुद्धा

- ६,७ हार-रयय-धीरमागर-मसकिकरण-दगर्य-रययम-हासेल-पंडरतरोरुरमणिज्ज-पंच्छणिज्ज पाण्डुरतर.—अतिशुक्त उरु —विस्तीर्णो रमणीयो-रम्योऽत एव प्रेक्षणीयश्च—दर्णनीयो य स तथा तम्, इह च रजतमहार्शेलो वैताढ्य इति । (वृ०प० ५४०)
- विर-लहु-पउट्ठ-वट्ट-पीयर-मुिसिलट्ट-विसिट्ट-तिक्ख-वाढाविडवियमुह स्थिरी—अप्रकम्पी, लप्टी-मनोज्ञी . वृत्ता —वर्त्तुला पीवरा.—स्थूला ''विडंवित मुख यस्य स तथा (वृ० प० ५४०)
- एरिकम्मियजच्चकमलकोमल-माइयसोभतलहुओहु
   परिकर्मित—कृतपरिकम्मं यज्जात्यकमल तद्दत्कोमलौ
   मात्रिकौ—प्रमाणोपप्त्नौ शोभमानाना मध्ये लप्टौ—
   मनोज्ञौ ओप्छौ—दशनच्छदौ यस्य स तथा।
   (वृ० प० ५४१)

१० रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालुजीह
रक्तोत्पलपत्रवत् मृदूना मध्ये सुकुमाले तालुजिह्ने यस्य
स तथा (वृ० प० ५४१)

११ मूसागयपवरकणगतावियआवत्तायत-वट्ट-तिडिविमल-सिरसनयणं मूपा—स्वर्णादितापनभाजन तद्गत यत्प्रवरकनक तापित—कृताग्नितापम् 'आवत्तायत' त्ति आवर्त्तं कुर्वाण तद्वद् ये वर्णत वृत्ते च तिडिदिव विमले च सदृशे च परस्परेण नयने—लोचने यस्य स तथा । (वृ० प० ५४१)

१२,१३ वाचनान्तरे तु 'रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालु-निल्लालियगाजीह महुगुलियाभिसतिपगलच्छ' ति तत्र च प्कतोत्पलपत्रवत् सुकुमाल तालु निर्लालिताग्रा च जिह्वा यस्य स तथा त मधुगुटिकादिवत् 'भिसत'

- १३ मधु सेहत नी तेथ. गोली पीली जे हुवै। तदवत पीला नेत, वाचनातरे दृश्यते॥
- १४. \*पीवर मस कर पुष्ट अदुष्ट है, जघ अति चग सुविशाल तास। विपूल विस्तीर्ण प्रतिपूर्ण तसु खघ है,

जंघ अरु खघनो अति उजास।।

- १५. कोमल घवल अति सूक्ष्म वर पातला, लक्षण पसत्थ विस्तीर्ण वारू। एहवा खघ ना रोम ते केसरा, तास आटोप करि शोभ चारू।।
- १६. उच्छित—अर्ध्वीकृत अची कियो, सुष्ठु अधोमुखीकृत सधीको । अधिक शोभनपण जात ते नीपनो, भूमि आस्फालित पुच्छ नीको ।।
- १७ सौम्य अरु सौम्य आकार लीला करत,

वगाइ¹ करत हरि चित्त हरतो ।

तेह आकाश थी सहज ही उतरतो, निज मुख माहि परवेश करतो।।

- १८ ताम प्रभावती प्रवर उदार ए, जाव सश्रीक महास्वप्न जान। स्वप्न मे देख जागी छती हुए अति, जावत हृदय विकसायमान।।
- १९. मेघ नी घाराए आहण्यों फूलियें वृक्ष कदव नो फूल रूप। तिमज राणी तणा हरप नां वश थकी,

विकस्या अचा थया रोम कूप ॥

- २० तेह स्वप्न प्रतै ग्रही निश्चै करी, उठ सेज्या थकी तुरत चाली। देह ने मन तणी चपलता रहित छै, विलव सभ्रांत रहित हाली।।
- २१. राजहसीव शुभ गमन करती छती, जबर वल नृपति नी सेज आवै। इष्ट मनोहारी मन प्रीतिकारी भला,

वचन मनोज्ञ करि नृप जगावै ।।

२२ अतिही मनगमता ओदार कल्याण करि,

वाणि शिव घन्य मगल सश्रीको।

कोमल मधुर मजुल वचने करी, वोलती नृपति जगाय नीको।।

- २३. ताम वल राजाएँ आण दीधा छता, नाना प्रकार ना रत्न जाणी। चद्रकातादि मणी भात जे चीतरचा, एहवे भद्रासणे बैठी राणी।।
- २४ गमन थी ऊपनो श्रम जे टालियो, रालियो दूर सक्षोभ राणी। सुख वर अथवा शुभ आसन प्रति रही,

बोलती नुपति नै मिष्ट वाणी।।

त्ति दीप्यमाने पिंगले अक्षिणी यस्य स तथा । (वृ० प० ५४१)

- १४. विसालपीवरोरु पिडपुण्णविपुलखध
  विशाले—विस्तीर्णे पीवरे—उपिते ऊरू—जघे
  यस्य परिपूर्णो विपुलश्च स्कन्धो यस्य स तथा
  (वृ० प० १४१)
- १५. मिउविसयसुहुमलक्खणपसत्यविच्छिन्नकेसरसङोव-सोभिय मृदव. 'विसद' ति स्पष्टा. सूक्ष्माः 'लक्खण-पसत्य' ति प्रशस्तलक्षणा. विस्तीर्णा. केसरसटाः स्कन्धकेष-च्छटास्ताभिरुपशोभितो य. स तथा (वृ० प० ५४१)
- १६ ऊसिय-सुनिम्मिय-सुजाय-अष्फोडियलगूल उच्छित---ऊर्घ्वीकृत सुनिर्मित---सुष्ठु अघोमुखीकृत सुजात---भोभनतया जात आस्फोटितं च भूमावास्फा-लित लागूल येन स तथा (वृ० प० ५४१)
- १७. सोम सोमाकार लीलायत जभायत नहयलाओ ओवयमाण नियय-वयणमितवयत
- १८ सीह सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धा समाणी हट्टतुट्ट जाव (स०पा०) हियया
- १६. धाराहयकलवग पिव समूसवियरोमकूवा
- २०. त सुविण ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवलमसभताए अविलवियाए 'अतुरियमचवल' ति देहमनश्चापल्यरहित यथा

'अतु।रयमचवल ।त दहमनश्चापत्यराहत यः भवत्येवम् 'असभताए' ति अनुत्सुकया

(वृ० प० ५४१)
२१,२२ रायहससरीसीए गईए जेणेव वलस्स रण्णो
सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता वल रायं
ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि
ओरालाहि कल्लाणाहि सिवाहि धन्नाहि मगल्लाहि
सस्सिरीयाहि मिय-महुर-मंजुलाहि गिराहि
सलवमाणी-सलवमाणी पडिबोहेइ।

- २३ वलेण रण्णा अव्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयण-भित्तिचित्तसि भद्दासणिस निसीयित
- २४ आसत्या वीसत्या सुहासणवरगया वल राय
  'आसत्य' त्ति आश्वस्ता गतिजनितश्रमाभावात्
  'वीसत्य' त्ति विश्वस्ता सक्षोभाभावात् अनुत्सुका वा
  'सुहासणवरगय' त्ति सुखेन सुख वा शुभ वा आसन-वर गता या सा तथा (वृ० प० ५४१)

<sup>\*</sup>लय: कड़खारी

१. जभाई

२४. सुपन वर्णन तणी दोय सौ ऊपरें, एस अडतीसमी ढाल आखी।
पूज्य भिक्षु भारिमाल ऋपिराय थी,
'जय-जग' हरप आनन्द साखी।।

ढाल: २३६

# दूहा

- १ इप्ट जाय वच बोलती, सुदर भाग्वै रवाम। इम निञ्चै करि आज हूं, देवानुप्रिय । आम।।
- २ तेह्वी सिज्या ने विषे, देह प्रमाण पत्यंक । तिमज यावत निज मुख विषे, सिंघ प्रवेश मुक्षक ॥ ३. पेग्वी मृगपति स्वप्न प्रति, हूं जागी हे नाथ !
  - ते मार्ट देवानुप्रिय ! तुभ प्रति पूछू वात ।।
- ४ ए उदार यावत प्रभु, महास्वपन नृंपेख। कैहवूफल कल्याणकर, फल वृत्ति हुस्यै विशेख?
- ५ \*तिण अवसर वल राय, विनता मुख थी वाय। आछेत्राल। सुण हिय वर हरख्यो घणो।।
- ६ पायो परम संतोप, यावत मुख नो पोप । आछेलाल । हिरदो विकस्यो नृप तणो ॥
- ७ मेघ घाराए जेम, नीप कदय तरु तेम। आछेलाल। सुर्भि कुसुम तेहनी परै।।
- द. पुलिकत तनु थयो राय, रोमकूप विकसाय। आछेलाल। सहज स्वप्न अवग्रह करें।।
- ६. ईहा प्रवेश कर्रत, आतम स्वभावे हुत । आछेलाल । आभिनिवोध प्रभाव थी ।।
- १०. बृद्धि उत्पत्तिया आदि, तिण करि मुपनु लावि । आछेलाल । फल निय्चय करे चाव थी ॥
- ११. प्रभावती ने राजन, इट्ट मनोज्ञ वचन । आछेलाल । यावत रव मगलपणें ॥ १२. मृदु मधुर सश्रीक, राणी प्रते तहतीक । आछेलाल । वोलतो नृप इम भणे ॥

- ताहि उट्टाहि कताहि जाव ''गिराहि सलवमाणी-सलवमाणी एव वयासी—एव चन्तु अह देवाणुप्पिया । अज्ज
- २. तसि ताग्मिगमि मयणिज्जिम मालिगणवट्टए तं चेव जाव नियगवयणमटवयतं मीह मुविणे
- ३ पासित्ता ण पडिबुद्धा तण्ण देवाणुप्पिया ।
- ४ एयस्न ओरानग्म जाव महामुविणस्म के मन्ते कल्लाणे फतवित्तिविमेमे भविग्मड ?

(ज० ११।१३३)

- ५,६ तए ण में बले राया प्रभावर्रए देवीए अतिय एयमद्ठं सोच्चा निमम्म हट्टनुट्ट जाव (म० पा०) हियए
- ७, म घाराहयनीवमुरभिकुमुम-चचुमाल इयतणुए कम-वियरोमकूवे त मुविण ओगिण्हड 'चचुमालइय' ति पुलकिता तनु —शरीर यस्य स तथा, किमुक्त भवति ? 'कमवियरोमकूवे' ति उच्छि-तानि रोमाणि कूपेपू—तद्रन्ध्रेपु यस्य स तथा (वृ० प० ५४१)
- ६ ईह पविमड, पिविमित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्यएण 'मइपुव्येण' ति आभिनिवोधिकप्रभवेन

(वृ० प० ५४१)

- १० बुद्धिविण्णाणेण तन्स मुविणस्म अत्योगाहण करेइ 'बुद्धिविन्नाणेण' ति मतिविशेषभूतौत्पत्तिक्यादिबुद्धि-रूपपरिच्छेदेम 'अत्योगाहण' ति फलनिव्चयम् । (वृ० प० ५४१)
- ११ पभावइ देवि ताहि इट्ठाहि कताहि जाव मंगल्लाहि
- १२ मिय-महुर-सिस्सरीयाहि वग्गूहि सलवमाणे सलवमाणे एव वयासी—

\*लय: आञ्चलाल

- १३ मोटो स्वप्न उदार, हे देवी तुम सार। आछेलाल। पेख्यो अति महिमानिलो ॥ (१४.क्ल्याणकारी एह, हे देवी! गुणगेह। नीकेलाल। देख्यो तुम सुपनो भलो।। १५. जाव सश्रीक मुसोह, हे देवी । मन मोह । प्यारेलाल। देख्यो सुपन गुणधारक ॥ <mark>्रह् आयोग्य तु</mark>प्ट अमद, दीर्घ आयु सुख कद । प्यारेलाल । कल्याण मंगल कारक।। , १७. तुम्हे देवी तत सार, देख्यो सुपन उदार। नीकेलाल। वारू अर्थ वधारतो।।
  - बा०-इहा कल्याण शब्द अर्थ-प्राप्ति अने मगल शब्द अनर्थ-प्रतिघात नै अर्थे प्रयुक्त छै।
  - १८ अर्थ लाभ अभिराम, भोग लाभ सुख वाम। प्यारेलाल।
  - पुत्र लाभ देवानुप्रिये । १६ राज लाभ रिलयात, देवानुप्रिय । सुजात । नीकेलाल । इम निश्चै तुम्ह आखियै।।
  - २० पूर्ण मास नव थात, ऊपर साढा सात । आछेलाल। रात्रि दिवस व्यतिक्रातिये।।
  - २१ अम्ह कुल-केतु समान, केतु ते चिन्ह ध्वज जान । नीकेलाल । केतु अद्भूतपणा हुती।।
  - २२. कुल मे दीपक जेम, उद्योतकारी एम । प्यारेलाल। प्रकाशकारी महाचुती ॥
  - २३. कुल मे गिरि सम एह, पराभवी न सकेह। आछेलाल। स्थिराश्रय ना साधम्यं थी।।
  - २४. कुल अवतंसक जाण, शेखर सम गुणखाण। प्यारेलाल। 🕠 👈 उत्तमपणै शुभ कर्म थी।।
  - २४. कुल मे तिलक समान, भूषकपणा थी जान। नीकेलाल। तिलक कह्यो इह विघ सही।।
  - २६. कुल ने विषे उदार, कीर्ति तणो करणहार। आछेलाल। कीति प्रसिद्ध इक दिशि मही।।
  - २७. कुल मे नदि करेह, समृद्धि हेतुपणेह। प्यारेलाल।। पवर सुकुल वृद्धि करण ही।।
  - २८ विल अम्ह कुल-रै माय, यश कारक कहिवाय । नीकेलाल ।। यश सह दिशि मे प्रसिद्ध ही।।
  - २६. कुल नै आधार पिछान, कुल मे वृक्ष समान । प्यारेलाल । छाया आश्रयवा जोग ही ॥

- १३. ओराले ण तुमे देवी । सुविणे दिट्ठे
- १४ कल्लाण ण तुमे देवी । मुविणे दिट्ठे
- १५ जाव सम्मिरीए ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे
- १६ आरोग्ग-तुट्टिदीहाउ-कल्लाण-मगल्लकारए ण
- १७ तुमे देवी । सुविणे दिट्ठे
- वा—इह कल्याणानि—अर्थप्राप्तयो मगलानि—अनर्थप्रति-(वृ० प० ५४१)
- १८ अत्यनाभो देवाण्पिए । भोगनाभो देवाण्पिए । पुत्तलाभो देवाणुप्पिए !
- १६ रज्जलाभो देवाणुप्पए । एव खलु तुम देवाणुप्पए ।
- २० नवण्ह मासाण वहुपिडपुण्णाण अद्धद्वमाण य राइ-दियाण वीइक्कताण
- २१ अम्ह कुलकेउ 'कुलकेउ' ति केतुश्चिन्ह ध्वज इत्यनर्थान्तर केतुरिव केतुरद्भुतत्वात् कुलस्य केतु कुलकेतुस्तम् (वृ० प० ५४१)
- २२. कुलदीव 'कुलदीव' ति दीप इव दीप प्रकाशकत्वात् (बृ० प० ५४१)
- २३ कुलपव्वय 'कुलपव्वय' ति पर्वतोऽनभिभवनीयस्थिराश्रयता-साधर्म्यात् (वृ० प० ५४१)
- २४ कुलवडेसय 'कुलवडेसय' ति कुलावतसक कुलस्यावतसक.—शेखर-**उत्तमत्वात्** (वृ० प ५४१)
- २५ कुलतिलग 'कुलतिलय' ति तिलको—विशेपको भूपकत्वात् (वृ० प० ५४१)
- २६ कुलिकत्तिकर 'कुलिकत्तिकर' ति इह कीत्तिरेकदिगगिमनी प्रसिद्धिः (वृ० प० ५४१)
- २७. कुलनदिकरं 'कुलनदिकर' ति तत्ममृद्धिहेतुत्वात् (वृ० प० ५४१)
- २८ कुलजमकर 'कुलजसकर' ति इह यश — मर्वदिगामी प्रसिद्धि-विशेप (वृ० प० ५४१)
- २६ कुलाधार, कुलपायव 'कुलपायव' ति पादपश्चा-श्रयणीयच्छायत्वात् (वृ० प० ५४१)

ग० ११, उ० ११, हाल २३६ 🛚 ४३६

- ३०. कुल नों विविध प्रकार, वृद्धि तणो करणहार । आछेलाल । नास स्वभाव प्रयोग ही ॥
- ३१ कर पग तसु सुखमाल, पाच्ं इद्रिय विशाल। प्यारेलाल। स्वरूप थीज हीणा नथी।।
- ३२ पचेद्रिय प्रतिपून, सख्या करिने अनून। नीकेलाल। अथवा पुन्य पवित्र थी।।
- ३३ एह्वो तास गरीर, जाव शब्द मे हीर। आछेलाल। लक्षण वजन आद थी।।
- ३४. शशिवत सोम्याकार, कात मनोहर सार । आछेलाल । प्रिय दर्शण अहलाद थी ।।
- ३५. सुदर रूडो रूप, तनु प्रभा अधिक अनूप। आछेलाल। देवकुवर सम जेहनी॥
- ३६. एह्वो पुत्र उदार, जन्मसी महा मुखकार। प्यारेलाल। जवर पुन्याई तेहनी।।
- ३७. ते पिण बालक जाण, वाल भाव मूकाण । नीकेलाल । विज्ञक जाण विशेपही ॥
- ३८. तेहिज परिणत मात्र, कला वोहितर पात्र । प्यारेलाल । योवन वय पाम्यो छतो ।।
- ३१. दान देवण में सूर, तथा अगीकृत भूर। नीकेलाल। तेह प्रतै निर्वाहतो।।
- ४० वीर संग्रामे जेह, विकात पर भूमेह। नीकेलाल। लेणहार सुख साधि ही।।
- ४१. विच्छिण्ण' विपुल अर्थ ताय,
  - अतिही विपुल कहिवाय । नीकेलाल । वल वाहन गो आदि ही ।।
- ४२. राज्य नों स्वामी स्वाघीन, पोता ने वश चीन । प्यारेलाल ।
  नृपति हुस्यै महिमानिलो ॥
- ४३ ते भणी एह उदार, देवानुप्रिय ! सार। आछेलाल। देख्यो तुम स्वपनो भलो।।
- ४४ जावत मंगलकार, स्वपन देख्यो सुखकार। आछेलाल। हे देवानुप्रिय ! सुदरी।।
- ४५ एम कहीने राय, प्रभावती प्रति ताय । प्यारेलाल । इष्ट जावत वचने करी ॥
- ४६. वारू वे त्रिण वार, मधुर मजुल वच सार । नीकेलाल । राणी प्रते राजा कहै ।।
- ४७. वेसौ गुणचालीसमी ढाल, भिक्खु भारीमाल नृप न्हाल । आछेलाल । 'जय-जश' सुख सपति लहै ॥
- १. अगमुत्ताणि मे विच्छिण्ण के स्थान पर 'वित्थिण्ण' पाठ है।

- ३०. कुलविवद्धणकर 'कुलविवज्द्धणकर' ति विविधै. प्रकारैवेद्दैन विवर्धन तत्करणणीलं (वृ० प० ५४१)
- ३१,३२. सुकुमालपाणिपाय अहीणपिटपुण्णपिचिदयसरीर 'अहीणपुन्नपिचिदियसरीर' ति अहीनानि—स्वरपत पूर्णानि—संख्यया पुण्यानि वा—पूतानि पञ्चेन्द्रियाणि यत्र तत्त्रया (वृ० प० ५४१)
- ३३. तदेवविध गरीर यस्य म तथा त यावत्करणात्— 'लक्यणवजणगुणोववेय' मित्यादि दृश्यम् (यु० प० ५४१)
- ३४ सिंससोमाकार कतं पियदसण
- ३५ मुरुव देवकुमारसमप्पम
- ३६ दारग पयाहिमि
- ३७,३८. से विय ण दारए उम्मुक्कवालभावे विष्णय-परिणयभेत्ते जोव्वणगमणुष्पते 'विन्नायपरिणयमित्ते' ति विज्ञ एव विज्ञक. स चासौ परिणतमात्रश्च कलादिष्विति गम्यते विज्ञकपरिणत-मात्र (वृ० प० ५४१,५४२)
- ३६ सूरे 'सूरे' ति दानतोऽभ्युपेतनिर्वाहणतो वा (वृ० प० ५४२)
- ४० वीरे विक्कते
  'वीरे' ति सग्रामत 'विक्कते' ति विकान्त —
  परकीयभूमण्डलाक्रमणत. (वृ० प० ५४२)
- ४१ वित्यण्ण-विज्ञलवल-वाहणे
  'विन्छिन्नविपुलवलवाहणे' ति विस्तीणंविपुले—
  अतिविस्तीणें वलवाहने—सैन्यगजादिके यस्य सत्तथा
  (वृ० प० ५४२)
- ४२ रज्जवई राया भविस्सइ।
  'रज्जवइ' त्ति स्वतत्र इत्यर्थ (वृ० प० ५४२)
- ४३ त ओराले ण तुमे देवी । सुविणे दिट्ठे
- ४४ जाव आरोग्ग तुद्धि जाव (स० पा०) मगल्लकारए ण तुमे देवी । सुविणे दिट्ठे
- ४५ त्ति कट्ट् पभावित देवि ताहि इट्ठाहि जाव वग्गूहि
- ४६ दोच्च पि तच्च पि अणुवूहति । (श० ११।१३४)

दूहा

- १. प्रभावती तिण अवसरे, वल राजा ने पास।
  एह अर्थ सुण हृदय घर, हरप सतोप हुलास।।
  २. वे कर जोडी जाव ते, सुदर वोलै एम।
  इमहिज देवानुप्रिया विवानुप्रिया तेम।।
  ३ ए सत्य देवानुप्रिया विल सदेह रहीत।
  वांछ्यो विशेष वाछियो, इच्छिय-पडिच्छिय प्रीत।।
- ४ जिम तुम एह कहो अछो, तेहिज वचन ए सत्य। इम कहि ते शुभ स्वप्न प्रति, राणी अगीकृत्य॥
- ५. वल राजाङ आगन्या, दीधे छतेज जेह। नाना मणि रत्ने करी, भाते चित्रत तेह।।
- ६ एहवा भद्रासण थकी, ऊठै ऊठी तत्य। अचपलता तन मन तणी, जाव राजहस गत्त।।
- ७. जिहा पोता नी सेज छै, त्या आवी नै आप। सिज्या ऊपर वैस नै, एम कहै स्थिर स्थाप।।
- द उत्तम वर मगलीक मुक्त, स्वप्न विलोक्यो तेह। अन्य पाप स्वप्ने करी, रखे हणास्य एह।।

वाo—उत्तम ने स्वरूप थकी, प्रधान ते अर्थ प्राप्ति रूप प्रधान फल थकी, मगल ते अनर्थ प्रतिघात रूप फल अपेक्षा करी।

- ६. एम कही गुरु देव नी, प्रशस्त मगलकार।कथा धर्ममय तिण करी, राखै स्वप्न उदार।।
- १०. स्वप्न राखवा काज ए, निद्रा भणी निवार। स्वप्न जागरणा जागती, विचरै छै नृप-नार॥
- ११. \*बल नृप कहै तिण अवसरे, सेवग पुरुष बोलायो जी, वयण मधुर इम वागरे, देवानुप्रिया जायो जी। शोध्र देवानुप्रिया थे, आज तुम्ह सुविशेप ही, वाहिरली उवठाण शाला, दीवानखाना प्रति सही। सुगध पाणी करी सीची, अशुचि प्रति दूरो हरे, एम भूमि पवित्र कीजे, वल नृप कहै तिण अवसरे।।
- १२ कचर प्रते टाली करी, छगणादिक करि तामो जी, भूमि प्रति लीपी विल, शुद्ध करो अभिरामो जी। अभिरामकारी भूमि कीजै, ते दीवानखाना प्रति, सुगध प्रवर प्रधान एहवा, पुष्प पच वर्णा कृति। उपचार पूजा सिहत कीजै, अधिक हर्ष हिवडे घरी, भूमि शुद्ध पवित्र कीजै, कचर प्रति टाली करी।।
- १३. कृष्णागर प्रधान ए, चोर संला रस जाणी जी, यावत घूप निणे करी, गघवित्त पहिछाणी जी। गघवर्त्तीभूत कीजै, अन्य पास करावियै, विल सिंहासण रची ने मुभ, आण पाछी आवियै।

- १ तए ण सा पभावती देवी वलस्स रण्णा अतिय एय-मट्ठ सोच्चा निसम्म हट्टतुट्टा
- २ करयल जाव (स॰पा॰) एव वयासी--एवमेय देवाणुष्पिया । तहमेय देवाणुष्पिया ।
- ३ अवितहमेय देवाणुप्पिया । असिद हमेय देवाणु-प्पिया । इच्छियमेय देवाणुप्पिया । पिडच्छियमेय देवाणुप्पिया । इच्छिय-पिडच्छियमेय देवाणुप्पिया ।
- ४ से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्टु त सुविण सम्म पडिच्छइ, पडिच्छित्ता
- ५ वलेण रण्णा अव्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरय-णभत्तिचित्ताओ
- ६ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेता अतुरियमचवल जाव (स॰ पा॰) रायहससरिसीए गईए
- ७ जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जिस निसीयति, निसीयित्ता एव वयासी—
- मा मे से उत्तमे पहाणे मगल्ले सुविणे अण्णेहि पाव-सुविणेहि पिडहिम्मस्सइ
- ६,१०. त्ति कट्टु देवगुरुजणसवद्धाहिं पसत्याहिं मगल्लाहिं धम्मियाहि कहाहि सुविणजागरिय पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ । (श० ११।१३५)
- ११ तए ण से बले राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दा-वेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । अज्ज सविसेस वाहिरिय उवट्ठाणसाल गधोदयसित्त-सुद्दय
- १२ समज्जिओविलत्त सुगधवरपचवण्णपुष्फोवयारकिलय समाजिता कचवरापनयनेन उपलिप्ता छगणादिना या सा तथा (वृ० प० ५४२)
- १३ कालागर-पवरकुन्दुरुक जाव (स० पा०) गद्यवट्टि-भूय करेह य कारवेह य करेता य कारवेता य मीहासण रएह, रएता ममेतमाणत्तिय पच्चिप्पणह। (ग० ११।१३६)

<sup>\*</sup>लय : इक दिन साघूजी वंदवा गई सुभद्रा नारो जी

मेवग यायत यत्र अंगीधार, राय कहारी निम जान ए. करी करायी आण मुर्वा, स्थानस्य ध्वान ए ॥

१४. इत अवसर सृष मसरली, दिस उमें राभानी जी, सेज भारी अठी करी, सर्वे बिरा स्विमाना जी। रित्मात बिले पामपीठ भी, उन्तरी ने सरपनी, अदुण ने त्यायामभाता, जानियी निता हरण भी। कता उन्तरात विष निम, पहुणनाल भी। नीक्षणी, निमल मजन परे महन, इत सन्दर नृष मनस्री म

याक - 'त्रहा जनगाइम नहेय घडणनाण गहेड प्रजणाप है। विभाग पाड में निषे अङ्गताला न स्थायामशाला ना जुला अर्थ नहिस्स स्थाय ना पृत्ताड कामो लिए प्रमास गहिरी देश निष्य करियों।

- १५ याया चर्र तथी पर, धिवदर्भण जन राम कि. भजन पर भी सीमरी, अपने तृष निष्णारी की। आवियो नप बारची, उपनेष्याला के जिला, सिहासण पूर्व दिशि साहम, मृत करी बैठी निहा। आप भी देशायाली, याद भटासण परें रसाव सित परे अपना, साहस चर्न तथी परे।।
- १६. मरमव पार करी कियो, मनविश उपपारी दी.
  भक्रमण एहवा भना, पेरक पार्व प्यारी की।
  प्यार पार्व पेरका पति, जाप भी दूरी नही,
  ह्कारी पिण नहीं अछे त्या, यर परेन रानापदी।
  अस्यतर आर्था गर्म, नाम मण्य भागे वियो,
  जवनिका मी अधिक वर्णन, मरमव पार पत्री कियो।।
- १७. नाना विविध प्रकार ना, मणि प्रदेशन आरी जी, कर्मेंनादिक रन्न भी, मंद्रित चित अह्नादो जी। अह्नाद चित्तक पेराता हो, घण देखवा जोग है, महामूल्य वर पट्टण मेती, नीपनों वारीग है। सूत्रमय पट अर्छ सूक्षम, भात वत चित्रित पना, जाण रक्षक जवनिका है, नाना विविध प्रकार ना॥
- १८. ईहामृग वृषभा बनी, तुरग नर मनर पनी पेनो जी, व्यापद भ्यम ने किन्तरा, राह्म मृग नो विदेशनोजी। विदेश मृग नो तेह रूर, सरभ पारानर कहा, नमर कुतर बनलता, बिल नता पण तणी नहा। एह भाते नीतर्या छी, जबनिका परियन भनी, अभ्यतर पासै रनावी, ईहामृग वृषभा नती।।
- १६ नाना विविध विचित्र ही, रःन मणी ना ताह्यो जी, भाने नित्रित एहवी, भद्रामण मुरनायो जी। रचाय भद्रासण आस्तरक, मृदु मसूरे द्याजियो, अस्त रज अथवा निमल, मृदु मसूरे आच्छादियो।

Ju. 1811331

कृत भग लागि एवं पाता प्रावृश्यक्षण्यामधील मणीलः प्रवृत्ता त्वभूपर्वेदः, श्वापृत्देल्यः गार्गादा वास्ताः प्रदृत्ता वेश्वतिस्या विभेतः व्यवस्थायाः भिनेत्र एताः सन्दारः व्यवस्थायः व्यवस्थायः प्रवृत्तिस्यः । (गुरुक्षः) स्वतः व्यवसायाः स्वतः प्रवृत्तायाः

स्वतः --- प्रतिप्रवर्धनिवृत्रणण्यान् गर्णन्यवः व्याप्त्रण्यानः वर्षात्ववदः स्वत्वः स्वतः प्रतिकः वर्षात्वयः स्वतः (स. स. ५८६)

- के प्रतिक्षिति विशेषा स्वाप्ति स्वाप्ति क्षित्र स्वतिक्षिण प्रवृक्षणस्याति विभेष प्रवासन्तरः प्रदर्शन्ति स्वितः सप्पति स्वत्यविक्षाति विभीषत् विभीविक्षाः स्वप्ति प्रत्यकृति क्षेत्र विभीक्षणः स्वतु क्षत्वास्तात् सेपानस्य स्वत्य कृष्णत्
- १८. शिद्रासार प्रसार व्यवस्थातः जन्मति जन्मतिकाः व्यवस्थि वृद्धमास्य
- १७ सम्पानिक्यामस्यि अस्यिकार्याणकः महस्यकः गङ्गुस्याः सरस्यद्वभन्तिमस्यानिक्यमः
- १८. ईतानिय-उपमनुग्य-मस्गया-वित्य-वात्य-वित्य-रा-सरम-भार-वुत्र-पदान्य-गडमण्य-भिनित्तः स्राप्तिवीयो जयन्तिये अन्द्रापेट स्यापा —स्पापद-भुज्या. \*\* गर्गो—मृत्रीकिया स्यस्य - आद्राया मत्त्राया, पदान परामसेति पर्यापा \*\*\* गण्यामा पत्रा भनायो—विश्वित्यस्याभित्यस्य स्यस्य स्वर्थः (स्वर्व ४४६)
- १६. नाणामित्रयणभत्तिचिन अत्यद्य-मद्यममूरगोत्स्य भयास्यपात्रयम् अगगुरुपासय गुगद्यमे पभावतीण् देशीम् भदासय स्यावेद

त्रमा मा भवेष्ट्रविद्याप्तिमातः । त्रह्मातास्योभनः । या स्वयुर्वेशस्यः श्रामीतृत्वस्यानि वरास्तरः स्वयुक्तिसः स्वयुक्तिस्तर्भतः ॥

<sup>\*</sup>नय: इक दिन साधूजी चदवा गई सुमद्रा नारो जी

श्वेत वस्त्रे ढािकयो, तनु सुख स्पर्शे पिवत्र ही, रािण काज मृदु भद्रासण, नाना विविध विचित्र ही।। २०. नृप कहै नफर बोलाय ने, अधिक हर्प उचरगो जी, शीघ्र तुम्हे देवानुप्रिया। महा निमित्त अष्ट अंगो जी। अष्ट अग महा निमित्त परोक्ष अर्थ प्ररूपणा, करणहारा महाजास्तर सूत्र अर्थ निरूपणा। विहू धारक वली कौंगल, विविध शास्त्राध्याय ने, तेडिये शुभ स्वप्न पाठक, नृप कहै नफर बोलाय ने।

### दूहा

२१ दिव्य उत्पातज अतरिख, भोम अग स्वर जान। लक्षण व्यजन एक-इक त्रिविघ त्रिविघ पहिछान।।
२२ सूत्र थकी नै वृत्ति थी, वात्तिक थी फुन जोय। तीन-तीन अ भेद है, अष्ट निमित्त ना सोय।।
२३ \*सेवग नृप वच साभली, जाव कियो अगीकारो जी, वल राजा ना ममीप थी, नीकलियो तिण वारो जी। नीकल्यो तिण वार सेवग, शीघ्र त्वरित चपला गई, चड गित विल वेगवतज, हित्थणापुर मध्य थई। स्वप्न लक्षण पाठका ना, घर तिहा आवै चली, तेह पाठका प्रनै तेड़ै, सेवग नृप वच साभली।।

## सोरठा

- २४ शीघ्र प्रमुख पद पच, एकार्थे ए आखिया। उत्सुक उत्कर्वसच, ते प्रतिपादन तत्परा।।
- २५ \*स्वप्न लक्षण पाठक तदा, नृप ने सेवग सोयो जी। तेडचा हरख पाया घणा, अंतर आनद होयो जी। अंतर आनद अधिक पाया, मजन विल विलक्षमें करी। जाव अलक्षत अंग करिने, सरसव द्रोव शिरे घरी। एह मंगल करी निज-निज घर थंकी चाल्या मुदा। हित्थणापुर मध्य थंडे ने, स्वप्न लक्षण पाठक तदा।।
- २६. भवन महिपति नु तिहा, अवतसक मुख्यावासो जी। तिहा आवै आवी करी, मिल्या एकठा तासो जी। द्वार मूले एकठा मिल, जिहा नृप नी वारली। उपस्थानसाला जिहा वल नृपति सहु आवै चली। कर जोड वल अवनीस ने, जय विजय वर्षापै जिहां।
- आज्ञीर्वच मुख उच्चरै ते, भवन महिपति नु तिहा।।
  २७ स्वप्न लक्षण पाठक प्रते, वल राजा ए वद्या जी।
  पूज्या ने सत्कारिया, सनमाने आनद्या जी।
  सनमान दीघे जूजुआ, जे पूर्वे नरपति थापिया।
  तेह भद्रासणे वैठा, हरप थी नृप आपिया।

- अथवाऽस्तरजसा—निर्मलेन मृदुमसूरकेणावस्तृतं— आच्छादित यत्तत्तथा (वृ० प० ५४२)
- २० कोडुवियपुरिसे सद्दावेड, सद्दावेत्ता एव वयासी—
  खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । अट्ठगमहानिमित्तसुतत्यधारए विविहसत्यकुसले सुविणलक्खणपाढए
  सद्दावेह। (श० ११।१३८)
  'अट्ठगमहानिमित्तसुत्तत्यधारए' ति अप्टाग—अप्टावयव यन्महानिमित्त—परोक्षार्यप्रतिपत्तिकारणव्यु
  त्पादक महाशास्त्र तस्य यौ सूत्रार्थों तो धारयन्ति ये
  ते तथा तान् (वृ० प० ५४२)
- २१. अट्ठ निमित्तगाइ दिव्वुप्पात तरिक्ख भोम च । अग सर लक्खण वजण च तिविह पुणेक्केक्क ॥ (वृ० प० ५४२)
- २३ तए ण ते कोडुवियपुरिसा जाव पिडसुणेसा वलस्स रण्णो अतियाओ पिडिनिक्खमित, पिडिनिक्खिमित्ता सिग्घ तुरिय चवल चड वेइय हित्यणपुर नगर मज्झ-मज्झेण जेणेव तेसि सुविणलक्खणपाढगाण तेणेव उवागच्छित, उवागच्छित्ता ते सुविणलक्खणपाढए सद्दा वेति। (श० ११।१३६)
- २४ 'सिग्घ' मित्यादीन्येकार्थानि पदानि औत्सुक्योत्कर्ष-प्रतिपादनपराणि । (वृ० प० ५४२)
- २५ तए ण से सुविणलक्खणपाढगा वलस्स रण्णो कोड्वियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्टतुट्टा ण्हाया कयवलिकम्मा जाव (स० पा०) सरीरा सिद्धत्यम्हिरयालियाकयमगलमुद्धाणा सएहि-सएहिं गेहेहितो निग्गच्छित, निग्गच्छिता हिर्यणपुर नगर मज्झ-मज्झेण
- २६ जेणेव वलस्स रण्णो भवणवरवडेसए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भवणवरवडेसगपडिदुवा-रिस एगओ मिलति, मिलित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव वले राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल 'वल राय जएण विजएण वद्धावेति।
- २७ तए ण ते सुविणलक्खणपाढगा वलेण रण्णा विदय-पूद्य-सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेय-पत्तेय पुव्वण्णत्थेसु भद्दासणेसु निसीयित ।

(श० ११।१४०)

तए ण से बले राया पभावति देवि जवणियंतरिय ठावेइ, ठावेत्ता पुष्फफलपडिपुण्णहत्ये

<sup>\*</sup>लय: इक दिन साधूजी वंदवा गई सुभद्रा नारो जी

ताम नृपति प्रभागती प्रति, पुष्प पात्र प्रतिपृत हथे।
वैमाणी ते जयनिका से, स्थान राक्षण पाठा पर्ते ।
इद. परमोराष्ट्र निनग करी, पाठक पति पुष्त के भी।
उम निव्ये देवानृप्रिया! प्रभागती मनिष्य भि ।
मतिवंत देवी आज तेत्वे, पाम पर यावन भन्ने।
निप राष्ट्री देवा जागी, नाम पर रष् गुणनि से देवा वालीममी, भिद्यु भारीमान नृप भद मे।
मुग मपदा पामी 'मुजय-जर्भ' परमी एस्ट यिनय वर्ग।।

## द्यान: २४१

#### दुस्

- १. स्यप्न नक्षण पाठक नया, भूष पत्र भूण निर्मेष । हृदय घार हरस्या पणा, पाया अति मनोप ॥
- २. अवग्रहे ने स्वत्न प्रति, ईत्। करत विचार । अयास्यत्न नीं ग्रहण कर, आपन ने राजर ॥
- ३. तेह स्वप्न ना अर्थ ने, लापा निज भी ताय। ग्रह्मा अर्थ जे पर भनी, मंगय भी पृद्धि।।
- ४. विशेष निर्द्यं कर किया, अर्थे स्पन्त ना आर । इतरै जाण्या अर्थे नै, स्विर सुद्धि भी स्वाप ॥
- ४. वन राजा ने आगने, स्पष्न शास्त्र प्रति सीम । उच्चारण करती थागे, इस भागे अवलीय ॥
- ६. \*नरिव मोगा, इम निब्नै गरि स्वाम,

स्यान शास्त्र अम्हारा, रतामी मोरा। तेह विषे दे, महारा नाथ।।

नरिंद मोरा, स्वान वयानीम ताम,

फल सामान्यपणा थी रे, स्वामी मोरा। इम असे रे, महारा नाव ॥

७. नरिंद मोरा, मोटा स्वप्न मुतीम,

तास बडो फल पामें रं, स्वामी मोरा। से भणी रे, महारा नाय।

नरिद मोरा, सर्व मिली ने जगीस,

स्वप्न बोहित्तर नार्मे रे, स्वामी मोरा।
कहै गुणी रे, म्हारा नाध।।

- sentenale eige al grannet beliebt.
- anmelmem befin beter 354 anmelefafterne betre tigfamnte nie etstemme mig, a nie befam niftenneft niftenfontet ifte stimmeletene ef
- के जनम गरिनाम सक्षत्र गरियद्वा गरियद्वा अवद्या कि स्वत्र 'स्तियद्वा कि यस्त्यान् अन्तियद्व कि सम्बोगित नम्बयम (यु- यक ४ की)
- ४ विलिन्हित्स्य संक्रिक्ट्स
- प्रकार काणी क्षेत्रको स्थिता नात प्रवासकार.
- इ.स. चार् देशसुणितः! अस्य मृतिहरताति यात्रापीय मृतिस्य पर्वतात्रीति सामास्ययसमात् (तृत्यत्व ४४३)
- ७. तीमं महानुष्टाः—यागण्डि मरागुण्या दिहा ।

  'महानुष्टा' नि महाप्राच्यात् 'वाराचर' दि गिल्लो
  दिमर्यारस्यास्य मीनवादिति (मृत्यत् ४४३)

द. नरिंद मोरा, जिन चक्री नी मांय, जिन चक्री गर्भ आया रे, स्वामी मोरा। अनुरागिये रे, म्हारा नाथ। नरिंद मोरा, तीसां माहिला ताय, चवद स्वप्न महा देखी रे, स्वामी मोरा! जागिये रे, म्हारा नाथ।।

नरिद मोरा, हस्ती वृषभ नै सीह,

स्वप्न लक्ष्मी देवी रे, स्वामी मोरा।

गुणनिलो रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, पुष्पमाल शुभ लीह,

चद सूर्य ध्वज लेवी रे, स्वामी मोरा।

क्भ भलो रे, म्हारा नाथ।।

१० नरिंद मोरा, पद्म सरोवर तास,

समुद्र विमान तथा वलि रे, स्वामी मोरा।

भवन ही रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, पवर रत्न नी राश,

अग्निशिखा दीपंती रे, स्वामी मोरा।

चवदही रे, म्हारा नाथ ।।

# सोरठा

११. विमान नै अछै रलियामणो । आकार, भवन ते माटै अवधार, विमान भवनज एक छै।। सू आय, विमान देखै तसू अमा। स्वर्ग १२. तथा माता देखे भवन ॥ नरक थकी जे थाय, तस्

१३. \*नरिंद मोरा, वसुदेव नी माय,

वासुदेव गर्भ आया रे, स्वामी मोरा। देखियै रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, चवद माहिला ताय,

अन्य सप्त मही सुपना रे, स्वामी मोरा।

पेखियै रे, म्हारा नाथ ॥

१४ नरिंद मोरा, वर वलदेव सुमात,

गर्भ विषे वलदेवज रे, स्वामी मोरा।

आवियै रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, चवद माहिला ताय,

अन्य च्यार महा सपना रे, स्वामी मोरा।

पाविये रे, म्हारा नाथ ॥

१५. नरिंद मोरा, नृप मंडलीक नी माय,

मडलीक गर्भ आयां रे, स्वामी मोरा।

भालियै रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, चवद माहिलो ताय,

अन्य एक महा सपनो रे, स्वामी मोरा।

न्हालियै रे, म्हारा नाथ।।

\*लय: मुर्णीद मोरा

द तत्य णं देवाणुप्पिया । तित्यगरमायरो वा चक्क-विद्रमायरो वा तित्यगरिस वा चक्कविद्रिस वा गब्भ वक्कममाणिस एएसि तीसाए महासुविणाण इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झित ।

१,१० गय उसह सीह अभिसेय दाम सिस दिणयर झय कुभ ।

पजमसर सागर विमाणभवण रयणुच्चय सिहिं च ।। 'अभिसेय' ति लक्ष्म्या अभिषेक 'दाम' ति पुष्पमाला (वृ० प० १४३)

- ११. 'विमाणभवण' त्ति एकमेव, तत्र विमानाकार भवन विमानभवनम्। (वृ० प० ५४३)
- १२ अथवा देवलोकाद्योऽवतरित तन्माता विमान पश्यित यस्तु नरकात् तन्माता भवनिर्मित । (वृ० प० ५४३)
- १३ वासुदेवमायरो वासुदेविस गब्भ वक्कममाणिस एएसिं चोइसण्ह महासुविणाण अण्णयरे सत्त महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झिति ।
- १४ वलदेवमायरो वलदेवसि गब्भ वक्कममाणसि एएसि चोद्दसण्ह महासुविणाण अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता ण पडिवुज्झिति ।
- १५ मडलियमायरो मडलियसि गन्भ वक्कममाणसि एएसि ण चोद्दसण्ह महासुविणाण अण्णयर एग महासुविण पासित्ता ण पडिबुज्ज्ञति ।

१६ नरिंद मोरा, देवानुप्रिया ! जेह, एक स्वप्न महाराणी रे, स्वामी मोरा। देखीइ रे, म्हारा नाथ। नरिंद मोरा, सांभल नृप गुण गेह, मोटो स्वप्न उदारज रे, स्वामी मोरा। विशेपीइं रे, म्हारा नाथ ॥ १७. नरिंद मोरा, जाव आरोग्य तुष्टि जाण, दीर्घायु कल्याणक रे, स्वामी मोरा। कारको रे, म्हारा नाथ। नरिंद मोरा, मंगल हेत् पिछाण, स्वप्न प्रभावती देख्यो रे, स्वामी मोरा। गुणघारको रे, म्हारा नाथ ॥ १८. नरिंद मोरा, अर्थ लाभ अभिराम, भोग लाभ पिण भारी रे, स्वामी मोरा। पामियै रे. म्हारा नाथ। नरिंद मोरा, पुत्र लाभ पिण ताम, राज लाभ पिण होस्यै रे, स्वामी मोरा। देवानुप्रिये रे, म्हारा नाथ।। १६. नरिंद मोरा, देवानुप्रिय ! महाभाग, नव मासे प्रतिपूर्णे रे, स्वामी मोरा। जाव थी रे, म्हारा नाय। नरिंद मोरा, तुम कुल केतु पताग, जावत वाल जनमसी रे, स्वामी मोरा। प्रभावती रे, म्हारा नाथ।। २०. नरिंद मोरा, वाल भाव मूकाण, जाव राज्यपति राजा रे, स्वामी मोरा। हुस्यै सही रे, म्हारा नाथ। नरिंद मोरा, अथवा सत सुजाण, मजम तप करि भावित रे. स्वामी मोरा। आतम ही रे. म्हारा नाथ ॥ २१. नरिंद मोरा, ते माटै ए उदार देवीं मोटो मुपनो रे, स्वामी मोरा। देखियो रे, म्हारा नाथ। नरिंद मोरा. जाव आरोग्य तुष्टि सार,

दीर्घ आउखो जावत रे. स्वामी मोरा।

स्वप्न-लक्षण पाठक नो रे. स्वामी मोरा।

कर तल जावत करने रे, स्वामी मोरा।

पेखियो रें. म्हारा नाथ ॥

वच सुणी रे, म्हारा नाथ।

कहै थुणी रे, म्हारा नाथ ॥

१६ इमे य ण देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए एगे महा-सुविणे दिट्ठे, त ओराले ण देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे

१७ जाव आरोग्ग-तुट्विदीहाउ-कल्लाणमगल्लकारए ण देवाणुष्पिया <sup>।</sup> पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे

१८ अत्यलाभो देवाणुष्पिया ! भोगलाभो देवाणुष्पिया ! पुत्तलाभो देवाणुष्पिया ! रज्जलाभो देवाणुष्पिया !

१६ एव खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी नवण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाण अद्धटुमाण य राइदियाण वीडक्कताण तुम्ह कुलकेउ जाव देवकुमारसमप्पभ दारग पयाहिति ।

२० से वि य ण दारए उम्मुक्कवालभावे जाव (स॰पा॰) रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा।

२१ त ओराले ण देवाणुष्पिया । पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्टि-दीहाउ-कल्लाण-मगल्लकारए पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे। (शा० ११।१४२)

२२ तए ण मे वले राया सुविणलक्खणपाढगाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ठे करयल जाव (स॰ पा॰) कट्टू ते सुविणलक्खणपाढगे एव वयासी—

२२. नरिंद मोरा, तिण अवसर वलराय,

नरिंद मोरा, हियै घार हरपाय,

२३. नरिंद मोरा, देवानुप्रिय ! इमहीज, जावत तुम्हें कही छो रे, स्वामी मोरा । इम कही रे, म्हारा नाथ । नरिंद मोरा, रूड़ी रीत दैं रीफ, तेह निमल सुपना नै रे, स्वामी मोरा ।

२४. नरिद मोरा, स्वप्न पाठक ने विज्ञाल, विस्तीरण असणादिक रे, स्वामी मोरा। च्यार ही रे, म्हारा नाथ।

सम्यंग ग्रही रे. म्हारा नाथ ॥

निरद मोरा, पुष्प वस्त्र गघ माल, अलकार कर राजा रे, स्वामी मोरा। सतकार ही रे, म्हारा नाथ।।

२५. नरिंद मोरा, देई अधिक सनमान, विस्तीरण आजीविक रे, स्वामी मोरा। जोग ही रे, म्हारा नाथ।

निरंद मोरा, प्रीतिकारी दै दान, सीख दियै संतोषी रे, स्वामी मोरा । नृप सही रे, म्हारा नाथ ॥

२६. निरद मोरा, सिहासण थी तेह, ऊठी राणी पासे रे, स्वामी मोरा। आवियो रे, म्हारा नाथ।

निरद मोरा, इष्ट जाव वचनेह, बोलतो नृप भाखे रे, स्वामी मोरा। हरषावियो रे, म्हारा नाथ।।

२७ निरद मोरा, निश्चै देवानुप्रिय । जान, स्वप्न शास्त्र रै माहे रे, स्वामी मोरा। आखिया रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, स्वप्न वयालीस मान, मोटा सुपना तीसज रे, स्वामी भोरा। भाखिया रे, म्हारा नाय।।

२८. निरद मोरा, सर्व बोहितर सपन, जिन चक्री नी माता रे, स्वामी मोरा। जाणियै रे, म्हारा नाथ।

नरिद मोरा, तिमहिज जाव वचन, अन्य एक महा सुपना रे, । स्वामी मोरा । माणियै रे, म्हारा नाथ ॥

२६. नरिंद मोरा, देवानुप्रिय । तुम ताय, महास्वष्न इक दीठो रे, स्वामी मोरा। सुदक्त रे, म्हारा नाथ। २३. एवमेयं देवाणुप्पिया । जान (स॰ पा॰) से जहेयं तुब्भे वदह ति कट्टु त सुविणं सम्म पडिच्छइ

२४ सुविणलक्खणपाढए विजलेणं असण-पाण-खाइम-साइम-पुष्फ-वत्य-गध-मल्लालकारेण सक्कारेइ

२५ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता, सम्माणेत्ता विउल जीवियारिह पीइदाण दलयइ, दलियत्ता पिंडविसज्जेड ।

२६ सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेता जेणेव पभावती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता पभावित देवि ताहि इट्टाहि जाव मियमहुरसस्सिरीयाहि वग्गूहि सलवमाणे-सलवमाणे एव वयासी—

२७ एव खलु देवाणुप्पिए ! सुविणसत्यसि वायालीस सुविणा, तीस महासुविणा

२ वावत्तरि सञ्बसुविणा दिट्ठा । तत्थ ण देवाणुष्पिए ! तित्थगरमायरो वा चक्कविट्टमायरो वा तित्थगरिस वा चक्कविट्टिमायरो वा तित्थगरिस वा चक्कविट्टिस वा गन्भ वक्कममाणिस एएसि तीसाए महासुविणाण इमे चोह्स महासुविणे पासित्ता ण पिंडवुज्झित, त चेव जाव मडिलयमायरो मडिलयिस गन्भ वक्कममाणिस एएसि ण चोह्सण्ह महासुविणाण अण्णयर एग महासुविण पासित्ता ण पिंडवुज्झिति ।

२६ इमे य ण तुमे देवाणुप्पिए । एगे महासुविणे दिट्ठे त ओराले ण तुमे देवी । सुविणे दिट्ठे जाव रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा

श० ११, उ ११, ढाल २४१ ४४७

नरिंद मोरा, जाव हुस्यै राजपित राय, अथवा भावित आतम रे, स्वामी मारा। मुनीवरू रे, म्हारा नाथ॥

३०. नरिंद मोरा, ते भणी मोटो उदार, स्वन्न देवी ! तुम दीठो रे, स्वामी मोरा। गुणनिलो रे, म्हारा नाथ।

नरिद मोरा, जाव पूर्ववत सार,

देख्यो सुपनो वारु रे, म्वामी मारा । अतिभलो रे, म्हारा नाथ ॥

३१ नरिद मोरा, एम करीनै मार,

नेह इंट्ट बचने करि रे, रवामी गोरा। नरपती रे, म्हारा नाथ।

नरिद मोरा, जावत वे त्रिण वार

दाखे महिपति वाणी रे, स्वामी मोरा। हरप थी रे. म्हारा नाथ।।

३२. नरिद मोरा, राणी नृप नो वचनन,

साभल हिंवड़े घारी रे, स्वामी मोरा। आनद लहे रे, म्हारा नाथ।

नरिद मोरा, हरप सतोप उपनन,

कर तल जोडी यावत रे, म्वामी मोरा। इम कहे रे, म्हारा नाथ।।

३३. नरिद मोरा, देवानुप्रिया ! इमहीज,

जावत रूडी रीते रे, रवामी मोरा। स्वप्न ग्रहै रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, बल नृप आण थकीज,

भद्रासण सू ऊठी रे, स्वामी मोरा। मग वहै रे, म्हारा नाथ।।

३४ नरिद मोरा, तन मन चपल रहीत,

जाव राजहंस सरिखी रे, स्वामी मोरा। गति करी रे, म्हारा नाथ।

नरिद मोरा, जिहां निज भवन पुनीत,

आवीं भवने पेठी रे, स्वामी मोरा। हरप घरी रे, म्हारा नाथ।।

३५, नरिद मोरा, आखी ढाल अमद,

वेसी इकतालीमीं रे, स्वामी मोरा। अति भली रे, म्हारा नाथ।

नरिंद मोरा, भिक्षु भारीमाल नृपचद,

'जय-जश' सुर्खं वर सपित रे, स्वामी मोरा।

रगरली रे, म्हारा नाथ ॥

३० तं ओराने ण तुमे देवी ! मुविणे दिट्ठे जाव · · · · · गुविणे दिट्ठे जाव · · · · · · गुविणे दिट्ठे

३१. िन कट्टु पभावित देवि ताहि उद्घाहि जाव मिय-मदुर-सिन्मरीयादि यग्गूहि दोच्चं पि तच्च पि अणुबहुद्द । (भ० ११।१४३)

३२. तए ण ना पमावती देवी बलम्म रण्यो अतिय एयमट्ठ सोच्चा निमम्म हट्टतुट्टा करयल जाव (म॰ पा॰) एव वयामी—

३३ एयमेय देवाणुष्पिया । जाव त सुविण सम्म पिडच्छद, पिडिच्छता बलेण रण्णा अव्भणुण्णाया नमाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अव्भुट्ठेड

३४ अतुरियमचवलमसभताए अविलवियाए रायहस-सरिसीए गईए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सयं भवणमणुपविट्ठा। (श० ११।१४४)

# दूहा

- प्रभावती तिण अवसरे, स्नान विलक्षमं कीघ।
   जाव अलकृत सर्व करि, अग विभूषित सीघ।।
   ते गर्भ प्रति अति शीत नहीं, निहं अति उष्ण असन्न।
   अतिही तिक्त पिण निह करैं, विल अति कटुक तजन्न।।
   न अति कसायले करी, अति खाटे करि नाहि।
   अति मीठो तजवै करी, अधिक मने ओछाहि।।
   भोगवता ऋतु-ऋतु विषे, सुख वा शुभ करि जेह।
   भोजन आच्छादन विलं, गुध माल्य करि तेह।।
- ५ तेह गर्भ ने जेह हित, मित ते अधिक न उन्न। पथ्य तिको सामान्य करि, गर्भ पोष प्रतिपुन्न।।
- ६ देश उचित भूमी जिका, नेहिज देश विषेह। काले फुन अवसर विषे, आहार भोगवती जेह।।
- ७ दोप रहित फुन जेह छै, मृदु कहियै सुकुमाल। एहवा शयनासन करी, सुख विलसै सुविशाल।।
- प्त. सहु जन तणी अपेक्षया, सुख वा ग्रुभ करि जेह।मन ने अनुकूल कारिणी, विहार भूमि विपेह।।
- श्वा मनोरथ ऊपजै, प्रशम्त दोहला जेह।
   विद्यतार्थ पूरण थकी, सपन्न-दोहला तेह।।
- १० सम्माणिय दोहलावली, पाम्या वाछित अर्थ। तेह तणा जे भोग थी सन्मान्याज तदर्थ॥
- ११ जेह मनोरथ ऊपनो, लेश करी पिण जेह।। क्षण पिण नही अणपहुंचतु, अविमाणिय दोहला तेह।।
- १२. विच्छिन्न दोहला तसु वली, तूटी वाछा तास ।। विणीय दोहला नो अरथ, दोहला रहित विमास ।।
- १३ रोग शरीर तणी तिका, पीड़ा करी रहीत। सोग मानसी पीड़ जे, तिण करि रहित वदीत।।
- १४. गयो मोह नहिं मूढता, अल्प मात्र भय नाहि। अकस्मात भय सहु गयो, परित्रास नहि ताहि॥

- १ तए ण सा पभावती देवी ण्हाया कयवलिकम्मा जाव सव्वालकारविभूसिया
- २ त गव्म नातिसीतेहिं नातिउण्हेहिं नातितित्तेहिं नातिकडुएहि
- ३ नातिकसाएहिं नातिअविलेहिं नातिमहुरेहि
- ४ उउभयमाणसुहेिह भोयण-च्छायण-गध-मल्लेहिं 'उउभयमाणसुहेिहं' ति ऋतौ ऋतौ भज्यमानानि यानि सुखानि—सुखहेतव शुभानि वा तानि तथा तै. (वृ० प० ५४३)
- ५ ज तस्स गव्भस्स हिय मित पत्य गव्भपोसण 'हिय' ति तमेव गर्भमपेक्ष्य, 'मिय' ति परिमित— नाधिकमून वा 'पत्य' ति सामान्येन पथ्य (वृ० प० ५४३)
- ६ त देसे य काले य आहारमाहारेमाणी 'देसे य' ति उचितभूप्रदेशे 'काले य' ति तथाविधा- वसरे (वृ० प० ५४३)
- ७ विवित्तमचएिं सयणासणेहि 'विवित्तमचएिंहं' ति विविक्तानि—दोपवियुक्तानिः मृदुकानि च कोमलानि यानि तानि तथा तै (वृ० प० ५४३)
- प्रदिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए पर्दारक्कसुहाए' ति प्रतिरिक्तत्वेन तथाविधजनापेक्षया विजनत्वेन सुखा ग्रुभा वा या सा तथा तया (वृ० प० ५४३)
- एसत्यदोहला सपुण्णदोहला
   (पसत्यदोहला ति अनिन्द्यमनोरया 'सपुन्नदोहला'
   अभिनिद्यमनोरया (वृ० प ५४३)
- १० सम्माणियदोहला
  'सम्माणियदोहला' प्राप्तस्याभिलिषतार्थस्य भोगात्
  (वृ० प० ५४३)
- ११ अविमाणियदोहला
  'अविमाणियदोहल' त्ति क्षणमिप लेशेनापि च नापूर्णमनोरथेत्यर्थः। (वृ० प० ५४३)
- १२ वोच्छिण्णदोहला विणीयदोहला'वोच्छिन्नदोहल' ति त्रुटितवाञ्छेत्यर्थ
- १३,१४ ववगयरोग-मोग-मोह-भय-परित्तासा इह च मोहो—मूढता भय भीतिमात्र परित्रास — अकस्माद्भय (वृ० प० ५४३)

- १५. वाचनातरे छै इहां, सुहसुहेण सुख थी आश्रयणीय प्रति, आश्रय करती ताम।। १६. सुखे सयन करती छती, ऊभी रहै सुखेह ॥ वेस विल गय्या विषे, सुखे करी
  - १७. सुबे-नुखे ते गर्भ प्रति, रहित वहेह। वावा सवा नव मारो जनमियो, कोमल कर पग वेह।।

# ननदन जायो रे ॥ (भ्रुपद)

- १८. कोमल अग सुचग मनोहर, जयवतो सुत जायो। हीण नही प्रतिपूरण पूरा, पचेद्रिय तनु
- १६ लक्षण व्यजन करी ललित है, गुणे युक्त गुण जावत चद्र तणी पर आछो, सोम्याकार सुहायो ॥
- २० कात मनोज्ञ घणो मनगमतो, दर्शण प्रिय देखायो। सुदर रूप स्वरूप अनोपम, कामदेव सम कायो।।
- २१ तिण अवसर ते प्रभावती, देवी नी दासी ताह्यो। सेवा अग तणी नित साधै, अग-प्रतिचारिका कहायो ॥
- २२. प्रभावती सुत जन्म्या जाणी, आवी महिपति पाह्यो । वे कर जोटी वल नृप ने, जय विजय करी सूत्रवायो ।।
- २३ नृपति ववावी कहै इम निश्चे, देवानुप्रिय । रायो। सवा नव मामे प्रभावती सुत, जाव अनोपम जायो।।
- २४. ते भणी देवानुप्रिय तुमने, प्रीति अर्थ कहूं वायो। प्रिय सत जन्मज प्रगट करू छ, पवर वधा इदेवायो ॥
- २४. प्रिय कल्याण मगल तुभ थावो, तिण अवसर वल रायो। अगप्रतिचारिका दासी पासे, एह अर्थ सुण ताह्यो।।

वा०--इहा टीकाकार कहै छै अनेरो पिण प्रिय थावो ।

- २६ हरप सतोप लह्यो हिवडे घर, जाव घारा कर ताह्यो । आहणियो जे कदव वृक्ष जिम, जाव रूम विकसायो ॥ २७. मुकुट वर्ज ने ते दासी प्रति, आभूपण अधिकायो।
- अवनीपति जिम पहिरचा था ने दिये वधाई माह्यो ॥

#### सोरठा

२६. मुकुट न दीघो तास, राज चिह्न छै ते भणी। फुन स्त्री ने सुविमास, मुकुट अनुचितपणा यकी।।

- १५,१६ इह रथाने वाचनान्तरे 'मुहसुहेण आसयइ मुयड चिट्ठउ निसीयड तुयट्टड' त्ति दृण्यते तत्र च 'मुहंसुहेण' ति गर्भानाबाधया 'बासयड' ति बाश्रयत्याश्रयणीय वस्तु 'सुयइ' त्ति शेते 'चिट्टइ' त्ति कद्र्घ्वंस्थानेन तिष्ठति 'निसीयष्ठ' त्ति उपविषाति 'तुयट्टड' ति शय्याया वर्त्तत उति । (वृ० प० ५४३)
- १७. त गव्म मुहमुहेण परिवहति ।

(ण० ११।१४५)

तए ण सा पभावती देवी नवण्ह मासाण बहुपिड-अद्धद्वमाण य राउदियाण वीइक्कताण **मुकुमालपाणिपाय** 

- १८ अहीणपिटपुण्णपिचिदियसरीर
- १६ लक्यणवजणगुणोववेय जाव (म० पा०) ससिसोमा-कार
- २० कत पियदसण मुरूव दारय पयाया। (श० ११।१४६)
- २१,२२ तए ण तीमे पभावतीए देवीए अगपडियारियाओ पभावति देवि पसूय जाणेता जेणेव वले राया तेणेव उवागच्छति उवागच्छिता करयल जाव (स॰ पा॰) वल राय जएण विजएण वढावेंति
- २३ वढावेत्ता एव वयासी--एव खलु देवाणुप्पिया । पभावती देवी नवण्ह

मासाण बहुपिटपुण्णाण जाव सुरुव दारग पयाया।

- २४ त एयण्ण देवाणुप्पियाण पियद्वयाए पिय निवेदेमो । 'पियद्वयाए' त्ति प्रियार्थतायै--प्रीत्यर्थमित्यर्थ 'पिय निवेएमो' त्ति 'प्रियम्' इप्टबस्त् प्रजनमलक्षण निवेदयामः (वृ० प० ५४३)
- २५ पिय भे भवतु। (श० ११।१४७) तए ण मे वले राया अगपिंडयारियाण अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म 'पिय भे भवउ' त्ति एतच्च प्रियनिवेदन प्रिय भवता भवतु ।
- वा०-तदन्यद्वा प्रिय भवत्विति । (वृ० प० ५४१)
- २६ हटुतुट्ट जाव धाराहयनीवसुरिभकुसुमचचुमालइयतणुए ऊसवियरोमकूवे
- २७ तासि अगपिंडयारियाण मउटवज्ज जहामालिय ओमोय दलयइ 'जहामालिय' ति यथामालित-यथाधारितं यथा परिहितमित्यर्थ (वृ० प० ५४३)
- २७. 'मउटवज्ज' ति मुकुटस्य राजिचह्नत्वात् स्त्रीणा चानुचितत्वात्तस्येति तद्वर्जन । (वृ० प० ५४३)

\*लय : मुंबर जायो रे

२६ \* इवेत रजतमय निर्मल जल सू भरचो भृगार ग्रहायो। ते दासी नो शिर धोई ने, दासी पणो मिटायो॥

## सोरठा

- ३० निश्चै स्वामी जेह, शिर घोया दासीपणो। दूर हुवै छै तेह, एह लोक व्यवहार छै।।
- ३१. \*विस्तीरण आजीविकायोग्यज, प्रीति दान दिवायो। सत्कारी सन्मानी नै तसु, सीख दियै वलरायो॥
- ३२ विल कोडिवक पुरुप प्रतै नृप, तेड कहै इम वायो। हे देवानुप्रिया । जीघ्र तुम्ह, हित्थणापुर मे जायो॥
- ३३ छोडो वदीवानज सगला, मान घान्य रस ताह्यो ।। तेह पायली प्रमुख माप ते, रूडी रीत वघायो ।।
- ३४ विल उन्मानज तुला रूप ही, सेर पाव पुर माह्यो। ते पिण रुडी रीत वधावो, जेज करो मत कायो॥
- ३५. विल हिरथणापुर माहै वाहिर, उदक करी सीचायो। कचरो टालो लीपो जावत, करो करावो जायो।।
- ३६. जूप सहस्र ने चक्र सहस्र ए, पूजा विशेष ताह्यो । महामहिमा सतकार प्रतै ए, ओछव करि अधिकायो ॥
- ३७. ओछव करि मुक्त आज्ञा सूपो, कोडविक नृप वायो। अगीकार कर करी करावी, आज्ञा सूपी आयो॥
- ३८. तिण अवसर वल राजा आयो, अट्टणसाला माह्यो । तिमहिज जावत मजन घर थी, नीकलियो छै न्हायो।।
- ३६ मूक्यो दाण जगात वली कर, गाय प्रमुख नो रायो। विल करसण नो कर निह लेवे, देणो मतद्यो ताह्यो।।
- ४०. अणमाप्या अणमिणिया द्यो विल, नृप आज्ञा थी ताह्यो । पर घर विषेज राजपुरुप नो, प्रवेश करिवो नाह्यो ॥
- ४१. विल किण पास दड निहं लेणो, कुदड लेणो नाह्यो। कुदड ते अपराध विना लै, ए विहु नृप वरजायो॥

- २६. सेतरययामय विमलसलिलपुण्ण भिगार पंगिण्हइ, पंगिण्हित्ता मत्यएं घोवइ
- ३० अगप्रतिचारिकाणा मस्तकानि क्षालयित दासत्वाप-नयनार्थं स्वामिना धौतमस्तकस्य हि दासत्वमपगच्छ-तीति लोकव्यवहार । (वृ० प० ५४३)
- ३१ विउल जीवियारिह पीइदाण दलयड, दलियत्ता सक्कारेड, सम्माणेइ सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पिड-विसज्जेइ। (श० ११।१४८)
- ३२ तए ण से वले राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—िखिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । हित्यणा- पुरे नयरे
- ३३,३४ चारगसोहण करेह, करेत्ता माणुम्माणवड्ढण करेह 'चारगसोहण' ति वन्दिविमोचनिमत्यर्थ 'माणुम्माण-वड्ढण करेह' ति इह मान—रसधान्यविषयम्, उन्मान—तुलारूपम्। (वृ० प० ५४४)
- ३५ हित्यणापुर नगर सिंग्भतरवाहिरिय आसिय-समिज्जिओविलित्त जाव गधविट्टभूय करेह य कारवेह य
- ३६ जूवसहस्स वा चक्कसहस्स वा पूयामहामहिमसंजुत्त उस्सवेह
- ३८ तए ण से वले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव जवागच्छइ, जवागच्छिता त चेव जाव मज्जणघरास्रो पिंडिनिक्खमङ्
- ३६ उस्सुक्क उक्कर उक्किट्ठ अदेज्ज
  'उक्कर' ति उन्मुक्तकरा, करस्तु गवादीन् प्रति प्रतिवर्षं राजदेय द्रव्य, 'उक्किट्ठ' ति उत्कृष्टा—प्रधाना
  कर्षणनिपेधाद्वा 'अदिज्ज' ति विक्रयनिपेधेनाविद्यमानदातव्या (वृ० प० ५४४)
- ४० अमेज्ज अभडप्पवेस
  'अमिज्ज' ति वित्रयप्रतिपेधादेवाविद्यमानमातव्या
  अविद्यमानमाया वा
  'अभड्प्पवेस' ति अविद्यमानो भटाना—राजाज्ञादायिना पुरुषाणा प्रवेश कुटुविगेहेषु यस्या सा तथा ता
  (वृ० प० ५४४)

४१. अदडकोदडिम

<sup>\*</sup>लय। मुंबर जायो रे

- ४२ अडाणे कोइ घार न राखे, गणिका वर जिण माह्यो । एहवा नाटक संबंधि पात्रे, सहित नगर करवायो ॥
- ४३. नानाविध जे प्रेक्षाचारी, सेवित जिका सुहायो ॥ इक क्षण मात्र मृदग वजाया विन निह रहिता ताह्यो ॥
- ४४ अणकुमलाणा पुष्प तणी जे, माल घरो पुर माह्यो। प्रमुदित जन ना योग्य थकी जे, प्रमुदिताज कहिवायो।। ४५. प्रक्रीडित जन तणा योग्य थी, प्रक्रीडिता सुखदायो।। जन करि सहित पवर पुर विल जे, देश लोक दीपायो।।

#### सोरठा

- ४६ वाचनातरे वाय, विजय वैजयती कह्यो । अतिहि विजय सुहाय, विजय-विजय कहियै तसु ॥ ४७. तेह प्रयोजन तास, तिका विजय वैजयतिका । तेह प्रते सुविमास, कीजै ऊची नगर मे ॥ ४८ क्ष्मर्यादा कुल नी जे अथवा, लोक तणी सुखदायो ।
- ४६ दस दिन सुत ना जन्म महोत्सव, करता थकाज रायो। गत द्रव्य सहस्र लक्ष द्रव्य लागै, एहवो यागे करायो॥

सुत जन्मोत्सव दिवस दसा लग, राय करै हरपायो।।

- ५० दाए य कहिता दान प्रते फुन, भाए य कहि ताह्यो। वाछित द्रव्य ना अश प्रते जे, दिये देवावे रायो।।
- ५१. शत द्रव्य सहस्र लक्ष द्रव्य लागै, एहवो लाभ सुहायो। आपै दिवरावै इण रीते, विचरे बल महारायो॥
- ५२ ढाल दोय सी वयालीसमी, जन्मोत्सव सुखदायो। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय प्रसादे, जय-जशहरण सवायो।।

- ४२. अधिरम गणियावरनाटडज्जकलियं 'अधिरम' ति अविद्यमानधारणीयद्रव्याम् ऋणमुत्कल-नात् 'गणियावरनाडइज्जकलिय' गणिकावरै वेग्या-प्रधानैनीटकीयैः नाटकसम्बधिभि पात्रैः कलिता या सा तथा ताम् (वृ० प० ५४४) अणेगतालाचराणुचरिय अणुद्ध्यमुद्दग
- ४३. अणेगतालाचराणुचरिय' नानाविधप्रेक्षाचारिमेविता-मित्यर्थ अणुद्धुइयमुडग त्ति अनुद्धृता — वादनार्थं वादकैरविमुक्ता मृदगा यस्या सा तथा ताम्

(वृ० पे० ५४५)

- ४४,४५ अमिलायमल्लदाम पमुझ्यपक्कीलिय सपुरजण-जाणवय 'पमुझ्यपक्कीलिय' ति प्रमुदितजनयोगात्प्रमुदिता प्रक्रीडितजनयोगात्प्रक्रीडिता (वृ० प० ५४५)
- ४६,४७ वाचनान्तरे 'विजयवेजइय' ति दृश्यते तत्र चातिशयेन विजयो विजयविजयः स प्रयोजन यस्याः सा विजयवेजियकी ताम् (वृ० प० ५४५)
- ४८ दसदिवसे ठिइवडिय करेति । (श० ११।१५१) 'ठिइवडिय' ति स्थिती—कुलस्य लोकस्य वा मर्यादाया पितता—गता या पुत्रजन्ममहप्रक्रिया सा स्थितिपतिताऽतस्ता 'दसाहियाए' ति दशाहिकाया— दशदिवसप्रमाणाया (वृ० प० ५४५)
- ४६ तए ण से बले राया दमाहियाए ठिइवडियाए वट्टमाणीए सइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य
- ५० दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य 'दाए य' ति दायाण्च दानानि 'भाए य' ति भागाण्च- विवक्षितद्रव्याणान् (वृ० प० ५४५)
- ५१ सइए य सयसाहस्सिए य लभे पिडच्छेमाणे य पिडच्छावेमाणे य एव याचि विहरइ। (श० ११।१५२)

१. पूजा का एक प्रकार।

#### दूहा

- १ तिण अवसर ते वाल ना, मास पिता घर खंत। जन्म महोत्सव प्रथम दिन, स्थितिपतिताज करत।।
  २ चद्र सूर्य दर्शन इसो, महोत्सव तीज दिन। छठ दिन निश्चि जागरण, उत्सव करत सुजन।
- ३ व्यतिक्राते ग्यारम दिने, निवृत्त जे अतिकत। अशुचि जात कर्म तेहनु, करण करिवू मत।।
- ४ पामे द्वादशमे दिवस, असणादिक चिउ आहार। रघावी जिम शिव नृपति, तिम कहिवू अधिकार॥
- ५ जावत क्षत्रिय तेडने, करी स्नान विलक्ष्म । यावत सत्कारी सहु, सन्मानी सुख वर्म ॥
- ६ तेहिज ज्ञाती मित्र ने, जावत क्षत्रिय जाण। या सगला रे आगले, दिये नाम गूणखाण।।
- ७. दादा पड़दादा थकी, वली पिता नों जोय। पड़दादो छै तेह थी, अनुक्रम आयो सोय॥
- न परपर। बहु पुरुष नी, तेहथी वाघ्यो तत। वली तास कुल योग्य जे, कुल सादृश वलवंत।।
- सुकुल रूप सतान जे, तेहिज तत् सार।
   दीर्घपणा थी दाखियो, तास वधारणहार।।
- १० एहवे रूपे नाम ए, गौण कहीजै ताय। अमुख्य थकी पिण जे हुवै, ते इहा निंह कहिनाय।।
- ११ गुण-निष्पन ए नाम दै, धूंजे कारण थी ख्यात। वल नृप सुत ए वाल अम्ह, प्रभावती अगजात॥
- १२. यावो अम्हारे ते भणी, पिता नाम अनुसार।
  ए वालक नों जाणवू, महावल नाम उदार।।
  \*प्रवल पुन्याई अति अधिकाई, जग सुखदाई जानदा।।
  महावल नामे अति अभिरामे, अवनीपति सुत आनदा। (ध्रुपद)
- १३. तिण अवसर ते वालक नो, काइ महावल नाम शुभा नदा। मात पिता ए दोघो मुख,सू, वदन कमल पूनमचदा।।

- १ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं करेइ
- २ तइएदिवसे चदसूरदसावणिय करेड, छट्ठे दिवसे जागरिय करेड् 'चदसूरदसणिय' ति चन्द्रसूर्यदर्शनाभिधानमुत्सव 'जागरिय' ति रात्रिजागरणरूपमुत्सवविशेषम्

(वृ० प० ५४५)

- ३ एककारसमे दिवसे वीइक्कते निव्वत्ते असुडजायकम्म-करणे
  - 'निवृत्ते' अतिकान्ते अशुचीना जातकर्माणा करणम-शुचिजातकर्मकरण तत्र (वृ० प० ५४५)
- ४,५ सपत्ते वारसमे दिवसे विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता जहा सिवो (भ० ११।६३) जाव खत्तिए जाव (स०पा०) सक्कारेंति सम्मार्णेति
- ६ तस्सेव मित्तनाइ जाव (स० पा०) राईण य खत्तियाण य पुरक्षो
- ७ अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागय
- वहुपुरिसपरपरप्परूढ कुलाणुरूव कुलसरिस
- ६ कुलसताणततुबद्धणकर कुलरूपो य सतान. स एव तन्तुर्दीघत्वात्तद्वर्द्धनकर (वृ० प० ५४५)
- १० अयमेवारूव गोण्णं 'गोण' ति गौण तच्चामुख्यमप्युच्यत इत्यत आह— (वृ० प० ५४५)
- ११ गुणनिष्फन्न नामधेज्ज करेंति—जम्हा ण अम्ह इमे दारए वलस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए
- १२ त होउ ण अम्ह इमस्स दारगस्स नामधेज्ज महन्त्रले-महन्वले
- १३ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्ज करेंति महत्वले ति । (श० ११।१५३)

<sup>\*</sup>लय : चेत चतुर नर कहे तनै सतगुरु

१. कुल या लोक की मर्यादा के अनुसार पुत्र जन्मोत्सन की प्रक्रिया।

- १४. तिण अवसर ते महावल वालक, पंच घाय करि पोखदा। क्षीरघाय' मजण' ने मंटण', अंक' कीलावण' तोपंदा।।
- १५. इम जिम दड्टपडण्णा कह्यो छै, उववाइ' मे वर्णदा। यावत गिरि कदर चपक तरु, सुसे-सुसे परिवृद्धंदा।।
- १६. मात-पिता.महावल वालक ने, जन्म दिवस थी क्रम कृदा। स्थितिपतिता ते, जन्म महोत्सव, रिव शिव दर्श दिखावंदा।।
- १७. छठी निजा जागरण महोत्सव, नाम घरण हिय हुलसदा।
  परगामण अर्थ वृत्ति में, भूमि विषे सर्पणनदा।।
  वा॰—इहा टीका में कछो—भूमी गर्पण अने टवा में कछो कभो रहिवू ने
  यही जणाय छै तथा आगणे गोडालिये हानिव् हुवै ते पिण ज्ञानी जाणे।
  १८ पग-पग करने आयो चलवो, तास महोत्सव अधिकदा।
  जीमण मीखण कवल वृद्धि फुन, बोनण महोत्सव बुविंदा।।
- १६. कान वीववू वर्ष गाठ नु, चूडा घरण तदा नदा। कला ग्रहण ते भणायवा नु, करें महोत्सव राजदा॥
- २० अन्य बहु गर्भाघान जन्म फुन, आदि विषे कोतुक वृदा ।। रराडी आदि कहीजे कोतुक, करै कुवर नां हुलसदा ।।
- २१ महावल कुवर प्रते तिण अवसर, मात पिता चित आनदा।
  काइक अधिको आठ वर्ष नो, जाणी मुत नयनानदा॥
  २२. शोभनीक तिथि इम जिम सबे. दडदपइण्णो दाखदा।
- २२. शोभनीक तिथि इम जिम सूत्रे, दृड्दपइण्णो दाखदा। जाव पर्याप्त योग समर्थज, थयो युवान शुभानदा।।

वा०—एवं जहा दढपउण्णो इति इण वचने करी जे कह्यु ते इम जाणवो—मोमणिस तिहिकरणणक्यत्त-मुहुत्तिम ण्हाय कयवित्वकम्म कयकोज्यमगल-पायिन्छत्त सन्वालकारिवभूसिय महया इट्ढिसक्कारसमुदएण कलायरियम्स उवणयतीत्यादीति २३ महावल कुमार ने तिण अवसर, वाल भाव मूकाणदा। योग समर्थ जान मता पित, आठ प्रासाद करावदा।।

# सोरठा

२४ प्रासाद विषे सवाद, अवतसक जे मुकुट सम। एहवा अठ प्रासाद, माता पिता कराविया।।

- १४. तम् णं मे महत्र्यते दारम पत्रधाईपरिग्महिए (त जहा—ग्रीरधाईम् 'मञ्जणधाईम् मटणधाईम् कीलावणधाईम् अंकधाईए' इत्यादि (वृ० प० ५४५)
- १५ एव जहा दढणइण्णरम जाव निव्वायनिव्याघायाम गुहंगुहेण परियङ्टति । (ण० ११।१५४) 'निव्वायनिव्वाघायगीत्यादि च वाज्यमिहैव मम्बन्ध-नीय गिरिकदरमत्त्रीणेव्य चपगपायवे निवायनिव्वा-घायमि गुह्गुहेण परियङ्ढ्ड' नि । (यु० प० ५४५)
- १६ तए ण तरम महत्वनस्म दारगस्म अम्मापियरो अणुपुञ्नेण ठिज्ञिजय वा चदमूरदमावणियं वा
- १७ जागरिय वा नामकरण वा परगामण वा 'परगामणति' भूमो नर्पण (वृ० प० ५४५)
- १८ पचकामण वा पजेमामण वा पिटवहण वा पजेपावण वा 'पयचकामण' ति पादाम्या सचारणं 'जेमामण' ति भोजनकारण 'पिटवहण' नि कवलवृह्धिकारणं 'पञ्जपावण' ति प्रजल्यनकारण । (पृ० प० ५४५)
- १६ कण्णवेहण या सवच्छरपिउनेहण या चोलोयणग वा उवणयण वा 'सवच्छरपिडनेहण' ति वर्षप्रन्यिकरण 'चोलोयण' चूटाघरण 'उवणयण' ति कलाग्राहण

(वृ० प० ५४५)

- २० अण्णाणि य बहूणि गव्भाघाणजम्मणमादियाङ कोउयाङ करेंनि । (ण० ११।१५५) कोतुकानि —रक्षाविधानादीनि (वृ० प० ५४५)
- २१ तए ण त महब्यल कुमार अम्मापियरो मातिरेगट्ट-वामग जाणिता
- २२ सोमणिम निहि-करण-नन्यत्त-मुहुत्तिम कनायिरयस्म उवर्णेति एव जहा दढण्पडण्णे जाव अलभोगसमत्थे जाए यावि होत्या। (श० ११।१५६)
- वा॰—'एव जहा दढपडन्नो' इत्यनेन यत्सूचित तदेव दृश्यम् । (वृ॰ प॰ ५४५)
- २३ तए ण त महत्वल कुमार उम्मुरकवालनाव जाव अलगोगममत्य विजाणित्ता अम्मापियरो अट्ट पासाय-वर्डेसए कारेंति

२५. \*ऊंचा श्वेत वेदिका सहितज, जाण हसै उपमा नंदा ।। रायप्रश्रेणी मे जिम वर्णन, जावत ही प्रतिरूपंदा ।।

#### दूहा

- २६ मणी चद्रकातादि नी, कनक रत्न नी जेह। भांत करीने चित्र वारू महल विषेह।। जे. विजय-सूचिका जाण। करी प्रकम्पिता, २७ पवने तिका, पवर पताका नाम वेजयती सहित, छत्रे तेह पताका गगन तला प्रतिलघतो, तास शिखर अवलोय।। अधिकार जे. रायप्रसेणी २६ इत्यादिक आख्यो तिम कहिवो इहा, प्रासाद वर्णक ताहि।। ३० •ते वर श्रेष्ठ अष्ट प्रासाद-वतसक विच अति सुखकदा ।। महा इक भवन करावै महिपति, स्तभ सैकडा स्थापंदा ॥ ३१ रायप्रश्रेणी मे जिम वणन, पेक्षाघर मडप नदा। तेम इहा पिण कहिवू वर्णक, जावत ही प्रतिरूपदा ।। वा०—'वण्णको जहा रायसेणइज्जे पेच्छाघरमडवसित्ति' जिम रायप्रसेणी सूत्रे प्रेक्षा मडप, गृह-मडप नो ए विहु नो वर्णक कह्यो तिम एहनो कहिवो ते इम-
- लीलट्टिय सालिमजियागिमत्यादि ।

  ३२. महावल कुवर प्रतै माता पितु, अन्य दिवस सुविशेखदा ।

  शोभनीक तिथि करण दिवस विल, नक्षत्र मुहूर्त पेखदा ।।

  ३३ स्नान बिलकर्म कौतुक मंगल, प्रायिक्त प्रति कुर्विदा ।

  सर्व अलकृत एहवा महावल, कुवर प्रते शोभाविदा ।।

  ३४. नार सुहागण कुवर प्रते जे, मर्दन उवटन करावदा ।

  स्नान गीत वाजत्र बजावी, हरष विनोदे आनदा ।।

  ३५ कुवर प्रतेज प्रसाघन कहियै, कञ्जल नयन शुभानदा ।

  विल शिर टीको शोभित नीको, विनता कुवर ओपाविदा ।।

  ३६. अग सुचग अष्ट स्थानक विल, वारू तिलक सुहावदा ।

  वांधै काकण-डोर कस्वल, अविधवाए कुर्विदा ।।
  - ३७ मगल अक्षत दिध प्रमुख वा, गीत विशेपज गावदा। भलो वोलवो आशीर्वचने, इम करिवै हुलसावदा।।
  - ३८ महावल कुवर प्रते फुन कीघा, वर कोतुक रक्षा नदा। विल मगल सिद्धार्थ आदि वहु, ते पिण करता सुखकदा।। ३६ कोतुक मगल रूप अछै जे, उपचारज पूजावदा। तिण किर कीघो शाति कर्म तसु, टालण विघ्न तणा फदा।। ४०. कुवर भणी परणावा तरुणी, चितहरणी आनद चदा। आपस माहि सरीखी अथवा, कुवर सरीखी ओपिदा।।

२५. अवभुगगय-मूसिय-पहिसए इव वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे (सू० १३७) जाव पिडक्वे । 'अवभुगगयमूसियपहिसते इव' अभ्युद्गतोच्छितान्— अत्युच्चान् '''पहिसते इव' ति प्रहिसतानिव— भवेतप्रभापटलप्रवलतया हसत इवेत्यर्थं ।

(वृ० प० ५४५)

२६-२६ मणिकणगरयणभत्तिचित्तवाउद्धुयविजयवेजयती-पडागाछत्ताइच्छत्तकलिए तुगे गगणतलमभिलघमाण-सिहरे' इत्यादि । (वृ० प० ५४५)

- ३०. तेसि ण पासायवडेंसगाण वहुमज्झदेसभागे एत्थ ण महेग भवण कारेति - अणेगखभसयसनिविट्ठ
- ३१ वण्णओ जाव रायप्पसेणइज्जे (सू० ३२) पेच्छाघर-महवसि जाव पडिक्वे। (श० ११।१५७)
- वा०—यथा राजप्रश्नकृते प्रेक्षागृहमण्डपविषयो वर्णक उक्तस्तथाऽस्य वाच्य इत्यर्थं स च 'लीलद्वियसालि-भजियाग' मित्यादिरिति । (वृ० प० ५४६)
- ३२. तए ण त महब्वल कुमार अम्मापियरो अण्णया कयाइ सोभणसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त मुहुत्तसि
- ३३ ण्हाय कयवलिकम्म कयकोउय-मगलपायच्छित्तं सन्वालकारविभूसिय
- ३४-३६ पमक्खणग-ण्हाण-गीय-वाइय पसाहणअट्ठगति-लग-ककण-अविहववहुउवणीय प्रम्रक्षणक —अभ्यञ्जन स्नानगीतवादितानि प्रतीतानि प्रसाधन—मडन अष्टस्वञ्जेषु तिलका —पुण्ड्राणि अष्टागतिलका ककण च रक्तदवरकरूप एतानि अविधववधूभि —जीवत्पतिकनारीभिरुपनीतानि यस्य स तथा त। (वृ० प० ५४७)
- ३७ मगलसुजिपएहि य

  'मगलसुजिपएहि य' ति मगलानि दध्यक्षतादीनि
  गीतगानविशेषा वा तासु जिल्पतानि च आशीर्वचनानीति ।

  (वृ० प० ५४७)
- ३८,३६ वरकोउयमगलोवयार कयसतिकम्म वराणि यानि कौतुकानि—भूतिरक्षादीनि मगलानि च सिद्धार्थकादीनि तद्रूपो य उपचार —पूजा तेन कृतं शान्तिकम्मं—दुरितोपशमिक्रया यस्य स तथा त

- ४१. त्वचा सरीखी विल वय सरिखी, लावण्य मनोज सरिसंदा। आकृति रूप सरीखो ओपै, यीवन युवती गुणवृदा॥
- ४२. विनयवंत मतिवत रमण ने, कीवा कोतुक सुखकदा ॥
  मगल प्रायञ्चित रमणी ने, मेटण अशुभ विघन-फंदा ॥
- ४३. सादृस महिपति कुल थी आणी, अठ नृप कन्या ओपिदा। एक दिवस ने विषे हरपघर, पाणीग्रहण कराविदा।।
- ४४ ढाल दोयसी तयालीसमी, गणपति भिक्षू गुणवृदा। भारीमाल ऋपिराय प्रसादे, 'जय-जग' आनद पावदा।।

- ४१. गरित्तयाणं मिरव्ययाण मिरमलावण्य-मान्जीव्यण-गुणोवयेयाण 'मरिमलावन्ते' त्यादि दृह च लावण्य—मनोज्ञता स्पं आगृतिर्योवन—गुवता गुणाः—प्रियभाविन्वादय.
- ४२. विणीयाण कयकोडय-मगलपायच्छिताण
- ४३ मरिसएहिं रायकुनेहितो आणित्तियाण अट्टण्ह रायवरकन्नाण एगदिवमेण पाणि गिण्हार्विनु । (ण० १११९५८)

## ढाल: २४४

#### दूहा

- १ महावल नाम कुमार ने, मात पिता तिणवार ।
   प्रीतिदान दे एहवू, ते सुणज्यो अधिकार ॥
   \* जी काड प्रीति दान ए दायचो जी काड,
   उलट घरी आपत ॥ (ध्रुपदं)
- २ आठ कोड रुपिया दिया जी काड, सोनैया अठ कोड। आठ मुक्ट ते मुक्ट में जी काड, प्रवर प्रधान मुजोड़।।
- अोडा आठ कुंडल तणां जी काइ, कुडल युगल मे उदार। आठ हार वर हार मे जी काइ, इमज आठ अर्द्ध हार।।
- ४ आठ हार एकावली जी कांड, पवर एकावली माहि। एव अठ मुक्तावली जी काइ, इम रत्नावली ताहि॥
- प्र. जोडा आठ कड़ा तणां जी काइ, कडग युगल मे प्रधान । तुडित वाजूवव जोडला जी काइ, इमज आठ पहिछान ।।
- ६ खोम-जुगल अठ ओपता जी काइ, खोम युगल मे प्रधान। वस्त्र एह कपास ना जी काइ, अथवा अतसी जान।।
- ७. वडग जुगल पिण इहिवचे जी काइ, एह त्रिसिरया जान ।पट्ट जुगल पिण इहिवचे जी काइ, रेशम मे पिहछान ।।
- द. दुगुल्ल जुगल पिण इहविघे जी कांड, वृक्ष तणी ए छाल। तेह यकी ए नीपनो जी कांड, वारू वस्त्र वियाल।।

- १. तए ण तस्य महाव्यतस्य कुमारस्य बम्मापियरो वयमेयास्य पीददाण दलयति
- २ अट्टहिरण्णकोटीओ अट्टमुवण्णकोटीओ अट्टमचडे मउडप्पवरे
- ३. अट्ट कुडलजोए कुडलजोयप्पवरे अट्टहारे हारप्पवरे अट्टअद्धहारे अद्धहारप्पवरे 'कुण्डलजोए' ति कुण्डलयुगानि (वृ० प० ५४७)
- अट्ट एगावलीओ एगाविष्पवराओ एव मुत्तावलीओ एव कणगावलीओ एव रयणावलीओ
- ५. अट्ट कडगजोए कटगजोयप्पवरे एव तुटियजोए
   'कडगजोए' ति कलाचिकाभरणयुगानि, 'तुडिय' ति
   वाह्याभरण (वृ० प० ५४७)
- ६ अट्ट खोमजुयलाइ खोमजुयलप्पवराइं 'खोमे' ति कार्प्पासिक अतसीमय वा वस्त्र (वृ० प० ५४७)

७ एव वडगजुयलाइ एव पट्टजुयलाइ 'वडग' ति त्रसरीमयं (वृ० प० ५४७)

द एव दुगुल्लजुयलाङ 'दुगुल्ल' त्ति दुकूलाभिघानवृक्षत्वग्निप्पन्नं (वृ० प० ५४७)

<sup>\*</sup>लय: म्हारी सासूजी रै पाच पुत्र

१ अंगमुत्ताणि भाग २ मे मुक्तावली के वाद कनकावली है, उसके वाद रत्नावली । है।

- १. प्रतिमा पट देवी तणी जी काइ, आठ आठ कहिवाय।
  श्री देवी नी शोभती जी काइ, प्रतिमा आठ शोभाय।।
- १० प्रतिमा ही देवी तणी जी काइ, आठज रूडे घाट। इम अठ घृति देवी तणी जी काइ, कीर्ति देवी नी आठ॥
- ११ आठ बुद्धि देवी तणी जी काइ, अठ लक्ष्मी नी जान। रत्न जडित ए छै, सहु जी काइ, पट देवी नी पिछान।।
- १२. अष्ट नदादिक आपिया जी काइ, मगल वस्तु अमोल। अन्य आचार्य इम कहै जी काइ, लोह नु आसन गोल।।
- १३. आठ भद्रासण आपिया जी काइ, प्रसिद्ध शरासन भद्र । तिकया करिने युक्त छै जी काड, आसन एह अक्षुद्र ॥
- १४ अब्ट ताल वृक्ष आपिया जी काइ, तरुवर माहि प्रधान। रत्न जडित ए पिण त्रिहु जी काइ, महिपति दै सनमान।।
- १५. प्रवर पोता ना घर विषे जी काइ, केतु घ्वजा सुप्राय। अष्ट घ्वजा दीघी सहु जी काइ, प्रवर घ्वजा रै माय।।
- १६ आठ गोकुल गाया तणा जी काइ, गोकुल माहि प्रधान। दश सहस्र गाया तणो जी काइ, एक गोकुल पहिछान।।
- १७ नाटक आठ सुआपिया जी काइ, नाटक माहि प्रधान। वत्तीस वद्ध नृत्य सहित छै जी काइ, इक-इक नाटक जान।।
- १८ अब्द तुरग वर हय विषे जी काइ, सर्व रत्नमय दीस। रत्न माहे छै ते भणी जी काइ, एह भड़ार सरीस।।
- १६. गज अठ पवर गज ने विषे जी काइ, सर्व रत्नमय जान।
  रत्न तणा छै ते भणी जी काइ, एह भड़ार समान।।
- २० यान शकट अठ आपिया जी काइ, पवर शकट मे समृद्ध । अठ युग वर युग ने विषे जी काइ, गोल देश में प्रसिद्ध ।।
- २१ कूट आकारे सेवका' जी काइ, आच्छादित इम देख। संदमाणी जंपान छै जी काइ, पुरुप प्रमाण विशेख।।
- २२. एम गिल्लि ते गज तणी जी काइ, अंवाबाडी जाण। अष्ट थिल्लि पिण इम दिये जी काइ, अश्व तणो ए पलाण।।
- २३. वियह यान अठ आपिया जी कांइ, वियह यान में प्रधान। चाले वृषभ ने हय विना जी, विज्ञान ना वश थी जान॥ २४ अठ रथ परिजाणक दिये जी काइ, क्रीड प्रयोजन श्रिष्ट। किंड प्रमाण फलग वेदिका जी काइ, रथ सग्रामिक अष्ट॥
- १. शिविका

- अट्ठ सिरीओ
   श्रीप्रभृतय पड्देवताप्रतिमाः (वृ० प० ५४७)
- १० अट्ट हिरीओ एव धिईओ कित्तीओ
- ११. बुद्धीओ लच्छीओ
- १२ अट्ट नदाइ नन्दादीनि मगलवस्तूनि अन्ये त्वाहु —नन्द—वृत्त लोहासन (वृ० प० ५४७)
- १३ अट्ट भद्दाइ भद्रं—शरासन मूढक इति यत्प्रसिद्धं (वृ० प० ५४७)
- १४. अट्ठतले तलप्पवरे सन्वरयणामए 'तले' ति तालवृक्षान् (वृ० प० ५४७)
- १५. नियगवरभवणकेक अट्ठ झए झयप्पवरे
- १६ अट्ठ वए वयप्पवरे दसगोसाहस्सिएण वएण 'वय' त्ति व्रजान्—गोकुलानि (वृ० प० ५४७)
- १७ अहु नाउगाइ नाडगप्पवराइ वत्तीसइवद्धेण नाडएण
- १ = अट्ठ आसे आसप्पवरे सन्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए 'सिरिघरपडिरूवए' त्ति भाण्डागारतुल्यान् रत्नमय-त्वात् (वृ० प० ५४७)
- १६ अट्ठ हत्थी हित्यप्पवरे सन्वरयणामए सिरिघरपिड-रूवए
- २० अट्ट जाणाइ जाणप्पवराइ अट्ट जुगाइ जुगप्पवराइ 'जाणाइ' ति शकटादीनि 'जुग्गाइ' ति गोल्लविपय-प्रसिद्धानि जम्पानानि (वृ० प० ५४७)
- ११ एव सिवियाओ एव सदमाणीओ
  'सिवियाओ' ति शिविका कूटाकाराच्छादितजम्पानरूपा 'सदमाणियाओ' ति स्यन्दमानिकाः
  पुरुपप्रमाणाजम्पानविशेषानेव (वृ० प० ५४७)
- २२ एव गिल्लीओ थिल्लीओ
  'गिल्लीओ' ति हस्तिन उपरि कोल्लराकारा.
  'थिल्लीओ' ति लाटाना यानि अट्टपल्यानानि तान्यन्यविषयेषु थिल्लीओ अभिधीयन्तेऽतस्ता.

(वृ० प० ५४७)

- २३. अट्ठ वियडजाणाइ वियडजाणप्पवराइ
- २४. अट्ठ रहे पारिजाणिए अट्ठ रहे सगामिए

  'पारिजाणिए' ति परियानप्रयोजना पारियानिकास्तान् 'सगामिए' ति सग्रामप्रयोजनाः
  साग्रामिकास्तान्, तेपा च कटीप्रमाणा फलकवेदिका
  भवति । (वृ० प० ५४७)

- २५. आठ तुरंगम आपिया जी काइ, तुरंग विपेज प्रधान। आठ हाथी फून आपिया जी काइ, गज मे पवर पिछान।।
- २६ अप्ट ग्राम विल आपिया जी काइ, ग्राम विपेज प्रधान ! दश सहस्र घर सिहत छै जी काइ, एक ग्राम मुविधान ।।
- २७ आठ दास मुख्य दास मे जी काइ, इमहिज दासी अष्ट। कार्य पूछी ने करैं जी काइ, किंकर ते अठ श्रिष्ट।।
- २ इम कचुडज पोलिया जी काइ, खोजा वरिसघर एम। कार्य अनेउर नणां जी काइ, चिंतक महत्तर तेम।।
- २६. सोना ना साकल वध्या जी काइ, दीपक आठ उदार। रूपा ना साकल वध्या जी काइ, अष्ट दीपक श्रीकार।।
- ३०. सुवर्ण ने रूपा तणा जी काइ, साकल बद्ध उदार। दीपक अप्ट सुआपिया जी काइ, इम त्रिहु भेद विचार॥
- ३१. अष्ट दीपक सोना तणा जी काड, ऊर्घ्व दडवत देख। तीन भेद तेहना कह्या जी काड, पूर्ववत सपेख।।
- ३२. आठ दीवा सोना तणा जी काड, भोडल सहित तद्रूप। इम ए पिण त्रिण भेद थी जी काड, रूप र सुवर्ण रूप।।
- ३३. आठ थाल सोना तणा जी काड, आठ रूपा रा थाल। आठ सोना रूपा तणा जी काड, थाल विशाल निहाल।।
- ३४. आठ परात सोना तणी जी काइ, आठ रूपा री परात। आठ सोना रूपा तणी जी काइ, पत्रर परात सुजात।।
- ३५. आठ थासक सोना तणां जी काइ, आरीसा आकार। आठ थासक रूपा तणा जी काइ, सुवण्ण रूप अठ सार।।
- ३६. आठ मल्लक सोना तणा जी काड, आठ रूपा ना सार। आठ सोना रूपा तणा जी काड, सिरावला आकार।।
- ३७ अप्ट पात्री सोना तणी जी काइ, आठ रूपा री ताम। आठ सोना रूपा तणी जी काइ, एह रकेबी दाम।।
- ३८ कुडछी चमचा मुवर्ण तणा जी काड, अप्ट सुरूड़े घाट। आठ रूपा ना जाणज्यो जी काड, सुवर्ण रूपक आठ॥
- ३६ आठ तवा सोना तणा जी काड, आठ रूपा नां उमेद। आठ सोना रूपा तणा जी काड, इमज तवी त्रिहुं भेद।।
- ४०. आठ वाजोट सोना तणा जी काइ, आठ रूपा रा वाजोट । आठ सोना रूपा तणा जी काइ, मूल नही ज्यामे खोट ॥
- ४१. आठ आसन सोना तणा जी काइ, आठ रूपा रा आसन्न। अप्ट सुवर्ण रूपा तणा जी काइ, दीघा होय प्रसन्न।।
- ४२. आठ सोना ना कलिया जी काड, आठ रूपा नां जेह। आठ सोना रूपा तणा जी काइ, अथवा कचोला एह।।

- २५ अट्ट आमे आसप्पवरे, अट्ट हत्यी हत्थिप्पवरे
- २६ अहु गामे गामप्पवरे दसकुलसाहस्सिएण गामेण
- २७. अट्ट दासे दासप्पवरे एव दासीओ एव किंकरे 'किंकरे' त्ति प्रतिकम्मं पृच्छाकारिणः

(वृ० प० ५४६)

- २८. एव कंचुडज्जे एव वरिसधरे एव महत्तरए
  'कचुडज्जे' ति प्रतीहारान् 'वरसधरे' ति वर्षधरान्
  विद्वतकमहल्लकान् 'महत्तरान्' अन्त.पुरकार्यचिन्तकान्
  (वृ० प० ५४७)
- २६ अट्ठ सोवण्णिए ओलवणदीवे अट्ठ रूप्पामए ओलवण-दीवे 'ओलवणदीवे' ति शृखलावद्धदीपान् (वृ० प० ५४७,५४८)
- ३०. अट्टमुवण्णरूपामए बोलवणदीवे
- ३१ अट्ट सोवण्णिए उक्कवणदीवे एव चेव तिण्णि वि 'उक्कवणदीवे' ति उकवनदीपान् ऊद्ध्वंदण्डवत (वृ० प० ५४८)
- ३२ अट्ठ सोवण्णिए पजरदीवे एव चेव तिष्णि वि 'पजरदीवे' त्ति अभ्रपटलादिपञ्जरयुक्तान् (वृ० प० ५४८)
- ३३ अह सोवण्णिए थाले अह रूपामए थाले, अह मुवण्णरूपामए थाले
- ३४ अट्ठ सोवण्णियाओ पत्तीओ
- ३५ अह सोवण्णियाइ थासगाइ 'थासगाइ' ति आदर्शकाकारान् (वृ० प० ५४८)
- ३६ बहु सोवण्णियाइ मल्लगाइ
- ३७ अट्ठ सोवण्णियाओ तिलयाओ (वृ० प० ५४८)
- ३८ अट्ठ सोवण्णियाओ कविचियाओ
- ३६ अट्ट सोवण्णिए अवएडए
  'अवएडए' त्ति तापिकाहस्तकान् (वृ० प० ५४८)
- ४० अट्ट सोवण्णियाओ अवयक्काओ
- ४१ अट्ट सोवण्णिए पायपीढए
- ४२ अह सोवण्णियाओ भिसियाओ अह सोवण्णियाओ करोडियाओ

४३. आठ पत्यक सोना तणा जी कांड, आठ रूपा ना पत्यंक।
आठ सोना-रूपा तणा जी कांड, आप नृप शुभ अंक।।
४४, आठ प्रति सेज्या सोना तणी जी कांड, आठ रूपा नीं जाण।
आठ सोना-रूपा तणी जी कांड, होलिया प्रमुख पिछाण।।
४५. आठ हंसासन आपिया जी कांड, हंस आकारे आसन्न।
आठकोंचासन आपिया जी कांड, ए कोच आकार प्रपन्न।।
४६. इम गरुडासन अठ दिया जी कांड, उन्नतासन पिण आठ।
उन्नतादिक आकार छैं जी कांड, जन्द थकी शुद्ध वांट।।

४७ पनतासन दीर्घासणा जी काड, भद्रासण प्रति पेरा।
अठ पक्षासन प्रति दिये जी काड, मगरासन सुविशेख।।
४८. अठ पद्मामन प्रति दिये जी काड, दिसा मीवस्तिक जेह।
साथिया ने रूपे करी जी काड, युक्त अप्ट दे तेह।।
४६ अप्ट तेल ना डावडा जी काड, रायप्रश्रेणी जेम।
जावत अठ सरमव तणा जी काड, दिये डावडा तेम।।
५० जाव शब्द थी जाणिये जी कांड, चूर्ण द्रव्य मुगघ।
तास पुडा अठ आपिया जी काड, आणी हरप अमद।।
५१ इम नागर वेल तणां पुडा जी कांड, चूयवाम पूड़ा एम।
तगर पुडा पिण आपिया जी काइ, पुड़ा एलची रा तेम।।
५२ अठ हरीयाल तणा पुडा जी कांड, पुडा हीगलू ना पेख।

टीकी प्रमुख अर्थे दियो जी काइ, मणिसल पुडा विशेख ॥ ५३ अजन सुरमा ना पुडा जी काड, जाव शब्द थी एह। रायप्रश्रेणी थी कह्यो जी काड, अप्ट-अप्ट दे तेह।। ५४ दासी अठ दे कूवडी जी कांड, जिम उववाई माहि।

जावत दासी पारसी जी काड, अप्ट-अप्ट दे ताहि।। वा॰—'जहा उववाडए' इति इण वच करी जे कह्यु, ते इहा हीज देवानदा ना व्यतिकर नै विषे छै ने थकी हीज जाणवू।

४५ अप्ट छत्र विल आपिया जी काइ, छत्र घरणहारीज। दासी आठ दिये वली जी काइ, चामर इमज कहीज।। ५६. अप्ट वीभणा आपिया जी कांइ, वीभणा नी सुविचार। घरणहारी अठ दासिया जी कांइ, अठ वली करोडिकाघार।।

५७ अप्ट क्षीर वाई दिये जी काइ, जाव अप्ट अक घाय। दासी अप्ट अग मर्दका जी काइ, अल्प मर्दन करें ताय।।

४५. घणु मर्दन करें ते सही जी काइ, दासी आठ विचार। दिये अष्ट दासी वली जी काइ, स्नान करावणहार॥

५६. दास्या आठ दिये विल जी काइ, मडन करावणहार।
पवर पोसाग मुहामणी जी काइ, तेह करावण सार॥

६० अठ वण्णग पोसे तिके जी कांड, चदन पीसणहार। तथा हरतालादिक भणी जी कांड, पेपण तेह विचार।।

- ४३. अट्ट सोवण्णिए पल्लके
- ४४ अट्ट मोवण्णियाओ पडिसेज्जाओ
- ४५ अट्ट हसासणाङ अट्ट कोचासणाङ हसासनादीनि हसाद्याकारोपलक्षितानि (वृ० प० ५४८)
- ४६ एव गरुलासणाइ उन्नयासणाइ उन्नताद्याकारोपलक्षितानि च णव्दतोऽवगन्तव्यानि (वृ० प० ५४८)
- ४७ पणयासणाइ दीहासणाउ भद्दासणाड पनखासणाइ मगरासणाइं
- ४८ अट्ट परामणाइ, अट्ट दिमासोवित्ययासणाइ
- ४६ अट्ठ तेल्ल-समुगो जहा रायपसेणइज्जे (सू० १६१) जाव (म० पा०) अट्ठ सरिसव-समुगो
- ५० अट्ट कोट्ट-ममुग्गे
- ५१-५३ एव पत्त-चोयग-तगर-एल-हरियाल-हिंगुलय-मणोसिल-अजण-ममुगो
- ५४ अट्ठ खुज्जाओ जहा सोववाइए (सू० ७०) जाव अट्ठ पारिसीओ
- वा॰—'जहा उववाइए' इत्यनेन यत्सूचित तदिहैव देवानन्दाव्यतिकरेऽस्तीति तत एव दृश्यम् (वृ० प० ५४८)
- ४४ अट्ट छत्ते, अट्ट छत्तधारीओ चेडीओ, अट्ट चामराओ, अट्ट चामरघारीओ चेडीओ
- ५६. अट्ट तालियटे, अट्ट तालियटघारीओ चेडीओ, अट्ट करोडियाओ, अट्ट करोडियाघारीओ चेडीओ
- ५७,५ म बहु धीरघाईओ जाव (स॰ पा॰) अहु अक-धाईओ, अहु अगमिद्याओ, अहु उम्मिद्याओ, अहु ण्हावियाओ इहागमिदिकानामुन्मिदिकाना चाल्पबहुमर्दनकृतो विशेष (वृ॰ प॰ ५४८)
- ५६ अट्ट पसाहियाओ (वृ० प० ५४८)
- ६० अट्ट वण्णगपेसीओ 'वन्नगपेसीओ' त्ति चन्दनपेपणकारिका हरितालादि-पेपिका वा (वृ० प० ५४८)

१. सू० ३०।

२. पीकदानी ।

- ६१ अष्ट चूर्ण-पेसी विल जी कांइ, तवूल चूर्ण ताम। अथवा जे गध द्रव्य ने जी काइ, चूर्ण कहिये आम।।
- ६२. कीड करावे ते सही जी कांड, दाम्या आठ उदार। देवे अव्ट दास्या विल जी काड, रमण हसावणहार॥
- ६३ अठ आसन समीप वेसे तिके जी काइ, नाटक संबंध नी अप्ट। आज्ञाकारणी अठ विल जी काइ, सेवग रूपी श्रिप्ट।।
- ६४ अष्ट रसोईकारिका जी काइ, अष्ट रुखाले भंडार। शेप वोल किहसै तिके जी काइ, रूढि कह्यो वृत्तिकार।।
- ६५ घरणहार वालक तणी जी कांड, तेह रुखाने वाल। रुखवाले घर पुष्प ना जी काड, अठ-अठ दास्यां न्हाल।।
- ६६ पाणी घर रुखवालती जी कांड, अठ विलकारक जाण। पवर सेज नी कारिका जी काइ, अठ-अठ दास्या माण।।
- ६७ अभ्यतर प्रतिचारिका जी काइ, भ्यतर कार्य पिछाण। वाहिरली प्रतिचारिका जी काइ, अठ-अठ दास्या जाण।।
- ६८. करणहार माला तणी जी कांड, दास्या आठ उदार।
- पीसण वाली अठ विल जी काइ, देवे हर्प अपार।।
- ६६. अपर अनेरो पिण घणु जी कांड, रूपो हिरण सुवन्त । कांसी ने वस्तर विल जी काड, देवे होय प्रसन्त ॥
- ७० विस्तीर्ण घन कनक ने जी काइ, यावत द्रव्य विद्यमान । आप अति उचरंग सूं जी कांइ, हाथ खरचवा जान ॥
  - ७१. जाव वंग सप्तम लगे जी कांइ, अति वहु देता घन्न । अति भोगविवा वेहचवा-जी कांइ, आपे द्रव्य राजन्न ।।
  - ७२ दोयसी ने चमालीसमी जी कांइ, ढाल विशाल रसाल। भिक्षु भारीमाल ऋषिराय थी जी कांइ, 'जय-जश-मंगलमाल।।

- ६१ अट्ट चुण्णगपेमीओ 'चुन्नगपेसीओ' ति इह चूर्णः—ताम्ब्रुलचूर्णो गन्ध-द्रव्यचूर्णो वा (यृ० प० ५४८)
- ६२. अट्ठ कीडागारीओ, अट्ठ दवकारीओ 'दवकारीओ' ति परिहासकारिणीः

(वृ० प० ५४८)

- ६३ अहु उयत्याणियायो, अहु नाहरूजायो अहु कोटुवि-णीयो
  - 'उवत्वाणियात्रो' त्ति या त्रारयानगताना समीपे वर्त्तन्ते 'नाटङज्जात्रो' ति नाटकसम्बन्धिनीः

(वृ० प० ५४८)

- ६४ अहु महाणिमणीओ, अहु भडागारिणीओ 'महाणिसणीओ' त्ति रमवतीकारिका. शेपपदानि रुढिगम्यानि (वृ० प० ५४६)
- ६५. अहु अव्भाघारिणीओ, अहु पुष्फघरणीओ
- ६६. अट्ठ पाणिघरणीओ, अट्ठ विलकारीओ, अट्ठ मेज्जा-कारीओ
- ६७ अट्ठ अञ्मितरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ वाहिरियाओ पडिहारीओ
- ६८. अट्ट मालाकारीओ, अट्ट पेसणकारीओ
- ६६. अण्ण वा मुबहुं हिरण्ण वा मुवण्ण वा कस वा दूसं वा
- ७०. विजलधणकणग जाव (सं० पा०) संतमारसावएज्जं
- ७१. अलाहि जाव आसत्तमाओ फुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तु पकामं परिभाएउ ।

(ग० ११।१५६)

# हाल: २४५

# द्रहा

- तिण अवसर महावल कुंवर, इक-इक त्रिय ने ताम।
   दिया रपैया रोकडा, इक-इक कोड़ अमाम।।
   आपै इक-इक कोड फुन, सोनैया सुखदाय।
   मुकुट दिया इक-इक वली, प्रवर मुकुट रै माय।।
- तए णं से महव्वले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरण्णकोडि दलयइ
- २. एगमेग सुव्वण्णकोडि दलयइ, एगमेगं मजडं मजडप्प-वर दलयइ

- ३ इम तिमहिज सहु जाव दै, इक्त-इक पेसणकार। अन्य वहुरूप सुवर्ण विल, जाव वेहचवा सार॥
- ४. तिण अवसर महावलकुवर, ऊपर वर प्रासाद। अवतसके रह्यो थको, अधिक हरप अहलाद।।
- ५ जिम जमाली नो कह्यो, पूर्वे जे अधिकार।। कहिवो तिम महावल तणो, जावत विचरै सार॥
- ६. \*तिण काले हो तिण समय सुजान,

तेरमा विमल अरिहत पिछाणियै।

तास प्रपोतो हो कहियै शिष्य सतान,

घर्मघोप नामे महामुनि जाणियै।।

बाo — जे भणी विमल, अनन्त के वीच अन्तर ह सागर को। अनन्त धर्म के वीच अन्तर ४ सागर को। धर्म, शांति के वीच अन्तर ३ सागर। पिण निण में पूण पत्य ऊणो, एहवु तीयँकर लेखा में अन्तर कहा, छै। अने ए महावल ब्रह्म देवलोके दश सागर स्थिति भोगवी सुदर्शण थयु ते माटे विमलनाथ तीर्थ ने विषे घणा सागर उलघ्या पछै महावल थयु एहवु सभवे छै।

७. जातिसपन्ने हो वर्णक जिम केशी स्वाम,

जाव पच सय श्रमण मग परवरचा।

पुन्वाण्पुन्वि हो कहिये पथ सुधाम,

ग्रामानुग्राम विच्रता गुण भरचा।।

जहा हित्थणापुर हो सहस्राव वन उद्यान,

तिहा मुनि आय आज्ञा ले शोभाविया।

सजम तप करि हो आतम भावित जान,

यावत विचरे भविक मन भाविया॥

६. हित्थणापुर हो नगर विपे तिणवार,

स्थान शृंगाटक त्रिक चउक्क चच्चरे।

यावत परपद हो पुर जन वृंद उदार,

विनय वंदन करि त्रिविध सेवा करे।।

१० तिण अवसर हो महावल नाम कुवार,

मनुष्य घणा ना शब्द सुणी करी।

जन व्यूहजनवृंद हो देखी करें विचार,

इम जमाली जेम चितवणा चित घरी।।

११. तिमज तेडावै हो पुरुप कंचुइज जाण,

कचुइज नर पोलिये विघ वरी।

कचुइज पिण हो तिमहिज भाखे वाण,

णवरं धर्मघोष आया निश्चे करी।।

१२. वे कर जोडी हो वोलै इणविघ वाय,

जाव मनुष्य वहु वदण कारणे।

एक दरवजे हो जाये छै अधिकाय,

आगल पाठ तास इम घारणे।।

- ३ एव तं चेव सन्व जाव एगमेग पेसणकारि दलयङ, अण्णं वा सुवहुं हिरण्ण वा जाव (स० पा०) परिभाएउं। (श० ११।१६०)
- ४ तए णं से महत्वले कुमारे उप्पि पासायवरगए
- प्र जहा जमाली (श॰ १।१५६) जाव "विहरइ। (श॰ ११।१६१)
- ६. तेण कालेण तेण समएण विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नाम अणगारे

- ७ जाडसपन्ने वण्णओ जहा केसिसामिस्स जाव पर्चिह् अणगारसएहिं सिद्धं सपिरवुडे पुन्वाणुपुन्वि चरमाणे गामाणुग्गाम दूइज्जमाणं
- द जेणेव हित्यणापुरे नगरे जेणेव सहमववणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओगगहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ। (श० ११।१६२)
- १ तए ण हित्यणापुरे नगरे सिघाटग-तिय-चउकक चच्चरः 'जाव परिसा पज्जुवासइ।

(श० ११।१६३)

- १० तए णं तस्स महव्वलस्स कुमारस्स त महयाजणसद् वा जणवृहं वा जाव जणसिन्नवाय वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा एवं जहा जमाली (श० ६।१५८) तहेव चिता
- ११ तहेव कंचुइज्ज-पुरिस सद्दाविति (स० पा०) कचु-इज्जपुरिसो वि तहेव अवखाति नवर—धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए
- १२ करयल जाव निगगच्छड।

<sup>\*</sup>सय: विश्वरत विश्वरत हो आया सोजत

१३. इम निष्में करि हो देवानुप्रिया ! सार,
तरमा विगन तीर्थं कर नो मही ।।
पवर प्रपोतो हो धर्मधोप अणगार,
धेप तिमन पन सय नी आया वही ॥
१४ यावत महावन हो नमानी जिम नाण,
नीकत्यो स्थ प्रधान धेमी करी ॥
वंदना करि हो सन्मुग बेठो नाम,
धर्मकथा केमी स्थाम ज्यू बागरी ॥
१५. ते पिण तिमहिन हो मात पिना ने पूछंन,
इतरो विधेप धर्मधोप मुनि कने ।
मुड भई ने हो लेस चरण मुनत,
मात पिना ने कहे आज्ञा दीने महने ॥

भात ।पता न यह आजा दात महन ॥ १६. उत्तर पदुत्तर हो जमाली जिम घार, णयरं विज्ञेप अमा पिता उच्नरें।

णयर विश्वप अमा पिता उच्चर। विपुल राजकुल हो यालिका तुकः नार, भेष विस्तार जमानी तणी परे॥

# सोरठा

१७ विपुल कुल तणी नार, जमाली ने मां काछी। उहा महाबल अधिकार, विपुल राजकुल बालिका॥

१८ \*यावत थाका हो मात पिता तिणवार, मन विण महावत कुवर प्रते नहै। एक दिवस नो हो राज करो सुपकार,

एह देखण री इच्छा मुक्त मन लहै।।

१६ तिण अवसर हो महावल नामें कुमार,
मात पिता नो वचन अणलंघतो।
मून साधी हो वोल्यो नहि तिणवार,

नृप पद नी नहिं चाह चरणस्तो।।

२०. हिव बल राजा हो सेवंग पुरुष बोलाय,
जिम शिवभद्र ने शिव नृष पद दियो।
तिम इहा कीघो हो राज्य अभिषेक ताय,
कर जोड़ कुवर ने जय विजय वधावियो॥

२१. जय विजय ववावी हो वोलै उहिवध वाय,

कह नी हे पुत्र ! स्यू आपा ? स्यू वाछियै ?

शेप थाकतो हो जमाली ज्यूं कहाय,

मोटे मडाण करै चारित्र लियै।।

२२. जाव तिवारे हो महावल मुनिराय,

धमंघाप अणगार समीप ही। घुर सामायक हो आदि देड ने ताय,

चउद पूर्व प्रति ताम अह् जई।।

- १३. एवं पानु देवाण्णिया ! विभागम जन्दको पत्रीप्तण धनमपीन नामें अनुमारे, भेन न रेज जाय मी वि नांच । (मृत १६४ पार्व टिट १)
- १४ गए पा ने माल्यते मुमारे गरेष (इत ११६०-१६२) पायरेष निमान्छनि । धरमण्या परा नेमिमामिस्म (राष्ट्र मृत ६६३) ।
- १४ मी वि उत्तेव अध्यानियर ज्ञापुण्या, नवर्तन-धन्म-पीसस्य अनुसारस्य जिन्मं मुद्दे भविना ज्याराजी अपसारियं परप्रकार ।
- १६ सतेय ब्नविध्युनिया, स्वर—इमाओ य ते जामा ! विद्यत्रायनुष्यमात्रियात्रोः .....र्ग स भेर । . (श्रुट ११६४-१ १६)
- १७. जमानिचारो हि विपुत्रपुत्रवानिका द्रयधीनमिह सु विषुत्रराजगुत्रवानिका द्रयोज्यध्येजस्यम् । (स्टब्स्ट्रिस्ट्रे
- १८. त्राव नाते अत्रामाः चेन महस्वातुमार एवं ययामी—त इन्हामी ते जाया ! एगरियमपि रज्जनिरियामिसाए। (१०११।१६६)
- १६ ताग पा मे महस्यते पुमारे सम्मापित-ययानपुषत-माणे सुनिकीण निष्ट्रित (घट ११।१६७)
- २०. तए ण से बने रामा कोट्वियपुरिने महावेद एव जहां नियमहरम (म० ११।५६-६२) तहेन रामाभिनेको भाणियव्यो जान लभितिचति, करयलपरिम्महियं "महब्बल गुमार जएण विजएण यदाविति।
- २१ यदावेता एवं वयागी—भण जाया ! कि देमो ? कि पयच्छामो ? नेस जहा जमाजिन्म तहेव (श० ६।१८०-२१४)
- २२. जाव (घ० ११।१६=) तए णं में महस्त्रले अणगारे धम्मधोसस्य अणगारम्य अंतिय सामाइयमाज्याह चोहम पुट्याइ अहिज्जइ,

<sup>&</sup>quot;लय: विचरत विचरत हो आया सोजत

२३. चउथ छठादिक हो जाव विचित्र प्रकार, तप करिवै करी आतम भावतो। बहु प्रतिपूर्ण हो द्वादश वर्ष उदार, चरण पर्याय निर्मल घ्यान घ्यावतो।।

२४. मास सलेखण हो साठ भक्त अणसण छेद,

व्रत ना अतिचार आलोई पडिकमी। समाधि पाम्यो हो महामोटो मुनि सवेद,

काल नै अवसर काल करी दमी।।

२५. ऊर्घ्व चद रिव हो जिम अम्मड' आख्यात,

जाव ब्रह्मलोक नाम कल्प मही।

मुनि ऊपनो हो देवपणे सुविख्यात,

प्रबल पुन्य करने बहु ऋदि लही।।

२६. तिहा केइ सुर नी हो दश सागर नी आय',

तिहा महाबल देव तणी पिण जाणियै।

दश सागर नी हो कहि उत्कृष्टि स्थिति प्राय,

रूप प्रचारिका ते सुर माणियै।।

# सोरठा

थकी पिण लतके । २७ चउदश पूरवधार, जघन्य किम न्नह्य ऊपनो ॥ सुविचार, ऊपजवो पूरव ने विषे । २८ उत्तर तेह्नो एह, चउदश जणाय छै।। न्याय किंचित ऊण पढेह, एहवू

२६. \*श्री जिन भाखें हो अहो सुदर्शन । ताम,
स्थिति दश सागर ब्रह्म कल्प मही।
दिव्य प्रधानज हो भोग जिके अभिराम,
भोगवते थके विचरी ने सही॥

३०. ते निश्चै करि हो देवलोक थी आम, देव आयु क्षय करिने तिहा। चवी अनतर हो तू ऊपनो इण ग्राम,

श्रेष्ठि तणै कुल पुत्रपणै इहा ॥

३१. तुम्हे सुदर्शन हो बाल भाव मूकाण,

कला कुशल वय योवन पावियो।

तथारूप जे हो स्थ्विर सत पै जाण,

केवलि भाल्यो घर्म दिल आवियो।।

- २३. बहूरि चउत्थ जाव (स०पा०) विचेत्तीह तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइ दुवालस वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ।
- २४. मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सिंहु भत्ताइ अणसणाए छेदित्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा
- २५. उड्ढं चिंदम-सूरिय (स॰ पा॰) जहा अम्मडो जाव वभलोए कप्पे देवत्ताए उववन्ते ।
- २६ तस्य ण अत्थेगतियाण देवाण दस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता। तस्य ण महव्वलस्स वि देवस्स दम सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता।
- २७,२८ इह च किल चतुर्दं शपूर्वधरस्य जघन्यतोऽपि लान्तके उपपात इष्यते, 'जावित लतगाओ चउदमपुब्यी जहन्न उववाओ' त्ति वचनादेतस्य चतुर्दं शपूर्वं धरम्यापि यद् ब्रह्मलोके उपपात उक्तस्तत केनापि मनाग् विस्म-रणादिना प्रकारेण चतुर्दं शपूर्वाणामपरिपूर्णं त्वादिति सभावयन्तीति । (वृ० प० ५४६)
- २६ से ण तुम सुदसणा ! वभलोगे कप्पे दस सागरोव-माइ दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्ता।
- ३०. तओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिङक्खएणं अणतर चय चङ्ता इहेव वाणियगामे नगरे सेट्टि-कुलसि पुत्तत्ताए पच्चायाए । (श० ११।१६६)
- ३१. तए ण तुमे सुदंसणा । उम्मुक्कवालभावेण विण्णय-परिणयमेत्तेण जोव्वणगमणुपत्तेण तहारूवाण थेराणं अतियं केवलिपण्णत्ते धम्मे ।

<sup>\*</sup>लय: विचरत विचरत हो आया सोजत

रै. अगसुत्ताणि भाग २ श० ११।१६६ का पाद टिप्पण एव ओवाइयं सू० १४० का पादटिप्पण द्रष्टन्य है।

२. आयुष्य

## सोरठां

३२. जिण आज्ञा-रूपज घर्म, निसुण्यो ते पिण धर्म ने। मर्म, विशेष वछचो नै रुच्यो॥ वंछघो वारू ३३. \*सुष्ठु आछो हो तुम्हे सुदर्शन । ताम, हिवडां पिण तेह धर्म प्रति त् वरे। तिण अर्थे कर हो अहो सुदर्शण ! आम, क्षय अपचय पत्य उदिघ नो इम वरे।।

# सोरठा

३४. सर्व थकी जे नाग, क्षय कहिये छै तेहने। अपचय देश विणास, उभय शब्द इण कारणे॥ ३५. \*दोयसी ने हो पैतालीसमी ढाल,

भिक्षु भारोमाल नृपशशि गुणनिला। तास प्रसादे हरप विनोद विशाल, 'जय-जश' आनन्द च्यार तीर्थ भला।।

ढाल: २४६

# दूहा

१. श्रेष्ठि सुदर्शन तिण समय, महावीर ने पास। एह अर्थ प्रति सामली, हिवडे वारी तास।। २ अध्यवसाय शुभे करी, शुभ परिणामे तेह। लेश्या विश्द्धमान करि, भावे लेश्या ३. तदावरणी कर्म नो, क्षय उपगम करि जान। ईहा भली विचारणा, अपोह ते वर्मध्यान।। ४. मार्गणा रु गवेसणा, समचै अधिक सूचित । जाती-समरण विचारता, वारू एम ५. निज भव सजी रूप जे, पूरव जाति पिछाण। तेहनो समरण ज्ञान ते, उपनो अधिक प्रधान।। ६. जाती-समरण कर तदा, वीर कही जेवात। सम्यक प्रकारे अर्थ थी, जाण रह्यो साक्षात।। †प्रभ् धिन-धिन शासण रा घणी, वले घिन-घिन आपरो ज्ञान हो। प्रभ् विन-विन वाणी आपरी, वले घिन-घिन आपरो घ्यान हो ॥ (घुपद)

- ३२ निसते, सेवि य धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए।
- ३३ त सुट्ठुण तुम सुदसणा । इदाणि पि करेसि । से तेणट्ठेण सुदसणा । एव वुच्चड — अत्यि ण एतेसि पलिओवमसागरोवमाण खएति वा अवचएति वा। (भा० ११।१७०)

- १ तए ण तस्स सुदसणस्स सेट्ठिस्स समणस्म भगवनो महावीरस्म अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म
- २. सुभेण अञ्झवसाणेण सुभेण परिणामेण लेसाहि विसुज्ज्ञमाणीहि
- ३ तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण ईहापूह-
- ४,५ मगगण-गवेसण करेमाणस्स सण्णीपुव्वे जातीसरणे समुप्पन्ने 'सन्नी पुन्वजाईसरणे' त्ति सज्ञिरूपा या पूर्वा (बृ० प० ५४६) जातिस्तस्याः स्मरण यत्तत्त्रथा ६ एयमट्ठ सम्म अभिसमेति । (भ० श० ११।१७१) 'अहिसमेइ' ति अधिगच्छतीत्यर्थः (वृ० प० ५४६)

\*लय: विचरत विचरत हो आया सोजत

<sup>†</sup>लय: रे जीव मोह अनुकम्पा न

- ७. सेठ सुदशण तिण समय, श्रमण भगवत श्री महावीर हो। पूरव भव सभारचो तिणे, प्रभु याद करायो हीर हो।। मन पाछिल याद आया थका, पूर्व काल तणी अपेक्षाय हो। श्रद्धा संवेग दुगुणो ऊपनों, हिय पाम्यो हरण अथाय हो।। १ श्रद्धा तस्व तणी रुचि अति वधी, अथवा भला अनुष्ठान हो। ते करवा तणी इच्छा घणी, कह्यो श्रद्धा नो अर्थ पिछान हो ॥ १०. भव भ्रमण तणो भय अधिक घणो, घुर अर्थ सवेग नों एह हो। अथवा अभिलाषा मोक्ष नी, ते पिण तास वधी दुगुणेह हो ॥ ११ अधिक आनन्द करी तदा, अश्रुपूर्ण नयन छै तास हो। घणो हरप हिया में ऊपनो, पूर्व भव याद आया विमास हो ॥ १२ श्रमण भगवत महावीर ने, प्रदक्षिणा दे तीन वार हो। वंदना वच स्तुति नमी करी, इम वोल्यो वचन विचार हो।।
- १३. एवमेय प्रभु । इमहीज ए, जाव ते वच एह उदार हो। तुम्है कहा जे सत्य छं, एम कही तिहवार हो।। ईशाण विषे जई, सेठ ऋषभदत्त जेम हो। १४. कृण जाव सर्व दु:ख क्षय किया, पाम्या अविचल क्षेम हो।। १५. णवर विशेष छै एतलो, भिणयो पूरव चउदश ताय हो। घणो प्रतिपूर्ण तिण पालियो, वारै वर्ष चारित्र पर्याय हो।। १६ जेष ऋपभदत्त जिम जाणज्यो, सेव भते । सेव भते ! ताम हो ॥ प्रभ् ! तुम्हे कह्यो सर्व सत्य छै, इम बोल्या गोतम स्वाम हो ।। १७ एवो एकादशमा शतक नो, कह्यो एकादशमो उद्देश हो। अधिकार कह्यो महावल तणो, तिणमे वारू वैराग विशेष हो ॥ १८. ढाल दोयसौ ने छयालीसमी, भिक्षु भारीमाल ऋषिराय हो। प्रसादे संपदा, 'जय-जश' अधिक सवाय हो।। एकादशशते एकादशोद्देशकार्थ ।

- ७. तए ण से सुदसणे सेट्ठी समणेणं भगवया महावीरेणं सभारियपुव्वभवे
- दुगुणाणीयसड्ढसवेगे
- ६ तत्र श्रद्धा-तत्त्वश्रद्धान सदनुष्ठानचिकीर्पा वा (वृ० प० ५४६)
- १० सवेगो-भवभय मोक्षाभिलाषो वेति। (वृ० प० ५४६)
- ११. आणदंसुपुण्णनयणे
- १२ समण भगवं महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेता वदइ नमसइ, वदिता नमसिता एव
- १३ एयमेय भते । जाव (स॰ पा॰) से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्ट्
- १४ उत्तरपुरित्यम दिसीभाग अवन्कमइ, सेस जहा उसभदत्तस्य (भ० ६।१५१) जाव सन्वदुक्खप्पहीणे
- १५ नवर—चोद्सपुब्वाइ अहिज्जइ वहुपडिपुण्णाइ दुवालसवासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ।
- १६ सेस त चेव। (য়০ ११।१७२) सेव भते ! सेव भते ! ति । (মা০ ११।१७३)

ढाल: २४७

ાાર્શાર્શા

- उदेश मे, काल कह्यो जगनाथ। १. एकादशम पिण तेहिज हिव, भंगातरे विख्यात ॥ २ तिण काले नै तिण समय, आलिभया अभिराम । नगरी हुती सख वन, चैत्य वर्णक ताम ॥ ३. तिण आलभिया नगरी विषे, इसिभद्र आद। वहु वसै, ऋद्धि अड्डा अगाध ॥ समणोपासग ४. यावत घन करिने तसु, गज सके कोय। जाण्या जीव अजीव नै, यावत विचर जोय ॥
- १ एकादशोदेशके काल उक्तो द्वादशेऽपि स एव भग्य-(वृ० प० ५५०)
- २ तेण कालेण तेण समएण आलिभया नाम नगरी होत्या-वण्णओ । सखवणे चेइए-वण्णओ ।
- ३ तत्य ण आलभियाए नगरीए वहवे इसिभद्दपुत्तपा-मोक्खा समणोवासया परिवसति —अड्ढा
- ४ जाव वहुजणस्स अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणा विहरति । (श० ११।१७४)

- म्श्रावक सुदरू हो गुणिजन इसिभद्र पुत्र उदार ॥ (श्रुपदं)
  प तिण अवसर ते एकदा हो गुणिजन ! श्रावक वह सुजाण।
- प्र. तिण अवसर ते एकदा हो गुणिजन ! श्रावक वहू सुजाण। आय मिल्या छै एकठा हो गुणिजन ! वंठा आसन ठाण कै।।
- ६. एहवे रूपे ऊपनो हो गुणिजन! त्यारे माहोमाय। कथा तणो आलाप ने हो गुणिजन! चिन ना अध्यवसाय कै।।
- ७ हे आर्थो । सुरलोक मे हो गुणिजन ! घणा देव नी ताय। स्थिती केतला काल नी हो गुणिजन । दाखी श्री जिनराय के ॥
- द इसिभद्र सुत तिण समै हो गुणिजन ! श्रावक अविक सुजाण । गृह मुख करि जाणी तिणे हो गुणिजन ! देव स्थिति नी छाण की ।।
- ह तेह श्रावका प्रति तदा हो गुणिजन । वोल्यो एहवी वाय। हे आर्यो । देवलोक मे हो गुणिजन । देव स्थित कहिवाय के ।।
- १० जवन्य वर्ष दश सहस्र नी हो गुणिजन । तिण उपरत कहाय। एक समय अविको कही हो गुणिजन। दोय समय अविकाय कै।।
- ११ यावत दश समये करो हो गुणिजन । अधिको स्थिती कहाय। सख समय अधिकी विल हो गुणिजन। असल समय अधिकाय कै।।
- १२ स्थित उत्कृष्ट थकी कही हो गुणिजन । तेतीस सागर जोग। तिण उपरत विच्छेद छै हो गुणिजन । देव तथा सुर लोग कै।।
- १३. इसीभद्र सुत इम कह्यो हो गुणिजन । जाव परूपित एम। अन्य श्रावक अणसरघता हो गुणिजन । नाणै प्रतीति प्रेम के ।।
- १४ विल ए अर्थ रुचै नहीं हो गुणिजन! अणसरधता ताय। अणप्रतीत अणरोचता हो गुणिजन! आया जिण दिशि जाय कै।।
- १५ तिण काले ने तिण समय हो गुणिजन ! भगवत श्री महावीर। प्रभुजी जाव समवसरचा हो गुणिजन ! मेरु तणी पर घीर कै।।
- १६ वीर पद्यारचा सामली हो गुणिजन । यावत परपद आय। सेव करें साचै मनै हो गुणिजन । त्रिह जोगे करि ताय कै।।
- १७ ते श्रावक तिण अवसरे हो गुणिजन । वीर पधारचा ताम। कथा एह लाधा छता हो गुणिजन । हरप सतोपज पाम।।
- १८ इम जिम बीजा जनक ना हो गुणिजन । पंचमुदेशा माय। वदन तुगिया ना गया हो गुणिजन । तिम ए वदन जाय कै।।
- १६ यावत जिन नै वदनै हो गुणिजन । नमस्कार विधि रीत। सेव करें साचै मनै हो गुणिजन । तन मन सूधर प्रीत।।
- २० प्रभू श्रावका ने तदा हो गुणिजन ! मोटी परपद माय। वर्म कथा यावत तिके हो गुणिजन ! आण आरावक थाय कं।।
- २१ ते श्रावक तिण अवसरे हो गुणिजन । वीर प्रभू पै ताय। धर्म मुणी हिये धारने हो गुणिजन । रह्या हरप सतोप अथाय के ॥

- ५ तए ण तेसि समणोवासयाण अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाण सहियाणं सिण्णिवट्ठाण 'एगओ' ति एकत्र 'ममुवागयाण' ति समायाताना 'सहियाणं ति मिलिताना 'समुविट्ठाण' ति आसन-ग्रहणेन । (वृ० प० ५५२)
- ६. सिंग्गिमण्णाण अयमेयारचे मिहोकहासमुत्लावे समुप्प-ज्जित्या —
- ७. देवलोगेमु ण अञ्जो । देवाण केवतिय काल ठिती पण्णता ? (ग० ११।१७५)
- द तए णं में इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देविट्ठती-गहियट्ठे
- ६ ते समणोवामए एव वयासी—देवलोएमु ण अज्जो <sup>1</sup>
- १० देवाण जहण्णेण दसवाममहम्माङ ठिती पण्णत्ता, तेण पर ममयाहिया, दुममयाहिया,
- ११ जाव दमममयाहिया, मधेज्जममयाहिया अमस्रेज्ज-समयाहिया,
- १२ उक्कोमेण तेत्तीस मागरोवमाङ ठिती पण्णत्ता । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ।

(श० ११।१७६)

- १३ तए ण ते समणोवागया इमिभद्दपुत्तस्म समणोवाग-गस्म एवमाइक्यमाणस्म जाव एव परुवेमाणस्म एयमट्ठ नो सद्दत्ति नो पत्तियति,
- १४ नो रोयित, एयमट्ठ अमद्दुमाणा अपत्तियमाणा अरोयमाणा जामेव दिस पाउन्भूया तामेव दिस पिंडगया। (श०१११९७)
- १५. तेण कालेण तेण समएण ममणे भगव महावीरे जाव समोसढे
- १६ जाव परिमा पज्जुवासइ।
- १७ तए ण ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठा
- १८,१६ (स॰ पा॰)एव जहा तुगियउद्देसए(भ॰ २।६७) जाव पज्जुवासति 'तुगिउद्देसए' ति द्वितीशतस्य पञ्चमे ।(वृ०प॰ ५५२)
- २० तए ण समणे भगव महावीरे तेसि समणोवासगाण तीमे य महितमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ जाव आणाए आराहए भवइ। (श० ११।१७=)
- २१ तए ण ते समणीवासया समणस्स भगवओ महा-वीरस्स अतियं धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा

<sup>ं</sup> लयः सुण-सुण साधूजी हो मुनिवर

- २२. ऊठी नै ऊभा थई- हो गुणिजन । स्वाम प्रते सुखदाय। नमस्कार वदना करी हो गुणिजन । वोल्या इहविघ वाय कै।। २३. हे प्रभु । इम निश्चै करि हो गुणिजन । इसिभद्र सुत पेख। अम्ह ने कहै सामान्य थी हो गुणिजन ! जाव परूपे विशेख कै।। २४. हे आर्थो । सुरलोक मे हो गुणिजन । देव तणी स्थिति ताय। दश हजार वर्षा तणी हो गुणिजन । जघन्य कहै जिनराय कै।। २५. समय अधिक तिण ऊपरे हो गुणिजन । जावत तिण उपरत। सूर सुरतोक विच्छेद छै हो गुणिजन! ए किम हे भगवत । कै।।
- २६ हे आर्थो । इम आमत्री हो गुणिजन । भगवत श्री महावीर । तेह श्रावका प्रति तदा हो गुणिजन । इम वोल्या गुणहीर कै ॥ २७ हे आर्थो । तुम्ह ने कहै हो गुणिजन । इसीभद्र सुत सार । स्थित सुर नो सुरलोक मे हो गुणिजन । घुर दश वर्ष हजार के ॥ २८. समय अधिक तिण ऊपरे हो गुणिजन । यावत तिण उपरत । सुर सुरलोक विच्छेद छै हो गुणिजन । सत्य अर्थ ए तत कै ॥
- २६. हू पिण आर्यो । इम कहू हो गुणिजन । जाव परूपू सार। सुर नी स्थिति सुरलोक मे हो गुणिजन । घुर दश वर्ष हजार कै।।
- ३०. तिमज जाव तिण अपरे हो गुणिजन । सुर सुरलोक विच्छेद। अधिक स्थिति सुर नी नही हो गुणिजन । सत्य अर्थ ए वेद कै।। ३१. ते श्रावक तिण अवसरे हो गुणिजन । वीर प्रभु ने पास। एह अर्थ निसुणी करी हो गुणिजन । हिवडे घारी तास कै।।
- ३२ वीर प्रभु नै वदने हो गुणिजन । नमस्कार करि ताम। इसिभद्र सुत छै जिहा हो गुणिजन। सहु आव्या तिण ठाम कै।।
- ३३ ऋषिभद्र सुत श्रावक भणी हो गुणिजन । स्नुति करै शिरनाम । ए अर्थ सम्यक विनय करी हो गुणिजन ।

वारूवार खमावै ताम कै॥

- ३४. ते श्रावक तिण अवसरे हो गुणिजन । पूछी प्रश्न उदार। वहु अर्थ प्रते हृदय विषे हो गुणिजन । ग्रहै ग्रही ने सार कै।।
- ३४. वीर प्रभु ने वदने हो गुणिजन ! नमस्कार शिर नाम। जे दिशि थी आव्या हुता हो गुणिजन! ते दिशि गयाज ताम के ॥
- ३६. हे प्रभु । इस गोतम कही हो गुणिजन । वीर प्रभु ने ताय । वादी शिर नामी करी हो गुणिजन ! वोलै इह विध वाय कै ॥
- ३७. हे प्रभुजी । समर्थ अछै हो गुणिजन । इसिभद्र सुत सार । देवानुप्रिया आगलै हो गुणिजन । आणी हरप अपार कै।।
- ३८. मुड द्रव्य भावे करी हो गुणिजन । छाडी घर अगार। साधूपणा प्रते सही हो गुणिजन । लेवा समरथ सार कै?
- ३६. जिण कहे अर्थ समर्थ नही हो गुणिजन । इसिभद्र सुत न्हाल। शीलवृत बहु आचरी हो गुणिजन । पच अणुवत पाल कै।।

- २२ उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेता समण भगवं महावी -वदित नमंसित, वदिता नमसित्ता एवं वदासी---
- २३ एव खलु भते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्ह एवमाइनखइ जाव परूवेइ
- २४ देवलोएसु ण अज्जो <sup>1</sup> देवाण जहण्णेण दसवाससह-स्साइ ठिती पण्णत्ता,
- २५ तेण पर समयाहिया जान तेण परं नोच्छिण्णा देना य देनलोगा य। (भ०११।१७६) से कहमेय भते । एन ?
- २६. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एव वयासी---
- २७. जण्ण अज्जो । इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुव्भ एव-माइक्खइ जाव परूवेड—
- २ देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया जाव तेण पर वोच्छि-ण्णा देवा य देवलोगाय—सच्चे ण एसमट्ठे,
- २६ अह पि ण अज्जो । एवमाइक्खामि जाव परूवेमि— देवलोएसु ण अज्जो । देवाण जहण्णेण दसवाससह-स्साइ ठिती पण्णता।
- ३० (स॰ पा॰)त चेव जाव तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—सच्चे ण एसमट्ठें। (श॰ ११।१८०)
- ३१ तए ण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म
- ३२ समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता, जेणेव इसिभद्युत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छति,
- ३३ इसिभद्दपुत्त समणोवासग वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो भुज्जो खामेति
- ३४ तए ण ते समणोवासया परिमणाइ पुच्छति, पुच्छित्ता अट्ठाइ परियादियति, परियादियित्ता
- ३५ समण भगव महावीर वदति नमसित, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया। (श॰ ११।१८१)
- ३६ भतेति । भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—-
- ३७,३८ पभू ण भते । इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवाणु-प्पियाण अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वदत्तर ?
- ३६ नो इणट्ठे समट्ठे गोयमा । इसिभद्पुत्ते समणो-वासए वहूहिं सीलव्वय-

- ८०. गुणवत तीन कहीजिये हों गुणिजन । प्रवर वेरमण जाण। ए नवमो वृत आचरी हो गुणिजन । दशमो वृत पचयाण।।
- ४१. पोषघ उपवासे करी हो गुणिजन ! जिम आदिरया तेम। तप करि आतम भावतो हो गुणिजन ! स्वस्थ चित्त घर प्रेम के ।।
- ४२ पाली बहु वर्षां लगै हो गुणिजन ! श्रावक नी पर्याय। मास तणी सलेखणा हो गुणिजन ! श्रातम मेवी ताय कै।।
- ४३. साठ भक्त अणसण करी हो गुणिजन । छेदै छेदी मोय। एक भक्त छैदिन तणी हो गुणिजन । द्वितीय निशा नी जोय कै।।
- ४४. व्रत अतिचार आलोय ने हो ग्णिजन ! पडिक्कमी मुविद्याल । समाधि पामी सुदरू हो गुणिजन ! काल मास करि काल के ॥
- ४५. सीवर्म कल्पे सही हो गुणिजन । वर अरुणाभ विमाण । देवपणे महादीपता हो गुणिजन ! ऊपजरये मुविहाण के ।। ४६. केडक मुर नी स्थिति तिहा हो गुणिजन !

च्यार पत्योपम जान। इसिभद्र सुत सुर स्थिति हो गुणिजन होम्ये चिउं पत्य मान के।। ४७ हे प्रभु ! ते सुरलोक थी हा गुणिजन । इसिभद्र मुत देव। काल करी यावत किहा हो गुणिजन । इपजस्यै ततसेव के?

४८ वीर कहै मुण गोयमा ! हो गुणिजन ! महाविदेह मभार ! सखर सीभस्य जाव थी हो गुणिजन ! अत करें ससार कें !! ४६. तुम्हें कह्यों ते सत्य सहु हो गुणिजन ! इम किह गोतम स्वाम ! सजम तप किर आतमा हो गुणिजन ! मावित विचरें ताम कें !! ५० भगवत श्री महावीर जी हो गुणिजन ! अन्य दिवस अवघार ! कदाचित आलिभया हो गुणिजन ! नगरी थको तिवार कें !! ५१ शख वन जे चैत्य थी हो गुणिजन ! निकलें निकली तेह ! वाहिर जनपद देश में हो गुणिजन ! विहार करी विचरेह कें !! ५२. एकादशमा शतक नों हो गुणिजन ! वारसमो उद्देश !

देश कह्यों छै तहनों हो गुणिजन ! कहिये छै हिव शेप के ॥ ५३. वे सी सेतालीसमी हो गुणिजन ! आखी ढाल उदार। भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी हो गुणिजन! 'जय-जश' सपित सार के ॥ ४०. गुणवेरमण-पचनग्राण-

- ४१. पोसहोबवामेर्हि अहापरिग्गहिएहि तबोकम्मेहि अप्पाण भावेगाणे
- ४२. वहर वासार समगीवासगपरियाग पाउणिहिति पाउणिता मासियाण सनेहणाए अनाणं झूमेहिति झूसेता
- ४३. महि भत्ताः अणगणाए छेदेहिनि छेदेना
- ४४. बालोडयपिटनरुते ममाहिएले कालमाने काल फिच्चा
- ४५. मोहम्मे कणे अरुगाने विमाणे देवताए उवविजिहिति
- ४६. तत्य ण अस्येगितियाण देवाण चलारि पिलओवमाइ ठिती पण्णता । तत्य ण एमिभद्युत्तरम वि देवस्य चतारि पिलओवमाउं ठिनी भविस्मति । (ग० ११।१८२)
- ४७. में ण भने । इसिमद्दपुने देवे ताओ देवलोगाओं आउन्प्रपण भवनप्रएण ठिप्तनप्रएण जाय (मं०पा०) गाह उययजिनहिति ?
- ४८. गोयमा ! महाचिदेहे वाने सिन्झिहित जाव (स॰पा॰) अत नाहिति (ग॰ १।११८३)
- ४६. मेव भते <sup>1</sup> नेव भते <sup>1</sup> ति भगव गोयमे जाव कप्पाण भावेमाणे विहरड । (श॰ ११।१८४)
- ५०. तए ण समणे भगव महावीरे अण्यया कयाड आलिभयाओ नगरीओ
- ५१. संखनणाओ चेडयाओ पढिनिनयमड पिटिनिनय-मित्ता बिह्या जणवयिवहार विहरइ । (श० ११।१८५)

#### दूहा

- १ तिण काले ने तिण समय, आलिभया अभिघान। नगरी हुती वर्णन तसु, चैत्य सख वन जान।।
- २. चैत्य मख वन थी तिहां, अतिही दूर न कोय। अतिही नजीक पिण नहीं, वसै परिव्राजक सोय।।
- ३. मोगल एह्वे नाम ते, ऋग यजुर् जे वेद। यावत द्विज नय नै विपे, प्रवीण जाण्या भेद॥
- ४ छठ-छठ अतर-रहित तप, वे वाह ऊची स्थाप। रवि सन्मुख आतापना, लेतो विचरै आप॥
- ५ तिण अवसर मोगल भणी, छठ-छठ जाव आताप। लेतां भद्र प्रकृतिपणै, जिम शिव नृप ऋषि थाप।।
- ६. यावत विभग नाम ते, अज्ञान ऊपनो तास। ते विभग नाम अज्ञान ही, उपने छते विमास।।
- ७. ब्रह्मलोक कल्प नै विषे, सुर स्थिती जाणत। अविध दर्शन करिनै विल, अमर स्थिती देखत।। \*सुणज्यो मोगल तापस नी वारता रे लाल।। (ध्रुपद)
- द. तिण अवसर मोगल भणी रे, एहवे रूपे घार । सुखकारी रे । अज्भित्थिए यावत वली रे लाल,

उपनो मन **में** विचार ।। सुखकारी रे ।।

 ज्ञान दर्शण अतिशेष जे रे, सपूरण सुखदाय। सुखकारी रे। ते मुभने ऊपनो अछे रे लाल,

इम चितवै मन माय ।। सुखकारी रे।।

१० सुरलोके स्थिति सुर तणी रे,

जघन्य दश वर्ष हजार । सुखकारी रे। समय अघिक तिण ऊपरें रे लाल,

जाव असख समय अघिकार ॥ सुखकारी रे ॥

११ उत्कृष्ट दश सागर तणी रे,

तिण उपरंत विच्छेद । सुलकारी रे । सुर अथवा सुरलोक जे रे लाल,

अधिक स्थिति न सवेद ॥ सुखकारी रे ॥

- २,३ तस्स ण सखवणस्स चेइयस्स अदूरसामते पोग्गले नाम परिव्वायए रिउव्वेदजजुव्वेद जाव वभण्णएसु परिव्वायएसु य नएसु सुपरिनिद्दिए
- ४ छट्ठछट्ठेण अणिविखत्तेण तनोकम्मेण उड्ढ वाहाओ पिगिज्झिय-पिगिज्झिय सूराभिमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरड । (॥०११।१८६)
- ५ तए ण तस्स पोग्गलस्स परिन्वायगस्स छट्ठछट्ठेण जाव (स॰ पा॰) आयावेमाणस्स पगइभद्द्याए (स॰ पा॰) जहा सिवस्स
- ६ जाव विव्भगे नाणे समुप्पन्ने ।
- से ण तेण विन्भगेण नाणेण समुप्पन्नेण वभलीए कप्पे देवाण ठिति जाणइ-पासइ। (श० ११।१८७)
- तए ण तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारुवे अज्झत्थिए जाव (स० पा०) समुप्पिजित्था ।
- ६ अत्थिण मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने
- १० देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता तेण पर समयाहिया दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया
- ११ उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य

१ तेण कालेण तेण समएण आलिभया नाम नगरी होत्या वण्णओ। तत्य ण सखवणे नाम चेइए होत्या—वण्णओ!

१ यहा 'पोग्गले नाम परिन्वायए' पाठ है तथा किसी पाठान्तर का सकेत नहीं है। जयाचार्य ने अपनी जोड में 'मोगल परिन्नाजक' का उल्लेख किया है। सभव है, उनको प्राप्त आदर्श में यही पाठ हो। नाम का यह भेद लिपिदोप के कारण हुआ है अथवा अन्य किसी कारण से, खोज का विषय है। प्रस्तुत ग्रन्थ में यह दिख्पता ज्यों की त्यों सुरक्षित रखी गई है।

<sup>\*</sup>लय: धीज करें सीता सती रे लाल

१२ इ मन माहै चितवी रे, भूमिआतापन जेह। सुखकारी रे। तेह थकी पाछो वली रेलाल,

उपिघ पोता ना लेह ।। सुखकारी रे ।।

१३. दड कमंडल ने ग्रही रे,

जाव गेरू रग्या वस्त्र ताय। सुखकारी रे। ग्रहण करिने आवतो रे लाल,

नगरी आलभिया माय।। सुखकारी रे ।।

१४ परिव्राजक ना मठ जिहा रे,

आब्यो तिहा चलाय । सुखकारी रे। निज भंड प्रति मूकी करी रे लाल,

आलभिया ने माय।। सुखकारी रे।।

१५ शृंघाटक जाव पथ मे रे,

कहै जन ने माहोमांय । सुखकारी रे। अतिजेप ज्ञान दर्शन भलो रे लाल,

मुभ ऊपनो सुखदाय ॥ सुखकारी रे ।

१६. सुरलोक स्थिति सुर तणी रे,

धुर दश वर्ष हजार । सुस्रकारी रे। तिमहिज जाव विच्छेद छैरे लाल,

सुर सुरलोक तिवार ॥ सुखकारी रे॥

१७ नगरी आलिभया मे तदा रे,

इण आलावे करि ताय। सुखकारी रे। जिम शिव तिम यावत वदें रे लाल,

किम ए बात मनाय।। सुखकारी रे।।

वा॰ —िशाव राजऋषि नै अधिकारे तो हित्यणापुर ने विषे घणा लोक माहोमाहि इम वदै, इम कह्यो अने इहा आलिमया नगरी ने विषे वहु जन माहोमाहि वदै इम कहिवो ते माटै आलिभया ने अभिलापे सूत्रे कह्यू।

१८ एव स्वामी समवसरचा रे,

जाव परिपद गई स्थान। सुखकारी रे। वीर तणी वाणी सुणी रे लाल,

सवेग रस गलतान ॥ सुखकारी रे ॥

१६ गोतम तिमहिज गोचरी रे,

भिक्षाचरी ने जाय। सुखकारी रे। तिमज बट्द बहु मनुष्य ना रे लाल,

सुण चितव्यो मन माय।। सुखकारी रे।।

२० तिम कहिवी सहु वारता रे,

पूछ्यो वीर ने आय। सुखकारी रे। वीर कहै मिथ्या अर्छ रेलाल,

मोगल नी जे वाय।। सुखकारी रे।।

२१. यावत हू पिण गोयमा । रे,

एम कहू छू सार। सुखकारी रे।

१२. एव संपेहेड सपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुडह पच्चोरुहित्ता

- १३. तिदड च कुडिय च जाव धाउरत्ताओ य गेण्ट्य गेण्टिता जेणेव आलिमया नगरी
- १४. जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवाग-च्छिता भडनिक्खेव करेड, करेत्ता आलिभयाए नगरीए
- १५. सिंघाडग जाव (म० पा०) पहेसु अण्णमण्णस्स एव-माइक्खड जाव परूवेइ—अत्यि णं देवाणुप्पिया । मम अतिसेसे नाणदसणे समूप्पन्ने ।
- १६. देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साङ िठती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, जक्कोमेण दससागरोवमाङ िठती पण्णत्ता । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य । (ण० ११।१८८)
- १७ तए ण (स॰ पा॰) आलिभयाए नगरीए एव एएण अभिलावेण जहां सिवस्स (भ॰ ११।७३) त चेव जाव से कहमेय मन्ने एव ?

(श० ११।१८६)

- १८ सामी समोमढे, परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया।
- १६ भगव गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसह निसामेइ निसामेत्ता
- २०. तहेव सन्व भाणियन्व
- २१ जाव अह पुण गोयमा । एवमाइक्खामि एव भासामि जाव परुवेमि—देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस

सुरलोके स्थिति सुर तणी रे लाल,

घुर दश वर्ष हजार।। सुखकारी रे।।

२२. समय अधिक तिण ऊपरे रे,

दोय समय अधिकाय । सुखकारी रे। जाव स्थिति उत्कृष्ट थीरे लाल,

तेतीस सागर ताय ॥ सुखकारी रे॥

२३ तिण उपरत विच्छेद छै रे,

सुर अथवा सुरलोग । सुखकारी रे। अधिकी स्थिति निह देव नी रे लाल,

तिण सूं विच्छेद प्रयोग ।। सुखकारी रे ॥

२४. छै प्रभु । सौधर्म कल्प मे रे,

द्रव्य जे वर्ण सहीत। सुखकारी रे। वर्ण रहित पिण द्रव्य छै रे लाल,

तिमहिज प्रश्न सुरीत ॥ सुखकारी रे ॥

२५ जाव हंता अतिथ जिन कहै रे,

इमहिज किहयै ईशान। सुखकारी रे।

इम यार्वत अच्युत कह्यो रे लाल,

इम ग्रैवेयक विमान ।।सुखकारी रे।।

२६. इमहिज अणुत्तर विमाण मे रे,

इमहिज इसिपब्भार । सुखकारी रे।

यावत जिन उत्तर दिये रे लाल,

हता अत्थि सार ॥ सुखकारी रे॥

२७. महा मोटी परपद तदा रे,

जाव गई स्व स्थान । सुखकारी रे। आलिभया नां वाजार में रे लाल,

लोक वदे इम वान ॥ सुखकारी रे॥

२८ अवशेप जिम शिव नी परै रे,

जाव सर्व दुख क्षीण। सुखकारी रे। णवर इतरो विशेष छैरे लाल,

आगल कहियै चीन ॥ सुखकारी रे॥

२६. त्रिदंड ने विल कुडिका रे,

गेरू रंग्या वस्त्र ताहि। सुखकारी रे। ते पहिरचां विभंग पिंडये छते रे लाल,

नगरी आलभिया माहि ॥ सुखकारी रे ॥

३०. आलिभया मध्य नीकली रे,

यार्वत कूण ईशाण । मुखकारी रे। आवी त्रिदंड ने कुडिका रे लाल,

एकांत मूर्क जाण ॥ सुखकारी रे ॥

३१. जिम खधक चारित्र लियो रे,

तिमहिज चरण उदार। सुखकारी रे। शेप सर्व शिव नी परे रे लाल,

यावत मोक्ष मभार ॥ सुखकारी रे॥

# वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता

- २२. तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेजज-समयाहिया जनकोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णता।
- २३. तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य । (श॰ ११।१६०)
- २४ अत्थिण भते ! सोहम्मे कप्पे दन्वाइ—सवण्णाइ पि अवण्णाइं पि ।
- २५. तहेव (सं० पा०) हंता अस्य । एव ईसाणे वि, एव जाव अच्चुए, एव गेवेज्जविमाणेसु,
- २६ अणुत्तरिवमाणेसु वि, ईसिपव्भाराए वि जाव ? हता अस्थि। (श० ११।१६१)
- २७. तए ण सा महतिमहालिया परिसा जाव जामेव दिसि पाउन्भूया तामेव दिस पडिगया।

तए ण आनिभयाए नगरीए " ""वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइनखइ (स॰ पा॰)

- २८. अवसेस जहा सिवस्स (भ० ११।८३-८८) जाव सञ्बदुक्खपहीणे नवर
- २६-३१. तिदंडकृडिय जाव धाउरत्तवत्थपरिहिए परिव-डियविव्भगे सालभिय नगरि मज्झमज्झेण निग्गच्छइ जाव उत्तरपुरित्यम दिसीभाग अवक्कमइ २ तिदड-कृडिय च जहा खदसो (भ० २।५२) जाव पव्वइसो सेस जहा सिवस्स (भ० ११1६३-६६) जाव।

३२. बाघा रहित सुख भोगवै रे,

्एहवा शाश्वता सिद्ध। सुखकारी रे।

सेव भते । गोतम कहै रे लाल,

तुम्ह सत्य वचन समृद्ध ॥ सुखकारी रे ॥

३३. एकादशमां शतक नो रे, द्वादशमों उद्देश । सुखकारी रे। आख्यो शतक इग्यारमो रे लाल,

अर्थ रूप सुविशेष ।। सुखकारी रे ।।

३४. दोयसौ ने अडतालीसमीं रे,

आखी ढाल उदार। सुखकारी रे।

भिक्षु भारीमाल ऋपिराय थी रे लाल,

'जय-जश' सपित सार ।। मुखकारी रे ।। एकादशशते द्वादशोद्देशकार्थः ।।११।१२।।

# गीतक-छंद

 एकादशम जे शतक नो, व्याख्यान म्हें कीधू सही। वर न्याय निर्णय मेलिया, फुन सूत्र अनुसारे वही॥
 इह विपे जो हेतू तिको, जन सुणो घर आह्लाद ही॥
 भिक्षु ने भारीमाल फुन, नृपइदु नोज प्रसाद ही॥ ३२. अन्वावाहं सोक्खं अणुभवंति सामय सिद्धा । सेव भंते । सेवं भते ! त्ति । (ग० ११।१६६)

१,२ एकादशशतमेव, व्याख्यातमबुद्धिनापि यन्मयका । हेतुस्तत्राग्रहिता, श्रीवाग्देवीप्रसादो वा ॥ (वृ० प० ५५२)